Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113033

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३-१-४१

आश्विन—कार्तिक संवत् १९९७

सम्मेलन पत्रिका

[भाग २८, संख्या २, ३]

संपादक

श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल,

साहित्यमंत्री ।

RT-0445

हिन्दी साहित्य सम्मेलन,

प्रयाग ।

वार्षिक १)

एक प्रति ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नीति—[श्री पुरुषोत्तमदास टंडन] १

२—स्वर्गीय प्रेमचन्दजी की उपन्यास कला—[ले० श्री हरिमोहन-लाल वर्मा, बी० ए०, 'साहित्यरत्न'] ११

३—भक्तिकाल में निर्गुणोपासना—[ले०—श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल] २१

४—हिन्दी गद्य साहित्य का पूर्वरूप—[ले०—श्री दिनेशनारायण उपाध्याय 'साहित्यरत्न'] ३४

५—सूर और तुलसी के कृष्ण—[ले०—श्री ब० ल० सराफ बी०ए०, 'साहित्यरत्न'] ४०

६—देवनागरी लिपि में तार योजना—[ले०—श्री नारायणदत्त पांडे एम० ए०, एल-एल० बी०] ४४

७—हिन्दी संसार—[ले०—श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य, संग्रहमंत्री] ४६

८—प्राप्ति स्वीकार—[ले०—श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य, संग्रहमंत्री] ५९

९—कार्यसमिति का नवां अधिवेशन ६५

१०— ,, ,, ,, दसवाँ ,, ... ६९

११—आगामी पूना अधिवेशन के लिए निश्चित कार्यक्रम ... ७१

१२—स्थायी समिति का छठा अधिवेशन ७२

१२—उर्दू और पण्डित नेहरू ७६

नियमावली

१—सम्मेलन पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है।

२—हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आदर्शों की पूर्ति में सहायक होना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

३—पत्रिका का वार्षिक मूल्य १) तथा एक अङ्क का =) है।

४—पत्रिका के सम्बन्ध में पत्रव्यवहार साहित्यमन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पते से करना चाहिए।

५—पत्रिका संबन्धी पत्रव्यवहार में जवाब के लिए टिकट आने चाहिए; अन्यथा आवश्यक अनावश्यक का विचार कर पत्रोत्तर दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113073
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113073

सम्मेलन पत्रिका

भाग २८] आश्विन, कार्तिक १९९७ [संख्या २, ३

'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नीति।

[श्री पुरुषोत्तमदास टंडन]

'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' शब्दों के प्रयोग के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की क्या नीति है इसके बारे में, मैं देखता हूँ, कुछ लेखों ने भ्रम फैलाया है। मुख्य कारण इसमें यह जान पड़ता है कि इन लेखों के लेखकों ने स्थिति का ठीक पता लगाने का यत्न नहीं किया और कुछ सुनी-सुनाई बातों को कल्पना के धागे में पिरोकर उन्होंने ऐसी सूरत दे दी जिसका वस्तुस्थिति से कोई सम्बन्ध नहीं है।

'भाषा का प्रश्न' नामक पुस्तक में जो मेरे मित्र, पंडित चन्द्रबली पांडे, की लिखी हुई है और जिसमें हिन्दी के कार्यकर्ताओं के जानने योग्य अच्छी सामग्री है, 'राष्ट्रभाषा का नाम' शीर्षक अध्याय का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

"हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नागपुर की बैठक में एक अद्भुत बात यह निकल आई कि हमारी राष्ट्रभाषा का नाम हिन्दी या हिन्दुस्तानी न रह कर 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' होगया और इसने धीरे धीरे फिर हिन्दी-उर्दू प्रश्न को उभार दिया।"

इस पुस्तक से पहिले छपी हुई 'राष्ट्रभाषा क्या हो?' नामक पुस्तिका में कांगड़ी गुरुकुल के एक वेदालंकारजी ने क्रोधपूर्ण और कटु वाक्यों के बीच में लिखा है—

"इधर पं० जवाहरलालजी ने 'हिन्दुस्तानी' के अन्दोलन को प्रोत्साहित किया और उधर महात्माजी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' का प्रस्ताव स्वीकृत करा लिया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार की ध्वनि हाल के कुछ दूसरे लेखों में भी मुझे मिली है।

अपने सार्वजनिक जीवन में मुझे यह अनुभव हो चुका है कि बहुत लोग अपने मत के पोषण अथवा किसी ऐसे व्यक्ति वा संस्था के बिरोध में, जिससे वे किसी कारण रुष्ट हों, अपने लिखने और बोलने में न केवल औचित्य का विचार छोड़ देते हैं किन्तु जो बात कहते हैं उसकी नापजोख भी ठीक नहीं रख पाते, उनकी हृदय-भावना हाथ में ली हुई तुला की डंडी को अनायास मार देती है। पंडित चन्द्रबली पांडे को मैंने इस प्रकार के लेखकों की गिनती में नहीं रखा, उनके बारे में मेरा यह विचार है कि वह साधारण रीति से सप्रमाण बातें कहते हैं। किन्तु ऊपर उद्धृत किये हुये वाक्य की ओर हाल में ही जब मेरा ध्यान गया मुझे बहुत अचम्भा हुआ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की किसी भी बैठक में राष्ट्रभाषा का नाम 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' स्वीकार किया गया हो इसका मुझे ज्ञान नहीं। यदि हुआ होता तो मुझे पता लग जाता। मैं स्वयं नागपुर के सम्मेलन में उपस्थित था। मेरी याद में कोई निश्चय इस प्रकार का नहीं हुआ था। फिर भी केवल अपनी याद का भरोसा न कर मैंने नागपुर सम्मेलन सम्बन्धी पूरी पत्रावली, जो सम्मेलन कार्यालय में है, तथा नागपुर के मन्तव्यों की छपी प्रतिलिपि देखी। न छपे मन्तव्यों में न किसी कार्यवाही में यह बात मिली कि सम्मेलन ने 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' को राष्ट्रभाषा के लिये पर्यायवाची माना हो। इन पुराने काग़ज़ों को निकलवाने और ध्यान से देखने में मेरा समय लगा। किन्तु जब पं० चन्द्रबली पांडे ऐसे लेखक ने एक बात लिखी और उसी प्रकार के विचार की प्रतिध्वनि मुझे दूसरों में दिखाई पड़ी तो समय देना आवश्यक जान पड़ा। पुरानी पत्रावली को देखने में मुझे रस भी मिला। कुछ पुरानी बातें, जो स्मृति की कन्दराओं में छिप गई थीं, फिर अपने रूप की लुनाई में सामने आ गईं। पिछले तीस वर्षों के हिन्दी इतिहास को समझने में सम्मेलन कार्यालय की पत्रावली का शायद कभी उपयोग हो सके!

नागपुर सम्मेलन के अधिवेशन में उसके अन्तिम निश्चय से सम्मेलन की नियमावली का संशोधन हुआ था। उस संशोधित नियमावली के दूसरे नियम में सम्मेलन के उद्देश हैं। उनमें उद्देश (ख) इस प्रकार है—

"देशव्यापी व्यवहारों और कार्यों को सुलभ करने के लिये राष्ट्रलिपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवनागरी और राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार बढ़ाने का प्रयत्न करना।"

इससे यह स्पष्ट है कि राष्ट्रभाषा के लिये 'हिन्दी' शब्द का ही प्रयोग करना सम्मेलन को अभीष्ट था। नियमावली भर में कहीं 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' या 'हिन्दुस्तानी' का नाम तक नहीं है।

नागपुर सम्मेलन में ही सम्मेलन की ओर से वर्धा को हिन्दी प्रचार के लिये केन्द्र बनाने की व्यवस्था पहले पहल नियमावली में हुई थी। वर्धा से काम करने के लिये जो 'प्रचार समिति' सम्मेलन की नियमावली के अनुसार बनी उसका नाम 'हिन्दी प्रचार समिति' पड़ा। देश भर में हिन्दी प्रचार करने का भार उसके ऊपर डाला गया। उसके लगभग ढाई वर्ष बाद शिमला के अधिवेशन में प्रचार कार्य के लिये दो समितियों की आवश्यकता दिखाई पड़ी, एक हिन्दी भाषी प्रान्तों के लिये और दूसरी अहिन्दी प्रान्तों के लिये। वर्धा वाली समिति का काम केवल अहिन्दी प्रान्तों में सीमित किया गया और उसका नाम 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' पड़ा। नियमावली के उपनियम ३८ के अनुसार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को सम्मेलन के जिन उद्देशों की पूर्ति का काम सुपुर्द हुआ उनमें एक उद्देश (ख) है जिसका स्वरूप ऊपर दिया जा चुका और दूसरा उद्देश (छ) है जो इस प्रकार है—

"सारे देश के युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना"।

इस वाक्य में भी स्पष्ट है कि राष्ट्रभाषा समिति को 'हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने' का काम करना है।

यह हुई सम्मेलन के अधिवेशनों और उसकी नियमावली की बात। सम्मेलन की स्थायी समिति अथवा कार्य समिति के सामने आज तक कभी यह प्रश्न भी नहीं उठा कि 'हिन्दी' के स्थान पर 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' या 'हिन्दुस्तानी' शब्द का व्यवहार किया जाय। जहाँ तक सम्मेलन का सम्बन्ध है उसकी नीति आरम्भ से इस समय तक बहुत स्पष्ट है। उसका नाम है 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन'। उसका, एक ओर, काम है हिन्दी साहित्य की पुष्टि और उन्नति करना और, दूसरी ओर, नागरी लिपि और हिन्दी-भाषा का प्रचार करना। नागरी लिपि और हिन्दी-भाषा का प्रचार वह राष्ट्रीय दृष्टि से करता है। इसलिये सम्मेलन के शब्दों में राष्ट्रलिपि नागरी है और राष्ट्र भाषा हिन्दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भ्रम सम्मेलन की नीति के सम्बन्ध में कुछ सज्जनों को हुआ है उस का मुख्य कारण मुझे यह जान पड़ता है कि उन्होंने सम्मेलन से सम्बन्ध रखने वाले कुछ कार्यकर्ताओं के वैयक्तिक विचारों को बिना अनुसन्धान किये अपनी कल्पना में सम्मेलन की नीति के साथ बाँध दिया। सब ही संस्थाओं में भिन्न भिन्न विचारों के लोग रहा करते हैं। किन्तु संस्था की नीति वही रहती और समझी जाती है जो उसके मन्तव्यों द्वारा स्वीकृत की गई हो और उसके व्यवहारों में बरती जाती हो। भिन्न भिन्न विचारों का समन्वय संस्था के मन्तव्यों द्वारा प्रकट होता है। संस्था की परीक्षा उसके निश्चयों और आदेशों की कसौटी पर ही करना न्यायसंगत है। कभी कभी संस्था के कुछ बहुत ऊँचे व्यक्तियों की भी राय संस्था के कुछ सिद्धान्तों से भिन्न होती है। यद्यपि वे संस्था की उपयोगिता को मानते हुये उसके कामों और उद्देशों में गहरी सहायता देते हैं तो भी कुछ बातों में वे अपनी अलग कार्यप्रणाली रख सकते हैं। इसी साधारण नियामक प्रथा का ध्यान न रखने से सम्मेलन के सम्बन्ध में कुछ ऐसे सज्जनों में भ्रान्ति उत्पन्न हुई है जिन्हें सम्मेलन के कार्य का निकट अनुभव नहीं है।

यह भ्रान्ति कि नागपुर सम्मेलन के अवसर पर सम्मेलन ने 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' नाम राष्ट्रभाषा के लिये स्वीकृत किया मुझे इस कारण उत्पन्न हुई जान पड़ती है कि नागपुर में अप्रैल सन् १९३६ के अन्तिम सप्ताह में, उसी अवसर पर जब हिंन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन वहाँ प्रारम्भ हो रहा था, सम्मेलन से पृथक 'भारतीय साहित्य परिषद' की स्थापना के लिये एक सभा हुई थी जिसमें 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' और 'हिन्दुस्तानी' के बीच झगड़ा उठा था और 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' शब्द 'भारतीय साहित्य-परिषद' के काम के लिये स्वीकृत हुआ था। इस परिषद की स्थापना में मुख्य हाथ बम्बई के श्री कन्हैयालाल मुंशी का था। स्वर्गीय श्री प्रेमचन्दजी का भी उसमें विशेष सहयोग था और 'हंस' भारतीय-साहित्य-परिषद का मुखपत्र था। इसका सम्पादन अक्टूबर सन् १९३५ से श्रीप्रेमचन्दजी और श्री कन्हैयालाल मुंशी मिलकर करते थे। देश की सब भाषाओं के साहित्यिकों में विचार विनिमय के लिये भारतीय साहित्य परिषद की स्थापना के बारे में 'हंस' में कुछ लेख पहले ही निकल चुके थे। इस विचार के पोषक सज्जनों की प्रेरणा से सन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९३५ में इन्दौर के सम्मेलन में निम्नलिखित मन्तव्य हुआ था—

"देश की प्रान्तीय भाषा के साहित्यिकों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने तथा हिन्दी भाषा की वृद्धि में उनका सहयोग प्राप्त करने के अभिप्राय से यह सम्मेलन निम्नलिखित सज्जनों की एक समिति बनाता है और उसको अधिकार देता है कि वह अपने साथ अन्य सज्जनों को आवश्यकतानुसार सम्मिलित कर ले।"

इस निश्चय के अनुसार जो समिति बनी थी उसके संयोजक श्री कन्हैयालाल मुंशी थे। इस समिति ने दूसरी भाषाओं की कुछ संस्थाओं से सहयोग का आश्वासन प्राप्त किया और 'भारतीय साहित्य परिषद' की स्थापना के लिये जनवरी सन् १९३६ में बम्बई में साहित्यिकों को बुलाने का विचार किया। 'हंस' में प्रकाशित एक सूचना से प्रकट होता है कि महात्मा गाँधीजी की अस्वस्थता के कारण जनवरी में यह समारोह नहीं हो सका। तब वर्धा में ३ और ४ अप्रैल की तिथियाँ रक्खी गईं। किन्तु फिर यह तिथियाँ भी बदली गयीं और यह समारोह नागपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर २३ और २४ अप्रैल को हुआ। उसके सभापति महात्मा गाँधी थे। मुझे उस परिषद की कोई प्रकाशित कार्यवाही नहीं मिली है। किन्तु मुझे स्मरण है कि उसमें यह प्रश्न उठा था कि इस परिषद का काम किस भाषा द्वारा किया जाय। इस परिषद में अन्य भाषाओं के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त उर्दू के प्रतिनिधि मौलाना अब्दुल हक़ मौजूद थे। भाषा के प्रश्न छिड़ने पर नाम का भी प्रश्न छिड़ा। जहाँ तक मुझे याद है, मौलाना अब्दुल हक़ की राय थी कि जिस भाषा में भारतीय साहित्य परिषद का काम हो उसका नाम 'हिन्दुस्तानी' रखा जाय। महात्मा गाँधी अथवा अन्य किसी की ओर से 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' शब्द सामने आया। मौलाना अब्दुल हक़ ने उसका विरोध किया। किन्तु वह बहुमत से स्वीकृत हुआ। इसके बाद मौलाना अब्दुल हक़ ने भारतीय साहित्य परिषद और गाँधी जी के ऊपर एक लेख में बहुत कड़ुआ आक्रमण किया। उन्होंने महात्मा गाँधी जी के बारे में यहाँ तक लिखा कि महात्मा गाँधी ने "रिया (अर्थात् धोखेबाज़ी) की चादर उतार फेंकी और असली रंग में नज़र आने लगे। वह शौक़ से हिन्दी का प्रचार करें। वह हिन्दी नहीं छोड़ सकते तो हम भी उर्दू नहीं छोड़ सकते।" मौलाना अब्दुल हक़ के उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख का जो उत्तर 'हंस' के सम्पादकों की ओर से १९३६ के जून मास के अंक में निकला था उसका कुछ अंश मैं उद्धृत करता हूँ—

"भारतीय साहित्य परिषद् ने जब हिन्दुस्तान के सभी साहित्यों के प्रतिनिधियों को निमंत्रित किया, तो इसीलिए कि इस साहित्यिक उद्योग में हम सब राजनैतिक मतभेदों को भूलकर शरीक हों, और कम से कम साहित्य के क्षेत्र में तो एकता का अनुभव कर सकें। अगर परिषद् के बानियों का उद्देश्य इस बहाने से केवल हिन्दी का प्रचार करना होता, तो उसे सभी साहित्यों को नेवता देने की कोई ज़रूरत न थी। हिन्दी प्रचार का काम हिन्दी साहित्य सम्मेलन और नागरी प्रचारिणी सभा के ज़रिये हो रहा है। उस काम के लिये एक नया परिषद् ही क्यों बनाया जाता। हमारे सामने यही, और एकमात्र यही उद्देश्य था कि हिन्दुस्तान में कोई ऐसी संस्था बनाई जाय, जिसमें सभी भाषाओं के साहित्यिक आपस में मिलें, साहित्य और समाज के नये नये जटिल प्रश्नों पर विचार करें, साहित्य की नई विचार धाराओं की आराधना करें और इस तरह उनमें एक विशाल बिरादरी के अंग होने की भावना जागे, उनमें आत्म-विश्वास पैदा हो, उन्हें दूसरे साहित्यों का ज्ञान हो और अपने साहित्य में जो कमी नज़र आये, उसे पूरा कराने की प्रेरणा मिले। यह सभी मानते हैं कि अगर हिन्दुस्तान को ज़िंदा रहना है, तो वह एक राष्ट्र के रूप में ही ज़िन्दा रह सकता है, एक राष्ट्र बन कर ही वह संसार की संस्कृति में अपने स्थान की रक्षा कर सकता है, अपने खोये हुए गौरव को पा सकता है।......................भारतीय परिषद् का उद्देश्य जहाँ साहित्यिक संगठन, सच्चे साहित्यिक आदर्शों का प्रचार और साहित्यिक सहयोग था, वहाँ एक उद्देश्य यह भी था कि उस संगठन और सहयोग के द्वारा हमारी राष्ट्र भावना भी बलवान् हो। हमारा यह मनोभाव कभी न था कि इस उद्योग से हम प्रांतीय साहित्यों की उन्नति और विकास में बाधा डालें। जब हमारी मातृभाषाएँ अलग हैं, तो साहित्य भी अलग रहेंगे। अगर एक एक प्रान्त रहकर हम अपना अस्तित्व बनाये रह सकते, तो हमें इस तरह के उद्योग की ज़रूरत ही न होती, लेकिन हम यह अनुभव करते हैं कि हमारा भविष्य राष्ट्रीय एकता के साथ है। उसी पर हमारी ज़िन्दगी और मौत का दारमदार है। और राष्ट्रीय एकता के कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगों में भाषा और साहित्य की एकता भी है। इसलिए साहित्यिक एकता के विचार के साथ एक भाषा का प्रश्न भी अनायास ही बिना बुलाये मेहमान की तरह आ खड़ा होता है। भाषा के साथ लिपि का प्रश्न भी आ ही जाता है। और परिषद् के जलसे में भी ये दोनों प्रश्न आ गये।

"झगड़ा हुआ भाषा पर, यानी साहित्य परिषद् भाषा के किस रूप का आश्रय ले। 'हिन्दी' शब्द से उर्दू को उतनी चिढ़ है जितनी 'उर्दू' से हिन्दी को है। और यह भेद केवल नाम का नहीं है।......................हिन्दी को 'हिन्दुस्तानी' चाहे उतना प्रिय न हो, पर उर्दू को 'हिन्दुस्तानी' के स्वीकार करने में कोई बाधा नहीं है क्योंकि उसे वह अपनी परिचित सी लगती है, मगर परिषद् ने 'हिन्दुस्तानी' को अपना माध्यम बनाना न स्वीकार करके 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' को स्वीकार किया।...................................जिस सभा में वह (मौलाना अब्दुल हक़) बैठे हुए थे, उसमें हिन्दी वालों की कसरत थी। उर्दू के प्रतिनिधि तीन से ज़्यादा न थे। फिर भी जब 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' और अकेले 'हिन्दुस्तानी' पर वोट लिये गये तो 'हिन्दुस्तानी' के पक्ष में आधी से कुछ ही कम रायें आईं। अगर मेरी याद ग़लती नहीं कर रही है तो शायद पन्द्रह और पचीस का बटवारा था। एक हिन्दी प्रधान जलसे में जहाँ उर्दू के प्रतिनिधि कुल तीन हों, पन्द्रह रायों का हिन्दुस्तानी के पक्ष में मिल जाना हार होने पर भी जीत ही है।.................जो लोग 'हिन्दुस्तानी' का वकालतनामा लिये हुए हैं, और उनमें एक इन पंक्तियों का लेखक भी है, वह भी अभी तक 'हिन्दुस्तानी' का कोई रूप नहीं खड़ा कर सके। केवल उसकी कल्पनामात्र कर सके हैं, यानी वह ऐसी भाषा हो, जो उर्दू और हिन्दी दोनों ही के संगम की सूरत में हो, जो सुबोध हो, और आम बोलचाल की हो।........................हम मौलाना साहब से प्रार्थना करेंगे कि परिषद से इतनी जल्द बड़ी बड़ी आशाएँ न रक्खें और नीयतों पर शुबहा न करें। मुमकिन है आज जो बात मुश्किल नज़र आ रही है, वह साल दो साल में आसान हो जाय।"

ऊपर के उद्धरण से उस सभा की कार्यवाही का कुछ हाल मिल जाता है जिसमें भारतीय साहित्य परिषद की स्थापना हुई। यह भी स्पष्ट है कि उसके लेखक (जो हंस के सम्पादक थे) स्वयं 'हिन्दुस्तानी' के पक्षपाती थे। साथ ही यह भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट हो जाता है कि इस भारतीय साहित्य परिषद की भाषा के लिये नाम चुनना एक ऐसी बात थी जिसका हिन्दी साहित्य सम्मेलन से कोई सम्बन्ध नहीं था।

नागपुर में भारतीय साहित्य परिषद की स्थापना के बाद फिर उसका कोई अधिवेशन हुआ हो इसका मुझे पता नहीं। मुझे ऐसा लगता है कि उर्दू की ओर से मौलाना अब्दुल हक़ ने जो विरोध उठाया उसके कारण यह भारतीय साहित्य परिषद स्थापना के बाद समाप्त सा हो गया। कम से कम मुझे कुछ मालूम नहीं कि उसके बाद क्या काम हुआ। नागपुर के भारतीय साहित्य परिषद की कार्यवाही छाप कर प्रकाशित की गई हो इसमें भी मुझे सन्देह है।

अस्तु, इस भारतीय साहित्य परिषद के किसी मन्तव्य को हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ गूंथना कदापि उचित नहीं।

सम्मेलन की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में अवश्य 'हिन्दुस्तानी' का प्रश्न उठा है। उसके सदस्यों में ऐसे मान्य राष्ट्र सेवक हैं जो यह उचित समझते हैं कि राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के व्यवहार में राष्ट्रभाषा के लिये हिन्दी के साथ हिन्दुस्तानी नाम को भी स्वीकार करना उचित है। उनकी यह शिकायत है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने हिन्दुस्तानी नाम को कहीं भी स्थान नहीं दिया है। परन्तु समिति की ओर से सम्मेलन की नीति का जानबूझ कर उल्लंघन, जहाँ तक मुझे मालूम हुआ है, कभी नहीं किया गया।

'सब की बोली' नामक पत्रिका राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से निकलती है। उसके अंकों तथा राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति द्वारा प्रकाशित विवरणों को पढ़ने से पता लग सकता है कि काका कालेलकर की देखरेख में इस समिति ने हिन्दी के काम को अहिन्दी प्रान्तों में कितना आगे बढ़ाया है। काका कालेलकर असाधारण निष्ठावान पुरुष हैं। उनके सहयोग से हिन्दी को महती शक्ति मिली है। इस समिति के चलाने में पूज्य महात्मा गाँधीजी का वरद हस्त काका कालेलकर को समय समय पर मार्ग प्रदर्शित करता रहा है। राष्ट्रीयता की दृष्टि से महात्मा गाँधी ने हिन्दी को कहाँ तक पहुँचाया है इसका मुझे भीतरी अनुभव है क्योंकि महात्माजी को सम्मेलन की ओर लाने में मेरा कुछ हाथ, और उससे भी अधिक मेरा हृदय, था। महात्मा गाँधी या कालेलकर जी के बारे में, जब हम हिन्दी के कार्यकर्ता कुछ भी लिखें, हमें सदा उनके कामों का स्मरण रखना उचित है। राष्ट्रलिपि नागरी और राष्ट्रभाषा हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के यह दोनों ही पुजारी हैं। साथ ही वे राष्ट्र और मानवता के और अधिक पुजारी हैं। हमारी कृतज्ञता की यह मांग है, और हमारा गौरव इसी में है, कि जब हम उनके विचारों से मतभेद प्रगट करें तो तुले हुए शब्दों में और विनय के साथ। विनय और दृढ़ता का विरोध नहीं है। मेरा तो अनुभव है कि यह दोनों गुण प्रायः साथ ही रहते हैं।

काका कालेलकर ने 'सब की बोली' के पिछले अगस्त के अंक में 'हिन्दुस्तानी' शीर्षक एक लेख लिखा था। उस लेख में काकाजी ने इस मत का समर्थन किया है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन 'हिन्दुस्तानी' शब्द को भी राष्ट्रभाषा के लिए ग्राह्य माने। उस लेख का अन्तिम अंश यह है—

'जब राष्ट्रीय महासभा ने राष्ट्रभाषा को हिन्दुस्तानी कह दिया तब वही नाम लेकर और अपनी ही व्याख्या को राष्ट्रभाषा सम्मेलन चलाये तो उसमें क्या हर्ज है ? जब हम कहते हैं कि उर्दू भी हिन्दी का एक रूप है तब हिन्दी के उस रूप को जो हिन्दू मुसलमानों में, शहरों व गाँवों में प्रचलित है, हिन्दुस्तानी कहने में क्या डर है ? हिन्दुस्तानी न तो साहित्यिक हिन्दी है, न उर्दू-ए-मुअल्ला है। जब हमने शिमला में साहित्यिक हिन्दी की अलग व्याख्या कर दी, तब हिन्दी के उस रूप की, जिसे राष्ट्रभाषा के तौर पर हमने इन्दौर में तय किया, और जिसे हम भारत भर में चलाना चाहते हैं, हिन्दुस्तानी कहने में क्या हर्ज है ? काँग्रेस ने नाम रख दिया। उससे लाभ उठा कर उसी के झंडे के नीचे हम आगे बढ़ें या नाम से घबड़ा कर हम राष्ट्रीय क्षेत्रों से ही अपने को बहिष्कृत कर लें ?'

किन्तु इससे पहले अपना मत रखते हुए भी काकाजी ने 'सब की बोली' के पिछले जनवरी के अंक में यह लिखा था कि "सम्मेलन का राष्ट्रभाषा का अधिकृत नाम तो हिन्दी ही है और रहेगा।"

काका कालेलकर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के उपसभापति और प्राण रहे हैं। श्री श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल उसके मंत्री हैं। इन दोनों के साथ जो मेरी बातें हुई हैं उनसे मुझे स्पष्ट है कि राष्ट्रभाषा के लिये 'हिन्दी' शब्द के साथ 'हिन्दुस्तानी' शब्द के व्यवहार को भी सिद्धान्त रूप से ठीक मानते हुए उन्होंने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के काम में सदा हिन्दी शब्द का प्रयोग किया है और सम्मेलन की नीति का शुद्ध सेवा भाव से पालन किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के कामों में हिन्दी शब्द का ही चलन होते हुए भी यह बात पिछले कुछ महीनों में मुझे मालूम हुई कि समिति के सदस्यों में हिन्दुस्तानी शब्द के व्यवहार के बारे में मतभेद है। इसी आपसी मतभेद के ऊपर बातचीत करने के लिये पिछली ४ और ५ अक्तूबर को वर्धा में राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की एक बैठक हुई थी। उसमें यही निश्चय हुआ कि समिति के कामों में राष्ट्रभाषा के लिये हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावली के अनुसार हिन्दी शब्द का ही प्रयोग हो सकता है। साथ ही यह बात भी मानी गई कि सम्मेलन से अलग हिन्दुस्तानी शब्द व्यवहार करने की किसी योजना में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के कोई सदस्य यदि शरीक होना चाहें तो हो सकते हैं।

काँग्रेस के कामों में हिन्दुस्तानी शब्द का व्यवहार है। इसी प्रकार गवर्नमेंट तथा कुछ अन्य संस्थाओं में हिन्दुस्तानी शब्द का व्यवहार, हिन्दी और उर्दू दोनों रूपों को एक शब्द से प्रकट करने के लिये, आता है। हिन्दी के कार्यकर्ताओं को ऐसे स्थानों पर हिन्दुस्तानी शब्द का भी व्यवहार कभी कभी करना होता है, यद्यपि अपनी भाषा के लिये वे हिन्दी शब्द का ही प्रयोग शुद्ध समझते हैं। सम्मेलन और उसकी समितियों के कामों में सम्मेलन के उद्देश्य के अनुसार स्वभावतः हिन्दी शब्द ही बरता जा सकता है। इस नैतिक क्रम के आधार पर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मतभेद का समन्वय किया गया।

काका साहब ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की उपर्युक्त बैठक के बाद और उसके निश्चय के कारण उससे इस्तीफ़ा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफ़ा 'सब की बोली' के अक्तूबर के अंक में प्रकाशित भी कर दिया है। उनके इस्तीफ़े के शब्दों में भी उनका सम्मेलन से प्रेम टपक रहा है। उनके इस्तीफ़े से मुझे दुःख होना स्वाभाविक है। किन्तु एक ओर सम्मेलन की नीति की रक्षा और दूसरी ओर काका कालेलकर के मत का आदर इन दोनों के बीच इस समय ऐसा ही समझौता हो सका। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति सेइस्तीफ़ा देकर भी काका जी हिन्दी के हित साधन में लगे रहेंगे और उनका जो ठोस काम होगा वह दूसरी रीतियों से हिन्दी के प्रचार में सहायक होगा। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में न रहते हुए भी सम्मेलन के साथ उनका सहयोग बराबर रहेगा।

मैं आशा करता हूँ कि जो बातें मैंने ऊपर लिखीं उनसे 'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' शब्दों के सम्बन्ध में सम्मेलन की नीति स्पष्ट हो गयी होगी।

प्रयाग, ८ कार्तिक १९९७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय प्रेमचंद जी की उपन्यास-कला

[लेखक — श्रीयुत हरिमोहन लाल वर्मा, बी० ए०, 'साहित्य-रत्न']

रुचि-वैचित्र्य संसार में सदा रही है और रहेगी। किसी को कोई वस्तु अच्छी लगती है तो किसी को कोई इष्ट है। विज्ञप्तियों के द्वारा दूसरों को अपने मतानुसार नहीं चलाया जा सकता, क्योंकि यह किसी प्रकार आवश्यक नहीं कि जो वस्तु किसी व्यक्ति (अथवा समूह) विशेष को रुचिकर प्रतीत होती है, वही उस प्रकार की वस्तुओं में सर्वश्रेष्ठ हो, और हो भी तो यह संभव नहीं कि लोग उसे दूसरों की आँखों से देखें। जिस कलाकार को एक प्रेम का प्रचारक समझता है, दूसरा उसे घृणा का प्रचारक मान सकता है। यह तो अपनी-अपनी सात्विक अनुभूति एवं नैतिक संस्कृति का फल है। किन्तु लोक-रुचि में केवल भिन्नता नहीं, एकता भी है, जिसके द्वारा किसी भी कार्य में सामूहिक सहयोग उपलब्ध होता है, और संसार में आये दिन सिर-फुटौअल न होकर उसका कार्य निर्बाध गति से चलता रहता है। यही लोकरुचि साहित्य क्षेत्र में भी अच्छाई और बुराई का अपना एक निश्चित आदर्श बनाते हुए लोकप्रियता का मान निर्धारित करती है, और तब उसके विपरीत कहने वाले की बात में कहीं कुछ औचित्य भी हो, तो जनता सुनने के लिये कम तैयार होती है।

प्रेमचंद का महत्व—स्वर्गीय प्रेमचन्द जी का मूल्य साहित्य के विद्यार्थी की दृष्टि में इसलिये अधिक नहीं कि उर्दू से हिन्दी में प्रविष्ट होकर उन्होंने अपने थोड़े से ही उदय-काल में हिन्दी के कथा-साहित्य में युगान्तर उपस्थित कर दिया, अथवा उन्होंने जीवन की अपनी बहुरंगी आलोचना से आज के साहित्य में एक नूतन भावधारा, एक मौलिक विचार-धारा का मार्ग प्रशस्त बनाकर उसकी अभिवृद्धि की, अथवा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पश्चात् साहित्याकाश को अपनी निर्मल-ज्योति से समुद्भासित करते हुए 'उपन्यास-सम्राट' की पदवी से विभूषित किये जाने वाले वे दूसरे 'चन्द्र' थे। प्रेमचन्द जी की इस अलौकिक सिद्धि के मूल में एक तथ्य है, जिसके अस्तित्व से ही वे साहित्य के प्रिय लेखक हैं, और जिसका पर्यवेक्षण साहित्य के विद्यार्थी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख आवश्यकता है, वह केवल इतना है कि उन्होंने अपनी कृतियों में कुछ ऐसी मार्मिक एवं कलात्मक सौंदर्य पूर्ण सामग्री प्रदान की है, जिसने साहित्यिक-हृदय को बरबस उनकी ओर खींच लिया है, और लेखक तथा पाठक के बीच एक आत्म-भाव आ उपस्थित हुआ है। उनकी वह सौंदर्य पूर्ण सामग्री विश्वास दिलाती है कि यदि कोई उन साधनों को जिनकी सहायता से प्रेमचन्द जी हिन्दी साहित्याकाश में इतने गौरवपूर्ण उच्चासन पर जा विराजे, कुछ देर के लिये निष्पक्ष भाव से तौलने का कष्ट उठाता है, तो वह इस निष्कर्ष से बहुत दूर नहीं रहेगा कि विशाल कही जाने वाली इस विभूति की कला वाह्य उपकरणों के कारण दूसरों की कला से भिन्न दिखाई देते हुए भी पर्दे के भीतर से अपने उसी रूप में झाँकती है, जिसे साहित्यिकों ने 'सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्' के नाम से जाना है।

उपन्यासकार के रूप में—प्रेमचन्द जी की प्रतिभा सर्वोन्मुखी है। वे उपन्यासकार, नाटककार, कहानी लेखक, और बहुत कुछ हैं। उनके लिखे उपन्यास एक-दो नहीं, लगभग एक दर्जन हैं; कहानियाँ उन्होंने सैकड़ों की संख्या में लिखी हैं, जो घर-घर की चीज़ है; नाटक भी उन्होंने कुछ लिखे हैं; किन्तु उपन्यास ही उनकी सम्पूर्ण सम्पत्ति हैं। यह सत्य है कि प्रेमचन्द जी की कहानियों में मार्मिकता विशेष है, और उनको सृजन के हेतु हिन्दी-लेखकों पर प्रभाव भी अधिक पड़ा, परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि उपन्यास की प्रकृत भूमि पर खड़े होकर उन्होंने मानव-जीवन को उसके सभी पहलुओं से देखा है, और अनुभवों एवं आवेक्षणों की सम्यक व्यंजना अपने उपन्यासों में ही की है। अतएव उपन्यासकार के नाते उन्होंने मानव-हृदय पर जो अनूठा प्रभाव व्यक्त किया है, साहित्य-क्षेत्र को जो अनमोल निधि प्रदान की है, वह कहानी लेखक होकर नहीं।

प्रेमचन्द की कला—प्रेमचन्द जी की कला जीवन से निकलती है और जीवन के लिये ही निकलती है। यद्यपि सुन्दरता कला का सर्व प्रधान उद्देश्य है, सुनीति उसकी ऐसी आवश्यकता नहीं, तथापि प्रेमचन्द जी के निकट उस कला का थोड़ा ही मूल्य है, जो व्यक्ति को पहले से कुछ ऊँचा न उठावे। अतीत के अहंकार से परे, वर्तमान में व्यस्त तथा भविष्य के चिन्तित प्रेमचन्द अपने विस्तृत समाज एवं विशाल राष्ट्र की व्यापक समस्याओं पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश डालते हुए 'हम ऐसे हैं' हमें होना ऐसा चाहिए का ही प्रतिपादन करते दिखाई देते हैं। उनके उपन्यासों में टालस्टाय की भाँति मानव के साथ पाप-पुण्य के संघर्ष में पुण्य की अध्यात्म-पूर्ण विजय है, तो डिकेन्स की भाँति भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में विभक्त सांसारिक जीवन की कलात्मक व्याख्या भी। किन्तु दुःख पर सुख की चिरन्तन सत्ता सिद्ध करते हुए प्रेमचन्द जी ने भारतीय दर्शन के 'समन्वयवाद' की ही आश्रय लिया है। मुस्लिम-संस्कृति का भी उन पर कुछ प्रभाव है, पर नवीनता के आवरण में। किन्तु ग्रामों में अलुण्य भारतीय-संस्कृति से अनन्य पुजारी प्रेमचन्द की प्रेरणा का मूल तो महात्मा गाँधी हैं, जिनके 'सत्य' और 'अहिंसा' में दीक्षित होकर ही वे अपनी कृतियों को निरे प्रचार के दोष से बचा कर विश्व की विभूति बना सके हैं। इस प्रकार प्रस्तुत किये गये देश-काल के हृदय-स्पर्शी चित्र इतिहास की सत्यता के पोषक तो हैं ही, कला की सुन्दरता से भी वंचित नहीं? इन चित्रों का गौरव तो इस बात में बढ़ गया है कि वे सामयिक होकर भी सर्व कालीन हैं। इस सम्बन्ध में कहा जाता है कि विधवा-विवाह तथा वृद्ध-विबाह की समस्यायें आगे चल कर समाज में न भी रहें, तो पूर्णा और निर्मला के नारी-हृदय की तड़पती हुई वेदना नहीं मिटाई जा सकती। सम्भवतः कला को अमरत्व प्रदान करने वाले इन तत्वों के अधार पर ही प्रेमचन्द जी भारतीय कथा-साहित्य के सर्वश्रेष्ट प्रतिनिधि कहे गये हैं, जिन्हें खोकर यह विश्वास नहीं रह जाता कि यह क्षति शीघ्र पूर्ण हो सकेगी।

कथावस्तु—इस चतुर चितेरे ने सभी प्रकार के दृश्यों के चित्रण में अपने को सिद्धहस्त प्रमाणित किया है। चारों ओर ज्ञान और अनुभव की आँखें दौड़ा कर प्रेमचन्द जी कथानक के जो उपकरण जुटाते हैं, उन्हें पाठक जानता-पहचानता है और उनका अच्छा स्वागत कर सकता है। अतएव कथावस्तु नितान्त शान्त और सरल गति से उसके अनुमान के साथ चली चलती है। यद्यपि प्रेमचन्द के जीवन की भेंट सरलता कभी-कभी कथावस्तु के सीधे से प्रारम्भ से उपन्यास में जान डालने वाले औत्सुक्य को किंचित् नष्ट कर देती है, किन्तु कथावस्तु की यह मन्थर गति कहीं-कहीं साधारण घटना के उपयोग में उनकी कमजोरी को छिपाने में भी सहायक होती है, और तब सामान्य घटना का असाधारण रूप ही दिखाई देता है। जीवन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटना के लेखक के रंगे-बिरंगे चित्र न केवल मनोरंजन करते हैं, अपितु अपनी निज की उज्ज्वलता से हृद्गत भावों का परिष्कार भी करते हैं। प्रेमचन्द जी की पर्यवेक्षण शक्ति अपने उस उच्च स्थान पर पहुँच गई है, जहाँ पहुंच कर वह मानव स्वभाव के किसी भी अंग पर अपना नियंत्रण रखने में थकती नहीं, और लोक-धर्म में सहायक अपनी इस क्षमता के कारण ही वे गार्हस्थ-जीवन से उठाने करते हुए भी अपनी कृतियों को 'पारिवारिक उपन्यास' होने से बचा गये हैं। यद्यपि प्रेमचन्द जी नागरिक जीवन के चित्रण में भी हार्डी-जैसा कौशल नहीं दिखा सके तथापि ग्राम्य जीवन के चित्रण में उन्होंने जिस सम्पन्नता का परिचय दिया है वह उनकी कृतियों की प्रधान शोभा है, और सचमुच वैसी अन्तर्दृष्टि संसार के किसी दूसरे उपन्यासकार में नहीं। दीनता का हाहाकार और बेबसी की तड़पन सुन कर प्रेमचन्द जी ने ग्रामों में पिसनेवाली जनता की प्रेमपूर्ण वकालत की है, और दिया है मानवता को जीवन का एक ज्योतिर्मिय सन्देश। 'रंगभूमि' का सूरदास तो उनकी सजीवता का एक बोलता हुआ चित्र है ही, उस सिद्ध औपन्यासिक के भविष्य का रेखा-चित्र उतारने वाला 'गोदान' ग्रामीण मनोविज्ञान का एक उत्कृष्ट निरूपण है। किसानों की दुर्दशा का एक दृश्य है :—

"द्वार पर मनों कूड़ा जमा है, दुर्गन्ध उड़ रही है; मगर उनकी नाक में न गन्ध है, न आँखों में ज्योति। सरेशाम से द्वार पर गीदड़ रोने लगते हैं; मगर किसी को ग़म नहीं। सामने जो कुछ मोटा-झोटा आ जाता है, वह खा लेते हैं, उसी तरह जैसे इञ्जिन कोयला खा लेता है। उनके बैल चूनी-चोकर के बगैर नाँद में मुंह नहीं डालते; मगर उन्हें केवल पेट में कुछ डालने को चाहिए, स्वाद में उन्हें कोई प्रयोजन नहीं। उसकी रसना भर चुकी है। उनके जीवन में स्वाद का लोप हो गया है। उनसे धेलेधेले के लिये बेईमानी करवा लो, मुट्ठी भर अनाज के लिये लाठियां चलवा लो। पतन की वह इन्तहा है, जब आदमी शर्म और इज़्ज़त को भी भूल जाता है।"

—'गोदान'

चरित्र-चित्रण—प्रेमचन्द जी आदर्शवादी भी हैं किंतु तथ्यवादी भी। उनका आदर्शवाद देवत्व के निकट पहुँचाने वाला भी नहीं, और न तथ्यवाद पतन के गर्त में गिराने वाला ही। इस प्रकार वे वास्तविक अर्थ में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनव आदर्शवादी हैं। 'कर्मभूमि' में मुन्नी के सतीत्व अपहरण की बात बताने के लिये उसकी एक चीत्कार ही बस होती है, और वहाँ यह एक गुण है, किन्तु 'सेवासदन' में विलासिता के वातावरण में रह कर भी वास्तविक पतन से सुमन के बचे रहने में जो समझदारों का सा संयम है, वह आदर्शवाद का अस्वाभाविक एवं अनावश्यक उपयोग ही है। प्रेमचन्द जी वस्तु और पात्र की एकता के अच्छे पक्षपाती हैं। उनके उपन्यासों में जहाँ कथा-वस्तु की रोचकता है, वहाँ चरित्र-चित्रण की मनोरमता आ ही गई है। यथार्थ में वर्णन के विन्दु पर ही उनकी घटनायें और उनके चरित्र आवर्त्तन करते हैं। अतएव बंकिमचन्द्र के विपरीत चलते हुए प्रेमचन्द जी का चरित्र-चित्रण वर्णन के आधार पर है, जिसके होते हुए बंकिम के भावुक प्रकृति-वर्णन अथवा संश्लिष्ट चरित्र-चित्रण का उनमें कम समावेश है, और यह इस हेतु कि हृदय-संघर्ष के लिये थोड़ा चाव प्रकट करते हुये उन्होंने जीवन-संघर्ष की विशालता पर ही अपनी दृष्टि रखी है कार्यों द्वारा आत्माभिव्यंजना करने वाली शरच्चन्द्र की प्राकृत प्रणाली प्रेमचन्द जी में वैसी ही निखरकर प्रकट हुई है, यद्यपि चरित्र-चित्रण में उन्होंने विश्लेषणात्मक या वर्णनात्मक प्रणाली का ही प्रधानतः आश्रय लिया है। मनोरमा किन सुन्दर शब्दों में और किस प्यारे ढंग से अपने अन्तर्जगत को बताती है, देखते ही बनता है :—

"हरिसेवक—सच ? यह तुमने क्या ? लौंगी कभी न आयेगी।

मनोरमा—आयेगी क्यों नहीं ? न आयगीं तो मैं जाऊँगी और उसे मना लाऊँगी।

हरिसेवक—तुम जाओगी ? रानी मनोरमा लौंगी कहारिन को मनाने जायेगी।

मनोरमा—मनोरमा लौंगी कहारिन का दूध पीकर बड़ी न होती आज 'रानी मनोरमा' कैसे होती ?"

-- 'कायाकल्प'

प्रेमचन्द जी के पात्र सजीव भी होते हैं, और स्वाभाविक भी, जिनके साथ पाठक का पूरा परिचय रहता है; क्योंकि वे न तो पशु हैं और न देवता, प्रत्युत हाड़-माँस के मनुष्य हैं। उनमें उत्थान-पतन का आकर्षक रूप है और दुख-सुख का दारुण आक्रमण प्रवृत्तियों का पारस्परिक द्वन्द है और दुर्बल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताओं की भी समन्वित विजय है, और इस लिये वे पड़ोस में ही कहीं मिल जाते हैं। 'कायाकल्प' की रानी देवप्रिया जैसे दो-एक पात्र अवश्य इस युग के नहीं प्रतीत होते, किन्तु वे भी इतने स्वाभाविक बना दिये गये हैं कि उनकी अपेक्षा भी नहीं की जा सकती। अपने पात्रों की भावनाओं एवं मनोवृत्तियों की व्याख्या वे स्वयं उतनी ही करते हैं जितनी आवश्यक होती हैं; पात्रों को सब प्रकार से अपना अथवा औरों का परिचय प्रदान करने का अवसर देकर ही वे सन्तुष्ट हो सकते हैं, किन्तु मानव-प्रकृति से सम्बन्ध रखने वाली कदाचित् ही कोई ऐसी बात हो, जिसको अपने पात्रों में अंकित करना यह सूक्ष्मदर्शी भूल जाय। संसार में ऐसी वस्तुओं की संख्या बहुत थोड़ी है, जो नितान्त अच्छी अथवा नितान्त बुरी हो; प्रत्येक वस्तु में गुण और दोष का होना प्रकृति का अचूक नियम है, जिसके पालन में प्रेमचन्द जी कभी पीछे नहीं रहते, और इसी हेतु उनके पात्र पाठकों के अन्तस्तल को छूते चलते हैं। 'ग़बन' की जोहरा वेश्या होते हुए भी— केवल स्त्री होने के नाते– अपनी ऐसी एक दूसरी स्त्री की सहायता के लिये हाथ बढ़ा ही देती है। अतः प्रेमचन्द जी के पात्र, चाहे वे किसी कोटि के हों, अपने चरित्र का जो प्रभाव मन पर छोड़ जाते हैं, वह जितना ही सुदृढ़ होता है उतना ही स्थायी भी। जहाँ वे हँसते हैं, वहाँ पाठक की प्रसन्नता भी नाच उठती है; जहाँ वे रोते हैं वहाँ वह भी आँसू नहीं रोक सकता। 'प्रेमाश्रम' का ज्ञानशंकर पक्का धूर्त है, किन्तु उसके वे अन्तिम शब्द हृदय पर कितनी चोट करते हैं। वह किसी की सहानुभूति का पात्र बन भले ही जाय, किन्तु वह ज्ञानशंकर की भाँति ठगने की अपेक्षा गायत्री की भाँति ठगाये जाने में ही सुख मानेगा। उच्छृंखलता से भी पाठक का सामीप्य प्राप्त करने वाला प्रेमचन्द का एक पात्र है:—

"इधर दो साल से वह बिल्कुल बेकार था। शतरञ्ज खेलता, सैर-सपाटे करता, माँ और छोटे भाइयों पर रौब जमाता। दोस्तों की बदौलत शौक पूरा होता रहता था। किसी का चेस्टर माँग लिया और शाम को हवा खाने निकल गये। किसी का पंपशू पहन लिया, किसी की घड़ी कलाई पर बाँध ली। कभी बनारसी फ़ैशन में निकले, कभी लखनवी फ़ैशन में। दस मित्रों ने एक-एक कपड़ा बनवा लिया तो दस सूट बदलने का साधन हो गया।"

—'गबन'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथोपकथन—कथोपकथन तो प्रेमचन्द जी के उपन्यासों का प्राण है। उनके इन उपन्यासों में विवरक के अंश कम रहते हैं, वार्तालाप के अंश अधिक। कारण कि प्रेमचन्द जी को बातचीत का वह महत्व विदित है, जिसके द्वारा उपन्यास-लेखन में सुविधा होने के साथ रोचकता भी पूरी आ जाती है। अपनी सजीवता, उपयुक्तता एव स्वाभाविकता के कारण उनकी कथोपकथन-प्रणाली पाठक के मन में जाकर बस ही नहीं जाती, उसे रस से भी भर देती है। किसान-परिवार का कैसा जीता-जागता चित्र खींचा है :—

"बलराज - क्यों दे आयें ? किसी के दबैल हैं ?

विलासी—नहीं, तुम तो लाट-गवर्नर हो। घर में भुनी भाँग नहीं उस पर इतना घमण्ड !

बलराज—हम दरिद्र सही, किसी से माँगने नहीं जाते ?

विलासी—अरे जा बैठ, आया है बड़ा जोधा बन के। ऊँट जब तक पहाड़ पर नहीं चढ़ता तब तक समझता है मुझसे ऊँचा और कौन होगा। जमींदार से बैर करकें गाँव में रहना सहज नहीं है। (मनोहर से) सुनते हो महापुरुष, कल कारिन्दा के पास जाके कह सुन आओ।

मनोहर—मैं तो अब न जाऊँगा।

विलासी—क्यों ?

मनोहर—क्यों क्या, अपनी खुशी है। जायें क्या अपने ऊपर तालियाँ लगवाने है।"

कथोपकथन पात्रों के चरित्र की मनोरंजक एवं मनोवैज्ञानिक व्याख्या करता, और इस अच्छे ढंग से कि पात्रों की मनोवृत्ति के साथ घटना आप ही प्रगतिशील बनती जाती है। अपने प्रारम्भिक उपन्यासों में प्रेमचन्द जी ने पात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति समझाने के लिये स्वगत भाषण का उपयोग किया है, किन्तु बाद में उन्होंने नाटकीय तत्व का सम्मिश्रण करते हुए अपने कथोपकथन में नूतन प्राण-प्रतिष्ठा की है। विशेषता तो यह है कि कथोपकथन जिस भाव अथवा रस से सम्बन्ध रहता है, उसका संचार वह पात्र और पाठक के हृदय में समान रूप से करता चलता है, और इस कारण यह आक्षेप ऐसा सारगर्भित नहीं कि प्रेमचन्द जी उपदेशक होकर पात्रों को उनके दुख-सुख में स्वजन की भाँति अपनाते नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सोफ़िया—आपकी धार्मिक स्वाधीनता में तो बाधा नहीं डालते ?

इन्दु—नहीं, उन्हें इतना अवकाश कहाँ है !

सोफ़िया—तब तो मैं आपको मुबारकबाद दूँगीं।

इन्दु—अगर किसी कैदी को बधाई देना उचित हो, तो शौक से दो।

सोफ़िया—बेड़ी प्रेम की हो तो ?

इन्दु—ऐसा होता, तो मैं स्वयं तुमसे बधाई देने का आग्रह करती। मैं बँध गई, वह मुक्त हैं। मुझे यहाँ आये तीन महीने होने आते हैं ; पर तीन बार से ज़्यादा नहीं आये, और वह भी एक-एक घंटे के लिये। × × × और सब कामों के लिये फ़ुर्सत है। अगर फ़ुरसत नहीं है, तो सिर्फ़ यहाँ आने की। मैं तुम्हें चिताए देती हूँ, किसी देश-सेवक से विवाह न करना। नहीं तो पछताओगी। तुम उससे अवकाश के समय की मनोरंजन-सामग्री मात्र रहोगी।"

—'रंगभूमि'

वातावरण—प्रेमचन्द जी के पूर्ववर्ती और परवर्ती उपन्यासों को दो पृथक विभागों में बाँटने में वातावरण जितना सहायक हुआ है, उतना कोई अन्य अंग नहीं। नवाबराय के नाम से हिन्दी में उनका पहला उपन्यास 'प्रेमा' जो पीछे फिर 'निर्मला' के नाम से विख्यात हुआ, और उसके बाद दो अन्य उपन्यास 'प्रतिज्ञा' और वरदान' समाज-सुधार के वातावरण में ही पले हैं, परन्तु उनके दस उपन्यासों में विभाजक रेखा 'सेवासदन' से लेकर 'रियलिज़्म' से अनुप्राणित उनके अन्तिम उपन्यास 'गोदान' तक ग्राम्य-जीवन का वातावरण प्रमुख है, और वह व्यक्ति, परिवार और समाज, ग्राम, नगर और देश के बीच होता हुआ एक क्रमिक सृष्टि है। 'प्रेमा' में विधवा-विवाह का वातावरण बनाने में असाधरण घटनाओं की कल्पना का एक दोष है, क्योंकि विवाह में अंग्रेज़ी उपन्यासों का अन्त समीचीन होते हुए हिन्दू-जीवन में विवाह से सच्ची समस्याओं का आरम्भ होने के कारण बात उल्टी है, परन्तु अब तो विजातीय प्रभाव से नारी के प्रेम की यह प्रच्छन्नता बहुत है।

भाषाशैली—प्रेमचन्द जी की भाषा सब प्रकार साहित्यिक होते हुए जनसाधारण की चलती हुई हिन्दी है, जिसकी प्रौढ़ता के प्रथम दर्शन के साथ उनकी ख्याति भी लोक में व्याप्त हो गई ; प्राचीन रूढ़ियों के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें कुछ आवश्यक विराम चिन्हों का ही प्रयोग हुआ है। यद्यपि कहीं-कहीं उनके पात्रों का लहज़ा खटकता भी है, तथापि वह सामान्यतः सीधी-सादी है, और है गठी हुई। उनकी भाषा-शैली में कृत्रिमता की गंध कहाँ, जब वह आपसे आप उनकी लेखनी से निकलती चलती है, और हिन्दी की परिधि में रह कर ही पात्र के अनुरूप अपना नया स्वरूप निर्धारित करती है। उसमें ओज भी रहता है और रस भी। कभी-कभी तो वह मनोभावों को साकार रूप देते हुए उपमा या उत्प्रेक्षा के द्वारा कवित्वपूर्ण बन जाती है। सादगी में नाना भाँति के शृङ्गार लाना लेखक की बहु विशेषता है, जो उर्दू के सौभाग्यशाली साहचर्य द्वारा आई है, और जिसने प्रेमचन्द्र की भाषा को उपन्यासों का आदर्श बनाया है।

(१) "अगर यह मौक़ा न मिला तो और ऐब निकाल लिये जायँगे—भाई, यह तेल तो रंडियों के लगाने लायक हैं, हमें तो सादा तेल चाहिए। जनाब, यह साबुन नहीं भेजा है, अपनी अमीरी की शान दिखलाई है। ये कहार नही, यमदूत हैं, जब देखिए सिर पर सवार। लालटेनें ऐसी भेजी हैं कि आँखें चमकने लगती हैं, अगर दस-पाँच दिन ऐसी रोशनी में बैठना पड़े तो आँखें फूट जायँ"।

(२) "छाती चौड़ी, गर्दन तनी हुई, ऐसा जान पड़ता था, मानो देह में ईंगुर भरा हुआ था। उसके चेहरे पर वह गम्भीरता और कोमलता न थी, जो शिक्षा और ज्ञान से उत्पन्न होती है। उसके मुख से वीरता और उदण्डता झलकती थी। आँखें मतवाली, सतेज और चंचल थीं। बाग का कलमी पौधा नहीं, वन का सुदृढ़ वृक्ष था।"

और भी—

(१) "हमका तो इ मौजा माँ तीस बरसें होय गईं। तब से दस कारिन्दे आये पर बराबर कोऊ ने न रोका। गाँव भर के मवेसी मजे से चरत रहे।"

(२) "दीपकों के प्रकाश में, संगीत के स्वरों में, गगन की तारिकाओं में, उसी शिशु की छवि थी, उसी का माधुर्य था, उसी का नृत्य था।"

सुन्दर मुहावरों तथा अमर उक्तियों की छटा तो प्रेमचन्द जी ने ऐसी दिखाई है कि उनका अपना एक अच्छा ग्रन्थ बन सकता है। इन सूक्तियों में जीवन का जो गहन अनुभव भरा है, वह कितना पूरा, कितना पक्का है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रेम वसन्त समीर है, द्वेष ग्रीष्म की लू।"

"जीवन में ऐसे अवसर आते हैं जब निराशा में भी हमें आशा होती है।"

"धन का देवता बिना आत्मा का बलिदान पाये प्रसन्न नहीं होता।"

"बाहर की आग केवल देह का नाश करती है, जो स्वयं नश्वर है भीतर की आग अनन्त आत्मा का सर्वनाश कर देती है।"

व्यंग्य-परिहास के क्षेत्र में भी प्रेमचन्द जी कम नहीं।

"हाँ, यह दूर की सूझी। घोड़े को रातिब दिया ही क्यों जाय? घास काफ़ी है। यही न होगा कूल्हे पर हड्डियाँ निकल आवेंगी। किसी तरह मर-जी कर कचहरी तक ले ही जायगा, यह तो कोई नहीं कहेगा कि वकील साहब के पास सवारी नहीं है।"

निष्कर्ष—साहित्य में क्या-क्या वांछित है और उसके प्रिय लेखक ने वह कहाँ तक दिया है, इसका कुछ विवेचन कर लेने के पश्चात् पहुँच इस निष्कर्ष पर हो जाती है कि गुण दोषमय इस संसार में प्रेमचन्द जी के उपन्यास दोषशून्य न होते हुए भी गुणों से इतने भरे हैं, जितने से भली प्रकार गर्व किया जा सकता है। हँस कर या रो कर यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि बँगला के रवि बाबू और मराठी के गड़करी से गाहे-बगाहे उपन्यास की दौड़ में आगे बढ़ जाने वाला यह लेखक हिन्दी की ग़रीबी और उससे भी आगे नाशुक्री से बच कर थोड़ी-सी साँस ले सकता तो उसने परिमाण और प्रकार दोनों में 'बहुत' लिखा होता। सन्तोष के लिये अब तो इतना ही अलम् है कि 'रामचरित-मानस' के अमर रचयिता गोस्वामी तुलसीदास और 'चन्द्रकान्ता' की ऐयारी और तिलिस्म में फँसा कर भोजन भुला देने वाले बाबू देवकीनन्दन खत्री के बाद प्रेम-कहानी प्रेमचन्द के रूप में हिन्दी-जगत् की हृदय-कहानी को भारतीय-साहित्य की अमर कहानी बनाने वाले मुंशी धनपतिराय के ही पाठकों की संख्या देवनागरी में बढ़ी-चढ़ी है, और पाठक भी ऐसे, जिन्होंने अपने प्रेमचन्द के ही लिये राष्ट्र-भाषा सीखी-पढ़ी।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113073
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

भक्तिकाल में निर्गुणोपासना

[लेखक—श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल]

(संवत् १३७५-१७०० वि०)

इस समय देश में मुसलमानों का शासन दृढ़ हो चला था। हिन्दू अपने पूर्व गौरव और पौरुष से हताश होने लगे थे। देश में धार्मिक संघर्ष का वातावरण उत्पन्न हो गया था। इसी संघर्ष के फलस्वरूप धर्म की भावना भक्ति के रूप में भारत के कोने-कोने में प्रवाहित होने लगी। कवियों ने वीरता का गान गाने के लिए उपयुक्त अवसर न समझकर भक्ति-पूर्ण रचनाएँ करनी प्रारम्भ की। इनकी बानिओं से हिन्दुओं में शान्ति, ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति की भावना का उदय हुआ। सर्वसाधारण जनता ईश्वर की भक्ति की ओर आकृष्ट होने लगी। अन्त में भक्ति-रस का इतना प्राबल्य हुआ कि हिन्दू-जनता ही नहीं, मुसलमान जनता पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ा। कई हिन्दू-मुसलमान संतों का आविर्भाव हुआ। इन सन्तों ने भक्ति-पूर्ण रचना का श्रोत बहाकर पीड़ित जनता को आश्वासन दिया और धर्म-भावना के संघर्ष से लोगों का ध्यान हटाकर शांति और एकता की ओर आकर्षित किया।

सन्तों के द्वारा उपासना के दो भिन्न मार्गों का आविर्भाव हुआ। एक था निर्गुणोपासना और दूसरा सगुणोपासना। सगुणोपासक भक्तों ने राम और कृष्ण को अवतार मानकर उपासना का मार्ग चलाया। निर्गुणोपासकों ने एकमात्र ईश्वर और ब्रह्म की उपासना का मार्ग प्रशस्त करके हिन्दू-मुसलमान दोनों के लिए एक सामान्य भक्तिमार्ग का अवलम्बन किया। एकेश्वरवाद, ब्रह्मवाद या पैग़म्बरी और ख़ुदा-वाद की ओर इनका विशेष झुकाव था। यही उपासना "निर्गुणोपासना" नाम से प्रचलित हुई। निर्गुण पथ में ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं था। ईश्वर की भक्ति के लिए प्रत्येक मनुष्य का समान अधिकार है, यही इसका सिद्धांत था। बङ्गाल में चैतन्य महाप्रभु और महाराष्ट्र में नामदेव ने इस मार्ग को प्रशस्त करने में विशेष सहायता पहुँचाई। निर्गुणवाद की वंश-परम्परा में इनका नाम प्रारम्भ में लिया जाता है। किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे इस मार्ग को कबीरदास ने प्रशस्त किया । इन सन्तों ने ब्रह्मज्ञान को उपासना का क्षेत्र मानकर सगुणोपासना का खण्डन भी किया ।

निर्गुणोपासकों में भी दो दल थे । एक दल का प्रतिनिधित्व कबीरदास ने किया । दूसरा दल प्रेममार्गी या सूफ़ी सन्तों का था । प्रेममार्ग या सूफ़ी-मार्ग को मुसलमान सन्तों ने अधिक व्यापक बनाया । कल्पित कहानियों द्वारा प्रेममार्ग को महत्व प्रदान किया गया और लौकिक प्रेम के बहाने ईश्वरी-प्रेम का बोध कराया गया । इन कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रायः दोहा और चौपाई छन्दों का व्यवहार किया है । सूफ़ी मार्गवाले कवियों में मलिक-मुहम्मद जायसी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है ।

पहली शाखा के निर्गुणोपासक कवियों की रचनाएँ ब्रह्मज्ञान तथा एकेश्वर-वाद का संदेश देती थीं । उनमें निम्नलिखित प्रभाव प्राप्त होता है—

निर्गुण भावना—के धार्मिक विचारों का कोई स्थायी रूप नहीं मिलता । इस भावना के कवियों का सब से बड़ा ध्येय हिन्दू और मुसलमानों में ऐक्य स्थापित करना रहा है । सामान्य भक्तिमार्ग की खोज में हिन्दू और मुसलमान-धर्म के विचारों का एक सामंजस्य दिखाई देता है । इसकी रूप-रेखा स्थिर न होने का एक कारण यह भी है कि इसके प्रवर्त्तक और अनुवर्त्तक भी प्रायः सन्त ही रहे हैं, जिनका ज्ञान अनुभवों और सत्संगों तक ही सीमित रहा है ।

ईश्वर की भावना—भक्तों की इस भावना में पूर्ण सामंजस्य नहीं प्राप्त होता है । एक ओर एकेश्वरवाद और दूसरी ओर एक ब्रह्म की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है । वास्तव में इस भावना का एकेश्वरवाद न तो एक ब्रह्मवाद ही है और न पूर्ण रूप से ख़ुदा-वाद ही । कबीर ने निर्गुण और सगुण दोनों से भिन्न एक सबसे बड़ी सत्ता मानी है । कबीर के मतानुसार ईश्वर रूप और आकार से परे है । विश्व भर में वह व्याप्त है । अणु-अणु और कण-कण में उसकी सत्ता विद्यमान है । उसका अनुभव मात्र ही किया जा सकता है । वर्णन करने का प्रयास सफल नहीं हो सकता । चर्म-चक्षु से उसे देखा भी नहीं जा सकता ।

गुरू की भावना—गुरू के बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा को परमात्मा तक पहुँचाने के लिए गुरू की आवश्यकता है। निर्गुण पंथ में गुरू का बहुत बड़ा महत्व है। कहीं-कहीं तो गुरू को ईश्वर से भी उच्च माना गया है। भगवान भूखे के लिए भोज्य हैं और गुरू भोजन देने वाला है। इस प्रकार गुरू का महत्व ईश्वर से भी बड़ा दिया गया है। कबीर का कहना है—

"गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पायँ ?"

गुरू की यह भावना सम्भवतः मुसलमानों के संपर्क से प्राप्त हुई है। यह बिल्कुल पैग़म्बर से मिलती-जुलती है। इस मार्ग में 'अनहद' के साथ गुरू का भी विशेष महत्व माना गया है।

प्रतीक की भावना---निर्गुण ब्रह्म होने के कारण किसी वस्तु के सहारे ब्रह्म का रहस्य नहीं समझाया जा सकता। सब रूपक अपूर्ण ठहरते हैं। मौखिक ढंग से तो किसी प्रकार समझाया भी गया, परन्तु जब लिखने की आवश्यकता प्रतीत हुई तो निर्गुणवादियों को किसी प्रतीक का आश्रय लेना आवश्यक हो गया। अतएव स्त्री और पुरुष को प्रतीक मानकर ही स्थान-स्थान पर इस भेद के रहस्य को स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है। कबीर आदि सभी कवियों में यह भाव मिलता है। स्त्री आत्मा और पुरुष परमात्मा का प्रतीक माना गया है।

माया की भावना—यह भावना दो प्रकार की मानी गई है। एक सत्य और दूसरी असत्य। असत्य रूप का ही निरूपण संतकवियों में प्रायः मिलता है। माया की नारी के रूप में सदा निंदा की गई है। माया आत्मा को कुमार्ग पर ले जाने की कोशिश करती है। इससे बचने के अनेक साधन सन्त कवियों ने बतलाये हैं। यदि देखा जाय तो निर्गुणवाद के भक्त, भक्त होने के सिवा चरमसीमा के ज्ञानी भी थे। कृष्णोपासक और रामोपासक की भाँति ये केवल भक्तिवादी ही नहीं थे। योगाभ्यास पर भी इन्होंने सुन्दर विचार प्रकट किये हैं।

सूफी प्रभाव—सूफ़ी विचारों का प्रभाव संत-समुदाय पर कुछ कम नहीं पड़ा। प्रेम के लिए कितने कष्ट सहन करने पड़ते हैं, यह ज्ञान सूफ़ी-मार्ग में मिलता है। इसका आभास जायसी आदि की रचनाओं में स्पष्ट है। सूफ़ी मत में स्त्री को ईश्वर और आत्मा को पुरुष रूप में माना गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू-मुसलिम-प्रभाव—संत कवियों की कविताओं में हिन्दू-मुसलिम-प्रभाव का भी प्राचुर्य है। उनमें सामाजिक रूढ़ियों की कड़ी आलोचना की गई है, साम्प्रदायिकता का खंडन किया गया है और साम्यभावना, एकता तथा मेल-जोल पर ज़ोर दिया गया है। मंदिर-मस्जिद, तथा पूजा-नमाज़ के विरुद्ध आवाज़ उठाकर उनमें एक ईश्वर के प्रेम का उपदेश दिया गया है। यह प्रभाव हिन्दू-मुसलिम संसर्ग से उत्पन्न हुआ था।

हठयोग की भावना—संतों ने हठयोग पर काफ़ी ज़ोर दिया है। हठयोग पर सुन्दर सामग्री सन्त कवियों की रचनाओं में जहाँ-तहाँ बिखरी हुई है। इगला, पिंगला आदि नाड़ियों के नाम बार-बार रचनाओं में मिलते हैं। कबीर ने हठयोग को महत्व दिया है। दादू, पलटू आदि सन्तों की रचनाओं में भी इस भावना का प्रचुर समावेश है। आत्मा की शुद्धि के लिए इसे आवश्यक बतलाया गया है।

रहस्यवाद की भावना—यह भावना बड़ी विचित्र है। आज कल के कुछ साहित्यिकों ने छायावाद को रहस्यवाद का नाम दे दिया है। सच तो यह है कि कुछ सन्त कवि यह समझते थे कि उन्होंने ब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया है। उसका रूप उन्होंने अपने आत्म-चक्षुओं से देख लिया है। इसी ब्रह्म की भावना को वह अपनी कविता द्वारा जनता पर प्रकट करना चाहते थे। उनकी यह भावना गूँगे के गुड़ की-सी थी। वे समझते और अनुभव करते थे। उस अनुभूति को साधारण लोगों तक संकेतों द्वारा पहुँचाने का प्रयत्न भी करते थे; किन्तु वह जनता के समझ के बाहर की चीज़ थी। ब्रह्म के जिस रहस्य को उन्होंने रूपकों द्वारा वर्णन करने का प्रयत्न किया; वह प्रायः एक प्रकार से अस्पष्ट ही बना रहा। इसी भावना को रहस्यवाद का नाम दिया गया।

हो सकता है कि प्रारम्भ के कुछ कवियों को ब्रह्म का साक्षात्कार हो गया हो; परन्तु बाद के संत कवियों ने जो कुछ लिखा वह केवल प्रारंभिक कवियों के आधार पर था। इस प्रकार रहस्यवाद की छाया पर अनेक संतों ने पद लिखे हैं। इस रहस्यवाद की आड़ में अस्पष्ट भावों को प्रकट करने की कुछ प्रणाली-सी उस समय चल पड़ी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तों का प्रभाव—पहले कहा जा चुका है कि संत कवियों ने हिन्दू और मुसलमानों में साम्य स्थापित करने का भरसक प्रयत्न किया। परन्तु इसमें उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली। जातीय और धार्मिक बंधन इतने दृढ़ थे कि उन्हें तोड़ने में सन्त कवि सफल नहीं हो सके। कम-से-कम जो लोग ऊँचे वर्ण के थे उन पर निर्गुणवाद का प्रभाव नहीं पड़ा। हाँ, अन्य जाति के लोगों पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा। पंजाब में गुरू नानक अपने ध्येय में कबीर की भाँति पूर्ण सफल हुए। पंजाब के सिक्खों में जाति गत भेदभाव बहुत ही कम है।

अधिक प्रचार न होने के कारण–निर्गुणवाद के अधिक प्रचार न होने के कई कारण हैं। उनमें से कुछ ये हैं–(१) हिन्दुओं के जातीय भेद-भावों की अधिकता और अंधविश्वास से सन्तों का सन्देश कम लोगों तक पहुँच सका। (२) निर्गुण-ब्रह्म की उपासना साधारण मनुष्य नहीं कर सकता। इसके लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता है। (३) हठयोग की साधना साधारण गृहस्थ नहीं कर सकता था। उसके पास इतना समय नहीं था। (४) कृष्ण-भक्ति और राम-भक्ति के प्रचार ने इसके पैर नहीं जमने दिये। (५) आगे उतने ऊँचे आदर्शोंवाले सन्त कवि नहीं रहे। भोलीभाली जनता पर कुछ सन्त नामधारियों ने अपना प्रभाव फैलाना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि वास्तविक सन्तों के ज्ञानोपदेश की ओर से भी लोगों की रुचि हटने लगी।

कवि

कबीरदास---इनका जन्म संवत् १४५६ विक्रमी में काशी में होना माना जाता है। कहा जाता है कि इनका जन्म एक ब्राह्मण की विधवा कन्या से हुआ था। वह अपने इस बच्चे को लहरतारा के ताल के पास फेंक गई थी। नीरू नामक एक जुलाहे की निगाह, उधर से जाते हुए, इस बच्चे पर पड़ गई। वह उसे उठाकर अपने घर ले गया। उसी ने उसका पालन-पोषण किया। यही बालक बड़ा होने पर कबीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

बालकपन से कबीर साधु-सन्तों की संगति में पड़ गये और इनके हृदय में रामनाम का अनुराग उत्पन्न हो गया। उन्हीं दिनों स्वामी रामानन्द का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाव चारों ओर व्यापक रूप से फैल रहा था। रामनाम के महत्त्व का खूब प्रचार हो रहा था। काशी में रामानन्द के प्रभाव को जानकर कबीर की यह इच्छा हुई कि स्वामीजी से दीक्षा लेकर उनके शिष्य बन जायँ। कहा जाता है कि एक दिन रात्रि में वे पंचगङ्गा-घाट की सीढ़ियों पर जा बैठे। स्वामी रामानन्द उधर से ही प्रतिदिन गंगास्नान करने जाया करते थे। रात्रि में उन के पैर से कबीर के ठोकर लग गई। स्वामीजी ठिठक गये और बोले—बचा, राम-राम कह। बस, कबीरने इसी को गुरु-मंत्र समझकर अपने को रामानन्द का शिष्य घोषित कर दिया। इस सम्बन्ध में एक पद प्रचलित है—

'काशी में हम प्रगट भए, रामानन्द चिताये।'

कुछ लोग इनको अर्जी के पीर शेख़ तक़ी का शिष्य भी मानते हैं। किन्तु कबीर ने जिस आदर के साथ गुरू का नाम लिया है उसी आदर के साथ शेख तक़ी का नहीं। इसलिये यह कहना संदेहात्मक है कि कबीर शेख़ तक़ी के शिष्य थे। जैसे—

'घट घट है अविनासी, सुनहु तक़ी तुम शेष'

इस में संदेह नहीं कि कबीर पर हिन्दू-धर्म का पूरा प्रभाव पड़ा है। यहाँ तक कि वे 'राम नाम' से प्रभावित हैं। स्वामी रामानंद उन दिनों भक्ति का एक ऐसा मार्ग चला रहे थे जिसमें जाति-पाँति का कोई भेद नहीं था। इसीलिये कबीर का रामानन्द का शिष्य होना स्वीकार किया जाता है। यद्यपि अभीतक यह सिद्ध नहीं हो सका है कि वे रामानन्द के ही शिष्य थे। क्योंकि रामानन्द और कबीर के सिद्धान्तों में विशेष अन्तर है। कबीर ने गुरू का महत्त्व ईश्वर से भी बढ़कर माना है।

'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पायँ।'

ऐसी दशा में यह कैसे माना जा सकता है कि कबीर को रामानन्द का का शिष्य भी मान लिया जाय और शिष्य अपने गुरु के चलाये मार्ग और सिद्धान्तों के विपरीत प्रचार्य-कार्य भी करे। जो कुछ भी हो; यह विषय विवादग्रस्त है।

कबीर ने हिन्दू-मुसलमान संतों का सत्संग खूब किया था। इससे इनकी ज्ञानवृद्धि में पूर्ण विकास हुआ। कहा जाता है कि वे पढ़े-लिखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्कुल नहीं थे। वे स्वयं मौज में आकर भजन बनाते और गाते थे। बाद को इनकी बानियों के इनके प्रधान शिष्य धर्मदास ने लिखा है। यद्यपि कबीरदास रामानन्द की शिष्य-परम्परा में माने जाते हैं, किन्तु उन्होंने अपना एक अलग ही पंथ चलाया, जो कबीर पंथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने दूर-दूर देशाटन भी किया, अनेक व्यक्तियों ने उनसे दीक्षा ली और बड़े-बड़े नगरों में कबीरपंथियों के मठ निर्मित हुए। इनके पंथ में अधिकांश रूप से ब्राह्मणेतर जाति के हिन्दू तथा मुसलमान दोनों सम्मिलित हुए।

कबीरदास की लिखी हुई दर्जनों पुस्तकें मानी जाती हैं, जिनमें कबीर का बीजक, बानी, पद तथा रमैनी आदि मुख्य हैं। इनके पदों तथा बानियों के संग्रह 'कबीर-बचनावली' तथा 'कबीर-ग्रंथावली' के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं। 'संतबानी-संग्रह' में इनके समस्त ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं।

कबीरदास की रचनाओं की भाषा बड़ी तीव्र और प्रभावशाली है। इसमें खड़ीबोली, अवधी, पूर्वी और ब्रजभाषा का मेल है। हिन्दू-मुसलमानों की सामाजिक रूढ़ियों के ये कट्टर विरोधी थे। इनकी रचना तीव्र आलोचनाओं से भरी पड़ी है। भाव-विचार की दृष्टि से इनकी रचना में बड़ी गम्भीरता है। अद्वैतवाद की ओर इनकी प्रवृत्ति तीव्र थी। इनके राम साकार नहीं, निराकार थे, जिन्हें ब्रह्म का नाम दिया जाता है। ज्ञानमार्ग के जो विचार इन्होंने प्रकट किये हैं ये सब हिन्दू-शास्त्रों के हैं। माया, जीव, ब्रह्म तथा आत्मा के सम्बन्ध में इनके दार्शनिक विचार बड़े ऊँचे हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं से यह स्पष्ट कर दिया है कि इन्हें ब्रह्म का साक्षात्कार हो गया था।

इस समय हिन्दी में कबीर के दार्शनिक विचारों का महत्व बढ़ गया है। यह एक सर्वश्रेष्ठ रहस्यवादी कवि माने जाते हैं। कवीन्द्र रवीन्द्र की रचनाओं पर भी इनके दर्शन तथा रहस्यवाद का प्रभाव पड़ा है। आलोचनाएँ भी कबीर की रचनाओं पर काफ़ी लिखी जा चुकी हैं और लिखी जा रही हैं। श्री रामकुमार वर्मा ने 'कबीर का रहस्यवाद' पुस्तक में इनके दार्शनिक विचारों का सुन्दर विवेचन किया है। कबीर की उल्टवांसियों का भी दार्शनिक अर्थ निकालने का उद्योग हिन्दी के विद्वान कर रहे हैं। इस प्रकार अब यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि कबीर अपने समय के सर्वश्रेष्ठ कवि थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जाता है कि कबीर की मृत्यु संवत् १५७५ विक्रमी में मगहर में हुई है। इनके कुछ छन्द देखिये—

चकिया सब रागन की रानी।
जेहि की चकिया बन्द परी है तेहि की सबै भुलानी।
भोर होइ ते छघटी पहिले घर्र-घर्र घर्रानी।

* * *

तन सराय मन पाहरू, मनसा उतरी आय।
कोउ काहू का है नहीं, देखा ठोंकि बजाय॥
गांठी होय सो हाथ कर, हाथ होय सो देहि।
आगे हाट न बानियाँ, लेना होय सो लेहि॥
पपिहा पन को ना तजै, तजै तौ तन बेकाज।
तन छूटै तौ कछू नहिं, पन छूटे है लाज॥
कमोदनी जलहर बसै, चन्दा बसे अकास।
जो जाही की भावना, सो ताही के पास॥

धर्मदास—ये कबीर के प्रधान शिष्य थे। जाति के वैश्य और बांधवगढ़ के रहनेवाले थे। बालकपन से ही भक्ति की ओर इनकी विशेष रुचि थी। यह एक बार तीर्थयात्रा से लौट रहे थे। रास्ते में कबीर से भेंट हो गई और उसी समय से ये उनके शिष्य हो गये। संवत् १५७५ विक्रमी में कबीर की मृत्यु के पश्चात् उनकी गद्दी के ये हक़दार बने। इन्होंने ही कबीर की कविता लिपिबद्ध की थी।

धर्मदास बड़े चतुर थे। कबीर-पंथ के प्रचलन में इनका विशेष हाथ था। कहा जाता है कि कबीर के नाम से मिलनेवाले ६१ ग्रन्थों में कुछ इनके भी लिखे हुए हैं। कबीर के समान कठोरता और तीखापन इनकी कविता में नहीं मिलता। पूर्वी भाषा का प्रयोग इनकी रचनाओं में अधिक मिलता है। एक उदाहरण देखिये—

झरि लागै महलिया गगन घहराय।
खन गरजै, खन बिजुरी चमकै, लहरि उठै सोभा बरनि न जाय।
सुन्न महल से अमृत बरसै, प्रेम अनंद है साधु नहाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुली केवरिया, मिटी अँधियरिया, धनि सतगुरु जिन दिया लखाय।
धरमदास बिनवै करजोरी, सतगुरु चरन में रहत समाय।

गुरू नानक—इनका जन्म लाहौर ज़िले के तिलवंडी गाँव में संवत् १५२६ में, होना माना जाता है। ये जाति के खत्री थे। कबीर, धर्मदास आदि की तरह ये भी बालकपन से ही साधु-प्रकृति के थे। इनका विवाह संवत् १५४५ में हुआ और श्रीचन्द और लक्ष्मीचन्द दो पुत्र भी हुए। सांसारिकता से यह बचपन से ही उदासीन रहते थे। इनके सम्बन्ध में बहुत-सी कथाएँ प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि एक बार किसी व्यवसाय के लिए इनके पिता ने इन्हें कुछ रुपये दिये, जिनको किसी व्यवसाय में न लगाकर इन्होंने ग़रीबों को बाँट दिया। यह त्यागी थे और कबीर की भाँति इन्होंने निर्गुणोपासना का पंजाब में बहुत प्रचार किया। इनको अपने मत के प्रचार में पूर्णतया सफलता मिली। इन्होंने घर-बारका त्यागकर देशाटन करके अनुभव प्राप्त किया। अपने जीवन के अनुभवों और साधु सतसंगों पर ही इनका ज्ञान अवलम्बित था। इनके लिखे हुए भजन 'गुरु ग्रन्थसाहब' में संग्रहीत हैं। इसका कुछ भाग सरल हिन्दी-भाषा में है। भाषा में पंजाबी की पुट अधिक है। 'गुरूग्रन्थ साहब' सिक्खों का धर्म-ग्रन्थ है।

ये उदासी सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। एक उदाहरण देखिये—

जो नर दुख में दुख नहिं मानै।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके कंचन माटी जानै।
नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना।
हरस सोक ते रहै नियारो, नाहिं मान अपमाना।
आसा मनसा सकल त्यागि कै, जग ते रहै निरासा।
काम क्रोध जेहिं परसै नाहिंन तेहि घर ब्रह्म निवासा।
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्हीं तिन्ह यह जुगुति पिछानी।
नानक लीन भयो गोबिन्द सों ज्यों पानी सँग पानी।

दादूदयाल—अहमदाबाद (गुजरात) में संवत् १६०१ में इनका जन्म माना जाता है। इन्होंने 'दादू पंथ' नाम का एक नया पंथ चलाया। इनकी मृत्यु के बाद इनके शिष्यों ने इस मत का अधिकाधिक प्रचार किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तव में यह कबीर के ही पथावलम्बी थे। इनकी जाति के संबंध में मतभेद है। कुछ लोग इन्हें ब्राह्मण और कुछ इतर जाति का मानते हैं। कहते हैं कि लोदीराय ब्राह्मण को यह साबरमती नदी में बहते हुए मिले थे। उसी ने इनका पालन-पोषण किया। इनके गुरू कौन थे इसका कुछ पता नहीं लगता। अन्य सन्तों की भांति देशाटन इन्होंने भी किया। जयपुर से २० कोस दूर नराना स्थान पर संवत् १६६० में इनकी मृत्यु हुई। यहाँ दादू-पंथियों का प्रधान अड्डा है।

दादू की वाणी दोहों में है, कहीं-कहीं पर पद भी मिलते हैं। नराना में इनके कपड़े और पोथी अब तक रक्खी हुई हैं। अरबी और फ़ारसी के शब्द इनकी रचना में यथेष्ट मात्रा में मिलते हैं। अपनी रचनाओं में इन्होंने प्रेमभाव अधिक सरसता से व्यक्त किया है। कबीर की भाँति विवाद में इन्हें रुचि नहीं थी। सतगुरु-महिमा, जाति पाँति का निराकरण और आत्म-बोध इनकी बानियों का संदेश है। एक उदाहरण देखिये—

भाई रे ऐसा पंथ हमारा।
द्वै पख रहित पंथ गह पूरा, अबरन एक अधारा।
बाद विवाद काहु सौं नाहीं मैं हूँ जग में न्यारा।
सम दृष्टी सूँ भाई सहज में आपहिं आप बिराचा।
मैं, तैं, मेरी यह मति नाहीं, निरवैरी निरबिकारा।
काम कल्पना कहे न कीजै, पूरन ब्रह्म पियारा।
यहि पथ पहुँचि पार गहि 'दादू' सो तत सहज संभारा।

सुन्दरदास—संवत् १६५३ में जयपुर राज्य के द्यौसा नामक ग्राम में इनका जन्म हुआ था। कहा जाता है कि ६ वर्ष की अवस्था में ही ये दादू-दयाल के शिष्य हो गये थे। ये जाति के बनिया थे। संवत् १६६० तक अर्थात् दादूदयालजी के मृत्युकाल तक ये उनके साथ रहे और मृत्यु के उप-रान्त द्यौसा लौट आये। काशी में रहकर इन्होंने संस्कृत, व्याकरण और पुराणादि का अध्ययन किया। संस्कृत के साथ ही ये फ़ारसी के भी अच्छे विद्वान थे। सम्वत् १७४६ में सांगानेर में इनका देहावसान हुआ।

सम्भवतः ज्ञानमार्गी कवियों में इनके समान विद्वान दूसरा नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी रचना में साहित्यिक गुण प्रचुरमात्रा में मिलते हैं। यह अविवाहित थे। इनकी रचनाओं की भाषा मँजी हुई ब्रजभाषा है। इनका काव्य अन्य सन्तों की भाँति गीतों और दोहों आदि तक ही सीमित नहीं है, प्रत्युत उसमें सुन्दर सवैये और कवित्त भी मिलते हैं। 'सुन्दर विलास' इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसमें अलंकारों का भी सुन्दर प्रयोग हुआ है। यह स्पष्टवादी और ऊँचे विचार के साधु थे। एक छन्द देखिये—

गेह तज्यो अरु नेह तज्यो अति खेह लगाय के देह सँवारी।
मेह सहे सिर, सीत सहे तन, धूप समै जो पँचागिनि बारी।
भूख सही रहि रूख तरे, पर सुन्दरदास सबै दुख भारी।
आसन छांड़ि के कासन उपर आसन मारयो, पै आस न मारी।

* * *

सुनत नगारे चोट बिगसै कमल मुख,
अधिक उछाह फूल्यो मात है न तन में।
फेरै जब सांग तब कोऊ नहिं धीर धरै,
कायर कँपायमान होत देख मन में।
कूदि के पतंग जैसे परत है पावक माँहि,
ऐसे टूटि परैं बहु सावत के गन में।
मारि घमसान करि सुन्दर जुहारै श्याम,
सोई सूरबीर रुपि रहै जाय रन में।

मलूकदास—संवत् १६३१ में इनका जन्म कड़ा ज़िला इलाहाबाद में खत्री कुल में हुआ था। इनका मृत्युकाल संवत् १७३९ में माना गया है। 'रत्नखान' और 'ज्ञानबोध' नामक इनकी दो पुस्तकें प्रसिद्ध हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों में इन्होंने ज्ञानप्रचार किया। फ़ारसी और अरबी के शब्द इनकी रचनाओं में काफ़ी मात्रा में मिलते हैं। सुन्दरदास जैसी भाषा तो इनकी नहीं है; परन्तु अनेक सन्त कवियों की अपेक्षा सरल और सरस अवश्य है। सुन्दरदास की भाँति ये विद्वान भी नहीं थे। इनके बहुत से गीत खड़ीबोली में भी हैं। कहीं-कहीं पर इन्होंने बड़ी भावपूर्ण कविता की है। सुनते हैं कि इन्होंने अपने जीवन में बहुत-सी करामातें की थीं। एक पद देखिये—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तो अजपा जपु मन मेरे।
सुर नर असुर टहलुवा जाके मुनि गंधर्व हैं जाके चेरे।
दस औतार देखि मत भूलो, ऐसे रूप घनेरे।
अलख पुरुष के हाथ बिकाने, जब तें नैननि हेरे।
कह मलूक तू चेत अचेता, काल न आवै नेरे।

सुथरादास—(सं० १६४०) ये मलूकदास के शिष्य थे।

वीरमान—(सं० १६६०) ये ऊधोदास के शिष्य और दादू के समकालीन थे। ये सतनामी पंथ के माननेवाले भी थे।

हरिदास—(सं० १७००) ये नारायणी पंथ के प्रवर्त्तक थे।

लालदास—(सं० १७००) इन्होंने लालदासी पंथ की स्थापना की। ये अलवर-निवासी थे।

स्वामी प्राणनाथ—(सं० १७००) ये बुंदेलखंड के सब से प्रसिद्ध सन्त थे। 'कुल जय स्वरूप' नामक इनका एक ग्रंथ मिलता है।

रज्जब—(सं० १७१०) ये दादूपंथी थे।

दरिया साहब—(सं० १७३१) इन्होंने भी एक पंथ अपने नाम पर चलाया।

अक्षर अनन्य—(ये सं० १७१० में वर्तमान थे) यह छत्रसाल के समकालीन थे। छत्रसाल इनके शिष्य थे। इन्होंने योग और वेदान्त पर कई सुन्दर ग्रंथ लिखे हैं।

ग़रीबदास—(सं० १७७४) इनकी रचना १७ हज़ार पदों में कही जाती है।

रामचरण—(सं० १७७५) इन्होंने रामसनेही मत को चलाया।

स्वामी नारायणसिंह—(सं० १७८१) इन्होंने शिवनारायणी मत को चलाया।

सहजानन्द—(सं० १७३७) नारायणी मत इनके द्वारा ही आरम्भ होता है। इस पंथ का साहित्य गुजराती में मिलता है।

गाजीदास —(सं १७७७) ये जाति के चर्मकार थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर दिये गये सन्तों के अतिरिक्त शेख़ फ़रीद (सं० १२३०), शेख़ फ़रीद सानी (सं० १५१०), बाबालाल (सं० १७००), हरिदास (सं० १७००), सुंदरदास (सं० १७१०), धरनीदास (सं० १७१३), पारीसाहब (सं० १७२५), बुल्ला साहब (सं० १७५०), गुलाल साहब (सं० १७५०), केशवदास (सं० १७५०), चरनदास (सं० १७६०), बालकृष्ण नायक (सं० १७६४) आदि सन्त भी ज्ञानोपदेशक सन्त कवियों में मिलते हैं।

सबकी बोली (वार्षिक १-४-०)

(राष्ट्रभाषा प्रचार का मासिक)

हर महीने की ता० १५ को प्रकाशित होता है।

सम्पादक—श्री काका कालेलकर
श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल

इसमें राष्ट्रभाषा प्रचार संबंधी सब प्रकार की बातें आती हैं।

हिंदी प्रेमी, राष्ट्रभाषा प्रचारक, राष्ट्र संगठन में दिलचस्पी रखनेवाले सेवक और खास करके राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थी तथा सब के काम की चीज है।

पारिभाषिक शब्दों के गढ़ने में भी यह मासिक अपनी ओर से यथाशक्ति प्रयत्न करेगा।

हिंदुस्तान भर के राष्ट्रभाषा प्रेमी इसके द्वारा अपने विचार तथा अनुभव राष्ट्र के सामने रख सकेंगे। लिखो:—

व्यवस्थापक,
"सबकी बोली",
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-गद्य-साहित्य का पूर्वरूप

[लेखक--श्री दिनेशनारायण उपाध्याय 'साहित्य-रत्न']

संसार के साहित्य में गद्य का जन्म पद्य के उपरान्त ही हुआ। संस्कृत गद्य साहित्य और अंग्रेजी गद्य साहित्य इसके प्रमाण स्वरूप माने जा सकते हैं। पद्य की रसात्मकता ही इसका मुख्य कारण है। वेद संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ हैं और इनकी ऋचायें पद्यात्मक हैं न कि गद्यात्मक। इस भावना को हृदयस्थ कर जब हम हिन्दी साहित्य पर दृष्टिपात करते हैं तब हमें अपभ्रंश काल में साहित्य का रूप पद्यमय ही मिलता है न कि गद्यमय। कविता ने उस समय जो बौद्धिक विकास ग्रहण किया था वह नैतिक, दार्शनिक, धार्मिक और सामाजिक भावनाओं से प्रेरित होकर अग्रसर हुआ। हिन्दी कविता की पिठिका संस्कृत पर अवलंबित थी। इस परम्परा के अनुसार कविता का ध्येय स्थूल रूप से सूक्ष्मरूप की ओर अग्रसर होना था। अर्थात् कविता की प्रगति भौतिक विचारों को अध्यात्मिक रूप देने की ओर थी। पर प्रश्न यह है कि क्या गद्य का भी यही क्रम था? गद्य का रूप हमें सर्व-प्रथम विवरणात्मक रूप में ही प्राप्त होता है। यह विवरणात्मक प्रणाली एक प्रकार से स्थूल रूप में थी जो हिन्दी में सं० १४०७ में सर्वप्रथम हमें मिलती है।

हिन्दी गद्य का आरम्भ गोरखनाथ के समय से माना जाता है। इस प्रकार हमें विवरणात्मक गद्य का प्रथम रूप महाराज पृथ्वीराज के समय में आज्ञापत्रों की भाषा में मिलता है जो अब व्याख्या के बिना किसी की समझ में आ ही नहीं सकता। उदाहरण के लिए हम तत्कालीन राजपूताने की भाषा का उदाहरण उपस्थित करते हैं—"श्री श्री चित्रकोट महाराजधीराज तपेराज श्रीरावर जी श्री श्री समरसी जी वचनातुदाअमा आरज ठाकुर रुसीकेस कस्यगाम मोइरो षेडो थानेम आकी दो लोग भोग सुदीया आवा दानकर करजो जामाषत्री सो आनां दान करजेरू थारे ही दुबे घवा भकननाथ...संवत ११४५ जेष्ठसुदी १३" इसका अर्थ यह है। "महाराजाधिराज आदेशकर्त्ता श्रीरावल जी श्री श्री समर सिंह जी श्री श्री चित्तौर नरेश की आज्ञा से आचारज ठाकुर ऋषिकेश को (दिया गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुईखेरे का ग्राम तुम को दान में दिया गया। उसको हराभरा और आबाद करो। जमाखातिर से उसको हराभरा और आबाद करो। वह तुम्हारा है। दुबे धवा मुकुन्द नाथ द्वारा आज्ञा हुई। मिती जेठ सुदी १३ सम्बत ११४५।" यह भाषा लगभग संवत १२३५ में राजपूताने में प्रयोग की जाती थी। इसके अन्तर्गत हमें प्रादेशिकता का पूर्ण प्रभाव प्राप्त होता है। इसी कारण इसका समझना ही कठिन है। इस प्रकार के ताम्र-लेख जो उस समय लिखे गए थे, अब खोज की सामग्रीही रह गये हैं और जहाँ तक हमें स्मरण है इस प्रकार के ८ या ९ लेख नागरी प्रचारणी की प्रथम खोज की रिपोर्ट में मिलते हैं।

इससे प्रकट है कि पृथ्वीराज के समय के इन पत्रों के अतरिक्त उस समय की कोई भी सामग्री प्राप्य नहीं है। पर हिन्दी के प्रथम गद्य लेखक गोरखनाथ जी की रचनाओं में हमें गद्य की तत्कालीन धारा का आभास मिलता है। गोरखनाथ एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे और इसलिए उनके ग्रन्थ गद्य में ही नहीं वरन् पद्य में भी हैं। आचार्य शुक्लजी का मत है कि गोरखनाथ जी के नाम से गोरखगणेश गोष्ठी, महादेव गोरख सम्वाद आदि ग्रन्थ उनके शिष्यों के ही लिखे हैं, गोरख के नहीं। हमें केवल श्रुति परम्परा के अनुसार इनका उनके शिष्यों द्वारा संग्रहीत किया जाना स्वीकार करना युक्तिसंगत नहीं समझ पड़ता—क्यों कि जो व्यक्ति हठयोग का ग्रन्थ संस्कृत में लिख सकता है उसे भाषा में ग्रन्थ लिखने में कौन सी कठिनाई पड़ सकती है। वे एक धर्म के प्रचारक थे, उनके समक्ष एक विस्तृत वायुमंडल था जिसके ऊपर वे अधिकार जमाना चाहते थे। डा० सुनीत कुमार चटर्जी ने भी "वंगभाषा की उत्पत्ति और विकास" में गोरख पंथियों के संबंध में यही विचार प्रगट किये हैं। आशय यह है कि ये लोग बौद्ध महायान शाखा के सहजिया सम्प्रदाय के थे। जिससे यह सिद्ध होता है कि यदि बौद्धों की जातक की कहानियाँ गद्य में हो सकती तो तत्कालीन भाषा में गोरखनाथ जी की कृतियाँ जो इस मत के आचार्य थे उस समय की प्रयोग की भाषा में अवश्य पाई जा सकती है।

गोरखनाथ की भाषा ब्रजभाषा मिश्रित है, और संस्कृत के भी इसमें शब्द यत्र-तत्र मिलते है। उदाहरण के लिए "स्वामी तुमै तो सतगुरु अम्है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौ सिष सवद एक पुछिबा दया करि कहिवा, मनन करिबा रोस। पराधीन उपरांति बंधन नांही। सुआधीन उपरांति मुकुति नांही। चाहि उपरांति पाप नांही। चाहि उपरांति पुनि नांही। कर्म उपरांति मल नांही। दुष उपरांति सवधि नांही। निरदोष उपरांति सवधि नाहीं। सुसवद उपरां इतिपोष नांही। अजपा उपरांइति जाप नांही। घोर उपरांइति मंत्र नाहीं। नारायन उपरांति ईसर नांही। निरंजन उपरां इति ध्यान नांही। इति गोरखनाथ जी को सिसरि परवाण ग्रन्थ संपुरण समायता।" इस शैली का कारण एक मात्र धर्म प्रचार करना ही था। इसी कारण बहुत से संस्कृत के शब्दों को भी इन्होंने अपने भाषा की लहर में रङ्ग लिया।

संवत् १६०० के लगभग का एक ग्रंथ श्रृङ्गार रस मंडन मिलता है, जिसके लेखक हैं महात्मा विठ्ठल स्वामी, इसकी भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है क्योंकि ये वैष्णव मत के प्रचारक और ब्रज मण्डल के निवासी थे। एक बात विचारणीय है कि इस भाषा में हमें एक चलतापन मिलता है। जैसे—"प्रथम की सखी कहत है जो गोपीजनके चरण विषै को दासी करि जो इनके प्रेमामृत में डूबके इनके मेदहास्य से जीतै हैं, अमृत समूह ता करि निकुंज विषै श्रृङ्गाररस श्रेष्ठ रचना कीनो सो सम्पूर्ण होतभइ।" इस समय के उपरान्त हमें चन्द-छन्द वरनन की महिमा नाम का एक ग्रंथ लगभग स० १६२७ का मिलता है। जिसमें पण्डित विष्णुदास या गंगाभाट ने खड़ीबोली का गद्य लिखा है। इसी समय हमें नन्ददास कवि द्वारा ब्रजभाषा गद्य में 'विज्ञान प्रकाशिका' और 'नासकेतपुराण भाषा' नामक दो ग्रन्थ मिलते हैं।

इन छोटे-छोटे ग्रन्थों को हम उतना महत्व नहीं दे सकते पर ये रचना-काल के क्रम में आते हैं। इस प्रणाली के अनुगमन करनेवाले लोगों में गोकुलनाथ जी विशेष आदरणीय हैं जिन्होंने "चौरासी और दो सौ बावन वैष्णवों की बार्ता" नामक ग्रन्थ लिखे हैं। इनके नाम से ज्ञात होता है कि यह वैष्णव भक्तों का जीवन चरित है। पर यह कहना पड़ता है कि इसमें गद्य का परिस्कृत रूप दिखाई पड़ता है, और एक सुव्यवस्था का आभास मिलता है। यदि यह ब्रजभाषा में न होता तो खड़ीबोली गद्य के प्रारंभिक ग्रंथों में रखा जा सकता। जैसे "श्री गुसांई जी के सेवक एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटेल की वर्ता। सो वह पटेल वैष्णवराज नगरमें रहे तो हतो वा पटेल वैष्णव दो वेटा हते, और एक स्त्री हती और वह बेटा की एक स्त्री हती ऐसे सात मनुष्य गुसांई जी के शरण आये और ठाकुर जी पधार के सेवा करन लागे।"

गद्य लेखन की प्रणाली में आगे चलकर इस प्रकार के ग्रन्थों को कुछ समय तक नहीं मिलते पर यह अवश्य है कि गद्य के इतिहास को ध्यान में रखते हुए हमें अनेक स्थलों पर प्रयुक्त गद्यांश भी वांछनीय है, चाहे गद्य के पुस्तक या पद्य या नाटक में। इसी विचारधारा के अनुसार मैं अब गद्य की मीमाँस करूंगा। जिस समय हमें धार्मिक काल में सं० १६१२ के आसपास केशवदास का व्यक्तित्व हमारे समक्ष आता है। उनके कविप्रिया ग्रन्थ में यत्र तत्र गद्य का रूप उसी प्रकार मिलता है। सं० १६५७ के लगभग नाभादास जी ने 'अष्टछाप' नामक पुस्तक गद्य में लिखी जिसकी भाषा इस प्रकार है "तब श्री महराज कुमार प्रथम वशिष्ठ महराज के चरन छुइ प्रनाम करत भये"। इसी के लगभग सं० १६८० में जटमल कवि की पुस्तक मिलती है जिसका नाम है "गोराबादल की कथा"। यही खड़ी-बोली का प्रथम मान्य ग्रन्थ है। उदाहरण के लिए हम यहाँ कुछ वाक्य देते हैं—

"श्रीराम प्रसन्न होये। श्री गणेसायनमः। लक्ष्मीकांत। है वात कीसा चित्तौड़ गढ़ के, गोरा बादल हुआ है। जिनकी वर्ता की किताब हिन्दवी में बनाय कर तैयार करी है। सुक संपत दायक सकल सीद बुंद सहेत गनेस॥ वीगण वीजर लाबीन सो वै लोनुज परमेस॥.........गोरा बादल की कथा गुरू के वस सरस्वती के मेहरबानगी से पुरन भई तीस वास्ते गुरू कूँ सरस्वतीकूं नमस्कार करता हूँ। ये कथा सोलह से अस्सी के साल में फागुन सुदी पूनम के रोज बनाई। ये कथा में दो रस है, वीर रस वो सिनगार रस है सो काया।" इस उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी गद्य का वास्तविक आधुनिक रूप का सूत्रपात जटमल ने ही किया था और इनशा की हिन्दवी की छुट कोई नवीनता न थी। उपरोक्त गद्य केवल मोर्चों से युक्त ही है—मोर्चा साफ किया गया कि इस रूप निखर जा सकता है। और इसी कार्य को समय के प्रभावन ने न मेरे साहित्य में वरञ्च संसार के अनेक साहित्यों ने किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्ति काल के उपरान्त हमें १६९० के लगभग अनेक ऐसे लेखक मिलते हैं जिनकी कुछ-कुछ गद्य की रचनायें उनके पद्य के ग्रन्थों के साथ है और वे हैं चिन्तामणि त्रिपाठी, कुलपति जी, देव जी। इनमें देव जी के ऊपर थोड़ा सा अंगुल्यनिवेष करना आवश्यक है। आपने "शब्द रसायन" में जिस गद्य का प्रयोग किया हैं वह उल्लेखनीय है। आपने गद्य में एक विशेष चमत्कार उत्पन्न किया है—"महाराज राजाधिराज व्रजजन समाज विराजमान चर्तुदश-भुवन विराज वेदविधि विद्या सामग्री साम्राज श्री कृष्णदेव देवाधिदेव देवकी-नंदन जदुदेव यशोदानंदन हृदयानंद कंसादिनिकंदन वंसावतंस अंसावतार सिरोमणि विष्ट पत्रपनिविष्ट। गरिष्टपद त्रिविक्रमण सुरसिसखा संगमन राधिका रमण सेवकवादायक गोपीगोपकुल सुखदायक गोपालवाल मंडली नायक अघ-घायक गोवरधन धरण महेन्दमोहायहरण दीन जन सज्जन सरण ब्रह्म विस्मय विस्तरण परब्रह्म जगज्जन्मरण दुःख संहरण अघमोहरण विश्वंभरण विमल-जसः कलिमल विनासन गरुडासन कमलनयन चरणकमलजल त्रिलोकीपावन श्री वृन्दाविहरण जय जय" वास्तव में गद्य का आनंद आता है। बाण-भट्ट की सानुप्रास शैली का अनुकरण हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम देव जी ने ही किया जो बाद को भारतेन्दुकाल में प्रेमघन जी द्वारा अपनाई गई है।

देव जी के बाद स्फुट लेखकों में श्रीपति, दास, वंसीधर आदि कवियों का नाम उल्लेखनीय है। पर जब सं० १७९४ के "रसपियूषनिधि" ग्रन्थ रचा गया तब इसमें अनेक काव्य अंगों के ऊपर सोमनाथ जी ने प्रकाश डाला जो अवलोकनीय है। इस प्रकार स्फुट लेखकों में आपने ही गद्य को सबसे अधिक स्थान दिया है। इसके उपरान्त १८१० में "चातक की पात स्याही की परम्परा" नामक खड़ीबोली में ग्रन्थ मिलता है पर इसके लेखक का पता नहीं चलता। इसके बाद हमारा नया साहित्य अपने से उचित स्थल से अलग होता है और यह समय तब आता है जब फोर्ट विलिम कालेज की स्थापना होती है और इस प्रकार हम इसी काल को हिन्दी गद्य का पूर्व काल मान सकते हैं। जो लोग भारतेन्दु युग से गद्य का पूर्ण विकास मानते हैं वे भारतेन्दु के पहले के लेखकों को भी पूर्वकाल ही में रखते हैं।

इस विचार से पूर्व भारतेन्दु काल के लेखों में लल्लूलाल, सदल मिश्र, जानकी प्रसाद और सरदार कवि की ओर ध्यान देना आवश्यक है। लल्लू-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल ने जो गद्य की शैली चलाई थी उसमें ब्रजभाषा का पूर्ण मिश्रण रहता था। प्रेमसागर इसका एक उदाहरण है सदल मिश्र ने अपने ग्रन्थ को प्रौढ़तर भाषा प्रदान की और यह खड़ीबोली में ही लिखने वाले लेखक थे। नासिकेतोंपाख्यान इनका छोटा सा ग्रन्थ है। पंडित जगन्नाथप्रसाद ने सं० १८७४ में 'रामचन्द्रिका' की एक प्रशंसनीय टीका ब्रजभाषा में लिखी जिसमें एक एक छन्द के अर्थ पाँच, छ, पेज में लिखा।

सरदार कवि ने सं० १९०२ में सूर के पृष्ट कूटी की एक अपूर्व टीका की है जिसमें कूट को कूट कूट कर सरलकर दिया है। इसके अतरिक्त कविप्रिया और रसिक प्रिया की भी टीकायें की हैं। इस प्रकार इनकी विद्वत्ता में कोई कमी न थी भाषा भी इनकी अच्छी थी। या रसिकप्रिया के पढ़े रति मति अति बढै और सब रसविरस कहा नव रस तिनकी रीति जानै और स्वारथ कहा याके पढ़े..............।

इस क्रमिक विकासोन्मुख गद्य को इसी समय शिवप्रसाद सितारे हिन्द और राजा लक्ष्मण सिंह ने भी प्राण दान दिया—यदि शिवप्रसाद जी ने खिचड़ी भाषा बनाकर गद्य की पुस्तकें तैयार कराई तो लक्ष्मणसिंह ने शकुंतला आदि में शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग किया जैसे "महाराज जब मैं इसका सायक पर दृष्टि करता हूँ और फिर आपको धनुष चढ़ाये देखता हूँ तो साक्षात ऐसा ध्यान वेधता है।............मानो......शिवजी शूकर के पीछे जाते हैं।" इन्हींके पश्चात मुंशी सदासुखलाल और इंशा अल्ला खां का समय आता है—स्वामी दयानन्द सरस्वती का कार्य पूर्व भारत के काल में विशेष महत्व रखता है। स्वामीजी भाषा धर्मोपदेशकी थी और इसने तत्कालीन वायुमंडल में बड़ा कार्य किया। जो स्तुत्य है।*

*** मेरे इस लेखमें नागरी प्रचारणी की रिपोर्टों और कुछ अन्य सामग्री का उपयोग किया गया है।—लेखक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर और तुलसी के कृष्ण

[लेखक, श्री ब० ल० सराफ़ बी० ए०, 'साहित्यरत्न']

सूर और तुलसी का व्यक्तित्व एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है। एक हैं कृष्ण-भक्त और दूसरे राम-भक्त। अपनी-अपनी भक्ति-पद्धति से प्रेरित होकर सूर ने कृष्ण-काव्य की और तुलसी ने राम-काव्य की रचना की। सूर का व्यक्तित्व "सूरसागर" में और तुलसी का "राम-चरित-मानस" में प्रगट हुआ है। इस प्रकार "सागर" और "मानस" भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यक्तित्व के प्रतीक हैं।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि क्या अपने अपने क्षेत्र के दोनों भक्त कवियों ने एक दूसरे के क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयत्न किया है या नहीं? पहिले के विषय में उत्तर देने के लिये उपयुक्त सामग्री प्राप्त नहीं है। अतएव यह नहीं कहा जा सकता कि "सूरसागर" के रचयिता ने राम-काव्य भी रचने का प्रयत्न किया। हां दूसरे के सम्बन्ध में उत्तर देने के लिये "श्री कृष्ण गीतावली" पर्याप्त है। इस रचना के आधार पर कहा जा सकता है कि तुलसीदास जी ने राम-काव्य को प्रधानता देते हुए कृष्ण-काव्य की ओर भी अपनी रुचि प्रगट की।

तुलसीकृत "श्री कृष्ण गीतावली" गीति-काव्य है। जिस प्रकार "सूर सागर" के काव्य-नायक श्री कृष्ण हैं, उसी प्रकार "श्री कृष्ण गीतावली" के नायक भी कृष्ण ही हैं। दोनों की भाषा ब्रजभाषा है। "सूरसागर" में श्री कृष्ण सम्बन्धी रचना को विनय, बालकृष्ण, मुरली माधुरी, रूप माधुरी और भ्रमर गीत इन पाँच रत्नों में विभाजित किया जा सकता है।

तुलसी की "श्री कृष्ण गीतावली" में भी आद्योपान्त अध्ययन करने के पश्चात् यह प्रगट होता है कि उसमें भी विनय, बालकृष्ण, मुरली माधुरी, रूप माधुरी और भ्रमर गीत संबंधी छंद प्राप्त होते हैं किन्तु थोड़ी संख्या में।

यद्यपि "श्री कृष्ण गीतावली" और "सूर सागर" की रत्न संख्या में विषमता है तो भी उनकी उत्कृष्टता में समता है। प्रस्तुत कथन को सिद्ध करने के लिये दोनों के एक-एक रत्न को लेकर अलग-अलग तुलनात्मक विवे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन करना आवश्यक है। "सूर सागर" का प्रथम रत्न विनय है। उसमें महात्मा सूरदास ने श्री कृष्ण जी की प्रार्थना की है। इस विनय में दीनता की प्रधानता है। "श्री कृष्ण गीतावली" में महात्मा तुलसीदास जी ने भी "गोपाल-गोकुल-वल्लभी-प्रिय-गोप-गोसुत वल्लभ" से विनय किया है। उक्त पद में विनय कर्त्ता की श्रद्धा, नम्रता और सेव्य-भाव का आभास मिलता है।

सूर ने अपने आराध्यदेव-कृष्ण की बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था से संबंध रखने वाली छोटी से छोटी बातों का वर्णन बड़ी कुशलता पूर्वक किया है। तुलसीदास जी का बाल-लीला-वर्णन उतना सूक्ष्म नहीं है क्योंकि उनका क्षेत्र सीमित है। किंतु सूर और तुलसी के कृष्ण एक से हैं। यदि सूर के कृष्ण चपल, उपद्रवी और हठीले हैं तो तुलसी के कृष्ण भी कम चपल और नटखट नहीं हैं। जिस प्रकार सूर के कृष्ण को नहाना, उबटन लगाना, दूध पीना इत्यादि एक अड़चन मात्र मालूम होती हैं उसी प्रकार तुलसी के कृष्ण को भी उक्त बातें झंझट मात्र प्रतीत होती हैं। यदि सूर की "यशोदा" कृष्ण जी को "कजरी को पय पियहु लाल तेरी चोटी बाढ़े" था प्रलोभन देकर दूध पिला देती हैं तो तुलसी की यशोदा "छाड़ि यह लालन ललित लरिकाई, ऐहैं सुत देख बारि कालि तेरे व्याह की बात चलाई" का प्रलोभन देकर दूध पिलाती तथा उबटन आदि लगाती हैं। जिस प्रकार सूर के "कृष्ण" चोटी न बढ़ने पर "मैया कबहिं बढ़ेगी चोटी, किती बार मोंहि दूध पियत भइ है अजहूँ यह छोटी" कहकर माता यशोदा से प्रश्न करते हैं उसी प्रकार तुलसी के "कृष्ण कब ऐहे देखवार" कह कर यशोदा जी से प्रश्न करते हैं। माखन चोरी के अभियोग में सूर के कृष्ण साफ कह जाते हैं:—"मैया मैं नाहीं दधि खायो।" उसी प्रकार तुलसी के कृष्ण भी दूसरे के घर जाकर उपद्रव करने के अभियोग में सख़्त ताक़ीद पाने पर अभियोग को अस्वीकार करते हैं कि "मैं नहिं जान पराये धामहिं।"

रूप माधुरी और मुरली माधुरी में सूर और तुलसी दोनों ने श्री कृष्ण जी के स्वरूप तथा मुरली की मधु वर्षिणी तान का वर्णन किया है। सूर की गोपियाँ कृष्ण के बारे में कहती हैं—

देखो माई सुँदरता को सागर।
बुध विवेक बल पार न पावत मगन होत मन नागर।

तुलसी की गोपियां उनकी सुंदरता का वर्णन इस प्रकार करती हैं:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखि सखी हरि बदन इंदु पर।
चिक्कन कुटिल, अलक अवली छबि, कहिं न जाय शोभा अनूप वर।

अन्तिम रत्न भ्रमर गीत है। दोनों कवियों ने गोपियों की कारुणिक विरहावस्था, उद्धव संदेश, गोपियों के उलाहने का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। विरहाग्नि-हत गोपियां बहुत ही दुखित हैं। वे सदैव श्री कृष्ण जी की चिन्ता में मग्न हैं। उद्विग्नमना गोपियों को श्री कृष्ण जी के अभाव में प्रायः सब बातें विपरीति मालूम पड़ती हैं। जैसे—शीतल चन्द्रमा विरहाग्नि को बढ़ाने वाला, मन बहलाने वाली कुँजें बैरिन, प्यारे नेत्र शत्रु प्रतीत होते हैं। इस प्रकार के वर्णन "सूरसागर" और "श्री कृष्ण गीतावली" दोनों में हैं। सूर के शब्दों में :—

बिनु गोपाल बैरिन भई कुँजे,
तब ये लता लगति अति शीतल अब भई विषम ज्वाल की पुंजें!
प्राननाथ तुम बिन ब्रजवाला ह्वै गईं सबै अनाथ,
व्याकुल भई मीन सी तलफति छन छन मींजत हाथ।
ऊधो इतने मोंहि सतावत,
कारी घटा देख बादर की दामिन दमकि डुगवति।

तुलसीदासजी की कृष्ण गीतावली में इनका वर्णन इस प्रकार है :—
शशि ते शीतल मोंकों लगे माई तर्रानि,
याके उये बरति अधिक अंग अंग
सब विपरीति भये माधव बिनु हित जो करत अनहित की करनि।

गोपियों को आश्वासन देने के लिये उद्धव भेजे जाते हैं। जिस प्रकार सूर की "गोपियां" उद्धव का आदर करती हैं उसी प्रकार तुलसी की "गोपियां" भी अपने प्रेमी के दूत का उचित सम्मान करती हैं। यदि सूर की गोपियां—"उधो को उपदेश सुनो किन कान दै, सुँदर श्याम सुजान पठाये मान दै" कहती हैं तो तुलसी की गोपियां भी "मेरे जान और कछु न मन गुनिये कूबरी खनकान्ह कही जो मधुप सो सोई सिख सजनी सुचित्त दै सुनिये" कह कर आपस में एक दूसरे से उद्धव-संदेश सुनने का आग्रह करती हैं। उद्धव संदेश से गोपियों को निराशा होती है। उन्हें उस संदेश की वास्तविकता पर संदेश होता है। सूर की गोपियां "उधो जाय बहुरि सुनि आवहु कहा कह्यो है नंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमार" के द्वारा अपना संदेश प्रकट करती हैं। ठीक इसी प्रकार तुलसी की गोपिका "मधुकर कान्ह कहाते न होहीं" के द्वारा अपना संशय व्यक्त करती हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि तुलसी और सूर के कृष्ण-काव्य में बहुत समानता है। दोनों में एक ही सूझ और प्रदर्शन पाया जाता है। यह बात अवश्य है कि तुलसी का वर्णन उतना सूक्ष्म नहीं है जितना कि सूर का परन्तु जितनी भी मात्रा में तुलसी ने कृष्ण काव्य लिखा है वह भाषा, भाव और शैली की दृष्टि से अत्यन्त सफल और सुंदर है।

———

सम्मेलन का पूना अधिवेशन

हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध

इस वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २९ वां वार्षिक अधिवेशन महाराष्ट्र प्रान्त के पूना नगर में पौष सौर १०, ११, १२, १३ संवत् १९९७, तदनुसार ता० २५, २६, २७, २८ दिसम्बर १९४० को हिन्दी साहित्य के यशस्वी लेखक और हितैषी तथा संयुक्तप्रान्तीय सरकार के भूतपूर्व शिक्षामंत्री श्री सम्पूर्णानन्द जी के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ होगा। आपके पधारने से सम्मेलन प्रभावशाली होगा और राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति तथा सार्वदेशिक प्रचार में आपकी शुभसम्मति हमें प्राप्त होगी। अतएव निवेदन है कि आप अधिवेशन में अवश्य पधारकर हम लोगों का उत्साह बढ़ाएँ और उसे सफल बनाएँ। अपने पहुँचने की तिथि की सूचना श्री मंत्री, स्वागत कारिणी समिति, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, ६२ बुधवार पेठ, पूना को यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। अधिवेशन में जाने की सूचना हमें भी दे सकें तो अनुग्रह होगा।

बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्०,
प्रधान मंत्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवनागरी लिपि में तार-योजना

[लेखक, श्री नारायण दत्त पांडे एम० ए०, एल-एल० बी०]

राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ ही साथ राष्ट्रलिपि देवनागरी का भी उपयुक्त सम्मान तथा उत्कर्ष आवश्यक है। हिन्दी सेवियों की कई वर्षों की तपश्चर्या के परिणामस्वरूप आज दिन हमारे राष्ट्रीय जीवन में हिन्दी ने एक महत्व पूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है, किन्तु वह स्थान, अभी तक कई दृष्टियों से हमारी राष्ट्र लिपि देवनागरी को, नहीं मिल सका है। ध्वनि की दृष्टि से परिपूर्ण तथा संसार की किसी भी अन्य लिपि से अधिक वैज्ञानिक होने पर भी आज दिन हमें देवनागरी लिपि में तार भेजने की सुविधाएं प्राप्त नहीं हैं।

रोमन लिपि, जिसके क्रम पर आधुनिक तार पद्धति चालू है, हमारी अपनी लिपि नहीं है, अधिकांश भारतीय जनता के उससे अनभिज्ञ होने के कारण हमारा व्यापारिक क्षेत्र अथवा पत्रकार मण्डल इस बीसवीं शताब्दी में भी तार की सुविधाओं तथा उसके लाभों से वञ्चित ही रहता है। इससे पहले कि कहीं तार से समाचार भेजा जाय या बाहर से आया हुआ तार पढ़ा जाय, किसी एक अंग्रेजीदाँ सज्जन को पकड़ लाना पड़ता है। यदि कभी दुर्भाग्य से समय पर ऐसे सज्जन न मिल सके तो तार की उपयोगिता स्पष्ट ही है। इसके अतिरिक्त भारतीय भाषाओं के शब्दों को व्यक्त करने के लिये रोमन लिपि इतनी अपूर्ण तथा भ्रान्तिकारक है कि अपनी भाषा में इस लिपि के आधार पर तार देने से बहुधा लाभ के बदले अनिष्ट हो जाता है। उदाहरण के लिये किसी एक सज्जन ने तार भेजा—'मेरे हाल के खत उन्हें दिखा देना' जिसका रोमन में इस प्रकार लिप्यन्तर हुआ –'Mere halke k' at unhen dikha dena' और पानेवाले ने इस प्रकार पढ़कर कार्रवाई की—'मेरे हलके खाट उन्हें दिखा देना। इसी प्रकार तार भेजा गया "गाड़ी के सामान और दो टीन तेल भेजो" (Gari ke saman aur do tin tal bhejo) पढ़ा गया 'गरी के समान और दो तीन तेल भेजो।'

ऐसे उदाहरणों के लिये तार भेजने वाला या पढ़ने वाला दोषी नहीं है, किन्तु सारा दोष उस प्रणाली का है जिसके अनुसार हमारी भाषा के शब्दों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रोमन लिपि में व्यक्त करने का व्यर्थ प्रयत्न किया जाता है। ऐसे भ्रमात्मक दोषों को मिटाने के लिये केवल एक ही साधन है और वह है देवनागरी लिपि के क्रम पर भारतीय तार-पद्धत्ति को चलाना। देवनागरी लिपि तथा अन्य भारतीय लिपियों में विशेष ध्वन्यात्मक अन्तर न होने से इस क्रम पर स्थिर की गई तार-पद्धति द्वारा हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी तार दिया जा सकेगा।

देवनागरी के क्रम पर कितनी सुगमता से तार-पद्धति चल सकती है इसके लिये श्रीविद्याप्रकाश गुप्त (लक्ष्मी निवास, बारुदखाना, लखनऊ), श्रीकाका कालेलकर (वर्धा) तथा श्री नरहरि जोशी (रावसाहेब, एक्ज़ेक्यूटिव इञ्जिनियर, विलेज वाटर सप्लाई स्कीम, महाराष्ट्र जोन, पूना) ने अपनी अपनी योजनायें तैयार की हैं। इनमें से श्री जोशी जी की योजना के अनुसार बम्बई सरकार ने दो संकेतकारों (सिग्नलरों) को ट्रेनिंग भी दिलाई है। इन योजनाओं में यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि तार की कडकटी को नागरी वर्णों के क्रम पर आवर्तित करना बिलकुल भी कठिन नहीं है। थोड़ी सी ट्रेनिंग के बाद ही तार विभाग के वर्तमान कर्मचारी उससे भली भाँति परिचित तथा अभ्यस्त हो सकते हैं। यदि वास्तव में कुछ कठिनता है तो वह है इस संबंध में सरकार की नीति परिवर्तन कराने की। इसके लिये लोकमत के संगठन की आवश्यकता है। समाचार पत्रों द्वारा, सभाओं द्वारा, प्रस्तावों द्वारा यह निश्चित तथा स्पष्ट रूप से व्यक्त कर देने की आवश्यकता है कि भारत के लिये केवल वही तार-पद्धति उपयुक्त होगी जो भारतीय राष्ट्रलिपि देवनागरी के ध्वन्यात्मक वर्णों के क्रम पर चालू हो। सभी भारतीय विद्वानों, पत्रकारों तथा संस्थाओं से अनुरोध है कि वे एक ध्वनि से इस मांग को उपस्थित करने में अपना पूर्ण योग दें और भारतीय जनता के लिये भी तार की सुविधाओं को सुलभ बनाने का पूरा यत्न करें।

देवनागरी लिपि में तार योजना तय्यार करने में श्री विद्याप्रकाश गुप्त ने परिश्रम किया है और उसके पक्ष में इस प्रान्त के प्रमुख स्थानों में जा जाकर कुछ मत संगठित करने का श्रेयस्कर प्रयत्न किया है। समस्त हिन्दी प्रेमी जनता से हमारा अनुरोध है कि वह श्री गुप्त जी से पत्र-व्यवहार करके उनकी इस विषय में सहायता करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-संसार

[लेखक, श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य, संग्रह-मन्त्री]

व्रज साहित्य मण्डल—कुछ दिन पहले पण्डित बनारसी दास चतुर्वेदी जी ने व्रज साहित्य मण्डल स्थापित करने का प्रस्ताव किया था। यह स्वाभाविक था कि इसकी प्रतिध्वनि व्रज मण्डल में ही होती। मथुरा की हिन्दी साहित्य-परिषद ने इस पर विचार किया और चतुर्वेदी जी के प्रस्ताव का स्वागत और समर्थन किया। परिषद की सम्मति है कि इस मण्डल की स्थापना से व्रज प्रान्त में साहित्यिक विकास होगा, उसकी उपयोगिता बढ़ेगी। इसलिये वर्तमानकाल में व्रज के सार्वजनिक सांस्कृतिक विकास और साहित्यिकों के संगठन की बड़ी आवश्यकता है। परिषद की साधारण सभा ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और इस सम्बन्ध की एक अस्थायी कार्य योजना भी स्वीकृत की है। एक सम्बन्ध में एक उप समिति भी बना दी गयी है। व्रज मण्डल की अन्य साहित्यक सभाओं से भी विचार विमर्ष चल रहा है। परिषद ने पिछले मास में सूर स्मृति सप्ताह भी मनाया है, जिसमें व्याख्यान, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन, नाटक आदि हुए। इस शुभ आयोजन के लिये हम बधाई देते हैं। इसी बीच मथुरा में व्रज साहित्य कानफरेंस भी हो गयी। दो दिनो के अधिवेशन में अच्छी चहल-पहल रही। काम करने के विचार से प्रस्ताव केवल दो ही पास किये गये। पहला व्रजभाषा साहित्य की रक्षा तथा प्रचार और दूसरा हिन्दी साहित्य का जनता में प्रचार। २५ सदस्यों की एक समिति भी बना दी गयी है। जिसके सभापति श्री वासुदेव शरण जी अग्रवाल, उप सभापति श्री गुलाबराय जी और श्री सत्येन्द्र जी एवं पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी और पं० गोपाल प्रसाद जी व्यास मन्त्री नियुक्त हुए हैं। आशा है समिति का काम उत्साह और सफलता से होगा।

हिन्दी काव्य में नवयुग—इस विषय पर "जागृति" में श्रीयुक्त प्रभुदयालु जी अग्निहोत्री साहित्यरत्न ने लिखा है "जो कविता जीवन से सम्बन्ध न रखती हो, उसकी वास्तविकताओं से मेल न खाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो, उसके रहस्यों का उद्घाटन न करती हो और उसे सामान्य धरातल से ऊँचा उठाने की क्षमता न रखती हो, अपितु मस्तिष्क में केवल कुतूहल जमा-कर रह जाय, वह कविता नहीं, पहेली है, दिमागी दौड़ है; उससे मनोरंजन तो हो सकता है; आत्मा में उद्रेक नहीं।" छायाबाद और रहस्यवादकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में आप कहते हैं "कवि मनुष्य हृदय और प्रकृति को बहुत पहले से विम्ब-प्रतिविम्ब भाव से देखता चला आता था। जिसके कारण उसे दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित दिखाई देती थी। छायावाद की प्रकृति पृथक रहने पर भी एक प्राण बन गयी जैसे कुएँ और घड़े का जल पृथक होने पर भी एक ही होता है। अतः कवि की दृष्टि में मनुष्य के हास, शरद की चन्द्रकौमुदी और वसन्त के विकास का एक ही कारण और एक ही मूल्य हो गया। उपभोक्ता और उपभोग्य की भावना के स्थान पर एक प्राणता का भाव आया। ऐसे समझा गया कि प्रकृति के लघुतृण और महानतरु, कोमल कलियों और कठोर शिलाएँ, सरसप्रवाह और शुष्क मरुभूमि, जीवित जल और जड़ पर्वत, निविड अन्धकार और उज्वल विद्युत रेखा, मानव की लघुता विशालता, कोमलता-कठोरता, चञ्चलता और निश्चलता एवं मोह और ज्ञान परस्पर विम्ब-प्रतिविम्ब न होकर एक विराट से उत्पन्न सहोदर हैं। जब प्रकृति की अनेक रूपता में, परिवर्तन विभिन्नता में कवि ने ऐसा तारतम्य खोजने का प्रयास किया, जिसका एक छोर असीम चेतन में और दूसरा उसके हृदय में समाया, तब प्रकृति का एक-एक अंश अलौकिक व्यक्तित्व लेकर जाग उठा। उसे संसार के कण-कण में अपने प्रियतम की छाया दिखाई देने लगी।" आगे रहस्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लेखक का कथन है कि मानव और प्रकृतिका मध्यसम्बन्ध उसके हृदय की पिपासा को शान्त न कर सका; क्योंकि जब तक मनुष्य के सम्बन्ध में अनुराग का समावेश नहीं हो जाता, खासकर उस अनुराग का जो आत्मविसर्जन का भाव जाग्रत करता है, तब तक वे सरस नहीं हो पाते और जब तक यह मधुरिमा सीमातीत नहीं हो जाती, तब तक हृदय का अभाव दूर नहीं होता। इसीलिये इस बाद का दूसरा सोपान बना जिसमें जगत के अनेक करुणाता के कारण पर एक मधुरता व्यक्तित्व का आरोप करके उसके निकट आत्म समर्पण कर देने का भाव मुख्य रहा। उस मधुरतम सत्ता के रहस्यरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने के कारण ही इसको रहस्यवाद का नाम पड़ा। लेखक का कथन है कि इस बाद में प्राचीन शैली, योग, उपनिषद, दर्शन के सिद्धान्तों से भिन्न पराविद्याकी अलौकिकता, वेदान्त के अद्वैतवाद की छाया और लौकिक प्रेम की तीव्र समवेदना को कबीर के सांकेतिक दाम्पत्य सूत्र में बाँध कर आज कें कवि जिस निराले स्नेह की सृष्टि की है, वह हृदय को पूर्ण अवलम्ब देने में समर्थ हुआ है। आज का रहस्यवाद मनुष्य को पार्थिव प्रेम से ऊपर उठाकर उसके हृदय को मस्तिष्कमय बना देना चाहता है। किन्तु कम कवि इसे वास्तविक रूप से समझने में समर्थ हुए हैं।

राष्ट्रभाषा का प्रचार और हमारी समस्या—श्रीमती कुमारी मैनावती माटे ने इस विषय को लेकर 'सरस्वती' में एक लेख लिखा है कि सम्मेलन की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (जिसका केन्द्र वर्धा में है) दक्षिण में कैसी हिन्दी का प्रचार कर रही है। जो लोग कहते हैं कि हमें केवल व्यवहार के लिये एक बोध—भाषा मात्र की आवश्यकता है, इससे अधिक गहराई में जाने की हमें आवश्यकता नहीं; हमारी साहित्यिक आवश्यकता प्रान्तीय भाषाओं से पूरी हो जायगी; उनकी इस विचारशैली का खण्डन करते हुए आप कहती हैं कि यदि समझने की ही बात है तो किसी विदेशी भाषा से भी वह किसी अंश में हो सकता है। जहाँ हमारा आत्माभिमान हमसे कहलाता है कि वह बोध भाषा भारतीय ही हो, वहीं भाषा का केवल बोध भाषापन लोप हो जाता है और उसका स्थान राष्ट्रभाषापन पकड़ लेता है। राष्ट्रीय भावों के वहन करने की शक्ति जिसमें हो वही हमारी राष्ट्रभाषा है। इसी तरह जो लोग कहते हैं कि "नाम में क्या रखा है उस राष्ट्रभाषा का चाहे कोई भी नाम दिया जाय।" उनका खण्डन करते हुए आप लिखती हैं कि वास्तव में अपने आपकी यह वञ्चना है। सब जन अपने अन्तर्मन में यह जानते हैं कि हर नाम के पीछे अलग-अलग भाव रहता है। राष्ट्रभाषा शब्द में जो सजीवता, उमङ्ग तथा आत्मीयता है वह 'साधारण भाषा' 'सबकी बोली' आदि रूखे शब्दों में कहाँ ? वास्तव में यह बात सूर्य प्रकाश जैसी स्पष्ट है कि हिन्दुस्थान की राष्ट्र-भाषा-समस्या बिलकुल भाषा सम्बन्धी समस्या है न कि जातीय या राजनैतिक। उसको हल करते समय जातीयता या राजनीतिकता के फेर में पड़ना बड़ी भारी भूल है। हमें राष्ट्रभाषा के नाते भारतीय भाषाओं में से ऐसी एक भाषा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनाना था जो पहले से ही बहुत कुछ प्रसरित हो, साथ ही जो थोड़े से समय में सीखी जा सके। फलतः हिन्दी ने राष्ट्रभाषा का सम्मान पाया। क्योंकि उसमें उपर्युक्त सब बातें हैं ? हमारी आवश्यकताओं को पूर्ण करने की शक्ति उसमें और किसी भी भारतीय भाषा से अधिक है।

बहुत छानबीन के बाद प्रान्तीय भाषाओं ने समझौते की दृष्टि से हिन्दी को राष्ट्रभाषा और नागरी को राष्ट्रलिपि के रूपमें अपनाना आरम्भ कर दिया। बहुत कुछ यह समस्या हल हो चुकी थी। पर गत बीस-बाईस वर्ष से हमारे राष्ट्रीय जीवन के हर एक पहलू को एक विषवत परदा बुरी तरह ढांके हुए हैं। जिसने इस बात को भी नहीं छोड़ा। एक विशिष्ट जाति के समाधान के लिये "हिन्दी" के आगे "याने हिन्दुस्थानी" ये दो शब्द और जोड़ने पड़े। मानों हिन्दी कोई ऐसा कठिन या अपरिचित शब्द हो जिसके अर्थ को स्पष्ट किये बिना वह किसी की समझ में नहीं आ सकता! फिर "हिन्दी याने हिन्दुस्थानी" में से पहले दो शब्द एक दम एक दिन न जाने कैसे उड़ गये। अर्थात रह गया एक शब्द "हिन्दुस्थानी" फिर एक दिन वह भी अपने भीतर एक अक्षर को बड़ी अर्थ पूर्णता के साथ बदल कर सामने आया; अर्थात् "हिन्दुस्थानी" के बदले "हिन्दुस्तानी" हो गया। फिर कई व्यक्तियों द्वारा कई स्थानों पर यह समझाया गया कि "हिन्दुस्तानी अर्थात् सिम्पिल उर्दू" इस बात को देखते ही जो चौंके उन्हें समझाया गया कि "न भाई घबराने की बात नहीं उर्दू-हिन्दी और हिन्दुस्तानी एक ही भाषा की शैलियाँ हैं।" यह भी कोई राष्ट्रीयता है कि सीधे लोगों की आँख में इस प्रकार धूल झोंकी जाय। चाहे औरों को इस विषय का ज्ञान कितना ही तुच्छ क्यों न हो, वे इस बात को जानते हैं, अनुभव भी करते हैं कि उर्दू ने अभारतीय शब्द-सम्पत्ति का आश्रय लिया है और अपने व्याकरण का ढांचा भी अभारतीय ही ग्रहण किया है।

दुर्भाग्यवश हमारे नेता और अधिकारी लोग इस विषय में 'यह भी ठीक है।' 'वह भी ठीक है' 'यह भी हो सकता है' 'वह भी हो सकता' 'नाम से क्या काम' 'चाहे जो नाम हो हम कार्य करें' इस तरह की ऊट-पटांग बात सुनाकर समय असमय पर सामान्य जनता का बुद्धि भेद करते हैं। और सबसे मार्के की बात तो यह है कि इनमें वे ही लोग हैं जिन्होंने पहला नाम बदलकर आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही झगड़ा खड़ा किया है। ये कभी जनता को निश्चित मार्ग का दर्शन नहीं कराते। मीठी बातों की भूल-भुलैया में डाल कर उसको दुविधा में डालते हैं। इस सारी परिस्थिति का परिणाम हमें यह भुगतना पड़ रहा है कि राष्ट्र-भाषा के बहाने हमारे बच्चों के सिर पर एक ऐसी भाषा लादी गयी है जो है ही नहीं! उसमें किसी तरह का साहित्य नहीं, जिससे वह राष्ट्रीय भाव वहन करने के लिये समर्थ हो। जो भाषा साहित्य सृजन के लिये असमर्थ हो वह राष्ट्रीयभावों के आदान-प्रदान का भार कभी उठा नहीं सकती। इस आवश्यकता के समर्थकों ने कभी यह पाठ पढ़ा था कि "भाषा के शिक्षक को उसका मूल ग्राही ज्ञान होना जरूरी है। उसके बिना वह कभी अच्छा शिक्षक नहीं हो सकता।" अर्थात् उर्दू लिपि को जाने बिना राष्ट्रभाषा का शिक्षक कभी योग्य नहीं हो सकता! आज हमारे प्रान्तों में (दक्षिण में) ट्रेनिङ्ग कालेजों के हर एक शिक्षक के लिये उर्दू लिपि जानना अनिवार्य है, मानों वहाँ का प्रत्येक शिक्षक राष्ट्रभाषा का ही शिक्षक होनेवाला हो। और भी एक विलक्षण अनिवार्यता हमारे गले में मढ़ दी गयी है, जिस पर हँसते ही बनता है और बधाई देने को जी चाहता है। जो बी० टी०, एस० टी० सी० आदि शिक्षा शास्त्र की उपाधियाँ लिये हुए हैं और राष्ट्रभाषा कोविद, विशारद आदि उपाधियां भी जिन्होंने प्राप्त की हैं उनको भी "हिन्दुस्तानी शिक्षक" बनना और उर्दू लिपि का जानना अनिवार्य है। मानों हिन्दुस्तानी पढ़ाना कोई ऐसा गहन कार्य है जो बी० टी०, आदि के क्षेत्र में न आता हो।

गढ़वाल की साहित्यिक प्रगति—इस सम्बन्ध में 'विशालभारत' में एक लेख लिखते हुए पं० बुद्धिबल्लभ थपलियाल बी० ए० लिखते हैं कि "पलपल परिवर्तित प्रकृति वेश" के इस प्राकृतिक लीला क्षेत्र में जहाँ हरीतिमा के कण्ठ में हार से सजे हुए निर्झर-निर्माल्य कभी गाँव के निकट और कभी पर्वतों के ऊपर विश्राम लेते हुए आत्मीयता प्रदर्शित करनेवाले बादल तथा विहगों के कूजन से जीवन की जागृति लेकर झूमझूम नयी फूल पत्तियों के मिस विकसित होनेवाले वन चिर सौन्दर्य को उद्भासित करने में व्यस्त हैं— नवीन भावुक गायकों का एक पुञ्ज उदित हो रहा है। शुभ्रहिमाञ्चल के अनन्त उद्बोध गीत को सुनकर भावलीन होनेवाले कवि हृदय ऊंचे-ऊंचे शृगोंपर घण्टों स्वर बन्धन खोलते हुए देखे गये हैं। गढ़वाल के गांवों के जीवन को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाने वाले वे सहृदय नवयुवक भारत के सात लाख गांवों को आंसुओं से भिगो सकते हैं, हर्ष से दमका सकते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्याभा के काव्यदीप सजानेवाले कवि गढ़वाल में शिक्षा प्रसार के साथ साथ बढ़ रहे हैं। मौलिकता के साथ रहनेवाली अध्ययन-प्रियता ने प्रकृतिके साथ हमारा परिचय गूढ़, पर आनुषंगिक बना दिया है। प्रतिभा यहां के लोगों में है। परन्तु अकेली प्रतिभा से ही तो काम नहीं चलता। साहित्यिक जीवन कठोर साधना का जीवन है। सामान्य शिक्षाप्रसार गढ़वाल में सबसे अधिक है, उसीकी पृष्ठ भूमि पर साहित्यकों की प्रतिभा नये रंग खिलायेगी। 'गढ़वाल लेखक संघ' और 'गढ़वाल साहित्य परिषद' की संरक्षकता में वे ही लेखक आगे बढ़ रहे हैं, जिन्होंने आश्रय पा लिया है और जो अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लिये मार्ग बनाने में सफल हो सके हैं। आलोचना प्रवृत्ति के लेखक प्राचीन साहित्य से विशेष प्रभावित हैं, और उसी पर लिखना उन्हें विशेष समीचीन प्रतीत होता है। गढ़वाली भाषा ने संस्कृत और हिन्दी के प्राचीन शब्दों को भली भांति सुरक्षित रखा है और उन शब्दों में अन्तर्निहिता संस्कृति एवं विचार धारा इन लेखकों को अपनी परिचित वस्तु लगती है। यहां के कवि भी "पल्लव" के अतिरिक्त वर्तमान हिन्दी कविता से बहुत कम प्रभावित हुए हैं। उन्हें आजकल की कविता में काफी आत्म प्रवञ्चना मिलती है।

दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार—मद्रास की दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का पिछले वर्ष का वार्षिक विवरण प्रकाशित हुआ है। उससे मालूम पड़ता है। कि यह कार्य उन्नतिशील ढंग पर चल रहा है। इस वर्ष विद्यालय भवन के लिये कमरा और पुस्तककालय के लिये मन्दिर बनाना निश्चय हुआ। प्रान्तीय सभाओं को भवन स्थापित करने के लिये उत्साहित किया गया। स्कूल कालेजों में हिन्दी की पढ़ाई जारी कराने के लिये सभा बराबर उद्योग कर रही है। भिन्न-भिन्न प्रान्तों के हिन्दी प्रचार मन्त्रियों के कामों में एक-सी व्यवस्था लाने के लिये सभाने उनका एक सम्मेलन भी किया है। इसी तरह हिन्दुस्तानी की शिक्षा देने वाले अध्यापकों का भी सम्मेलन किया गया है। प्रान्त भर में हिन्दी प्रचार सप्ताह मनाया गया, भिन्न-भिन्न स्थानों में सभाएँ की गयीं। इस सप्ताह में स्त्रियों की भी कई सभाएँ हुईं। संगीत हुए, नाटक हुए, हिन्दी की झण्डियाँ बेंची गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ठ पुरुषों ने सभा के काम देखकर सन्तोष और प्रसन्नता प्रकट की। प्रदर्शिनियों में प्रचार कार्य किया गया। हिन्दी प्रचार के लिये लगभग एक हज़ार सभाएँ की गयीं। लेजिस्टलेटिव असेम्बली के सदस्यों ने प्रचार कार्य में सहायता पहुँचायी। सन् १९३८ में १२५ स्कूलों में सरकार ने हिन्दी रखी थी, इस वर्ष इसमें १०० की और वृद्धि हुई है। रियासतों को मिला कर मद्रास में ४०० हिन्दी स्कूल हैं। कर्नाटक के ट्रेनिङ्ग और सरकारी स्कूलों में हिन्दुस्तानी अध्यापक तैयार करने का काम जारी किया गया है। मद्रास और बम्बई की सरकारों ने हिन्दुस्तानी अध्यापक तैयार करने के लिये ग्राँट दी है। मद्रास शहर के हिन्दी वर्गों में सीखनेवालों की संख्या २०० रही। मद्रास शहर में ६७० परीक्षार्थी हिन्दी परीक्षाओं में बैठे, जिनमें ४५३ पास हुए। सिटी आफ़िस में एक शाखा पुस्तकालय और वाचनालय खोला गया। खास-खास सभाएँ कर विद्वानों के भाषण कराये गये। प्राथमिक परीक्षा में १०७६४ मध्यमा में ५८११ और राष्ट्रभाषा परीक्षा में २७७२ अर्थात् कुल १९३४७ परीक्षार्थी बैठे। इनके सिवाय प्रवेशिका परीक्षा में ३४२ और राष्ट्रभाषा विशारद परीक्षा में ७४६ परीक्षार्थी बैठे। सभा ने सात पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। सभा ने एक हिन्दुस्तानी संगीतशाला भी खोली है। मैसूर रियासत में "हिन्दी प्रचार समिति" स्थापित हुई है। इस प्रकार सभा हिन्दीप्रचार का काम सन्तोषजनक उन्नति के साथ करती जा रही है। इसके लिये उसके उद्योगी धन्यवाद के पात्र हैं।

काश्मीर की भाषा—काश्मीर एक हिन्दू रियासत है, किन्तु वहाँ की प्रजा में मुसलमानों की संख्या काफी है। यद्यपि वहाँ के हिन्दू-मुसलमानों की भाषा उर्दू नहीं है तथापि सरकारी आज्ञा से साधारणतः सरल उर्दू जनता की भाषा मानी गयी है। अब महाराज की आज्ञा से पढ़ने और लिखने के लिये देवनागरी और उर्दू लिपि समान रूप से मान ली गयी है। वहाँ के स्कूलों में वही अध्यापक रखे जायँगे जो दोनों भाषाएँ जानते होंगे। प्रारम्भिक शिक्षा का कोर्स ७ साल का माना गया है। आशा है वहां के हिन्दी प्रेमी यह साबित कर देंगे कि नागरी अक्षर ही विशेष रूप से प्रचलित हो सकता है और हिन्दी भाषा का ही प्रचार विशेष रूप से काश्मीर में अधिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त कवि तुलसीदास—श्रीयुत व्यौहार राजेन्द्रसिंह एम० एल० ए० ने खाण्डवा में तुलसी जयन्ती का उद्घाटन करते हुए एक विचारपूर्ण लेख पढ़ा था। आपने कहा कवि सत्य के सरस रूप के सृष्टा और सन्त सत्य के द्रष्टा होते हैं। सन्त कवि में बुद्धि की महिमा और कवि के हृदय की विशालता का अद्भुत सामञ्जस्य होता है। सन्त कवि का दर्जा शुद्ध सन्त या शुद्ध कवि से कहीं ऊँचा होता है। कविता के दो अंग हैं (१) सत्य की अनुभूति और (२) उसे सरस भाषा में प्रकट करना। जैसे योग कर्म की कुशलता है, उसी तरह कविता सत्य या रसका सरस भाषा में प्रकटीकरण है। रस यदि सत्यका आन्तरिक प्रकाश है तो काव्य कौशल उसका बाहरी उपसर्ग। भाव वहित है तो भाषा वाहन है। वैसे तो सत्य सहज ही सुन्दर है, किन्तु अलंकारों का उपयोग सुन्दर को और भी सुन्दर बनाता है। कभी-कभी रवीन्द्रनाथ के शब्दों में 'अलंकार ही लक्ष्य हो जाता। और मूर्ति उपलक्ष्य बन जाती है।' मिडिल्टन मरेके शब्दों में 'असल में कविता में कविता छन्द तो एक आकस्मिक वस्तु है। कविता का तत्व तो उसकी अन्तर्प्रेरित व्यापकता ही है।' तुलसीदास ऐसे ही सत्य द्रष्टा ऋषि थे उन्होंने सत्य की अनुभूति करके लिखा है। तुलसीदास में सन्तत्व और कवित्व दोनों का विकाश पाया जाता है। सत्य उनका लक्ष्य था और कविता उनका साधन। तुलसीदास जी की कला-कलाके लिये नहीं, कला उन्हें साधन मात्र थी।

ब्रज भाषा सम्मेलन—मथुरा में जिस ब्रजभाषा सम्मेलन की चर्चा थी वह हो गया। आगरे के प्रसिद्ध साहित्यिक पण्डित हरिशंकर शर्मा कविरत्न सभापति थे। स्वागताध्यक्ष की सत्येन्द्रजी का भाषण महत्व पूर्ण हुआ। 'विशाल भारत' सम्पादक पं० श्री राम शर्मा का ब्रजभाषा के सम्बन्ध में सार-गर्भित भाषण हुआ। आपने कहा कि इस समय ब्रजभाषा के लिये देश तथा साहित्य में कोई क्षेत्र नहीं है। ब्रजभाषा राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। ब्रजभाषा मथुरा शहर की स्त्रियों, चौबों तथा देहात के लोगों के द्वारा सुनने को मिलती है। भाषा का खज़ाना शहरी बोली में नहीं हैं। देहात, खेत और गलियों में उसके भाण्डार भरे पड़े हैं। साहित्य सेवियोंका काम है कि उन रत्नों को चुन कर साफ करके साहित्य से भण्डार को भरें। आधुनिक स्त्री शिक्षा के कारण स्त्रियों के चक्की-चूल्हे आदिके गीतों का लोप होता जा रहा है। ब्रजभाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कोष की बड़ी आवश्कता है। व्रजभाषा के कोष की बड़ी आवश्यकता है। व्रजभाषा के कोष निर्माण का काम होनेवाला है। यह आनन्द की बात है।

मराल मानस को चला—आगरे से परिडत किशोरीदास जी वाजपेयी के सम्पादकत्व में "मराल" नाम का एक मासिक पत्र निकला था। अभी उसने १२ अंक निकाल कर अपना साल समाप्त किया है। साथ ही उसने दुःख संवाद भी सुनाया है कि अब 'मराल' का प्रकाशन सम्प्रति रोक दिया जायगा। हिसाब का देना लेना भी समाप्त कर दिया गया है। हमें यह संवाद जानकर मार्मिक दुःख हुआ है। 'मराल' एक निर्भीक आलोचना करने वाला और हृदय की बात धड़ल्ले से कहने वाला पत्र था। साथ ही उसकी बातों में "नीर क्षीर विवेक" अच्छी तरह रहता था। ऐसे पत्र की हिन्दी में बहुत आवश्यकता है। परन्तु कठिनाई यह है कि यह साहित्यिक पत्र था। इसके ग्राहक साहित्यिक ही हो सकते हैं। क्योंकि सर्वसाधारण की समझ और रुचि के अन्तर्गत इसकी कार्य प्रणाली नहीं थी। इधर दुर्दैव से हिन्दी साहित्यिकों की यह स्थिति है कि वे मोल पत्र लेना नहीं चाहते। सभी लोग भेंट स्वरूप पत्र चाहते हैं। आखिर पत्र का खर्च कैसे पूरा हो। इसलिये 'मराल' को भी अब यहाँ से प्रस्थान करना पड़ रहा है। जो हो, एक वर्ष में ही उसने अपनी एक अमिट छाप लगा दी है। इस सफलता के लिये वाजपेयीजी वधाई के पात्र हैं। पत्र के अन्त में इसके दूसरे सम्पादक पं० श्यामसुन्दरलाल दीक्षित ने जो सूचना छपायी है उससे आशा होती है कि अभी 'मराल' का प्रकाशन कुछ दिनों में फिर होने लगेगा। उन्होंने परिवर्तन के पत्र आदि अपने पते से मांगे हैं। इससे यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

इण्डियन प्रेस की योजना—प्रयाग का इण्डियन प्रेस पुस्तक प्रकाशन की एक विराट आयोजना काम में ला रहा है। इसके अनुसार विविध मनोरंजक विषयों में वह तीन हज़ार पुस्तकें छापने जा रहा है। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य आठ आने होगा। उसे आशा है कि सारा हिन्दी भाषी भारतवर्ष इस योजना का उत्साह के साथ स्वागत करेगा। भारतीय राष्ट्रीय प्रगति की इस योजना को सफलता मिले यही अभीष्ट है। इससे जनता की ज्ञान वृद्धि की आशा है। आशा है जनता उत्साह के साथ इसका स्वागत करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इण्डियन प्रेस का वर्तमान तथा भूतकालीन इतिहास विश्वास दिलाता है कि वह इस आयोजना को सिद्ध करने में वह समर्थ होगा।

आसाम में प्रचार—असम (आसाम) प्रान्त में राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य इधर दो वर्षों से अधिक संगठित रूप में होने लगा है। प्रान्त के प्रत्येक ज़िले का संगठन करने के लिये ज़िला समितियाँ बनायी गयी हैं। प्रचार कार्य को अधिक संगठित रूप देने के लिये प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन होने वाला है। इस सम्मेलन के सेठ जमुनालाल जी बजाज सभापति चुने गये हैं।

हिन्दी के प्रति अन्याय—सहयोगी 'कर्मयोगी' में पण्डित मार्कण्डेय वाजपेयी एम० ए०, एल-एल० बी० ने एक लेख हिन्दी के प्रति होनेवाले अत्याचार के सम्बन्ध में लिखा है। आप कहते हैं कि अहिन्दियों की कौन कहे; हिन्दियों और हिन्दीभाषी हिन्दियों ने ही हिन्दी पर पर्याप्त अत्याचार किये हैं। माननीय सरतेज बहादुर सप्रू की ही मातृभाषा उनके ही कथनानुसार हिन्दी न होकर उर्दू है! खास काश्मीर के पण्डित अमरनाथ काक ऐसे काश्मीर असेम्बली में सरकार की अहिन्दी नीति की निन्दा करते हैं। उनका कहना है कि काश्मीर की प्रारम्भिक पाठशालाओं में शिक्षा का माध्यम हिन्दी और उर्दू दोनों ही लिखावटों में हिन्दुस्थानी रहे। काश्मीर में २४ प्रति शत हिन्दू रहते हैं उन्हें हिन्दी पढ़ाने की कोई व्यवस्था राज्य की ओर से नहीं है। इसके विपरीत काश्मीर में शिक्षा का माध्यम उर्दू और फारसी लिखावट है। पण्डित अमरनाथ के कथन का विरोध इस बिना पर किया गया कि हिन्दी लिखावट चला देने से इस्लाम धर्म खतरे में पड़ जायगा। मानों हिन्दूधर्म और हिन्दू संस्कृति के सम्बन्ध में काश्मीर राज्य का कोई कर्तव्य ही नहीं है। काश्मीर असेम्बली में महात्मा गाँधी और पं० जवाहरलाल नेहरू तक साम्प्रदायिक मनुष्य कहे गये। हमारी समझ में नहीं आता कि ऐसी दशा में हिन्दी का गला घोटने में हिन्दू क्यों साथी हों। मारकण्डेयजी कहते हैं कि संयुक्त प्रान्त में १४ प्रति मुसलमान हिन्दी को सरकारी कचहरियों और दफ्तरों तक में न घुसने दें और काश्मीर के २४ प्रतिशत हिन्दुओं की कोई सुननेवाला न हो। एक भी हिन्दी के पत्र या पत्रिका ने इस अनाचार के विरुद्ध आवाज नहीं उठायी है। लगभग ९० प्रतिशत उर्दू न जाननेवालों के देश हैदराबाद में राजभाषा उर्दू हो सकती है और स्कूलों और कालेजों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरबस पढ़ायी जा सकती है और हिन्दी बेचारी को ऐसे महाराज जयपुर के राज्य में भी स्थान नहीं जिनकी प्रजा ९९ प्रतिशत हिन्दी भाषाभाषी है। कोई मुसलमान राज्य ऐसा न मिलेगा जिसकी राजभाषा हिन्दी हो, चाहे उनकी प्रजा कितनी ही हिन्दी भाषी क्यों न हो। हिन्दीवालों को गम्भीरता पूर्वक वर्तमान समस्याओं पर विचार करना अब अनिवार्य है। यह नितान्त आवश्यक है कि हिन्दी पर प्रति दिवस किये जानेवाले आक्रमणों का तीव्र विरोध किया जाय। उर्दू और हिन्दुस्तानी के नाम पर हिन्दी का गला घोंटा जा रहा है, उस पर प्रति दिवस आक्रमण हो रहे हैं और हम हिन्दी वाले अभी सोते पड़े हैं।

गुजरात में नागरी—गुजराती और नागरी अक्षरों में विशेष अन्तर नहीं है। अ, च, ख ऐसे कुछ अक्षर भिन्न आकृति के हैं। अक्षरों में केवल शिरो रेखा का अभाव ही गुजराती की विशेषता है। इतना होने पर भी कुछ वर्षों पहले गुजराती में नागरी अक्षरों का भी काफी प्रचार था। लेखों के हेडिंग और कविताएँ बराबर नागरी अक्षरों में छपा करती थीं। अब महात्मा गाँधी का ध्यान इधर फिर आकर्षित हुआ है। नवजीवन प्रकाशन मन्दिर की ओर से उनकी "सत्य के प्रयोग" और 'आत्म-कथा' नामक जो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उन्हें आप ने गुजराती भाषा और नागरी अक्षरों में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इस नागरी आवृत्ति की प्रस्तावना में आप लिखते हैं:—

"अिस आवृत्तिके देवनागरी लिपि में छपवाने में दो अुद्देश्य रहे हैं। मुख्य अुद्देश्य यह रहा है कि गुजराती पढ़नेवाले देवनागरी लिपि को कहाँ तक अपना सकते हैं, यह देखा जाय। मैं तो अपने दक्षिण आफ्रिका के निवास-कालसे ही यह स्वप्न देखता आया हूँ, कि संस्कृत से निकली हुअी तमाम भाषाओं के लिये अेक सर्वसाधारण लिपि होनी चाहिये और वह देवनागरी ही है। लेकिन अभीतक वह स्वप्न ही रहा है। अेक लिपि का आंदोलन चलता तो बहुत है; लेकिन यह "बिल्लीके गलेमें घंटी कौन बाँधे" वाली बात हो गयी है। प्रारंभ कौन करे ? गुजराती लोग कहते हैं—'हमारी लिपि बड़ी खूबसूरत है और आसान भी है, अुसे हम कैसे छोड़ें ?"

बीच में और अेक नया दल खड़ा हुआ है। अुसमें मैं भी अपनेको पाता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कहता है कि खुद देवनागरी लिपि ही अपूर्ण है, असमें कठिनाअियाँ हैं, अन्हें सुधारकर पूर्ण करनी चाहिये। लेकिन जब तक पूर्णता तक हम नहीं पहुँचे तब तक अगर हम कुछ करें ही नहीं, तो हम न घरके रहेंगे, न घाटके। वैसा हम न करें। अिसलिये आजमाअिशकी तौर पर यह देवनागरी आवृत्ति छाया की है। अगर लोग अिसे पसंद करेंगे और अपनायेंगे तो 'नवजीवन-पुस्तक प्रकाशन' की दूसरी किताबें भी देवनागरी लिपि में छाया करनेकी कोशिश की जायगी।

अिस साहस का दूसरा अेक हेतु यह भी है कि हिन्दी जनताको गुजराती पुस्तक गुजराती लिपि में प्राप्य हो। मेरा मतलब है कि अगर देवनागरी लिपिमें गुजराती आदि की किताबें छापी जायँ तो अुन-अुन भाषाओं को सीखनेकी हमारी कठिनाअी आधी हो जायगी।'

आनन्द शब्दावली—शिमला शैल की पहाड़ी रियासतों में विलासपुर एक प्रसिद्ध रियासत है। इसके वर्तमान नरेश श्रीमान महाराज आनन्द चन्द्र जी एक विद्या प्रेमी प्रजा पालन तत्पर नरेश हैं। आप चाहते हैं कि अपनी रियासत में स्कूली बालकों के लिये ऐसी पुस्तकों का निर्माण हो जो सरल-सुबोध और बालकों का व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाने वाली और उनके जीवन में सहायक अनुभव बढ़ाने वाली हों। ऐसी पुस्तकों में कैसी शब्द योजना रखी जाय वही इस पुस्तक में कक्षाक्रम से उनकी योग्यता के अनुसार संग्रहीत है। संग्रहकर्ता काशी निवासी बाबू रामचन्द्र जी वर्मा जैसे कुशल अनुभवी साहित्यिक हैं। शब्द संग्रह अकरादि क्रम से है। इसके लिये विलासपुर राज्य का शिक्षा विभाग धन्यवाद का पात्र है। विलासपुर राज्य के शिक्षा विभाग से यह पुस्तक प्राप्त हो सकती है।

राज्यस्थान साहित्य सम्मेलन—राज्यस्थान साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन श्री मुनिजिन विजय जी के सभापतित्वमें उदयपुर में बहुत ही उत्साह और धूमधाम से हो गया। स्वागताध्यक्ष और सभापति महोदय के महत्व-पूर्ण भाषण हुए। सम्मेलन में कई आवश्यक प्रस्ताव पास हुए। राजपूताना हाई स्कूल और इण्टरमीजियट बोर्ड से प्रार्थना की गयी कि वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को केवल अँग्रेजी लेकर मेट्रिक तथा इण्टर की परीक्षा में सम्मिलित होने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुविधा दे। राजपूताना बोर्ड से अनुरोध किया गया कि वह हिन्दी की सर्वमान्य उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण उपाधिधारियों को हाई स्कूल की कक्षाओं में हिन्दी पढ़ाने का अवसर तथा अधिकार प्रदान करे। जिन देशी राज्यों के नरेशों ने अदालतों में देवनागरी लिपि और हिन्दी को राज्यभाषा स्वीकार किया है उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिया गया। जिन राज्यों की प्रजा को अभी यह सुविधा नहीं मिली उनसे ऐसा करने के लिये अनुरोध किया गया। जिन राज्यों में नागरी लिपि का तो प्रचार कर दिया गया है; किन्तु भाषा की ओर अभी ध्यान नहीं दिया गया उनसे राज्यभाषा हिन्दी करने का अनुरोध किया गया। राजपूताना बोर्ड से अनुरोध किया गया कि वह हिन्दी और उर्दू के भी प्रश्न पत्र छापने की आयोजना करे। यह भी कहा गया कि हिन्दी के अध्यापकों की दुर्गति दूर कर अन्य विषयों के अध्यापकों के समान उनकी पद मर्यादा हो जावे। कहा गया कि "वर्नाकुलर" शब्द गुलाम भाषा का द्योतक है, इसलिये उसके स्थान पर राष्ट्रभाषा, देशभाषा या मातृभाषा जैसे शब्द का प्रयोग करना चाहिये। आल इंडिया रेडियो से अनुरोध किया गया कि वह अपनी भाषा जन साधारण के समझने योग्य बनावे। सम्मेलन की स्थायी समिति को इस बात पर ध्यान देने के लिये कहा गया कि राजस्थानीय उदीयमान लेखकों का उत्साह बढ़ाने के लिये किसी पुरस्कार की आयोजना करे और ऐसे लेखकों की कृतियां सार्वजनिक पुस्तकालयों में रखी जावें। इसकी व्यवस्था करे। सम्मेलन के संगठन की एक योजना स्वीकार हुई; और स्थायी समिति का संगठन हुआ। आशा है स्थायी समिति उत्साहपूर्वक काम करती रहेगी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की पुस्तकों

तथा

'सम्मेलन पत्रिका'

का प्रचार करना प्रत्येक हिन्दी प्रेमी का कर्तव्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति स्वीकार

[लेखक, श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य, संग्रहमन्त्री]

नीचे लिखी पुस्तकें हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय को प्राप्त हुई हैं। लेखक-प्रकाशक और प्रेषक महोदयों को इसके लिये अनेक धन्यवाद हैं।

शबरी—रामभक्ति में शराबोर भिल्लनी शबरी की भक्तिगाथा श्रीयुक्त "बचनेश" कवि जी ने गायी है। कविता उत्तम श्रेणी की है। कवि जी को इसमें अच्छी सफलता मिली है। सीतामऊ राजकुमार श्रीमान रघुवीरसिंहजी की आरम्भ में लिखी हुई "वह प्रतीक्षा" शीर्षक समीक्षा भी मार्के की है। दाम ॥) पता—पं० बचनेश मिश्र मित्तू कूंचा, फर्रुखाबाद।

लाजपतराय एण्ड सं० की पुस्तकें—(१) **सचित्र भगवत भक्ति दर्पण**—पं० भगवतदत्त बी० ए० ने सुख-शान्ति देने के लिये भक्ति मार्ग की यह पुस्तक लिखी है। आर्य सामाजिक भावनाओं को लेते हुए आर्य ऋषि मुनियों के भक्ति विषय में विचारों का समावेश शास्त्र प्रमाणों के साथ इसमें दिये गये हैं। समिदाधान, स्वाध्याय, भाषाभाष्य, आर्षग्रन्थ, वेद, उपवेद, पर्वविशेष, रोगनिवृत्ति और दार्घ, ईश्वराराधना, भजन, आत्मा की तलाश, शुद्धिप्रवेश शीर्षकों में विषय विवेचन हुआ है। स्थान-स्थान पर लेखक ने अपनी सम्मति भी दी है। दाम ॥) (२) **सत्संग गुटका**—इसमें संध्या, वैदिक प्रार्थना, ईश्वर स्तुति, स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण और हवन विधि देकर अन्त में ईश्वर स्तुति के भजन दिये गये हैं। मूल्य ≈) (३) **श्रीभगवद्गीता** भाषा माहात्म्य तथा दोहावली सहित स्वामी किशोरदास श्री कृष्णदास की शैली पर पं० भगवतदत्त जी ने भगवतगीता का हिन्दी अर्थ दिया है। हर एक अध्याय का माहात्म्य अध्याय के अन्त में दिया है। अन्त में गीता का भाव दोहों में वर्णित है। पाठ करने योग्य सांची में जिल्द बँधी है। (४) **रामायण**—बाल्मीकि रामायण के आधार पर हिन्दी में रामायण की यह पुस्तक बाबू शिवव्रतलाल वर्मन ने लिखी है। बीच-बीच में तुलसी रामायण के भी उदाहरण हैं। पुस्तक अच्छी है। दाम ३।) । सबके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने का पता—श्री लाजपतराय पृथ्वीराज साहनी पबलिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, लोहारीगेट, लाहौर।

अन्तिम आशा—श्रीयुक्त काज़ी असरफ महमूद ने नागपुर में इस शीर्षक छः कविताएँ सुनायी थीं, उन्हीं का यह पत्र-फलक है।

निमन्त्रण—श्रीयुक्त काज़ी असरफ महमूद की निमन्त्रण; स्वीकृति और प्रयाण शीर्षक कविताओं का संग्रह है। कविता अच्छी हैं। पता के० ए० महमूद एग्रिकलचरल रिसर्च इंस्टीटयूट नागपुर।

स्त्री कवि कौमुदी—सम्मेलन के वर्तमान साहित्य मन्त्री श्रीयुक्त पण्डित ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल ने इसमें प्राचीन और वर्तमान स्त्री कवियित्रियों की कविता का संग्रह और उनका जीवन चरित्र का चित्रण किया है। पुस्तक हिन्दी संसार में प्रसिद्धि पा चुकी है। कुछ कवयित्रियों के चित्र भी हैं। पुस्तक महत्वपूर्ण है। दाम ५) मिलने का पता साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग।

महात्मा गांधी—इसमें महात्मा गांधी का जीवन चरित्र और उनके महत्वपूर्ण १७१ लेखों और व्वाख्यानों का संग्रह है। श्रीयुक्त बाबू रामचन्द्र वर्मा की यह कृति संग्रहणीय और महत्वपूर्ण है। दाम ४।।) पता साहित्य भवन लिमिटेड इलाहाबाद।

प्रेम की पराकाष्ठा—अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध कवि आस्करवाइल्ड के "डचेस आफ पडुवा" नामक नाटक का यह हिन्दी अनुवाद है। अनुवाद अच्छा हुआ है। अनुवादक श्रीयुक्त सत्यजीवन वर्मा एम० ए० मूल्य २।)

कबीर का रहस्यवाद—श्रीयुक्त प्रोफेसर रामकुमार वर्मा ने महात्मा कबीर के ग्रन्थों का गहरा अध्ययन कर उनका रहस्यवाद प्रकट किया है। इसमें कबीर के दार्शनिक विचारों का अच्छा विवेचन हुआ है। मूल्य २)

भारतभक्त एण्ड्रूज—स्वर्गीय भारतभक्त पादरी एण्ड्रूज का इसमें जीवन चरित्र दिया गया। लेखक "एक भारतीय हृदय" एण्ड्रूज साहब के घनिष्ट सम्पर्क में रह चुके हैं। इसलिये इनका लिखा जीवनचरित्र अधिकार युक्त हुआ है। दाम २।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार— रीवां राज्य के श्रीयुक्त यादवेन्द्र सिंह जी बी० ए०, एल-एल० बी० ने जो कहानियां लिखी हैं उनमें से १६ कहानियों का इसमें संग्रह है। इनमें अधिकांश कहानियाँ प्रेम की स्वच्छन्द भावना पूर्ण, सामाजिक बन्धनों से बँधे रहने में नापसन्दी दिखानेवाली हैं। किन्तु चरित्र बल में प्रायः दृढ़ता देती जाती है। मूल्य २॥)

स्त्री कवि संग्रह---श्रीयुक्त पण्डित ज्योतिप्रसाद निर्मल ने महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये स्त्री कवियों की कविता और उनकी जीवनी का यह संक्षिप्त संस्करण तैयार किया है। मूल्य ॥)

परी देश की सैर—श्रीयुक्त ठाकुर श्रीनाथ सिंह जी ने छोटे बच्चों के लायक कौतूहल वर्धक और मनोरंजक सात कहानियाँ लिखी हैं। मजे की चीज़ है। दाम ।॥)

महात्मा गांधी की दिव्यवाणी—महात्मा गांधी के दिव्य विचारों का इसमें उल्लेख है। अहिंसा, स्वराज्य, प्रेम, स्वदेशी आदि के विचारों की अच्छी झलक है। दाम =)

शिवाबावनी—वीर कवि भूषण के सुप्रसिद्ध शिवा जी सम्बन्धी ५२ कवित्तों का अर्थ सहित इसमें संग्रह है। विद्यार्थियों के लिये विशेष उपयोगी है। दाम ।≶)

सत्याग्रह और असहयोग—आयुर्वेदाचार्य श्रीयुक्त चतुरसेन शास्त्री जी ने इसमें वर्तमान आन्दोलन पर नयी कल्पना और नये विचारों द्वारा प्रकाश डालने वाला ओजस्वी भाषा में यह ग्रंथ लिखा है दाम १॥।)

जीवन और श्रम— अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध लेखक डाक्टर सेम्युअल स्माइल्स के लाइफ एण्ड लेबर पुस्तक का अनुवाद श्रीयुक्त बाबू रामचन्द्र वर्मा जी ने किया है। अनुवाद सरल और बढ़िया हुआ है। मूल्य १॥)

सती लक्ष्मी—पण्डित सुदर्शनाचार्य बी० ए० का लिखा हुआ यह शिक्षाप्रद उपन्यास है। बँगला के प्रसिद्ध लेखक बाबू अर्जुनचन्द्र वसु की पुस्तक के आधार पर लिखा गया है। मूल्य १)

अन्योक्ति कल्पद्रुम—अन्योक्ति विषय में कविवर दीनदयालु गिरि की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुण्डलियां बहुत प्रसिद्ध हैं। स्थानीय साहित्य भवन लिमिटेड ने स्वर्गीय रामदास गौड़ जी से सम्पादन कराकर अर्थ सहित उन्हें छपवाया था। मूल्य १)

दूकानदारी– एक दूकानदार को सफल दूकानदारी करने के लिये किन-किन बातों की तैयारी करनी पड़ती है। किस प्रकार का व्यवहार रखना पड़ता है, कैसे ज्ञान की आवश्यकता होती है। इत्यादि बातों का इसमें अच्छा वर्णन किया गया है। प्रोफेसर नारायणप्रसाद जी बी० एस० सी० इसके लेखक हैं। दाम ।।।)

वीरोपाख्यान—दिल्ली के पण्डित चन्द्रशेखर शास्त्री साहित्याचार्य ने इसमें युद्धवीर, धर्मवीर, दयावीर और दानवीर नामक चार प्रकरणों में वीरों का वर्णन किया है। युद्ध वीरों में श्रीरामचन्द्र और अर्जुन, धर्मवीरों में हरिश्चन्द्र, भीष्म और युधिष्ठिर, दयावीरों में जीमूतवाहन, शिवि और बुद्धदेव तथा दानवीरों में महर्षि दधीच और अंगराज कर्ण का वर्णन है। पुस्तक अच्छी है। वर्णन विषय के अनुकूल है। दाम १।)

रामचरितमानस सुन्दर काण्ड—पाठ्य-क्रम में रखने योग्य सुन्दर काण्ड का शब्दार्थ, अर्थ और स्पष्टार्थ इसमें दिया गया है। अर्थ समझने के लिये पुस्तक काम की है। सम्पादक महाराजा कालेज जयपुर के हिन्दी अध्यापक पं० रामकृष्ण शुक्ल एम० ए० हैं। ।।।)

कविकीर्तन—श्रीयुक्त वियोगी हरिजी ने हिन्दी के १७१ कवियों का गुणकीर्तन परिचय सहित कवितावद्ध किया है। प्राचीन और आधुनिक सभी कवियों का परिचय दिया है। दाम ।=)

झखमारी—स्वर्गीय गिरीशचन्द्र घोष के नाटक का पण्डित रूप-नारायणजी पांडेय कृत यह अनुवाद है। इसमें मुकदमें वाज़ी से होनेवाली बरवादी का अच्छा-चित्र खींचा गया है। दाम ।=)

तीरगुलेली—श्रीयुक्त व्यथित हृदयजी ने राजपूताने के वीर केसरी-सिंह की वीरता और साहस की कहानी बहुत ही ओज और करुण पूर्ण भाव में अंकित किया है। मूल्य ≡)

जीवन के महत्व पूर्ण प्रश्नों पर प्रकाश—जेम्स एलन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइट आन लाइव्ज डिफ़िकल्टीज़ पुस्तक का छायानुवाद है, अनुवादक श्रीयुक्त खूबचन्दजी सोधिया बी० ए० एल० टी० हैं । विचार पूर्ण विचारों का इसमें समावेश है । दाम ॥-)

जादूगरनी— श्रीयुक्त पण्डित देवीदत्त शुक्लजी के ११ छोटे उपन्यासों का इसमें संग्रह है । वर्णन अच्छा और प्रभावजनक है । मूल्य १)

आदत डालने का अभ्यास—पण्डित गौरीशंकर शुक्ल जी ने एक मराठी पुस्तक से इसका अनुवाद किया है । सफलजीवन बनाने के लिये अच्छे कार्यों की आदत कैसे डालनी चाहिये, इसीका इसमें वर्णन है । दाम ।)

कथाकादम्बिनी— इसमें सात कथाओं का संकलन है । जो कथा-मुखी से संगृहीत हैं । कथाओं के पढ़ने में अच्छा आनन्द आता है । कथाएँ शिक्षा जनक हैं । दाम ॥।)

प्रबन्ध पारिजात—श्रीयुक्त पदुमलाल पुन्नलाल वक्शी बी० ए० हिन्दी के पुराने और मर्मज्ञ तथा धुरन्धर लेखक हैं । इस पारिजात में उन्हीं के प्रबन्ध पुष्प पुष्पित हैं । आपका प्रारम्भिक वक्तव्य बड़े काम का है । नये लेखकों के लिये आपने आवश्यक हिदायतें भी दी हैं । मूल्य १॥)

बड़े बाबू—'माया' सम्पादक श्रीयुक्त विजय वर्मा जी इसके लेखक हैं । उपन्यास मौलिक और अनेक भावों से भरा हुआ है । त्याग, कर्तव्य तथा उपदेश का पुट जगह-जगह है । मूल्य लिखा नहीं ।

गल्पमाला—इसमें छः लेखक-लेखिकाओं की छः गल्प दी गयी हैं । सम्पादक डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा जी हैं । कहानियाँ सब ऊँचे दर्जे की है । मूल्य लिखा नहीं ।

हिन्दू जाति का स्वातन्त्र्य प्रेम—श्रीयुक्त देशव्रत जी ने इसमें प्राचीन युग, पठान साम्राज्य, मुगल साम्राज्य और नवयुग के इतिहास से यह दिखलाया है कि हिन्दू जाति में स्वातन्त्र्य प्रेम की कैसी ज्योति जग रही है । पुस्तक पठनीय है । दाम ॥≥)

झांकी—श्रीयुक्त आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव एक अच्छे कवि हैं । आपकी कवितामें भाव, ओज और माधुर्य अच्छा रहता है । इसमें आपने पार्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सीता, शिवाजी और भारत राज्य लक्ष्मी, नूरजहां तथा चाणक्य और चन्द्रगुप्त की काव्यमयी झांकी दिखलायी है। कविता खड़ी बोली की है। दाम १) अधिक है

व्यापारिक पत्र व्यवहार—श्रीयुक्त कस्तूरमल बांठयाने व्यापार सम्बन्धी पत्रव्यवहार आदि की विधि और उसके नमूने व्यापारियों के लिये लिखकर बड़ा उपकार किया है। व्यापार सम्बन्धी सिद्धान्तों का भी अच्छा विवेचन है। दाम १=)

महाराजा रणजीतसिंह—स्वर्गीय पण्डित नन्दकुमार देव शर्मा एक अच्छे और ऊँची लगन के लेखक थे। महाराजा रणजीतसिंह का यह जीवन-चरित्र उन्हीं का लिखा हुआ है। पुस्तक बढ़िया है। दाम १।।)

सम्राट हर्षवर्धन—श्रीयुक्त सम्पूर्णानन्द जी बी० एस-सी०, एल टी० ने सम्राट हर्षवर्धन का जीवन चरित्र संक्षेप में बहुत अच्छा लिखा है। विषय विवेचन अच्छा हुआ है। दाम ॥)

नीति धर्म अथवा धर्मनीति—महात्मा गाधी की एक उत्कृष्ट नैतिक पुस्तक का यह श्रीयुक्त कृष्णलाल वर्मा द्वारा किया हुआ हिन्दी अनुवाद है। इसमें नीति की जवाबदारी, उत्तमनीति, नीति वाला कार्य कौन सा है, उत्तम नियम क्या है ? क्या नीति में धर्म का समावेश होता है, नीति के विषय में डार्विन के विचार, नीति में सार्वजनिक कल्याण शीर्षकों द्वारा विषय विवेचन किया गया है। दाम ।)

पिपहरी—बालकों के मनोरंजन के लिये ठाकुर श्रीनाथ सिंह की लिखी हुई कविताओं का इसमें संग्रह है। कविता बच्चों के अनुकूल ही हैं। मूल्य ।)

पृथ्वीराज—श्रीयुक्त पण्डित रूप नारायण जी पाण्डेय ने बाबू मनोमोहन गोस्वामी बी० ए० के ऐतिहासिक बंगला नाटक का हिन्दी में अनुवाद किया है। अनुवाद अच्छा हुआ है। नाटक बढ़िया है। दाम ।।।)

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यसमिति का नवां अधिवेशन

कार्यसमिति की बैठक मंगलवार, आश्विन १ संवत् १९९७, तारीख १७ सितम्बर १९४० को ३ बजे दिन से सम्मेलन के कार्यालय में श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी के सभापतित्व में हुई। कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण नीचे लिखे अनुसार है—

१—पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़ी गई जो स्वीकृत हुई।

२—अध्यापक रामरत्न जी के देहावसान के विषय में प्रधान मंत्री जी ने निम्नलिखित शोकप्रस्ताव उपस्थित किया—

"यह समिति सम्मेलन के पुराने परीक्षामंत्री तथा प्रख्यात साहित्यसेवी श्री अध्यापक रामरत्न जी के निधन पर शोक और उनके दुःखी परिवार के साथ समवेदना प्रकट करती है।"

सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

३—प्रधान मंत्री जी ने श्री जैनेन्द्रकुमार जी का ९-९-४० का इस आशय का पत्र कि सम्मेलन साहित्यिकों का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न करे और इसके लिए कुछ साहित्यसेवियों को परामर्श के लिये बुलाए—पढ़ सुनाया। निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सज्जनों की एक उपसमिति बनाई जाती है जिसका कर्तव्य यह होगा कि हिन्दी भाषा और साहित्य सम्बन्धी आधुनिक आवश्यक प्रश्नों के सम्बन्ध में एक प्रश्नावली बनाए और उन प्रश्नों पर हिन्दी के साहित्यिकों से सम्मतियां मांगे और समाचारपत्रों में भी इस प्रश्नावली को प्रकाशित करे।

१—श्री प्रधानमंत्री (संयोजक)
२ ,, साहित्यमंत्री
३—,, लक्ष्मीधर वाजपेयी
४—,, धीरेन्द्र वर्मा
५—,, रामकुमार वर्मा

सम्मतियों के आने पर यही समिति एक साहित्य परिषद् करने का प्रबन्ध करेगी जिसमें यथासम्भव ऐसे साहित्यिकों को बुलायेगी जिन्होंने प्रश्नावली पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार प्रकट किये हों। किन्हीं विशेष साहित्यिकों को जिनसे सहयोग की आशा हो किन्तु जिन्होंने सम्मति न भेजी हो बुलाने का अधिकार समिति को होगा।

इस परिषद् की तिथि निश्चित करने के लिए तथा प्रबन्ध के लिए उपर्युक्त समिति अपने साथ प्रयाग के रहने वाले छः की संख्या तक अन्य सज्जनों को सम्मिलित कर सकेगी और यह बड़ी समिति परिषद् की स्वागतसमिति का काम करेगी। परिषद् की तिथि का निश्चय करना इसी स्वागतसमिति के अधिकार में होगा।

उपर्युक्त दोनों समितियों के संयोजक प्रधान मंत्री होंगे।

सम्मेलन की ओर से इस समिति के खर्च के लिए २५०) स्वीकृत किया जाता है। शेष खर्च के लिये समिति चन्दा करने का उद्योग करेगी।

४—प्रधान मंत्री जी ने स्थायी समिति द्वारा भेजा गया श्री लक्ष्मीकान्त पांडे का इस आशय का पत्र कि हिन्दी विशेष योग्यता परीक्षोत्तीर्ण व्यक्तियों को प्रान्तीय सरकारी शिक्षा बोर्ड द्वारा वे सुविधाएँ नहीं दी जातीं जो उर्दू परीक्षोत्तीर्ण लोगों को दी जाती हैं—उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि इंटरमीजिएट बोर्ड को पत्र लिखा जाय कि हाई स्कूल में और इंटरमीजिएट कॉलेजों में रखे जाने वाले अध्यापकों की कम से कम योग्यता सम्बन्धी नियम में, इंटरमीजिएट परीक्षा और साहित्यरत्न के विकल्प में साहित्यरत्न और हिन्दी विशेष योग्यता कर दिया जाय।

५—प्रधान मंत्री जी ने भारतीय तार पद्धति सम्बन्धी श्री विद्याप्रकाश गुप्त की योजना का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि प्रधानमंत्री जी इस विषय पर एक लेख तैयार करा कर सम्मेलनपत्रिका में प्रकाशित करावें और देवनागरी लिपि में तार भिजवाने की आवश्यकता पर हिन्दीप्रेमियों का ध्यान आकर्षित करें।

६—हिन्दी प्रचारिणी सभा, छिंदवाड़ा की सम्बद्धता का विषय उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि सभा सम्बद्ध की जाय।

७—सम्मेलन की सदस्यता के सम्बन्ध में मेरठ के श्री विश्वप्रकाश दीक्षित तथा जबलपुर के श्री बिसाहूलाल सराफ के आवेदनपत्र उपस्थित किये गये। निश्चय हुआ कि दोनों सज्जनों की सदस्यता स्वीकार की जाय।

८—प्रधान मंत्री जी ने पूने में होने वाले अधिवेशन के अवसर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के अनुकूल वातावरण पैदा करने की आवश्यकता बताई और कहा कि मेरी राय है कि श्री गंगाधर इंदूरकर को इस काम के लिए भेजना उपयुक्त होगा क्योंकि वह मराठी भी जानते हैं और हिन्दी में भी उनकी योग्यता अच्छी है। निश्चय हुआ कि श्री गंगाधर इंदूरकर को पूना सम्मेलन के अवसर पर प्रचार करने के लिये नियुक्त किया जाय।

९—प्रधान मंत्री जी ने सम्मेलन का २५ वर्ष का इतिहास लिखाने का विषय पेश किया और बताया कि यह काम श्री रामशंकर शुक्ल 'रसाल' को सौंपा गया था। उन्होंने श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' के सुपुर्द कर दिया था। और अब श्री रसाल जी बार बार अनुरोध करने पर भी इस विषय में कोई उत्तर नहीं देते। श्री निर्मल जी ने बताया कि सम्मेलन के इतिहास का जहां तक सम्बन्ध है वह तो लिखा जा चुका है। केवल विभागों का विवरण देना है। जहां तक लिखा गया था उसे श्री रसाल जी के पास देखने के लिए भेज दिया था और उनके पास बहुत दिन तक रखा रहा, किन्तु उन्होंने कुछ नहीं किया, इसलिए वह (निर्मल जी) उसे वापस ले आये। निश्चय हुआ कि श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' इसे शीघ्र पूर्ण करके प्रधान मंत्री जी को दे दें।

१०—डाक द्वारा शीघ्रलिपि शिक्षा आरम्भ करने की योजना का विषय तथा उस सम्बन्ध में श्री परीक्षामंत्री और श्री ऋषिलाल अग्रवाल के बीच हुआ पत्रव्यवहार उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि १० विद्यार्थियों के हो जाने पर काम प्रारम्भ किया जाय। विद्यार्थियों के शुल्क में सम्मेलन का जो भाग होगा उसके अतिरिक्त १००) तक परीक्षामंत्री जी डाक द्वारा शीघ्रलिपि शिक्षण पर खर्च कर सकते हैं।

११—प्रधान मंत्री जी ने शीघ्रलिपि शिक्षण के लिए नियुक्त अध्यापक श्री काशीराम गौड़ की नियुक्ति को स्वीकृति का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि वेतन पर कोई अध्यापक नहीं रखा जा सकता। दो रुपया मासिक जो विद्यार्थियों से लिया जाता है वह पूरा तब तक उन्हें दे दिया जाय जब तक १५) न हो जाय। जब इतने विद्यार्थी हो जायँ कि १।।) प्रति विद्यार्थी के हिसाब से उन्हें कम से कम १५) मिलने लगें तब उनको १।।) के हिसाब से दिया जाय और शेष सम्मेलन के कोष में जमा हो।

१२—परीक्षामंत्री जी ने अजमेर बोर्ड द्वारा सम्मेलन की परीक्षाएँ मान्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराने का विषय उपस्थित किया और बताया कि वहां शीघ्र बोर्ड की बैठक होने वाली है जिसमें यह विषय पेश होगा। बैठक के समय सम्मेलन की ओर से किसी का अजमेर में उपस्थित होकर उद्योग करना परीक्षाओं को मान्य कराने में सहायक होगा। निश्चय हुआ कि जहां तक सम्भव हो सहायक मंत्री जी इस काम के लिये जायं और प्रधान मंत्री जी तथा परीक्षामंत्री जी से पत्र लेते जायं और यदि वह किसी कारण न जा सकें तो परीक्षामंत्री जी जिसे चाहें भेज दें।

१३—प्रधान मंत्री जी ने बताया कि पारिभाषिक शब्दकोष के कार्य के सम्बन्ध में बनाई गई समिति के संयोजक श्री सीताराम चतुर्वेदी को प्रारम्भिक व्यय के लिये १००) दिया गया था। शुरू में उन्होंने थोड़ा सा विवरण प्रकाशित किया था। उसके बाद इस विषय में क्या काम हुआ इसकी कोई सूचना हमें नहीं मिली और न रुपयों का ही कोई ब्योरा अभी तक मिला। कार्यालय से चतुर्वेदी जी को कई पत्र भी भेजे गये किन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। निश्चय हुआ कि प्रधान मंत्री जी की रिपोर्ट के अनुसार रकम बट्टे खाते में डाल दी जाय।

१४—प्रबन्धमंत्री जी ने बताया कि श्रावण १२ संवत् १९९७ की कार्य-समिति में चौबीस कवियों की कविताएँ पत्थरों पर खुदवाये जाने का निश्चय हुआ था। किन्तु इंजीनियर साहब की राय है कि २० से अधिक पत्थरों का लगवाना उचित न होगा। निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सज्जनों की समिति इस सम्बन्ध में उचित निर्णय करके कार्य प्रारम्भ कर दे—

१—श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी
२—,, नन्दकिशोर अग्रवाल
३—,, रामलखन शुक्ल (संयोजक)

साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि सत्यनारायणकुटीर में विशेषकर श्री सत्यनारायणजी तथा ब्रजभाषा के अन्य कवियों की कविताएँ ही पत्थरों पर खुदवा कर लगाई जायं।

१५—प्रबन्धमंत्री जी ने बताया कि साहित्य विद्यालय, सेवदह सम्मेलन की सम्बद्ध संस्था है। वहां सम्मेलन की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी तैयार किये जाते हैं। बाढ़ के कारण विद्यालय की इमारत को बड़ी हानि हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस परिस्थिति में वहाँ के संस्थापक महोदय ने पत्र लिख कर सम्मेलन से कुछ आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थना की है। संवत् ९६ के बजट में इन्हें ५०) दिया गया था। निश्चय हुआ कि उपर्युक्त विद्यालय को सं० ९७ के बजट में से ५०) सहायतार्थ भेजे जायं।

बाबूराम सक्सेना,
एम० ए०, डी० लिट्०,
प्रधान मंत्री

कार्यसमिति का दसवाँ अधिवेशन

कार्यसमिति की बैठक मंगलवार, १५ आश्विन संवत् १९९७, तारीख १ अक्तूबर १९४० को ४ बजे दिन से सम्मेलन के कार्यालय में श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी के सभापतित्व में हुई।

१—पिछली कार्यसमिति की कार्यवाही पढ़ी गई जो स्वीकृत हुई।

२—प्रधान मंत्री जी ने नियम ३६ (क) के अनुसार विभिन्न प्रान्तों की ओर से प्रतिनिधियों के चुनाव का विषय उपस्थित किया। सर्वसम्मति से यह विषय स्थगित किया गया और निश्चय हुआ कि फिर किसी अगली समिति में उपस्थित किया जाय।

३—स्थानीय अदालत में प्रचार कार्य के लिए एक टाइपराइटर खरीदने का विषय उपस्थित हुआ।

इस सम्बन्ध में यह मालूम हुआ कि यहाँ के स्थानीय जिला अदालत के वकीलों ने टाइपराइटर खरीदने के लिए कुछ रुपया इकट्ठा करने का आयोजन किया है और कुछ रुपया इसके लिए सम्मेलन कार्यालय में जमा भी हो चुका है।

निश्चय हुआ कि एक पोर्टेबुल रेमिंगटन टाइपराइटर इस काम के लिए खरीद लिया जाय और वह श्री काशीराम गौड़ को काम करने को दिया जाय। श्री श्रीमोहन जी वकील की देख रेख में श्री काशीराम गौड़ लेखक का कार्य अदालत में करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी निश्चय हुआ कि श्री श्रीमोहन जी को उनके उत्साह तथा लगन के लिए धन्यवाद दिया जाय।

४—प्रधानमंत्री जी ने बताया कि पूना अधिवेशन के बाद जिस स्थायी समिति का कार्यकाल प्रारम्भ होगा उसका संगठन हो चुका है। नियमानुसार पूना सम्मेलन के बाद होने वाले सम्मेलन के पश्चात् जो स्थायी समिति कार्य करेगी उसके संगठन की कार्यवाही इसी महीने (सितम्बर-अक्तूबर) में करनी चाहिए। मेरा प्रस्ताव है कि यह कार्यवाही अभी स्थगित की जाय। निश्चय हुआ कि कार्यसमिति स्थायी समिति से सिफारिश करती है कि पूना अधिवेशन के बाद होने वाले सम्मेलन अधिवेशन के पश्चात् जो स्थायी समिति कार्य करेगी उसके संगठन का कार्य पूना सम्मेलन के पश्चात् तक के लिए स्थगित किया जाय।

५—सम्मेलन की साधारण सदस्यता के लिए प्राप्त निम्नलिखित सज्जनों के आवेदनपत्र उपस्थित किए गए—

सर्वश्री फूलचन्द्र जैन, भोपालगढ़; दयासागर टंडन, प्रयाग; लालबहादुर शास्त्री, प्रयाग; चांदमल अग्रवाल, औरंगाबाद; रामसुमेर सिंह, अमेठी; विश्वनाथ सारस्वत, येवतमाल; त्रिवेणीदत्त शास्त्री, बरेली; मुरलीधरप्रसाद सिंह, सारन; श्रीमोहन श्रीवास्तव, प्रयाग; गयाप्रसाद तिवारी, प्रयाग; रामबचन द्विवेदी, शाहाबाद।

निश्चय हुआ कि इन सभी सज्जनों की सदस्यता स्वीकार की जाय।

बाबूराम सक्सेना,
एम० ए०, डी० लिट्०,
प्रधान मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी पूना अधिवेशन के लिए निश्चित कार्यक्रम

२५ दिसम्बर १९४०

१—प्रातःकाल ८॥ बजे से ११ बजे तक	स्थायी समिति तथा विषय निर्वाचिनी समिति की बैठकें।
२—सायंकाल ४ बजे से	सम्मेलन का अधिवेशन।
३—सायंकाल ८ बजे से १० बजे तक	विषय निर्वाचिनी समिति।

२६ दिसम्बर १९४०

१—प्रातःकाल ८ बजे से ११ बजे तक	विषय निर्वाचिनी समिति।
२—दोपहर २ बजे से ६ तक	सम्मेलन अधिवेशन।
३—सायंकाल ८ बजे से १० बजे तक	राष्ट्रभाषा परिषद्।

२७ दिसम्बर १९४०

१—प्रातःकाल ८ बजे से ११ बजे तक	विषय निर्वाचिनी समिति
२—दोपहर १ बजे से ४ बजे तक	साहित्य परिषद्
३—सायंकाल ५ बजे से ७ बजे तक	सामाजशास्त्र परिषद्
४—सायंकाल ८ बजे से १० बजे तक	विज्ञान परिषद् तथा दर्शन परिषद्

२८ दिसम्बर १९४०

१—प्रातःकाल ८ बजे से ११ बजे तक	सम्मेलन अधिवेशन
२—दोपहर १ बजे से	प्रतिनिधियों की बैठक; उसके उपरान्त स्थायी समिति की बैठक।

प्रधान मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी समिति का छठां अधिवेशन

स्थायी समिति की बैठक रविवार, ५ श्रावण १९९७, तारीख २१ जुलाई १९४० को ३ बजे दिन से सम्मेलन के कार्यालय में नीचे लिखे सदस्यों की उपस्थिति में हुई—

१—श्री पुरुषोत्तमदास टंडन		प्रयाग
२—" ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल		"
३—" भगीरथप्रसाद दीक्षित		लखनऊ
४—" परमेश्वरीलाल गुप्त		आजमगढ़
५—" इन्द्रशंकर मिश्र		काशी
६—" पुत्तनलाल विद्यार्थी		लखनऊ
७—" उदयनारायण तिवारी		प्रयाग
८—" लक्ष्मीधर वाजपेयी		"
९—" कृष्णदेवप्रसाद गौड़		काशी
१०—" दयाशंकर दुबे		प्रयाग
११—" ब्रजराज		प्रयाग
१२—" मथुराप्रसादसिंह		पटना
१३—" बालकृष्ण पाण्डेय		लखनऊ
१४—" वाचस्पति पाठक		प्रयाग
१५—" गिरिजाप्रसाद शुक्ल		"
१६—" ब्रजभूषण शुक्ल		"
१७—" छविनाथ पाण्डेय		पटना
१८—" सत्यजीवन वर्मा		प्रयाग
१९—" चन्द्रावती त्रिपाठी		"
२०—" रामकुमार वर्मा		"
२१—" जगन्नाथप्रसाद शुक्ल		"
२२—" गंगाप्रसाद उपाध्याय		"
२३—" रामलखन शुक्ल		"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४—श्री ओंकारनाथ मिश्र प्रयाग
२५—" गोरखप्रसाद "
२६—" बाबूराम सक्सेना " (प्रधान मंत्री)

१—नियमानुसार श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन ने सभापति का आसन ग्रहण किया। पिछले अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी गई और स्वीकृत हुई।

२—श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने पूना सम्मेलन के सम्बन्ध में १८ आषाढ़ १९९७, तारीख २ जुलाई १९४० की कार्यसमिति के समक्ष उपस्थित की हुई अपनी रिपोर्ट तथा उस पर कार्यसमिति का यह निश्चय कि "रिपोर्ट स्वीकृत की जाय और अगला अधिवेशन पुर्णे में हो। यह समिति स्थायी समिति से अनुरोध करे कि वह पुर्णे में सम्मेलन करने के लिए तिथियां शीघ्र निश्चित करे" पढ़ कर सुनाया। साथ ही पुर्णे की स्वागत समिति का इस आशय का तार कि--आगामी सम्मेलन दिसम्बर २४, २५, २६, २७ को रखा जाय—उपस्थित किया।

इस पर श्री बालकृष्ण पाण्डेय ने प्रस्ताव किया कि आगामी सम्मेलन दिसम्बर २४ से २७ तक हो। प्रधान मंत्री जी ने बतलाया कि बड़े दिन की छुट्टियों में दूर से जाने वालों के लिए २४ दिसम्बर से अधिवेशन रखना सुविधाजनक न होगा। इसलिए २५ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक रखा जाय।

श्री बालकृष्ण पाण्डेय ने इसे मान लिया और यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि अगला सम्मेलन आगामी दिसम्बर २५ से २८ तक हो।

श्री परमेश्वरीलाल गुप्त ने आपत्ति की कि अधिवेशन के लिये चार दिन पर्याप्त नहीं होते हैं और इसलिए संशोधन उपस्थित किया कि सम्मेलन दिसम्बर २५ से सात दिन तक हो। इस संशोधन का कई सदस्यों द्वारा विरोध किये जाने पर श्री गुप्त जी ने उसे वापस ले लिया और श्री बालकृष्ण पांडेय का प्रस्ताव कि अगला सम्मेलन २५ से २८ दिसम्बर तक हो अविरोध स्वीकृत हुआ।

३—सभापति जी की आज्ञानुसार परीक्षामंत्री जी ने परीक्षाओं की नियमावली उपस्थित की।

इस सम्बन्ध में श्री परमेश्वरीलाल गुप्त ने प्रस्ताव किया कि सम्मेलन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर से 'व्यापारविशारद' परीक्षा का भी आयोजन किया जाय। निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय परिषद् उक्त परीक्षा का आयोजन करे।

श्री छबिनाथ पाण्डे, श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित तथा श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़ ने क्रमशः बिहार संस्कृत ऍसोसियेशन की आचार्य परीक्षा, लखनऊ विश्वविद्यालय की साहित्याचार्य परीक्षा तथा काशी विश्वविद्यालय की शास्त्राचार्य परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को बिना मध्यमा उत्तीर्ण किये ही उत्तमा में सम्मिलित होने का अधिकार दे देने के प्रस्ताव किये। निश्चय हुआ कि ये प्रस्ताव परीक्षासमिति के विचारार्थ भेजे जायँ।

प्रधान मंत्री जी ने राष्ट्रभाषा परीक्षाओं के सम्बन्ध में श्री ग० दा० सावरकर का राष्ट्रभाषा नाम पर आपत्तिसूचक पत्र पढ़ सुनाया। निश्चय हुआ कि श्री सावरकर जी को यह उत्तर दिया जाय कि— सम्मेलन की सभी परीक्षाएँ हिन्दी की ही हैं। राष्ट्रभाषा परीक्षाएँ अहिन्दी प्रान्तों के इतर भाषा भाषियों में राष्ट्रभाषा की दृष्टि से हिन्दी का प्रचार करने के लिए चलाई गई हैं। इसी लिए उनका यह नाम रक्खा गया है।

परीक्षाओं की नियमावली स्वीकृत हुई।

४—प्रधान मंत्री जी ने सम्मेलन की सम्बद्ध संस्था भारतीय विश्वविद्यालय, पाढ़म तथा हिन्दी साहित्य परिषद्, सुरही से आगामी स्थायी समिति के लिए आये हुए निम्नलिखित प्रतिनिधियों के नाम उपस्थित किये।

श्री जगदीशनारायण राय एम० ए०, 'साहित्यरत्न', सुरही, बलिया।
" शम्भूदयाल सक्सेना, सेठिया कालेज, बीकानेर।
" रामस्वरूप शास्त्री, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़।
" मुन्शीराम, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर।

सर्वसम्मति से ये नाम स्वीकृत हुये।

५—प्रधान मंत्री जी ने श्री लक्ष्मीकान्त पाण्डेय का इस विषय का शिकायती पत्र कि—हिन्दी की विशेष योग्यता परीक्षा में उत्तीर्ण व्यक्तियों को संयुक्तप्रान्त की सरकार के शिक्षा बोर्ड से वे सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं जो उर्दू की विशेष योग्यता परीक्षा में उत्तीर्ण परिक्षार्थियों को दी गई हैं— सुनाया। निश्चय हुआ कि यह विषय कार्यसमिति के विचारार्थ भेजा जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन ने लिपिसुधार के सम्बन्ध में श्री प्रधान मंत्री जी के नाम आया हुआ श्री पुत्तनलाल विद्यार्थी का इस आशय का पत्र कि लिपिसुधार के सम्बन्ध में बनारस के सम्मेलन के बाद कोई समाचार हिन्दी संसार के सामने नहीं आया। सम्भव है उसमें और विचार की आवश्यकता हो। अवसर मिलते ही स्थायी समिति के सामने यह विषय रख दिया जाय और इस सम्बन्ध में वह सेवा करने के लिए तैयार हैं—पढ़ सुनाया। निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सज्जनों की उपसमिति इस सम्बन्ध में स्थायी समिति के मंतव्यों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए आवश्यक कार्यवाही करे।

१—श्री पुत्तनलाल विद्यार्थी (संयोजक)
२— " बाबूराम सक्सेना
३— " छविनाथ पाण्डेय

बाबूराम सक्सेना,
एम० ए०, डी० लिट्०,
प्रधान मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू और पण्डित नेहरू

दिल्ली के सहयोगी 'हमारी ज़बान' के पहिली सितम्बर ४० के अङ्क में 'दाम-ख़याल' शीर्षक के नीचे छपा था —"पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने गाँधी जी के इस बयान को ग़लत ठहराते हुए कि उर्दू मुसलमानों की और हिन्दी हिन्दुओं की ज़बान है पञ्जाब के आज़ाद मुसलमानों के सामने एतराफ़ किया कि उर्दू उनकी मादरी ज़बान है।"

इस सम्बन्ध में हमने पण्डित जवाहरलाल नेहरू को पत्र लिखकर निम्नलिखित प्रश्न पूछे थे—

(१) क्या आपने कभी यह कहा कि उर्दू आपकी मादरी ज़बान है ?

(२) अगर आपने ऐसा कहा है तो उर्दू से आपका क्या मतलब है यह लिखने की आप कृपा करेंगे।

(३) क्या आप हिन्दुस्तानी, या हिन्दी को भी अपनी मादरी ज़बान समझते हैं या नहीं ?

(४) क्या आप उर्दू लिपि लिखना पढ़ना जानते हैं ? यदि आपको देशी भाषाओं में लेख लिखने होते हैं तो किस लिपि का इस्तेमाल करते हैं ?

हमारे पत्र के उत्तर में पण्डित जी की ओर से श्री पीताम्बर पन्त नामक सज्जन यह लिखते हैं—

"जवाहरलाल जी को आपका पत्र मिला। उन्होंने बताया कि यह सही है कि उन्होंने दो-एक बार यह कहा कि बोलचाल के लिए उर्दू उनकी मादरी ज़बान है। इसके माने यह हैं कि उनकी घर की बोल-चाल में और आमतौर से और काश्मीरी घरों की बोलचाल में उर्दू और फ़ारसी की तरफ़ कुछ झुकाव होता है और बचपन से ही वह यही बोलते हैं। वह उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी में कोई बुनियादी फ़र्क नहीं समझते।

उर्दू पढ़ना लिखना उन्हें बहुत थोड़ा आता है। हिन्दी में ज़्यादा लिख सकते हैं लेकिन उसमें भी बहुत सुविधा नहीं होती।"

प्रधान मंत्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ता साहित्य-मण्डल से प्रकाशित

जीवन-साहित्य

[सम्पादकः—श्री हरिभाऊ उपाध्याय]

में प्रतिमास आपको क्या मिलेगा ?

जीवन को ऊँचा उठाने के लिए लिखे गये लेख

जीवन की दुरूह समस्याओं के हल

जीवन-दायिनी कवितायें और सत्य कथायें

साहित्य की निष्पक्ष समालोचना और समीक्षा

साहित्य-सेवियों के रेखा-चित्र और साहित्यिक संस्थाओं के सजीव परिचय

साहित्यिक प्रश्न और चर्चायें

साहित्य-समाचार और हलचलें

जीवन-साहित्य ही सत्साहित्य है।

अपने साहित्य-जीवन में

क्या आप

'मण्डल से प्रकाशित तथा दूसरे जीवनोपयोगी साहित्य की जानकारी

के लिए 'जीवन-साहित्य' से दूर रहेंगे ?

वार्षिक मूल्य	मण्डल के ग्राहकों से	नमूने की प्रति
२)	१)	=)

'जीवन-साहित्य'

सस्ता-साहित्य मंडल, नई दिल्ली

शाखायें-दिल्ली, लखनऊ, इन्दौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यू० पी०, सी० पी०, बरार, भूपाल, अलवर, तथा बीकानेर आदि कितने ही देशी राज्यों द्वारा पुस्तकालयों तथा शिक्षा-संस्थाओं के लिए स्वीकृत

वार्षिक मूल्य २) **साधना** एक प्रति ।)

[विविध विषय विभूषित साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मासिक पत्रिका]

सम्पादक—श्री० सत्येन्द्र, एम० ए०

सञ्चालक—गंगाप्रसाद एण्ड सन्स पुस्तक प्रकाशक, आगरा। कार्यालय-- दी एज्यूकेशनल प्रेस बाँके-विलास, आगरा।

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन (स्पीकर यू० पी० असेम्बली)

साधना के कई अङ्क मिले। मुझको अच्छे लगे। धन्यवाद। आपका प्रयत्न सफल हो यह कामना है।

श्री सम्पूर्णानन्द (भू० पू० शिक्षा-मन्त्री)

मैं आपकी साधना की प्रत्येक प्रति को आद्योपान्त अत्यन्त रुचि से पढ़ता हूँ। इसमें जो सुपाठ्यसामग्री रहती है उसके देखते हुए इसका मूल्य भी अल्प है। आशा है प्रत्येक साहित्य-प्रेमी इस पत्रिका को अपनायेगा।

प्रताप (कानपुर)

इस अंक के लेखकों में ख्यातिनामा साहित्यिकगण हैं। पत्रिका का मुद्रण और आकृति साफ़, सुदृश्य और आकर्षक है। प्रथम अङ्क को देखकर पत्रिका होनहार मालूम होती है। ऐसी सुन्दर पत्रिका निकालने के लिए हम इसके संचालकों को हार्दिक बधाई देते हैं।

देशदूत (इलाहाबाद)

'साधना' यह साहित्यिक मासिक पत्रिका पिछले दो महीने से प्रकाशित होने लगी है। अब तक जितने अंक प्रकाशित हुए हैं उन्हें देखने से यह स्पष्ट प्रकट होता है कि 'साधना' को अनेक प्रतिष्ठित लेखकों का सहयोग प्राप्त है। यह बड़ी सुबुद्धि और सुन्दरता के साथ सम्पादित हुआ है और हिन्दी के प्रेमियों के पढ़ने और मनन करने योग्य इसमें काफ़ी सामग्री रहती है।

नमूने का अंक मुफ़्त में मँगाने के लिए निम्न पते पर लिखिए:—

पता—साधना कार्यालय, बाँके विलास, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य संदेश के उपन्यास-अङ्क के कुछ लेख और उनके लेखक

उपन्यास—	श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी
उपन्यास का शरीर विज्ञान—	श्री गुलाबराय
उपन्यास का स्वरूप—	श्री विनोदशंकर व्यास
कथा-साहित्य का जीवन-पृष्ठ —	श्री शांतिप्रिय द्विवेदी
हिन्दी का कथा-साहित्य —	श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
हिन्दी उपन्यासों का प्रवृत्ति-गत विकास —	श्री गोपालप्रसाद व्यास
हिन्दी उपन्यास का भविष्य—	श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त
हिन्दी उपन्यासों के कुछ अभाव—	श्री ताराशंकर पाठक
उपन्यासों का वर्गीकरण—	श्री रामचन्द्र शुक्ल

* * *

हिन्दी उपन्यासों के तीन अग्रदूत—१–श्री देवकीनन्दन खत्री, २–श्री गोपालराम गहमरी, ३–श्री किशोरीलाल गोस्वामी

प्रेमचन्द—	श्री गोपालप्रसाद व्यास
प्रसादजी के उपन्यास—	श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़
जैनेन्द्रकुमार: दो दृष्टिकोण से—	१–श्री नन्ददुलारे वाजपेयी २ श्री प्रभाकर माचवे
सियारामशरणजी उपन्यासकार के रूप में—	श्री गुलाबराय
उपन्यासकार कौशिकजी—	श्री शर्मनलाल अग्रवाल
भगवतीचरण वर्मा (उपन्यासकार)—	श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त
पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी के उपन्यास—	श्री उदयशंकर भट्ट
पं० चतुरसेन शास्त्री—	श्री बद्रीप्रसाद सारस्वत
निरालाजी के उपन्यास —	श्री गोपालप्रसाद व्यास
पंच-पात्र	१ श्रीनाथसिंह, २ उषादेवी मित्रा, ३ पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ४ अनूपलाल मंडल, ५ राजा राधिकारमणसिंह

* * *

बंगला, मराठी, गुजराती तथा अंग्रेज़ी के उपन्यासों का विकास तथा उनका साहित्य

* * *

हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकार—परिचय और उनके अनुभव—

इस अङ्क का मूल्य १) है। स्थायी ग्राहकों को मुफ्त। पत्र का वार्षिक मूल्य ३) है। विद्यार्थियों से २) मात्र।

पता—मैनेजर, साहित्य-संदेश, साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के नवीन प्रकाशन

बुद्ध चरित—रचयिता पं० रामचन्द्र शुक्ल; नवीन संस्करण; मूल्य २||); महात्मा बुद्ध का उज्वल चरित्र, सुन्दर ब्रजभाषा काव्य; महत्वपूर्ण भूमिका में ब्रज, खड़ी और अवधी भाषाओं का व्याकरण विवेचन।

सोवियत भूमि—ले०—महापंडित राहुल सांकृत्यायन; मूल्य ५|), वर्तमान रूस के संबंध में यह एक विश्वकोष है।

हिन्दी रस-गंगाधर (दूसरा भाग)—अनुवादक पं० पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी; मूल्य ३||)। यह संस्कृत के उद्भट विद्वान पंडितराज जगन्नाथ के ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तर है। अलंकार संबंधी स्वतंत्र आलोचनाओं से भरा हुआ संस्कृत साहित्य का पांडित्यपूर्ण और अत्यन्त प्रामाणिक लक्षण ग्रंथ है।

प्रेमसागर—सम्पादक—बाबू ब्रजरत्नदास बी० ए०, एल-एल० बी०, पृष्ठ संख्या ४७०; नवीन संस्करण; मूल्य १||)। यह हिन्दी गद्य साहित्य का प्रसिद्ध ग्रंथ है जिसके अनेक संस्करण निकल चुके हैं; परन्तु यह सर्वोपरि संशोधित और मूल प्रेमसागर के आधार पर तैयार किया गया है।

भारतीय मूर्तिकला—ले० राय कृष्णदास; मू० साधारण सं० १); विशिष्ट सं० १|) भारतवर्षीय मूर्तिकला की अथ से इति तक सचित्र तात्विक व्याख्या। इस विषय की यह अद्वितीय पुस्तक है।

भारत की चित्रकला—ले०—राय कृष्णदास; मू० साधारण संस्करण १); विशिष्ट सं० १|)। भारतवर्ष की महान चित्रकला का मार्मिक निरीक्षण। समस्त भारतीय भाषाओं में अपने ढंग की सर्वश्रेष्ठ रचना।

बाल-मनोविज्ञान—ले० प्रो० लालजी राम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०; मूल्य १|)। हिन्दी में बाल मनोविज्ञान संबंधी सर्वश्रेष्ठ रचना।

बिहार में हिन्दुस्तानी—ले०—पं० चन्द्रवली पांडे, एम० ए०; मूल्य |); बिहार प्रान्त में हिन्दी-हिन्दुस्तानी की समस्या की मार्मिक व्याख्या।

भाषा का प्रश्न—ले०—पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए०; मूल्य |||); भाषा संबंधी प्रश्न का विस्तृत और विवेचनापूर्ण उत्तर।

कचहरी की भाषा और लिपि—ले०—पं० चंद्रवली पांडे, एम० ए०, मूल्य |||)। अदलतों में प्रयुक्त होने वाली भाषा और लिपि की गंभीर आलोचना।

मिलने का पता—**नागरी प्रचारिणी सभा, काशी**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा

प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

१ भूषण ग्रन्थावली २)
२ हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ॥)
३ भारत गीत ≋)
४ राष्ट्रभाषा ॥)
५ शिवाबावनी ≋)
६ सरल पिंगल ।)
७ भारतवर्ष का इतिहास भाग १ २॥)
८ ” ” ” ” २ २।)
९ ब्रजमाधुरीसार २॥)
१० पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १।)
११ सत्य हरिश्चन्द्र ।‾)
१२ हिन्दी भाषा सार ।॥)
१३ सूरदास की विनय पत्रिका ≋)
१४ नवीन पद्यसंग्रह ।॥)
१५ कहानी कुञ्ज ॥=)
१६ विहारी संग्रह ≋)
१७ कवितावली ।॥)
१८ सुदामा चरित्र ।)
१९ अलंकार प्रकाश ।=)
२० कबीर पदावली ।॥=)
२१ हिन्दी गद्य निर्माण १॥)
२२ हिन्दी साहित्य की रूप रेखा ।)
२३ सती कण्णकी ॥)
२४ हिन्दी पर फारसी का प्रभाव ॥=)
२५ पार्वती मङ्गल ।)
२६ सूर पदावली ॥=)
२७ नागरी अंक और अक्षर ≋)
२८ हिन्दी कहानियाँ १॥)
२९ ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार १।)
३० तुलसी दर्शन २॥)
३१ भूषण संग्रह भाग १ ।‾)
३२ भूषण संग्रह भाग २ ॥=)

(२) साधारण पुस्तकमाला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था १)
२ प्रथमालंकार निरूपण ≋)

(३) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

१ सरल शरीर विज्ञान ॥), ।॥)
२ प्रारम्भिक रसायन १)
३ सृष्टि की कथा १)

(४) बाल साहित्यमाला

१ बाल पञ्चरत्न ॥)
२ वीर सन्तान ।=)
३ बिजली =)

(५) ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ

१६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए० ६२९

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अभूतपूर्व साहित्यिक प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द' लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, आचार्य पंडित रामचंद्र जी शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के निर्माता, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल संग्रह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द। मूल्य ४।।)

बाल साहित्यमाला

बालभारती
श्रीयुत श्रीनाथसिंह
मूल्य ।=)

वीर शतमन्यु
श्रीयुत 'स्वर्णसहोदर'
मूल्य ।)

बालकथा
सौ० श्रीमती कमलाबाई किबे
मूल्य ।।)

छत्रपति शिवाजी
श्रीयुत गुर्ती सुब्रह्मण्यम् एम० ए०
मूल्य ।)

बाल कवितावली
श्री सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ
मूल्य ।)

साधारण पुस्तकमाला

चित्ररेखा
श्री रामकुमार वर्मा एम० ए०
मूल्य १।।)

गोरख बानी
डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल एम० ए०, डी० लिट्०

डिंगल में वीररस
श्री मोतीलाल मेनारिया एम० ए०
मूल्य १।।।)

आधुनिक कवि—१
श्रीमती महादेवी वर्मा एम० ए०
मूल्य १।।)

वीर काव्य संग्रह
श्री उदयनारायण तिवारी एम० ए०
श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित 'साहित्यरत्न'
मूल्य २)

साहित्यमंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

मुद्रक—गिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—साहित्यमंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की मुख-पत्रिका

चैत्र-वैशाख, १९९९

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन

प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक—श्री रामचंद्र टंडन, साहित्य-मंत्री

विषय-सूची

१. हिंदी ही राष्ट्रभाषा है—लेखक, पंडित अमरनाथ झा ... १

२. भारत की प्राचीन लिपियाँ—लेखक, श्री राममूर्ति मेहरोत्रा, एम्० ए० ... ... ७

३. हिंदी संसार—लेखक, श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ... १९

४. स्थायी समिति का द्वितीय अधिवेशन २९

५. समालोचना ३४

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अभूतपूर्व साहित्य प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द' लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, स्वर्गीय आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के एक निर्माता, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति, स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल संग्रह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द।

मूल्य ४॥)

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग २९ : संख्या ८-९ : : चैत्र-वैशाख १९९८-९९

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी ही राष्ट्रभाषा है[1]

[पंडित अमरनाथ झा]

"सुहृद् संघ" के इस अधिवेशन में उपस्थित होने का और यहाँ के हिन्दी-प्रेमियों से परिचित होने का जो आपने मुझे अवसर दिया है इसके लिए मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ। मुझे अपने प्रान्त में राष्ट्र-भाषा के प्रति यह उत्साह, यह प्रेम, यह अनवरत परिश्रम देखकर बड़ी प्रसन्नता है। हिन्दी भाषा का अनुशीलन, हिन्दी-साहित्य की वृद्धि, देवनागरी-लिपि का प्रचार—इनके विषय में हम सब की धारणाएँ एक-सी हैं, इन उद्देश्यों के साधन में हम सब एक होकर काम करते हैं, इनकी सफलता के लिए हम कटिबद्ध हैं। कुछ मतभेद तो अनावश्यक विषयों पर स्वाभाविक हैं—"नैको मुनिर्यस्य मतन्न भिन्नम्।" परन्तु जब हम दक्षिण-भारत, पंजाब, काश्मीर, महाराष्ट्र, बंगाल इत्यादि प्रान्तों में जाते हैं और वहाँ भी हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के उच्च स्थान पर पाते हैं, तो हमें सन्तोष होता है कि यह राष्ट्र-भाषा का प्रश्न स्वयं प्रतिदिन सुलझता जा रहा है। हिन्दी पढ़ने में, लिखने में, बोलने में, इन प्रान्तों के विचारशील पुरुष यथेष्ट परिश्रम कर रहे हैं। हमें आशा है कि शीघ्र ही हिन्दी निर्विवाद रूप में अन्तर्प्रान्तीय व्यवहार के लिए सर्वग्राह्य हो जायगी। साथ ही हमको यह भी जानना चाहिए कि और प्रान्तों में हिन्दी का आदर इसलिए होता है कि इसमें वे अपनी मातृ-भाषा की झलक देख पाते हैं, उनको विश्वास है कि इसके व्यवहार करने से उनकी चिरसंचित संस्कृति पर आघात नहीं पहुँचेगा। जिस दिन उनका यह विश्वास उठ जायगा और उनको एक अपरिचित अभारतीय भाषा के शब्दों के दर्शन होंगे उसी दिन हिन्दी के प्रति उन्हें अश्रद्धा होगी और ऐसी हिन्दी का वे विरोध करेंगे। हमें तो समस्त देश को अपने साथ ले चलना है। गुजराती, कन्नड, मलयालम, तामिल, तैलगू, बँगला, उड़िया, आसामी इन सब भाषा-भाषियों के सहयोग और सहानुभूति की हमें आवश्यकता है। डर तो यह है कि केवल उर्दू-भाषियों को मिलाने की चेष्टा में कहीं हम सम्पूर्ण देश के सहयोग को न खो बैठें। यह प्रश्न साम्प्रदायिक नहीं है। बंगाल के मुसलमानों की भाषा

[1] सुहृद्-संघ, मुज़फ्फ़रपुर के वार्षिक अधिवेशन के सभापति का भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाली है—क़ाज़ी नज़रुल इस्लाम और जसीमुद्दीन की बँगला कवितायें वैसी ही संस्कृत-मयी भाषा में हैं जैसी रवीन्द्रनाथ की। दक्षिण-भारत के मुसलमानों की मातृभाषा उर्दू नहीं है। पंजाब के मुसलमानों की मातृभाषा पंजाबी है। काश्मीर के मुसलमानों की मातृभाषा काश्मीरी है। तो हिन्दी का वातावरण कलुषित करने का अभिप्राय केवल दिल्ली, संयुक्त-प्रान्त और बिहार के उर्दू भाषा-भाषियों को प्रसन्न करना है। इनके सन्तोष का कितना अतुल मूल्य दिया जा रहा है! हिन्दी के प्रचलित शब्दों को छोड़कर, समस्त देश में जो शब्द सहज व्यवहृत हैं उनका तिरस्कार कर, फ़ारसी और अरबी के अपरिचित शब्दों को हिन्दी में घुसेड़ कर, जो राष्ट्र-भाषा के स्वरूप को विकृत कर रहे हैं उनको अदूरदर्शी कहना अन्याय नहीं होगा। यह सिद्धान्त—जिसपर बिहार की "हिन्दुस्तानी कमोटी" काम कर रही है—कि संस्कृत और अरबी दोनों भाषाओं का राष्ट्र-भाषा के निर्माण में एक ही स्थान होगा हमको कभी ग्राह्य नहीं है। हम प्रान्तीय-भाषा-भाषियों को हिन्दी के ग्रहण करने में इसी कारण से आपत्ति नहीं है कि यह संस्कृत-तनया है। "हिन्दुस्तानी" यदि संस्कृत और अरबी दोनों के कोख से निकलेगी तो इसमें हम अपनी मातृभाषा का प्रतिबिम्ब नहीं देख पायेंगे, इसमें ऐसा रूप देखने को मिलेगा जो कुत्सित, वीभत्स, और भयङ्कर होगा।

हिन्दी-संस्कृतमयी, सूरतुलसीसेविता, भारतीयसंस्कृतिमंडिता राष्ट्र-भाषा है और रहेगी। दिल्ली और लखनऊ में भले ही किसी और भाषा का आधिपत्य रहे, वहाँ "उर्दू-ए-मोअल्ला" भले ही फूले-फले, सरकारी भाषा भले ही वर्णसंकर होकर रहे—जनता की, साहित्य की भाषा तो हिन्दी ही होगी। कुछ लोगों की धारणा है कि हिन्दी और उर्दू एक ही भाषा के दो नाम हैं। मैं नहीं जानता कि जिस किसी को दोनों भाषाओं का कुछ भी ज्ञान है वह ऐसी बात कैसे कह सकता है। हिन्दी-साहित्य सम्मेलन ने अबोहर के अधिवेशन में अपनी नीति स्पष्ट कर दी है। सम्मेलन की नीति यह है—

"हिन्दी शब्द के भीतर ऐतिहासिक दृष्टि से उर्दू का समावेश है, किन्तु उर्दू की साहित्यिक शैली, जो थोड़े से आदमियों में सीमित है, हिन्दी से इस समय इतनी विभिन्न हो गई है कि उसकी पृथक् स्थिति सम्मेलन स्वीकार करता है और हिन्दी की शैली से भिन्न मानता है।

'हिन्दुस्थानी' या 'हिन्दुस्तानी' शब्द का प्रयोग मुख्य कर इसलिए हुआ करता है कि वह देशी शब्द-व्यवहार से प्रभावित हिन्दी-शैली तथा अरबी-फ़ारसी-शब्द-व्यवहार से प्रभावित उर्दू-शैली दोनों का एक शब्द से एक समय में निर्देश करे। कांग्रेस, हिन्दुस्तानी एकेडेमी और कुछ गवर्नमेंट विभागों में इसी अर्थ में इसका प्रयोग हुआ है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। कुछ लोग इस शब्द का प्रयोग उस प्रकार की भाषा के लिये भी करते हैं जिसमें हिन्दी और उर्दू शैलियों का मिश्रण हो।

इस प्रकार निश्चित अर्थों में उर्दू और हिन्दुस्तानी शब्दों का प्रचलन है। इस विषय में सम्मेलन का कोई विरोध नहीं है। किन्तु सम्मेलन साहित्यिक और राष्ट्रीय दृष्टियों से, अपने और अपनी समितियों के काम में हिन्दी-शैली का और उसके लिए हिन्दी शब्द का ही व्यवहार और प्रचार करता है।''

इस प्रस्ताव की भाषा इतनी स्पष्ट है कि भ्रम का कोई स्थान नहीं है। सम्मेलन की समितियों और सम्बद्ध संस्थाओं का इससे पथ-प्रदर्शन होता है। इस प्रस्ताव को उपस्थित किया किसी देशद्रोही पुरानी चाल के पण्डित ने नहीं, बल्कि कांग्रेस के एक प्रमुख नेता, संयुक्त-प्रान्तीय असेम्बली के स्पीकर, हिन्दी के अनन्य भक्त माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन ने। इसका अनुमोदन किया एक दूसरे कांग्रेसी नेता, संयुक्तप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री, श्री सम्पूर्णानन्द जी ने। इसके समर्थकों में थे—पण्डित माखनलाल जी चतुर्वेदी, पूना के श्री ग० र० वैशम्पायन जी, इन्दौर की श्रीमती कमलाबाई जी किबे, काश्मीर के श्री अमरनाथ जी काक,—भिन्न-भिन्न प्रान्त के उन्नतिशील विचारवान प्रतिनिधि। यह कहना निर्मूल है कि "हिन्दुस्तानी" के पक्ष में न रहना किसी राष्ट्रदल का विरोध करना है। यह प्रश्न साहित्य का है, भाषा का है, संस्कृति की रक्षा का है, राष्ट्रनीति का नहीं है। महात्मा गांधी ने सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इतना ठोस काम किया है कि उनकी सम्मति आदरणीय है। परन्तु महात्मा जी तो सत्य को सब से बड़ा धर्म मानते हैं, सत्य का अन्वेषण सब से प्रधान कर्त्तव्य समझते हैं। इसलिए यदि मैं कुछ उनके मत के प्रतिकूल कहने की धृष्टता करूँ तो मेरी धृष्टता क्षम्य है। अभी कुछ दिन हुए "हरिजन" में एक लेख महात्मा जी का प्रकाशित हुआ है। इस लेख में आप पूछते हैं—

"क्या उर्दू उसी हिन्दी का नाम नहीं, जो फ़ारसी-लिपि में लिखी जाती है और संस्कृत से नये शब्द लेने के बजाय फ़ारसी या अरबी से नये शब्द लेने की तबीअत रखती है ?"

इसका उत्तर है—"नहीं।" नये शब्दों का लिया जाना प्रश्न नहीं है। सत्य तो यह है कि उर्दू का समस्त वातावरण अभारतीय है। उर्दू-कविता में जिन छन्दों का प्रयोग होता है वे विदेशी हैं। उर्दू-कवि अपनी उपमाओं को ढूँढ़ने फ़ारस और अरब जाता है—यूसुफ़ और जुलेख़ा, शीरीं और फ़रहाद, लैला और मजनूं, नौशेरवाँ, हातिम, मूसा—इन्हीं के उदाहरण उसको सूझते हैं, भूलकर भी नल-दमयन्ती, सावित्री-सत्यवान, शकुन्तला-दुष्यन्त, भीम, युधिष्ठिर, अशोक के नाम याद नहीं आते हैं। हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि भी उर्दू लिखते समय बुतों को गालियाँ देता है, अपने को काफ़िर कहता है; मुसलमान बनने की आकांक्षा रखता है, मन्सूर और अनलहक़ की दोहाई देता है। पण्डित ब्रजनारायण चकबस्त काश्मीरी ब्राह्मण थे, सज्जन थे, सहृदय थे, देशभक्त थे। भगवान रामचन्द्र के बन-प्रस्थान का वर्णन करते हुए कहते हैं—

"रुख़सत हुआ वह बाप से लेकर .खुदा का नाम।"

यदि केवल नये शब्दों का प्रश्न होता तो "विदा" के लिए नये शब्द का प्रयोजन क्या था? "ईश्वर" अथवा "भगवान् के स्थान में "ख़ुदा" की क्या आवश्यकता थी? नहीं, नहीं, उर्दू को उर्दू के लिखनेवालों ने एक नई भाषा बना दिया है। इसमें हिन्दुस्तान की भाषा के क्रियापद तो हैं, सर्वनाम और अव्यय यहाँ के हैं, परन्तु संज्ञा और विशेषण प्रायः सभी फ़ारसी अथवा अरबी के हैं। उर्दू यहाँ की भाषाओं से कितनी पृथक् है इसका अनुमान इससे होगा कि उर्दू के प्रसिद्ध कोष "फ़र्हङ्गे आसफ़िया" में ७,००० अरबी के शब्द हैं, ६,५०० फ़ारसी के और केवल ५०० संस्कृत के। इसमें नये शब्दों के लेने का क्या प्रश्न है? महात्मा जी फिर पूछते हैं—"क्या उर्दू हिन्दी से उतनी ही भिन्न है जितनी बंगाली, मराठी?" उत्तर है—"उतनी ही नहीं, उससे कहीं अधिक।" ये हैं उर्दू के उदाहरण:—

(१) "इसमें कोई कलाम नहीं कि इक़बाल बहुत बलन्दपाया शायर अज़ीमुलमर्तबात मुफ़क्किर थे। बाज़ हज़रत को शायद इस बात के तस्लीम करने में पशोपेश हो कि वह उलूमे-रूहानी के मुअल्लम और असारे बातिनी के हाकिम भी थे, और उन्हें रूहानियत की गहराइयाँ मालूम और रमूज़े-मरूफ़ी से बख़ूबी आगाही थी।" (इसमें इस देश के केवल ये शब्द हैं—इस, में, कोई नहीं, कि, बहुत, ये, और, उन्हें, की, और, से, थी—और सब फ़ारसी अथवा अरबी के।

(३) मेरा सीना है मशरिक़ आफ़ताबे दाग़े हिज्राँ का,
तुलूये सुबहे महशर चाक है मेरे गरेबाँ का।

(२) बररूये शशजहत दर आईना बाज़ है।
याँ इम्तियाज़े नाक़िसो कामिल नहीं रहा॥

(४) वजूद अफ़्राद का मजाज़ी है हस्तिये क़ौम है हक़ीक़ी,
फ़िदा हो मिल्लत प' यानी, आतिश ज़ने तिलिस्मे मजाज़ हो जा।"

इस भाषा से हिन्दी का क्या सम्बन्ध है? कहाँ सामीप्य है? कैसी समता है? मैं इसे मानता हूँ कि इसमें माधुर्य है, रस है, काव्य-चमत्कार है। पर यह तो मैं नहीं मान सकता कि यह हिन्दी है।

एक उदाहरण और सुनिये—इस नयी गढ़न्त "हिन्दुस्तानी" का। बिहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार से एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होता है जिसका नाम 'रोशनी' है। इसमें फ़ारसी और देवनागरी-लिपि में एक ही बात लिखी जाती है। इसके एक अङ्क में देवनागरी-लिपि में छपा था:—

"ख़ुदा स्कूल मज़कूर की इन्सपेक्ट्रेस साहिबा व जामिये अफ़सरान व डाक्टर महमूद साहिब का दोनों जहाँ में रुतबा बलन्द करे जिन्होंने मेरे मुहल्ले में भी नाइट-स्कूल क़ायम करके ग़रीबों को रात को फ़ुर्सत के मौक़े में जामये हैवानियत उतार कर जामये इन्सानियत से आरास्ता होने का मौक़ा बख़्शा।"

हम बिना किसी डर से घोषित करते हैं कि यह हमारी भाषा नहीं है, हमें यह ग्राह्य नहीं है।

'सुहृद-संघ' मुजफ़्फ़रपुर में काम कर रहा है, इसलिए इसके कुछ विशेष उद्देश्य होने चाहिये। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ने अपने दिल्ली-अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया था:—

"राष्ट्रभाषा हिन्दी की विस्तृत अभिवृद्धि और हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के कार्यों और उद्देश्यों का सुसंगठित प्रचार करने की दृष्टि से यह सम्मेलन आवश्यक समझता है कि प्रत्येक प्रान्त में प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन और महत्वपूर्ण बोलियों के क्षेत्र में मंडल-सभायें स्थापित की जायें, जो हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से सम्बद्ध होकर व्यवस्थित रीति से निरन्तर कार्य करती रहें।"

यह प्रस्ताव बड़े महत्व का था। सम्मेलन तो प्रान्तीय संस्थाओं की सहायता से ही अपना काम कर सकता है। इसी कारण से सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक अगले महीने में उज्जैन में होने जा रही है; और सम्भव है कि इसकी बैठकें इस वर्ष पूना और पंजाब में भी हों। मैं तो चाहता हूँ कि सम्मेलन के अधिकारी समस्त हिन्दी प्रान्तों में जाकर हिन्दी-प्रेमियों से मिल कर सम्मेलन के कार्य का संगठन करें। जनवरी में मैं ओरछे गया था और बुन्देलखण्ड-साहित्य-मंडल के सदस्यों से मिला। वहाँ बहुत अच्छा काम हो रहा है। पंडित बनारसी दास जी चतुर्वेदी के नेतृत्व में और ओरछा-नरेश की उदारता से बुन्देलखण्ड के साहित्य-सेवी बड़ी लगन से साहित्य-सेवा कर रहे हैं। ग्राम्य गीतों और कहावतों का बहुत बड़ा संग्रह तैयार किया जा रहा है। इसी प्रकार ब्रज-साहित्य-मंडल भी अच्छा काम कर रहा है। मुजफ़्फ़रपुर के 'सुहृद-संघ' को चाहिए कि अपने प्रान्त के साहित्य की खोज करे। ग्राम्य गीतों की संख्या यहाँ बहुत है। इन सरल पदों में देश की यथार्थ दशा वर्णित है, यहाँ की संस्कृति इनमें संरक्षित है। सभ्यता तो बाह्य आडम्बर है, कल तुर्कों की थी, आज अँगरेज़ों की है। भारतीयता हमारे गाँव के रहने वालों में है, जो शहरों के क्षणभंगुर आभूषणों से अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाभाविक रूप को छिपा नहीं चुके हैं, जिनमें युगों से वेदना सहन करने की शक्ति है, जो सुख-दुःख में, हर्ष-विषाद में, जगत्स्रष्टा को भूलते नहीं हैं, जो वर्षा के आगमन से प्रसन्न होते हैं, जो खेतों में, जाड़े गर्मी में, प्रकृतिदेवी के निकट, अपना समय बिताते हैं, इन गानों में हम मनुष्य के जीवन के प्रत्येक दृश्य को देखते हैं, कन्या के ससुराल चले जाने पर माता के करुण स्वर सुनते है, पुत्र के जन्म पर माता-पिता के आनन्द की ध्वनि पाते हैं, खेतों के बह जाने पर हताश किसान के क्रन्दन, ब्याह के अवसर पर बधाई के गान, गृहिणी के विरह की व्यथा, सन्तान की असामयिक मृत्यु पर मूक-वेदना—अर्थात् मानविक जीवन की नैसर्गिक कविता का रसास्वादन करते हैं। इन गानों का संग्रह बहुत आवश्यक है। ये लुप्तप्राय हो रहे हैं। ग़जलों और सिनेमा के गानों का इतना प्रभाव बढ़ रहा है कि बहुत शीघ्र इनके लोप हो जाने की आशङ्का है। इस साहित्यिक धन को नष्ट न होने देना चाहिये। कहावतों और पहेलियों का भी संग्रह आवश्यक है। भोजपुरी कहावतों का संग्रह प्रयाग-विश्वविद्यालय के श्री उदयनारायण तिवारी ने बड़े परिश्रम से तैयार किया है। मैथिली कहावतों का संग्रह श्री ऋद्धिनाथ झा कर रहे हैं। सुहृद-संघ द्वारा भी यह काम होना चाहिये। आप मुजफ़्फ़रपुर का भौगोलिक वर्णन भी तैयार कर सकते हैं। देहात की कहानियों का संग्रह भी बड़ा आवश्यक काम है। यहाँ की पुरातत्त्व-सामग्री भी आप इकट्ठा कर सकते हैं।

कार्यक्षेत्र तो असीम है। कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। आपने अब तक बड़े परिश्रम से अपने उद्देश्यों की पूर्त्ति में उद्यम किया है। आपका उत्साह सराहनीय है। साहित्यिक अन्वेषण में तो कुछ ही लोगों की रुचि होगी। आप में से कुछ साहित्य-रचना भी करते हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई है। मैं नवयुवक लेखकों से केवल यही प्रार्थना करूँगा कि वे अपनी संस्कृति को न भूलें। आज-कल एक नया शब्द सुनने में आता है—"प्रगतिशील"। एक संस्था उत्पन्न हुई है जिसका नाम है "तरक़्क़ीपसन्द मुसन्निफ़ीन"। प्रगति तो प्रकृति का नियम है ही। मनुष्य तो आगे बढ़ता ही रहता है। साहित्य भी अपने युगविशेष का प्रतिविम्ब होता है। परन्तु भय यह है कि कहीं साहित्य एक दल की वस्तु बन कर न रह जाय, एक सम्प्रदाय विशेष के सिद्धान्तों के प्रसार में ही न उलझ जाय। साहित्य से समस्त मानव-जाति की सेवा होनी चाहिये, समस्त समाज का हित होना चाहिये। इस समाज में धनी भी हैं और दरिद्र भी, पूँजीपति भी हैं और श्रमजीवी भी। साहित्य में सभी भावों का समावेश होना चाहिये, उदारता से, संकीर्णता से नहीं, सौंदर्य का भी और कौरुप्य का भी, आह्लाद का भी और विषाद का भी, आशा का भी और नैराश्य का भी। वह साहित्य सत्य नहीं है, सत् नहीं है जिसमें जीवन के अन्धकारमय स्थानों का ही वर्णन हो, वीभत्स रस का ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहण हो, शोक सन्तप्त प्राणियों की ही चर्चा हो। संसार में केवल वेदना नहीं है, मोद भी है, केवल क्रन्दन नहीं है, हास भी है। और फिर नवयुवक लेखक के लिए जिसका जीवन सुख-स्वप्नों का है, जिसमें उल्लास है, आशा है उमङ्ग है—जो संसार की बाधाओं को तुच्छ समझता है, नभ के नक्षत्रों से बातें कर सकता है—ऐसे लेखक के लिये तो और भी आवश्यक है कि जगत की विपत्तियों को अपने से दूर रक्खे। सम्भव है यथा-समय उसे उनका सामना करना पड़े, सम्भव है उनसे और जटिल बन्धनों में फँस जाना पड़े, परन्तु यह विद्वत्ता नहीं है; यह अपने स्वभाव और अपनी प्रकृति के प्रति अन्याय है, कि इन विपत्तियों के आने से पूर्व ही वह साहस खो बैठे, अपनी हृत्तन्त्री को बन्द कर दे, जीवन के मधुर स्वरों को अपने पास न आने दे। वही साहित्य जीवित रह सकता है जो सत्य, सुंदर और शिव है। सत्य की दृष्टि में संसार सुख-दुःख-मिश्रित है। सौन्दर्य रूप में, वाक्य में, क्रिया में निहित है। मनुष्य-मात्र का जिससे कल्याण हो वही शिव है।

भारत की प्राचीन लिपियाँ

[श्रीराममूर्ति मेहरोत्रा, एम० ए०]

मराठी, गुजराती, पर्वतिया, उड़िया, बंगला, शारदा, कनड़ी, तामिल, गुरुमुखी, देवनागरी आदि आधुनिक लिपियों की वर्णमालाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने से हम इस महत्व पूर्ण परिणाम पर पहुँचते हैं कि नागरी, मराठी तथा पर्वतिया लिपियों में पूर्णतः सादृश्य है, आसामी तथा बंगला एक ही लिपि में लिखी जाती हैं, उड़िया वर्णों के सिर की घेरेदार पगड़ी, जो प्राचीन काल में लोहे की पुष्ट लेखनी से ताड़ पत्र पर लिखने के कारण उनके सिर पर रखनी पड़ती थी, उतार लेने से अनेक उड़िया वर्ण नागरी वर्णों के समान हो जाते हैं, नागरी वर्णों की सिर बंदी हटा देने से वे गुजराती सदृश हो जाते है, गुरुमुखी का निर्माण शारदा के आधार पर, जिसका नागरी से बहुत सादृश्य है, हुआ है; दकन की तेलुगु तथा कनड़ी और तामिल तथा मलयालम में बहुत समानता है और द्राविड़ लिपियों का नागरी से भी सादृश्य है। इतना ही नहीं तिब्बती, बर्मी, स्यामी, काम्बोजी तथा मलय-द्वीपी लिपियों के वर्णों की भी नागरी से समानता है। सारांश यह है कि उत्तरी भारत की आधुनिक लिपियों, दक्षिणी भारत की द्राविड़ लिपियों तथा भारत के पार्श्ववर्ती देशों की लिपियों का नागरी से बहुत कुछ सादृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इन सब में वर्णमाला, स्वर-व्यंजन भेद, स्वर क्रम, व्यंजनों का वर्गीकरण, मात्रा-नियम आदि सब लगभग एक से ही हैं, किसी में दो एक ध्वनियाँ कम हैं और किसी में अधिक, जो कुछ भेद है वह नाम का है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि नागरी लिपि मूल आर्य लिपि से संबद्ध है, उसको बाद में द्राविड़ों ने अपनाया, तदंतर भारत की पार्श्ववर्ती भाषाओं पर भी इनका प्रभाव पड़ा जैसा कि इससे स्पष्ट है कि पारिभाषिक शब्दों के लिए उक्त सब भाषाओं ने सदैव संस्कृत का ही सहारा लिया है। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि पश्चिमोत्तर भारत की सिंधी, काफ़िर, ब्राहुई, आदि पर अरबी का बहुत प्रभाव पड़ा है, तदनुसार उनकी लिपि पर सेमिटिक का विशेष प्रभाव है। अतः आधुनिक लिपियों के, विशेषतः नागरी के, इतिहास की खोज करने से प्राचीन भारतीय लिपियों का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। प्रागैतिहासिक काल की खोज करने में सब से बड़ी कठिनता प्राचीन सामग्री का अभाव है। यद्यपि बहुत कुछ सामग्री काल-कवलित हो गई है, प्राचीन पुस्तकालय आदि विध्वंसकारियों द्वारा नष्ट हो चुके हैं, अनेक शिलालेख दीवालों में चुने जाने पर शहीद होने का दावा कर रहे हैं अथवा खुदे होने के घमंड में, सिलवदे का रूप धारण करके, छोटी-मोटी वस्तुओं (मसाले, पिट्ठी, आदि) को पीस कर चूर चूर कर रहे हैं, ताम्रपत्रों ने वर्तनों का रूप धारण कर लिया है और नित्य प्रति कहारियों के कठोर हाथों के रगड़े खाते खाते अपनी उपयोगिता खो बैठे हैं, सोने-चांदी के सिक्के कोमल-कामनियों के अंग का आभूषण हैं और उनके मृदुल स्पर्श का आनंद ले रहे हैं, तदपि धरती माता ने अनेक खंडहर, शिलालेख ताम्र-पत्र आदि बहुत से रत्न अपने गर्भ में छिपा रक्खे हैं जो प्राचीन स्मारक-रक्षा विभाग के प्रयत्न के फलस्वरूप समय-समय पर हमारे सम्मुख आते रहते हैं। लिपि-संबंधी खोजों का श्रेय चार्ल्स विल्किंस, जेम्स टाड आदि पाश्चात्य और हीराचंद ओझा आदि पूर्वात्य विद्वानों को है।

अशोक से पूर्व की लिपि अप्राप्य है। अशोक के शिलालेखों से प्रकट होता है कि उस समय (लगभग २५० ई० पू०) भारत वर्ष में दो लिपियाँ प्रचलित थीं ब्राह्मी तथा खरोष्ठी अथवा खरोष्ट्री। शहबाजगढ़ी और मानसेरा के शिलालेख खरोष्ट्री में और और शेष ब्राह्मी में हैं। परंतु इसके यह मानी नहीं हैं कि भारत में लिपि का आविष्कार तीसरी चौथी शताब्दी पूर्व हुआ और इसके पूर्व कोई लिपि थी ही नहीं। अनेक प्रमाण ऐसे हैं जिनसे सिद्ध होता है कि लिपि का आविष्कार अशोक से सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुका था, उदाहरणार्थ, बड़ली तथा पिपरा में दो लेख पाए गए हैं जो चौथी, पांचवीं शताब्दी ई० पू० के हैं, हड़पा-मोहन-जोदड़ो में कुछ मुद्राएँ पाई गई हैं जो १००० ई० पू० की हैं, मेगस्थनीज ने अपनी 'इंडिका' में लिखा है कि जन्म-पत्रिकाएँ बनती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं, 'शील' नामक ग्रंथ में 'अक्खरिका' खेल का उल्लेख है जो उँगली अथवा सींक से लिख कर पहेली के रूप में खेला जाता था, बुद्ध-जीवनी-संबंधी पुस्तक 'ललित-विस्तर' में बुद्ध जी के चाँदी की तख़्ती पर स्वर्णलेखनी से लिखने का वर्णन है, तथा चीनी यात्री युएन-च्वांग का बीस घोड़ों पर ६५७ पुस्तकें लाद कर ले जाना प्रसिद्ध ही है। इसके अतिरिक्त यास्क के निरुक्त तथा पाणिनि के अष्टाध्यायी जैसे व्याकरणिक ग्रंथों की रचना लिखित साहित्यिक ग्रंथों के अभाव में होना असंभव है। वास्तव में बात यह है कि लेखन-कला तो थी, परंतु उसका प्रयोग संभवतया केवल साहित्य-रचना में होता था, सर्वसाधारण में नहीं। यही कारण है कि प्राचीन काल में लिखित ग्रंथों का बहुत महत्व था, पुराणों में लिखित ग्रंथों का दान बड़ा भारी पुण्य माना गया है। यद्यपि लिपि का आविष्कार-काल ठीक ठीक बताना कठिन है, तदपि इस उद्धरण से कुछ अनुमान लगाया जा सकता है, 'बाभ्रव्य के विषय में यह अनुश्रुति है कि उसने शिक्षा शास्त्र का प्रणयन किया।......प्रणयन का अर्थ है प्रवर्त्तन, पहले-पहल स्थापित करना और चला देना।......अतः बाभ्रव्य ने वर्णों की विवेचना के विषय को एक शास्त्र का रूप दे दिया।......इससे सिद्ध है कि वह विवेचना कुछ पहले शुरू हो चुकी और उसके समय तक पूरी परिपक्वता पा चुकी थी।......इस प्रकार भारत-युद्ध से सात पीढ़ी पहले अन्दाज़न १४५० ई० पू० में—हमारी वर्णमाला स्थापित हो गई थी।'[1]

(१) ब्राह्मी:—वेबर तथा बूहलर आदि पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि ब्राह्मी का निर्माण फिनीशियन तथा अरमइक के आधार पर हुआ है। बूहलर का कहना है कि 'भारतवासियों ने १८ वर्ण समुद्री व्यापारियों द्वारा ८९० ई० पू० फ़िनीशियन लिपि से, २ वर्ण ७५० ई० पू० मेसोपोटामिया से और २ वर्ण छठी शताब्दी ई० पू० में अरमइक से लिए और इनके आधार पर ब्राह्मी का निर्माण किया।'[2] कोलब्रुक, कनिंघम, फ़्लीट, ओझा, जायसवाल आदि इस मत से सहमत नहीं हैं, उन्होंने ब्राह्मी को भारत की ही उपज माना है। कनिंघम का सब से बड़ा विरोध यह है कि ब्राह्मी संस्कृत, प्राकृत, पाली आदि भारतीय लिपियों की भाँति बाईं ओर से दाईं ओर को लिखी जाती थी, परंतु सेमिटिक उर्दू-फ़ारसी की भाँति दाईं से बाईं ओर को लिखी जाती है। इस पर बूहलर ने 'एरण' के सिक्के द्वारा यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि ब्राह्मी भी पहिले दाईं ओर से बाईं ओर को लिखी जाती थी और इसके अवशेष चिह्न अशोक के शिला लेखों में अब भी पाए जाते है। उदाहरणार्थ ध, त, ओ व्यंजन उल्टे पाए जाते हैं तथा कुछ

---

[1] जयचंद विद्यालंकार, 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' जिल्द १, पृष्ठ २११

[2] 'इंडियन पीलिओग्राफ़ी', पृष्ठ १५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त व्यंजनों में भी उलट-फेर है यथा प्त, त्स, त्व के स्थान में त्प, स्त, व्य आदि खुदे हुए पाए जाते हैं। इस पर ओझा आदि विद्वानों का कहना है कि इधर सेमिटिक में केवल २२ वर्ण १८ उच्चारण-ध्वनियों के द्योतक है, वर्णों में न तो क्रम ही है और न स्वर-व्यंजन विभाग तथा स्वरों में ह्रस्व-दीर्घ का भेद ही, और मात्राओं तथा संयुक्ताक्षरों का भी अभाव है, उधर ब्राह्मी में ६३, ६४ वर्ण हैं, व्यंजनों के साथ स्वरों का मात्रा के रूप में सहयोग होना केवल ब्राह्मी की ही विशेषता है और प्रत्येक ध्वनि के लिए एक पृथक् लिपिचिह्न है, यहाँ तक कि अनुस्वार तक का एक पृथक् चिह्न है। अतः यह असंभव है कि ६३, ६४ मूल उच्चारणों वाली सर्व प्रकार से पूर्ण ब्राह्मी लिपि एक २२ वर्ण वाली सेमिटिक जैसी दरिद्र लिपि से निष्क्रमित हो और स्वयं २२ वर्ण भी न बना सके। अतः बूहलर के मत का बराबर विरोध होता रहा। १९१७ ई० में हैदराबाद की समाधियों में मिले बर्तनों तथा पत्थरों की खुदाई से बूहलर का मत निराधार सिद्ध हो गया। उन बर्तनो के पाँच लिपिचिह्न स्पष्टतया अशोक-कालीन लिपि से मिलते हैं। इन पत्थरों की भुरभुराहट से, जो कि हाथ लगते ही चूर-चूर हो गए, जायसवाल का अनुमान है कि ये लगभग २००० ई० पू० के हैं। इस प्रकार ब्राह्मी की उत्पत्ति सेमिटिक काल अर्थात् १००० ई० पू० के पूर्व हो चुकी थी। जायसवाल ने तो ब्राह्मी के सेमिटिक उद्भव का इतना विरोध किया है कि अनेक युक्तियों से सामी को ही ब्राह्मी से उत्पादित ठहराया है। उनका मत है कि ब्राह्मी तथा सामी वर्णों में समानता इस लिए नहीं है कि ब्राह्मी सामी से निकली है, अपितु इसलिए है कि सेमिटिक रूपों की उत्पत्ति ब्राह्मी से हुई है। क्योंकि उत्तरी तथा दक्षिणी सामी में एक ही उच्चारण के लिए भिन्न-भिन्न चिह्न हैं, परंतु वे सब ब्राह्मी से मिलते हैं। अतः यदि ब्राह्मी सामी से निष्क्रमित होती, तो उसके एक रूप से उधार लेती न कि भिन्न-भिन्न रूपों से थोड़ा थोड़ा। अतएव सामी की भिन्न-भिन्न लिपियों ने ही ब्राह्मी से उधार लिया है न कि ब्राह्मी ने सामी से। ब्राह्मी का मूल अर्थ है 'पूर्ण'। कोई भी लिपि यकायक पूर्ण नहीं हो सकती, वह धीरे-धीरे विकसित होकर कुछ समय पश्चात् पूर्ण होती है। अतः भारत में ब्राह्मी से पूर्व भी कोई अपूर्ण लिपि अवश्य रही होगी जिसका आविष्कार सेमिटिक काल से सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुका होगा।

अतः ब्राह्मी लिपि भारत की ही उपज है, किसी विदेशी लिपि की नहीं। इसकी पुष्टि चीनी विश्व-कोष 'फा-युअन-चुलिन' से भी होती है, जिसमें ब्राह्मी लिपि ब्रह्मा नाम के भारतीय आचार्य द्वारा प्रवर्तित बताई गई है। यहाँ इसकी सुन्दरता के विषय में दो एक उद्धरण देना अनुचित न होगा। ओझा का कथन है कि, 'यह भारतवर्ष के आर्यों का अपनी खोज से उत्पन्न किया हुआ मौलिक आविष्कार है। इसकी प्राची-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नता और सर्वांग-सुंदरता से चाहे इसका कर्त्ता ब्रह्मा देवता माना जाकर इसका नाम ब्राह्मी पड़ा; चाहे सादर समाज ब्राह्मणों की लिपि होने से यह ब्राह्मी कहलाई हो, पर इसमें संदेह नहीं कि इसका फ़िनीशिअन से कुछ भी संबंध नहीं।[1] टेलर का कथन है कि, 'ब्राह्मी लिपि एक अत्यत पूर्ण और अद्वितीय वैज्ञानिक आविष्कार है।'[2] एडवर्ड थामस का कथन है कि, 'ब्राह्मी अक्षर भारत-वासियों की मौलिक उपज हैं और उनकी सरलता से बनाने वालों की बुद्धिमता प्रगट होती है'।[3] लँसन आदि विद्वानों का कथन भी इसी सत्य की पुष्टि करता है। 'चूँकि इसका प्राचीनतम प्राप्य रूप काफ़ी प्रौढ़ और किसी विदेशी उत्पत्ति से अपनी स्वतंत्रता प्रगट करता है, अतएव वर्षों पूर्व इसका निर्माण किया जाना ही संभव हो सकता है।'

सारांश यह है कि ब्राह्मी लिपि जो सर्वांग-पूर्ण तथा सुन्दर है, भारतीय उपज है। जायसवाल के मतानुसार इसकी उत्पत्ति २००० ई० पू० में और बाभ्रव्य विषयक अनुश्रुति के अनुसार इसकी स्थापना १५५० ई० पू० में हो चुकी थी। अशोक के शिलालेखों से प्रकट है कि मौर्यकाल में इसका उत्तरी भारत तथा लंका में प्रचुर प्रचार था। 'पन्नवणा सूत्र' तथा 'समवायांग सूत्र' नामक जैन ग्रंथों में इसका नाम 'बंभी लिपि' दिया है और १८ लिपियों की नामावली में यह सब से ऊपर है। 'ललित-विस्तर' की ६४ लिपियों में भी ब्राह्मी सर्व-प्रथम नाम है। 'भगवती सूत्र' में प्रारम्भ में ही 'नमो बंभीए लिखिए' शब्दों द्वारा इसकी बंदना की गई है। अतः इसका प्राचीन अथवा पाली नाम बंभो था और उस समय इसका बहुत आदर था। सब से प्राचीन प्राप्य लिपि अशोकी ब्राह्मी ३०० ई० पू० की है। यद्यपि पिपरावा का मटके पर का लेख तथा बड़ली का खंड लेख ४००, ५०० ई० पू० के, हड़पा तथा मोहन-जोदड़ो की मुद्राएँ १००० ई० पू० की तथा हैदराबाद के बर्तनों पर के ५ चिह्न संभवतः २००० ई० पू० के भी पाए गए हैं, जिनमें मात्राएँ स्पष्ट हैं और अशोकी लिपि से सादृश्य है, परंतु बोधगम्य न होने के कारण इनसे अभी तक कोई महत्त्वपूर्ण परिणाम नहीं निकल सका है।

(२) खरोष्ठीः—खरोष्ठी का चीनी अर्थ है 'गधे के ओष्ठ वाली' और चीनी विश्व-कोष 'फ़ा-युअन-चुलिन' ने इसको भारतीय आचार्य खरोष्ठ द्वारा उत्पादित बताया

---

[1] ओझा, 'प्राचीन लिपिमाला', पृष्ठ २८
[2] टेलर, 'एल्फ़ाबेट', भाग १, पृष्ठ ५०
[3] 'हिन्दी-विश्वभारती', खंड २, पृष्ठ १०३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। बूहलर ने भी इसी मत को स्वीकार किया है। डा० प्रज़िलुस्की के मतानुसार यह प्रारंभ में गधे की खाल पर लिखी जाती थी और खरोष्ठी खरपृष्ठी का अपभ्रंश है, परंतु बाद में अपने आविष्कर्ता खरोष्ठ ऋषि के नाम पर खरोष्ठी कहलाने लगी। इन मतों के अनुसार खरोष्ठी भी भारत की ही उपज ठहरती है, परन्तु इसके मानने में कई आपत्तियाँ हैं। प्रथम तो यह ब्राह्मी आदि भारतीय लिपियों की भाँति बाईं ओर से दाईं ओर को नहीं लिखी जाती है; द्वितीय इसमें संयुक्ताक्षरों की कमी और ह्रस्व-दीर्घ भेद तथा मात्राओं का अभाव है जो कि भारतीय लिपियों की अपनी निजी विशेषता है; तृतीय भारत का सब से प्राचीन साहित्य धर्म ग्रंथ हैं, परन्तु खरोष्ठी का जो कुछ साहित्य उपलब्ध है उसका ब्राह्मणों के धर्म-ग्रंथों से कोई संबंध नहीं है। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार ब्राह्मी से उत्तरी भारत की आधुनिक लिपियाँ निष्क्रमित हुई हैं उस प्रकार खरोष्ठी से पश्चिमोत्तर भारत की कोई लिपि नहीं निकली प्रत्युत स्वयं इसकी भी तीसरी शताब्दी के पश्चात् ही अवनति होने लगी। अतः न तो इसका भारतीय लिपियों से संबंध ही है और न यह भारत की उपज ही है। इसका निर्माण किसी विदेशी लिपि के आधार पर हुआ है। डा० सिलवान लेवी ने एक चीनी ग्रंथ के आधार पर इसका नाम खरोष्ट्री बताया है और इसको भारत के निकट-वर्ती खरोष्ट्र देश की उपज माना है। अतएव यह तो निश्चय है कि यह विदेशी लिपि है। अब प्रश्न यह है कि इसका उद्भव किस लिपि से हुआ और यह भारत में किस प्रकार आई। खरोष्ठी का प्रचार केवल पश्चिमोत्तर भारत में था जहाँ की सिंधी, ग़ल्चा, काफ़िर, ब्राहुई आदि भाषाओं तथा लिपियों पर अब तक सेमिटिक वर्ग की अरबी भाषाओं का प्रभाव पाया जाता है और चूँकि यह भी अरबी की भाँति दाईं ओर से बाईं ओर को लिखी जाती है, अतः इसकी उत्पत्ति सेमिटिक लिपि से हुई है। डाडवेल, भंडारकर आदि इतिहासज्ञों का मत है कि खरोष्ठी का निष्क्रमण अरमइक से हुआ है जो कि छठी शताब्दी ई० पू० पारसी राज्यकाल में सम्पूर्ण हखामनी साम्राज्य की राज्यलिपि थी और जिसका मिश्र से हिन्दूकुश तक प्रचार था। डा० जॉन मार्शल का मत है कि खरोष्ठी का प्रचार सर्व-प्रथम गांधार में हुआ। इसकी पुष्टि तक्षशिला के शिलालेख से भी होती है। जब भारत के पश्चिमोत्तर आँचल अर्थात् कम्बोज, गांधार तथा सिंध प्रदेश पर लगभग ५१६ ई० पूर्व के पश्चात् ईरानियों का अधिकार हो गया तो उन्होंने भारतवासियों को भी अरमइक सिखाई। चूँकि इसमें केवल २२ लिपिचिह्न १८ उच्चारण-ध्वनियों के द्योतक थे और काम नहीं चलता था, अतः खरोष्ठ अथवा खरोष्ट्र आदि किसी आचार्य ने भारतीय भाषाओं की उन उच्चारण-ध्वनियों के लिपिचिह्न भी इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मित कर दिए जिनका इसमें अभाव था। यही हमारी खरोष्ठी लिपि थी। इसकी पुष्टि-स्वरूप ओझा का एक उद्धरण देना अधिक अच्छा होगा, 'जब ईरानियों का अधिकार पंजाब के कुछ अंश पर हुआ तब उनकी राजकीय लिपि अरमइक का वहाँ प्रवेश हुआ, परन्तु उसमें केवल २२ अक्षर, जो आर्यभाषाओं के केवल १८ उच्चारणों को व्यक्त कर सकते थे, होने तथा स्वरों में ह्रस्व दीर्घ भेद का और स्वरों की मात्राओं के न होने के कारण यहां के विद्वानों में से खरोष्ठी या किसी और ने नए अक्षरों तथा ह्रस्व स्वरों की मात्राओं की योजना कर मामूली पढ़े हुए लोगों के लिए, जिनको शुद्धाशुद्ध की विशेष आवश्यकता नहीं रहती थी, काम चलाऊ लिपि बना दी। प्राचीनतम खरोष्ठी शिलालेख तीसरी शताब्दी ई० पू० का है। इस से प्रकट है कि उस समय इसमें २२ मूल वर्णों के अतिरिक्त अन्य भारतीय ध्वनियों के द्योतक लिपि-चिह्न भी थे अतः उस समय इसका भारत के पश्चिमोत्तर आँचल पर ख़ूब प्रचार था। इसके चीनी तुर्किस्तान तक प्रचार तथा उन्नति का कारण संभवतया कुषाण राज्य था।'[1]

सारांश यह है कि खरोष्ठी दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाने वाली एक अपूर्ण लिपि थी जिसमें संयुक्ताक्षरों की कमी और मात्राओं का अभाव था। अरमइक को काट-छाँट कर खरोष्ठी की स्थापना करने का कार्य संभवतः खरोष्ठ ऋषि ने किया था। बाद में इसका इतना प्रचार हुआ कि लगभग ४२९ ई० पू० में उत्तरी-पच्छिमी भारत के हखामनी साम्राज्य से स्वतंत्र हो जाने पर भी तीसरी शताब्दी ई० पू० में इसका वहाँ ख़ूब प्रचार था, परंतु इससे किसी लिपि का निष्क्रमण न होने के कारण इसका वंश न चल सका और लगभग पाँचवीं शताब्दी तक इसका पूर्णतः अंत हो गया।

ब्राह्मी का विकास

लगभग ३५० ई० पू० तक ब्राह्मी का प्रचार अधिक और रूप अपरिवर्तित रहा, तत्पश्चात् शैली की दृष्टि से उसके उत्तरी तथा दक्षिणी दो भेद हो गए। दक्षिणी से दक्षिणी भारत की मध्य तथा आधुनिक-कालीन लिपियों अर्थात् तामिल, तेलुगु, कनड़ी, कलिंग, ग्रंथ, पश्चिमी तथा मध्य प्रदेशी आदि का निष्क्रमण हुआ। चौथी शताब्दी में उत्तरी ब्राह्मी वर्णों के सिरों के चिह्न कुछ लंबे, कुछ वर्णों की आकृतियाँ कुछ-कुछ नागरी सदृश तथा कुछ मात्राओं के चिह्न परिवर्तित हो गए। गुप्त राज्य के प्रभाव से ब्राह्मी का यह रूप गुप्त-लिपि कहलाने लगा। चौथी, पाँचवीं शताब्दी में इसका प्रचार समस्त उत्तरी भारत में था। छठी शताब्दी में गुप्त लिपि के वर्णों की आकृति कुछ कुटिल हो गई, तदनुसार, ये वर्ण कुटिलाक्षर और लिपि कुटिल कहलाने लगी। इसका छठी

[1] ओझा, 'प्राचीन लिपिमाला', पृष्ठ १७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से नवीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में ख़ूब प्रचार था, तत्कालीन शिलालेख तथा दान-पत्र इसी में लिखे जाते थे। कुटिल लिपि से, संभवतः दसवीं शताब्दी में, नागरी तथा शारदा का निष्क्रमण हुआ। आधुनिक काश्मीरी तथा टक्करी का निष्क्रमण शारदा से ही हुआ है। गुरुमुखी का निर्माण भी सिक्ख गुरु अंगददेव द्वारा शारदा के आधार पर ही हुआ है। नागरी को देवनागरी भी कहते हैं। 'नागरी' शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में कई एक मत हैं। (१) प्राचीन काल में जब देवताओं की प्रतिमाएँ नहीं बनी थीं, उनकी पूजा के लिए उनके सांकेतिक चिह्न भाँति-भाँति के त्रिकोणादि यंत्रों में, जिन्हें देवनगर कहते थे, लिखे जाते थे। कालान्तर में ये देव-चिह्न, उच्चारण ध्वनि-सूचक लिपिचिह्न बन गए, अतः यह लिपि देवनागरी कहलाई। (२) इस लिपि के लिपि-चिह्नों तथा तांत्रिक चिह्नों में जो 'देव नगर' कहलाते थे, बहुत कुछ सादृश्य था, अतः इस लिपि का नाम देवनागरी पड़ गया। (३) प्राचीन काल के नागर ब्राह्मणों की लिपि होने के कारण यह नागरी कहलाई। (४) नगरों में प्रचलित होने के कारण इसका नाम नागरी हो गया, यद्यपि निश्चित रूप से तो नहीं कहा जा सकता कि यह लिपि देवनागरी अथवा नागरी क्यों कहलाई, परंतु चूंकि अनेक विद्वान् प्राचीन शिलालेखों के लिपिचिह्नों को 'देवताओं के अक्षर', 'सिद्धदायक मंत्र', 'गड़े धन के बीजक' आदि कह कर उनका अध्ययन करने से बचते रहे हैं, अतः संभव है इसका 'देव नगर' अर्थात् देव-संकेतों अथवा तांत्रिक चिह्नों से कुछ संबध हो और नागरी देव-नागरी का संक्षिप्त रूप हो। नागरी लिपि के दो रूप हैं, उत्तरी नागरी तथा दक्षिणी नागरी। दक्षिणी नागरी 'नंदि नागरी' भी कहलाती थी; संभवतः इसकी उत्पत्ति उत्तरी नागरी के पूर्व हुई थी। दक्षिण भारत में इसके प्राचीन लेख ही नहीं पाए जाते प्रत्युत यह संस्कृत ग्रंथों में अभी तक लिखी भी जाती है। उत्तरी नागरी की तीन अवस्थाएँ हैं, प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक अथवा वर्तमान। दसवीं शताब्दी में कुटिल लिपि परिवर्तित होकर प्राचीन नागरी हो गई, जिसमें 'अ, आ, घ, प, म, य, ष, और स के सिर दो अंशों में विभक्त मिलते हैं।'[१] इसके पूर्वी रूप से प्राचीन बँगला लिपि निकली जिससे आधुनिक बँगला, आसामी, मैथिली, उड़िया तथा नैपाली की उत्पत्ति हुई। मराठी, गोरखाली अथवा पर्वतिया, महाजनी (मुड़िया) तथा कैथी भी प्राचीन नागरी के ही विकसित रूप हैं। गुजराती का निर्माण कैथी के आधार पर हुआ है। प्राचीन नागरी के ग्यारहवीं शताब्दी के रूप को मध्यकालीन नागरी कह सकते हैं। इसमें वर्णों के ऊपर की सिरबंदी के दोनों अंश मिलकर एक हो गए। बारहवीं शताब्दी में

---

[१] ओझा, 'प्राचीन लिपिमाला', पृष्ठ ६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्णों का वह रूप हो गया जो आजकल प्रचलित है। तब से लिपि में कोई विशेष परिवर्तन तो नहीं हुआ है, परंतु कुछ साधारण परिवर्तन अवश्य हुए हैं। उदाहरणार्थ लगभग डेढ़ दो सौ वर्ष पहिले तक प्रत्येक वर्ण अथवा अक्षर पृथक्-पृथक् लिखा जाता था और शब्दों के बीच स्थान नहीं के बराबर छोड़ा जाता था, परंतु इधर कुछ काल से दो वर्णों अथवा अक्षरों के बीच स्थान नहीं छोड़ा जाता और दो शब्दों के बीच स्थान छोड़ा जाने लगा है अर्थात् किसी शब्द के समस्त वर्णों पर एक सिरबंदी लगाई जाती है और दो शब्दों की सिरबंदियों के बीच स्थान छोड़ा जाता है। आजकल ङ, ञ, अर्द्ध न म तथा ण, तथा ँ (चंद्रविंदु) का प्रायः लोप सा होता जा रहा है और इनके स्थान में अनुस्वार (ं) का प्रयोग बढ़ रहा है। अ, ण, ल के स्थान में मराठी अथवा प्राचीन अ, ण, ळ अधिक प्रचलित हो रहे हैं और सिरबंदी लगाने की प्रथा भी (प्रायः लिखने में) उठती सी जा रही है। संभव है, किसी समय नागरी भी गुजराती की भाँति सिरमुंडी हो जाय। यद्यपि भाषा तथा लिपि दोनों नितांत भिन्न हैं, परंतु किसी भाषा के अधिक प्रचलित होने के कारण प्रायः उसमें तथा उसकी लिपि में व्यवहारिक रूप से अभिन्नता हो जाती है और लिपि भी भाषा के नाम से पुकारी जाने लगती है। यही कारण है कि देवनागरी अथवा नागरी लिपि हिन्दी के नाम से अधिक प्रचलित है।

सारांश यह है कि उत्तरी भारत की समस्त आधुनिक लिपियाँ उत्तरी ब्राह्मी के विकसित रूप प्राचीन नागरी से और दक्षिणी भारत की लिपियाँ दक्षिणी ब्राह्मी से उत्पन्न हुई हैं।

अंकों का विकास

अंकों की उत्पत्ति तथा विकास का ओझा जी ने बहुत सुन्दर विवेचन किया है और उसकी उपस्थिति में कुछ कहना धृष्टता मात्र है, तदपि संक्षेप में यहाँ कुछ देना अनुचित न होगा। प्राचीन तथा अर्वाचीन अंकों में बहुत भेद है। सब से बड़ा भेद तो यह है कि प्राचीन काल में शून्य का चिह्न नहीं था, केवल १ से ९ तक अंक चिह्न थे; दूसरे जिस प्रकार आजकल समस्त सख्याएँ १ से १० तक के अंकों के आधार पर लिखी जाती हैं उस प्रकार प्राचीन काल में संख्याओं के आधार १ से ९ तक के अंक न थे; तीसरे आजकल जिस प्रकार शून्य (०) बढ़ा कर दहाई, सैकड़ा, हज़ार आदि बनाने का नियम है प्राचीन काल में वैसा न था, उस समय १०, २०, ३०, ४०, ५० ६०, ७० ८०, ९०, १००, १००० के लिए पृथक् पृथक् चिह्न थे (इसके ऊपर के संख्या-चिह्न अप्राप्य हैं) जैसे ४० के लिए 'स', ६० के लिए 'प्र',

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्यादि अर्थात् दहाई, सैकड़ा आदि का बोध उर्दू रक़मों की भाँति अक्षरों जैसे चिह्नों से होता था। इसकी पुष्टि ओझा जी के इस कथन से होती है कि, 'इन अंकों में अनुनासिक, जिह्वामूलीय और उपध्मानीय का होना प्रकट करता है कि उनका ब्राह्मणों ने निर्माण किया था न कि वाणिआओं ने और न बौद्धों ने।'[1] वर्णों के अंक द्योतक होने के उदाहरण अन्य लिपियों में भी पाए जाते हैं जैसे रोमन अंक I, V, X, L, M आदि, ग्रीक अंक α β आदि, उर्दू ۱, ۳ आदि, हिन्दी ९ का प्राचीन रूप ५, इत्यादि। कुछ समय पूर्व प्रिन्सेप, आर्यभट्ट आदि विद्वानों का मत था कि अक्षरांकों की उत्पत्ति उनके सूचक शब्दों के प्रथम अक्षरों से हुई है, जैसे फ़ा० ۳ (सेह) से ۳, हि० पंच से ५, अं० four से 4, इत्यादि, परंतु बाद में बूहलर, भगवान लाल ओझा आदि विद्वानों ने अक्षरांकों में कोई नियम अथवा क्रम न पाकर उक्त मत को अस्वीकृत कर दिया; परंतु इसके यह मानी नहीं हैं कि अक्षरांक ही न थे। शब्दों के प्रथम अक्षर अंकों के सूचक भले ही न हों, परंतु अक्षरांकों का होना निर्विवाद है। इतना ही नहीं, प्रत्युत अंक-सूचक अक्षर लिपि के अनेक भेद-उपभेद तक थे। प्राचीन ग्रंथों से पता चलता है कि इसकी दो शैलियाँ थीं जो क्रमशः 'गीत-कल्प-भाष्य' आदि प्राचीन जैन ग्रंथों तथा आर्यभट्ट के ज्योतिष ग्रंथों में पाई जाती हैं। अक्षरांक लिपि में एक एक अंक के लिए कई-कई वर्ण आते थे जैसे क प य तीनों १ के द्योतक थे। कुछ ऐसे उदाहरण भी पाए जाते हैं जिनमें ग्रंथांतर होने पर एक ही स्वरांक अथवा व्यंजनांक भिन्न-भिन्न संख्याओं का द्योतक है जैसे आर्यभट्ट के ज्योतिष ग्रंथों में क तथा न क्रमशः १ तथा ० के द्योतक हैं, परतु अक्षर चिंतामणि में ४ तथा ९ के द्योतक हैं। इसके अतिरिक्त अंक-सूचक शब्द-लिपि भी प्रचलित थी। इसमें भी दो प्रकार के अंक थे, शब्दांक तथा नामांक। शब्दांक लिपि में कोई पदार्थ अथवा व्यक्ति अपनी संख्या का ही सूचक हो जाता था जैसे मुनि संख्या में ७ हैं, अतः 'मुनि' ७ का द्योतक था जैसे 'तव प्रभु मुनि शर मारि गिरावा'; इसी प्रकार नक्षत्र २७ का, दशन ३२ का, भुवन १४ का, बिधु १ का द्योतक था। कभी-कभी एक ही शब्द कई-कई संख्याओं का द्योतक भी होता था जैसे लोक ३ तथा १४ का द्योतक था, क्योंकि लोक ३ और भुवन १४ हैं और लोक तथा भुवन पर्यायवाची हैं; इसी प्रकार युग २ तथा ४ का, नरक ७ तथा ४० का सूचक था। नामांक लिपि में किसी वस्तु अथवा व्यक्ति का नाम अपने वर्ग में जिस क्रम संख्या पर होता था उसी का वाचक हो जाता था जैसे अमरनाथ तीर्थंकर अपने वर्ग का अठारहवाँ तीर्थं

[1] ओझा, 'प्राचीन लिपिमाला', पृष्ठ ११०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, अतः यह १८ का सूचक था; इसी प्रकार सामवेद वेद-वर्ग में तीसरा है, अतः ३ का सूचक हो गया। शब्दांक लिपि की उत्पत्ति संभवतः इस प्रकार हुई कि प्राचीनकाल में लेखन-प्रणाली का अभाव होने के कारण ज्योतिष, गणित, व्याकरण आदि के नियम शीघ्र स्मरण करने के लिए छंदोबद्ध कर लिए जाते थे और चूंकि बड़ी-बड़ी संख्याओं को छंदोबद्ध करने में कठिनता होती है, अतः वे शब्दों द्वारा सूचित की जाती होंगी। इनके सूचित करने का नियम; 'अंकानां वामतो गतिः' अर्थात् उलटा पढ़ना, पहिले शब्द से इकाई, दूसरे से दहाई, तीसरे से सैकड़ा, इत्यादि था। एक उदाहरण से यह विषय स्पष्ट हो जायगा, सूर ने 'साहित्यलहरी' का रचना काल इस प्रकार दिया है, 'मुनि पुनि रसन के रस लेखु। दसन गौरीनंद को लिखि सुबल संबत पेखि।' इसमें 'मुनि', 'रसन', 'रस' तथा 'दसनगौरीनंद को' क्रमशः ७,०,६,१ के द्योतक हैं, अतः 'अंकानां वामतो गतिः' के अनुसार रचना-काल संवत् १६०७ हुआ।

अब प्रश्न यह है कि अंकों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई। यद्यपि यह बताना तो असंभव है कि अंकों का आविष्कार कब और किसने किया, परंतु इतना निश्चित है कि इनकी उत्पत्ति रेखालिपि से हुई है, उदाहरणार्थ १, २, ३, ४ क्रमशः –, =, ≡, + के विकसित रूप हैं। सब से प्रथम कुछ अंक-चिह्न अशोक के शिलालेखों में मिलते हैं। इसके पूर्व के अंक-चिह्न अप्राप्य हैं; परन्तु इसके यह मानी नहीं हैं कि भारत में मौर्य-काल के पूर्व अंक-चिह्न थे ही नहीं और इस समय वे किसी विदेशी अंक-लिपि के आधार पर निर्मित कर लिये गए, जैसा कि कुछ विद्वानों का मिथ्या भ्रम है। अंकों में वैदिक-कालीन जिह्वा-मूलीय तथा उपध्मानीय अक्षरों का होना इस बात का प्रमाण है कि उनकी उत्पत्ति वैदिक काल में हो चुकी थी और उनका निर्माण ब्राह्मणों द्वारा हुआ न कि विदेशियों द्वारा। अरब, ग्रीस, रोम आदि अन्य देशों में तो अंकों का आविष्कार बहुत बाद में हुआ है। भारतीय अंकों की दो शैलियाँ हैं, प्राचीन तथा नवीन। अशोक-कालीन अंक-चिह्न प्राचीन शैली के उदाहरण हैं। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है प्राचीन शैली में १ से ९ तक अंक थे और दहाई से गणना करने का नियम न था। यह शैली १५० ई० पू० तक पूर्ण हो चुकी थी। नवीन शैली में शून्य की योजना हो गई थी और दहाई से गिनने की प्रथा भी चल पड़ी थी। नवीन शैली पाँचवीं शताब्दी में प्रचलित थी। ओझा का मत है कि 'नवीन शैली के अंकों की सृष्टि भारतवर्ष में हुई, फिर यहाँ से अरबों ने यह क्रम सीखा और अरबों से उसका प्रवेश यूरोप में हुआ है।'[1] अब केवल एक प्रश्न यह रह जाता है कि दहाई तथा शून्य की योजना किस

[1] ओझा, 'प्राचीन लिपिमाला', पृष्ठ ११७

२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार हुई। हम देखते हैं कि बच्चे प्रारंभ में इमली के चीयों, मट्टी की गुल्लियों अथवा छोटी-छोटी कंकड़ियों द्वारा गिनती सीखते हैं, तत्पश्चात् वे उँगलियों पर गिनना सीख जाते हैं। ठीक यही क्रम प्राचीन काल में भी था, सर्वप्रथम पत्थरों के टुकड़ों द्वारा गणना होती थी तत्पश्चात् उँगलियों का प्रयोग होने लगा। उँगलियों का उस समय बड़ा महत्त्व था। हाथ की उँगलियों की संख्या १० है, अतः दहाई से गणना होने लगी और अनेक प्रकार के दहाई-सूचक गणना-यंत्र बन गए, आधुनिक बाल-फ्रेम इन्हीं का अवशेष चिह्न है। तत्पश्चात गणना-यन्त्रों की आकृति के अनुकरण पर अंक चौखूटे ख़ानों के भीतर लिखे जाने लगे और स्थानानुसार उनसे इकाई, दहाई, सैकड़े आदि का बोध होने लगा। उदाहरणार्थ वे |९| |२| |१| की भाँति लिखे जाते थे। जब कभी इकाई, दहाई आदि के स्थान में कोई अंक नहीं होता था तो ख़ाली ख़ाना | | बना दिया जाता था। बाद में जब ख़ाने त्वरालेखन में बाधक हुए, तो उनका लोप हो गया और अंक दूर दूर ९ २ १ की भाँति लिखे जाने लगे, और ख़ाली ख़ाने के लिए एक बिन्दु ˙ लगा दिया जाता था जो कि अरबी तथा उससे प्रभावित फ़ारसी उर्दू आदि में शून्य के लिए अब भी आता है। बाद में जब अंक आजकल की भाँति पास-पास ९२१ की तरह लिखे जाने लगे, तो बिन्दु बहुत छोटा होने के कारण गड़बड़ करता था, अतः उसे एक चक्र से घेर कर ⊙ की भाँति लिखा जाने लगा। कालान्तर में बिन्दु लुप्त हो गया और केवल चक्र ही शून्य का द्योतक रह गया।

सारांश यह है कि अंकों की उत्पत्ति सर्वप्रथम भारतवर्ष में हुई और यहाँ से उनका प्रवेश अरब में और अरब से यूरोप के ग्रीस, रोम आदि देशों में हुआ। चूंकि अशोक काल से पूर्व के अंक-चिह्न अप्राप्य हैं, अतः उनकी उत्पत्ति का ठीक-ठीक समय बताना तो कठिन है, परन्तु उनमें जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय वर्णों का होना यह प्रकट करता है कि संभवतः उनका आविष्कार वैदिक काल में हुआ था। १ से ९ तक के अंक तो १५० ई० पू० तक पूर्ण हो चुके थे, परन्तु शून्य की योजना तथा दहाई से गणना करने का नियम पाँचवीं शताब्दी तक पूर्ण हुआ। तब से अंक लगभग उसी रूप में चले आ रहे हैं, केवल एक दो अंकों में सौन्दर्यार्थ एक-आध रेखा घट-बढ़ गई है जैसे ८ तथा ९ के स्थान में क्रमशः ८ तथा ९ लिखे जाने लगे हैं। छापे में ४, ५, ८, ९ क्रमशः ४, ५, ८, ९ की भाँति भी लिखे जाते हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-संसार

[श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल]

भाषा की समस्या—भाषाओं की समस्या पर प्रयाग के जैन होस्टल में श्रीयुक्त आर. एस. पंडित का एक महत्वपूर्ण भाषण हुआ था। हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी के विवाद का ज़िक्र करते हुए आपने कहा "देश के इतिहास में किसी न किसी समय इनमें से एक भाषा राष्ट्रभाषा यानी आम जनता की भाषा रही है। मुसलमानों के समय में जो भाषा यहाँ प्रचलित हुई और जिसमें अमीर ख़ुसरो सरीखे प्रतिभाशाली व्यक्ति ने अपनी कविताएँ लिखीं, वह वही भाषा थी जिसे आज हम हिन्दी कहते हैं। मुग़लों के शासनकाल में उर्दू भाषा का प्रभुत्व हुआ······पर मुग़लशासन के नाश के बाद अंग्रेज़ी शासनकाल में यहाँ जो भाषा प्रचलित थी वह हिन्दुस्तानी"। यहाँ निवेदन है कि हिन्दुस्तानी कभी भारत की प्रचलित भाषा नहीं थी। अंग्रेज़ी शासनकाल में इसकी ईजाद तो सिविल सर्विस वालों को हिन्दुस्तान की बोली सिखाने के लिये हुई थी। आगे आपने कहा "हठधर्मी के साथ परिवर्तित समय की गति को न देखते हुए और जनता की आवश्यकताओं को न समझते हुए किसी एक ख़ास भाषा के प्रचार के लिये ज़ोर लगा रहे हैं। भाषा एक जीवित वस्तु है और उसकी उन्नति के लिये बाक़ायदा प्रयत्न होना चाहिये, नहीं तो भाषा नष्ट हो जाती है। नये शब्द और नये मुहाविरे बराबर बनते रहते हैं और पुराने शब्द आदि लुप्त हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में किसी ख़ास भाषा के प्रचार के लिये दुराग्रह दिखाना उचित नहीं है। बल्कि हमें अंग्रेज़ी, फ्रेंच आदि विदेशी भाषाओं के उन शब्दों के व्यवहार करने में संकोच न करना चाहिये जिनका व्यापक रूप से जनता में प्रचार हो गया है, जैसे स्टेशन, पुलिस, टाइम आदि।... हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी भाषा के राष्ट्रभाषा होने के दावे पर सिर फुटौवल करना व्यर्थ है। सब से अच्छा उपाय यह है कि हम उस भाषा या बोली को स्वीकार करें जिसे गाँवों में जनता या घरों में स्त्रियाँ बोलती हैं, वही सच्ची राष्ट्रभाषा है।···प्रत्येक सम्प्रदाय के नेता अपने घरों में एक भाषा बोलते हैं, असेम्बली या सार्वजनिक सभाओं में दूसरी भाषा बोलते हैं, और दुःख के साथ कहना पड़ता है कि वे किसी तीसरी ही भाषा के दावे के लिये झगड़ते हैं। इससे निस्सन्देह मालूम होता है कि वे अपनी राजनीतिक स्वार्थसिद्धि के लिये किसी ख़ास भाषा के लिये उत्साह देकर भाषा सम्बन्धी एक नयी समस्या पैदा करते हैं। पर वास्तव में ऐसी कोई समस्या नहीं है और हमें उसी को राष्ट्रभाषा मानना चाहिये, जिसे आम जनता बोलती है।" बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच है पर इसे सुनकर समझने, मनन करने और ठण्डे दिल से स्वीकार करने वालों की कमी हो रही है।

हिन्दी पत्रकार-संघ—दिल्ली में अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार-संघ का द्वितीय अधिवेशन श्रीयुक्त श्रीकृष्ण पालीवाल जी के सभापतित्व में हुआ। आपने कहा कि अभी हमारा संगठन शैशवावस्था में ही है। सम्मेलन अभी तक उसकी मौलिक कठिनाइयों को भी हल नहीं कर पाया है। हिन्दी पत्र जितने दमन नीति के शिकार होते हैं उतने अँग्रेज़ी पत्र नहीं; किन्तु जनता से जितना आदर सम्मान उन्हें मिलना चाहिये, उतना मिलता है। साधनों की कमी और ग़रीबी को छोड़ उनमें और कोई कमी नहीं है। किन्तु अंग्रेज़ी पत्रों के मुक़ाबले हिन्दी पत्रों की पूछ कम है। आन्दोलन के दिनों में किसी भी अंग्रेज़ी पत्र ने सत्याग्रह के निर्देश नहीं छापे; परन्तु हिन्दी पत्रों ने ज़मानतें देकर भी उन्हें छापा है। उन्होंने कभी दमन के आगे सिर नहीं झुकाया। संयुक्तप्रान्त की सरकार ने भी हिन्दी पत्रों की निर्भीकता स्वीकार की है। हिन्दी पत्रों में पाठ्य-सामग्री भी उत्तम होती है। अनेक सामयिक विषयों पर और विशेषतया किसानों की समस्या पर हिन्दी पत्रों में जो लेख निकल जाते हैं वे अंग्रेज़ी पत्रों में कभी ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलते। हममें जो अच्छे लेखक हों उनका आदर करना चाहिये। हिन्दी पत्रकार-कला का भविष्य उज्वल है। हमारी जनता में ९० प्रतिशत लोग अंग्रेज़ी नहीं जानते, उनकी भावनाएँ हिन्दी पत्र द्वारा ही व्यक्त हो सकती हैं। निरक्षरता का विनाश तो हमारे देश में होना ही है, चाहे उसमें दो चार या दस साल ही क्यों न लगें। ज्यों ज्यों जनता की शक्ति बढ़ती जायगी त्यों त्यों हिन्दी पत्रकारों की शक्ति और उनका प्रभाव भी बढ़ता जायगा। हिन्दी पत्र अपनी जनता-जनार्दन के भावों को व्यक्त करते हैं। हिन्दी पत्रों को एक आदर्श अपने सामने रखना चाहिये। हम समाज के गुरु हैं न कि केवल ख़बरें देकर गुज़ारा करने वाले। व्यवसाय का दृष्टिकोण केवल पत्रों को जीवित रखने तथा कर्त्तव्य पालन में एक साधन होना चाहिये। हिन्दी पत्रों ने अब तक इस आदर्श को निभाया है। हम यह देखें कि हमारे लेखक, सम्पादक और संवाद-दाता भूखे न रहें, उन्हें उसका उचित पारिश्रमिक मिले। अंग्रेज़ी पत्र रायटर के तारों से भले ही भरे रहें, किन्तु देहात का एक भी समाचार उनमें नहीं मिलता। किन्तु हिन्दी के किसी भी पत्र को उठा कर देखिये आपको देश के कोने-कोने और गाँव-गाँव की ख़बरें मिलेंगी। हिन्दी पत्रों के लिये एक पैसे का डाक महसूल बहुत अधिक है। यदि एक पैसे का पत्र हम निकालें तो उस पर एक पैसे का ही टिकट लगाना पड़ता है। इस तरह सस्ते पत्रों का गला घोट दिया जाता है। सरकार हमारे लिये एक पाई पोस्टेज जारी करे। इससे सहस्त्रों पत्र बढ़ेंगे जिससे सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आमदनी बढ़ेगी।

विक्रम द्वि सहस्राब्दी— विक्रम संवत २००० के लगने पर काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा अपनी स्वर्ण-जयन्ती मनावेगी और हिन्दी साहित्य एवं भाषा की उन्नति तथा प्रचार के हेतु कई नवीन महत्वपूर्ण योजनाओं की व्यवस्था की जायगी। विक्रम संवत के महत्व को ध्यान में रखते हुए उसके वास्तविक मूल और इतिहास का यथासाध्य निर्णय प्रकाशित किया जायगा। विक्रम संवत् का प्रचार देश के एक कोने से दूसरे कोने तक है; अतएव यह हमारा राष्ट्रीय संवत् है। इसकी ऐतिहासिक खोज और उसका निर्णय होना आवश्यक है। सभा ने इसके लिये एक समिति बना दी है। अबोहर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भी एक प्रस्ताव इस सम्बन्ध में पास हुआ है। और सम्मेलन ने भी इस सम्बन्ध में एक समिति बनाई है। श्रीमान् बाबू सम्पूर्णानन्द जी इसी समय पन्चाङ्ग संशोधन का काम भी करा लेना चाहते हैं। जिसमें संक्रान्ति का गणित-शोधन मासारम्भ कृष्णपक्ष से हो या शुक्लपक्ष से, और सौर वर्ष का मान निश्चय करने का अनुरोध किया गया है।

सम्मेलन को हिन्दी पुस्तकें—सभी देशों की सरकार देश के प्रधान पुस्तक संग्रहालय को पुस्तकों की सहायता दिया करती हैं। ब्रिटेन में ऐसी व्यवस्था है कि प्रकाशित पुस्तकें ब्रिटिश म्यूजियम के पुस्तकालय को दी जाया करती हैं। अबोहर साहित्य सम्मेलन के सभापति पंडित अमरनाथ झा जी ने अपने भाषण में इस बात का संकेत किया था कि भारत में प्रकाशित सभी हिन्दी पुस्तकों की एक एक प्रति सम्मेलन संग्रहालय को देने की व्यवस्था होनी चाहिये। माननीय श्री प्रकाश नारायण सप्रू जी ने कौंसिल आव् स्टेट में एक प्रस्ताव रक्खा था कि सरकार ऐसी व्यवस्था करे कि देश में हिन्दी की जितनी पुस्तकें प्रकाशित हों उनकी एक एक प्रति हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय को दी जाय। प्रसन्नता की बात है कि आपका यह प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हो गया है। श्रीमान् सप्रू जी इस उद्योग के लिये हिन्दी संसार की कृतज्ञता के भाजन हैं। शिक्षा विभाग के मन्त्री ने इस पर यह कह कर आपत्ति उठायी थी कि इसी प्रकार यदि कोई दूसरी संस्था दावा करे तो क्या होगा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन सम्पूर्ण भारत की एकमात्र हिन्दी सम्बन्धी प्रतिनिधि संस्था है। इसकी प्रतिद्वन्द्विता कर कोई संस्था ऐसा दावा करे यह न तो सम्भव है और न उचित ही। अतएव आशा है सरकार भी इस प्रस्ताव को स्वीकार कर शीघ्र इस व्यवस्था को कार्य में परिणत कर देगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री बुन्देलखण्ड साहित्य-मण्डल—साहित्यिक दृष्टि से बुन्देलखंड का बहुत महत्व है। वहां कितने ही स्थान हैं जिनका संबन्ध प्राचीन कवियों, साहित्य-प्रेमियों और संरक्षकों से है। कितने ही कवियों की कृतियाँ अभी तक अप्रकाशित अवस्था में पड़ी हुई हैं। साहित्यिक दृष्टि से काम करने के लिये वहाँ एक स्थायी संस्था की बहुत आवश्यकता थी। "श्री बुन्देलखण्ड साहित्य-मंडल" के स्थापन से उस आवश्यकता की पूर्ति होने की आशा हो रही है। बुन्देलखण्ड की साहित्यिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों और साहित्य-सेवियों का एक सम्मेलन अभी जनवरी में ओरछा-नगर में सम्मेलन के सभापति पण्डित अमरनाथ झा जी के सभापतित्व में हुआ था। साहित्य-मण्डल के सम्बन्ध में विविध प्रकार की योजनाएँ सुझायी गयीं। इस पर विस्तार रूप से विचार करने के लिये कालपी के विद्यार्थी सम्प्रदाय के उद्योग से फिर सम्मेलन होने वाला है। मधुकर-सम्पादक पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी भी अपने पत्र के द्वारा विविधि सूचक कार्य प्रसिद्ध किया करते हैं। मण्डल द्वारा स्थायी कार्य-योजना प्रवर्तित होने से हमें प्रसन्नता होगी।

विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी—अभी काशी विश्वविद्यालय की रजत जयन्ती बड़े धूमधाम से मनायी गयी थी। उसमें राजा, महाराजा, विद्वान, देश के नेता आदि पधारे थे और महात्मा गांधी जी भी माननीय मालवीय जी के स्नेहाकर्षण से पहुँच गये थे। अन्य सामयिक बातों पर बोलने के अतिरिक्त आपने हिन्दुस्तानी के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट किये। महात्मा जी को इस बात पर बहुत ही आश्चर्य और खेद हुआ कि इस अवसर पर जो भाषण होते थे वे अँग्रेज़ी में ही हो रहे थे। आप से नहीं रहा गया। आपने कहा—

"मैं बैठे-बैठे सुन रहा था। सोचता था कि कोई तो हिन्दुस्तानी में बोलेगा। हिन्दुस्तानी न सही हिन्दी या उदू॔ में। यह भी न हो तो संस्कृत में ही तो कुछ सुनने में आवेगा। पर ऐसा न हुआ। हम ग़ुलामी में पड़े हैं। इसके लिये हम अँग्रेज़ों को काफ़ी गाली देते हैं कि उन्होंने हमारा यह बिगाड़ दिया, वह बिगाड़ दिया। मैंने भी गालियाँ दीं। पर मेरी ज़बान से अपने लिये गाली नहीं निकली कि हम सब अँग्रेज़ों के ग़ुलाम क्यों बन गये हैं। मैं सोचता हूँ तो हँसी आती है कि अँग्रेज़ी सीखने में काफ़ी समय लगाया जाता है। अँग्रेज़ों की तरह बोलने का यत्न किया जाता है। कोई अँग्रेज़ अगर कह दें कि आप तो मेरी तरह अँग्रेज़ी बोलते हैं तो वह फूल जाता है। अँग्रेज़ी सीखने पर लड़कों पर कितनी सख़्ती रहती है, कितना धन लगता है, कितने घण्टे और समय देना पड़ता है, इसे गणित जानने वाले बता सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मालवीय जी ने अच्छे-अच्छे अध्यापकों को मुँहमाँगी तनख़ाह देकर यहाँ रखा है, उनका दोष नहीं। अध्यापक ध्यान न दें तो विद्यार्थियों को कहना चाहिये कि हम अपनी मादरी ज़बान में शिक्षा ग्रहण करेंगे। हिन्दुस्तान में काम करना है तो हिन्दी सीखें। जापान की ओर ख़्याल करें वहाँ क्या होता है। कोई बड़ा मुल्क न होने पर भी यूरोप से मुक़ाबला करता है, देखकर अच्छा लगता है। वहां के हज़ारों लड़के लड़कियां अँग्रेज़ी नहीं सीखते। जापान और चीन की लिपि कठिन है। पर इस कारण वे उसे छोड़ते नहीं। वहां तो जितने लोगों को व्यापार अथवा अन्य कार्य करने तथा ग्रहण करने की ज़रूरत होती है उतने ही लोग दूसरी भाषा सीखते हैं। लेकिन वे विदेशों से या विदेशी भाषा से जो गुण ग्रहण करते हैं उसे अपने देशवालों को अपनी ज़बान के माफ़र्त देते हैं। यहां तो पैसों के लिये अँग्रेज़ी को अपनाते हैं। इसे देख कर मैं हैरान हूँ। हमारे पास एम० ए० पास शुदा के अँग्रेज़ी में पत्र आते हैं। मैं देखता हूँ उन पत्रों में परायी भाषा का व्यवहार होने से भेजने वाले अपने मन का भाव नहीं प्रकट कर पाते। यहां जो कार्यवाही हुई उसे भी लोगों ने ठीक-ठीक न समझा होगा। जो हुआ उसे सुन कर चुपचाप चले जायेंगे, पर कुछ लेकर नहीं जा सकते।

"विद्यार्थी चलते समय कतार बाँध कर चलें तो अच्छा मालूम पड़ता है किन्तु शिक्षा का बोझ इतना पड़ता है कि आप काम नहीं कर सकते। उत्सव का फाटक अच्छा बना है किन्तु उसमें "हिन्दू युनिवर्सिटी" अँग्रेज़ो में तीन चौथाई जगह घेरे है और हिन्दी में छोटा सा है। वहाँ तो केवल हिन्दुस्तानी लिपियों को ही जगह मिलनी चाहिये थी। अँग्रेज़ी का क्या काम ? जो प्रबन्ध करते हैं वे जानें कि दरवाज़े पर अँग्रेज़ी की क्या ज़रूरत ? देवनागरी और फ़ारसी में लिखें। राधाकृष्णन और मालवीय जी तो यह चाहते हैं कि हिन्दू मुसलमान मिलें। उर्दू ज़बान मुसलमान काफ़ी बोलते हैं। उर्दू सीखना सख़्त है। अँग्रेज़ी ज़बान सीखने में जितने वर्ष लग जाते हैं, उतने में संस्कृत से निकली गुजराती, मराठी, बंगाली, तामिल, मलयालम, कनाडी आदि भाषाएँ आसानी से सीखी जा सकती हैं। विदेशों में बूढ़े नयी भाषा सीख लिया करते हैं। यहां लिपि अलग अलग है। उसे छोड़ना चाहे तो छोड़ दें। इनमें कई भाषाओं की लिपियां देवनागरी से समानता रखती हैं। इसे अपनावें तो देश भर का काम हो जा सकता है। और अगर एक दूसरे को समझ सकने के लिये उनके योग्य लिपि में लिखें तो फिर कहना क्या ? मेरी बदनसीबी है कि उर्दू वाले फ़ारसी और अरबी शब्द ठूँस ठूँस कर लिख देते हैं और हिन्दी वाले संस्कृत। ऐसे समय, कोष या पण्डित मौलाना रखने की ज़रूरत पड़ जाती है।

"हमें मुसलमानों को अपनाना चाहिये। हमारी यह पुरानी सभ्यता और संस्कृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है कि मनुष्य को दुश्मन नहीं दोस्त बनावें। यह हमारी तहज़ीब और ख़सूसियत रही है कि यहां जो आये उन सबको हमने बड़ी नदी की तरह अपना लिया है। हिन्दुस्थान का यह पैग़ाम है कि वह सारे जगत को अपनाना चाहता है, दुश्मन किसी को नहीं मानता। हम सब चीज़ें अपने प्राचीन ग्रन्थों से पा सकते हैं। अँग्रेज़ी से नहीं। विद्वान तो केवल यह सिखला देते हैं कि उसमें क्या है। उसे ग़लत तरीक़े से न अपनावें नहीं तो नतीजा भी ग़लत होगा। मालवीय जी के आदर्श से आप सादगी के पुतले बनें।"

प्रगतिशील साहित्य—तिरहुत समाचार में पं० हरिभाऊ उपाध्याय जी का "प्रगतिशील साहित्य" पर एक लेख प्रकाशित हुआ है। आप कहते हैं कि "जो साहित्य जीवन को प्रगति की ओर ले जाता है वही प्रगतिशील साहित्य है। सुन्दर शब्दों में जीवन की अभिव्यक्ति ही साहित्य है। साहित्य का एक रूप उल्लास देने वाला और दूसरा रूप ज्ञान और सुसंस्कार देने वाला होता है। आजकल बहुतेरे लोग मनोरंजक, ललित या उल्लास देने वाले साहित्य को ही साहित्य कहते हैं, शेष को शिक्षण या तत्वज्ञान में दाख़िल करते हैं। किन्तु साहित्य का शिक्षण या तत्वज्ञान नामक अङ्ग ही शाश्वत धर्म के अन्दर आ सकता है, मनोरंजक या ललित अंग नहीं। वह तो क्षणिक है। गति जीवन का लक्षण है, इसलिये साहित्य भी गतिमान होना चाहिये। किसी लक्ष्य की तरफ़ जो गति होती है उसे प्रगति कहते हैं। पूर्ण विकास से अच्छा बुद्धि गम्य नाम जीवन के लक्ष्य को नहीं दिया जा सकता। जीवन के जितने लक्षण या धर्म हैं, उन सब का अधिक से अधिक विकास ही जीवन का लक्ष्य हो सकता है, यह विकास मनुष्य ही नहीं जीव मात्र को सुख—समृद्धि-स्वतन्त्रता और शान्ति के लिये होना चाहिये। विकास समय-सापेक्ष्य होता है, वह वर्तमान की अपेक्षा रखता है। हिन्दुस्तान अभी ग़ुलाम है, उसे जल्दी से जल्दी छुटकारा पाकर अपनापन पा लेना है और फिर ऐसे मानव-समाज का निर्माण करना है जो सुखी, समृद्ध, स्वतन्त्र और शान्तिमय हो। यह कशमकश, यह संघर्ष, यह आतुरता, अधीरता, व्याकुलता, हिन्दुस्तान का वर्तमान जीवन है। क्या वर्तमान हिन्दी साहित्य में यह जीवन अभिव्यक्त हो रहा है? सारी जनता के लिये स्वाधीन भावों का पूरा ख़्याल रख इस भावी राष्ट्रनिर्माण की कल्पनाओं का प्रतिबिम्ब क्या हमारे वर्तमान साहित्य में मिलता है? वर्तमान अधिकांश साहित्य-सेवियों ने हिन्दुस्तान के जीवन में अपने आपको डुबा नहीं दिया, वे उससे बिल्कुल या बहुत कुछ अछूते हैं। इसलिये उनकी रचनाएं पाठक के हृदय को छूती नहीं हैं और न जन-समाज में प्रिय या प्रचलित ही होती हैं। यह समझना भूल है कि दिमाग़ की कोरी कल्पनाओं से, मन की मस्त हिलोरों से, कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य सृजन कर सकता है, जब तक कि वह जीवन की गहराई में ग़ोते न लगाता हो और उनमें से रत्न चुन-चुन कर न लाता हो।......जीवन या मानव जीवन अमर प्रेरणा, अनन्त अनुभूति और दिव्य संदेशों का स्रोत है। उससे रूखे रहकर हम न ख़ुद ही जीवन पा सकते हैं न दूसरों को दे सकते हैं। जीवन का लक्ष्य या आदर्श तो हमें सिर्फ़ इस बात के लिये जाग्रत और सावधान रखता है कि हम ग़लत दिशा में तो नहीं जा रहे हैं।......जो अनुभूति आसपास की विकलता, वेदना, आनन्द, उल्लास यानी सुख दुःख से अछूती रहती है उससे सत्य की अनुभूति कैसे हो सकती है? जिन साहित्य-सेवियों के उच्च विचार, सुन्दर भाव और दिव्यतत्व उनके दैनिक जीवन से मेल नहीं खाते, उनकी साधना के विषय नहीं बनते वे यदि लोगों को खोखले ही लगें और लोगों में अधिक दिन तक न ठहरें तो यह किसका क़सूर? प्रगतिशील साहित्य की रचना हम तभी कर सकते हैं, जब हम जीवन की प्रगति के साथ साथ रहें, चलें और दौड़ें। जो साहित्य जीवन के उतार चढ़ाव से अछूता है वह प्रगतिशील साहित्य नहीं।"

हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य का अभाव तो नहीं है, परन्तु वह प्रभावशाली भी नहीं है। हिन्दी-सेवकों का इस तरफ़ ध्यान जाना चाहिए।

साहित्य-सदन, अबोहर (पंजाब)

का

सरल सुबोध और सर्व सुलभ प्रकाशन

सरल स्वास्थ्य साधन	१।।)	विश्वधाय	।)
शिक्षा में नई दृष्टि		ईसप नीति-निकुञ्ज	।।)
आज का जापान	१।।)	बालगोपाल	=)।।
ग्राम सुधार नाटक	।।=)	बलिदान (एकांकी नाटक)	-)।।
बाल गीत	।।)	दीपक मासिक पत्र वार्षिक	२।।)
		एक प्रति	।)

कार्यालय, साहित्य-सदन, अबोहर (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी समिति का द्वितीय अधिवेशन

स्थायी समिति की बैठक रविवार, सौर २६ माघ संवत् १९९८, तारीख ८ फ़रवरी १९४२ को १२ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे : सर्वश्री १. अमरनाथ झा, प्रयाग; २. रामलखन शुक्ल, प्रयाग; ३. शेषमणि त्रिपाठी, सुल्तानपुर; ४. चन्द्रचूड़ त्रिपाठी, सुल्तानपुर; ५. रत्नाकर चतुर्वेदी, गोरखपुर; ६. रामनाथ 'सुमन', प्रयाग; ७. गणेश पाण्डेय, प्रयाग; ८. उदयनारायण तिवारी, प्रयाग; ९. शुकदेव चौबे, प्रयाग; १०. ओंकारनाथ मिश्र, प्रयाग; ११. केदारनाथ गुप्त, प्रयाग; १२. भगीरथप्रसाद दीक्षित, प्रयाग; १३. शिवसेवक मिश्र, प्रयाग; १४. लालबहादुर शास्त्री, प्रयाग; १५. मथुराप्रसाद सिंह, पटना; १६. रामखेलावन पाण्डेय, पटना; १७. चन्द्रशेखर वाजपेयी, प्रयाग; १८. उमेश मिश्र, प्रयाग; १९. ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल, प्रयाग; २०. दुर्गाप्रसाद रस्तोगी, प्रयाग; २१. रमाकांत मालवीय, प्रयाग; २२. लक्ष्मीनारायण दीक्षित, प्रयाग; २३. पुरुषोत्तमदास टंडन, प्रयाग; २४. इन्द्रसिंह चक्रवर्ती, भैनी साहब; २५. तेगराम, अबोहर; २६. हरिश्चन्द्र, बीकानेर; २७. शान्ता कुमारी, जम्मू ; २८. दयाशंकर दुबे, प्रयाग; २९. गंगाधर इंदूरकर, प्रयाग; ३०. वाचस्पति पाठक, प्रयाग; ३१. रामचन्द्र टंडन, प्रयाग; ३२. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' प्रयाग; ३३. रामनारायण मिश्र, प्रयाग; ३४. श्रीमती कमलाबाई किबे, इन्दौर; ३५. श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, प्रयाग; ३६. रामनाथ दुबे, प्रयाग; ३७. रामप्रसाद त्रिपाठी, (प्रधान मंत्री)

१—नियमानुसार श्री अमरनाथ झा ने सभापति का आसन ग्रहण किया। तत्पश्चात् पिछली दो बैठकों की कार्यवाही के विवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए।

२—प्रधान मंत्री ने बताया कि वर्तमान स्थायी समिति के लिए निर्वाचित सदस्यों में श्री बाबूराम सक्सेना, श्री दयाशंकर दुबे तथा श्री जयचंद्र विद्यालंकार के नाम दो बार आ गए हैं। नियम १३ के अनुसार इन सज्जनों के स्थान पर अन्य लोगों का चुनाव हो जाय तो अच्छा होगा। उपर्युक्त नियम में प्रयुक्त 'प्रायः' शब्द की व्याख्या के आधार पर श्री लक्ष्मीनारायण दीक्षित, श्री प्रकाशनारायण सप्रू तथा श्री छबिनाथ पाण्डेय स्थायी समिति के सदस्य चुने गए।

३—प्रधान मंत्री ने नवीन कार्य-समिति तथा अन्य विभिन्न समितियों के संगठन का विषय उपस्थित किया। नियम २२ के अनुसार बहुमत से नीचे लिखे दस सज्जन कार्य समिति के लिए चुने गए—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वश्री १. उदयनारायण तिवारी; २. बाबूराम सक्सेना; ३. श्रीनारायण चतुर्वेदी; ४. केदारनाथ गुप्त; ५. चन्द्रशेखर वाजपेयी; ६. लक्ष्मीनारायण दीक्षित; ७. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'; ८. वाचस्पति पाठक; ९. श्रीराम शर्मा; १० रामनाथ 'सुमन'।

४—प्रधान मंत्री ने बताया कि उपनियम १८ के अनुसार विश्वविद्यालय परिषद् के संगठन के लिए केन्द्र-व्यवस्थापकों और परीक्षकों को भी प्रतिनिधित्व दिया गया है। केन्द्र व्यवस्थापकों की ओर से जो नाम आए हैं उन में से निम्नलिखित सज्जनों को बराबर-बराबर मत मिले हैं—

सर्वश्री १. चांदकरण शारदा, अजमेर; २. मार्कण्डेसिंह, काशी; ३. रजिस्ट्रार गुरुकुल विश्वविद्यालय, काँगड़ी, बिजनौर; ४. प्रधानाध्यापक, हिन्दी विद्यापीठ, नैनी; ५. रामलोचन शरण, लहेरिया सराय; ६. प्रिंसिपल, नवभारत विद्यालय, वर्धा,

सभापति जी की आज्ञा से उपर्युक्त नामों की चिट्ठियाँ डाली गईं।

श्री चाँदकरण शारदा, श्री रजिस्ट्रार, गुरुकुल विश्वविद्यालय, बिजनौर; तथा श्री रामलोचनशरण चुने गए।

इसी प्रकार परीक्षकों की ओर से आए हुए नीचे लिखे दो सज्जनों को बराबर बराबर मत मिले हैं– १. श्री ओंकारनाथ मिश्र; २. श्री चन्द्रशेखर वाजपेयी चिट्ठी द्वारा श्री ओंकारनाथ मिश्र सर्वसम्मति से चुने गए।

उपनियम १८ (ख) के अनुसार विश्वविद्यालय परिषद् के लिए नीचे लिखे सज्जन बहुमत से सदस्य निर्वाचित हुए—

सर्वश्री १. श्रीनारायण चतुर्वेदी; २. भगवतीप्रसाद वाजपेयी; ३. तेगराम; ४. उमेश मिश्र; ५. गोरखप्रसाद; ६. शालिग्राम वर्मा; ७. लक्ष्मीनारायण दीक्षित; ८. लक्ष्मीधर वाजपेयी; ९. बालकृष्ण पाण्डेय; १०. आनन्द कौसल्यायन, ११. शेषमणि त्रिपाठी; १२. श्रीकृष्ण शुक्ल, बनारस, १३. गंगाधर इंदूरकर, १४. रामनाथ 'सुमन'; १५. गणेश पाण्डेय; १६. भगीरथप्रसाद दीक्षित; १७. रामनाथ दुबे; १८. शुकदेव चौबे; १९. ब्रजराज; २०. गुलाब राय।

५—उपनियम २६ के अनुसार प्रचार समिति के संगठन का विषय उपस्थित हुआ—

श्री सभापति जी ने व्यवस्था दी कि श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित सम्मेलन के वैतनिक कर्मचारी हैं, उनको समितियों में चुनना उचित न होगा।

बहुमत से निम्नलिखित सज्जन निर्वाचित हुए—

सर्वश्री १. दयाशंकर दुबे; २. अमरनाथ काक; ३. स्वामी केशवानन्द; ४. राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाथ शर्मा; ५. छबिनाथ पाण्डेय; ६. श्रीराम शर्मा; ८. इन्द्रसिंह चक्रवर्ती; ७. बनारसी दास चतुर्वेदी; ९. श्रीकृष्णदास; १०. श्रीमोहन श्रीवास्तव; ११. संगमलाल अग्रवाल; १२. हरिश्चन्द्र; १३. रामसुख मिश्र; १४. चन्द्रबली पाण्डेय।

६ उपनियम ३१ के अनुसार साहित्य-समिति के लिए निम्नलिखित पाँच सज्जन बहुमत से निर्वाचित हुए—

सर्वश्री १. पुरुषोत्तमदास टंडन; २. वाचस्पति पाठक; ३. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'; ४. रामनाथ 'सुमन'; ५. गुलाबराय।

७—उपनियम ४३ के अनुसार निम्नलिखित सदस्य सर्व-सम्मति से संग्रह समिति के लिए चुने गए—

सर्वश्री १. पुरुषोत्तमदास टंडन; २. ब्रजमोहन व्यास; ३ उदयनारायण तिवारी; ४. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी; ५. बनारसीदास चतुर्वेदी; ६. मोतीलाल मेनारिया; ७. सत्यप्रकाश; ८. वासुदेवशरण अग्रवाल; ९. भगवत दत्त; १०. शेषमणि त्रिपाठी; ११. मोतीचन्द; १२. राय कृष्णदास; १३. प्रयाग दत्त शुक्ल; १४. लक्ष्मीनारायण नागर।

८—तत्पश्चात् श्री सभापति जी ने मध्यमा परीक्षा में सर्व-प्रथम उत्तीर्ण विद्यार्थी श्रीचन्द्रचूड़ त्रिपाठी को 'भट्ट पदक' प्रदान किया।

९—प्रधान मंत्री ने अबोहर-अधिवेशन में स्वीकृत मंतव्यों को कार्य-रूप में परिणत करने का विषय उपस्थित किया—

(१) प्रथम निश्चय के सम्बन्ध में प्रधान मंत्री ने सूचित किया कि प्रस्ताव की प्रतिलिपि दिवंगत सज्जनों के कुटुम्बियों के पास भेज दी गई है।

(२) द्वितीय मंतव्य हिन्दी को पहली श्रेणी से ही माध्यम बनाने के लिए प्रयत्न करने के सम्बन्ध में था। निश्चय हुआ कि उचित कार्य के लिए कार्य समिति में भेजा जाय।

(३) तृतीय मंतव्य फ़िरोजपुर, रोहतक, हिसार, करनाल, गुड़गांव इत्यादि जिलों के डिस्ट्रिक्ट बोर्डों की ओर से हिन्दी के अध्यापकों के प्रबन्ध के विषय में था। निश्चय हुआ कि इस सम्बन्ध में पंजाब सरकार के शिक्षा विभाग से लिखा-पढ़ी की जाय।

(४) चतुर्थ मंतव्य द्वारा पंजाब सरकार की हिन्दी-घातक नीति की निन्दा की गई थी और अनुरोध किया गया था कि अन्य प्रान्तों की भाँति हिन्दी माध्यम की माँग करने वाले स्कूलों में हिन्दी माध्यम का प्रबन्ध किया जाय तथा प्रारम्भिक शिक्षा के लिए हिन्दी माध्यम के प्राइमरी स्कूल खोले जायँ। निश्चय हुआ कि पंजाब सरकार के शिक्षामंत्री तथा चीफ़ सेक्रेटरी से पत्र-व्यवहार किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) पाँचवां निश्चय पंजाब सरकार के शिक्षा विभाग के जारी किए हुए नए सिलेबस में से सातवीं तथा आठवीं श्रेणियों में से द्वितीय भाषा को निकाल देने के विरोध में था। निश्चय हुआ कि पंजाब के गवर्नर तथा शिक्षा विभाग को पत्र लिखे जायँ।

(६) छठे मंतव्य द्वारा पंजाब शिक्षा विभाग से अनुरोध किया गया था कि वह जुलाई १९३८ के सरक्यूलर लेटर नं० १८४२३ एक्स को, जिसका आशय था कि प्रथम भाषा ही फ़ाइनल परीक्षा के लिए माध्यम मानी जाय, वापस ले ले। निश्चय हुआ कि पंजाब के शिक्षा विभाग को इस सम्बन्ध में लिखा जाय।

(७) सातवें मंतव्य द्वारा पंजाब विश्वविद्यालय की पक्षपात पूर्ण भेद नीति का विरोध किया गया था और विश्वविद्यालय के संचालकों से अनुरोध किया गया था कि इस भेद को शीघ्र दूर करें।

इसी विषय में लायलपुर गवर्नमेंट कालेज के प्रो० श्री हंसराज जी का इस आशय का पत्र पढ़ा गया कि मंतव्य में कथित पक्षपात विश्वविद्यालय में नहीं है और उर्दू और हिन्दी, दोनों परीक्षाओं में समान अंक ही प्राप्त करने पड़ते हैं।

निश्चय हुआ कि मंतव्य पर कार्य करना स्थगित रखा जाय।

(८) आठवें मंतव्य द्वारा उन संस्थाओं को बधाई दी गई थी जिन्होंने अपने स्कूलों में हिन्दी को माध्यम बनाया है या हिन्दी पढ़ाने का उचित प्रबन्ध किया है। निश्चय हुआ कि ऐसी संस्थाओं को बधाई सूचक पत्र भेजे जायँ।

(९) नवें मंतव्य द्वारा सम्मेलन ने अपनी सम्मति प्रकट की थी कि पंजाब में उर्दू के साथ-साथ हिन्दी को भी कचहरियों में समान स्थान मिलना चाहिए या पंजाबी ही प्रान्त की एक मात्र कचहरी की भाषा स्वीकार की जाय और वह तीन लिपियों में से किसी एक-लिपि में लिखी जा सके। निश्चय हुआ कि प्रचार समिति में उचित कार्यवाही के लिए भेजा जाय।

(१०) दसवें मंतव्य द्वारा रेडियो विभाग का ध्यान पूना सम्मेलन में बताए गए उपायों की ओर आकर्षित किया गया था। निश्चय हुआ कि कम्यूनिकेशन मेम्बर, ब्राडकास्टिंग कन्ट्रोलर तथा स्टेशन डाइरेक्टरों को पत्र लिखे जायँ।

(११) प्रायः पंजाब प्रान्त के डाकख़ानों में नागरी में लिखे मनीआर्डर और रजिस्टरी किए हुए पत्र नहीं लिए जाते और ऐसे साधारण पत्र जिन पर नागरी में पता लिखा होता है, ड़ेड लेटर आफिस में भेज दिये जाते हैं। ग्यारहवें मंतव्य द्वारा सम्मेलन ने सरकार के डाक विभाग से अनुरोध किया था कि डाकख़ानों में शीघ्र ही नागरी जानने वाले कर्मचारियों को नियुक्त कर जनता की इस असुविधा को दूर करे। निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ कि पंजाब के पोस्ट मास्टर जनरल तथा पोस्ट और टेलीग्राफ के डाइरेक्टर को पत्र लिखे जायँ।

(१२) बारहवें मंतव्य द्वारा उन रेलवे अधिकारियों से जिनके स्टेशनों, टिकटों तथा सूचनाओं में हिन्दी का प्रयोग नहीं हो रहा है, अनुरोध किया गया था कि इन स्थानों में हिन्दी के प्रयोग का भी प्रबन्ध करें। निश्चय हुआ कि रेलवे कम्पनियों के एजेंट तथा रेलवे ऐडवाइजरी कमेटी के मेम्बरों को इस विषय में लिखा जाय।

(१३) तेरहवें मंतव्य द्वारा हिन्दी भाषी प्रान्तों की सरकारों तथा अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं से अनुरोध किया गया था कि वे अपने दफ़्तरों और कचहरियों की भाषा का सुधार करें। साथ ही देशी राज्यों की सरकारों से भी अनुरोध किया गया था कि अपने न्यायालयों में सब के समझने लायक सहल भाषा का प्रयोग जारी करें। निश्चय हुआ कि देशी राज्यों, सूबों की सरकारों डिस्ट्रिक्ट बोर्डों तथा विश्वविद्यालयों को इस विषय में लिखा जाय।

(१४) चौदहवें मंतव्य द्वारा श्रीमंत इन्दौर नरेश का ध्यान इन्दौर अधिवेशन के प्रस्तावित हिन्दी विश्वविद्यालय की योजना की ओर दिलाया गया था और निवेदन किया गया था कि इन्दौर राज्य में हिन्दी द्वारा उच्च शिक्षा की स्थापना में शीघ्रता करें। निश्चय हुआ कि इन्दौर नरेश को इस विषय में पत्र लिखा जाय।

सभापति जी ने सूचना दी कि वे स्वयं महाराजा साहब से मिलेंगे।

(१५) पन्द्रहवें निश्चय द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय के अधिकारियों को उनकी इस नीति के लिए कि उन्होंने अपनी नई योजना में हिन्दी को आनर्स श्रेणी में स्थान देने का निश्चय किया है, प्रसन्नता प्रकट की गई थी और बधाई दी गई थी। निश्चय हुआ कि दिल्ली विश्वविद्यालय के वाइस चैंसलर श्री मारिस ग्वायर को पत्र लिखा जाय।

(१६) सोलहवें निश्चय द्वारा हिन्दी की संस्थाओं, साहित्य सेवियों एवं हिन्दी प्रेमी सज्जनों से अनुरोध किया गया था कि संग्रहालय के लिए हिन्दी की हस्तलिखित पुस्तकों एवं ऐतिहासिक अन्य सामग्री से संग्रह में सहायता दें। साथ ही प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकार से अनुरोध किया गया था कि वह बृटिश म्युज़ियम की भाँति हिन्दी पत्रों की एक एक प्रति संग्रहालय को भेज दिया करे।

श्री सभापति जी ने सूचना दी कि श्री प्रकाश नारायण सप्रू कौंसिल आव् स्टेट में इस आशय का प्रस्ताव उपस्थित करने वाले हैं।

निश्चय हुआ कि (अ) हिन्दी की संस्थाओं को पत्र लिखे जायँ।

(ब) श्री प्रकाशनारायण सप्रू जी को पत्र लिखा जाय।

(१७) सत्रहवें निश्चय द्वारा हिन्दी भाषा में लिखी हुई 'आचार शास्त्र' की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन और खोजपूर्ण मौलिक पुस्तक पर पाँच सौ रुपए का पुरस्कार देने के सम्बन्ध का श्री रामगोपाल मोहता का प्रस्ताव स्वीकार किया गया था। निश्चय हुआ कि पुरस्कार विषयक विस्तृत बातों के सम्बन्ध में पुरस्कार दाता से पत्र व्यवहार किया जाय और उनका उत्तर आ जाने पर यह विषय फिर स्थायी समिति में उपस्थित किया जाय।

(१८) अठारहवें मंतव्य के सम्बन्ध में प्रधान मंत्री जी ने सूचना दी कि श्री इन्द्र सिंह चक्रवर्ती जी के पास नियमावली की प्रतियाँ भेज दी गई हैं तथा अधिवेशन की तैयारी के लिए उनको लिखा गया है।

(१९) उन्नीसवें मंतव्य द्वारा उन प्रान्तीय सरकारों, देशी राज्यों और शिक्षा संस्थाओं को धन्यवाद दिया गया था जिन्होंने सम्मेलन की परीक्षाओं को सरकारी परीक्षाओं के बराबर स्वीकार किया है। साथ ही अन्य प्रान्तीय सरकारों और देशी राज्यों से सम्मेलन की परीक्षाओं को दूसरे विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं के बराबर मान लेने के लिए अनुरोध किया गया था।

इसी विषय से सम्बन्ध रखने वाला श्री गिरिधर शर्मा जी का पत्र भी पढ़ा गया।

निश्चय हुआ कि प्रान्तीय सरकारों, देशी राज्यों और विश्वविद्यालयों को पत्र भेजे जायँ।

(२०) बीसवें मंतव्य द्वारा हिन्दी भाषियों और व्यापारियों से अनुरोध किया गया था कि वे अपना पत्र-व्यवहार तथा बहीखाता आदि का काम नागरी लिपि में किया करें। निश्चय हुआ कि यह प्रचार समिति में उचित कार्यवाही के लिए भेजा जाय।

(२१) इक्कीसवें मंतव्य द्वारा पंजाब की नाभा, पटियाला, जींद, कपूरथला तथा फरीदकोट सिख रियासतों से अनुरोध किया गया था कि वे अपने शिक्षा विभाग में तथा शासन के व्यवहारिक कार्यों में हिन्दी को उचित स्थान दें। निश्चय हुआ कि रियासतों के अधिकारियों को लिखा जाय।

(२२) बाइसवें निश्चय द्वारा हैदराबाद राज्य के अधिकारियों से सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के लिए रोक सम्बन्धी अपनी आज्ञा वापस लेने के हेतु अनुरोध किया गया था। निश्चय हुआ कि एक पत्र के साथ प्रस्ताव की प्रतिलिपि श्री नवाब छतारी जी के पास भेजी जाय।

(२३) तेइसवें निश्चय द्वारा काश्मीर-सरकार से प्रार्थना की गई थी कि नई शिक्षा-सम्बन्धी आज्ञा में पन्द्रह प्रतिशत का बन्धन हटा दिया जाय और सादा उर्दू के स्थान पर इसका नाम सरल हिन्दी रखा जाय। और हिन्दी आठवीं श्रेणी तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिवार्य कर दी जाय। निश्चय हुआ कि शिक्षा मंत्री श्री मिर्जा जाफ़र अली खां के पास पत्र के साथ यह मंतव्य भेजा जाय।

(२४) चौबीसवें निश्चय द्वारा काश्मीर-सरकार से प्रार्थना की गई थी कि शिक्षा-विभाग के उच्च पदाधिकारियों में से एक ऐसा अधिकारी अवश्य होना चाहिए जो हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाओं को अच्छी प्रकार जानता हो।

निश्चय हुआ कि निश्चय की प्रतिलिपि एक पत्र के साथ काश्मीर-सरकार के पास भेजी जाय।

(२५) पचीसवें मंतव्य द्वारा रियासत बहावलपुर के स्कूलों के इन्सपेक्टर के जनवरी १९४० के सरकूलर का जिसके कारण रियासत में हिन्दी तथा संस्कृत का मिडिल श्रेणियों में एक साथ अध्ययन करना असम्भव बना दिया गया है, विरोध किया गया था और शिक्षा मंत्री से प्रार्थना की गई थी कि पूर्ववत् हिन्दी-संस्कृत ऐच्छिक विषय निश्चित किए जायँ। निश्चय हुआ कि बहावलपुर रियासत के शिक्षा विभाग से पत्र-व्यवहार किया जाय।

(२६) भारतीय सिपाहियों को शिक्षित करने के लिए भारत सरकार की चलाई हुई योजना में राष्ट्र भाषा और राष्ट्रलिपि के नाम पर 'उर्दू' भाषा तथा 'रोमन' लिपि पढ़ाई जाती है। इस मंतव्य द्वारा भारत सरकार की इस योजना का विरोध किया गया था और इस व्यवस्था को बदल देने की सलाह दी गई थी। निश्चय हुआ कि रक्षा (डिफेंस) विभाग के मंत्री, एजूकेशनल कोर तथा फ़ौज के प्रधान अफसर के पास इस विषय में पत्र भेजे जायँ।

(२७) सम्मेलन के पूना वाले उनतीसवें अधिवेशन के मंतव्य के अनुसार आदेश दिया गया था कि लिपि सुधार सम्बन्धी योजना पर अन्तिम निर्णय किए जाने के पूर्व भारतीय प्रान्तीय साहित्य परिषदों तथा हिन्दी की शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों की समिति की सम्मति प्राप्त करके उसे विचारार्थ अगले अधिवेशन में उपस्थित किया जाय। उपर्युक्त निश्चय के अनुसार निर्मित लिपि सुधार समिति का कार्य विवरण अबोहर सम्मेलन में उपस्थित किया गया था। सम्मेलन ने अपने सत्ताइसवें मंतव्य द्वारा स्थायी समिति को आदेश दिया था कि कार्य विवरण को प्रान्तीय सम्मेलनों, समाचार पत्रों तथा साहित्यिक संस्थाओं के पास विचारार्थ भेजे और उनकी सम्मतियों तथा लिपि सुधार समिति की बनाई योजना पर विचार करके, अपने सुझावों सहित अगले अधिवेशन में उपस्थित करे।

निश्चय हुआ कि मंतव्य में निर्दिष्ट आदेशानुसार कार्य किया जाय। साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि २० अप्रैल १९४२ तक सम्मतियाँ कार्यालय में आ जायँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२८) अट्ठाइसवें मंतव्य द्वारा विक्रम की द्विसहस्राब्दी मनाने के प्रबन्ध के लिए स्थायी समिति को आदेश दिया गया था। निश्चय हुआ कि कार्य समिति इस सम्बन्ध में योजना बनाकर स्थायी समिति में भेजे।

(२९) उनतीसवें मंतव्य द्वारा हिन्दी और हिन्दुस्तानी शब्दों के प्रयोग के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा उसकी समितियों की नीति का स्पष्टीकरण किया गया था। श्री सभापति जी ने सूचना दी कि इस परिभाषा से हिन्दी-जगत को कुछ सन्तोष हुआ है।

१०—तत्पश्चात् श्री सभापति जी ने कहा कि स्थायी समिति की बैठकें प्रयाग में ही होती हैं। लोगों की धारणा है कि प्रयागवाले बाहर अन्य स्थानों में नहीं जाना चाहते। हिन्दी साहित्य सम्मेलन को प्रोत्साहन मिले, इस दृष्टि से मेरी राय है कि बैठक अन्य स्थानों में भी हुआ करे। इसी लिए मैंने अगली स्थायी समिति की बैठक उज्जैन में करने की स्वीकृति दे दी है।

प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

११—श्री तेगराम ने निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया—"सम्मेलन का आगामी अधिवेशन पंजाब में हो रहा है तथा सम्मेलन के संचालकों की इच्छा है कि भविष्य में सम्मेलन का कार्य विशेष रूप से हो। इसके लिए यह आवश्यक है कि पंजाब के स्थायी समिति के सदस्यों का अधिक से अधिक सहयोग स्थायी समिति को प्राप्त हो। यह तभी सम्भव है जब कि स्थायी समिति की कुछ बैठकें पंजाब या पंजाब के नज़दीक़ के किसी स्थान पर हो, क्योंकि प्रयाग जैसे दूर स्थान में पंजाब के सदस्य आसानी से नहीं आ सकते।"

श्री इन्द्रसिंह चक्रवर्ती ने प्रस्ताव का समर्थन और श्री हरिश्चन्द्र ने अनुमोदन किया।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि वार्षिक अधिवेशन से पहले स्थायी समिति की एक बैठक पंजाब में की जाय।

१२—श्री इन्द्रसिंह चक्रवर्ती ने प्रस्ताव किया कि वार्षिक अधिवेशन की तिथियाँ बड़े दिन की छुट्टियों के स्थान पर दशहरे के दिनों में कर दी जायँ क्योंकि दिसम्बर में मैनीसाहब में कड़ी शीत होती है।

श्री सभापति जी ने कहा कि इस प्रकार का प्रस्ताव स्वागत. समिति की ओर से आने पर विचार किया जायगा।

रामप्रसाद त्रिपाठी
प्रधान मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

बाल-विभूति—लेखक, श्री रसिकेन्द्र; प्रकाशक, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग; मूल्य ≡)

प्रस्तुत पुस्तक में बालोपयोगी उत्तम कविताओं का संग्रह है। अध्यापक-वृन्द अपने बच्चों की टोलियाँ बनाकर मार्चिंग के समय इन गानों का उपयोग करें तो निस्सन्देह ये उत्साह-वर्द्धक और वीर-भावनाओं को जागृत करनेवाले सिद्ध होंगे, पुस्तक प्रत्येक स्कूल के वाचनालय में रखने योग्य है।

लेखन-कला—लेखक, श्री किशोरीदास वाजपेयी; प्रकाशक, हिमालय एजेन्सी, कनखल, यू० पी०; मूल्य १)

हिन्दी में अब तक लेखन-कला पर सुन्दर पुस्तकों का अभाव ही था। इस पुस्तक को लिखकर वाजपेयी जी ने उसकी कुछ हद तक पूर्ति की है। अभिनव लेखकों, कवियों और छात्रों का इससे उपकार होगा। पुस्तक संग्रहणीय है।

मोहेंजो-दड़ो तथा सिंधु सभ्यता—लेखक, श्री सतीशचंद्र काला; प्रकाशक, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; पृष्ठ-संख्या २४४; मूल्य २)

हिन्दी साहित्य में पुरातत्व विषयक पुस्तकों की बड़ी कमी है। इस कमी की पूर्ति की दिशा में श्री काला जी का यह प्रयत्न श्लाघ्य है। सिन्धी भाषा में 'मोहेंजो-दड़ो' का शुद्धरूप 'मुहें जो डेरो' होता है, जिसका अर्थ मरे हुओं का टीला है। इस टीले के अन्दर वे निधियाँ छिपी पाई गई हैं जो भारत के प्रागैतिहासिक युग पर प्रकाश डालती हैं। प्रस्तुत पुस्तक के परिश्रमी लेखक ने विभिन्न संग्रहालयों तथा तद्विषयक प्रकाण्ड विद्वानों के अनुभवों का उपयोग करके तुलनात्मक ढंग से अनेक लौकिक एवं धार्मिक पद्धतियों का उद्गम बतलाने का भी प्रयत्न किया है। वैदिक सभ्यता का भी उल्लेख किया गया है। सिन्धु सभ्यता अनार्य सभ्यता थी और वैदिक सभ्यता की पूर्ववर्तिनी। पुरातत्व का विषय जितना गम्भीर है उतना शुष्क भी, किन्तु लेखक महोदय अपने गम्भीर अध्ययन और परिश्रम से पुस्तक को सरस बनाने में सफल हुए हैं। चित्रों के उपयोग से पुस्तक और भी आकर्षक हो गई है।

नई कहानियाँ—सम्पादक, श्री राय कृष्णदास तथा श्री पद्मनारायण आचार्य; प्रकाशक, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; पृष्ठ-संख्या १७६; मूल्य १।)

हिन्दी में कहानी-संग्रहों की कमी नहीं है। वही गुलेरी जी की 'उसने कहा था'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और 'प्रसाद' जी की 'आकाशदीप' इत्यादि कहानियाँ प्रायः सभी संग्रहों में पाई जाती हैं। कुछ ऐसे संग्रह इधर अवश्य निकले हैं जिनमें नवीन उदीयमान लेखकों की कहानियाँ भी संगृहीत हैं। प्रस्तुत पुस्तक नवीन लेखकों की कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह से हिन्दी कहानी की वर्तमान विचारधारा का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

तीस दिन, मालवीय जी के साथ—लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी; प्रकाशक, सस्ता साहित्य मण्डल नयी दिल्ली।

महामना पं० मदनमोहन मालवीय का जीवन एक आदर्श महापुरुष का जीवन है। किसी भी देश तथा जाति को ऐसा नररत्न पाकर अपने को धन्य समझना स्वाभाविक है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं के जीवन की कुछ झाँकियां प्रस्तुत करती है।

पूज्य मालवीय जी के साथ रह कर लेखक महोदय ने जो कुछ उन से पूछा है और उसके उत्तर में उन्होंने जो कहा है वह अंश पुस्तक का अत्यन्त आकर्षक तथा उत्तम है। इसी प्रश्नोत्तर के आधार पर लिखी जाने के कारण वर्णन में सचाई का अंश पूर्ण रूप से है। पूज्य मालवीय जी के जीवन के सभी अंगों पर सूक्ष्मतः प्रकाश डालने की सफल चेष्टा की गई है। त्याग, चरित्र, मनोबल, लगन, देशभक्ति तथा धार्मिकता के कारण, दरिद्रता की गोद में पल कर भी मनुष्य बड़ा हो सकता है इसका ज्वलन्त उदाहरण हमें 'महामना' जी के जीवन से मिलता है।

मालिनी-मन्दिर—लेखक, पं० गांगेय नरोत्तम शास्त्री; प्रकाशक, मकरन्द साहित्य-मन्दिर, गांगेय-भवन, २८०, चितरञ्जन एवेन्यू, कलकत्ता।

प्रस्तुत पुस्तक हिंदी संसार के लिये एक नया उपहार है। देशी तथा विदेशी पुष्पों का भावात्मक काव्यमय वर्णन है। विदेशी फूलों का देशी नामकरण उपयुक्त किया गया है। जैसे आइपोनिया से आयपुण्या, आस्टरसे आस्तर आदि। छंद, व्याकरण, तथा अलंकार सभी दृष्टि से यह उत्तम कोटि की रचना है। भाषा प्रवाहमयी तथा वर्णन-शैली आकर्षक है। पुस्तक शास्त्री जी की नयी सूझ की परिचायिका है।

भजन-शिरोमणि—संग्रहकर्ता, श्री कमलनाथ अग्रवाल; प्रकाशक, काशी पेपर स्टोर्स, बनारस; पृष्ठ-संख्या ९६; मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक में तुलसीदास, सूरदास, कबीर, मीरा आदि प्राचीन संतों तथा ब्रह्मानन्द, राधेश्याम और अन्य भजनानन्दियों के भजनों तथा गज़लों का संग्रह है। सब सामयिक गाये जाने वाले पद हैं जो जनता की मनोवृत्ति के अनुकूल तथा उसको जगाने वाले हैं। प्रत्येक पद ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति से ओत-प्रोत तथा संसार की असारता की ओर संकेत करता है। संग्रह उत्तम तथा भजन-प्रेमियों के लिए अत्युपयोगी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवित्र होली— संग्रहकर्ता, श्री कमलनाथ; प्रकाशक, काशी पेपर स्टोर्स बनारस; पृष्ठ-संख्या ४६; मूल्य ।)

होली त्योहार पर अश्लील फाग और होलियों के गाये जाने से किस प्रकार कुरीतियों को प्रोत्साहन मिलता है इसको होली मनानेवाले सभी जानते हैं। इसी अश्लीलता को मेटने के लिए इस संग्रह की आवश्यकता थी। पढ़े-लिखे लोग इस संग्रह के गीतों का प्रचार करें तो अवश्य कुछ समय में अश्लीलता का मूलोच्छेद हो जाय। इस संग्रह में राष्ट्रीय तथा ज्ञान और विराग के भी पद हैं जो पुस्तक की उपयोगिता को और बढ़ा देते हैं।

गांधी जी—लेखक जुगतराम दवे, अनुवादक काशिनाथ त्रिवेदी; प्रकाशक, नव-जीवन प्रकाशन-मंदिर, अहमदाबाद; पृष्ठ-संख्या १५६; मूल्य ।=)

महात्मा गांधी का जीवन सबके लिए आदर्श है, क्या बच्चे क्या बूढ़े और क्या जवान। उनमें बच्चों की ऐसी सरलता, जवानों का ऐसा उत्साह तथा बूढ़ों का विवेक और विचार है। महात्मा गांधीजी के सम्बन्ध में जो कुछ साहित्य हिन्दी में तैयार है वह विशेषतया युवकों तथा वयस्कों के काम का है। प्रस्तुत पुस्तक छोटे बच्चों के हितार्थ लिखी गई है। बहुत ही सरल भाषा, बालोपयोगी शैली और तद्वत् छपाई सराहनीय है।

एक धर्मयुद्ध—लेखक, महादेव हरिभाई देसाई; अनुवादक काशिनाथ त्रिवेदी; प्रकाशक, नवजीवन प्रकाशन-मंदिर, अहमदाबाद पृष्ठ-संख्या १२७; मू० ॥)

यह धर्मयुद्ध सन् १९१८ में अहमदाबाद के मिल-मालिकों तथा मजदूरों के बीच हुआ था। मज़दूर चाहते थे कि उनके पारिश्रमिक में कुछ पैसों की वृद्धि की जाय। इस युद्ध में श्रमजीवियों को सफलता मिली और फल-स्वरूप मज़दूर-महाजन-संघ का जन्म हुआ। प्रस्तुत पुस्तक इसी युद्ध का इतिहास है। महात्मा गांधी तथा अन्य नेता-गण इस युद्ध में किस प्रकार सम्मिलित हुए और इसमें सहायता की, इन सब विषयों का विषद वर्णन तथा अपने उपवास के सम्बन्ध में गांधीजी का स्पष्ट वक्तव्य; भी है। इस युग में जब श्रमजीवी अपनी शक्ति को सम्पत्ति मानते हैं और मिलमालिकों के बराबर ही अपना अधिकार बताते हैं, यह पुस्तक अपने विषय के पाठकों के लिये पथ-प्रदर्शन का काम देगी।

तुलसी-समाचार—लेखक तथा प्रकाशक, रामचन्द्र वैद्यशास्त्री, सुधावर्षक प्रेस, अलीगढ़; पृष्ठ-संख्या ६८, मूल्य ।)

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान् लेखक महोदय ने तुलसी तथा उनकी धर्मपत्नी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाक्यों की संगति से समन्वित करके उनके अर्थों से यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि तुलसीदासजी सनाढ्य ब्राह्मण थे और उनका जन्मस्थान राजापुर नहीं वरन सोरों ज़िला एटा था। आपका कहना है कि सोरों में तुलसीदास का जन्म जिस मकान में हुआ था उस भूमि में अब गद्दी मुसलमान रहते हैं और उस स्थान को परम्परागत पहचानने वाले मौजूद हैं। फिर आप कहते हैं कि उसी सोरों के "विद्वान् सनाढ्य पंडित नरसिंहजी शास्त्री अध्यापक" तुलसीदास के गुरु थे, "नरसिंह जी और तुलसी के रहने का यह प्राचीन स्थान मौजूद है यात्री दर्शन करने आते हैं।" रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कविता-वली तथा तुलसी के अन्य कूट काव्यों का अर्थ विद्वान् लेखक ने पाण्डित्य-पूर्ण ढंग से ऐसा किया है कि जिससे प्रकट होता है कि तुलसी का जन्म सोरों में ही हुआ था और वे सनाढ्य ब्राह्मण थे। इसके विरुद्ध विचार रखनेवाले सज्जनों को यह आवश्यक है कि इस पुस्तक को पढ़ें और अपना विचार भी प्रामाणिक ढंग से पुस्तकाकार जनता के सामने रखें।

सनातनधर्म-विवेक—सम्पादक, विद्याभूषण पं० कालीशंकर शर्मा शास्त्रज्ञ, प्रकाशक, शुक्ल गौरीशंकर शास्त्री, लखनऊ।

पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव के कारण हमारे नवयुवक अपने धर्म-कर्म की कम चिन्ता करने लगते हैं। सनातन से चली आई रीतियों तथा कृत्यों में उन्हें अविश्वास होने लगता है। इसका कारण है अपने धर्म-कर्म की अज्ञानता। प्रस्तुत पुस्तक में अवतार, मूर्तिपूजा, एवं तर्पण तथा श्राद्ध आदि विषयों के रहस्य को समझाने का प्रयत्न किया गया है जिससे कि नवशिक्षित युवक उसके तत्व को समझ कर अपने धर्म में अनुरक्त हो सकें।

कथा-कुंज—लेखक, श्री अशोक जी एम० ए०; प्रकाशक, काशी पेपर स्टोर्स बनारस सिटी; पृष्ठ-संख्या ११६; मूल्य ।।।)

हमारा प्राचीन साहित्य कहानियों का भंडार है। ज्ञान के बड़े-बड़े तत्वों को कहानियों द्वारा प्रकट करने की उस समय प्रथा-सी थी। 'वृहत्कथा' तथा 'कथा-सरित्सागर' उस समय के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'कथासरित्सागर' से चुनी हुई बालोपयोगी कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ सरल, सुबोध तथा शिक्षाप्रद एवं अश्लीलता से रहित हैं। बालक-बालिकाओं के लिए यह संग्रह अत्यन्त उपयोगी है तथा तत्कालीन सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक आदि विचार-प्रणालियाँ बताने वाला है।

रामनिधि शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के नवीन प्रकाशन

सोवियत भूमि—ले० महापंडित राहुल सांकृत्यायन, मूल्य ५) रूस के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिये हिन्दी में अद्वितीय पुस्तक।

मूर्तिकला—ले० राय कृष्णदास, मूल्य १।) भारतवर्ष की मूर्तिकला की आदि से अब तक की तात्विक व्याख्या।

चित्रकला—ले० रायकृष्णदास, मूल्य १।) चित्रकला पर अपने ढंग की सर्वोत्तम पुस्तक।

बाल-मनोविज्ञान—ले० पं० लालजी राम शुक्ल, मूल्य १।) हिन्दी में बाल-मनोविज्ञान संबंधी सर्वश्रेष्ठ रचना।

मआसिरुल उमरा भाग १ और २—अनु० बाबू ब्रजरत्नदास, मूल्य ४) प्रति भाग। मुग़ल शासनकाल के सरदारों की सबसे प्रामाणिक जीवनियाँ।

बिहार में हिन्दुस्तानी—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ।); बिहार प्रांत में हिन्दी हिन्दुस्तानी समस्या की तात्विक व्याख्या।

कचहरी की भाषा और लिपि—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ॥।) अदालतों की भाषा और लिपि का विस्तृत विवेचन।

मध्य प्रदेश का इतिहास—ले० रायबहादुर डा० हीरालाल, बी० ए०, मूल्य १॥) मध्य प्रदेश का सबसे प्रामाणिक और शोधपूर्ण इतिहास।

हिन्दी साहित्य का इतिहास—ले० पं० रामचंद्र शुक्ल, मूल्य ५) प्रवर्द्धित संस्करण। हिन्दी साहित्य का सबसे अच्छा और विस्तृत इतिहास।

सिक्खों का उत्थान और पतन—ले० पं० नंदकुमार देव, मूल्य १।) सिक्ख जाति के अभ्युदय और पतन का सर्वाङ्गपूर्ण इतिहास।

नई कहानियाँ—सं० श्री राय कृष्णदास, पं० पद्मनारायण आचार्य, मूल्य १।) बारह सर्वोत्तम नई कहानियों का अत्यंत रुचिपूर्ण संग्रह।

मोहें जो दड़ो—ले० श्री सतीशचंद्र काला, मूल्य २) मोहें जो दड़ो की खोदाई के आधार पर लिखी प्राचीन भारतीय सभ्यता के संबंध में विद्वत्तापूर्ण सचित्र पुस्तक।

रघुनाथ रूपक गीतांरो—सं० श्री महताब चंद खारैड, मूल्य २)। डिंगल भाषा में भगवान रामचंद्र का मंछ कवि कृत सुंदर कवित्वपूर्ण वर्णन।

मुग़ल बादशाहों की हिन्दी—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ॥), मुग़ल बादशाह हिंदी से प्रेम करते और हिन्दी में रचना करते थे, इसका स्पष्ट प्रमाण यह पुस्तक है।

मिलने के पते—प्रत्येक नगर के प्रतिष्ठित पुस्तक विक्रेता।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी दो नई पुस्तकें

मेरी असफलताएँ

[हास्य मिश्रित आत्म कथा]

'साहित्य-सन्देश' के सम्पादक श्री गुलाबरायजी एम० ए०, ने आत्मकथा के रूप में इस पुस्तक में उच्चकोटि के साहित्यिक हास्य का ऐसा सुन्दर प्रदर्शन किया है जैसा अन्यत्र कम मिलता है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान्, प्रयाग विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० धीरेन्द्र वर्मा लिखते हैं :—

"बहुत दिनों बाद ऐसी रोचक साहित्यिक पुस्तक हाथ लगी। जहाँ तक मुझे स्मरण पड़ता है आधुनिक हिन्दी साहित्य की यह पहली पुस्तक है जिससे मेरे घर पर तीन पीढ़ियों ने आनन्द उठाया—मेरी माताजी, मैं तथा मेरी लड़की।"

दिल्ली रेडियो से श्री स० ही० वात्स्यायन ने समालोचना करते हुए इसकी जो प्रशंसा की थी वह शायद ही किसी पुस्तक को मिली हो। अगर आपने अभी तक इस पुस्तक को नहीं देखा हो तो अब मँगा कर देख लें। मूल्य १) मात्र।

आधुनिक हिन्दी नाटक

लेखक—प्रो० नगेन्द्र, एम० ए०

'सुमित्रानन्दन पन्त' और 'साकेत एक अध्ययन' लिख कर नगेन्द्रजी ने हिन्दी संसार में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। उसी का यह परिणाम है कि आपकी यह तीसरी नवीन कृति 'आधुनिक हिन्दी नाटक' छपते ही आगरा विश्व विद्यालय की एम० ए० परीक्षा के लिए स्वीकृत हो गई। इस पुस्तक में नगेन्द्रजी ने नाटकों का वर्गीकरण एक नए ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया है और विश्लेषण इतना मार्मिक है कि पढ़ते ही बनता है। नाटकों पर आलोचना की कई पुस्तकें हिन्दी में निकल चुकी हैं पर यह अपने ढग की अनूठी है। मूल्य १) मात्र।

हिन्दी पुस्तकों के लिये सदैव हमें लिखिये :— **साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति का अग्रदूत

धर्म-दूत

[सचित्र मासिक पत्र]

सम्पादकः—सुमन वात्स्यायन

आप जानना चाहेंगे कि संसार में भारतीय संस्कृति का कैसे प्रचार हुआ ? 'धर्म-दूत' में आप पढ़ेंगे कि चीन, कोरिया, मंगोलिया, तिब्बत, तुर्किस्तान, ईरान, अफगानिस्तान, जावा, सुमात्रा आदि देशों में कब और कितनी भयंकर आपत्तियों का सामना करके हमारे पूर्वजों ने भारतीय संस्कृति, सभ्यता, साहित्यकला, विज्ञान और धर्म का प्रचार किया। आप भगवान् बुद्ध के उन अनुचरों को भूल गये हैं। 'धर्म-दूत' द्वारा उनसे परिचित होकर आपका हृदय उत्साह और साहस से भर जायगा। अपने गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण कर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकेंगे।

पताः—धर्म-दूत कार्यालय, सारनाथ (बनारस)

राष्ट्रभाषा-समाचार

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा का मुखपत्र]

हर महीने की १५ तारीख़ को निकलता है

इसमें

प्रचारकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकों के लिये आवश्यक एवं उपयोगी ताज़ी सामग्री रहती है।

वर्धा-कार्यालय तथा परीक्षा-विभाग की सभी सूचनायें और राष्ट्र-भाषा-प्रचार की तमाम प्रान्तीय हलचलें निकलती हैं।

'प्रारम्भिक' से 'कोविद' तक के परीक्षार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये समय-समय पर परीक्षा-संबंधी लेख भी प्रकाशित होते हैं।

इसका वार्षिक चंदा सिर्फ़ १० आना है। मनी-ऑर्डर से भेजकर 'राष्ट्रभाषा-समाचार' के ग्राहक ज़रूर बनिये।

व्यवस्थापक,

राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के हिंदी विश्व-विद्यालय की संवत् १९९८ (सन् १९४१) की परीक्षाओं का परीक्षा-फल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उत्तमा परीक्षा (साहित्य रत्न)

हिन्दी साहित्य

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१	१२०८	लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी	आगरा	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१९६
२	८८०	धीरजलाल चतुर्वेदी	,,	द्वितीय श्रेणी	४७९
३	१२०९	बागरोदी कृष्णचन्द्र भट्ट	,,	,,	३१३
५	१२११	वल्लभदास पारख	,,	,,	४५३
६	१२१२	निरङ्कारदेव सेवक	,,	,,	५२९
				[वि० यो० भाषा वि०]	
८	१२१४	पुरुषोत्तमशरण अग्रवाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३८३
१०	५६६	हरिभगवान दीक्षित	,,	द्वितीय श्रेणी	३९२
११	१५	अम्बाप्रसाद 'सुमन'	,,	,,	४५८
१५	३६६	बिहारीलाल सक्सेना	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१९०
१६	१२१९	शीलादेवी माथुर	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१६४
१८	१२२१	केदारनाथ पाण्डेय	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	२२३
१९	१२२२	गङ्गासहाय शर्मा	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	२१८
२०	१२२३	हरिहर	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१६३
२१	५९०	रामनारायण जोशी	,,	द्वितीय श्रेणी	४७३
२२	१२२४	उमामहेश अवस्थी		,,	३८६
२३	१२२५	मुरलीधर शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४२०
२४	१२२६	कन्हैयालाल उपाध्याय	,,	,,	३११
२५	१२२७	कुञ्जबिहारी शर्मा	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१७६
२६	१२२८	निर्मला माथुर	,,	,, ,,	१७३
२८	१२३०	भवानीशंकर रोगड़ा	,,	द्वितीय श्रेणी	४६१
३०	१२३२	श्रीकृष्णचन्द्र खन्ना	,,	,,	४२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
३१	१२३३	ओमप्रकाश गोयल	आगरा	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१९८
३२	१२३४	कुमारी संयोगिता मेहरा	,,	,, ,,	१८०
३३	१२३५	बहोरीदत्त शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३७१
३४	८६०	धर्मनारायण शर्मा "धर्म"	,,	,,	४७६
३५	१२३६	सुमेरचन्द्र जैन	,,	,,	३६८
३६	१२३७	राजनाथ शर्मा	,,	,,	५२७
३८	१२३८	पन्नालाल मिश्र	,,	,,	४३८
३९	१२३९	ओमप्रकाश शर्मा दीक्षित	,,	,,	४९७
४०	१२४०	गोवर्द्धननाथ शुक्ल	,,	,,	५०९
४१	१२४१	राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी	,,	,,	३७०
४२	१२४२	अम्बिकाकान्त मिश्र	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० वीरकाव्य]	५८६
४३	१२४३	सूरजपाल सिंह तोमर	,,	द्वितीय श्रेणी	५२३
४४	१२४४	हजारीलाल जैन 'विद्यार्थी'	,,	,,	४३४
४६	१२४६	तेजसिंह धाकरे	,,	,,	४३०
४७	१२४७	लक्ष्मणप्रसाद	,,	,,	४३७
४८	१२४८	अवधबिहारीलाल 'अवधेश'	,,	,,	४६४
४९	५६७	होतीलाल शर्मा	,,	,,	३७८
५०	१२४९	पुरुषोत्तमदास अग्रवाल	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१६०
५२	८३०	फूलचन्द कुलश्रेष्ठ 'पुष्प'	,,	द्वितीय श्रेणी	४७४
५४	८९२	श्रीधर शर्मा	,,	,,	३९२
५५	१२५२	मदन मोहन जैन	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	२३२
५६	१२५३	लक्ष्मी नारायण उपाध्याय	,,	,,	२३१
५९	१२५६	जगन्नाथसिंह वर्मा	,,	,,	१९७
६०	१२५७	शिवदत्त शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४४३
६१	१२५८	हरिवल्लभ शर्मा	,,	,,	४११
६३	१२६०	लक्ष्मी नारायण शास्त्री	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	२०१
६६	१२६३	श्रीनाथ मोदी	,,	,,	१६४
७०	१२६७	इन्द्रदेव शास्त्री	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१७४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
७७	८६२	धर्मवीर 'प्रेमी'	आगरा	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० भाषाविज्ञान]	४७६
८७	१२८१	जीतमल ओसवाल	इन्दौर	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१७८
८९	१२८३	हरिवल्लभ	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० वीर-काव्य, भाषाविज्ञान, तथा साहित्यालोचन]	६३४
९१	१२८५	नर्मदाप्रसाद भावसार	,,	द्वितीय श्रेणी	३६४
९२	१२८६	गोवर्द्धनदास मेहता	,,	,,	३७०
९५	१२८९	नाथूलाल वज्र	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१७०
९६	१२९०	फतहचन्द्र अजमेरा जैन	,,	द्वितीय श्रेणी	३७२
९९	१२९२	मोहनलाल उपाध्याय 'निर्मोही'	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१७१
१०१	१२९४	कमलाकान्त पाठक	,,	द्वितीय श्रेणी	४८७
१०३	६३३	छज्जूलाल चवरे	,,	,,	३९२
१०४	६३०	बद्रीनारायण कृष्णदास मेहता	,,	,,	४९३
१०५	६३१	बाबूलाल टेलर निर्वान्या	,,	,,	४०१
१११	१३००	भैरवलाल गौड़	,,	द्वितीय श्रेणी	४१२
११३	१३०२	चाँदमल चौपड़ा	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१८१
११८	१३०६	शिवपल्टन सिंह	कलकत्ता (तुलसी सा० वि०)	द्वितीय श्रेणी	४१७
१२५	९४८	शिवचन्द्र तिवारी	,,	,,	४२४
१२७	१३१३	रामसुन्दर राय	,,	,,	४३७
१२९	१३१५	राधाकृष्ण उपाध्याय	,,	,,	४७२
१३०	१३१६	सरयूप्रसाद तिवारी	,,	,,	४१५
१३२	९४९	जगन्नाथसिंह	,,	,,	३८३
१३४	१३१९	दामोर तिवारी 'दाम'	,,	,,	३७३
१३९	१३२४	रामसुशील मिश्र	काशी (ट्रेनिंग कालेज)	,, [वि० यो०, वीर काव्य]	५१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
१४०	१३२५	रामनगीना राम	काशी(ट्रे० का०)	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	२०६
				[वि० यो० आधुनिक पद्य]	
१४१	१३२६	शिवकुमार पाण्डेय	,,	उतीर्ण (प्रथम-खण्ड)	२०८
१४३	७८६	हर्ष नारायण	,,	द्वितीय श्रेणी	४७५
१४७	१३३१	राम नरेश मिश्र	,,	,,	४३२
१४९	१३३३	लक्ष्मी नारायण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३८८
१५०	१३३४	अम्बिका पाण्डेय	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	२१९
				[वि० यो०, आधुनिक पद्य]	
१५३	१३३७	अष्टभुजाप्रसाद पांडे	,,	द्वितीय श्रेणी	३६८
१५४	१३३८	देवनाथ उपाध्याय	,,	,,	४१५
१५७	१३४०	हरीप्रसाद गुप्त	,,	,,	४१४
				[वि० यो० आधुनिक पद्य]	
१६०	१३४३	जगदीश पांडे	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१६०
१६१	१३४४	राम प्यारे मिश्र	,,	,, ,,	२१६
१६२	१३४५	रोहिताश्वर कुमार अग्रवाल	,,	,, ,,	२१५
१६३	१३४६	सत्य नारायण	,,	द्वितीय श्रेणी	३९५
१६४	१३४७	सत्य नारायण पाण्डेय	,,	,,	४३१
१६५	१३४८	भुवनेश्वरप्रसाद मिश्र	,,	,,	४८०
१६६	१३४९	भृगुरासन शर्मा	,,	,,	४३४
१६७	१३५०	ज्वालाप्रसाद पाठक	,,	,,	४०४
१६८	१००४	द्वारिका त्रिपाठी	,,	,,	३८३
१७०	१३५२	राधे मोहन शर्मा "विमल"	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	२२५
१७१	१०१६	बच्चालाल सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३८३
१७५	१३५६	वासुदेव सिंह	,,	,,	४१३
१७८	१०२४	गौरीशंकर वाजपेयी	,,	,,	४०४
१८५	१३६५	नरसिंह पांडेय "पथिक"	,,	,,	३७८
१८६	१३६६	मदनमोहन त्रिपाठी	,,	,,	३८२
१८८	१३६७	राम प्रताप त्रिवेदी	,,	,,	४७६
				[वि० यो०, भाषा वि०]	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८६	१३६८	राम अवतार दुबे	काशी (ट्रे० कालेज)	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)
१९०	१३६९	यमुना देवी अग्निहोत्री	,,	द्वितीय श्रेणी
१९१	१३७०	गंगादेवी दीक्षित	,,	,,
१९२	१३७१	अलख नारायण राम	,,	,,
१९६	१३७५	काशीनाथ मिश्र	,,	,,
१९८	१३७७	बालमुकुन्द उपाध्याय	,,	,,
१९९	१३७८	प्रद्युम्नप्रसाद पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी
२००	१३७९	रामेश्वर दुबे	,,	,,
२०१	१३८०	बद्रीविशाल त्रिपाठी	,,	,,
२०५	१३८३	चन्द्रमणि त्रिपाठी	,,	,,
२०६	१३८४	चतुर्भुजनाथ तिवारी	,,	,,
२०९	१३८७	तुलसीप्रसाद	,,	,,
२११	१३८८	कल्पनाथ सिंह	,,	,,
२१२	१३८९	रामलक्षण सिंह	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)
२१४	१३९१	चन्द्रिकाप्रसाद पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी
२१५	१३९२	रामवृक्ष सिंह	,,	,,
२१७	१३९४	रामबरन पाण्डेय	,,	,,
२२४	१३९९	होरीलाल वर्मा	(कानपुर एस० डी० कालेज)	,,
२२५	१४००	दत्तप्रसाद वर्मा	,,	,,
२२६	१४०१	श्रीकृष्ण अग्रवाल	,,	,, [वि० यो० मौखिक]
२२७	१४०२	गोविन्द सखाराम दातार		उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)
२२९	६६१	बीरहरि	,,	द्वितीय श्रेणी
२३०	१४०४	शुकदेव शर्मा	,,	,,
२३१	१४०५	श्यामदेव दीक्षित	,,	,,
२३४	१४०८	हरदत्त मिश्र	,,	,,
२३७	१४११	रामसेवक शर्मा	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
२३८	१४१२	प्रवीण चन्द्र जैन	(कानपुर एस० डी० कालेज)	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० मौखिक]	४९१
२४१	१४१४	देवीप्रसाद अवस्थी	,,	द्वितीय श्रेणी	४६७
२४२	९८३	शिवसरूप वाजपेयी	,,	,,	३७७
२४३	९७२	चन्द्रपाल सिंह	,,	,,	४५५
२४४	१४१५	कमलाप्रसाद रावत	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१७१
२४५	१४१६	प्यारेलाल	,,	,,	१७५
२४७	१४१८	महेश्वर	,,	,,	२११
२४९	१४२०	भगवतदयाल पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी	३६२
२५१	१४२२	श्यामसुन्दर	,,	द्वितीय श्रेणी	३६७
२५२	१४२३	निशानाथ दीक्षित	,,	,,	४२९
२५३	९७१	रामबाबू मिश्र	,,	,,	३७९
२५५	१४२५	छोटेलाल शर्मा "विकसित"	,,	,,	४८१
२५६	१४२६	विश्वेश्वरदयाल शुक्ल	,,	,,	४८६
२६४	१०७८	सीता अग्रवाल	पटना (स०का०)	,,	४३२
२६५	१०७१	मैथिलीशरण 'नेहनिधि'	,,	,,	४६८
२६६	१४३४	राजेन्द्रप्रसाद तिवारी	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१८६
२६९	१४३७	विरंचि पाण्डेय	,,	,, ,,	१७८
२७०	१०८५	अयोध्याप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी	३९२
२७३	१४३९	शिवनारायण चौधरी	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१७३
२७५	१४४०	चन्द्रशेखर शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४३४
२७६	१४४१	रघुवंशलाल	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	२२३
२७९	१०७०	शिवनन्दन प्रसाद	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० वीर काव्य]	५९०
२८१	१४४५	रामविलास ठाकुर	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	२१५
२८५	१४४९	रमेशचन्द्र शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी	४२५
२८७	१०८६	रामचन्द्रप्रसाद अम्बष्ट 'वीणचन्द्र'	,,	,,	३६७
२८९	१४५२	प्रसादीसिंह अध्यापक	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	२१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
२९१	१४५४	शुकदेवप्रसाद सिंह	पटना (स०का०)	द्वितीय श्रेणी	३७
२९३	१४५५	खड्ग गोप	,,	,,	३८
३०१	१०६८	सत्यव्रतसिंह सत्य	प्रयाग (हि० सा० स०)	,,	४६
३०३	१४६४	रामचन्द्रसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४८
३०४	१४६५	शिवधान सिंह	,,	,,	४२६
३०५	१४६६	कमलादेवी शर्मा	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१०
३०६	१४६७	चन्द्रभूषण पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० वीर काव्य]	४३
३०७	१४६८	जसभाई पटेल	,,	द्वितीय श्रेणी	३७
३०९	१४७०	फतहबहादुर	,,	,,	३९
३१०	१४७१	युगुलकिशोर श्रीवास्तव 'युगलेश'	,,	द्वितीय श्रेणी	४४
३११	१४७२	राम अधीन मिश्र 'सैनिक'	,,	उत्तीर्ण (प्रथमखण्ड)	२५
३१३	१४७४	बालाभ्यासी	,,	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० वीर काव्य]	४७
३१४	१४७५	विष्णुकान्ता "उषा"	,,	द्वितीय श्रेणी	३६
३१५	१४७६	राम बालक प्रसाद	,,	उत्तीर्ण (प्रथमखण्ड)	२१
३१६	१४७७	रमा शंकर जैतली	,,	,, ,,	१९
३१९	१४८०	कुंवर रामसिंह तोमर	,,	द्वितीय श्रेणी	५०
३२८	१४८८	राज कुमार सिंह	,,	,, ,,	४१६
३३०	१४९०	रमेन्द्र कुमार	,,	,, ,,	३९६
३३९	१४९८	शिवनारायणलाल मिश्र	,,	उत्तीर्ण (प्रथमखण्ड)	१६७
३४०	८१२	गजाधर मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३९
३४२	१४९९	कपिल देव द्विवेदी	,,	,, ,,	४६
३४३	१५००	श्रीकृष्ण खरे	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० प्रथम प्र० पत्र]	५४
३४४	१०९५	सभाजीत सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४१
३४६	१५०२	दरबार सिंह गौर	,,	,, ,,	३७६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
३४९	१५०५	जगदम्बाप्रसाद मिश्र	प्रयाग (हि०सा०स०)	उत्तीर्ण (प्रथमखण्ड)	१८१
३५२	१५०८	रामप्रताप मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	५००
३५३	१५०९	बि० मल्लय्य	,,	,,	४०७
३५४	१५१०	रामचन्द्र मालवीय	,,	,,	४३७
३५७	१५१३	महावीर प्रसाद त्रिपाठी	,,	,,	४०८
३६१	१५१७	पूजा प्रसाद मिश्र 'तेज'	,,	,,	४३२
३६२	१५१८	रामाधार राम मिश्र	,,	,,	४०६
३६३	१५१९	रामनगीना त्रिपाठी	,,	,,	४६०
				[वि० यो० वीर काव्य]	
३६४	१५२०	वीरेन्द्र कुमार मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	४०७
३६५	११५६	साधु शरण पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी	४१६
३६८	१५२३	विन्ध्याचल सिंह 'विन्ध्य'	,,	,,	३७८
३७०	१५२५	विश्वनाथ उपाध्याय	,,	,,	४३३
३७५	१५२९	नानकचन्द मिश्र	,,	,,	४१०
३७७	१५३१	देवव्रत वर्मा	,,	,,	४०७
३७८	१५३२	लक्ष्मी नारायण शर्मा, उप० लक्ष्मीकान्त मुक्त	,,	,,	४१६
३७९	१५३३	सूर्य नारायण पांडेय	,,	,,	३८५
३८१	१५३५	राम आधार	,,	,,	४४५
३८२	१५३६	जगदीशचन्द्र 'वसु' जायसवाल	,,	,,	४४०
३८३	१५३७	रामकृपाल द्विवेदी	,,	,,	४९६
३८४	१५३८	सिद्धनाथ ओझा 'दानी हृदय'	,,	,,	४७१
				[वि० यो० मौखिक]	
३८५	१५३९	बेंकट शर्मा "प्रभात"	,,	द्वितीय श्रेणी	५३१
				[विं० यो० मौखिक]	
३८६	१५४०	शिवपूजन प्रसाद "शिव"	,,	द्वितीय श्रेणी	३७९
३८८	१५४२	जनार्दनसुका खडके	,,	द्वितीय श्रेणी	३८२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
३८९	१५४३	वि० मुकर्जी "गुञ्जन"	प्रयाग (हि० सा० स०)	द्वितीय श्रेणी	४५
३९०	१५४४	लक्ष्मण दुबे	,,	,,	३९०
३९१	१५४५	गणेश शर्मा भारद्वाज	,,	,,	३८
४१५	१५६५	यशवन्त शंकर गोडबोले	पूना	,,	४३७
४१७	१५६७	मल्हार लक्ष्मण कुलकर्णी	,,	,,	३९
४१९	१५६९	महादेव सीताराम करमरकर	,,	द्वितीय श्रेणी	४६
				[वि० यो० गद्य तथा नाटक]	
४२१	१५७१	डा० गोपाल महादेव भट्ट	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१७
४२२	१५७२	कुं० हीराबाई सुंठणकर	,,	द्वितीय श्रेणी	३७
४२३	१५७३	रामचन्द्र कडेपूरकर	,,	,,	४५
				[वि० यो० निबन्ध]	
४२४	१५७४	राजबहादुर मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	४२
४२५	१५७५	रामेश्वर दयाल सक्सेना	लखनऊ	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	२२
४२६	१५७६	राधेश्याम रूंगटा	,,	द्वितीय श्रेणी	४४
४३२	८५४	तारा वाजपेयी	,,	,,	४१
४३३	६५७	व्रजकिशोर द्विवेदी 'किशोर'	,,	,,	४४
४३६	१५८४	प्रतिपाल सिंह	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१८
४३७	१५८५	मुकुन्दी सिंह	,,	,, ,,	१७
४३८	१५८६	पुत्तीलाल निगम	,,	,, ,,	१९
४३९	१५८७	मुन्नू लाल	,,	,, ,,	१९
४४१	१५८९	(कुमारी) कृष्णा वाजपेयी	,,	,,	२१
४४३	१५९१	द्वारिका प्रसाद पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी	४०
४४४	१५९२	प्रभा मालवीय	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१६
४४७	१५९५	दयाशंकर दुबे	,,	द्वितीय श्रेणी	३६
४४८	१५९६	सुन्दरलालाल दीक्षित	,,	,,	४५
४४९	१५९७	सत्यप्रकाश श्रीवास्तव	,,	,,	४२
४५०	१५९८	रिपुदमन रायजादा	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१०
४५३	१६०१	ज्ञानवती वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
४५४	१६०२	गंगाप्रसाद मिश्र	लखनऊ	द्वितीय श्रेणी	४५७
४५५	६७०	यमुनाप्रसाद उपाध्याय	,,	,,	४२५
४५६	९७७	शिव शंकर मिश्र	,,	,,	५१३
४५८	१६०४	प्रेम नारायण टंडन	,,	,,	४९४ [वि० यो० मौखिक]
४५९	१६०५	विद्या श्रीवास्तव	,,	द्वितीय श्रेणी	४३०
४६०	१६०६	के० भगवान प्रसाद त्रिपाठी	,,	,, ,,	४२५
४६२	१६०८	जगदीश स्वरूप	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)	१६७
४६४	१६१०	शंकरप्रसाद त्रिपाठी	लाहौर	द्वितीय श्रेणी	४२७
४६८	१६१४	राजपाल	,,	,, ,,	३७८
४६९	१६१५	हरिभजन सिंह	,,	,, ,,	५३१ [वि० यो० मौखिक]
४७०	१६१६	काशीराम शास्त्री "पथिक"	,,	,, श्रेणी	३८४
४७१	१६१७	वैद्य नित्यानन्द सारस्वत	,,	द्वितीय श्रेणी	४४७
४७३	१६१९	सेतीलाल जैन "प्रभा"	,,	,, ,,	४६४
४७४	६१२	रत्नकुमार जैन "रत्नेश"	,,	द्वितीय श्रेणी	४३५
४८१	१६२६	यर्रगुण्टंक सोमेश्वर शर्मा	विजगापाटम	उत्तीर्ण (प्रथमखण्ड)	१६३
४८२	१६२७	ओरु गण्टि वेंकटेश्वर शर्मा	,,	,, ,,	२११
४८६	१६३१	सुमेरु पाण्डे	काशी (ट्रेनिंगकालेज)	द्वितीय श्रेणी	३७३
४८७	१६३२	विष्णुदेव द्विवेदी	,,	उत्तीर्ण (प्रथमखण्ड)	२११

उत्तमा परीक्षा (आयुर्वेदरत्न) विषय—वैद्यक

८३	१२७७	प्रभूदयाल शर्मा	आगरा	उत्तीर्ण (प्रथमखण्ड)	२२५
११६	११८६	भागवतप्रसाद गंगेले	इन्दौर	द्वितीय श्रेणी	४८२
२२१	१३९७	हरिहर प्रसाद त्रिवेदी वैद्य	काशी	उत्तीर्ण (प्रथमखण्ड)	२२०
३१९	१५५१	ठाकुरप्रसाद चतुर्वेदी	प्रयाग (हि० सा० स०)	प्रथम श्रेणी	६१७ [वि० यो० प्र० पत्र ३, ४, ७]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
४००	१५५२	ओंकारनाथ अवस्थी	प्रयाग (हि० सा० स०)	प्रथम श्रेणी [वि० यो०, प्र० पत्र ३, ८, तथा मौखिक]	५६१
४०२	१५५४	रुक्मिणी द्विवेदी	प्रयाग (स० कार्य्य०)	उत्तीर्ण (प्रथमखण्ड)	१६१
४०३	१५५५	राधेश्याम अग्रवाल	,,	द्वितीय श्रेणी	४७८
४०४	६६३	सेवक राम गुप्त	,,	,, [वि० यो०प्र०पत्र ७]	५०५

उत्तमा परीक्षा (साहित्यरत्न) विषय-इतिहास

३९५	१२०७	सी० एल० चौधरी	प्रयाग (स०का०)	द्वितीय श्रेणी	४४४
३९६	१५४८	केशव सिंह	,,	,, ,,	३८६

उत्तमा परीक्षा (साहित्यरत्न) विषय-राजनीति

३९८	१५५०	काशीनाथ नारायण सोमण	प्रयाग (स०का०)	द्वितीय श्रेणी	३६४

उत्तमा परीक्षा (विज्ञान रत्न) विषय-कृषि शास्त्र

४०७	६३१	कुंजीलाल पंचोली	प्रयाग (हि० सा०स०)	द्वितीय श्रेणी	४३६

उत्तमा परीक्षा (साहित्यरत्न) विषय-भूगोल

४०६	१५५७	सन्तप्रसाद	प्रयाग (हि०सा०स०)	द्वितीय श्रेणी	३७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
४१२	१६३७	माताबदल श्रीवास्तव	काशी (ट्रे० का०)	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१७८

उत्तमा परीक्षा (साहित्यरत्न) विषय-अर्थशास्त्र

३००	१४६२	ब्रजकिशोर गौड़	पटना (सम्मेलन कार्यालय	उत्तीर्ण (प्रथम खंड)	१६५
४०६	१५५६	जम्बूप्रसाद जैन	प्रयाग (स० कार्या०)	द्वितीय श्रेणी	४१६

वैद्य विशारद परीक्षा

क्रम संख्या	वै० विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
१	२८१	बनारसीदत्त शर्मा गौड़	अतरौली	विभाजित प्र० के अनुसार	
३	२८३	प्रकाशचन्द्र जैन	अलीगढ़	,, (वि० यो० मौखिक)	
४	२८४	चन्द्रदयालु सक्सेना	इटावा	विभाजित प्र० के अनुसार	
५	२८५	वै० यमुनाप्रसाद त्रिपाठी	इन्दौर	,,	
७	२८७	विद्यासागर पांडे	,,	,,	
१०	२९०	गोविन्दराम स्वामी	उरई	द्वितीय श्रेणी	४५९
११	२९१	होतीलाल वर्मा	एटा	विभाजित प्र० के अनुसार	
२०	३००	विश्वनाथ प्रसाद	काशी (ओरि० कालिज)	,,	
२४	३०४	उदयनाथ पांडे	काशी (सेंट्रल हिन्दू स्कूल)	तृतीय श्रेणी	४२६
२७	३०७	रामचरित्र महतो	गया	विभाजित प्र० के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	वै० विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
३०	३१०	गणपतलाल	गोन्दिया	द्वितीय श्रेणी (वि० यो० द्रव्य० वि०)	४६
३३	३१३	गोवर्धन शर्मा वैद्य	गोन्दिया	तृतीय श्रेणी	४२
३६	३१६	गोवर्धनप्रसाद मिश्र	चिरानी पट्टी	,,	४४
४२	३२२	शक्तिसार शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	५०
४४	३२४	शक्तिधर शर्मा	,,	,,	४५
४८ (अ)	४४४	दयाराम शर्मा	ज्वालापुर	प्रथम श्रेणी [वि० यो० उर्ध्वा० मौखि०]	५४
५१	३३१	हरिराम	जोधपुर	विभाजित प्र० के अनुसार	
५४	३३४	बैजनाथ गुप्ता	झाँसी	द्वितीय श्रेणी	४६
५५	३३५	विष्णुप्रसाद राय	,,	,,	४५
५८	३३८	परमानन्द पांडे	तिलौथू	विभाजित प्र० के अनुसार	
६१	३४१	पारसनाथ सिंह	दार्जिलिंग	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
७१	३५१	राजेन्द्रचन्द्र शुक्ल	प्रयाग (सम्मेलन)	,,	,,
७२	३५२	हरीराम शर्मा	,,	,,	,,
७५	३५५	लालबहादुर श्रीवास्तव	,,	,,	,,
७७	३५७	गोविन्दप्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४६
८२	३६२	पचौरी कुन्दीलाल शर्मा	फिरोजाबाद (रामा० इं० स्कूल)	विभाजित प्र० के अनुसार	
८३	३६३	धर्मेन्दुदत्त	,,	तृतीय श्रेणी	४४
८४	३६४	प्रेमचन्द्र जैन	,,	द्वितीय श्रेणी (वि० यो० मौखिक)	४८
८६	३६६	चन्द्र शर्मा	बड़ौत (मेरठ)	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० मौखिक]	५०
८७	३६७	छोटेलाल पाराशरी	बदायूं (हि० वि०)	प्रथम श्रेणी [वि० यो० उर्ध्वा० मौखिक]	५५
८८	३६८	अयोध्याप्रसाद शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	४४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	वै० विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
९५	३७५	रामलाल गँगवारी	बरेली	प्रथम श्रेणी (वि० यो० शरीर० वि०)	५५८
९७	३७७	वासुदेव सिंह	बलरामपुर	तृतीय श्रेणी	४३३
१०२	३८२	रामदास शर्मा	बीकानेर	प्रथम श्रेणी (वि० यो० स्वा० मौखिक)	५८९
१०५	३८५	श्रीधर राव मिश्र	बैतूल	विभाजित प्रणाली के अनु०	
१०९	३८९	राजनारायण कुलश्रेष्ठ	मथुरा (गोवर्ध० हि० विद्या०)	,,	
१११	३९१	वैद्य कृष्णदास शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४८२
११४	३९४	रामसुचित शर्मा	मलाँव	विभाजित प्रणाली के अनु०	
१२०	४००	गंगासागर तिवारी	मौरावाँ	प्रथम श्रेणी (वि० यो० शरीर० मौखिक)	५४४
१२६	४०६	अनसूयाप्रसाद शुक्ल	रीवाँ	प्रथम श्रेणी	५५३
१२८	४०८	नन्दनन्दन व्यास	,,	द्वितीय श्रेणी	४६७
१३३	४१३	विजय गोविन्द	लश्कर	विभाजित प्रणाली के अनु०	
१३५	४१५	जगदेव ठाकुर	लाहौर (रा० भा० प्र० संघ)	द्वितीय श्रेणी	५२८
१३६	४१६	जसवन्त राम सैहगल	लाहौर	,, (वि० यो० रोगनिदान)	५३४
१३७	४१७	गजाधर देव शर्मा सारस्वत	वृन्दावन	विभाजित प्रणाली के अनु०	
१३९	४१९	रामनारायण मिश्र	सिंगरामऊ	द्वितीय श्रेणी	४६०
१४१	४२१	शिवशंकरप्रसाद त्रिपाठी	सीतापुर	विभाजित प्रणाली के अनु०	
१४७	४२७	रामनारायण वाजपेयी	,,	,, (वि० यो० मौखिक)	
१५१	४३१	सूर्यपाल	संगरिया	विभाजित प्रणाली के अनु०	
१५३	४३३	अर्जुनदेव मलिक	,,	,,	
१५५	४३५	भागीरथप्रसाद शर्मा	हरदा	,,	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	वै० विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१५८	४३८	सरोजनी देवी शर्मा	हापुड़	द्वितीय श्रेणी (वि० यो० मौखिक)	४६
१६०	४४०	ऊधवदास	हैदराबाद सिंध (नानक आयुर्वेद)	विभाजित प्रणाली के अनु०	
१६३	४४३	नारायण देव	,,	द्वितीय श्रेणी	४८४

कृषि विशारद परीक्षा

१	ब्रजनाथ तिवारी "विशारद"	आरा	तृतीय श्रेणी	२६६
२	कु० रामकृष्णसिंह सिकरवार	इन्दौर	,,	३४१
४	आनन्द वल्लभ शर्मा	कोटा	द्वितीय श्रेणी	३९१
६	गिरधर सिंह परमार	जोधपुर	,,	३६०
८	आशाराम यादव	दतिया	तृतीय श्रेणी	२७३
९	रामनाथ द्विवेदी	नवाबगंज	द्वितीय श्रेणी	३७४
१०	वासुदेव सिंह	प्रयाग (सम्मेलन)	तृतीय श्रेणी	३०६
११	रामलाल तारे	प्रयाग (हि०वि० पी०)	,,	२७१
१४	विशेश्वर थवैत	रायगढ़	,,	२७०
१५	लक्ष्मी नारायण राय	लहेरिया सराय	,,	३५३

व्यापार विशारद परीक्षा

२	पुरुषोत्तमदास डांगरा	खुजनेर	तृतीय श्रेणी	३०१
६	गोविन्द राम	मेड़ता सिटी (पारी० सं० विद्या०)	,,	३२८
७	शंकरलाल वैष्णव	,,	,,	२८३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमा (विशारद) परीक्षा

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१	८२६७	सोहनलाल पुरोहित	अकोला	द्वितीय श्रेणी	४६६
६	८३०५	रामदर्श सिंह	अजमतगढ़	,,	३७६
१०	८३०६	भंवरलाल शर्मा	अजमेर	तृतीय श्रेणी	३०४
११	८३०७	प्रतिमा रानी मिश्रा	,,	अध्याय ३ नि० ७ के अनुसार	
१२	८३०८	मोहन बसिस्त	,,	द्वितीय श्रेणी	४१५
१३	८३०९	हिप्पोलित	,,	तृतीय श्रेणी	३३६
१४	८३१०	अन्तोन अल्फ्रेद	,,	तृतीय श्रेणी	३३६
१५	८३११	अरमा	,,	,,	३३४
१६	८३१२	फीदेल	,,	,,	३३८
१८	८३१४	हिप्पोलित सुन्नी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१९	८३१५	उमाशंकर शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३६६
२०	७१४८	रघुराज सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
२२	६५३६	गुलाब राय शर्मा	अतरौली	,,	,,
२५	८३१९	वेद कुमारी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
२६	८३२०	श्यामलाल गौड़	अनूपशहर (ए०वी० हा० स्कूल)	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	४४७
२८	८३२२	कल्याण दत्त उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	४०२
३१	८३२५	बद्रीप्रसाद पचौली	अमरावती	द्वितीय श्रेणी	३६३
३३	८३२७	कु० शान्ता सब्बरवाल	अमृतसर	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
३४	८३२८	निर्मला देवी ऋषि	,,	,,	
३५	८३२९	सुशीला देवी शर्मा	,,	,,	
३६	८३३०	कु० लीला मलहोत्रा	,,	अ० ३ नियम ७ के अनुसार	
४०	६५५०	जयराम झा	अयोध्यागंज	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
४२	८३३२	गिरिधर झा	,,	द्वितीय श्रेणी	३८६
	८३३३	रामजी लाल शर्मा	अलवर	,,	४१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा	प्राप्ताङ्क
४३	८३३४	नेमीचंद जैन	अलवर	द्वितीय श्रेणी	३६५
४६	८३३७	हरफूल दत्त मिश्र	,,	,,	३६५
४८	८३३९	महेशचन्द्र मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी	३४५
५१	८३४२	मनोहरलाल गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी	३८२
५४	८३४५	देवदत्त शर्मा	अलीगढ़ (डी.ए.वी. स्कू.)	,, [वि० यो० संस्कृत]	४५५
५५	८३४६	नारायण देव कौशिक	,,	द्वितीय श्रेणी	३८६
५७	६५५८	राम मुरारीलाल बिसारिया	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
५८	८३४७	गिरधारीलाल	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	५३४
६२	८३५१	राममूर्ति अवस्थी	,,	द्वितीय श्रेणी	३७७
६३	८३५२	सुरेन्द्रपाल	,,	तृतीय श्रेणी	३२[illegible]
६५	८३५४	शंकरलाल शर्मा उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी	३६४
६६	८३५५	शकुन्तला देवी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
६७	८३५६	शिवप्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी	३४५
७१	८३६०	रामशंकर सूरजमल रावल	अहमदाबाद	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
७२	८३६१	बलवन्त घाटे	अहमदनगर	,,	,,
७६	८३६५	श्याम दीक्षित	आगरा	द्वितीय श्रेणी	३७६
७९	८३६८	रामचरित्र शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
८२	६५८३	गोस्वामी नवादित्य लाल	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
८३	६५८६	श्रीदयाल पाठक	,,	,,	,,
८४	६५७५	प्रेमदयाल गर्ग	,,	,,	,,
८५	७२७०	मुरारीलाल शर्मा	,,	,,	,,
८९	८३७०	काशीचरन पांडेय	,,	तृतीय श्रेणी	३२[illegible]
९०	८३७१	किसनलाल जोशी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
९१	८३७२	शेख इमाम	,,	,,	,,
९२	८३७३	शान्ति देवी	,,	,,	,,
९३	८३७४	चन्द्रकान्ता देवी	,,	,,	,,
९५	८३७६	हरद्वारीलाल शर्मा	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
९७	८३७८	टीकाराम गुप्त	आगरा	तृतीय श्रेणी	३३७
१००	८३८१	सीताराम सिंघल	,,	द्वितीय श्रेणी	३७१
१०२	८३८३	कु० उपेन्द्रकुमार सिंह	,,	,,	३८३
१०३	८३८४	बांकेलाल गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी	३४५
१०५	८३८६	राधेश्याम त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी	३६८
१०६	८३८७	रामगोपालसिंह चौहान	,,	,,	३७३
१०७	८३८८	शीतलप्रसाद	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	५०३
१०८	८३८९	राजबहादुर गुप्ता	,,	द्वितीय श्रेणी	३६८
१०९	८३९०	एस० शंकर राजू नायडू	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
११०	८३९१	कामताप्रसाद जैन 'कुसुम'	,,	द्वितीय श्रेणी	३७६
११२	८३९३	रामबाबू पाठक	,,	,,	३७९
११४	८३९५	पुरुषोत्तम देव शर्मा	,,	,,	४०८
११९	८४००	जगदीश स्वरूप	,,	तृतीय श्रेणी	३४१
१२०	८४०१	परशादीलाल चौहान	,,	,,	३०७
१२३	८४०४	हरीप्रसाद तिवारी	,,	,,	३२२
१२५	८४०६	रामबाबू शर्मा	,,	,,	३४३
१२७	८४०८	जोमदार सिंह वर्मा	,,	,,	३२८
१२९	८४१०	जगन्नाथप्रसाद सक्सेना	,,	,,	३०१
१३२	८४१३	विश्वेश्वर दयाल पाठक	,,	तृतीय श्रेणी	३१५
१३३	८४१४	भूदेवप्रसाद शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३९२
१३४	८४१५	रामबाबू	,,	तृतीय श्रेणी	३२२
१३७	८४१८	ठाकुरदास दीक्षित	,,	,,	३३७
१३९	८४२०	जगदीशचन्द्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३८०
१४०	८४२१	डालचन्द	,,	तृतीय श्रेणी	३४३
१४१	८४२२	ब्रजनन्दन त्रिपाठी	,,	,,	३३३
१४६	८४२६	मुलराम सिंह	आजमगढ़	द्वितीय श्रेणी	३६५
१४७	८४२७	दीपचन्द्र उपाध्याय	,,	तृतीय श्रेणी	३३०
१४८	८४२८	हरिहर उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी	३७६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१४९	८४२९	रामशकल मिश्र	आजमगढ़	विभाजित प्र० के अनुसार	
१५०	८४३०	रामसिंह	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१५२	८४३२	प्रकाशनाथ	आबूरोड	द्वितीय श्रेणी	३८५
१५३	८४३३	पूसाराम मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी	३१५
१५४	६६२४	शिवजी मिश्र	आरा	विभाजित प्र० के अनुसार	
१५६	८४३५	बवनबिहारी वर्मा	,,	प्रथम श्रेणी	४९१
				[वि० यो० संस्कृत]	
१६१	८४४०	ब्रजबिहारी लाल	,,	द्वितीय श्रेणी	४१५
१६२	८४४१	बद्रीनारायण	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१६३	८४४२	कु० कनकलता सहाय	,,	तृतीय श्रेणी	३२०
१६७	८४४६	उदितनारायण पांडेय	इटारसी	द्वितीय श्रेणी	३७७
१७०	८४४९	रामकृष्ण द्विवेदी	इटावा	तृतीय श्रेणी	३४०
१७१	८४५०	नंदनलाल गौड़	,,	,,	३२७
१७२	८४५१	विद्यासागर शुक्ल	,,	,,	३४१
१७४	८४५२	राम सनेही	,,	,,	३१९
१७६	८४५३	ब्रजगोपाल वाजपेयी	,,	,,	३१६
१७८	८४५५	प्रतापभानु खण्डेलवाल	इन्दौर	,,	३३३
१८३	८४६०	कालूराम	,,	,,	३३१
१८५	८४६२	रतनलाल गंगवाल	,,	,,	३२७
१८६	८४६३	चुन्नीलाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४१६
१८७	८४६४	हरिश्चन्द्र मेहता	,,	तृतीय श्रेणी	३३४
१८९	८४६६	श्रीकृष्ण खण्डेलवाल	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
१९१	८४६८	मानकचन्द्र जैन	,,	तृतीय श्रेणी	३५१
१९२	८४६९	मदनमोहन जोशी	,,	,,	३२७
१९३	८४७०	राधाकृष्ण राठी	,,	द्वितीय श्रेणी	३७०
१९५	८४७२	राजनाथ बारचे	,,	,,	३८३
१९६	८४७३	सुमतिलाल खासगीवाला	,,	तृतीय श्रेणी	३४५
१९७	८४७४	सीताराम वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४०७
१९९	८४७६	ताराचंद्र वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
२००	८४७७	मदनलाल गुप्ता	इन्दौर	द्वितीय श्रेणी ३७८
२०४	८४८१	राधाबाई	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
२०५	८४८२	कृष्णा शुक्ल	,,	,, ,,
२०६	८४८३	सरला शर्मा	,,	,, ,,
२०८	८४८५	राधेश्याम उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ३६४
२०९	८४८६	कामता प्रसाद स्वामी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२१०	६६५७	हेमचन्द्र शुक्ल	,,	,, ,,
२१७	८४९३	रामशंकर राज वैद्य	,,	द्वितीय श्रेणी ४०२
२१८	८४९४	शीलचन्द्र जैन	,,	,, ४०२
२२०	८४९६	नाथूलाल नागर	,,	तृतीय श्रेणी ३५१
२२१	८४९७	लीलाधर शर्मा	,,	द्वितीए श्रेणी ३८६
२२२	८४९८	शकुन्तला कुमारी जैन	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
२२३	८४९९	जमनालाल जैन	,,	द्वितीय श्रेणी ३६७
२२८	६६५९	महेशचन्द्र मिश्र	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२२९	८५०४	दत्तात्रय	,,	अ०३ नि०७ के अनुसार
२३२	८५०७	विनायक राव जोशी	,,	तृतीय श्रेणी ३२८
२३३	८५०८	धनरूपमल सेठिया	,,	द्वितीय श्रेणी ३६०
२४३	८५१७	मो० छोटन आज़ाद अंसारी	इसलामपुर	अ०३ नि०७ के अनुसार
२५२	६५६५	नाथूलाल हर्ष	उज्जैन	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२५५	८५२८	शशिकला तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी ३४३
२५६	८५३१	शान्तिलाल गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी ३०७
२६६	८५३६	भैंरूलाल जोशी	उदयपुर (हि० वि० पी०)	द्वितीय श्रेणी ४५१
२६७	८५३७	गोवर्धनलाल लड्ढा	,,	,, ४४३
२६८	८५३८	गोविन्द सिंह पीपाड़ा	,,	तृतीय श्रेणी ३१४
२७०	८५४०	सन्हैयालाल ओझा	,,	द्वितीय श्रेणी ३६४
२७२	८५४२	बलवन्त सिंह तवेसरा	,,	तृतीय श्रेणी ३४५
२७३	८५४३	पन्नालाल त्रिवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ४२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२७६	६७११	हगामी देवी गौड़	उदयपुर (हि०वि०पी०)	विभाजित प्रणाली के अनुसा
२७७	८५४६	जगन्नाथ उपाध्याय	,,	,, ,,
२७८	४८८२	भंवरलाल मेहता	,,	,, ,,
२७९	३४९१	मनोहर सिंह खाब्या	,,	,, ,,
२८०	४९९२	भंवरलाल अमिटा	,,	,, ,,
२८३	८५४७	धनलाल यादव	,,	,, ,,
२८४	८५४८	भैरवलाल	,,	तृतीय श्रेणी ३३
२८७	८५५१	भंवानी शंकर दुखित	,,	द्वितीय श्रेणी ३८
२८८	८५५२	अवध बिहारी वाजपेयी	,,	,, ४०
२८९	८५५३	सूरजलाल शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसा
२९२	६७१२	स्वामी केवलराम दादूपंथी	,,	,, ,,
२९३	८५५६	देवीलाल गोयल	,,	,, ,,
२९४	८५५७	रामचन्द्र व्यास	,,	द्वितीय श्रेणी ३८
२९५	८५५८	अमृतलाल	,,	तृतीय श्रेणी ३५४
२९६	८५५९	मन्नीलाल शर्मा	उरई	द्वितीय श्रेणी ३६३
२९७	८५६०	सूरजप्रसाद दीक्षित	,,	,, ३९
३००	८५६३	मुरलीधर सक्सेना	,,	तृतीय श्रेणी ३५
३०१	८५६४	कुं० हाकिमसिंह कौशल	,,	द्वितीय श्रेणी ४२
३०२	८५६५	ईश्वरी देवी सक्सेना	,,	तृतीय श्रेणी ३११
३०३	८५६६	विद्याधर तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ३७६
३०७	६७२२	गौरीशंकर द्विवेदी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३०८	८५६९	नागेश्वरप्रसाद वर्मा	एकमा	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
३०९	८५७०	रामनारायण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३९०
३१०	८५७१	जगन्नाथ सिंह	,,	,, ३८०
३११	८५७२	कपिलदेव प्रसाद	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
३१९	३५०५	रामेश्वरदत्त जोशी	कटक	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३२८	८५८७	सूर्यनाथप्रसाद मिश्र	कटया	तृतीय श्रेणी ३५६
३३०	६७४३	माधवप्रसाद द्विवेदी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
३३१	८५८९	सूर्यमणि शर्मा	कटया	तृतीय श्रेणी	३४६
३३२	८५९०	रामसुचित राय	,,	द्वितीय श्रेणी	३६१
३३४	८५९२	शिवपूजन त्रिपाठी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
३३५	८५९३	विश्वनाथ तिवारी	,,	प्रथम श्रेणी	५०७
				[वि० यो० संस्कृत]	
३३६	६७४४	चन्द्रगोकुल राय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
३३७	८५९४	बैजनाथ राय.	,,	द्वितीय श्रेणी	३७९
३४०	८५९७	रामगृही सिंह	कड़सर	तृतीय श्रेणी	३५२
३४१	८५९८	गणेश चौधरी	,,	,,	३५२
३४३	८६००	रामकैलाश सिंह	,,	,,	३५८
३४४	८६०१	नन्दकिशोर सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३८४
३४८	८६०५	प्रभाकर दत्त शुक्ल	कन्नौज	,,	३७८
३५२	८६०८	सागरसिंह	करनौती	,,	३६४
३५३	८६०९	जगदीश नारायण सिंह	,,	,,	३७०
३५६	८६१२	हृदयनारायण मिश्र	कराँची	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
			(मार. विद्या.)		
३५७	८६१३	गौरीशंकर द्विवेदी	,,	,,	
३५८	६७५९	नारायणप्रसाद मुकर्जी	करौली	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
३६०	५००२	लल्ला पांडेय	कलकत्ता	,,	
			(माहेश्वरी)		
३६१	८६१५	आनन्द बिहारीलाल गुप्त	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
३६२	८६१६	रमाकान्त उपाध्याय	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
३६५	८६१७	शिवकुमार राय	कलकत्ता	तृतीय श्रेणी	३३५
			(तुल० सा०)		
३६६	८६१८	धूपनारायण शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३१४
३६७	८६१९	सीताराम केड़िया	,,	,,	३४४
३६९	८६२१	सावित्री बजाज.	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
३७०	८६२२	उमा पोद्दार	,,	,,	,,
३७३	८६२५	रामवृत्त पांडेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
३७४	८६२६	विक्रमादित्य ओझा	कलकत्ता (तुलसी०)	विभा० प्रणाली के अनुसार	
३७५	८६२७	सत्तीप्रसाद यादव	,,	द्वितीय श्रेणी	३१६
३७७	८६२९	कमलाकान्त लाल दास	,,	,,	३६७
३७८	८६३०	कामताप्रसाद वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३१०
३८०	८६३२	सुखराम सिंह	,,	,,	३२४
३८३	८६३५	देवेन्द्रप्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३७४
३८४	८६३६	उमाशंकर मिश्र	,,	,,	४६०
३८६	८६३८	हुकम चन्द महात्मा	,,	,,	३७८
३८९	८६४१	बैकुण्ठनाथ झा	,,	तृतीय श्रेणी	३५१
३९३	८६४५	शरदचन्द्र पाँडेय	,,	,,	३३१
३९५	८६४७	रामचन्द्र राय	,,	,,	३५२
३९८	८६५०	रामदयालु त्रिपाठी	,,	,,	३८०
४००	८६५२	जगदम्बाप्रसाद मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	४२५
४०४	८६५६	राधिका देवी श्रीवास्तव	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
४०७	६७४९	जङ्ग बहादुर सिंह	कसाय	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
४०८	६७५०	ऋषिनन्दन पांडेय	,,	,,	,,
४०९	८६५९	शरीफाराम शास्त्री	,,	द्वितीय श्रेणी	३७६
४१२	८६६२	रमेशचन्द्र पन्त	कानपुर (सना०धर्म)	,,	४३४
४१४	८६६४	आदित्य नारायण मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	४०१
४१५	८६६५	रुद्रप्रताप जैन	,,	,,	३८७
४१६	८६६६	ब्रजबल्लभ शर्मा	,,	,,	४०८
४१८	८६६८	कृपा शङ्कर	,,	तृतीय श्रेणी	३३३
४१९	८६६९	सत्यनारायण जायसवाल	,,	द्वितीय श्रेणी	४२६
४२२	८६७२	करुणामयी	,,	,,	४७८
४२७	८६७७	बैजनाथ चतुर्वेदी	,,	,,	३६४
४२८	८६७८	तेजनारायण शर्मा	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
४२९	८६७९	सूर्यनारायण शर्मा	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
४३२	८६८२	करुणाशंकर गुप्ता	कानपुर (सना० धर्म)	तृतीय श्रेणी	३३७
४३३	८६८३	ईश्वरीप्रसाद मिश्र	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
४३४	८६८४	अनमोलक राम मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी	३५७
४३७	८६८७	रामभरोसे	कानपुर (डी०ए०वी०)	,,	३३०
४३८	८६८८	भगौतीप्रसाद चौधरी	,,	द्वितीय श्रेणी	४४३
४३९	८६८९	लक्ष्मीनारायण बाजपेयी	,,	,,	३९२
४४०	८६९०	रामकृष्ण सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३३४
४४१	८६९१	गयाप्रसाद वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३८६
४४५	८६९५	विष्णु स्वरूप त्रिपाठी	,,	,,	४५८
४४६	८६९६	मदन गोपाल	,,	,,	४०१
४४७	८६९७	छम्मीलाल मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	४२५
४४८	८६९८	रामबहादुर शर्मा	,,	,,	३६८
४५०	८६९९	ओमप्रकाश शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३०७
४५१	८७००	रामसेवक अवस्थी	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	४८०
४५३	८७०२	विश्वनाथप्रसाद शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी	४३६
४५४	८७०३	लक्ष्मणदेव	,,	,,	३७५
४५५	८७०४	चन्द्रकान्त वाजपेयी	,,	तृतीय श्रेणी	३४२
४५६	८७०५	बल्देव सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४०८
४५७	८७०६	ठाकुरदास वैद्य	,,	,,	४५१
४५८	८७०७	द्वारिकाप्रसाद शुक्ल	,,	तृतीय श्रेणी	३५८
४६१	८७१०	कैलाशसिंह कुशवा	,,	,,	३३६
४६२	८७११	श्यामाकान्त वाजपेयी	,,	,,	३५९
४६४	८७१३	छोटेलाल वैश्य	,,	द्वितीय श्रेणी	३६६
४६५	८७१४	रूपनारायण मेहरोत्रा	,,	,,	४४८
४६८	८७१७	प्यारेलाल कटियार	,,	तृतीय श्रेणी	३४१
४७१	८७२०	शिवदत्त त्रिवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी	४३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४७६	८७२५	माधुरीदेवी श्रीवास्तव	कानपुर(डी० ए० वी०)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
४७८	८७२७	रामदुलारे त्रिपाठी	,,	प्रथम श्रेणी ५२३ [वि० यो० संस्कृत]
४८०	८७२६	देवेन्द्रप्रकाश शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी ४२६
४८१	८७३०	रामगोपाल	,,	तृतीय श्रेणी ३१६
४८२	८७३१	राजनारायण पांडेय	,,	,, ३४३
४८३	८७३२	मालतीलता	कान्धला	द्वितीय श्रेणी ४०५
४८४	८७३३	नारायणदत्त मिश्र	कालपी	,, ४१५
४८५	६८४७	डालचंद	,,	विभाजित प्र० के अनुसार
४८६	६८४६	केशवगोपाल लघाटे	,,	,, ,,
४८७	८७३४	रामस्वरूप द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ३८८
४८८	८७३५	मदनगोपाल तिवारी	,,	,, ४१३
४८९	८७३६	शान्तिदेवी	,,	तृतीय श्रेणी ३२२
४९०	८७३७	श्री देवी	,,	द्वितीय श्रेणी ४०१
४९१	८७३८	रामसेवक भट्ट	,,	,, ३६७
४९३	८७४०	प्रभाकर सिंह	कालाकांकर	,, ३८०
४९६	८७४३	सच्चिदानन्द पांडेय	,,	,, ४२८ [वि० यो० संस्कृत]
४९७	८७४४	कुमारी सावित्री	काशी (सेंट्रल हि० स्कूल)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
४९९	८७४६	अलख नारायण सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३१५
५००	८७४७	अयोध्या नाथ पांडेय	,,	,, ३५९
५०२	८७४९	कृष्णा देवी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
५०४	८७५१	शिवनारायण उपाध्याय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५१२	८७५८	चिरौंजीलाल	,,	,, ,,
५१४	८७५९	राममूरत सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३४२
५१५	६९१२	पल्टूराम	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५१६	८७६०	नारायण शर्मा द्रविड़	,,	द्वितीय श्रेणी ४६४ [वि० यो० संस्कृत]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
५१७	८७६१	रामाज्ञा पाठक	काशी (सेंट्रल हि० स्कूल)	द्वितीय श्रेणी	४१९
५१९	६९५६	ता लाल	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
५२२	८७६४	नीलकण्ठ जोशी	"	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
५२४	८७६६	रामचन्द्र शुक्ल	"	द्वितीय श्रेणी	४२२
५२६	८७६८	शारदां मेहता	"	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
५२८	८७७०	परमानन्द मौर्य	"	द्वितीय श्रेणी	४२०
५२९	८७७१	रामद्वार त्रिपाठी "मधुव्रत"	"	"	३७६
५३०	८७७२	दामोदर राय	"	"	३८१
५३१	८७७३	मेवालाल सिंह	"	द्वितीय श्रेणी	३८४
५३५	८७७७	रामप्रवीण राय	"	"	४१०
५३७	८७७९	छबिनाथ सिंह	"	तृतीय श्रेणी	३३१
५४०	८७८२	नन्हकू दुबे	"	द्वितीय श्रेणी	३६६
५४२	८७८४	चन्द्रदीप उपाध्याय	"	"	३६६
५४३	८:८५	पारसनाथ मिश्र	"	"	३६४
५४४	८७८६	ठाकुर प्रसाद सिंह	"	"	४५६
५४५	८७८७	गुलाबचन्द्र जैन चौधुरी	"	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
५४६	८७८८	एम० पी० नमिराज जैन	"	" "	
५४७	८७८९	देवेन्द्र कुमार	"	द्वितीय श्रेणी	४१५
५४८	८७९०	रतन कुमार जैन	"	"	४२४
५४९	८७९१	प्रेमसागर जैन	"	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	४४१
५५२	८७९३	मोहनराम यादव	"	द्वितीय श्रेणी	४०९
५५३	८७९४	सकलनारायण सिंह	"	तृतीय श्रेणी	३५८
५५४	८७९५	कुमारी शक्ति बजाज	"	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
५५६	८७९७	ब्रजरानी	"	तृतीय श्रेणी	३५१
५५७	८७९८	त्रिलोकीनाथ जैतली	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
५५८	८७९९	शालिकराम सिंह	"	तृतीय श्रेणी	३२३
५६१	८८०२	छोटेलाल औदिच्य	"	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
५६२	८८०३	कुसुम भटनागर	काशी (सेंट्रल हि० स्कूल)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
५६४	८८०५	दिग्विजय नारायण मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	४२६
५६५	८८०६	कालिका पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी	४२०
५७०	८८११	सूरजप्रसाद गोस्वामी	,,	तृतीय श्रेणी	३५०
५७१	८८१२	रामचन्द्र उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी	३८२
५७२	८८१३	उमादत्त त्रिपाठी	,,	,,	३६१
५७५	८८१६	देवचरन शर्मा	,,	,,	४०१
५७७	८८१८	रामबली चतुर्वेदी	,,	तृतीय श्रेणी	३५१
५७८	८८१९	कलावती देवी द्विवेदी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
५७९	८८२०	अम्बिकेश त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी	३६१
५८०	८८२१	गोवर्धन शर्मा	,,	,,	३६८
५८१	८८२२	ठाकुर शुक्ल	,,	तृतीय श्रेणी	३३१
५८२	८८२३	हरिश्चन्द्र राय	,,	द्वितीय श्रेणी	४०६
५८३	८८२४	रामराज पांडेय	,,	,,	३८२
५८५	८८२६	कु० कमलादेवी तिवारी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
५८७	८८२८	कुमारी सुमति सरमोकद्दम	,,	,, ,,	
५८८	८८२९	सूर्यमुखी मिश्र	,,	,, ,,	
५८९	८८३०	भरत मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	४३४
५९०	८८३१	विश्वम्भर चौबे	,,	,,	३६८
५९२	८८३३	रामदास सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३५२
५९६	८८३५	रामसुन्दरलाल श्रीवास्तव	,,	द्वितीय श्रेणी	३६५
५९७	८८३६	हरिशंकर पांडेय	,,	,,	३६४
५९८	८८३७	श्रीकान्त सिंह	,,	,,	३८२
६००	८८३९	राजनारायण उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी	३६३
६०१	८८४०	राधेश्याम सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३११
६०२	८८४१	दामोदरदास खंडेलवाल	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
६०३	८८४२	रामप्रसाद अग्रवाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
६०४	८८४३	चन्द्रबदन पांडेय	काशी (सेंट्रल हि० स्कूल)	द्वितीय श्रेणी	३६२
६०७	८८४६	बालकृष्ण त्रिपाठी	,,	,,	४५६ [वि० यो० संस्कृत]
६१०	८८४९	शम्भूनारायण शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४०५
६११	८८५०	हरिशंकर पांडेय	,,	,,	४२०
६१३	८८५२	हर्षदेव राय	,,	तृतीय श्रेणी	३२७
६१५	८८५४	बदरीप्रसाद यादव	,,	द्वितीय श्रेणी	४१५
६१६	८८५५	विश्वनाथ त्रिपाठी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
६१९	८८५८	शिवप्रसाद जोशी	,,	तृतीय श्रेणी	३२५
६२०	८८५९	सुरेन्द्रलाल	,,	द्वितीय श्रेणी	४०३
६२३	८८६२	रमाशंकर पांडेय	काशी (ओरि०)	,,	४०३
६२५	८८६४	गंगा सहाय पांडेय	,,	,,	३७६
६३१	८८७०	भगवान उपाध्याय	,,	तृतीय श्रेणी	३१२
६३४	८८७३	राजनारायण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३८८
६३५	८८७४	मदनमोहन शर्मा 'शास्त्री'	,,	,,	४२७
६४०	८८७९	सूर्यप्रसाद उपाध्याय	,,	,,	३८३
६४२	८८८१	गणपतिप्रसाद पांडेय	,,	तृतीय श्रेणी	३४७
६४४	८८८३	शिवकुमार शुक्ल	,	द्वितीय श्रेणी	४२८
६४५	८८८४	आनन्द बल्लभ लोहानी	,,	,,	३६०
६४७	८८८६	जगदीशनारायण पांडे	,,	द्वितीय श्रेणी	३७४
६४८	८८८७	केदारनाथ चौधरी	,,	,,	३८७
६५६	८८९५	देवानन्द शुक्ल	,,	,,	३७६
६५७	८८९६	बलदेवप्रसाद दत्त	,,	तृतीय श्रेणी	३४६
६६०	८८९९	मुरारी शुक्ल	काशी (उदय प्र०)	द्वितीय श्रेणी	३६०
६६१	८९००	सूर्यप्रसाद मिश्र	,,	,,	३६०
६६३	८९०२	गोविन्द चन्द्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
६६५	८६०४	हीराराम	काशी (उदय प्र०)	तृतीय श्रेणी	३३१
६६७	८६०६	रामदेव दुबे	,,	द्वितीय श्रेणी	३७७
६६८	८९०७	अयोध्यानाथ त्रिपाठी	,,	,,	३७८
६७१	८६१०	शारदाप्रसाद मिश्र	,,	,,	३९१
६७२	८६११	श्याम बिहारीसिंह	,,	,,	४००
६७३	८६१२	कु० राजेश्वरी सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३४१
६७४	८६१३	शिवसागर सिंह	,,	,,	३५५
६९०	८६२६	रामप्रसाद पांडेय	कोआथ	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
६९१	८६२७	रामइकबाल पांडेय	,,	प्रथम श्रेणी	४८१
६९२	८६२८	शिवधारी मिश्र	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
६९४	८६२९	दामोदरदास	कोटा (भा० स०)	द्वितीय श्रेणी	३९०
६९६	८६३१	ब्रजवल्लभ	,,	,,	३९९
७००	८६३५	चन्द्रमोहन शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
७०१	८६३६	सियाराम सक्सेना	,,	द्वितीय श्रेणी	४७६
७०२	८९३७	केशरीचन्द जैन	,,	तृतीय श्रेणी	३५०
७०३	८६३८	गजानंद शर्मा	,,	,,	३१४
७०४	८९३९	पूनमचंद जैन	,,	,,	३३१
७०६	८६४१	हरिश्चन्द्र गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी	३९१
७०७	८६४२	महाबीरप्रसाद शर्मा	,,	,,	४१०
७१०	८९४५	प्रकाशचन्द्र सक्सेना	,,	द्वितीय श्रेणी	३८२
७११	८९४६	रामचन्द्र "मधुवन"	,,	तृतीय श्रेणी	३५३
७१२	८६४७	ईदू खां उर्फ उल्ताफ हुसैन	,,	द्वितीय श्रेणी	३९७
७१८	८६५२	देवी चरण	,,	तृतीय श्रेणी	३५५
७२१	८६५५	श्याम किशोर मिश्र	कोंच	,,	३४७
७२३	८६५७	रामसेवक अग्रवाल	,,	,,	३१७
७२५	८६५९	जगदीशप्रसाद सिंह	खगौल	,,	३५४
७२६	७०२५	सन्तप्रसाद शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७३७	५२४८	बाबूलाल चन्द्रे	खंडवा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७३८	५२४९	शुभलाल मिश्र	,,	,, ,,
७४५	८९७२	हेमचंद्र चतुर्वेदी	खुर्जा	द्वितीय श्रेणी ४५२
७४८	८९७५	शान्ती स्वरूप	,,	,, ३९४
७४९	८९७६	खानचन्द्र सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३५६
७५०	८९७७	कंचन सिंह शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३८४
७५३	८९८०	अर्जुनलाल गुप्त	गढ़वनैली	तृतीय श्रेणी ३५३
७५५	८९८१	हृदयनारायण पांडेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७५६	७०६३	कदम्बलाल मेहता	,,	,, ,,
७५७	७०६४	बङ्गालीसिंह	,,	,, ,,
७५८	८९८२	लाला जगदीशलाल	गनपतगंज	,, ,,
७६१	७०७०	उदयनंदन प्रसाद	गया	,, ,,
७६३	७०६९	रामस्वरूप सिंह "वीर"	,,	,, ,,
७६४	८९८५	रामशरणसिंह वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३५४
७६६	८९८७	प्रदीपनारायण	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
७६९	८९९०	कैलाशप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३५५
७७२	८९९३	औंकारप्रसाद श्रीवास्तव	गाड़रवारा	द्वितीय श्रेणी ३८५
७७४	८९९४	भगवतीप्रसाद द्विवेदी	,,	,, ३९९
७७६	८९९६	विश्वनाथप्रसाद श्रीवास्तवा	गोरखपुर (बा०इं० का०)	,, ४५६
७७८	८९९८	राममूर्ति ओझा	,,	द्वितीय श्रेणी ३७३
७८१	९००१	नरेन्द्रकुमार श्रीवास्तव	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
७८४	९००४	हरीराम कमानी	,,	द्वितीय श्रेणी ४१९
७८५	५५२५	नर्मदेश्वरप्रसाद मिश्र	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७८६	९००५	द्रौपदी देवी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
७८८	९००७	शिवप्रताप नारायण राव	,,	तृतीय श्रेणी ३२७
७८९	९००८	कु० सरयूप्यारी वर्मा	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
७९०	९००९	सीतादेवी	गोरियाकोठी	द्वितीय श्रेणी ४०७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
७९२	९०११	शिवगोविन्द सिंह	गोरियाकोठी	तृतीय श्रेणी	३१
७९६	९०१५	मंगलदयालसिंह	,,	,,	३५
७९९	९०१८	जगदीश नारायण	,,	द्वितीय श्रेणी	३८
८००	९०१९	नित्यानन्द शर्मा	,,	,,	४१
८०१	९०२०	गगनदेव नारायणसिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३१
८०३	९०२२	मुसाफिरप्रसाद शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३८
८०८	९०२७	रामरत्न मिश्र	गोलभूरी	,,	३७
८०९	९०२८	रामाधीन मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी	३५
८१०	९०२९	अ० सत्यनारायण	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
८१२	९०३१	परमात्मा मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३७
८१३	९०३२	पद्माकर मिश्र	,,	,,	४५
८१४	९०३३	रामयशसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४४
८१५	९०३४	कल्पू पाठक	,,	,,	३६
८१८	९०३६	श्रीनाथ दूबे	,,	तृतीय श्रेणी	३२
८१९	९०३७	श्यामसुन्दर प्रसाद	,,	,,	३१
८२०	९०३८	मा० राधाकृष्ण वर्मा शास्त्री	गौहाटी	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
८२१	७०९६	देवेन्द्रदत्त शर्मा	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
८२२	९०३९	छगनलाल जैन	,,	द्वितीय श्रेणी	४७
८२४	९०४१	रमापति तिवारी	चिड़ावा	विभाजित प्र० के अनुसार	
८३०	९०४७	महावीरप्रसाद शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३८
८३१	९०४८	भगवद्दास दुजारी	चुरू	प्रथम श्रेणी	५४
८३२	९०४९	गौरीशंकर काबरा	,,	,,	५१
८३३	९०५०	पुरुषोत्तमदास गोयन्का	,,	द्वितीय श्रेणी	४६
८३४	९०५१	देवकीनन्दन गोयन्का	,,	,,	४४
८३५	९०५२	गोविन्दराम सर्राफ	,,	,,	४५
८३६	९०५३	रामकुमार शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४२
८३९	९०५५	निरञ्जन शर्मा	,,	प्रथम श्रेणी	४९
८४१	९०५७	बद्रीनारायण शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३५
८४२	९०५८	रामकरण बरवा	,,	द्वितीय श्रेणी	४५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
८४३	९०५९	कृष्णदेव प्रसाद	छपरा (राज० हा०)	तृतीय श्रेणी	३१४
८४४	९०६०	सत्यनारायण प्रसाद	,,	,	३४३
८४६	९०६२	अम्बिकाप्रसाद शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३६५
८४८	९०६४	अम्बिकाप्रसाद गिरि	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
८५०	९०६६	हरिशंकर उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी	४३८
८५१	९०६७	रामरेखा सिंह	,,	,,	४३८
८५३	९०६९	वासुदेव प्रसाद खरे	छतरपुर	,,	३६०
८५४	९०७०	कामताप्रसाद श्रीवास्तव	,,	,,	३६४
८५६	९०७२	शिवदत्त शर्मा सुरेन्द्र	छपरा (लो० मा०समिति)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
८५७	९०७३	सुषमामयी शर्मा	,,	,,	,,
८५८	९०७४	गुह्येश्वरीप्रसाद सिंह	,,	,,	,,
८५९	९०७५	रामनन्दन शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३४०
८६०	९०७६	सच्चिदानन्द गुप्त	,,	,,	३२४
८६४	९०७९	राजेन्द्रसिंह सीसौदिया	छिन्दवाड़ा	द्वितीय श्रेणी	४००
८६७	९०८२	क़ेशवराव	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
८६९	९०८४	कु० शान्ति वर्मा	,,	,,	,,
८७२	९०८७	विश्वनाथ झा	जन्दाहा	प्रथम श्रेणी	५०८
८७३	९०८८	जनार्दन झा काव्यतीर्थ	,,	प्रथम श्रेणी	४८०
८७४	९०८९	गोपीचद झा	,,	,,	५०२
८७६	९०९१	चन्द्रिकाप्रसाद गर्ग	जबलपुर (हित० हाई स्कूल)	द्वितीय श्रेणी	३९७
८७७	९०९२	धर्मनारायण वर्मा	,,	,,	३७९
८७८	९०९३	नत्थूलाल वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३५८
८७९	९०९४	मूंगाराम त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी	४७१
८८०	९०९५	मात्राप्रसाद शुक्ल	,,	,,	३८९
८८१	९०९६	शिवबालक प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी	३३७
८८२	९०९७	प्रेमचन्द गांधी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८८४	७१२४	चन्द्रिकाप्रसाद दुबे	जबलपुर (हित० हाई स्कूल)	तृतीय श्रेणी ३३
८८५	६०९९	हजारीलाल सिहारे	,,	द्वितीय श्रेणी ४३
८८९	६१०३	बसंतकुमार नौखंडेवाला	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसा
८९१	६१०५	शोभाराम गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी ३४
८९२	६१०६	महेशप्रसाद गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी ४३
८९३	६१०७	गुलाबराय नायक	,,	,, ४०
८९५	६१०९	भोलाराम	,,	,, ४४
९००	६११४	कृष्णदत्त शास्त्री	जयपुर	अ० ३ नि० ७ के अनुसा
९०१	६११५	गंगाधर द्रविड़	,,	द्वितीय श्रेणी ४३
९०२	६११६	गुलाबचन्द्र शर्मा "सुमन"	,,	,, ४०
९०३	६११७	दामोदर शर्मा "प्रचण्ड"	,,	,, ४१
९०८	६१२१	राजेन्द्र रामदास	जमुई	तृतीय श्रेणी ३१
९१३	६१२६	द्वारकाप्रसाद गुप्ता	जावद	,, ३१
९१८	६१३१	ब्र० गौरीशंकर	ज्वालापुर	द्वितीय श्रेणी ४७
९१९	६१३२	विश्वनाथ पांडे	जैतपुर	,, ४१
९२०	६१३३	रघुनाथ मिश्र	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसा
९२१	६७२५	विश्वकर्मा शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसा
९२२	६१३४	नथुनीप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ४४
९२३	६१३५	रामयत्न सिंह	,,	,, ३९
९२५	६१३७	विश्वनाथ त्रिपाठी	,,	,, ४५
९२८	६१३९	पारसमल जी मुथा	जोधपुर	,, ४०
९३०	६१४१	सुख सम्पतराज मेहता	,,	तृतीय श्रेणी ३१
९३१	६१४२	प्रकाशलाल वाफ़ना	,,	द्वितीय श्रेणी ३७
९३२	६१४३	मोहनलाल सांखला	,,	तृतीय श्रेणी ३५
९३३	६१४४	कु० त्रिवेदी तेजराज शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३१
९३४	६१४५	केवलचन्द रावल	,,	,, ३१
९३६	६१४७	बाबूलाल श्रीमाली	,,	,, ४०
९३९	६१५०	सूर्य्यदेव सिंह	जौनपुर	,, ३७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
६४०	६१५१	श्रीराम पाठक	जौनपुर	प्रथम श्रेणी	५२१
६४१	६१५२	चन्द्रबली मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३६६
६४२	५३६३	यदुनाथ सिंह	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
६४४	५३५५	बनवारीराम	,,	,,	
६४५	५३५७	रामधनी उपाध्याय	,,	,,	
६४७	६१५५	सरयूप्रसाद	झरिया (डी०ए०वी०हाई स्कूल)	द्वितीय श्रेणी	३९०
६४६	६१५७	बल्लभ	झालरापाटन	तृतीय श्रेणी	३२८
६५०	६१५८	हुकुमचन्द बुखारिया	झाँसी	द्वितीय श्रेणी	४३१
६५१	६१५६	किशोरीलाल	,,	,,	३८३
६५२	६१६०	कृष्णकुमारी अरोरा	,,	तृतीय श्रेणी	३५५
६५३	५३७३	किशोरी शरण	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
९५६	६१६५	देवीसहाय सक्सेना आर्य	,,	,,	
६६०	६१६६	मिस माण्डवीदेवी सक्सेना	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
६६५	६१६६	उमाशंकर द्विवेदी	,,	प्रथम श्रेणी	५०२
६६६	६१७०	श्यामसुन्दरदास 'श्याम'	,,	द्वितीय श्रेणी	४२१
६६७	६१७१	बनवारीलाल गाडिया	झुंझनू	,,	३९५
६६८	६१७२	कमलचन्द सिंघानिया	,,	,,	३९१
६६६	६१७३	सत्यनारायण पाठक	,,	,,	४०६
६७०	६१७४	विश्वनाथ गाडिया	,,	तृतीय श्रेणी	३४८
६७५	६१७६	बाबूराम राय	टाण्डा (होवर्ट हाई स्कूल)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
६७७	६१८१	शिवमूर्ति त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी	४०७
६७६	६१८३	भगवानदास श्रीवास्तव	टीकमगढ़	तृतीय श्रेणी	३३६
६६०	७२००	रामप्रसाद सिंह	डुमरी	विभाजित प्र० के अनुसार	
६६२	६१६३	मिट्ठू विश्वकर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३१०
६६३	६१६४	नंदकुमार मिश्र	,,	,,	३५२
६६७	७१६७	जगदीशप्रसाद सिंह	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
६६८	६१६७	कैलाश चौधरी	,,	,,	

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६६६	६१९८	घनानंद	ताकुला (गणनाथ विद्यापीठ)	अ० ३ नि० ७ के अनुसा[र]
१००२	६२०१	मथुरादत्त उपाध्याय	,,	तृतीय श्रेणी ३३
१००५	६२०४	घनानन्द पाण्डेय	ताड़ी खेत (अल्मोड़ा)	,, ३४
१००६	६२०८	देवीदत्त तिवारी	,,	,, ३३
१०१०	६२०६	द्वारिकाप्रसाद जोशी	,,	द्वितीय श्रेणी ३५
१०१२	६२११	मथुरादत्त उपाध्याय	,,	तृतीय श्रेणी ३४
१०१४	६२१३	हीरावल्लभ उपाध्याय	,,	,, ३५
१०१५	६२१४	रामलाल वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४०
१०१८	६२१७	देववंश सहायलाल	तिलोथू	त्रिभाजित प्रणाली के अनुस[ार]
१०१६	६२१८	सत्य नारायण लाल	,,	द्वितीय श्रेणी ४२
१०२०	६२१६	सरलादेवी श्रीवास्तव	दतिया	अ० ३ नि० ७ के अनुसा[र]
१०२२	६२२१	रामनारायण लाल मुड़िया	,,	द्वितीय श्रेणी ३८
१०२३	६२२२	रघुवीर शरण सक्सेना	,,	,, ४३
१०२४	६२२३	रामसिंह यादव	,,	तृतीय श्रेणी ३५
१०२६	६२२५	कमलेशकुमार अग्रवाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३६
१०२७	६२२६	रामभरोसे पाठक	,,	,, ४१
१०३०	६२२६	विजय सिंह	दवोह	,, ३६
१०३३	६२३२	लक्ष्मी नारायण चौधरी	दलसिंहसराय	प्रथम श्रेणी ४६
१०३५	६२३४	केशो साहु	,,	द्वितीय श्रेणी ४३
१०३६	६२३५	मुक्तेश्वर पाण्डेय	दार्जिलिंग	,, ३७
१०३७	६२३६	हरिनन्दन प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी ३०
१०३६	६२३८	सुरेन्द्रनाथ मिश्र	दिघवारा	,, ३५
१०४०	६२३६	रत्नचन्द्र अग्निहोत्री	दिल्ली	द्वितीय श्रेणी ४२
१०४२	६२४१	सत्यवती भार्गव	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसा[र]
१०४६	६२४४	आनन्द स्वरूप शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३२
१०४७	६२४५	बनवारीलाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१०५०	६२४७	कुमारी हीराबाई आर्य	दुर्ग(सी०पी०)	द्वितीय श्रेणी	३६१
१०५१	६२४८	लालाराम	,,	,,	३७३
१०५२	६२४९	नागेन्द्र प्रसाद सिंह	देव	तृतीय श्रेणी	३१९
१०५३	६२५०	रंगलाल सिंह	देवरिया	,,	३१६
१०६०	६२५७	विश्वनाथ मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	४१०
१०६२	६२५९	पवहारीशरण द्विवेदी	,,	,,	३७६
१०६८	६२६५	खण्डेराव जोशी	देवास सीनियर	प्रथम श्रेणी	४९८
१०७०	६२६७	शशिनाथ मिश्र	देसरी (मुजफ्फरपुर)	,, [वि० यो० धर्म०, संस्कृत]	५०६
१०७१	६२६८	सूर्यदेव नारायण सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३५८
१०७२	६२६९	शिवचन्द्र जायसवाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३७५
१०७३	६२७०	धनीराम शर्मा	देहरादून (डी. ए.वी.कालेज)	प्रथम श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	५०१
१०७४	६२७१	भारत सिंह	,,	प्रथम श्रेणी	४८५
१०७५	६२७२	कुंवर रणसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४३८
१०७७	७२५२	नागेन्द्रदत्त सकलानी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१०७८	३९४५	जगमोहनलाल शर्मा	,,	,, ,	
१०७९	६२७४	कृपालसिंह रावत	,,	द्वितीय श्रेणी	३६३
१०८०	६२७५	सत्यप्रकाश गोयल	,,	,,	३६६
१०८१	६२७६	नवीनचन्द्र पन्त	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१०८४	७६०१	उदयभानु सिंह	धमदाहा	,, ,,	
१०८५	७६०२	उमाकान्त राय	,,	,, ,,	
१०८७	५७६३	रामचन्द्र मिश्र	,,	,, ,,	
१०८९	६२८१	कपिलदेव शर्मा	धमौरा	द्वितीय श्रेणी	४४४
१०९०	६२८२	राधाकान्त पाण्डेय	,,	तृतीय श्रेणी	३५९
१०९१	६२८३	रामावतार शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी	३६६
१०९५	६२८७	रामकृष्ण मिश्र	धूसी	,,	४०२
१०९६	६२८८	जगदीश नारायण पाण्डेय	,,	,,	३९०
१०९७	६२८९	कपिलदेव त्रिपाठी	,,	,,	३८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
११००	६२६२	एन० अच्युतन एघुत्तच्छन	धूस्री	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
११०१	६२६३	लक्ष्मी नारायण शुक्ल	धौलपुर	द्वितीय श्रेणी	३८७
११०७	६२९९	अम्बिका मिश्र	नवादा	तृतीय श्रेणी	३४८
११०८	६३००	मथुरा मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३७४
११०९	६३०१	रामलक्ष्मण उपाध्याय	नवादा	द्वितीय श्रेणी	४०९
१११४	६३०६	ओंम्प्रकाश अग्रवाल	नजीबाबाद	तृतीय श्रेणी	३३९
१११८	६३१०	सुरेशदत्त पाठक	नानपारा	,,	३२६
११२०	६३१२	रघुराज पाण्डेय	नवाबगंज	,,	३४८
११२१	६३१३	कारूगोप	नयागाँव	द्वितीय श्रेणी	३७८
११२२	६३१४	शुकदेवराय	,,	तृतीय श्रेणी	३४९
११२३	६३१५	ब्रह्मदेवप्रसाद देव	,,	,,	३१०
११२८	६३१९	झपटलाल झा	नालन्दा	द्वितीय श्रेणी	३७२
११३०	७२६२	शिवप्रसाद लोहानी	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
११३३	६३२२	वृन्दावनविहारी अग्निहोत्री	नागपुर (हि. भा. सं. हा. स्कूल)	प्रथम श्रेणी	५२०
११३४	६३२३	हरिहरप्रसाद शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी	३३९
११३५	५४७४	अच्छेलाल दीक्षित	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
११३६	६३२४	प्रभाकर राव	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
११३९	६३२७	घनश्यामप्रसाद पालीवाल	नाथद्वारा	द्वितीय श्रेणी	४२८
११४०	६३२८	नरेन्द्रकुमार	,,	,,	३८४
११४१	६३२९	सोहनलाल पाराशर	,,	,,	३८६
११४२	६३३०	गणेशलाल	,,	,,	४३८
११४५	६३३३	सरयूप्रसाद नामदेव	नागौद	तृतीय श्रेणी	३५७
११४७	६३३५	शंकर दिनकर डोंगरे	नासिक	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
११५६	६३४४	लाला अयोध्याप्रसाद सिन्हा	निरंजनपुर	द्वितीय श्रेणी	४३३
११५७	६३४५	शिवनन्दनसिंह	,,	,,	४६३
११५८	६३४६	उपेन्द्रदेव नारायण सिंह	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
११५९	६३४७	सुरेशनारायण सिन्हा	निरंजनपुर	द्वितीय श्रेणी	४६०
११६२	६३५०	सच्चिदानन्द वर्मा	,,	,,	४२९
११६३	६३५१	रामाधार उपाध्याय	,,	तृतीय श्रेणी	३३७
११६६	६३५४	जयकुमार शर्मा	पचम्बा	प्रथम श्रेणी [वि० यो० धर्म]	५००
११७०	५५०७	लक्ष्मणराम	पटना	विभाजित प्र० के अनुसार	
११७१	६३५५	कु० महादेवी शर्मा	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
११७२	६३५६	योगीन्द्रपति त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी	४३३
११७४	६३५८	शुकदेव दुबे	,,	,,	४००
११७७	६३५९	रामकृष्णप्रसाद सिंह	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
११७८	४९२७	प्रसिद्धनारायण शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
११८१	६३६१	लाला पंचवदनलाल "व्यथित"	,,	तृतीय श्रेणी	३५३
११८२	६३६२	रामपरीक्षा सिंह	पड़रौना	,,	३४४
११८३	६३६३	विश्वनाथ सिंह	,,	,,	३२७
११८८	६३६८	वासुदेव त्रिपाठी	,,	,,	३५९
११८९	६३६९	ब्रजनारायणराय	,,	,,	३१९
११९२	६३७१	गौरीशंकर गुप्त	पन्ना स्टेट	विभाजित प्रणालीके अनुसार	
११९३	६३७२	रामनाथ लटौरिया	,,	तृतीय श्रेणी	३१४
११९५	६३७४	प्रभावती देवी	प्रयाग (सम्मेलन)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
११९७	६३७६	शिवनायकसिंह "नायक"	,,	द्वितीय श्रेणी	४४२
११९९	६३७८	कमला वर्मा	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१२००	६३७९	रामपलट राय	,,	द्वितीय श्रेणी	४२१
१२०१	६३८०	इन्द्रप्रताप सिंह	,,	,,	४७७
१२०२	६३८१	रामजीलाल "सहायक"	,,	तृतीय श्रेणी	३५७
१२०३	६३८२	लक्ष्मीकांत मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३७७
१२०६	६३८५	कमलादेवी शुक्ला	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१२०७	६३८६	विश्वम्भरनाथ भट्ट	,,	द्वितीय श्रेणी	३७७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१२०८	६३८७	तुलाराम मिश्र	प्रयाग (सम्मेलन)	द्वितीय श्रेणी	३८९
१२०९	६३८८	अवधनारायण पांडेय	,,	,,	४३१
१२११	७३९३	प्रेमचन्द गुप्त	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१२१६	६३९३	राममगन राम	,,	तृतीय श्रेणी	३३४
१२१७	६३९४	रामराज त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी	४४८
१२१८	६३९५	शिवदत्त पांडेय शास्त्री	,,	प्रथम श्रेणी	५०८
१२१९	६३९६	उदयप्रताप सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४३३
१२२०	६३९७	रूपनारायण अवस्थी	,,	,,	३८४
१२२४	६४०१	परमानन्द मिश्र	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१२२५	६४०२	आदित्यनारायण उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी	४१८
१२२६	६४०३	शिवनाथ प्रसाद	,,	,,	४४६
१२२७	६४०४	महाराज किशोर शुक्ल	,,	,,	३६१
१२३१	६४०८	कामतासिंह	,,	,,	४०६
१२३३	६४१०	सावित्री देवी गुप्ता	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१२३६	६४१३	विश्वनाथ टण्डन	,,	द्वितीय श्रेणी	३७३
१२३८	६४१५	मातावदल	,,	,,	३७७
१२३९	६४१६	रामसेवक	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१२४०	६४१७	कोमलप्रसाद जैन	,,	,,	
१२४२	६४१९	मुरलीधर पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी	४३२
१२४३	६४२०	शिवप्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी	३२०
१२४४	६४२१	सत्यप्रसाद श्रीवास्तव	,,	,,	३५८
१२४७	६४२४	श्यामाचरण दूबे	,,	प्रथम श्रेणी	४९८
१२४८	६४२५	लक्ष्मीनारायण वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३९७
१२५०	६४२७	मधुमालती अग्रवाल	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१२५१	६४२८	व्रजमोहन मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी	३२१
१२५४	६४३०	पन्नालाल गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी	४६५
१२५६	६४३२	शिवचरनलाल गुप्त	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१२५९	६४३५	रामकिशोर त्रिपाठी	,,	तृतीय श्रेणी	३२७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१२६०	६४३६	कृष्णानन्द सिंह	प्रयाग (सम्मेलन)	द्वितीय श्रेणी	४२०
१२६१	६४३७	महानारायण त्रिपाठी	,,	,,	४५३
१२६३	६४३९	गंगाप्रसाद द्विवेदी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१२६४	६४४०	गोपालदत्त पाठक	,,	द्वितीय श्रेणी	४३६ [वि० यो० संस्कृत]
१२६५	६४४१	बालाजी राव जोशी	,,	द्वितीय श्रेणी	४५०
१२६७	६४४३	मथुरामणि त्रिपाठी	,,	,,	४५८
१२७१	६४४७	शिवशंकर सिन्हा	,,	तृतीय श्रेणी	३५६
१२७२	६४४८	गोपालजी लाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३६३
१२७३	६४४९	भोलानाथ तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी	३६८
१२७४	६४५०	श्रोत्रिय सुबोध शंकर	,,	,,	४५१
१२७७	६४५३	चन्द्रशेखर जोशी	,,	,,	४५९
१२८०	६४५६	छोटू नारायण सिंह	प्रयाग (हि० वि० पीठ)	,,	३६६
१२८३	६४५९	के० सत्यनारायण	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१२८४	७४६०	वे०रामकोटेश्वरराव 'करुण'	,,	,,	,,
१२८६	६४६२	चन्द्रशेखर सिंह मनिपुरी	,,	,,	,,
१२८७	६४६३	बी० कृष्णन नंपियार	,,	,,	,,
१२८९	६४६५	ज्वालाप्रसादसिंह 'प्रभाकर'	,,	तृतीय श्रेणी	३२१
१२९०	६४६६	रघुवंशमणि 'सुधाकर'	,,	,,	३०३
१२९१	६४६७	केदारनाथ पाण्डेय	,,	,,	३३१
१२९३	६४६८	वेङ्कट रामय्या	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१२९४	६४६९	अलपर्ति नागेश्वराव 'क्रान्ति कुमार'	,,	,,	,,
१२९५	६४७०	कड़ेदीन वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३१४
१३०३	६४७७	शेषनाथसिंह 'शेष'	प्रसण्डो	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१३०४	७४३९	श्रवणकुमार यादव	,,	,,	,,
१३०६	६४७८	राजदेवप्रसाद सिंह	परसागढ़	द्वितीय श्रेणी	३६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१३०७	६४८०	देवराज सिन्हा	पाढ़म	द्वितीय श्रेणी	३७८
१३०८	६४८१	बाबूराम शर्मा	,,	,,	३९९
१३०९	६४८२	भगवान दास	,,	,,	३८१
१३१०	६४८३	कृष्ण मुरारीलाल कुलश्रेष्ठ	,,	,,	३७७
१३१५	६४८८	हरिशंकर शर्मा	पिलानी	,,	४४१
१३१६	६४८९	मदनमोहन द्विवेदी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१३१८	६४९१	रविदत्त शर्मा 'दिनेश'	,,	,,	,,
१३१९	६४९२	रामचन्द्र त्रिवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी	३७६
१३२१	६४९४	कमलाकान्त पाटनी	पीलीभीत	तृतीय श्रेणी	३५१
१३२२	६४९५	जयदेवप्रसाद गंगवारी	,,	,,	३३१
१३२५	६४९८	सुरेशचन्द्र मिश्र	,,	,,	३५०
१३२७	६५००	रामविलास चौधरी	पुपरी	द्वितीय श्रेणी	३८१
१३२८	६५०१	राजेन्द्र ठाकुर	,,	,,	४२१
१३२९	६५०२	हरिनाथप्रसाद वर्मा	,,	,,	४३०
१३३२	७४६७	विन्ध्येश्वरीप्रसाद वर्मा	,,	वि० प्र० के अनुसार	
१३३३	६५०५	जयलाल महतो	,,	तृतीय श्रेणी	३३१
१३३४	६५०६	कैलाश चौधरी	,,	द्वितीय श्रेणी	४२१
१३३५	६५०७	रामचन्द्र झा	,,	,,	४१०
१३३६	६५०८	शंकरकेशव आड़कर	पूना	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१३३८	६५१०	मल्हारराव नामदेव झोल	,,	,,	,,
१३३९	६५११	श्रीकृष्ण वाहेती	,,	तृतीय श्रेणी	३३२
१३४०	६५१२	वसन्त अनन्त गट्रे	पूना	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१३४४	६५१६	विट्ठल बाजीराव देश मुख	,,	,,	,,
१३४५	६५१७	विनायक दत्तात्रय प्रभुणे	,,	,,	,,
१३४६	६५१८	सीताराम गणेश दुबे	,,	,,	,,
१३४८	६५२०	निर्मला मनोहर शूमेदार	,,	,,	,,
१३५०	६५२२	मालती बाई परदेशी	,,	,,	,,
१३५१	६५२३	चम्पाबाई परदेशी	,,	,,	,,
१३५२	६५२४	इन्दिरा बाई जोशी	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१३५३	६५२५	मालचन्द्र मोरेश्वर भट्ट	पूना	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१३५५	६५२७	रामचन्द्र वामन चिटणीस	,,	,,	,,
१३५६	६५२८	विट्ठल शर्मा उद्धव मुश्रिफ	,,	,,	,,
१३५७	५५२६	नरहरि चिंतामणि जोगलेकर	,,	,,	,,
१३६०	७४६२	आनन्द प्रसाद सिंह	पोठिया	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१३६८	६५३६	राधा वल्लभ भार्गव	पोहरी (आ० वि०)	तृतीय श्रेणी	३१८
१३७२	५७२२	अक्षयकुमार भारद्वाज	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१३७६	६५४४	बाबूराम दीक्षित	,,	द्वितीय श्रेणी	३७४
१३७६	६५४७	रामदास त्रिपाठी	फखरपुर	अ०३ नि०७ के अनुसार	
१३८१	६५४८	रामनन्दन सिंह यादव "नंदन"	फतुहा (डी ए. वी.)	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१३६०	६५५६	सत्यदेव गंगवार	फर्रुखाबाद	तृतीय श्रेणी	३४२
१३६१	६५५७	रायबहादुर "अभय" शर्मा	,,	,,	३५६
१३६२	६५५८	रावस्वरूप कटियार	,,	,,	३०२
१३६६	६५६१	रामभजन लाल अग्निहोत्री	,,	द्वितीय श्रेणी	३७८
१४०१	७५३२	कृष्णसिंह जोशी	फिरोजाबाद	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१४०२	६५६६	रामवर्ण शर्मा	फैजाबाद	द्वितीय श्रेणी	३८६
१४०४	६५६८	रामेश्वरी देवी सिन्हा	,,	अ०३ नि०७ के अनुसार	
१४०५	६५६६	रामकुमारी गुप्ता	,,	द्वितीय श्रेणी	३६०
१४०७	७५३६	ऋषि मित्र शास्त्री	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१४०८	६५७१	श्याम सुन्दर	,,	तृतीय श्रेणी	३२६
१४१०	६५७३	रामप्रसाद त्रिपाठी	,,	तृतीय श्रेणी	३३६
१४११	६५७४	शिवकुमार पांडेय	,,	,,	३४०
१४१७	६५८०	श्यामस्वरूप शर्मा	बगड़	,,	३५५
१४१८	६५८१	केसर देवराय	,,	द्वितीय श्रेणी	४२१
१४२१	६५८३	रामचन्द्र सोनी	बड़नगर	,,	४१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४२४	६५८६	शान्तीलाल वर्मा	बड़ौदा	अ०३ नि०७ के अनुसार
१४२५	६५८७	सोमा भाई	,,	,, ,,
१४३२	६५९४	लक्ष्मी सक्सेना	बदायूँ (पा० आर्य०कन्या०)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
१४३६	६५९८	सुरेन्द्रनाथसिंह	बनभनखी	तृतीय श्रेणी ३०५
१४३८	६६००	कृष्णमोहनप्रसाद सिनहा	,,	द्वितीय श्रेणी ४६४
१४४३	६६०५	कु० ज्ञानदेवी सक्सेना	बदायूँ (हि० वि० पी०)	तृतीय श्रेणी ३४३
१४४५	६६०७	रामअंजोर तिवारी	बम्बई (हि० प्र० सभा)	,, ३४४
१४४७	६६०९	मालतीदास परलकर	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
१४४८	६६१०	भीखुभाई छगनलाल जोशी	,,	,,
१४५२	६६१४	हंसनाथ तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ३६७
१४५४	६६१५	श्रीराम यशवन्त मुल्ये	बम्बई (मार० वि०)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
१४५७	६६१८	कुंवर राजेन्द्रसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३६४
१४५८	६६१९	सुभद्रादेवी जैन	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
१४५९	६६२०	सुर्दशनादेवी मन्नालाल	,,	,,
१४६०	६६२१	करसनदास दामोदरदास ठक्कर	,,	,,
१४६६	६६२७	शान्ति गुप्त	,,	,,
१४६८	६६२९	रघुनाथ मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३५५
१४७०	६६३१	कु० सन्तोष मोतल	,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार
१४७१	६६३२	रामस्वरूप सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३१४
१४७४	८२७१	सीतारामसिंह	,,	वि० प्र० के अनुसार
१४७५	६६३५	शिवमूरत सिंह	बम्बई (मार० क० हा० स्कूल)	तृतीय श्रेणी ३४०
१४७६	६६३६	रामहितकारी मिश्र	,,	,, ३३१
१४७७	६६३७	कल्याणमल	,,	द्वितीय श्रेणी ४०६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
१४७८	६६३८	ओंकारनाथ मिश्र	बम्बई (मार० क० हा० स्कूल	द्वितीय श्रेणी	३७१
१४७६	६६३६	देवीचन्द्र	,,	,,	४००
१४८०	६६४०	विश्वनाथ केडिया	,,	,,	४१४
१४८१	६६४१	दामोदर केडिया	,,	तृतीय श्रेणी	३२६
१४८३	६६४३	रामकृष्ण चौधरी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१४८४	६६४४	मुरलीधर मित्तल	,,	,,	,,
१४८६	६६४६	जयदेवप्रसाद सिंहानिया	,,	द्वितीय श्रेणी	३८५
१४८७	६६४७	जयन्तीलाल रूइया,	,,	,,	४१३
१४८८	६६४८	दूधनाथ सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३१२
१४८६	६६४६	किशोरीलाल	,,	प्रथम श्रेणी	५०२
१४६०	६६५०	कमलाशंकर भट्ट	बाँसवाड़ा	विभाजित प्र० के अनुसार	
१४६६	६६५७	वि० सत्यनारायण राव	बरहज	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१५००	६६५८	सन्तबख्स मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३७८
१५०१	६६५६	रामदरश	,,	,,	४०६
१५०२	६६६०	राजेन्द्र सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३५२
१५०५	६६६३	कपिलदेव	,,	द्वितीय श्रेणी	३७०
१५०७	६६६५	रामनरेश त्रिपाठी ''नरेश''	,,	,,	३६३
१५११	७६३६	अवधेश त्रिपाठी	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
१५१३	५८३४	हरिहरप्रसाद त्रिपाठी ''हृदय''	,,	,,	
१५१५	६६७०	महातम पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी	४२६
१५१७	६६७२	चन्द्रबली सिंह	,,	,,	३६६
१५१८	७६३३	जिउत बन्धन पांडेय	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
१५२१	६६७५	वीरेन्द्रनाथ शर्मा	बरेली (सर० वि० हा०)	द्वितीय श्रेणी	४१८
१५२२	६६७६	प्रभाशंकर	,,	,,	४०४
१५२४	६६७८	श्यामबिहारीलाल शङ्खधार	,,	,,	३६५
१५२६	६६८०	पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा	,,	,,	४०३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१५२७	६६८१	कुंअरबहादुर सक्सेना	बरेली (सर० वि० हा०)	प्रथम श्रेणी	४८
१५३०	६६८४	जै जैराम गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी	३७
१५३२	६६८६	रामेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव	,,	,,	४०
१५३३	७६६५	राजाराम	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
१५३४	६६८७	श्यामस्वरूप	,,	द्वितीय श्रेणी	४४
१५३५	६६८८	शिवनन्दनप्रसाद भटनागर	,,	तृतीय श्रेणी	३४
१५३७	६६९०	कामताप्रसाद माँहवार	,,	द्वितीय श्रेणी	३६
१५३८	६६९१	जगदीशशरण	,,	,,	४०
१५४०	६६९३	जनार्दनस्वरूप सक्सेना	,,	तृतीय श्रेणी	३४
१५४१	६६९४	मुन्नालाल सक्सेना	,,	द्वितीय श्रेणी	४०८
१५४८	६७००	अनन्त झा	बलबड्डा	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१५५०	६७०२	श्रीकन्तनारायण ठाकुर	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१५५४	६७०४	रामदास राम	बलिया (यमुना संस्कृत)	तृतीय श्रेणी	३५
१५५६	६७०६	नन्दकिशोर राम	,,	,,	३५३
१५५७	६७०७	जगदेव पांडेय	बलिया (जु० सं० का०)	,,	३०८
१५६४	६७१४	श्रीपतिराय	,,	द्वितीय श्रेणी	३७
१५६५	६७१५	सीताराम	बस्ती	,,	३७८
१५६७	१३४२	भगवतीप्रसाद पांडेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनु०	
१५६८	६७१६	पारसनाथ मिश्र	,,	,,	,,
१५७५	७६०६	नेमनारायणसिंह 'शुधानिया'	बहदुरा	,,	,,
१५७६	६७२३	रामकुमार सिंह	बहादुरगंज (पूर्णिया)	द्वितीय श्रेणी	३८५
१५८५	६७२९	मथुरा पांडेय	बाढ़	तृतीय श्रेणी	३५३
१५८६	६७३०	युगलनाथ शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	३९१
१५८७	६७३१	रामेश्वरप्रसाद मिश्र	बाँदा	,,	३८५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१५८९	९७३३	ईश्वरलाल व्यास	बामनिया	तृतीय श्रेणी	३४९
१५९०	९७३४	धूलीलाल शर्मा	बाराँ	"	३१५
१५९२	९७३६	जगन्नाथप्रसाद गुप्त	"	"	३१७
१५९३	९७३७	घनश्याम	"	द्वितीय श्रेणी	४१०
१६०३	९७४७	विश्वेश्वर	बाँसगाँव (ए० वी० स्कूल)	"	४३६
१६०४	९७४८	रामविलास त्रिपाठी	"	"	३७१
१६०५	९७४९	रामसुरञ्जनराय	"	"	३८७
१६०७	९७५१	भीनकसिंह	"	"	४३१
१६१०	९७५४	जगदीशनारायण लाल	"	"	३९८
१६१२	७७१६	ईश्वरीप्रसाद सिंह	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१६१५	९७५८	गौरीशंकर प्रसाद	बिल्थरा रोड (एम० एम० ए० वी०)	तृतीय श्रेणी	३४८
१६१६	९७५९	विश्वनाथ दुबे	"	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० सं०]	३९८
१६१८	९७६१	प्रभूनाथ राम	"	तृतीय श्रेणी	३५७
१६१९	९७६२	रामधनीसिंह	"	"	३७०
१६२२	९७६५	भूरसिंह यादव	बीकानेर	द्वितीय श्रेणी	३९६
१६२४	९७६७	भैरवदान आढ़ा	"	"	३९२
१६२५	९७६८	ठाकुर सुमेरसिंह	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१६२७	९७७०	नारायणचन्द लाल	बेलागंज	प्रथम श्रेणी [वि० यो० सं० और गणि०]	५३२
१६२८	९७७१	रामदेवलाल	"	द्वितीय श्रेणी	३८२
१६२९	९७७२	हरिहरप्रसाद सिंह	"	प्रथम श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	४९२
१६३०	९७७३	उदितसिंह	"	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	४३३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१६३२	६७७५	देवदीप सिंह	वेलागंज	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० संस्कृत]	४५
१६३३	६७७६	कोडूँरितिमल लक्ष्मी नरसिंहाचार्य	बैजवाड़ा	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० सं०]	३६
१६३४	६७७७	को० कूर्माराव	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनु	
१६३५	६७७८	भगवन्तराव	,,	,,	
१६३८	६७८१	आरूमल्ला वेंकटरमय्या चौधरी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१६४०	६७८३	कालिकुमार मिश्र	बेतिया (वि० हा०)	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० सं०]	४३
१६४३	६७८६	रतिनाथ झा	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० सं०]	५०
१६४७	६७९०	भूरेलाल	बैतूल	विभाजित प्रणाली के अनु	
१६४९	६७९२	रामजीराव पाटील	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१६५२	६७९५	रामकृष्ण आर्य	भगवानपुर	द्वितीय श्रेणी	४२६
१६५६	५९५१	तेजसिंह शर्मा गौड़ 'विशेषज्ञ'	भरतपुर	विभाजित प्रणाली के अनु	
१६५७	६७९९	हरीशंकर गोयल	,,	,,	
१६५८	६८००	रामस्वरूप गोयल	,,	द्वितीय श्रेणी	४५३
१६५९	६८०१	नत्थीलाल शर्मा	,,	,,	४०३
१६६३	६८०५	सरयूसिंह	भवानीपुर (कलकत्ता)	,,	३८२
१६६५	६८०७	रामचन्द्र राम	,,	तृतीय श्रेणी	२९८
१६६६	६८०८	भगवतप्रसाद मिश्र	,,	,,	३२१
१६६८	७७५७	लखनलाल चौधरी	भागलपुर (यु०सा०मं०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१६६९	६८१०	राजेन्द्रप्रसाद मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	४६३
१६७०	६८११	श्यामप्रसाद सिंह	,,	प्रथम श्रेणी	४८७
१६७१	६८१२	कन्तलाल चौधरी	,,	द्वितीय श्रेणी	३६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१६७२	६८१३	महावीरप्रसाद मंडल	भागलपुर (यु०सा०म०)	तृतीय श्रेणी	३५३
१६८०	६८१६	विश्वनाथ मिश्र	मडियाहूँ	द्वितीय श्रेणी	४१०
१६८४	६८२२	कृष्णादेवी भटनागर	मथुरा (गो० हि०वि० पी०)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१६८६	६८२४	मोहनलाल गौतम	,,	तृतीय श्रेणी	३४४
१६८७	६८२५	प्रेमसिंह आर्य	,,	द्वितीय श्रेणी	३६८
१६८८	६८२६	देवीदास दुबे	,,	तृतीय श्रेणी	३४७
१६९०	६८२८	कृष्णस्वरूप माथुर	,,	द्वितीय श्रेणी	३७७
१६९१	६८२९	ज्वालाप्रसाद उपाध्याय	,,	,,	३७७
१६९२	६८३०	रामनारायण अग्रवाल	,,	,,	३९४
१६९३	६८३१	दुलीराम शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३२४
१६९८	६८३६	देवीचरन गुप्ता	,,	,,	३१७
१७००	६८३८	श्यामसुन्दर गुप्ता	,,	,,	३२१
१७०२	६८४०	पुरुषोतमदास दाणी 'प्रशान्त'	,,	,,	३२७
१७०९	६८४७	प्रेमकुमारी सक्सेना	,,	अ०३ नि०७ के अनुसार	
१७११	६८४९	प्रयागनाथ चतुर्वेदी 'दिव्य'	,,	द्वितीय श्रेणी	३८२
१७१८	६८५६	अ० सुब्रह्मण्यम	मदुरा	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१७१९	६८५७	आर० सुब्रह्मण्य शर्मा	,,	,,	,,
१७२१	६८५९	एस० रामकृष्णन	,,	द्वितीय श्रेणी	४१३
१७२३	६८६१	भूरीप्रसाद उपाध्याय	मधुबन	तृतीय श्रेणी	३५८
१७२५	६८६३	तिलकधारी त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी	४०२
१७२७	६८६५	शिवमूर्ति मल्ल	,,	तृतीय श्रेणी	३४४
१७२८	६८६६	मोतीलाल गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी	३६६
१७२९	६८६७	चंडीप्रसाद पाण्डेय	,,	,,	४२१
				[वि० ग्रो० सं०]	
१७३०	६८६८	हित नारायण झा	मधीपुर (शिरीज इंस्टी०)	द्वितीय श्रेणी	३८१
१७३१	६८६९	भुवनेश्वर झा	,,	,,	४२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा	प्राप्ताङ्क
१७३२	६८७०	व्रज विहारी चौधरी	मभौपुर (शिरीज इंन्टी०)	तृतीय श्रेणी	३०
१७३३	६८७१	हरगोविन्ददास	,,	द्वितीय श्रेणी	३६
१७३४	६८७२	भागीरथ झा	मधेपुर (दरभंगा)	तृतीय श्रेणी	३४
१७३६	६८७४	विद्यानन्दन सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३६
१७३८	६८७६	अवधनारायण झा	,,	,,	४४
१७४१	६८७९	अनन्तबिहारीलाल दास	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१७४२	६८८०	सूर्यनारायण मिश्र	,,	,,	,,
१७४३	६८८१	हरिमोहन मिश्र	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० सं०]	५०
१७४४	६८८२	महादेव मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी	३३
१७४५	६८८३	जगदीश झा	,,	,,	३२
१७५७	६८९५	सोनेलाल चौधरी	महनार	द्वितीय श्रेणी	३८
१७५८	६८९६	हरिबल्लभ झा	,,	तृतीय श्रेणी	३४
१७५९	६८९७	तारादत्त जोशी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१७६०	६८९८	महेश्वरप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३३
१७६३	६९०१	विश्वनाथ सिंह	मलांव	द्वितीय श्रेणी	४२६
१७६४	७८०३	पारसनाथ मिश्र	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१७६६	६९०३	नागेन्द्रकुमार पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी	३८
१७६९	६९०६	कुंदनमल	महित्पुर	,,	३८
१७७८	६९१५	जाहरीसिंह	महोबा (डी०ए०वी०)	,,	४१
१७८१	६९१८	कुँवर विष्णुपाल सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४०
१७८२	६९१९	मोतीलाल पाठक	,,	,,	३७
१७८३	६९२०	छगनलाल	मांगरोल	तृतीय श्रेणी	३४
१७८५	६९२२	सुरेन्द्रनाथ वर्मा	मांडले	,,	३५
१७८६	६९२३	फतेह बहादुर सिंह	,,	,,	३४
१७८७	६९२४	रामदेव पांडेय	,,	,,	३६
१७८८	७८१५	श्रीराम शर्मा	मिर्जापुर	विभा० प्रणाली के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१७९०	६०४०	होतीलाल शर्मा	मुकुन्दगढ़	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१७९१	६६२६	रामचन्द्र शर्मा	मुकामाघाट	तृतीय श्रेणी	३५५
१७९३	६६२८	राजाराम पाण्डेय	मुंगरा बादशाहपुर	द्वितीय श्रेणी	४१२
१८०५	७८२८	श्रीनाथ मिश्र	मुंगेर (लोकलबोर्ड)	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१८०८	६६३६	शुकदेवप्रसाद यादव	,,	द्वितीय श्रेणी	३६६
१८११	६६४२	हृदय नारायण चौधरी	,,	,,	४४६
१८१६	६६४७	रेवतीरमण सिंह चौधरी	मुजफ़्फ़रपुर (सुहृदसंघ)	,, [वि० यो० संस्कृत]	४६७
१८१७	६६४८	नवलकिशोरप्रसाद सिन्हा	,,	द्वितीय श्रेणी	४५१
१८२३	६६५३	रामेश्वरनाथ पाठक	,,	तृतीय श्रेणी	३५४
१८३२	६६६२	सुमित्रा देवी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१८३३	६६६३	सदानन्दन शर्मा	,,	,,	,,
१८३४	७८६१	भगवत शरण अग्रवाल	मुरादाबाद	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१८३७	६६६६	शिवप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी	३६१
१८४०	६६६९	अवतार कृष्ण अग्रवाल	,,	तृतीय श्रेणी	३३०
१८४१	६६७०	रामेश्वरप्रसाद शर्मा	,,	,,	३२७
१८४२	७८५९	दीपचन्द	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१८४६	६६७४	मोतीलाल शर्मा	मुरार	तृतीय श्रेणी	३२४
१८५०	६६७८	मातादीन	,,	द्वितीय श्रेणी	३६१
१८५२	६६८०	रघुनाथसिंह चौहान	,,	,,	४०९
१८५३	६६८१	रामदयाल सिंह	,,	,,	३६५
१८५७	६६८५	द्वारिकानाथ सूरी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१८६०	६६८८	श्यामसुन्दर शर्मा	मेड़तासिटी (पा०सं०वि०)	तृतीय श्रेणी	३५७
१८६१	६६८९	लाधुराम गौड़	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१८६२	६६९०	मेघराज शर्मा सारस्वत	,,	द्वितीय श्रेणी	४२५
१८६४	६६९२	रामदुलारे द्विवेदी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१८७१	९९९९	पुरुषोत्तम कुमार रामकृष्ण आचार्य	मेड़तासिटी (पा०सं०वि०)	द्वितीय श्रेणी	४३
१८७३	१०००१	त्रिलोकचन्द	मेरठ	,,	३६५
१८७४	१०००२	आनन्दप्रसाद राजवंशी	,,	तृतीय श्रेणी	३३
१८७९	७८८३	रतनमल्ल जैन	मैनपुरी	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१८८०	१०००७	राममूर्ति पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी	४३
१८८२	१०००९	शिवराल सिंह चौहान	,,	तृतीय श्रेणी	३२०
१८८३	१००१०	मानसिंह चौहान	,,	,,	३३८
१८८५	१००१२	मथुराप्रसाद सिंह	मोरमंड	द्वितीय श्रेणी	३८०
१८८७	१००१४	चन्द्रेश्वरप्रसाद सिंह	,,	,,	३९१
१८८८	१००१५	धनञ्जय प्रसाद सिंह	मोहानियां	,,	३७
१८८९	१००१६	लालजीलाल श्रीवास्तव	,,	,,	३६६
१८९०	७९०१	लक्ष्मीसिंह	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१८९२	१००१८	छेदीसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३९४
१८९३	१००१९	जगन्नाथ शर्मा	मण्डलेश्वर	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१८९४	१००२०	भँवरलाल बद्रीदत्त तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी	३४२
१८९५	१००२१	श्रीवास्तव परमानन्द	रक्सौल	द्वितीय श्रेणी	४२५
१८९६	१००२२	राघवशरण वर्मा	,,	,,	४२०
१८९७	७९०७	यदुनन्दनप्रसाद पांडेय	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१८९८	१००२३	जनार्दन पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी	४३७
१८९९	७९१२	नौरंगलाल माठोलिया	रतनगढ़	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१९००	१००२४	रामकृष्ण व्यास	,,	द्वितीय श्रेणी	३७१
१९०१	६११९	सागरमल जोशी	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१९०२	१००२५	जगनंदनप्रसाद सक्सेना	रतलाम	द्वितीय श्रेणी	४४६
१९०३	१००२६	मन्नालाल शर्मा "परदेशी"	,,	,,	३९५
१९०८	१००३०	कामेश्वर प्रसाद सिंह	रांची	तृतीय श्रेणी	३५६
१९०९	१००३१	लाला वासुदेव प्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी	३६७
१७१२	१००३३	भोलानाथ पांडेय	राजापुर(बाँदा)	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१९१३	७९३०	कुमारी ज्ञानदेवी	,,	,,	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१९१६	१००३४	विन्ध्येश्वरीप्रसाद वर्मा "मुख्तार"	रानीगंज (वर्दमान)	द्वितीय श्रेणी	४०९
१९१७	१००३५	डा० पयोवृत्तसिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३२७
१९१८	७९५५	यदुनंदन सिंह	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१९२९	१००४६	सन्तोषमल चेलावत	रामपुरा (हो०स्टेट)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१९३०	१००४७	सावित्रीबाई गयादीन	,,	,,	,,
१९३१	१००४८	यमुना बाई	,,	,,	,,
१९३४	१००५१	प्रभूनारायण सिंह	रामासाँढ़	तृतीय श्रेणी	३२९
१९३५	१००५२	झलक सिंह	,,	,,	३३२
१९३६	१००५३	दीपनारायण मिश्र (पुष्पायुध)	,,	द्वितीय श्रेणी	४४२
१९३७	१००५४	जगनन्दन दुबे	,,	तृतीय श्रेणी	३५२
१९३८	१००५५	सदानन्द द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी	३८२
१९३९	१००५६	विश्वनाथ ओझा	,,	,,	३८८
१९४०	१००५७	तपेश्वर मिश्र उपनाम रामशकल मिश्र	,,	,,	३९५
१९४२	१००५९	बैकुण्ठनाथ उपाध्याय	,,	तृतीय श्रेणी	३१९
१९४४	१००६१	बद्रीनारायण शर्मा	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१९४५	१००६२	राजेश्वरप्रसाद	रामासाँढ़	तृतीय श्रेणी	३१७
१९४६	१००६३	सुन्दरलाल साह	,,	,,	३३४
१९४७	१००६४	नवीनचन्द्र 'विद्यालङ्कार'	,,	द्वितीय श्रेणी	४०९
१९४८	१००६५	रामएकबाल सिंह	,,	,,	३८१
१९५१	१००६८	देवचरण तिवारी	रायपुर	,,	४०२
१९५४	७९८३	रामसेवक शर्मा	रीवाँ	विभाजित प्रणाली के अनुसार	
१९५५	१००७१	हनुमत्प्रसाद	,,	,,	,,
१९५९	७९७४	रामगोपाल	,,	,,	,,
१९६२	७९८२	हनुमानप्रसाद श्रीवास्तव	,,	,,	,,
१९६३	७९९९	पन्नालाल खरे	,,	,,	,,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१६६४	१००७७	जागेश्वरप्रसाद खरे	रीवाँ	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१६६७	७६६८	सरस्वतीप्रसाद खरे	,,	,, ,,	
१६७०	६१६६	रामप्रताप त्रिपाठी	,,	,, ,,	
१६७१	१००८२	रामाधार त्रिपाठी	रेवतीपुर	द्वितीय श्रेणी	३६५
१६७२	७६६२	सरयूलाल	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१६७३	१००८३	गजाधर तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी	३५७
१६७४	१००८४	गोदावरी देवी	,,	द्वितीय श्रेणी	४०७
१६७५	१००८५	काशीनाथ दीक्षित	रंगून	,,	४५४
१९७६	१००८६	अनन्तराम मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी	३२६
१६८०	१००८६	ब्रह्मदत्त	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१६८२	१००६१	रामचरित्र राय	रोसड़ाघाट	तृतीय श्रेणी	३१५
१६८३	१००६२	मिश्री मंडल	,,	,,	३२४
१६८४	१००६३	युगेश्वर झा	,,	,,	३४६
१६८५	८०१६	बैजनाथ मिश्र	लखनऊ	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१६८८	१००६६	माताप्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी	३१६
१६८६	१००६७	सावित्री श्रीवास्तव	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१६६०	१००६८	समर बहादुर सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४३६
१६६२	१०१००	तेजनारायण टण्डन	,,	,,	४११
१६६३	१०१०१	शिवनन्दन कपूर	,,	तृतीय श्रेणी	३५८
१६६४	१०१०२	राजेश्वरी आर्य	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
१६६८	१०१०५	रणधीरसिंह वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	४२८
१६६६	१०१०६	रामेश्वरसिंह	,,	,,	४१६
२००७	१०११३	तेजनारायण सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३५८
२०१२	८०१३	शिवबालक शुक्ल	,,	विभाजित प्र० के अनुसार	
२०१३	१०११७	भोलानाथ गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी	३६
२०१४	१०११८	जयपालसिंह गौर	,,	,,	३८
२०१८	१०१२२	महावीरशरण द्विवेदी	,,	,,	४६
२०२४	१०१२८	रामेश्वरप्रसाद वाजपेयी	,,	तृतीय श्रेणी	३२
२०२५	१०१२६	श्यामकुमारी सर्गा	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
२०२७	१०१३१	देशराजसिंह वर्मा	लखावटी	तृतीय श्रेणी	३५१
२०२६	१०१३३	मोहरसिंह	,,	,,	३११
२०३०	१०१३४	जयप्रकाश अग्रवाल	,,	,,	३१६
२०३२	१०१३६	अनिरुद्ध द्विवेदी	लखीमपुर	द्वितीय श्रेणी	३७६
२०३५	१०१३८	रामानन्द गुप्त	,,	,,	३८७
२०३६	१०१३६	चन्द्रशेखर ओझा	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
२०४३	८०६६	केशवराव खांडेकर	लश्कर	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२०४५	१०१४७	शिवदत्तप्रसाद शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३३५
२०४६	१०१४८	भास्कर लक्ष्मण खांडेकर	,,	,,	३३२
२०४७	४१२५	कैलाशनारायण पौराणिक	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२०४८	१०१४६	शिवचन्द्रमोहन सक्सेना	,,	तृतीय श्रेणी	३३१
२०४६	१०१५०	माया भटनागर	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
२०५१	१०१५२	शीला भटनागर	,,	,,	,,
२०५२	१०१५३	कृष्ण कुमारी चतुर्वेदी	,,	तृतीय श्रेणी	३३१
२०५३	१०१५४	शिवशंकर सहाय माथुर	,,	द्वितीय श्रेणी	४०५
२०५६	८०५४	स्वामी त्यु० पं० दयानंद शास्त्री	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२०६०	१०१६०	विष्णुनागेश्वर भावे	,,	तृतीय श्रेणी	३३३
२०६३	१०१६२	दिनकरप्रसाद शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी	३७२
२०६४	५५५२	भागीरथ शर्मा मिश्र	लक्ष्मणगढ़	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२०६६	८०७६	हरिदत्त जोशी 'हरि'	,,	,,	,,
२०६७	१०१६३	राधाकृष्ण शर्मा 'महर्षि'	,,	तृतीय श्रेणी	३४८
२०६८	१०१६४	सत्यनारायण पोद्दार	,,	,,	३३८
२०६६	१०१६५	विष्णुदत्त त्रिवेदी	,,	,,	३१५
२०७०	१०१६६	नन्द बल्लभ पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी	३६८
२०७५	१०१७१	सन्तलाल चौधरी	लोहरदगा	,,	४५२
२०८०	१०१७६	राजेन्द्र चौधरी	लालगंज	,,	४४६
२०८१	१०१७७	कपिलदेव ठाकुर	,,	,,	४०३
२०८८	८०८७	प्रह्लाद दास कोठारी	वर्धा	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२०८६	१०१८३	किशन गोपाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३७६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
२०६२	१०१८६	भीकमचन्द्र शर्मा	वारासिवनी	तृतीय श्रेणी	३२१
२०६३	१०१८७	शोभाराम आड़े	,,	,,	३४१
२०६५	१०१८९	रामाधार दुबे	,,	,,	३८१
२०६८	१०१९२	प्रभूदयालसिंह सूर्यवंशी	,,	,,	३१५
२०९९	१०१९३	छोटेलाल	,,	,,	३५१
२१०१	१०१९५	कमल शीला गुप्ता	वृन्दावन	अ० ३ नि० ७ के अनुसा	
२१०२	१०१९६	चन्द्रमणि प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी	२६१
२१०५	१०१९९	गयाप्रसाद सिंह	वैना	,,	३४१
२१०६	१०२००	रामसकल चौबे	,,	द्वितीय श्रेणी	३६१
२१०७	१०२०१	रामचन्द्र द्विवेदी	,,	,,	४४१
२१०८	१०२०२	रामकवल मेहतो	,,	तृतीय श्रेणी	३०१
२१११	१०२०५	सरयूप्रसाद सिंह	वैद्यनाथ धाम (गो. सा वि.)	,,	३२६
२११२	१०२०६	जी० गोपालराव	,,	अ० ३ नि० ७ के अनुसा	
२११३	१०२०७	मंगलसिंह राठौर	,,	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० धर्म]	४६१
२११४	१०२०८	गुप्तेश्वरी देवी श्रीवास्तव	शाहजहाँपुर	अ० ३ नि० ७ के अनुसा	
२१२१	१०२१५	रामनारायण ठाकुर	शाहपुर (भागलपुर)	तृतीय श्रेणी	३२१
२१२२	१०२१६	योगेश्वर झा	,,	द्वितीय श्रेणी	३६८
२१२३	१०२१७	प्रबोधनारायण सिंह	,,	,,	४४१
२१२४	१०२१८	सत्यनारायण झा	,,	,,	४३१
२१२५	१०२१९	श्रीकान्त झा	,,	तृतीय श्रेणी	३३१
२१३३	१०२२७	शिवशंकर लाल कुलश्रेष्ठ	शिकोहाबाद	,,	३५६
२१३६	१०२३०	नत्थीसिंह चौहान	,,	,,	३५४
२१३९	१०२३३	मथुराप्रसाद सक्सेना	,,	द्वितीय श्रेणी	४६१
२१४०	१०२३४	मदनमोहन सक्सेना	,,	तृतीय श्रेणी	३४१
२१४२	१०२३५	नरसिंह दुबे	शेरघाटी	द्वितीय श्रेणी	३८१
२१४७	६३४५	उदितनारायण सिंह	सड्डीहा	विभा० प्रणाली के अनुसा	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
२१४९	१०२४१	रामनारायण सिंह बाघेल	सतना	तृतीय श्रेणी	३४३
२१५०	८१०९	चन्द्रिका प्रसाद भट्ट	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२१५३	१०२४४	रामकरन सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३११
२१५४	१०२४५	राधाकृष्ण गोयल	सरदार शहर	द्वितीय श्रेणी	३६८
२१५५	१०२४६	बुधमल श्याम सुखा	,,	,,	४२३
२१५७	१०२४८	रामलाल सराफ	,,	तृतीय श्रेणी	३१०
२१५८	१०२४९	दीपचन्द्र नाहाटा	,,	द्वितीय श्रेणी	४३७
२१५९	१०२५०	पूनमचंद पन्सारी	,,	तृतीय श्रेणी	३३५
२१६०	१०२५१	कुन्दनलाल स्वामी	,,	,,	३२५
२१६१	१०२५२	रामयश शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३५९
२१६५	१०२५६	रामकृष्ण गुप्त	सलकिया	द्वितीय श्रेणी	३८१
२१६७	१०२५८	जगदम्बा प्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३५२
२१६९	१०२६०	उमाशंकर सिंह	,,	,,	३२१
२१७१	१०२६२	सदानंद मिश्र	सलारपुर	द्वितीय श्रेणी	४०३
२१७२	१०२६३	रामेश्वर मिश्र	,,	,,	३७७
२१७३	१०२६४	शिवनंद झा	,,	तृतीय श्रेणी	३२१
२१७४	१०२६५	सियाराम झा	,,	,,	३८५
२१७६	१०२६७	रामअचलधर द्विवेदी	सहजनवाँ	द्वितीय श्रेणी	४२६
२१७७	१०२६८	रामलखण सिंह	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२१७८	१०२६९	भवानीभीख शर्मा द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी	३८७
२१७९	१०२७०	हीरानंद पांडेय 'अखिलेश'	,,	,,	३८२
२१८०	१०२७१	हरिवंशधर	,,	,,	३९९
२१८१	१०२७२	रामसेत पांडेय	,,	,,	३७३
२१८२	१०२७३	मोतीचंद श्रावणे	सागर	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
२१८३	१०२७४	भगवानदास गोस्वामी	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२१८४	१०२७५	रामभरोसे पाठक	,,	तृतीय श्रेणी	३४१
२१८५	१०२७६	नरसिंह सिंह	सारनाथ	द्वितीय श्रेणी	३८७
२१८६	१०२७७	रामदेव पांडेय	,,	,,	३८६
२१८८	१०२७९	शिवशंकर लाल	,,	तृतीय श्रेणी	३३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२१६०	१०२८१	श्याममुरारी सक्सेना	सिकंदराराऊ	तृतीय श्रेणी
२१६४	१०२८५	पन्नालाल	सिरसागंज (जी०ए०वी०स्कूल)	,,
२१६६	१०२८७	अमरनाथ शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी
२१६७	१०२८८	ओ३म् प्रभावती	,,	तृतीय श्रेणी
२१६८	१०२८९	रामलाल ओझा	सिवनी (बेसिक ना० स्कूल)	,,
२२०२	१०२९३	शिवबिहारी त्रिवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी
२२०३	१०२९४	रामखिलावन तिवारी	,,	,,
२२०४	१०२९५	मेघराज वर्मा 'मुकुल'	संगरिया	,,
२२०५	१०२९६	देवीप्रसाद गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी
२२०६	१०२९७	तीर्थराज उपाध्याय	सिंगरामऊ	द्वितीय श्रेणी
२२०७	१०२९८	रामानुज द्विवेदी	,,	,,
२२०८	१०२९९	रामअधार गुप्त	,,	प्रथम श्रेणी
२२०९	१०३००	फूलचन्द लाल	,,	,, [वि० यो० भूगोल]
२२१०	१०३०१	रामचरण मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी
२२११	१०३०२	रामदेव सिंह	,,	,,
२२१२	१०३०३	राममूर्ति मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी
२२१३	१०३०४	सन्तबख़्श सिंह	सिंगरामऊ	तृतीय श्रेणी
२२१४	१०३०५	नेत्र तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी
२२१५	१०३०६	प्रभूनाथ तिवारी	,,	,,
२२१७	१०३०८	अक्षयवर सिंह	,,	,,
२२१८	१०३०९	अविनाशचन्द्र सिंह	,,	,,
२२१९	१०३१०	रामदौर राय	,,	,,
२२२२	१०३१३	रामराज मौर्य	,,	तृतीय श्रेणी
२२२३	१०३१४	फेरनराम गुप्त	,,	,,
२२२४	१०३१५	कैलाश नारायण सिंह	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० भूगोल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
२२५	८१४५	दामोदरलाल दास	सिंगिया (दरभंगा)	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२२६	१०३१६	कुलानन्द मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	४१४
२२८	१०३१८	रामकृष्ण सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३०५
२२९	८१५०	छेदीलाल कुमर	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२३०	१०३१९	शिवानन्द सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३३५
२३१	१०३२०	कुञ्जविहारी चौधरी	,,	द्वितीय श्रेणी	३७५
२३६	१०३२८	विष्णु प्रसाद	सीवान	तृतीय श्रेणी	३४२
२४४	१०३३३	राजेन्द्रबहादुर खरे	सुल्तानपुर	,,	३१६
२४७	१०३३५	बजरंगी लाल विद्यार्थी	,,	,,	३४०
२४८	१०३३६	विजय बहादुर सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४७४
२४९	१०३३७	सुशीलचन्द्र अग्निहोत्री	,,	,,	४२५
२५०	१०३३८	मुनिराज सिंह	,,	,, [विशेष योग्यता धर्मशास्त्र]	४७८
२५२	१०३४०	मनमोहन गर्ग	,,	द्वितीय श्रेणी	३९४
२५४	१०३४२	फूलरानी देवी	,,	तृतीय श्रेणी	३४१
२५५	१०३४३	सत्यदेव मिश्र	,,	,,	३५२
२६२	१०३४८	महातम पांडेय	सुहवल	प्रथम श्रेणी [वि० यो० कृषिशास्त्र]	५०५
२६५	१०३५१	शशिधर पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी	३७६
२६७	१०३५३	वसन्ती देवी	सूरजगढ़	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
२७१	८१९१	वैद्यनाथ सिंह	सेवदह	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२७५	८२००	अयोध्या महतो	,,	,,	,,
२७६	६४३५	रामवृक्ष सिंह	,,	,,	,,
२७७	६४३४	मंगलदेव प्रसादसिंह	,,	,,	,,
२८४	८१९५	रामदास सिंह	,,	,,	,,
२८६	१०३६४	मंगलानन्द सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	४०७
२९१	१०३६६	विष्णुदेव	,,	तृतीय श्रेणी	३१३
३००	१०३७४	बद्रीप्रसाद जोशी	सैलाना	विभा० प्रणाली के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२३०३	१०३७७	लाला वृन्दावन बिहारी शरण	हजारीबाग	अ० ३ नि० ७ के अनु
२३०५	१०३७९	हरिहरनाथ चौबे	,,	द्वितीय श्रेणी
२३०८	१०३८२	कुँअर बहादुर श्रीवास्तव	हमीरपुर	तृतीय श्रेणी
२३१२	१०३८५	रविशंकर पाण्डेय	हरदा	द्वितीय श्रेणी
२३१५	१०३८८	महराजसिंह भदौरिया	हरदोई	,,
२३१७	१०३९०	माया प्रकाश मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी
२३२०	७७७६	राधेश्याम शर्मा	हाथरस	विभा० प्रणाली के अनु
२३२२	१०३९४	देवकीनन्दन शर्मा 'विकल'	,,	द्वितीय श्रेणी
२३२६	१०३९८	भागवत प्रसाद श्रीवास्तव	हुसेनगंज	,,
२३२७	१०३९९	शुकदेव सिंह 'रसिक'	,,	,,
२३२८	१०४००	कृष्णकान्त लाल वर्मा	,,	,,
२३३०	१०४०२	शिवशंकर प्रसाद श्रीवास्तव	,,	,,
२३३१	१०४०३	राजनारायण द्विवेदी	,,	अ० ३ नि० ७ के अनु
२३३२	८२५७	चिन्तामणि शर्मा	होलीपुरा	विभा० प्रणाली के अनु
२३३३	१०४०४	रामचन्द्र पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी
२३३८	१०४०९	कु० मनोरमा	हैदराबाद (दक्षिण)	तृतीय श्रेणी
२३३९	१०४१०	विश्वनाथ खां	त्रिवेणी गंज	द्वितीय श्रेणी
२३४०	२६	बबुआ सिंह	,,	विभा० प्रणाली के अनु
२३४१	१०४१२	प्रियव्रत नारायण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी
२३४२	१०४१३	शुभनारायण चौधरी	,,	तृतीय श्रेणी
२३४४	१०४१५	केदारनाथ उपाध्याय	ज्ञानपुर	तृतीय श्रेणी
२३४५	१०४१६	जीवनराम मिश्र	प्रयाग (सम्मे० का०)	द्वितीय श्रेणी
२३४६	१०४२०	सुरेन्द्रनाथ शुक्ल	नानपारा	विभा० प्रणाली के अनु
२३५२	१०४२३	एम० सत्यनारायण राजू	रानीगंज (पूर्णियां)	अ० ३ नि० ७ के अनु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
२३५४	१०४२५	ब्रह्मदेव लाल दास	रानीगंज (पूर्णियां)	अ० ३ नि० ७ के अनुसार	
२३५५	१०४२६	जयदेव झा	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२३५६	१०४२७	अनिरुद्ध झा	,,	द्वितीय श्रेणी	३६७
२३५७	१०४२८	त्रिभुवन मिश्र	,,	,,	४५५
२३५८	१०४२९	अर्जुनलाल दास	,,	,,	३७२
२३५९	१०४३०	बजरंग प्रसाद श्रीवास्तव	प्रयाग (सम्मे० का०)	तृतीय श्रेणी	३५९
२३६०	१०४३१	रामनारायण गुप्त	गोरखपुर	,,	३४२
२३६५	१०४३६	रामप्रसाद सिंह	रामा साँढ़	,,	३१३
२३७०	१०४४१	गोपीनारायण सिंह	,,	,,	३३२

प्रथमा परीक्षा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
१	पन्थनारायण त्रिपाठी	अकबरपुर (फर्रुखाबाद)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
४	सतीशचन्द्र द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी	३१७
६	पन्नालाल जी पंवार	अकलैरा (कोटा)	,,	३४२
१०	जगन्नाथ वर्मा	,,	प्रथम श्रेणी	४७४
११	बद्रीलाल वर्मा	,,	,,	४४६
१२	कृष्ण स्वरूप	,,	द्वितीय श्रेणी	३१८
१३	मूलचन्द	,,	,,	३८६
१४	राधामोहन शर्मा	,,	,,	४११
१५	जुगुलकिशोर शर्मा	,,	,,	३४३
१७	श्यामविहारी गुप्त	,,	,,	४०८
१८	गणेशलाल	अकोला	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१९	खरग सिंह	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२०	मथुरा प्रसाद नेमा	अकोला	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
२१	श्री प्रभादेवी	अज़मतगढ़	द्वितीय श्रेणी ३६६
२२	मोतीलाल गुप्त	,,	,, ३८६ [वि० यो० गणित]
२३	जंगोराम	,,	,, ४०६ [वि० यो० गणित]
२४	हुबेदार सिंह	,,	,, ३४४ [वि० यो० गणित]
२५	शचीन्द्र नाथ गुप्त	,,	,, ३३२
२६	विन्द्रा त्रिपाठी	,,	प्रथम श्रेणी ४३५ [वि० यो० गणित, संस्कृत]
२७	मन्हई राम	,,	द्वितीय श्रेणी ३२६ [वि० यो० गणित]
२८	सुशीला देवी	,,	,, ३४६
३०	कल्याण सिंह	अटरू	तृतीय श्रेणी २८६
३२	बलराम	,,	द्वितीय श्रेणी ३३७
३३	अब्दुल शकूर	,,	तृतीय श्रेणी ३१४
३४	कान्ति चन्द्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३३१
३५	विक्रम प्रकाश	,,	,, ३१७
३६	इस्लामुद्दीन	,,	तृतीय श्रेणी २६३
३६	जगतनारायण शर्मा	अथरी	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
४३	पुष्पलता	अमरावती	,, ,,
४४	ब्रह्मस्वरूप	अमरोहा	तृतीय श्रेणी ३०५
४५	देवी प्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३७०
५०	कु० ओमवती देवी	आगरा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
५३	कुँवर इन्द्रपाल सिंह 'इन्द्र'	,,	,, ,,
५४	सोंवरन-सिंह	,,	,, ,,
५५	रामजीलाल	,,	,, ,,
५६	दुर्गाचरण शर्मा	,,	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
५७	नत्थीलाल	आगरा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
५८	रामजीलाल शर्मा	,,	,,	,,
५९	कृष्णकुमारी श्रीवास्तव	,,	,,	,,
६०	अलगूराम	आज़मगढ़	,,	,,
६१	रंगीलाराम	आरा	,,	,,
६२	रामधारी देवी	,,	,,	,,
६३	अयोध्याप्रसाद श्रीवास्तव	,,	,,	,,
६६	भालचन्द्र द्विवेदी	आलोट	विभा० प्रणाली के अनुसार	
६७	शान्ताराम कोलते	,,	द्वितीय श्रेणी	३३७
७२	सुकदेव	,,	,,	३३३
७३	नागेश्वर टेलर	,,	,,	३१९
७४	नागेश्वरप्रसाद निगम	,,	,,	३३१
७५	पूरालाल निगम	,,	तृतीय श्रेणी	३०८
७६	लक्ष्मी नारायण गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी	३६५
७७	शंकरलाल गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी	३६७
७८	बसन्तीलाल निगम	,,	,,	३४२
८२	श्याम सुन्दर शर्मा	इच्छावर	,,	३२६
८६	गोपालसिंह राठौर	इटारसी	,,	३७०
			[वि० यो० गणित]	
८७	तुलसीराम	,,	द्वितीय श्रेणी	३५३
			[वि० यो० गणित]	
८८	हुकुम चंद	,,	द्वितीय श्रेणी	३२८
			[वि० यो० गणित]	
९०	सुन्दरलाल मालवी	,,	द्वितीय श्रेणी	३३७
			[वि० यो० गणित]	
९१	यदुनन्दन शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	२९४
९२	रामलाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३५७
			[वि० यो० गणित]	
९४	हरिशचन्द्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३३३
			[वि० यो० गणित]	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
१०२	देवेश्चन्द्र मोढ़	इन्दौर	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१०६	जगदीश प्रसाद मीतल	,,	,, ,,	
११०	नन्दकिशोर अग्रवाल	,,	,, ,,	
१११	बालमकुन्द शंकरलाल दुबे	,,	तृतीय श्रेणी	२८८
११४	बसन्तीलाल जैन	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
११५	कामता प्रसाद निगम	,,	द्वितीय श्रेणी	३२४
१२५	बाबूराव कापड़े	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१२६	कन्हैयालाल अग्रवाल	,,	,, ,,	
१२७	मधुसूदन वर्मा	,,	,, ,,	
१२७अ.	रामगोपाल वर्मा	,,	,, ,,	
१३३	प्रेमलता देवी	उज्जैन	द्वितीय श्रेणी	३२६
१३६	हरप्रसाद गुप्त	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१४३	रामनारायण गुप्त	,,	,, ,,	
१४७	अनूपसिंह राजपूत	,,	,, ,,	
१४६	पुरुषोत्तम दास मित्तल	,,	,, ,,	
१५०	सुधाकर जोशी	,,	,, ,,	
१५३	बद्रीप्रसाद परमार	,,	,, ,,	
१५४	रामस्वरूप	,,	द्वितीय श्रेणी	३५०
१५६	मोहनलाल पँड्या	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६८	तेजशंकर शर्मा	उदयपुर (हि० वि० पी०)	,, ,,	
१७३	प्रभूदयाल	उरई	द्वितीय श्रेणी	३३८
१७४	अमरचंद	,,	,,	३१८
१७५	कृष्णनारायण सक्सेना	,,	,,	४०
१७७	श्रीराम गुप्त	,,	,,	३८
१७६	सरदारसिंह कुशवाहा	,,	,,	३४
१८०	जयदयाल	,,	,,	३५
१८२	वृन्दावन	,,	तृतीय श्रेणी	२८
१८३	वृजकिशोर	,,	द्वितीय श्रेणी	३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८४	दीनदयाल	उरई	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१८५	श्याम बिहारीलाल	,,	,, ,,
१८६	प्रेम शंकर	,,	,, ,,
१८७	रामविलास प्रसाद	एकमा	,, ,,
१८८	हरदेव प्रसाद सिंह	,,	,, ,,
१९०	विन्देश्वरी प्रसाद शर्मा	एरई (पटना)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१९१	रामलखन सिंह	,,	,, ,,
१९२	रामप्रवेश सिंह	,,	,, ,,
१९३	बसन्त सिंह	,,	,, ,,
१९४	रणधीर प्र० सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४५ [वि० यो० गणित]
१९५	द्वारिका प्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५७ [वि० यो० गणित]
१९६	रामेश्वर प्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४०२ [वि० यो० गणित]
१९७	सीताराम मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी २९२
१९८	रामनन्दन सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३८८
१९९	विन्देश्वरी सिंह	,,	,, ३३५ [वि० यो० गणित]
२०५	नन्दकिशोर खन्ना	करांची	द्वितीय श्रेणी ३४१
२०७	अर्जुनदास धवण	,,	तृतीय श्रेणी ३०२
२१०	मुरारीलाल मिश्र	,,	,, ३११
२११	श्याम सुन्दर सेठी	,,	द्वितीय श्रेणी ३४२
२३२	रामचन्द्र सिंह	कड़सर	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
२३३	कपिलदेव प्रसाद	,,	,, ,,
२३५	कु० शकुन्तला बाई	कन्नौद	,, ,,
२३८	सीताराम व्यास	,,	,, ,,
२३९	मुद्रिकाप्रसाद सिंह	करनौती	विभाजित प्र० के अनुसार
२४०	राजबल्लभ	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२४१	कृष्ण बल्लभप्रसाद सिंह	करनौती	अ० ३ नि० ४ के अनु
२४२	बलदेवप्रसाद सिंह	,,	,, ,,
२४३	सीताराम सिंह	,,	विभा० प्रणाली के अनु
२४४	ज्वालाप्रसाद माथुर	कराहल	अ० ३ नि० ४ के अनु
२४५	रामसेवक पंडित	,,	,, ,,
२४६	कृपाशंकर शर्मा	,,	,, ,,
२४७	हरप्रसाद	,,	,, ,,
२४६	रामभरोसा शर्मा	,,	,, ,,
२५०	जगन्नाथप्रसाद शर्मा पाठक	,,	,, ,,
२५१	रविशंकर मुद्गल	,,	,, ,,
२५३	राधाबल्लभ शर्मा	,,	,, ,,
२५४	देवीशंकर शर्मा	,,	,, ,,
२७७	नारायणदास मीमाणी	कलकत्ता (माहे०)	,, ,,
२८०	दुर्गादेवी श्रीवास्तव	कलकत्ता (तुलसी सा०)	तृतीय श्रेणी ३१
२९८	नथमल सराफ	कलकत्ता (सें०हि०हा०)	,, २६ [वि० यो० गणित]
२९९	राजनारायण सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २८ [वि० यो० गणित]
३००	विजयकुमार राय	,,	द्वितीय श्रेणी ३५ [वि० यो० गणित]
३०१	नारायण सराफ	,,	तृतीय श्रेणी २६
३०२	प्रभूदयाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३४ [वि० यो० गणित]
३०३	महावीरप्रसाद साह	,,	तृतीय श्रेणी २६६
३०५	गोरखनाथ राय	,,	द्वितीय श्रेणी ३३ [वि० यो० गणित]
३०६	श्रीप्रकाश ओझा	,,	,, ३४० [वि० यो० गणित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
३०८	रामअवधेश सिंह	कसाय	द्वितीय श्रेणी	३९५
			[वि० यो० गणित]	
३०९	मुलकुल्ट श्री० रामचन्द्र मूर्त्ति	काकिनाडा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
३१०	केशवप्रसाद बागला	कानपुर (सना०ध०)	,,	,,
३१५	गोविन्दप्रसाद त्रिपाठी	कानपुर (डी·ए·वी·)	,,	,,
३१७	पुष्पलता सक्सेना	,,	,,	,,
३१८	गजनारायण अग्निहोत्री	,,	,,	,,
३१९	प्रकाशदत्त शुक्ल	,,	,,	,,
३२०	रामदयालु तिवारी	कालपी	द्वितीय श्रेणी	३६१
३२१	राजबहादुर श्रीवास्तव	,,	प्रथम श्रेणी	४५४
			[वि० यो० गणित]	
३२२	ज्योतिस्वरूप मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी	३३२
३२३	वासुदेव तिवारी	,,	,,	३७५
३२४	बालगोविन्द गुप्त	,,	प्रथम श्रेणी	४२२
३२७	त्रिवेणी माधव मिश्र	काँचरापाड़ा	द्वितीय श्रेणी	३५०
३२९	रामपति तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी	२६६
३३५	मुरलीधर मिश्र	कालाकाँकर	विभाजित प्र० के अनुसार	
३३६	रामेश्वर प्रसाद उपाध्याय	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
३३७	भारत प्रसाद मौर्य	,,	,,	,,
३३८	राघवप्रसाद उपाध्याय	,,	,,	,,
३३९	दुर्गाप्रसाद तिवारी	,,	,,	,,
३४०	शिवभवन पांडेय	,,	,,	,,
३४१	जगन्नाथ प्रसाद	,,	,,	,,
३४६	विन्देश्वरी ठाकुर	कालिम्पोग	विभाजित प्र० के अनुसार	
३४७	रामबली लाल	काशी (सें० हि० स्कूल)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
३४८	रामनयन मिश्र	,,	,,	,,
३४९	जङ्गबहादुर सिंह	,,	,,	,,
३५०	मुन्शी सिंह	,,	,,	,,
३५१	शुभ नारायन चौबे	,,	तृतीय श्रेणी	३१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३५२	प्रेमराज जैन	काशी (सें० हि० स्कूल)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
३५३	निहालचन्द जैन	,,	,, ,,
३५४	सरस्वती देवी	,,	,, ,,
३५५	कालिन्दी लाल	,,	तृतीय श्रेणी २८६
३५८	कृष्णदास अग्रवाल	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
३५६	दुर्गाप्रसाद गुप्त	,,	,, ,,
३६०	बाबूलाल गुप्त	,,	,, ,,
३६१	शान्ति देवी मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३८
३६३	जीतनारायण लाल	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
३६४	नन्दगोपाल दुबे	काशी (उदय प्र०)	द्वितीय श्रेणी ३२
३६५	रामप्यारेलाल	,,	तृतीय श्रेणी ३१३
३६६	रामसूरत पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३५०
३६७	विजयप्रताप सिंह	,,	,, ३४८
३७४	ताराचंद लोढ़ा	किशनगढ़	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
३८१	ब्रजकिशोर सिंह	कुँआगढ़ी	विभाजित प्र० के अनुसार
३८३	इन्तलाल झा	,,	,, ,,
३८६	बाबू रामानन्दप्रसाद सिंह	कुरथौल	तृतीय श्रेणी २५३
३८८	रघुनन्दन साहु	कुरथौल	,, २५१
३६०	रामचन्द्र साहु	,,	,, २७१
३६२	रामगति सिंह	,,	,, ३०८
३६८	कृष्णगोपाल शर्मा	कोटा (भा० स०)	द्वितीय श्रेणी ३२२
४०१	कालूराम	,,	अ० ३ नि० ४ अनुसार
४०४	रामेश्वर गुप्त	,,	,, ,,
४०६	गायत्री देवी सक्सेना	,,	,, ,,
४०७	चन्दालाल थोलम्बिया	कोटा	,, ,,
४०८	कृष्ण वर्मा	,,	,, ,,
४०६	नन्दलाल शर्मा	,,	,, ,,
४१०	हीरालाल जैन	,,	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
४१३	कालू सिंह	कोटा	द्वितीय श्रेणी	३५०
४१४	जीतमल जैन	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
४१५	बाबू खां	कोंच	,,	,,
४१६	मदन मोहन	,,	,,	,,
४१७	तुलसीराम यादव	,,	,,	,,
४१८	द्वारिकाप्रसाद	,,	,,	,,
४२०	कृष्णमाधव उर्फ राधारमण	,,	,,	,,
४२१	यमुनाप्रसाद राय	खगड़िया	,,	,,
४२२	गायत्री देवी	,,	,,	,,
४२३	मुरलीधर सिंह	,,	,,	,,
४२४	तुलसी लाल शाह	खगौल	विभाजित प्र० के अनुसार	
४२५	रामदेव सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	२६१
४२६	देवनन्दन सिंह	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
४२७	लक्ष्मीनारायण गुप्त	खिलचीपुर	,,	,,
४२८	राधाकृष्ण वारेढ़	,,	,,	,,
४३१	हीरासिंह वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	२७५
४३३	बद्रीप्रसाद जोशी	,,	द्वितीय श्रेणी	३४४
४४०	भानुप्रताप सिंह	खुर्जा	तृतीय श्रेणी	२८७
४४१	हरप्रसाद पांडे	,,	द्वितीय श्रेणी	३१५
४४२	बसन्ती देवी	खैर	,, ,,	४१७ [वि० यो० ग०]
४४३	बोधी मण्डल	गढ़वनैली	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
४४५	रामसेवक प्रसाद गुप्त	,,	,,	,,
४४६	वेदानन्द झा	,,	,,	,,
४४८	हजारीलाल विश्वास	,,	,,	,,
४६१	ब्रजनंदन सिंह	गया	,,	,,
४६२	कृष्णचन्द्र नारायण मिश्र	,,	,,	,,
४६३	श्याम सुन्दर व्यौहार	गाड़रवारा	,,	,,
४६५	मुकुट विहारी वर्मा	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४६६	गोवर्धनदास तापड़िया	गाडरवारा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
४६७	राघवेन्द्र सिंह	,,	,, ,,
४७५	सत्य नारायण मिश्र	गोलभूरी	,, ,,
४७६	रासविहारी दूबे	,,	तृतीय श्रेणी २७३
४७८	रामभवन सिंह	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
४८१	शिवचन्द्र दीक्षित	गोला गोकरणनाथ	द्वितीय श्रेणी ३८४ [वि० यो० गणि०]
४८४	काशीप्रसाद दीक्षित	,,	तृतीय श्रेणी २६४
४८६	धर्मदेव सिंह	गोविन्दापुर (पलकाश्रम)	द्वितीय श्रेणी ३१७
४८७	मथुरा पांडेय	,,	,, ३५४
४८८	विक्रम सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३०५
४८९	नन्दकिशोर प्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३४४
४९०	नन्दकिशोर प्रसाद सिंह	,,	,, ३४६
४९१	शिवबालक सिंह	गोरिया कोठी	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
४९२	राजकिशोर सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २८०
४९४	महादेव प्रसाद यादव	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
४९५	भागवत सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २९३
४९७	जगन्नाथ प्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३३३
४९८	जनकप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २९४
५००	कृष्णकुमारी देवी	,,	विभाजित प्र० के अनुसार
५०३	अशर्फी ठाकुर	,,	द्वितीय श्रेणी ३४०
५०५	रामवृक्ष सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३११
५०७	गयाप्रसाद श्रीवास्तव	घुघली	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
५०८	रामचन्द्रप्रसाद	,,	,, ,,
५०९	श्रीपतिप्रसाद आर्य	,,	,, ,,
५१०	रामरेखालाल श्रीवास्तव	,,	,, ,,
५१५	कन्हैयालाल	,,	,, ,,
५१८	दयासागर तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी २७७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५२०	वासुदेवप्रसाद तिवारी	बुघली	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
५२१	यमुनाप्रसाद सिंह	घोसी	,, ,,
५२२	द्वारिकाप्रताद	चतरा	,, ,,
५२३	गुरू अंगदप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३२२
५२४	देववंशी पांडे	,,	तृतीय श्रेणी ३०७
५२६	रामेश्वरप्रसाद	चाईवासा	द्वितीय श्रेणी ३४५
५२७	सुरेन्द्रप्रकाश कुलश्रेष्ठ	चिड़ावा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
५२८	लादूराम स्वामी	,,	,, ,,
५३१	बनवारीलाल भोमिया	,,	द्वितीय श्रेणी ३६८
५३२	मूलसिंह राजपूत	,,	,, ३२७
५३४	रामनाथ वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३००
५३५	देवीप्रसाद विढाठ	,,	द्वितीय श्रेणी ३४०
५३७	महेशचन्द्र दुबे	,,	,, ३२८
५४५	वैद्यनाथ सिंह	छपरा (राजपूत हाई स्कूल)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
५४६	कृष्णकुमारी देवी	,,	,, ,,
५४७	शिवनाथ गिरि	,,	,, ,,
५४८	रामेश्वर प्रसाद	,,	,, ,,
५४९	ईश्वरशरण श्रीवास्तव	,,	,, ,,
५५०	श्रीनाथ सिंह	,,	,, ,,
५५२	सुरेश बहादुर सिंह	,,	,, ,,
५५३	उपेन्द्रनारायण सिंह कपूर	,,	,, ,,
५५४	हरिशंकर प्रसाद सिंह	,,	,, ,,
५५५	रामजी प्रसाद सिंह	,,	,, ,,
५५७	राघवप्रसादसिंह (द्वितीय)	,,	,, ,,
५५८	रामगोविन्द पांडेय	,,	,, ,,
५५९	बलिराम प्रसाद	,,	,, ,,
५६०	हरिशंकर प्रसाद यादव	,,	,, ,,
५६१	रामशकल प्रसाद यादव	,,	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
५६२	शत्रुघ्न सिंह	छपरा (राजपूत हा० स्कूल)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
५६३	कुशेश्वर प्रसाद सिंह	”	” ”	
५६४	राघव प्रसाद सिंह (प्रथम)	”	” ”	
५६५	कृष्ण मुरारी	छपरा (लोक०)	द्वितीय श्रेणी	३१६
५७१	सुग्रीवसिंह यादव	जखराना	तृतीय श्रेणी	२५६
५७८	मुन्शीलाल	”	”	२६१
५७९	शिवसेवक त्रिवेदी	जगदलपुर	द्वितीय श्रेणी	३१७
५८०	रामकरण तिवारी	”	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
५८४	मनोहरलाल तिवारी	जबलपुर	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
५८५	रूपचन्द्र जैन	”	” ”	
५८६	विनय शंकर अवस्थी	”	” ”	
५८७	द्वारका प्रसाद अग्रवाल	”	” ”	
५८८	सुदर्शन पांडे	”	” ”	
५८९	निहाल सिंह गौतम	”	” ”	
५९०	केशव प्रसाद शुक्ल	”	” ”	
५९१	देवेन्द्रनाथ तिवारी	”	” ”	
५९९	मनोहर सिंह	जावद	” ”	
६०२	मोहम्मद सईद खाँ कादरी	”	” ”	
६०८	अनन्दीलाल	”	” ”	
६१२	गोविन्द प्रसाद गुप्त	जैतपुर	” ”	
६१३	जगमोहन प्रसाद सिंह	”	” ”	
६१९	नंदकिशोर शर्मा	जयपुर	द्वितीय श्रेणी	३४१
६२०	कमला देवी	जोधपुर (सरदार०हा०)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
६२१	मोहनराज पुनमिया	”	द्वितीय श्रेणी	३४[illegible]
६२४	पुखराजचंद चन्द बी भंडारी	”	”	३३[illegible]
६२५	कमलादेवी गोविल	”	तृतीय श्रेणी	२८६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१२६	सोहनराज पारख	जोधपुर (सरदार हा०)	प्रथम श्रेणी	४३०
१३०	जगदीशपुरी	,,	तृतीय श्रेणी	२७१
१३३	गनपतलाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३३५
१३४	रिखबराज भंडारी	,,	तृतीय श्रेणी	२३६
१३५	गुमानमल लोढ़ा	,,	द्वितीय श्रेणी	३५७
१४२	रामसम्मुख सिंह	जौनपुर (क्षत्रिय का०)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१४३	रामशंकर तिवारी	,,	,,	,,
१४४	लालमोहन वर्मा	झरिया	तृतीय श्रेणी	३०५
१४७	झल्लू झा	झाझा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१४८	नरेश्वर प्रसाद सिंह	,,	,,	,,
१५०	कुंवर बलवान सिंह	झांसी	,,	,,
१५१	राजाराम श्रीवास्तव	,,	,,	,,
१५२	प्रभूदयाल कायस्थ	,,	,,	,,
१५४	चतुरबिहारी माथुर	झुंझनू	तृतीय श्रेणी	३०८
१५५	जगदीश प्रसाद टीबड़ेवाल	,,	,,	३००
१५६	ज्वाला प्रसाद	,,	,,	२८०
१५७	लीलाधर जी	,,	द्वितीय श्रेणी	३४४
१५८	रामगोपाल	,,	,,	३३५
१५९	रूकमानन्द	,,	,,	३५५
१६०	विश्वनाथ शर्मा	,,	'विभा० प्रणाली के अनुसार	
१६१	सत्यनारायण	टाण्डा	द्वितीय श्रेणी	३४५
१६२	कृष्णमोहन	,,	तृतीय श्रेणी	३०८
१६६	गणपति प्रसाद मण्डल	टीका पट्टी	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६७	जयलाल मण्डल	,,	,,	,,
१६८	रामपति प्रसाद मण्डल	,,	,,	,,
१६९	दुर्गाप्रसाद सिंह	,,	,,	,,
…०	विनोद बिहारी बर्मा	डेहरी	तृतीय श्रेणी	२६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६८१	गुलाबचंद राम	डेहरी	तृतीय श्रेणी ३१
६८२	नथमल भालोठिया	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसा
६८३	अवधेश राय	डुमरांव	,, ,,
६८४	कपिलदेव मिश्र	,,	,, ,,
६८५	राधाकृष्ण तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी २८
६८७	विश्वनाथ राय	,,	,, ३०
६८८	श्रीमती शकुन्तला कुमारी	डुमरी	द्वितीय श्रेणी ३४
६९०	सिद्धनाथ प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी २७
६९३	जवाहर सिंह	,,	,, ३०
७१४	धर्मानन्द जोशी	ताकुला (गण० वि०)	अ० ३ नि० ४ के अनुसा
७१६	पुष्कर लाल	ताड़ीखेत	,, ,,
७१७	पीताम्बर उप्रेती	,,	,, ,,
७१८	गोविन्द सिंह रावत	,,	,, ,,
७१९	भैरवदत्त पांडेय	,,	,, ,,
७२४	बहादुर सिंह	,,	विभा० प्रणाली के अनुसा
७२५	रामदयाल विद्यार्थी	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसा
७२६	रामभजन	तिर्वा	,, ,,
७२७	रामदयाल	,,	,, ,,
७२८	सत्यवती देवी त्यागी	,,	,, ,,
७२९	इन्द्र विक्रमसिंह राठौर	,,	द्वितीय श्रेणी ३७
७३०	रमेशचन्द्र मिश्र	,,	,, ३५
			[वि० यो० भूगो०
७३१	शान्तिचरण वाजपेयी	,,	,, ३६
७३२	मन्नीलाल गुप्त	,,	,, ३८
			[वि० यो० गणि०
७३३	जगदीश शरण त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ३६
७३४	मदनमोहन लाल चतुर्वेदी	,,	प्रथम श्रेणी ४४
			[वि० यो० गणित
७३५	शशिप्रभा देवी	तिलौथू	अ० ३ नि० ४ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३३८	नकछेदी मण्डल	तेमथा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
३३९	चन्द्रशेखर झा	,,	,, ,,
३४०	शेख असरफ	,,	,, ,,
३४१	रामभज माली	,,	,, ,,
३४२	रामनरेश चौधरी	,,	,, ,,
३४३	सुन्दर मिश्र	,,	,, ,,
३४५	सिताबी पंडित	,,	,, ,,
३४८	फूलचन्द गुप्त	तेंदूखेड़ा (सागौनी)	द्वितीय श्रेणी ३८८
३४९	कोदूलाल जैन	,,	,, ३९८
३५०	बलराम गुप्ता	,,	,, ३३६
३५१	शालिगराम गुप्ता	,,	,, ३५५
३५७	केदारनाथ गुप्त	दबोह	विभा० प्रणाली के अनुसार
३५८	शहज़ाद खाँ	,,	,, ,,
३६०	पृथ्वी नारायण चौधरी	दलसिंह राय	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
३६१	युगल किशोर	,,	,, ,,
३६२	चन्द्रकला देवी	,,	,, ,,
३६३	सुक्ति पोद्दार	,,	,, ,,
३६४	राजेश्वर प्रसाद सिंह	,,	,, ,,
३६५	रामउदगार दास	,,	,, ,,
३६६	लक्ष्मीकान्त मिश्र	,,	,, ,,
३६७	यदु चौधरी	,,	,, ,,
३६८	उमेश्वर प्रसाद सिंह	,,	,, ,,
३६९	अम्बिका राय	,,	,, ,,
३७०	शरन बिहारी माथुर	,,	,, ,,
३७३	नत्थू सिंह	दातागंज	तृतीय श्रेणी २७०
३७४	सुखवीर सिंह	,,	,, २४९
३७६	वीरेन्द्रपाल सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४०
३७८	शिवचरणलाल शर्मा	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
७७९	विलास सिंह	दातागंज	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
७८०	अखिलेश द्विवेदी	दिघवारा	,,	,,
७८१	दारोगा सिंह	,,	,,	,,
७८२	नवलकिशोर सिंह	,,	,,	,,
७८३	धर्मनाथ राय	,,	तृतीय श्रेणी	२७
७८५	रामसरेखराय	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
७८६	कमलाप्रसाद सिंह	,,	,,	,,
७८७	जगदीश नारायण अग्रवाल	दिल्ली	,,	,,
७८८	जयगोपाल भटनागर	,,	,,	,,
७८९	ज्ञानप्रकाश श्रीवास्तव	,,	,,	,,
७९०	मंगलराम ताम्रकार	दुर्ग	,,	,,
७९१	आदित्यनारायण तिवारी	दुबे छपरा (बलिया)	तृतीय श्रेणी	२६
७९२	शिवदर्शन पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी	३३
७९३	रामदेव महतो	देव	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
७९४	परशुराम	,,	,,	,,
७९६	अयोध्याबाई वर्मा	देवास	विभा० प्रणाली के अनुसार	
८०५	महेन्द्रकुमार	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
८०६	बालकृष्ण	,,	,,	,,
८०७	कमलकुमार	,,	,,	,,
८११	गेंदालाल	,,	,,	,,
८१३	कमला मद्रास	देहरादून (कन्या गुरुकुल)	,,	,,
८१५	बालेश्वर सिंह	देसरी	,,	,,
८१६	रामछबिला सिंह	,,	,,	,,
८१७	रामराजी महतो	,,	,,	,,
८१८	वागेश्वरसिंह	,,	,,	,,
८१९	लक्ष्मीनारायण पांडेय	,,	,,	,,
८२१	ब्रजकिशोर शर्मा	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८२२	कमलदेव सिंह	देसरी	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
८२३	रामनारायण राय	,,	,, ,,
८२६	किशोरीप्रसाद जायसवाल	,,	,, ,,
८२७	वैद्यनाथ सिंह	,,	,, ,,
८२८	लालताप्रसाद जायसवाल	,,	,, ,,
८३०	ज्ञानप्रकाश	देहरादून (डी०ए०वी०)	,, ,,
८३३	रामसिंह	,,	,, ,,
८३४	प्रह्लाद स्वरूप भटनागर	,,	,, ,,
८३५	पूर्णचन्द्र कुकरेती	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार
८३६	करतार सिंह	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
८३८	दिनकरराव शर्मा	धार	,, ,,
८३९	प्रह्लाद नारायण	,,	,, ,,
८४०	कृष्णराव	,,	,, ,,
८४१	सुन्दरसिंह चौहान	,,	,, ,,
८४२	रामानन्द तिवारी	,,	,, ,,
८४३	विमला बाई	,,	,, ,,
८४४	हरिभाऊ दुबे	,,	,, ,,
८४७	शिवचरन लाल	धौलागढ़	,, ,,
८४९	शिवलाल श्रीवास्तव	,,	,, ,,
८५०	नसीर मुहम्मद	,,	,, ,,
८५२	महेशचन्द्र	नगीना	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
८५३	विश्वदेव	,,	,, ,,
८५६	करनसिंह कुशवाहा	,,	,, ,,
८५८	विजेन्द्र कुमार लाहौरी	,,	,, ,,
८५९	मदनलाल बाँकोलिया	नवलगढ़	,, ,,
८६३	बलवीर सिंह	नजीबाबाद	द्वितीय श्रेणी ३४२
८६६	लवकुमार सिंह परमार	,,	तृतीय श्रेणी ३०४
८६९	रामदेव वाजपेयी	नानपारा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८७१	रामेश्वर सिंह	नयागाँव	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
८७२	जनार्दन राय	,,	,, ,,
८७४	जनार्दन मिश्र	,,	,, ,,
८७५	सुरेन्द्रमोहन सिंह	,,	,, ,,
८७६	कामेश्वर मण्डल	,,	,, ,,
८७७	उपेन्द्र कुमार	,,	,, ,,
८७८	चन्द्रमणि कुँवर	,,	,, ,,
८७९	तेजनारायण चौधरी	,,	,, ,,
८८०	कपूरी मिश्र	,,	,, ,,
८८१	वासुदेव सिंह	,,	,, ,,
८८२	जगदेव प्रसाद यादव	,,	,, ,,
८८३	रामस्वरूप यादव	,,	,, ,,
८८४	रामसुन्दर सिंह	नवादा	द्वितीय श्रेणी ३३४
८८५	रामसागर आर्य	नवाबगंज	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
८८६	केशवदेव शर्मा	,,	,, ,,
८८८	तेज बहादुर सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २६३
८८९	अम्बिका प्रसाद त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ३२८
८९०	राघवराम त्रिपाठी	,,	तृतीय श्रेणी २६६
८९२	गौरीशंकर सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३३९
८९३	श्यामचन्द्र पांडेय	,,	तृतीय श्रेणी २४०
८९४	शिवकुमारलाल श्रीवास्तव	,,	,, २७०
८९६	रामधुरन्धर	नागौद	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
८९७	अब्दुल सलाम	,,	तृतीय श्रेणी २८८
८९८	मनोहरलाल कोठारी	नाथद्वारा	विभा० प्रणाली के अनुसार
९०१	बंसीलाल मरहठा	,,	तृतीय श्रेणी २७७
९०२	रामचन्द्र प्रसाद सिंह	नालन्दा विद्या०	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
९०३	जगन्नाथ प्रसाद गुप्त	,,	,, ,,
९०४	शिवनन्दन प्रसाद सिंह	,,	,, ,,
९०५	कार्यानन्द सिंह	,,	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
९०६	रामकृष्ण प्रसाद सिंह	नालन्दा विद्या०	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
९०७	राजेन्द्रप्रसाद सिंह	निरञ्जनपुर	तृतीय श्रेणी	३०५ [वि० यो० गणित]
९०८	चन्द्रेश्वर नारायण सिंह	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
९०९	कलदेवसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३७९
९१०	प्रतापसिंह मंडलोई	निसरपुर	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
९११	कामेश्वर प्रसाद	पचम्बा	,,	,,
९१२	शिवप्रसाद छापरिया	,,	,,	,,
९१५	पूजाराम पाँडेय	पटना	,,	,,
९१६	केदारनाथ	,,	,,	,,
९१८	मदनमोहन सहाय	,,	,,	,,
९१९	शशिबाला सहाय	,,	,,	,,
९२०	सोना मुखी सिन्हा	,,	,,	,,
९२१	भोलानाथ पांडेय	पटियाली गंगा	,,	,,
९२२	सूबेदार	,,	,,	,,
९२३	चन्द्रकान्ता देवी	,,	,,	,,
९२४	डालचंद शर्मा	,,	,,	,,
९२५	सुरेन्द्रप्रसाद मिश्र	पड़रौना	,,	,,
९२६	राजदेव मिश्र	,,	,,	,,
९२७	वैजनाथ प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी	२५९
९३३	दामोदर मिश्र	,,	,,	२९०
९३४	राजनारायण श्रीवास्तव	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
९३६	गयासिंह सेंगर	,,	,,	,,
९३७	वैद्यनाथ सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३४१
९३९	मेवालाल श्रीवास्तव	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
९४१	कैलाशसिंह	,,	,,	,,
९४३	रामगोपाल बंका	,,	,,	,,
९४४	राजवल्लभ सहाय	,,	,,	,,
९४६	मातादीन अग्रवाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३२९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
९४८	प्रभाकर झा	पण्डौल	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
९५०	वैद्यनाथ चौधरी	,,	,, ,,
९५१	मोहन झा	,,	,, ,,
९५२	सुरेश मिश्र	,,	,, ,,
९५३	मुक्तिनाथ ओझा	,,	,, ,,
९५५	नवीनाथ ठाकुर	,,	,, ,,
९५७	त्रिभुवन मिश्र	,,	,, ,,
९६०	परमेश्वरीदयाल श्रीवास्तव	पन्ना	तृतीय श्रेणी २६०
९६१	संतकुमार श्रीवास्तव	,,	प्रथम श्रेणी ४६५ [वि. यो. भूगो., गणि., अंग्रे.]
९६८	भगवानदास	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार
९७०	काशीप्रसाद कलार	,,	,, ,,
९७२	खुन्नीलाल	प्रयाग (सम्मेलन)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
९७५	बिन्देश्वरीप्रसाद गुप्त	,,	,, ,,
९७६	आनन्दशंकर श्रीवास्तव	,,	,, ,,
९८०	तारादेवी	,,	,, ,,
९८२	रामसजीवनलाल गुप्ता	,,	,, ,,
९८३	हरिशंकर श्रीवास्तव	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार
९८६	रामकिशोर वैश्य	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
९८७	बजरंगदत्त मिश्र	,,	,, ,,
९८८	ब्रह्मदेवराय	,,	,, ,,
९९०	रामदाससिंह यादव "योगेश"	,,	,, ,,
९९१	चन्द्रपाल सिंह	,,	,, ,,
९९५	ओंकारनाथ यादव "अंबुज"	प्रयाग (हि० वि० पीठ)	,, ,,
९९७	एन० वेलो थुधन नायर	,,	,, ,,
९९९	सूर्यनारायण मिश्र	प्रसण्डो	,, ,,
१०००	योगेन्द्र बिहारीलाल	परताबगढ़	द्वितीय श्रेणी ३४१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१००१	माधवराव यादव	परतावगढ़	द्वितीय श्रेणी	३७३
१००२	जगदीश नारायणलाल श्रीवास्तव	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० गणि०]	४५४
१००४	बैजनाथ सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३५८
१००५	उमरावअली	,,	प्रथम श्रेणी [वि० गणि० कृषि०]	४२०
१००६	अमरपाल सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३३४
१००७	अवधेश नारायणसिंह	,,	,,	३८३
१००८	जानकीप्रसाद सिंह	,,	,,	३६३
१००९	हीरालाल श्रीवास्तव	,,	,,	३१८
१०१०	रघुवीर सिंह	,,	,,	३७३
१०११	महावीरप्रसाद मिश्र	,,	,, [वि० यो० गणि०]	४१३
१०१३	रामलालसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३२१
१०१४	गुलाबचन्द खत्री	,,	तृतीय श्रेणी	३०६
१०१७	राधाकृष्ण राय	परसागढ़	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० गणि०]	३१५
१०१९	रघुवीरराय शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी [वि० यो० गणि०]	२८०
१०२०	भोलानाथ मेहता	,,	तृतीय श्रेणी	२८५
१०२२	रामस्वरूप	परासिया	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१०२५	पांडुरंग कोल्चलवार	,,	,,	,,
१०२८	कल्याणसिंह हसौदी	पिपलौदा	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१०३५	गंगा मण्डल	पोठिया	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१०३७	अयोध्याप्रसाद सिंह	,,	,,	,,
१०३८	चन्द्रशेखर उर्फ़ फूलचंद पालीवाल	पोहरी (आदर्श० वि०)	,,	,,
१०३९	हरीकृष्ण शुक्ल	,,	,,	,,
१०४१	अर्जुनलाल वर्मा	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१०४२	गौरीशंकर	पोहरी (आदर्श वि०)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१०४३	ख्यालीराम त्रिवेदी	,,	,,	,,
१०४४	रमाकान्त	,,	,,	,,
१०४६	भैरोंलाल	,,	,,	,,
१०४८	सीताराम शर्मा	,,	,,	,,
१०४९	कन्हैयालाल	,,	,,	,,
१०५१	भुवनमोहन शर्मा	,,	,,	,,
१०५४	कामताप्रसाद सिंह	फखरपुर	,,	,,
१०५६	लालबहादुर यादव	,,	,,	,,
१०५७	चन्द्रिका सिंह	फतुहा	,,	,,
१०६२	भगवानदीन सिंह	फूलपुर	तृतीय श्रेणी	२४०
१०६६	रामखेलावन द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी	३१६
१०६७	छोटेलाल पांडे	,,	तृतीय श्रेणी	२७२
१०७३	द्वारकाप्रसाद वर्मा	,,	,,	२५२
१०७५	सूर्यलषण पांडे	,,	,,	२७३
१०७७	सुशीला देवी	फैजाबाद	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१०७९	वीरेन्द्र कुमार	,,	,,	,,
१०८०	मदनगोपाल	बक्सर	द्वितीय श्रेणी	३४६
१०८२	ब्रजनाथ चौबे	,,	,,	३५४
१०८३	राधाकृष्ण पांडेय	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१०८४	रामसिंघासन लाल	,	तृतीय श्रेणी	३००
१०८५	मोहनलाल	,,	,,	२७१
१०८६	मुक्तेश्वरप्रसाद सिंह	,,	,,	३१२
१०८७	बिहारीलाल कजरीलाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३५२
१०९१	रमाकान्त मिश्र	बकुलहर	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१०९२	बृद्धिचन्द तुलस्यान	बगहा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१०९४	वैद्यनाथप्रसाद	,,	,,	,,
१०९५	रामजी राम	,,	,,	,,
१०९६	गोपालप्रसाद	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१०९७	विश्वनाथ प्रसाद	बगहा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१०९८	प्रहलादराम तुलस्यान	,,	,,	,,
११०२	भूरदानसिंह	बगड़	,,	,,
११०३	गोपीलाल रूँगटा	,,	,,	,,
११०४	गजानन्द गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी	३१०
११०६	राधेश्याम	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१११०	हरीसिंह यादव	,,	,,	,,
११११	मृदुलता देवी	बड़मेर	द्वितीय श्रेणी	४१३
१११४	सुशीला देवी	,,	,,	३६४
१११७	यमुना केलकर	बड़वानी	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१११९	वरदीचंद सराफ	बदनावर (धार० स्टेट)	,,	,,
११२२	बच्चूप्रसाद मिश्र	,,	,,	,,
११२८	किशनदेव	बदायूँ (हि० विद्यापीठ)	,,	,,
११२९	प्रेम प्यारेलाल	,,	,,	,,
११३०	रामनारायण	,,	,,	,,
११३१	रामलाल	,,	,,	,,
११३२	फूलचंद	,,	,,	,,
११३६	कान्तप्रसाद	बनमनखी	,,	,,
११३७	गोनर यादव	,,	,,	,,
११४०	बलदेवप्रसाद यादव	,,	,,	,,
११४१	विश्वनाथ झा	,,	,,	,,
११४२	रामकृष्ण यादव	,,	,,	,,
११४४	देवनारायण कारक	,,	,,	,,
११४५	विन्देश्वरीप्रसाद गुप्त	,,	,,	,,
११४६	सरयूप्रसाद सिंह	,,	,,	,,
११४८	रामसुख उपाध्याय	बम्बई (मार०)	तृतीय श्रेणी	२७१
११५१	बलवीरसिंह झटौड़ा	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
११५२	ओटरमल	,,	,,	,,
११५७	विश्वनाथ (थर्ड)	बम्बई (मार० क०)	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११५८	जगन्नाथप्रसाद शर्मा	बम्बई (मा.क.हा.)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
११५९	ताराचंद सोढ़ानी	,,	,, ,,
११६०	घनश्याम सोढ़ानी	,,	,, ,,
११६१	मोहनराज जैन	,,	,, ,,
११६२	लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी	,,	,, ,,
११६४	रामगोपाल रूईया	,,	,, ,,
११६५	केशवदेव खेतान	,,	,, ,,
११६६	जगदीशप्रसाद त्रिपाठी	,,	,, ,,
११६८	ललितचन्द्र	,,	,, ,,
११६९	चंपालाल संकलेचा	,,	,, ,,
११७०	सज्जनमल मुथा	,,	,, ,,
११७१	ओमप्रकाश शर्मा	,,	,, ,,
११७२	भेरूमल	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार
११७४	रामेश्वर प्रसाद	ब्यावर (शान्ति मि० जैन)	,, ,,
११७८	चिमनलाल गुप्ता	बाँसवाड़ा	,, ,,
११९१	मानशंकर जोशी	,,	,, ,,
११९६	बैजनाथ पांडेय	बाँसी (र० हा०)	अ० ३ नि० ४ के नुसार
११९७	जयश्री प्रसाद	,,	,, ,,
१२००	युगल किशोर श्रीवास्तव	,,	,, ,,
१२०१	मोतीलाल श्रीवास्तव	,,	,, ,,
१२०४	राजेन्द्रनाथ	,,	,, ,,
१२०५	लक्ष्मण सिंह	,,	,, ,,
१२०६	तपानाथ सुकुल	,,	,, ,,
१२०७	हंसराज सिंह	,,	,, ,,
१२०८	भुलई तिवारी	,,	,, ,,
१२१०	रमादेवी 'रमा'	बरहज	,, ,,
१२११	श्यामजीरा देवी	,,	,, ,,
१२१२	सुमंगला कुमारी	बरेली	,, ,,
१२१४	राजेन्द्रकुमार	,,	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१२१५	रतिकान्त दुबे	बलबड्डा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१२१६	व्रजकिशोर मिश्र	,,	,,	,,
१२१७	अवधेश झा	,,	,,	,,
१२१८	श्रीधर मिश्र	,,	,,	,,
१२२०	शिवधारी राम	बलिया (यमुना सं०)	तृतीय श्रेणी	२७२
१२२१	सागरराम	,,	द्वितीय श्रेणी	३५७
१२२४	दिवाकर सिंह	बहदुरा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१२२५	बद्रीनाथ ठाकुर	,,	,,	,,
१२२६	उदयसिंह	,,	,,	,,
१२२८	विश्वमोहन झा	बहादुरगंज	,,	,,
१२२६	गंगाप्रसाद सिंह शास्त्री	,,	,,	,,
१२३०	परमेश्वरलाल दास	,,	,,	,,
१२३१	हलधर प्रसाद् सिंह	,,	,,	,,
१२३२	अनवीर प्रसाद	,,	,,	,,
१२३३	गोरखनाथ सहाय श्रीवास्तव	,,	,,	,,
१२३५	मदनमोहन अग्रवाल	बहराइच	,,	,,
१२४४	अनसूया देवी भारद्वाज	बाराँ	,,	,,
१२४५	पुष्पा बाई	,,	,,	,,
१२४६	मूलचन्द्र शर्मा	,,	,,	,,
१२४८	अब्दुल करीम	,,	,,	,,
१२४६	नाथूलाल शर्मा	,,	,,	,,
१२५०	मदनमोहन शर्मा	,,	,,	,,
१२५१	गोविन्दहरि शर्मा	,,	,,	,,
१२५२	चन्द्रकिशोरी देवी	बाँसगाँव (हि.सा.वि.)	,,	,,
१२६१	व्रजमोहन भट्ट	बीकानेर	,,	,,
१२६२	चन्द्रशेखर सिंह	बेगूसराय	,,	,,
१२६३	विद्यापति सिंह	,,	,,	,,
१२६४	राधाकृष्ण चौधरी	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१२६६	योगानन्द झा	बेगूसराय	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१२६७	रामबुझावन चौधरी	,,	द्वितीय श्रेणी	३४०
१२७२	योगेश्वर गोप	,,	,,	३८३
१२७३	रामनाथ सिंह	,,	,,	३७२
१२७४	केरावीन सेराफीन	बेतिया (बि० हा०)	तृतीय श्रेणी	३१३
१२७७	रामप्रसाद लाल	बेलागंज	,,	३१०
१२७८	किशोरी राम	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१२७९	शिवाजीराव देशमुख	बैतूल	,,	,,
१२८१	कमलकुमार	,,	,,	,,
१२८८	केशर कुमारी जैन	भरतपुर	,,	,,
१२९०	प्रियनाथ मिश्र	भवानीपुर (कलकत्ता)	तृतीय श्रेणी	३०७
१२९४	दीपनारायण 'दीप'	भवानीपुर (पूर्णियां)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१२९५	भैरूलाल	भिंडर	,,	,,
१२९६	देवीलाल शर्मा	,,	,,	,,
१२९९	भंवरलाल शर्मा	भेलसा	,,	,,
१३००	कु० हेमलता देवी लूम्बा	,,	द्वितीय श्रेणी	३१५
१३०२	बाबूलाल पाटोदी	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१३०५	कृष्णगोपाल चतुर्वेदी	,,	,,	,,
१३०६	कन्हैयालाल	,,	,,	,,
१३०७	कपूरचंद जैन	,,	,,	,,
१३१०	सन्तूलाल	,,	,,	,,
१३११	अमरचंद अजमेरा	,,	,,	,,
१३१२	जवाहरलाल छाजेड़	भोपालगढ़	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१३१३	रामचन्द्र शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	३०३
१३१४	कल्याणमल सुराणा	,,	,,	२७०
१३१५	पोलाराम छीपा	,,	द्वितीय श्रेणी	३२८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१३१६	भँवरलाल बाफणा	भोपालगढ़	द्वितीय श्रेणी	३३५
१३२३	जान मोहम्मद कुरैशी	मगरौनी (दि० जैन पाठ०)	तृतीय श्रेणी	२८६
१३२४	प्रतापसिंह लदौरिया	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१३२५	बाबूलाल श्रीवास्तव	,,	,,	,,
१३२६	प्यारेलाल श्रीवास्तव	,,	,,	,,
१३२७	राजाराम शर्मा	,,	,,	,,
१३२८	हरदेवप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी	३२३
१३२९	महाराज सिंह तिलोकचंद	,,	तृतीय श्रेणी	२५८
१३३०	चन्द्र शेखर त्रिवेदी	मतलूपुर	द्वितीय श्रेणी	४०४
१३३१	भगवतीप्रसाद शर्मा	मथुरा (गो०गो०हि०पी०)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१३३२	उर्मिला देवी	,,	,,	,,
१३३३	गोपाल कुलश्रेष्ट	,,	,,	,,
१३३४	माधौस्वरूप गुप्ता	,,	,,	,,
१३३५	खिल्लूसिंह शर्मा	,,	,,	,,
१३३६	शिवदयाल कुलश्रेष्ठ	,,	,,	,,
१३३७	हरिविलास शर्मा	,,	,,	,,
१३३९	गोविन्द शरण शर्मा	,,	,,	,,
१३४०	सत्यप्रकाश कायस्थ कुलश्रेष्ठ	,,	,,	,,
१३४१	खचेरमल शर्मोपाध्याय	,,	,,	,,
१३४२	फकीरचन्द शर्मा	,,	,,	,,
१३४३	ठाकुर दास वर्मा	,,	,,	,,
१३४४	जगन्नाथ प्रसाद गुप्ता	,,	,,	,,
१३४५	श्यामदेव शर्मा	,,	,,	,,
१३४६	सियाराम शर्मा	,,	,,	,,
१३४८	भोगीराम शर्मा	,,	,,	,,
१३४९	जगदीश शरण दुबे	,,	,,	,,
१३५०	भारतभूषण गौतम	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३५२	देवीचरण शर्मा	मथुरा (गां०गो०हि०पी०)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१३५४	किशोरी लाल	,,	,, ,,
१३५५	फूलचन्द शर्मा	,,	,, ,,
१३५६	मथुरा प्रसाद शर्मा	,,	,, ,,
१३५९	बलवन्त राव डालके	मनावर	तृतीय श्रेणी २६५
१३६४	श्यामसुन्दर	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१३६५	प्रभूशंकर	,,	,, ,,
१३६७	महेन्द्र गिरि	मंडी धनौरा (मुरादाबाद)	,, ,,
१३७०	रुक्मणीदेवी शर्मा	,,	,, ,,
१३७३	लक्ष्मीदेवी	,,	,, ,,
१३७४	बलदेवप्रसाद यादव	मधीपुरा (भागलपुर)	,, ,,
१३७६	भोला झा	,,	,, ,,
१३७७	जलेश्वरप्रसाद मण्डल	,,	,, ,,
१३७९	जयदेव महतो	मधुवर्ना (दरभंगा)	तृतीय श्रेणी २८६
१३८१	मोहन झा	,,	द्वितीय श्रेणी ३४१ [वि० यो० गणित]
१३८२	प्रभूनारायणलाल दास	,,	द्वितीय श्रेणी ३५४ [वि० यो० गणित]
१३८३	जगतनारायण दत्त	,	द्वितीय श्रेणी ३४२
१३८५	श्यामबिहारी मल्ल	मधुबन (भा०वि०मं०)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१३८६	रामानन्द मल्ल	,,	,, ,
१३८७	गौरीशंकर मल्ल	,,	,, ,,
१३८८	नवलकिशोर यादव	,,	,, ,,
१३८९	महाप्रसाद उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ३४८ [वि० यो० गणित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३९०	विजयशंकर मल्ल	मधुबन (भा० वि० मं०)	द्वितीय श्रेणी ३१६ [वि० यो० गणित]
१३९१	भोलानाथ गुप्त	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१३९२	रामअधार सिंह	,,	,, ,,
१३९६	मंगलप्रसाद सिंह	मधेपुर (दरभंगा)	प्रथम श्रेणी ४६४ [वि० यो० गणित]
१३९७	मेघपति सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४४ [वि० यो० गणित]
१३९८	रामनन्दन सिंह	,,	प्रथम श्रेणी ४२७ [वि० यो० गणित]
१३९९	विन्देश्वर पाठक	,,	द्वितीय श्रेणी ४०० [वि० यो० गणित]
१४०१	लक्ष्मीवतीदेवी लीला	,,	द्वितीय श्रेणी ३९७
१४०२	गुंजेश्वरी ओझाईन	,,	,, ३४४
१४०३	त्रिवेणी देवी	,,	,, ३५७
१४०४	श्यामकुमारीदेवी लीला	,,	प्रथम श्रेणी ५१२ [वि० यो० ग० तथा सं०]
१४०७	सरूपलाल महतो	,,	द्वितीय श्रेणी ३२५ [वि० यो० गणित]
१४०८	आनन्द खवास	,,	प्रथम श्रेणी ४३२ [वि० यो० गणित]
१४११	श्यामप्रसाद लाल	महदेवा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१४१२	कुञ्जबिहारी सिंह	,,	,, ,,
१४१३	राजेन्द्रप्रसाद सिंह	,,	,, ,,
१४१६	राजकिशोरप्रसाद सिंह	,,	,, ,,
१४१७	अच्युतानन्द सिंह	,,	,, ,,
१४२२	रामलवलीन सिंह	महनार	तृतीय श्रेणी २९७
१४२३	देवनारायण शर्मा	,,	,, ३०४
१४२४	अब्दुल हमीद	,,	तृतीय श्रेणी ३३२

१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१४२६	रवीन्द्रनाथ वर्मा	महनार	द्वितीय श्रेणी	३५०
१४२८	बोताराम	महोबा (डी० ए० वी० हाई स्कूल)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१४३१	ब्रजगोपाल त्रिवेदी	,,	,,	,,
१४३२	बाबूलाल अग्रवाल	,,	,,	,,
१४३४	रमाशंकर	,,	,,	,,
१४३६	मूलचन्द त्रिवेदी	,,	,,	,,
१४३७	अतबल	,,	,,	,,
१४४३	सहदेव सिंह	महेश	,,	,,
१४४६	प्रभूलाल	मांगरोल	,,	,,
१४४७	नेमचन्द	,,	,,	,,
१४५२	विजयकृष्ण	मांडले	,,	,,
१४५३	राम प्रवेश	,,	,,	,,
१४५४	नरेन्द्रनाथ कुमार	,,	,,	,,
१४५५	मथुराप्रसाद राय	,,	,,	,,
१४५७	एन० आर० सुब्राह्मणी	,,	,,	,,
१४६२	बलदेव प्रसाद	मुंगरा बादशाहपुर	,,	,,
१४६३	भगवन्तदास	,,	,,	,,
१४६५	मुख्यनाथ सिंह	,,	,,	,,
१४६६	सुचित झा	मुँगेर (लोकल बोर्ड)	,,	,,
१४७१	दिनेश्वरप्रसाद दास	,,	,,	,,
१४७४	डोमन मंडल	,,	,,	,,
१४७५	त्रिवेणी सिंह	,,	,,	,,
१४७७	जगदीशप्रसाद सिंह "प्रपन्न"	,,	,,	,,
१४८०	महेशप्रसाद साहु	,,	,,	,,
१४८४	यशोधर झा	,,	,,	,,
१४८५	अमृत महतो	,,	,,	,,
१४८७	जयकान्त झा	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१४८८	घनश्याम झा	मुंगेर (लोकल बोर्ड)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१४८९	धीरजप्रसाद सिंह	,,	,,	,,
१४९०	केदारनाथ मिश्र	,,	,,	,,
१४९१	चक्रधर मिश्र	,,	,,	,,
१४९२	डोमन मिश्र	,,	,,	,,
१४९३	सिंहेश्वर झा	,,	,,	,,
१४९५	दामोदर सिंह	मुजफ्फ़र नगर	,,	,,
१४९६	हरीहर शरण राजवंशी	,,	,,	,,
१४९९	दयाराम त्यागी	,,	द्वितीय श्रेणी	३२०
१५००	अभय सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	२८२
१५०१	मामचन्द्र जैन	,,	द्वितीय श्रेणी	३६१ [वि. यो. गणि.]
१५०२	चत्तर सिंह	,,	,,	३४१
१५०३	लक्ष्मीचन्द्र	,,	,,	३५१
१५०४	बलभद्र सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	२७९
१५०७	श्रीकृष्ण वार्ष्णेय	मुरार (ग्वालियर)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१५०९	बालकिशन अग्रवाल	,,	,,	,,
१५१०	उदय द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी	३२९
१५१८	देवी भवानी मेहरोत्रा	मुजफ़्फ़रपुर	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१५२०	इन्द्रकान्ता पाठक	मुरादाबाद	प्रथम श्रेणी	४६३ [वि. यो. इति., गणि.]
१५२१	शिवचन्द्र नागर	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१५२२	राममूर्त्ति देवी	,,	,,	,,
१५२३	कामेश्वरशरण गुप्त	,,	,,	,,
१५२४	शारदा देवी	,,	,,	,,
१५२५	बिमला देवी	,,	,,	,,
१५२६	कृष्णकान्ता कटारा	,,	प्रथम श्रेणी	४५७ [वि. यो. गणि. ड्राइंग]
१५२७	सुशीला देवी	मेरठ	तृतीय श्रेणी	३१२
१५२८	बलीराम सिंह	मैनपुरा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५३१	रामलषण ठाकुर	मैनपुरा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१५३३	हरस्वरूप शर्मा	मैनपुरी	,, ,,
१५३४	सतीशचन्द्र शुक्ल	,,	,, ,,
१५३६	चौधरी जयनारायण सिंह	मोहानियाँ	,, ,,
१५३७	रामसुरेशलाल श्रीवास्तव	,,	,, ,,
१५३८	शारदाप्रसाद लाल	,,	,, ,,
१५३९	राधामोहन लाल	,,	,, ,,
१५४२	नारायण स्वरूप	मौरावाँ	,, ,,
१५५१	उमाशंकरप्रसाद श्रीवास्तव	रकसौल	,, ,,
१५५३	शंकरलाल मसकरा अग्रवाल	,,	,, ,,
१५५४	नागेन्द्रप्रसाद वर्मा	,,	,, ,,
१५७३	लालशंकर व्यास	राजगढ़	तृतीय श्रेणी २५३
१५७५	बावनलाल ददरया	राजनाँद गाँव	त्रिभा० प्रणाली के अनुसार
१५७६	रामाश्रय शाह	रानीगंज (बर्दमान)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१५८१	तारकेश्वर तिवारी	रामगढ़	,, ,,
१५८२	गिरीश नारायण मिश्र	,,	,, ,,
१५८४	राधेश्याम तिवारी	,,	,, ,,
१५८५	रामनरेश राय	,,	,, ,,
१५८६	वचनसिंह	,,	,, ,,
१५८७	रामबिहारी लाल	,,	,, ,,
१५८८	धर्मदेव सिंह	,,	,, ,,
१५९०	रामदास राम	,,	,, ,,
१५९७	कमलाकर उपाध्याय	रामपुरा	द्वितीय श्रेणी ३३५
१५९८	दयाकान्ती भार्गव	रायबरेली	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१५९९	गोमती देवी श्रीवास्तव	रीवाँ (बाल समिति)	तृतीय श्रेणी २७७
१६०२	रामलखन लाल दास	रोसड़ाघाट	,, २६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१६०३	कु० प्रियभाषिणी	रंगून	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६०४	कु० कमला देवी	,,	,, ,,	
१६०७	नरेन्द्र कुमार भार्गव	लखनऊ	द्वितीय श्रेणी	३३६
१६१४	ओंकार सिंह	लखावटी	,,	३६८
			[वि० यो० गणि०]	
१६२०	विद्यावती शर्मा	लश्कर	तृतीय श्रेणी	२७६
१६२२	राजनारायण जौहरी	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६२३	भगवती प्रसाद	,,	,, ,,	
१६२६	दिनेश्वर सिंह	लहरिया सराय	द्वितीय श्रेणी	३३८
१६२९	रघुनन्दन दास	,,	तृतीय ,,	२८२
१६३८	कृष्णचन्द्र गुप्त	लक्ष्मणगढ़	विभाजित प्र० के अनुसार	
१६३९	इन्दुबाला देवी	लक्ष्मीपुर	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६४०	उग्रमोहन दास	,,	,, ,,	
१६४१	बौधनारायण सिंह	,,	,, ,,	
१६४२	रामखेलावन सिंह	,,	,, ,,	
१६४३	कामेश्वर प्रसाद चन्द	,,	,, ,,	
१६५१	मदनलाल बजाज	वर्धा	,, ,,	
१६५२	केशरीमल बड़जाते	,,	,, ,,	
१६५५	मेकचन्द देव गीरकार	वारा सिवनी	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६५६	उमासराव मन्दुरकर	,,	,, ,,	
१६५८	विष्णुस्वरूप गुप्ता	,,	तृतीय श्रेणी	२६६
१६५९	दुर्गावती बाई	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६६०	रामचरण लाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३६८
१६६१	कु० सुशीला पचौली	,,	,,	३७६
१६६२	पुन[illegible] ठक्केला	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६६३	श[illegible]ा भट्ट	,,	,, ,,	
१६६६	कैलाश पति झा	विहपुर	तृतीय श्रेणी	२८५
१६६७	रामचन्द्र मिश्र	,,	,, ,,	२७६
१६६८	नागेश्वर झा नागेश	,,	,, ,,	३१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६६९	फूदन मिस्त्री	विहपुर	तृतीय श्रेणी २७६
१६७१	हरीप्रसाद लाल	वैना	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१६७२	हरीशंकर लाल	,,	,, ,,
१६७३	मुनीश्वर लाल	,,	,, ,,
१६७४	रामप्रकाश चौबे	,,	,, ,,
१६७५	सौदागर चौबे	,,	,, ,,
१६७६	बलदेव पांडे	,,	,, ,,
१६७७	रामाधार राय	,,	,, ,,
१६७८	जगन्नाथ पांडेय	,,	,, ,,
१६७९	विश्वनाथप्रसाद सिंह	,,	,, ,,
१६८०	कन्हैया मजुवाड़े	वैद्यनाथधाम	,, ,,
१६८१	शशांक मोहन झा	,,	,, ,,
१६८३	रामरूपप्रसाद शाह	,,	,, ,,
१६८५	आत्माराम सरेवार	,,	,, ,,
१६८६	यदुवीर चौधरी	,,	,, ,,
१६८७	सहदेवप्रसाद झा	,,	,, ,,
१६८९	नरेशप्रसाद झा	,,	,, ,,
१६९३	नारायण सिंह	शाहगंज	द्वितीय श्रेणी ३६५
१६९५	वासुदेव तिवारी	,,	,, ३७५
			[वि० यो० गणि०]
१६९६	मुरलीधर सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २७७
१६९७	चन्द्रद्वीप पांडे	,,	,, ३१४
१६९८	फूलचन्द्र दुबे	,,	द्वितीय श्रेणी ३३२
१६९९	कामताप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३११
१७०५	राजप्रताप सिंह	शाहपुर	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१७०८	वासुदेव राय	,,	,, ,,
१७०९	उपेन्द्र झा	,,	,, ,,
१७१०	श्रीनिवास सिंह	,,	,, ,,
१७११	सत्यनारायण सिंह	,,	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१७१२	मुहरसिंह	शिकारपुर	प्रथम श्रेणी	४२४
१७१३	विजयपाल सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी	३८४
१७१४	मुन्शीलाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३४७
१७१५	चौखे सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	३०७
१७१६	रामख्यालीराम	शिवपुर दियर	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१७२२	वशिष्टनारायण सिंह	शेरघाटी	द्वितीय श्रेणी	३४०
१७२३	बदरीनाथ दुबे	,,	,,	३६२
१७२६	लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी	,,	,,	३२२
१७२७	अमृत ठाकुर	,,	,,	३३७
१७२९	गोविन्द पाठक	,,	तृतीय श्रेणी	२८०
१७३०	रामखेलावन लाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३३६
१७३१	यदुनंदन पंडित	,,	तृतीय श्रेणी	२८८
१७३२	ब्रजेन्द्रनारायण जमुआर	शुभई	द्वितीय श्रेणी	३१७
१७३४	रामलषण लाल	,,	तृतीय श्रेणी	२८९
१७३६	विश्वेसर सिंह	सकरा	,,	३१२
१७३७	रामकृष्ण ठाकुर	,,	द्वितीय श्रेणी	३७७ [वि. यो. गणि.]
१७३९	रघुनाथ प्रसाद ठाकुर	,,	,,	३७६ [वि. यो. गणि.]
१७४०	देवनंदन सिंह	,,	,,	३३१
१७४१	मधु मेहतो	,,	द्वितीय श्रेणी	३५३
१७४२	रामशोभित ठाकुर	,,	,,	३८१ [वि. यो. गणि.]
१७४४	विष्णुधारी सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	२६७
१७४५	रामस्वारथ लाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३३१
१७४६	रामदेव ठाकुर	,,	तृतीय श्रेणी	३१०
१७४८	महावीरप्रसाद गुप्त 'रजनीश'	संगरिया मंडी	विभा० प्रणाली के अनुसार	
१७४९	आशाराम शर्मा	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१७५०	बलदेव लाल	सगुनी	विभा० प्रणाली के अनुसार
१७५२	शिववर्ण पाठक	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१७५३	परमानंद शर्मा 'अरविंद'	,,	,, ,,
१७५८	उदयेश्वर प्रसाद सिंह	सड्डीहा	,, ,,
१७५६	सत्यनारायणलाल मंडल	,,	,, ,,
१७६१	युगलप्रसाद सिंह	सड्डीहा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१७६२	रामवर्ण सिंह	,,	,, ,,
१७६३	जंगबहादुर सिंह	,,	,, ,,
१७६४	राजेश्वर प्रसाद सिंह	,,	,, ,,
१७६६	बम्भोला प्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २७
१७७३	मूलचंद छीपा	सरदार शहर	,, २६
१७७४	मोहनलाल शर्मा	,,	,, ३४
१७८६	मदनपाल सिंह	सलकिया	द्वितीय श्रेणी ३४
१७८७	जगदीश नारायण त्रिवेदी	,,	,, ३२
१७८८	रामाज्ञा पांडे	,,	तृतीय श्रेणी २६
१७९१	विरंचीसिंह	सलारपुर	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१७९२	भूपनारायण मिश्र	,,	,, ,,
१७९३	बल्लभ मिश्र	,,	,, ,,
१७९५	झिंगुर सिंह	सहसी	,, ,,
१७९६	ठा० दीनेश्वरप्रसाद सिंह	,,	,, ,,
१७९७	मथुराप्रसाद सिंह	,,	,, ,,
१७९८	रब्बी गोप	,,	,, ,,
१७९९	जयकान्त झा	,,	,, ,,
१८००	महेश्वर प्रसाद सिंह	,,	,, ,,
१८०१	कुलदीप नारायण सिंह	,,	,, ,,
१८०२	प्रेमनारायण सिंह	,,	,, ,,
१८०३	लक्ष्मण मोरेश्वर बेलापुरकर	सागर	,, ,,
१८०४	सत्यनारायण पांडे	सारनाथ	,, ,,
१८०६	धर्मानन्द	,,	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८०९	त्रिलोकीनाथ अग्रवाल	सिकन्दरा राऊ	विभा० प्रणाली के अनुसार
१८१०	बाँकेसिंह वर्मा	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१८११	प्रकाशदेव शर्मा	,,	,, ,,
१८१२	भूदेवप्रसाद शर्मा	,,	,, ,,
१८१३	गंगासिंह वर्मा	,,	,, ,,
१८१४	रामचन्द्र गिरि	सिंगिया	,, ,,
१८१५	सत्यदेव प्रसाद शाही	,,	,, ,,
१८१६	बचनू सिंह	,,	,, ,,
१८१७	सुरेन्द्र प्रताप सिंह	सिंगरामऊ	द्वितीय श्रेणी ३४१ [वि० यो० गणित]
१८१८	भगवान प्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४१ [वि० यो० गणित]
१८१९	श्रीराम मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ४०७ [वि० यो० गणित]
१८२०	रामसुभग सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५७ [वि० यो० गणित]
१८२१	रामनाथ सिंह	,,	प्रथम श्रेणी ४३० [वि० यो० गणित]
१८२२	हरीप्रसाद द्विवेदी	,,	प्रथम श्रेणी ४२५ [वि० यो० गणित]
१८२३	रामाधार मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३३३ [वि० यो० गणित]
१८२४	रामचन्द्र तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ३५८ [वि० यो० गणित]
१८२७	लक्ष्मीकान्त उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ३७८ [वि० यो० गणित]
१८२८	चन्द्रभूषण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४५ [वि० यो० गणित]
१८२९	शिवमूर्ति तिवारी	,,	प्रथम श्रेणी ४२९ [वि० यो० गणित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८३०	हरिबिलास	सिंगरामऊ	द्वितीय श्रेणी ३५३ [वि० यो० गणित]
१८३१	मातादीन गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी ४०२ [वि० यो० गणित]
१८३२	रामयज्ञ त्रिपाठी	,,	प्रथम श्रेणी ४३१ [वि० यो० गणित]
१८३३	महातम सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३४६ [वि० यो० गणित]
१८३४	केदारनाथ सिंह	,,	प्रथम श्रेणी ५२९ [वि.यो. भूगो.,ग., धर्म.]
१८३५	जयप्रसाद मिश्र	,,	प्रथम श्रेणी ४२४ [वि० यो० गणित]
१८३६	मोतीलाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३३९
१८३७	चन्द्रदेव सिंह	,,	,, ३९५ [वि० यो० गणित]
१८३८	जगदीशकान्त दुबे	,,	द्वितीय श्रेणी ३७९ [वि० यो० गणित]
१८४०	भानुप्रताप	,,	द्वितीय श्रेणी ४१५ [वि० यो० भूगोल, गणित]
१८४१	लल्लाप्रसाद दुबे	,,	द्वितीय श्रेणी ३४४ [वि० यो० गणित]
१८४२	कृपाशंकर शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी ३८४ [वि० यो० गणित]
१८४५	रामशिरोमणि तिवारी	,,	प्रथम श्रेणी ४३८ [वि० यो० गणित]
१८४६	रामप्रसाद तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ३६० [वि० यो० गणित]
१८४७	कमलाप्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३३६ [वि० यो० गणित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८५६	गिरिजाशंकर	सिरसागंज	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१८५७	शान्तिदेवी फरसैया	,,	तृतीय श्रेणी २८६
१८६०	रामप्रसाद सिंह	सीयर (डी० ए० वी० हा० स्कूल)	,, २८९ [वि० यो० ग०]
१८६१	सुदर्शन सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३३७ [वि० यो० ग०]
१८६२	काशीनाथ लाल	,,	तृतीय श्रेणी ३०९
१८६३	देवकुमार मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३४३ [वि० यो० ग०]
१८६५	पारसनाथ लाल	,,	,, ३५९ [वि० यो० ग०]
१८६६	शिवप्रसाद सिंह	,,	,, ३५९ [वि० यो० ग०]
१८६९	इन्द्रदेव सिंह	,,	,, ३३२ [वि० यो० ग०]
१८७३	रामनगीना देवी	सुरही	द्वितीय श्रेणी ३७६
१८७४	सोनवन्तिया देवी	,,	,, ३८३
१८७९	सूर्यनारायण पाँडे	सुल्तानपुर	विभा० प्रणाली के अनुसार
१८८२	वासुदेव शर्मा	सूरजगढ़	द्वितीय श्रेणी ३३१
१८८४	चिरंजीलाल जैन	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१८८५	चिरंजीलाल शर्मा	,,	,, ,,
१८९०	अजबलाल सिंह	सेवदह	तृतीय श्रेणी २९८
१८९१	रामवरण सिन्हा	,,	,, २९४
१८९७	रामप्रताप सिंह	,,	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१८९८	प्रसिद्ध महाराज "प्रवीण"	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार
१९०३	सीताराम विश्वास	सोनाली	अ० ३ नि० ४ के अनुसार
१९०४	कृष्णकान्त मंडलोई	हरदा	,, ,,
१९०५	माधव मलतारे	,,	,, ,,
१९०६	कु० कमलादेवी वर्मा	,,	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१६०८	रामकृष्ण जोशी	हरदा	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६१०	कुलपति शर्मा	हजारीबाग	द्वितीय श्रेणी	३६६
१६११	रतनलाल जैन	,,	,,	३६३
१६१२	रामेश्वर प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी	२६५
१६१४	राजेन्द्रप्रसाद चौबे	,,	,,	२६६
१६१५	कुंजबिहारी सिंह	,,	तृतीय श्रेणी	२७[illegible]
१६१६	दिनेश कुमार चौबे	,,	द्वितीय श्रेणी	३२८
१६१६	उर्मिलादेवी यादव	हरदी	प्रथम श्रेणी	४३[illegible]
			[वि० यो० गणित]	
१६२०	जगतारनी देवी	,,	प्रथम श्रेणी	४३[illegible]
१६२२	चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय	हाथरस	द्वितीय श्रेणी	४०६
			[वि० यो० गणित]	
१६२३	बनवारीलाल अग्रवाल	,,	द्वितीय श्रेणी	३५५
			[वि० यो० गणित]	
१६२४	उदयचन्द्र	,,	प्रथम श्रेणी	४३५
१६२५	भगवान सहाय पचौरी	,,	,,	४२१
१६२६	राजकुमार मीतल	,,	द्वितीय श्रेणी	३१५
१६२६	हीरालाल अग्रवाल	,,	,,	४१५
			[वि० यो० ग०]	
१६३१	मदनगोपाल माहेश्वरी	,,	तृतीय श्रेणी	३०५
१६३२	महेन्द्रकुमार जैन	,,	द्वितीय श्रेणी	३४[illegible]
			[वि० यो० ग०]	
१६३३	लक्ष्मीनारायण शर्मा	,,	,,	३६०
१६३५	शंकरलाल चतुर्वेदी	,,	प्रथम श्रेणी	४३४
			[वि० यो० ग० विज्ञान]	
१६४२	कृष्णलाल	हैदराबाद (सिंध)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१६४४	नागोराव	हैदराबाद (दक्षिण)	,, ,,	
१६४६	माँगीलाल	,,	,, ,,	
१६४७	बद्रीविशाल पित्ती	,,	तृतीय श्रेणी	२५६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१९६८	नन्दीप्रसाद झा	रानीगंज (पूर्णियां)	अ० ३ नि० ४ के अनुसार	
१९७०	युगेश्वर चौधरी	शुभई	तृतीय श्रेणी	२६५

मुनीमी परीक्षा

१२	गोपालदास	काशी (सेंट्रल हिन्दू स्कूल)	प्रथम श्रेणी [वि० यो० सा० मुनीमी ग०]	२८८
१३	बैजनाथदास अग्रवाल	,,	प्रथम श्रेणी [वि० यो० मुनीमी गणित]	२७२
१४	ब्रजमोहनदास अग्रवाल	,,	अ० ८ नि० ५ के अनुसार [वि० यो० मुनीमी ग०]	
२०	गोपाललाल	कोटा	द्वितीय श्रेणी	१८२
२१	परमानन्द	,,	अ० ८ नि० ५ के अनुसार	
२२	कृष्णचन्द्र भारतीय	,,	विभा० प्रणाली के अनुसार	
२३	महेन्द्रकुमार	खींचन	द्वितीय श्रेणी	२०२
२४	कृष्ण	,,	,,	२०३
२६	समीरमल	,,	,,	२०२
२८	देवराज	,,	,, [वि० यो० मुनीमी गणित]	२२३
३१	नेमकुमार	,,	द्वितीय श्रेणी	२२६
४१	गणपतलाल	गुलाबपुरा	प्रथम श्रेणी [वि० यो० सा०, मु० ग०]	२९२
४६	हरीराम टीबड़ेवाला	चिड़ावा	द्वितीय श्रेणी	२३५
५०	द्वारकाप्रसाद टीबलेवाला	झुंझनू	,,	१९४
५२	गोविन्दराम रानासरिया	,,	,,	२११
५४	साँवलराम बजाज	,,	,,	२००
७५	भगवानदास चौहान	मौलासर	अ० ८ नि० ५ के अनुसार [वि० यो० मुनीमी गणित]	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी कोविद परीक्षा (नवम्बर सन् १९४१)

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१	किशोरीलाल शर्मा	अबोहर (पंजाब)	प्रथम श्रेणी	१७६
२	सत्यवती मेहरा	दिल्ली	द्वितीय श्रेणी	१२५
३	फूलोदेवी खन्ना	,,	,,	१४०
४	कुमारी सुशीला देवी	,,	प्रथम श्रेणी	१७६
५	कृष्ण कुमारी जयरथ	,,	,,	२१५
६	उमा भटनागर	,,	,,	१७६
७	जगदम्बा भटनागर	,,	प्रथम श्रेणी	१५६
९	जनक दुलारी	,,	,,	१६७
१०	सुशील कुमारी भारद्वाज	,,	,,	१६२
११	यशोदा रानी माथुर	,,	तृतीय श्रेणी	१०८
१२	कुमारी ओम प्यारी	,,	,,	१०५
१३	कान्ता देवी जैन	,,	,,	९७
१४	सन्त सम्पूर्ण सिंह "शील"	प्रयाग (सम्मेलन कार्यालय)	,,	१०९
१५	शम्भोनाथ	मद्रन	प्रथम श्रेणी	१६२
१७	प्रेमनाथ धोतदार	,,	तृतीय श्रेणी	९५
१८	ओमप्रकाश जेतली	रावलपिण्डी	द्वितीय श्रेणी	१२८
१९	गंगादेवी भार्गव	,,	,,	१२१
२०	लाजवती भार्गव	,,	प्रथम श्रेणी	१६७
२१	गार्गी शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	९४
२२	रामकिशन अग्रवाल	,,	,,	९१
२३	रामस्वरूप शर्मा	,,	प्रथम श्रेणी	१६६
२४	चित्रानंद शर्मा	लाहौर (राष्ट्रभाषा) प्रचारक संघ	तृतीय श्रेणी	१०८
२५	महेन्द्रलाल शर्मा हुण्डू	,,	,,	१०८
२६	राजकुमारी खन्ना	,,	प्रथम श्रेणी	१७१
२७	कुमारी शकुन्तला	,,	द्वितीय श्रेणी	२११

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
२८	फूला रानी	लाहौर (राष्ट्रभाषा) प्रचार संघ	द्वितीय श्रेणी	१४४
२९	द्रौपदी देवी	,,	प्रथम श्रेणी	१५२
३०	कोमलापत्नि कृपानंदन	,,	द्वितीय श्रेणी	१२४
३१	आशाराम	,,	प्रथम श्रेणी	१५०
३२	विद्या व्यास	,,	तृतीय श्रेणी	९१
३३	सुदर्शन कुमारी मेहन	,,	,,	१०४
३४	सरस्वती देवी ठाकुर	शिमला (आ० ग० मि० स्कूल)	द्वितीय श्रेणी	१४९
३५	सरला देवी	,,	तृतीय श्रेणी	११९
३७	शान्ती देवी	,,	द्वितीय श्रेणी	१४३
३८	सुवीरमती	,,	तृतीय श्रेणी	१०८
३९	शकुन्तलादेवी	,,	,,	११०
४०	कौशल्यादेवी	,,	,,	९८
४२	लीलावती	,,	,,	१०६
४४	शान्तादेवी शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	१४७
४५	ठाकुर देवी	,,	प्रथम श्रेणी	१८०
४६	विमलादेवी	,,	,,	१८८
४७	कृष्णादेवी	,,	तृतीय श्रेणी	११२
४८	लीलावती	,,	,,	१०६
४९	कुन्तीदेवी	,,	,,	१०५
५०	सरोजकुमारी जोशी	,,	द्वितीय श्रेणी	१३४
५१	राजकुमारी	,,	तृतीय श्रेणी	९४
५२	लीलावती खौसला	,,	प्रथम श्रेणी	१६७
५३	कृष्णकुमारी	,,	द्वितीय श्रेणी	१२२
५६	लम्बोदर लँगू	श्रीनगर (हि० हा० स्कूल)	,,	१३४
५७	त्रिलोकीनाथ तिकू	,,	,,	१२६
५८	प्रेमनाथ डेंबी	,,	तृतीय श्रेणी	१०९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
५९	इन्दिरा देवी	श्रीनगर (हि० हा० स्कूल)	प्रथम श्रेणी [वि० यो० साहित्य]	२३७
६०	कुमारी भगवती रैणा	,,	तृतीय श्रेणी	११६
६१	सावित्री कपूर	दिल्ली	प्रथम श्रेणी	१५३

हिन्दी परिचय परीक्षा (नवम्बर सन् १९४१)

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
१	कुमारी कृष्णदेवी बाली	जम्मू (आर्य कन्या पाठशाला)	द्वितीय श्रेणी	१३७
२	दयावती	,,	तृतीय श्रेणी	१०१
३	शक्तिदेवी	,,	प्रथम श्रेणी	२०७
४	इन्द्रजीत कौर	,,	द्वितीय श्रेणी	१४७
५	जगन्नाथ पण्डिता	मट्टन	तृतीय श्रेणी	११७
७	श्रीनाथ पण्डिता	,,	द्वितीय श्रेणी	१४०
८	प्रेमनाथ किच्चलू	,,	तृतीय श्रेणी	९९
१०	काशीनाथ काच्चरू	,,	तृतीय श्रेणी	१०२
११	विश्वनाथ काच्चरू	,,	,,	११४
१२	अर्जुननाथ तिक्कू	,,	,,	१०२
१४	शम्भूनाथ शेर	,,	द्वितीय श्रेणी	१३१
१८	महता राधाकृष्ण दत्त	रावलपिन्डी	प्रथम श्रेणी	१५३
१९	नानकचन्द्र सेगन	,,	तृतीय श्रेणी	१११
२०	देवीदास वर्मा	,,	,,	१०५
२२	लाला साईंदास भाटिया	,,	द्वितीय श्रेणी	१२५
२३	कमला चावला	,,	,,	१३८
२४	शान्ताकुमारी	,,	प्रथम श्रेणी	१५०
२५	सन्तोष कुमारी चावला	,,	द्वितीय श्रेणी	१४५
२६	सरोज नागिया	,,	,,	१२३
२७	कौशल्या शर्मा	,,	,,	१३३
२८	कृष्णकुमारी कालड़ा	,,	,,	१४६
२९	शान्ता पोपली	,,	प्रथम श्रेणी	१५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
३०	लीलावती	रावलपिन्डी	प्रथम श्रेणी	१८७
३१	शान्तिदेवी	,,	,,	१५८
३२	भाग्यवन्ती	,,	द्वितीय श्रेणी	१३६
३३	नन्दकौल	,,	प्रथम श्रेणी	१५६
३४	रोहिणी नंदन दुबे	,,	,,	१५३
३५	महानाम	सारनाथ (बनारस)	,,	१४८
३६	टीकालाल नाम	श्रीनगर (हि० हा० स्कूल)	द्वितीय श्रेणी	१२१
४१	शोभाशंकर मट्टू	,,	,,	१२२
४३	गोपीनाथ (बीरा)	,,	तृतीय श्रेणी	११०
४४	नन्दलाल बातल	,,	प्रथम श्रेणी	१६०
४५	अमरनाथ कौल	,,	तृतीय श्रेणी	११५
४६	पृथ्वीनाथ कौल,	,,	द्वितीय श्रेणी	१४०
४७	भूपाल सिंह रावत	रावलपिन्डी	,,	१३०
४८	शंकर दत्त साठे	जम्मू	प्रथम श्रेणी	२०२

दयाशंकर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०
परीक्षा मंत्री,
हिन्दी-विश्वविद्यालय, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत् १९९८ (सन् १९४१) की पदक सूची :

संवत १९९८ (सन् १९४१) की परीक्षाओं के परिणाम के अनुसार निम्नलिखित परीक्षार्थियों को पदक दिये जाँयगे :—

उत्तमा परीक्षा

श्रीधर पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ८६, श्री हरिवल्लभ, केन्द्र—इन्दौर
मोहनलाल चौबे (रौप्य)—क्रम सं० ८६, " " " — "

मध्यमा परीक्षा

भट्ट पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ८३१, श्री भगवद्दास दुजारी, केन्द्र—चुरू
मध्य भारत हि० सा०सं० पदक (रौप्य)—क्रम सं० १८६, श्री चुन्नीलाल, केन्द्र—इन्दौर
श्री भगवान देवी बाजोरिया पदक, (स्वर्ण)—क्रम सं० ७६०, श्री सीतादेवी—केन्द्र
गौरिया कोठी, तथा क्रम सं० १९७४, श्री गोदावरी देवी, केन्द्र—रेवतीपुर
आगरा नागरी प्र० सभा पदक (रौप्य)—क्रम सं० १०७, श्री शीतलप्रसाद केन्द्र—आगरा
त्रिलोकीनाथ वर्मा पदक, (रौप्य)—क्रम सं० १५९३, श्री घनश्याम, केन्द्र—बारा
भारतेन्दु पदक, (रौप्य)—क्रम सं० ७०१, श्री सियाराम सक्सेना, केन्द्र, कोटा

प्रथमा परीक्षा

पूर्ण पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ५२६, श्री केदारनाथ सिंह, केन्द्र—सिंगरामऊ
शिवदेवी पदक(रौप्य)—क्रम सं० ११५, श्री कामताप्रसाद निगम, केन्द्र—इन्दौर
विजयेन्द्र पदक(रौप्य)—क्रम सं० १५७३, श्री लालशंकर व्यास, केन्द्र—राजगढ़
हनुमन्त पदक (रौप्य)—क्रम सं० ५३, श्री कुंवर इन्द्रपालसिंह "इन्द्र" केन्द्र—आगरा
भारतेन्दु पदक(रौप्य)—क्रम सं० ४१३, श्री कालूसिंह, केन्द्र—कोटा
ज्ञानवती पदक(स्वर्ण)—क्रम सं० १५२७, श्री सुशीलादेवी, केन्द्र—मेरठ

वैद्य विशारद परीक्षा

आयुर्वेद प्रचारिणी सभा प्रयाग पदक, (रौप्य)-क्रम सं० १०२, श्री रामदास शर्मा केन्द्र—बीकानेर

दयाशंकर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०
परीक्षा मन्त्री,
हिन्दी विश्वविद्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी विश्वविद्यालय की संवत् १९९८ की परीक्षाएँ

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य भिन्न भिन्न उपायों से सर्वमान्य राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रचार करना और उसके साहित्य को सब प्रकार से समुन्नत करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सम्मेलन द्वारा संस्थापित हिन्दी विश्वविद्यालय की ओर से उत्तमा, मध्यमा, प्रथमा, वैद्य विशारद, कृषि विशारद, शीघ्रलिपि विशारद, मुनीमी, अध्यापकी और राष्ट्रभाषा-प्रचार इत्यादि परीक्षाएँ ली जाती हैं। उत्तमा तथा मध्यमा परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को क्रमशः 'रत्न' और 'विशारद' की उपाधियाँ दी जाती हैं। इन परीक्षाओं की एक विशेषता यह है, कि ये हिन्दी माध्यम द्वारा ही ली जाती हैं, अतः अँग्रेजी न जानने वाले व्यक्तियों को भी इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर अपनी योग्यता बढ़ाने का सुअवसर प्राप्त है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार परीक्षाओं की व्यवस्था परीक्षा समिति की उपसमिति द्वारा वर्धा से होती है। इन परीक्षाओं तथा शीघ्रलिपि की परीक्षा को छोड़कर इस वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन की समस्त परीक्षाएँ ता० ७ नवम्बर सन् १९४१ को आरम्भ होकर ता० २० नवम्बर सन् १९४१ को समाप्त हुईं।

गत वर्ष हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद ने परीक्षाफल प्रकाशित करने के लिए स्थायी नियम बना दिया है। अतः वह जिस क्रम से कार्यालय में आता गया उसी क्रम से विश्वविद्यालय परिषद के स्वीकृत किये हुए नियमों के अनुसार हम उसे पत्रों में प्रकाशित करते गए। मध्यमा और उत्तमा परीक्षाओं के कुछ परीक्षकों से परीक्षाफल अधिक देर में प्राप्त होने के कारण उसे प्रकाशित करने में अनावश्यक विलम्ब हुआ। राष्ट्रभाषा-प्रचार परीक्षाओं को छोड़कर संवत् १९९७ में सम्मेलन परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या ३५१४ थी। इस वर्ष (संवत् १९९८) के परीक्षार्थियों की संख्या ४४३४ रही। गत वर्ष परीक्षा शुल्क की आय १८२१५) थी। इस वर्ष शुल्क की आय २४९६९) रही। संवत् १९८२ तक तो कुछ न कुछ वृद्धि होती रही किन्तु संवत् १९८३ से परीक्षार्थियों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। संवत् १९८३ से लगातार सं० १९९८ तक के परीक्षार्थियों की संख्या हम नीचे दे रहे हैं। इससे पाठकों को परीक्षाओं की प्रगति का ज्ञान भली भाँति हो जायगा :—

परीक्षार्थियों की संख्या

संवत्	जितने आवेदनपत्र आये	जो सम्मिलित हुए
१९८३	१५५६	१०३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत्	जितने आवेदन पत्र आये	जो सम्मिलित हुए
१९८४	२०५६	१३२६
१९८५	२३६६	१४३५
१९८६	२४५८	१६६२
१९८७	१७८३	१२६६
१९८८	१४७१	११६६
१९८९	१३७०	१११६
१९९०	१४१९	१२३१
१९९१	१५३५	१३१८
१९९२	१६५९	१४४९
१९९३	२०४७	१७७३
१९९४	२५२४	२०२८
१९९५	३००९	२४१७
१९९६	३९६१	३१७५
१९९७	४३५८	३५१४
१९९८	५२१६	४४३४

इस कोष्टक को देखने से स्पष्ट है कि परीक्षार्थियों की संख्या और परीक्षा शुल्क में जैसी वृद्धि संवत् १९९८ में हुई है वैसी सम्मेलन के इतिहास में कभी नहीं हुई। इसका मुख्य कारण यह है कि सम्मेलन परीक्षाओं के प्रचार के लिए इस वर्ष सब प्रकार के उपायों से उद्योग किया गया। इस कार्य में हिन्दी समाचारपत्रों के संपादकों ने भी गतवर्ष से अधिक हमारी सहायता की। परीक्षा विभाग से जो सूचनाएँ प्रकाशनार्थ उनके पास भेजी गईं उन्होंने अपने पत्र में उन्हें सहर्ष स्थान देने की कृपा की। इस कृपा के लिए सम्मेलन की ओर से हम उन्हें अनेक धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि वे इसी प्रकार की कृपा भविष्य में करते रहेंगे।

संवत् १९९८ में ५२१६ परीक्षार्थियों में से ४४३४ परीक्षार्थी परीक्षाओं में सम्मिलित हुए और २६१७ उत्तीर्ण हुए। विभिन्न परीक्षार्थियों की संख्या नीचे लिखे अनुसार थी :—

परीक्षा	आवेदन पत्र आये	सम्मिलित हुए	उत्तीर्ण	प्रतिशत
उत्तमा	४९४	३८८	२५४	६५.५
मध्यमा	२३७४	१९९२	११६२	५८.३
प्रथमा	१९७२	१७२५	१०२४	५९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा	आवेदन पत्र आये	सम्मिलित हुए	उत्तीर्ण	प्रतिशत
वैद्य विशारद	१६४	१४३	५४	३८
व्यापार विशारद	७	५	३	६०
कृषि विशारद	१५	१२	१०	८३
मुनीमी	७९	७१	१७	२४
अर्ज़ी नवीसी	३	×	×	×
हिन्दी कोविद	६१	५७	५४	९५
हिन्दी परिचय	४८	४१	३६	८८
	५२१६	४४३४	२६१७	५९

सब परीक्षाओं में मिला कर इस वर्ष ५९ प्रतिशत परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। परीक्षाओं के स्टैण्डर्ड को ऊँचा रखते हुए जितना उत्तम परीक्षाफल गत छ वर्षों से हो रहा है उतना पिछले वर्षों में कभी नहीं रहा। इसका मुख्य कारण केवल यही है कि गत छ वर्षों से परीक्षाओं के प्रचार के लिए प्रत्येक उपाय से प्रयत्न किया जा रहा है। उत्तमा परीक्षा में भी जितने अधिक परीक्षार्थी गत पाँच वर्षों से सम्मिलित हो रहे हैं और जितना अच्छा परीक्षाफल गत पाँच वर्षों से हो रहा है उतना कभी नहीं हुआ। सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा यू० पी० के इंटर-मीडिएट बोर्ड तथा अजमेर इंटर मीडिएट बोर्ड द्वारा सम्मानित हो चुकी है। अर्थात् मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी यू० पी० बोर्ड और अजमेर बोर्ड की हाई स्कूल परीक्षा केवल अंग्रेज़ी विषय लेकर दे सकेंगे। बिहार सरकार ने सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा को हाई स्कूल के बराबर, मध्यमा को इंटर के बराबर और उत्तमा परीक्षा को बी० ए० के बराबर स्वीकार कर लिया है। अर्थात् बिहार सरकार सरकारी नौकरियों में जो सुविधाएँ हाई स्कूल, इण्टर और बी० ए० परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को देती है वे ही सुविधाएँ वह क्रमशः सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को देगी। मध्य प्रान्त की सरकार, जोधपुर दरबार तथा झालावाड़ और छतरपुर राज्यों ने भी सम्मेलन परीक्षाओं में उत्तीर्ण अध्यापकों के वेतन में वृद्धि करने का निश्चय किया है। हमें आशा है कि अन्य बोर्ड और देशी राज्यों से भी इसी प्रकार की सुविधाएँ शीघ्र मिलगी। अतः परीक्षार्थियों को अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होकर सम्मेलन परीक्षाओं के प्रचार कार्य में हमारा हाथ बँटाना चाहिये।

पंजाब और काश्मीर में हिन्दी का प्रचार विशेष रूप से करने के लिये हिंदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय और हिंदी कोविद परीक्षाएँ स्थापित की गई हैं। सम्मेलन द्वारा कुछ पाठशालाएँ भी काश्मीर और पंजाब में खोली गई हैं। ये परीक्षाएँ काश्मीर सरकार द्वारा सम्मानित भी हो चुकी हैं। ये परीक्षाएँ वर्ष में दो बार होती हैं। गत नवम्बर मास में इन परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए १०६ परीक्षार्थियों के आवेदन पत्र आये थे। जून सन् १६४२ की परीक्षा के लिये ३१३ आवेदन पत्र आये हैं। हमें आशा है कि पंजाब और काश्मीर में इन परीक्षाओं की उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

उत्तमा परीक्षा के भारतवर्ष भर में १३ केन्द्र हैं। आगरा, इन्दौर, कलकत्ता, जबलपुर (हितकारिणी सिटी कालेज) काशी, कानपुर (एस० डी० कालेज), पटना, प्रयाग, पूना, लखनऊ, लाहौर, वर्धा और विजगापाटम। आगरा तथा इन्दौर में तो परीक्षार्थियों की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध पहिले ही से था। पिछले छ वर्षों से प्रयाग में भी परीक्षा के दिनों में परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए भिन्न-भिन्न विषयों के व्याख्यान कराये जाते हैं।

उत्तमा परीक्षा में पहिले निबन्ध लिखने का प्रतिबन्ध था। संवत् १६८४ से यह प्रतिबन्ध हटा दिया गया है। संवत् १६८४ तक केवल वे ही परीक्षार्थी इस परीक्षा में सम्मिलित हो सकते थे जो सम्मेलन की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण होते थे। अब उन परीक्षार्थियों को भी इस परीक्षा में सम्मिलित होने का अधिकार दिया जाता है जो भारतीय विश्वविद्यालयों से हिन्दी लेकर बी० ए० अथवा किसी भी विषय में एम० ए०, एम० एस-सी०, संस्कृत कालेज काशी की आचार्य, पञ्जाब की हिन्दी प्रभाकर, महा विद्यालय ज्वालापुर की विद्या भास्कर, दयानन्द महाविद्यालय गुरुकुल डौरली मेरठ की स्नातक, हिन्दी विद्यापीठ देवघर की साहित्य भूषण, आन्ध्र विश्वविद्यालय की भाषा प्रवीण तथा मद्रास विश्वविद्यालय की विद्वान परीक्षाएँ उत्तीर्ण होते हैं। अतः इस सुविधा के कारण परीक्षार्थियों की संख्या में और भी वृद्धि हो गई है। हम उत्तमा परीक्षा का स्टैण्डर्ड ऊँचा बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। युक्त-प्रांत की सरकार द्वारा उसे एम० ए० के बराबर स्वीकार किये जाने के लिये प्रयत्न जारी है। नीचे दिये हुए अङ्कों से पाठकों को विदित होगा कि गत १६ वर्षों से उत्तमा परीक्षा के परीक्षार्थियों की संख्या में किस प्रकार वृद्धि हुई है।

सम्वत्	परीक्षार्थियों की संख्या
१६८४	३२
१६८५	२६
१६८६	५४
१६८७	२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्वत्	परीक्षार्थियों की संख्या
१९८८	३७
१९८९	४१
१९८९	३८
१९९०	४८
१९९१	७३
१९९२	७३
१९९३	९४
१९९४	११०
१९९५	२११
१९९६	३३७
१९९७	४१०
१९९८	४९४

परीक्षा केन्द्र की संख्या में भी बराबर वृद्धि हो रही है। संवत् १९८४ से लगाकर संवत् १९९८ तक में परीक्षा केन्द्रों की संख्या में क्रमशः जो वृद्धि हुई है उसकी तालिका नीचे दी गई है :—

संवत्	केन्द्रों की संख्या
१९८४	१९०
१९८५	२२०
१९८६	२८०
१९८७	२७२
१९८८	२६७
१९८९	२५५
१९९०	२५१
१९९१	२५७
१९९२	२५७
१९९३	४१०
१९९४	५३४
१९९५	५३२
१९९६	५१४
१९९७	५२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत्	केन्द्रों की संख्या
१६६८	५७७

इस वर्ष केन्द्रों की संख्या और भी अधिक होती, यदि वे केन्द्र न तोड़ दिये गये होते जिनमें गत दो वर्षों से पाँच से कम विद्यार्थी सम्मिलित हुए हैं।

प्रत्येक प्रान्त के अनुसार इस समय परीक्षा केन्द्रों की संख्या नीचे लिखे अनुसार है :—

संयुक्त प्रांत	२१३	केन्द्र
विहार	१६२	"
मध्य प्रांत	४६	"
बंगाल	८	"
मद्रास	६	"
आसाम	१	"
ब्रह्मा	२	"
पञ्जाब	८	"
बम्बई	४	"
मध्य भारत		
इन्दौर राज्य	४२	"
ग्वालियर राज्य	२१	"
बड़नगर, रीवां और भोपाल	१	"
राजपूताना		
बीकानेर राज्य	१०	"
जयपुर राज्य	११	"
झालावाड़	३	"
अन्य राज्य	२८	"

केन्द्रों की तालिका से स्पष्ट है कि अभी भारत के कई प्रान्त और देशी राज्यों में सम्मेलन परीक्षाओं के केन्द्र स्थापित कर उनके प्रचार की बहुत आवश्यकता है। यह तभी हो सकता है जब भिन्न-भिन्न प्रान्तों के हिन्दी प्रेमी सज्जन इस कार्य में हमारी यथेष्ट सहायता करें। इस वर्ष के लिये नवीन केन्द्र स्थापित कराने की अन्तिम तिथि ३१ जुलाई सन् १९४२ है। जो सज्जन सम्मेलन परीक्षाओं के इस प्रचार कार्य में हमारी सहायता करना चाहते हैं वे यथासम्भव शीघ्र ही हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखकर केन्द्र स्थापना के लिए आवेदन का फार्म मँगा लें। यहाँ हम यह भी लिख देना आवश्यक समझते हैं कि सम्मेलन परीक्षाओं के केन्द्र अब किसी प्रतिष्ठित स्कूल या कालेज में उसके प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में ही स्थापित किये जाते हैं। अतः आवेदन-पत्र का फ़ार्म भरते समय प्रार्थियों को इसका ध्यान रखना चाहिये।

परीक्षा केन्द्रों का सञ्चालन और उनकी सुव्यवस्था केन्द्र व्यवस्थापकों की कार्य तत्परता पर ही निर्भर रहती है। पाठकों से यह छिपा नहीं है कि व्यवस्थापकों का कार्य कितना महत्वपूर्ण होता है। प्रश्न पत्रों को परीक्षा-भवन में ठीक समय में खोलना, उत्तर पुस्तकों को समयानुसार यथास्थान भेजना और परीक्षा-भवन में परीक्षार्थियों को अनुचित सहायता न लेने देना व्यवस्थापक के मुख्य कर्तव्य हैं। मुझे यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि हमारे व्यवस्थापकों ने अपने उत्तरदायित्व को भली भाँति निबाहा है। इसके लिए मैं उन्हें परीक्षा समिति की ओर से अनेक धन्यवाद देता हूँ।

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी १२० केन्द्रों में निरीक्षक भेजकर परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण कराया गया था। जिन केन्द्रों में त्रुटियाँ पाई गई थीं वे परीक्षा समिति के आदेशानुसार तोड़ दिये गये हैं।

हमारे परीक्षकों ने भी बड़ी तत्परता और लगन के साथ इस वर्ष हमारी सहायता की है। परीक्षक का कार्य कितना उत्तरदायित्व पूर्ण, कठिन और नीरस होता है इसे वे ही सज्जन जानते हैं जिन्होंने कभी इस कार्य को किया है। हमारे परीक्षकों ने अवैतनिक रूप से जिस तत्परता और लगन के साथ हमारी सहायता की उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं और परीक्षा समिति की ओर से उन्हें अनेक धन्यवाद देते हैं। इस वर्ष उत्तमा परीक्षा के परीक्षकों को 'ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ' और अन्य परीक्षाओं के परीक्षकों को 'प्रेमघन सर्वस्व' नामक पुस्तकें भेंट रूप में दी गई हैं। कुछ परीक्षकों ने अपनी रिपोर्ट में परीक्षार्थियों का ध्यान कुछ मुख्य-मुख्य बातों की ओर आकर्षित किया है। परीक्षार्थियों की सुविधा और जानकारी के लिए हम उनका सारांश इसी पत्रिका में प्रकाशित कर रहे हैं। उसे हम यथा सम्भव शीघ्र ही पत्रों में भी प्रकाशित करेंगे।

सम्मेलन की ओर से हिन्दी विद्यापीठ की व्यवस्था

सर्वसाधारण को सूचित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष होता है कि महेवा-विद्यापीठ, प्रयाग, महेवा के प्रसिद्ध आश्रम में गत वर्ष से पुनः खुल गया है। यह आश्रम ६० एकड़ भूमि में यमुना नदी के दाहिने किनारे पर अवस्थित है। इसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राकृतिक छटा अत्यन्त मनोहर एवं दर्शनीय है। उपाध्यायों तथा विद्यार्थियों के रहने के लिए सुन्दर आवास बने हुये हैं। यहाँ प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तमा तीनों परीक्षाओं की पढ़ाई का प्रबन्ध है। विद्यार्थियों के लिए केवल निःशुल्क शिक्षा तथा छात्रावास का प्रबन्ध है। अभी विद्यापीठ के पास इतना द्रव्य नहीं है कि वह विद्यार्थियों को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता और छात्रवृत्ति आदि दे सके। अतः भोजनादि तथा अन्य सब आवश्यक व्यय उन्हें अपने पास से ही करना होता है। विद्यार्थियों को चाहिये कि वे सम्मेलन द्वारा दी गई इस सुविधा से लाभ उठावें।

दयाशंकर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०
परीक्षा मन्त्री,
हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग

हिन्दी विश्वविद्यालय के परीक्षकों के वक्तव्यों का सारांश

उत्तमा (हिन्दी साहित्य)

पाठ्य ग्रंथों का अध्ययन सुचारु रूप से नहीं किया गया है। अर्थ लिखने में अनेक जगह कल्पना से ही काम लिया गया। बहुत कम परीक्षार्थियों ने संदर्भ आदि लिखा है। भूषण का समय निरूपण न करके, उनके ग्रंथों की आलोचना, उनकी जीवन यात्रा आदि अनेक अनावश्यक बातें लिखी गई हैं; तथा 'मतों' की विवेचना बहुत कम की गई है। साहित्यरत्न के परीक्षार्थियों की भाषा उत्कृष्ट कोटि की होनी चाहिए। बहुत कम विद्यार्थियों ने आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर ठीक ढंग से लिखा है। तुलनात्मक दृष्टि से ग्रंथों की आलोचना भी संक्षेप में की गई है। उत्तमा परीक्षा के परीक्षार्थियों से लिपि की अशुद्धियों की संभावना नहीं होनी चाहिए परन्तु उत्तर पुस्तकों में ऐसी अशुद्धियाँ पर्याप्त संख्या में हैं। लगभग पचास प्रतिशत परीक्षार्थियों के निबन्ध संतोषप्रद थे। जिन परीक्षार्थियों को ४० या ५० अंक प्राप्त हुए हैं उनके निबंध साधारण कोटि के थे। उत्तमा के परीक्षार्थियों का विरामादि तथा वाक्य विन्यास में त्रुटियाँ करना आश्चर्य की बात है। कुछ परीक्षार्थियों की धारणा है कि अधिक लिखने से अंक अधिक मिलेंगे, यह तो निबन्ध की गठन, भाषा का प्रवाह और विचारों की प्रौढ़ता पर अवलम्बित है। भाषा शुद्ध और खड़ी बोली होनी चाहिए। उदाहरणार्थ 'प्रसाद जी खड़ी बोली का प्रयोग किए' अशुद्ध है। एक प्रश्न में प्रसाद जी तथा प्रेमचन्द जी की गद्य शैलियों की आलोचना करने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा गया है। अधिकांश परीक्षार्थियों ने प्रश्न ध्यान से न पढ़ कर उनकी काव्य कला अथवा नाट्य कला पर लिखा है जो स्पष्ट ही अनावश्यक है।

मध्यमा परीक्षा

साहित्य १—अनेक परीक्षार्थियों ने प्रश्न का नम्बर ठीक से नहीं लिखा। सूक्ष्म तथा मौलिक आलोचनात्मक क्षमता परीक्षार्थियों में बिल्कुल नहीं पायी गई। परीक्षार्थियों ने वाक्य विन्यास की अशुद्धियाँ बहुत की हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि छात्र पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन किए बिना ही परीक्षा में सम्मिलित होने का प्रयत्न करते हैं। आलोचनात्मक प्रश्नों की ओर परीक्षार्थियों का ध्यान कम गया है। भाषा में भावों तथा विचारों को प्रकट करने की ओर परीक्षार्थी सचेष्ट नहीं रहे हैं। तथा अनावश्यक प्रसंगों की भरमार थी।

साहित्य २—परीक्षार्थी पाठ्य पुस्तकों पर ध्यान नहीं देते। अधिकांश प्रश्नों की भाषा पर ध्यान नहीं दिया गया। अतः उत्तरों में संगति नहीं दिखाई देती। विशारद एक उच्च कोटि की परीक्षा है उसमें विषम्भक 'विष का घड़ा' और ईहामृग—इस लोक का मृग, लिखना शोभा नहीं देता।

साहित्य ३ अधिकांश परीक्षार्थी प्रश्न का आशय न समझ कर ऊटपटांग उत्तर देने लगते हैं। उदाहरणार्थ कोई 'रासो' की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में उसके रचयिता का जीवनवृत्त देने लगता है, तो कोई उसमें वर्णित विषय का ही उल्लेख करने लगता है, कोई 'काव्य क्षेत्र' का अर्थ उन कवियों की निवास भूमि, ब्रज आदि बतलाता है तो कोई रीतिकाल की विशेषताओं में बिहारी का जीवनवृत्त लिखने लगता है। इत्यादि। रहस्यवाद को ८ प्रतिशत विद्यार्थियों ने भी नहीं समझा है।

साहित्य ४—वाक्य छोटे किन्तु भाव पूर्ण होने चाहिए। इसप्रकार की भूलें जैसे 'स्त्रीयाँ' 'शृगार' 'वीर्यता' आदि मध्यमा के विद्यार्थियों के लिए अच्छी नहीं हैं। उच्च कोटि के निबन्धों का अच्छा अध्ययन होना चाहिए। टिप्पणी में अपने विचार आलोचनात्मक रूप से संक्षेप में ही देना चाहिए। इसे निबन्ध का रूप देना ठीक नहीं है। कहानियों का अध्ययन तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक ढंग से होना चाहिए।

इतिहास—कई उत्तर अप्रासंगिक थे। परीक्षार्थियों को यह जानना चाहिए कि शुद्ध और प्रासंगिक उत्तरों पर ही अच्छे अंक प्राप्त हो सकते हैं। अप्रासंगिक विस्तार के लिए नहीं। कल्पित उत्तर भी संतोष प्रद नहीं होते। ऐसे उत्तरों के लिए ही अच्छे अंक मिलते हैं जो अध्ययन के आधार पर पुष्ट किये गए हों। ऐसा भी प्रतीत होता है कि अधिकांश परीक्षार्थियों ने पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन नहीं किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। अतः द्वैधशासन का अर्थ 'प्रजातंत्र' लगाकर एक शुद्ध हिन्दी का निबन्ध तैयार करने का प्रयत्न किया गया है। इसके अतिरिक्त वारिन हेस्टिंग्स—लार्ड हेस्टिंग्स को १८५७ में बताना इतिहास में कोरेपन का प्रभाव है।

भूगोल—कई परीक्षार्थी भूगोल विषय के प्रथम प्रश्नपत्र में लंदन और ग्रेट ब्रिटेन में कोई भेद नहीं कर सके। कई विद्यार्थियों ने राइन नदी को भूमध्य सागर में अथवा बेल्जियम और फ्रांस में बहाकर गंगा की तरह उसमें सिंचाई की नहर निकाली हैं। मानचित्र बनाने का अभ्यास बहुत कम परीक्षार्थियों को है।

धर्मशास्त्र—प्रश्नों को बिना समझे निरर्थक बातों से उत्तर पुस्तकों को भरना अपेक्षित नहीं है। अधिकांश उत्तर पुस्तकों में भाषा बहुत ही शिथिल और अशुद्ध मिली है। अधिक प्रश्नों के सम्बन्ध में परीक्षार्थियों का ग्रन्थ विषयक अध्ययन नहीं के बराबर है।

कृषिशास्त्र—परीक्षार्थियों को आबपाशी के यंत्रों का ज्ञान होना चाहिए। परीक्षार्थियों ने हार्स पावर को आबपाशी का कोई यंत्र बतलाया है। उन्हें Rotation (चक्रवर्तन) का कुछ भी ज्ञान नहीं है। खेती के खर्चे का पूरा ज्ञान अधिकांश परीक्षार्थियों को नहीं है। किसी किसी ने गेहूँ की खेती में १०००) प्रति एकड़ खर्चा बताया है। जानवरों के रोगों तथा उनकी जातियों के बारे में अधिक अध्ययन की आवश्यकता है।

संस्कृत—संस्कृत ऐसे विषय में कोरे काल्पनिक चित्र उपयोगी नहीं होते। अतः पाठ्यपुस्तकों का समुचित अध्ययन आवश्यक है। स्वच्छ लेख अपेक्षित हैं। प्रसंग निर्देश पूर्वक व्याख्या में प्रायः अधिक विद्यार्थियों ने शब्दार्थ मात्र लिख देना पर्याप्त समझा है। भाव का स्पष्टीकरण नहीं होने पाया है। अनुवाद और व्याख्या में कोई अंतर नहीं किया गया। अनुवाद के प्रश्न में व्याख्या तथा अन्य टीका टिप्पणी अनावश्यक है। संस्कृत शब्दों के लिंग तथा उद्देश्य विधेय के प्रयोग की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

अंग्रेज़ी—उद्धरणों के मूल प्रसंग को देने में परीक्षार्थियों ने बहुधा भूल की है। उन्हें अपनी पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन समीचीन रूप से करना चाहिए। प्रसंग और भावार्थ बहुत कम परीक्षार्थियों के ठीक थे।

राजनीति—उत्तर पुस्तकों के देखने से पता चलता है कि परीक्षार्थी उन पुस्तकों का अध्ययन नहीं करते जो उनके पाठ्यक्रम में हैं। शब्दों की शुद्धता की ओर भी परीक्षार्थियों का ध्यान दिलाया जाना चाहिये। उन्हें पत्र पत्रिकाओं से संसार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनैतिक गति का भी ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है।

अर्थशास्त्र—सुलेख और शुद्ध लेख पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वर्तमान स्थिति का अनुमान परीक्षार्थी अध्ययन काल में पुस्तकों के अतिरिक्त मासिक त्रैमासिक और साप्ताहिक समाचार पत्रों से कर सकते हैं। अर्थशास्त्र समाज विज्ञान का एक अंग होने के कारण विद्यार्थियों से यह आशा की जाती है कि प्रश्नों के उत्तरों में कार्य कारण की क्रम बद्धता पाई जावे और उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक हो।

विज्ञान—एक परीक्षार्थी ने अंग्रेजी में कुछ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है और वही नाम उसने हिंदी में भी लिखे हैं प्रयत्न करना चाहिए कि ये शब्द हिन्दी में ही लिखे जायं।

ज्योतिष—विद्यार्थियों को शुद्ध लिखने की ओर ध्यान देना चाहिए और उन्हें व्यर्थ लेखों का विस्तार भी नहीं करना चाहिए।

वैद्य विशारद परीक्षा

परीक्षार्थियों को अपना मन्तव्य स्पष्ट, स्वच्छ तथा शुद्ध लिखना चाहिए। अति संक्षेप तथा अत्यंत विस्तार दोनों ही असम्बद्ध हैं। व्यर्थ में बीच बीच में उत्तर पुस्तकों के पृष्ठ छोड़ना परीक्षार्थी की अयोग्यता के द्योतक हैं। शुद्धपरिमार्जित भाषा का अभ्यास करना चाहिए।

कृषि विशारद परीक्षा

विद्यार्थियों को कभी कभी कृषि कार्य पर जाकर अनुभव प्राप्त करना चाहिए। प्रत्यक्ष कर्माभ्यास के बिना कृषि शास्त्र विषय का ज्ञान अधूरा रह जाता है। इस विषय के ज्ञान के लिए वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना आवश्यक है।

व्यापार विशारद परीक्षा

बहुत कम परीक्षार्थियों के उत्तर सन्तोष जनक हैं ऐसा प्रतीत होता है कि मुनीमी सीखने वाले विद्यार्थी ही इस परीक्षा में बैठे हैं, उन्हें चेक फार्म की प्रसिद्ध लिखावट इत्यादि की बहुत साधारण बातें नहीं मालूम। परीक्षार्थियों का सार्व भौमिक ज्ञान असन्तोष जनक है। निबन्ध और अनेक व्यापारिक विषयों की पुस्तकों का अध्ययन अधिक होना चाहिए।

प्रथमा परीक्षा

साहित्य १—परीक्षार्थियों ने पद्यों का अर्थ ठीक ठीक नहीं लिखा। कुछ ने तो अर्थ का अनर्थ किया है। प्रश्न २ का संदर्भ देना आवश्यक है, पर बहुत कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थियों ने संदर्भ दिया है। सूर और तुलसी की तुलना भी ठीक ढंग से नहीं की है। अलंकारों की परिभाषा और छन्दों के लक्षण लिखने में काफी लापरवाही दिखलायी गई है।

साहित्य २— "ने" का प्रयोग ठीक नहीं हुआ है। 'नारद ने उत्तर देते हैं', 'वह मन की बात जान लिए' 'जिसने प्रेम करता है', इत्यादि अशुद्धियाँ होती हैं। 'व' और 'ब' का भेद समझना चाहिए। कई विद्यार्थियों ने 'ब' के स्थान पर 'व' का प्रयोग किया है, किसी किसी ने भारतेन्दु को ही 'काव्य' या नाटक बना दिया है। विराम के प्रयोग में बहुत अशुद्धियाँ हुई हैं अधिकांश परीक्षार्थी ह्रस्व और दीर्घ की भूलें करते हैं।

साहित्य ३—अधिकांश परीक्षार्थी हिज्जे की अशुद्धियाँ करते हैं। लिखते समय व्याकरण का ध्यान बहुत कम दिया जाता है। लिंग की अशुद्धियाँ भी अधिकांश विद्यार्थियों ने की हैं। रूपरेखा का ध्यान भी बहुत कम परीक्षार्थियों ने रक्खा है।

इतिहास—उत्तर पुस्तकें देखने से ज्ञात हुआ कि परीक्षार्थियों को ऐतिहासिक घटनाओं का समुचित ज्ञान नहीं है। विद्यार्थियों ने इतिहास का अध्ययन अवश्य किया है लेकिन उनका विश्लेषण करने में असमर्थ हैं। इतिहास का साहित्य से विशेष सम्पर्क है। अतएव भाषा की त्रुटियाँ क्षम्य नहीं हैं। ऐतिहासिक तिथियों का ज्ञान अल्प है, कभी कभी तो विद्यार्थी ऐसी तिथि लिख देते हैं जिससे असली घटना के होने में सैकड़ों वर्ष का अन्तर पड़ जाता है।

भूगोल—मानचित्र खींचने में बड़ी असावधानी दिखलाई गई है। कुछ विद्यार्थियों ने अपनी पाठ्य पुस्तकें भी ध्यान से नहीं पढ़ीं। बाहरी ज्ञान तो बहुत कम परीक्षार्थियों को था।

गणित—चिह्नों का प्रयोग ठीक ढंग से होना चाहिए; इनके अभाव में गणित की उपयोगिता कम हो जाती है। परीक्षार्थियों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

अँग्रेजी—पाठ्य पुस्तक को समालोचनात्मक ढंग से पढ़ना चाहिए; हिन्दी सरल और शुद्ध लिखने का अभ्यास करना चाहिए, अँग्रेजी भी शुद्ध और सरल लिखना आवश्यक है।

राजनीति—उत्तरों के पढ़ने से ऐसा मालूम होता है कि बहुत कम परीक्षार्थियों ने पाठ्य ग्रंथों का अध्ययन किया है। प्रश्न ८ में बहुत से परीक्षार्थियों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल म्युनिस्पेल्टी और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सम्बन्ध में लिखा है। सहकारी समितियाँ, कृषि विभाग और चलते फिरते अस्पताल के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा। प्रश्न ४ में स्थानीय स्वराज्य के माने बहुत से लड़कों ने भारतवर्ष का स्वराज्य समझा है। तीसरे, छठे और दूसरे प्रश्नों के उत्तर भली प्रकार से नहीं दिये गए।

कृषिशास्त्र—परीक्षार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए।

धर्मशास्त्र—प्रश्न में पुत्र की परिभाषा केवल तीन ही विद्यार्थियों ने लिखी है। एक पैराग्राफ में केवल एक ही बात लिखनी चाहिए।

दयाशंकर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०
परीक्षा मंत्री,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सम्मेलन की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकें

उत्तमा परीक्षा

चित्ररेखा	१।।)	ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार	१।)
डिंगल में वीर रस	१।।।)	वीर काव्य संग्रह	१)
विकास (सेठ गोविन्ददास)	।।=)	तुलसी दर्शन	२।।)

मध्यमा परीक्षा

ब्रजमाधुरीसार	२।।)	हिन्दू राज्य-शास्त्र	३।।)
कबीर पदावली	।।।=)	कवितावली	।।।)
संक्षिप्त अलंकार मंजरी	१।।)	भूषण संग्रह भाग २	।।=)
हिन्दी साहित्य समीक्षा	१।।)	हिन्दी गद्य निर्माण	१।।
ग्रामों का पुनरुद्धार	१।)	नागरी अंक और अक्षर	≡)
अकबर की राज्य-व्यवस्था	१)	भारतवर्ष का इतिहास	४।।।)

प्रथमा परीक्षा

सूर पदावली	।।=)	कृषि प्रवेशिका	१)
सुदामा चरित्र	।)	पार्वती मंगल	।)
नवीन पद्य संग्रह	।।।)	भूषण संग्रह भाग १	।-)
अलंकार प्रकाश	।=)	प्रथमालंकार निरूपण	≡)
हिन्दी भाषा सार	।।।)	सरल पिंगल	।)
हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ		सत्य हरिश्चन्द्र	।-)
(कहानी-प्रवेश)	१।)	हिन्दी सा० का० सं० इतिहास	।।)
हिन्दी सा० की रूपरेखा	।)	प्रारम्भिक रसायन	१)
संक्षिप्त हिन्दी साहित्य	।।।)	इतिहास तत्त्व	।।=)

हिन्दी परिचय परीक्षा

छत्रपति शिवजी	।)	बालभारती	।=)
वीर शतमन्यु	।)	बाल कवितावली	।)

हिन्दी कोविद परीक्षा

बाल पञ्चरत्न	।।)	बालकथा भाग १	।=)
वीर सन्तान	।=)	बिजली	≡)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातक

[प्रथम खण्ड]

अनुवादक : भदंत आनन्द कौसल्यायन

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान पं० जयचन्द्र विद्यालंकार का कथन है कि "विश्व के वाङ्मय में 'जातक' जन-साधारण की सब से पुरानी कहानियाँ हैं; मनोरंजकता, सुरुचि, सरलता, आडम्बरहीन सौन्दर्य और शिक्षाप्रद होने में उनका मुक़ाबला नहीं हो सकता। वे बच्चों के लिये सरल और आकर्षक, जवानों और बूढ़ों के लिये भी रुचिकर और विद्वानों के लिये प्राचीन भारत के जीवन का जीता-जागता चित्रण करने के कारण अत्यन्त मूल्यवान है।"

पृष्ठ संख्या ५४०—५५; डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)

दूसरा खण्ड भी शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है।

'आधुनिक हिन्दी कवि' माला

आधुनिक काल के श्रेष्ठ कवियों द्वारा अपनी सर्वोत्तम रचनाओं के संग्रह इस माला के अन्तर्गत छपे हैं। पुस्तकों के प्रारंभ में कवियों ने अपनी कविताओं की विचारधारा पर विस्तृत प्रकाश डाला है। कवियों के पेन्सिल स्केच, तथा हस्तलिपियाँ भी साथ हैं।

१. श्री महादेवी वर्मा   २. श्री सुमित्रानन्दन पंत

३. श्री रामकुमार वर्मा

प्रत्येक का मूल्य १।)

मिलने का पता :

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए० ६२१

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

१ भूषण-ग्रन्थावली २)
२ भारत-गीत ≡)
३ राष्ट्रभाषा ।)
४ शिवाबावनी. ≡)
५ पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १।)
६ सूरदास की विनयपत्रिका ≡)
७ नवीन पद्यसंग्रह ।।)
८ बिहारी-संग्रह ≡)
९ सती कण्णकी ।)
१० हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव ।।=)
११ ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार १।)

(२) साधारण पुस्तकमाला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था १)

(३) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

१ सरल शरीर-विज्ञान ।।), ।।।)
२ प्रारम्भिक रसायन १)
३ सृष्टि की कथा १)

(४) बाल-साहित्य माला

१ बाल नाटक-माला १)
२ बाल-कथा भाग २ ।=)
३ बाल विभूति ≡)

(५) नवीन पुस्तकें

१ सरल नागरिक शास्त्र १)
२ कृषि प्रवेशिका १)
३ विकास (नाटक) ।=)
४ हिंदू-राज्य शास्त्र ३।)
५ कौटिल्य की शासन-पद्धति १।=)
६ गावों की समस्यायें १)
७ मीराबाई की पदावली १।)
८ भट्ट निबंधावली १)
९ जातक (प्रथम खंड) २)
१० आधुनिक कवि (३) १।=)

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

मुद्रक—श्रीगिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—श्रीरमाप्रसाद घिल्डयाल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैशाख-ज्येष्ठ, संवत् १९९८

सम्मेलन पत्रिका

[भाग २८, संख्या ९, १०]

संपादक
श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल
साहित्यमंत्री

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

इस प्रति का ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—श्री जयचन्द्रजी और 'राजा भोज' [लेखक—साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ] १
२—भारतवर्ष की आधुनिक भाषाएं [लेखक—श्री राममूर्ति मेहरोत्रा एम० ए०] १
३—जैन साहित्य के ऐतिहासिक गुजराती ग्रन्थ [ले०—श्री अमरचन्द नाहटा, सम्पादक 'राजस्थानी'... ... ... १
४—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा [ले०—श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल राष्ट्रभाषा प्रचार मन्त्री] २
५—हिन्दी संसार [ले०—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल संग्रह मंत्री] ... २
६—प्राप्ति स्वीकार [ले० पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल संग्रह मन्त्री, तथा श्री रामनिधि शर्मा बी० ए०] ... ३
७—परीक्षा फल ४
८—संवत् १९९७ की पदक सूची १७
९—संवत् १९९७ की परीक्षाएँ १७
१०—परीक्षकों के वक्तव्यों का सारांश १८
११—कार्य समिति की द्वितीय बैठक का विवरण १८

नियमावली

१—सम्मेलन पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है।

२—हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आदर्शों की पूर्ति में सहायक होना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

३—पत्रिका का वार्षिक मूल्य १) तथा एक अङ्क का =) है।

४—पत्रिका के सम्बन्ध में पत्रव्यवहार साहित्यमन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पते से करना चाहिए।

५—पत्रिका संबन्धी पत्रव्यवहार में जवाब के लिए टिकट आने चाहिए; अन्यथा आवश्यक अनावश्यक का विचार कर पत्रोत्तर दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन पत्रिका

भाग २८] बैशाख, ज्येष्ठ १९९८ [संख्या ९, १०

श्री जयचन्द्रजी और 'राजा भोज'

[लेखक, साहित्याचार्य पंडित विश्वेश्वरनाथ रेऊ]

काशी से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'आज' के २२ मार्च १९४१ के अङ्क में 'हिन्दी का इतिहास-साहित्य' नाम से श्री जयचन्द्र जी विद्यालङ्कार का लिखा एक लेख छपा है। यह लेख गत मार्गशीर्ष-पौष की 'सम्मेलन पत्रिका' के अङ्क से उद्धृत किया गया है। उक्त लेख में हमारे ग्रंथ 'राजा भोज' के विषय में लिखा है—

"राजा भोज" में धार के प्रसिद्ध राजा भोज और उसके वंश के सम्बन्ध में सब तरह की बातें हैं लेकिन सब एक दूसरे से असम्बद्ध, बिना किसी क्रम और तरतीब के। भोज के समय की भारत की दशा का वर्णन पहले आगया है, तो भोज के समय का निर्धारण पीछे हुआ है।"

इस विषय में क्या हम विद्यालङ्कार जी से पूछ सकते हैं कि 'सब एक दूसरे से असम्बद्ध' इस वाक्य से आपका क्या तात्पर्य है? क्या इसमें एक स्थान पर राजा भोज का एक शताब्दी में होना और दूसरे पर दूसरी शताब्दी में होना लिख दिया गया है या ऐसी ही कोई अन्य बात आगई है? यदि ऐसा हो तो कृपया सूचित करने का कष्ट करें। परन्तु यदि आपका तात्पर्य भिन्न-भिन्न लेखकों के विरोधी विवरणों से हो, जो इसमें उद्धृत किए गए हैं, तो अपने शब्दों पर फिर से विचार करने की कृपा करें। रही भिन्न भिन्न प्रकरणों के आगे पीछे छपने की बात, इसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। परन्तु खेद है कि आपकी 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' में भी यही त्रुटि इधर-उधर दृष्टिगोचर हो जाती है। उदाहरणार्थ उसके द्वितीय खण्ड में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले मानव और रोल वंश से लेकर महाभारत संग्राम तक का हाल लिखकर बाद में समाज की बुनियादों की स्थापना का हाल दिया गया है।

आगे आपने लिखा है कि "प्राचीन भारत में कुछ प्रजातंत्र भी थे, यह कहने की रेऊजी की हिम्मत नहीं होती; इससे वे कहते हैं कुछ पर जातियां ही अपना अधिकार जमाए थीं।"

इसके समाधान के लिए यहां पर आपही की 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' से एक अवतरण दिया जाता है—

"समूचे वृजि संघ की राजधानी भी वेसाली (वैशाली) ही थी।······लिच्छवियों के ७७०७ राजा थे······। ये सब राजा अपने गाँव में शायद स्वतंत्र शासक थे; किन्तु राज्य के सामूहिक कार्य का विचार एक परिषद में होता था जिसके वे सब सदस्य होते थे। इसी राज्य परिषद के हाथ में लिच्छिव-राष्ट्र की मुख्य शासन-शक्ति थी।" (पृ० ३१३)

अब पाठक स्वयं ही विचार करें कि ऐसे राज्यों को जाति-राज्य कहना ठीक है या प्रजातंत्र?

अन्तिम आक्षेप आपका इस प्रकार है—

"सोलह महाजन पदों के युग में तो क्या, उसके आठ सौ बरस बाद तक भी अवन्ति प्रदेश मालवा न कहलाता था। मालव जाति महाजन पद युग में पंजाब में मुलतान के उत्तर पूरब रहती थी। अवन्ति प्रदेश पर तब राजा चण्ड प्रद्योत का राज्य था।"

उत्तर में निवेदन है कि 'राजा भोज' नामक पुस्तक में हमारा लेख इस प्रकार है:—

"प्राचीन साहित्य से ज्ञात होता है कि आज से पच्चीस सौ वर्ष पूर्व गांधार (कंधार) से लेकर मालवे तक का भारतीय भूभाग सोलह राज्यों में बँटा हुआ था। इनमें से कुछ का प्रबन्ध राज सत्ता के अधीन था और कुछ पर जातियाँ ही अधिकार जमाए हुए थीं। ऐसी ही एक जाति का राज्य अवन्ति प्रदेश पर था, जो मालव जाति के नाम से प्रसिद्ध थी।"

इस अवतरण की भाषा भ्रामक मानी जा सकती है। परन्तु उक्त अवतरण में केवल उन जातियों में की ही मालव नामक एक जाति का राज्य मालवे पर भी रहना बतलाया गया है। सम्भव है प्रारम्भ में इस घटना का उल्लेख मालवा के नामकरण के लिए ही किया गया हो और "इसी से इसका नाम मालवा पड़ा।" यह वाक्य हमारे या लेखक के दोष से छूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया हो। इस कथन की पुष्टि उसी के ३५ वें पृष्ट के इस अवतरण से भी होती है—

"वि० सं० ३८७ (ई० स० ३३०) के करीब गुप्त वंश का प्रतापी नरेश समुद्रगुप्त राज्य पर बैठा। उस समय मालवे पर मालव जाति का प्रजासत्तात्मक या जातिसत्तात्मक राज्य था। परन्तु उसके पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय ने वि० सं० ४५२ (ई० स० ३९५) के करीब मालवजाति को हराकर वहां पर अपना अधिकार कर लिया।"

इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि मालवे पर मालव जाति के राज्य का वास्तविक उल्लेख इन पंक्तियों में ही अभीष्ट था।

अस्तु, लेख के समाप्त करने के पूर्व यह नम्र निवेदन कर देना भी अनुचित न होगा कि एक तो जाति के पीछे प्रदेश का नाम बदलना कोई आवश्यक बात नहीं है और बदलना भी है तो दीर्घकाल के विशेष संपर्क के बाद ही। दूसरा ईसवी सन् से १५० वर्ष पूर्व के लगभग के मालवगण के सिक्कों का जयपुर राज्य के दक्षिणी भाग से मिलना भी उन लोगों का उस समय के आसपास ही अवन्ति प्रदेश तक पहुँच जाना सूचित करता है।

तीसरा आप स्वयं 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' में अवन्ति को भी १६ महाजन पदों में गिनते हैं और उस समय को महाजन पदयुगक कहते हैं। (पृ० ३१२)

ऐसी हालत में उक्त युग के सामने चण्ड प्रद्योत के व्यक्तित्व का अस्तित्व ही कितना दीर्घकालीन हो सकता है?

अस्तु, ऊपर जो कुछ लिखा गया है वह विद्यालङ्कारजी के लेख के भाव को देखकर ही लिखा गया है, अन्यथा हर एक व्यक्ति को अपना मत प्रकट करने का अधिकार है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष की आधुनिक भाषाएं

[लेखक—श्री राममूर्ति मेहरोत्रा, एम० ए०]

हार्नले का मत है कि आर्य भारतवर्ष में दो दलों में आये। इतिहासज्ञों का कहना है कि प्रथम बार वे काबुल की घाटी में होकर खैबर के दर्रे से आए और मध्यदेश अर्थात् सरस्वती (पंजाब) तथा गंगा के मध्य भाग में बस गए। जब इनको यहाँ रहते-सहते अधिक काल व्यतीत हो गया, तो चितराल तथा गिलगिट की ओर से एक दल और आया, जिसने पूर्वागत आर्यों को, जो कि गर्म जलवायु में रहने के कारण निर्बल हो गये थे, मध्यदेश से निकाल दिया और स्वयं वहाँ अधिकार कर लिया। इस प्रकार परागत आर्य मध्यदेश में और पूर्वागत उनके चारों ओर सीमान्त पर बस गये। प्रारंभिक संस्कृत ग्रन्थों में 'मध्यदेश' से अभिप्राय कुरु, पांचाल तथा उत्तरी हिमालय प्रदेश से था, परन्तु बाद के ग्रन्थों में 'मध्यदेश' शब्द हिमालय तथा विन्ध्याचल और सरस्वती तथा प्रयाग के बीच के भूमि भाग के लिये प्रयुक्त हुआ है। अतः स्पष्ट है कि मध्यदेश के क्षेत्र की कालांतर में वृद्धि हो गई थी। संभवतः इसका कारण यह है कि परागत आर्यों ने अपने को चारों ओर से पूर्वागत आर्यों से घिरा होने के कारण सुरक्षित न जानकर चारों ओर बढ़ने का प्रयत्न किया होगा, जैसा कि इससे प्रगट है कि राठौर कन्नौज से तथा सोलंकी पूर्वी पंजाब से आकर राजपूताने में और यादव मथुरा से जाकर गुजरात में बस गये थे। इसकी पुष्टि इस बात से भी होती है कि पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी आदि अंतरंग भाषाओं में बहिरंग भाषाओं के भी कुछ चिन्ह मिलते हैं, जिससे स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में इनके क्षेत्र में बहिरंग भाषाओं का प्रचार रहा होगा जिनको इन अंतरंग भाषाओं ने स्थान-च्युत करके वहाँ अपना अधिकार जमा लिया होगा। इस प्रकार उत्तर में काश्मीर तथा नैपाल तक, दक्षिण में गुजरात तक, पश्चिम में सिंध के मैदान की पूर्वी सीमा तक और पूर्व में बनारस तक फैल गए होंगे। तदनुसार परागत आर्य गंगा-सिंध के मैदान में हिमालय तथा विन्ध्याचल के बीच मध्यदेश में और पूर्वागत इनके चारों ओर पश्चिमी पंजाब, सिंध, महाराष्ट्र, विहार-उड़ीसा, बंगाल तथा आसाम में बस गए। अतएव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परागत आर्य अंतरङ्ग, पूर्वागत बहिरङ्ग और पूर्वी हिन्दी भाषाक्षेत्र के निवासी मध्यवर्ती हो गये।

अंतरङ्ग अथवा परागत आर्य मध्यदेशीय होने के कारण कोल-द्राविड़ों के सम्पर्क में आये और वहिरङ्ग अथवा पूर्वागत दर्दिस्तान पास होने के कारण दर्द-भाषा भाषियों के। द्राविड़ सभ्य और दर्द जंगली थे, अतः अंतरङ्ग आर्यन में वैदिक सभ्यता का विकास हुआ और उनकी भाषा शुद्ध तथा संस्कृत रही, परंतु बहिरंग में न तो वैदिक सभ्यता का ही विकास हो सका और न उनकी भाषा ही शुद्ध व संस्कृत रह सकी। अतएव अंतरङ्ग तथा वहिरंग आर्यन की सभ्यता तथा भाषा में बहुत भेद हो गया। क्योंकि अंतरंग आर्य-विजयी होने के कारण वहिरङ्ग आर्यन तथा उनकी सभ्यता और भाषा को नीच समझते थे, अतः यह भाषा भेद बढ़ता ही गया और कालांतर में इन दोनों की भाषाएँ भिन्न हो गईं और उनके अंतरङ्ग और वहिरंग दो पृथक भेद हो गये। अंतरङ्ग उच्च और वहिरङ्ग निम्न श्रेणी की समझी जाने लगीं। यही कारण है कि राष्ट्रभाषा सदैव से अंतरङ्ग की ही कोई विभाषा रही है, यथा संस्कृत, प्राकृत (पाली), अपभ्रंश (शौरसेनी), ब्रजभाषा, खड़ी बोली आदि। अंतरङ्ग तथा वहिरङ्ग के बीच की भाषा पूर्वी हिन्दी मध्यवर्ती हो गई। अतएव भारतीय आर्य शाखा की अंतरङ्ग, वहिरङ्ग और मध्यवर्ती तीन उपशाखाएँ हो गईं।

आधुनिक भाषाओं का वर्गीकरण—तदन्तर उक्त अंतरङ्ग-वहिरङ्ग भेदों की ग्रियर्सन ने भाषा संबंधी कारणों से भी पुष्टि की और निम्न प्रकार वर्गीकरण किया:—

(क) वहिरंग उपशाखा :—(१) पश्चिमोत्तर वर्ग :—लहँदा तथा सिंधी
(२) दक्षिणी वर्ग :—मराठी
(३) पूर्वी वर्ग :—उड़िया, बिहारी, बंगला तथा आसामी

(ख) मध्यवर्ती उपशाखा :—(४) मध्यवर्ती वर्ग :—पूर्वी हिन्दी

(ग) अंतरंग उपशाखा :—(५) केन्द्र वर्ग :—पश्चिमी हिन्दी, पंजाबी, गुजराती तथा राजस्थानी।
(६) पहाड़ी वर्ग—पूर्वी पहाड़ी (नेपाली), केन्द्रवर्ती पहाड़ी तथा पश्चिमी पहाड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरंग तथा बहिरंग में भेद—बहिरंग अथवा अंतरंग भाषाओं में उच्चारण, रचना व्याकरण आदि के जिन नियमों में परस्पर साम्य है उन्हीं में बहिरंग तथा अंतरंग में वैषम्य है अर्थात् बहिरंग तथा अंतरंग भाषाओं की विशेषताओं में परस्पर विरोध है। ग्रियर्सन ने इस प्रकार के अनेक अंतर तथा विरोध बताए हैं और रामप्रसाद चंद ने तो उनको वंशात्मक प्रमाणों से भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है।

बहिरंग भाषाओं की विशेषताएँ (ग्रियर्सन):—(क) ध्वन्यात्मक अथवा उच्चारणात्मक :—(१) शब्दांत में आने वाले इ, उ अथवा ए का लोप नहीं होता। (२) इ तथा उ द्रव स्वर हैं। प्रायः इ का ए और उ का ओ हो जाता है। (३) युक्त विकर्ष (epenthesis) भी एक विशेषता है। (४) इ तथा उ प्रायः परस्पर परिवर्तित हो जाते हैं (५) स का उच्चारण शुद्ध नहीं होता। प्रायः उसका श, ष अथवा ह हो जाता है। (६) ए (अ इ) का ऐ और ओ (अउ) का औ हो जाता है। (७) ड़ तथा ल की जगह र हो जाता है। (८) द तथा ड परस्पर परिवर्तित हो जाते हैं। (९) म्ब का म अथवा ब हो जाता है। (१०) प्रायः द का ज तथा ध का झ हो जाता है। (११) अंतस्थ र (intervocal) का लोप हो जाता है। (१२) महाप्राण तथा अल्प प्राण परस्पर परिवर्तित हो जाते हैं। (१३) संयुक्त व्यंजन में प्रायः मध्य अथवा अर्द्ध व्यंजन का लोप हो जाता है और उसके पूर्व का अक्षर दीर्घ हो जाता है।

(ख) रचनात्मक अथवा व्याकरणिक :—(१) स्त्रीलिंग 'ई' प्रत्यय द्वारा बनता है। (२) विशेषण 'ली' प्रत्यय द्वारा निर्मित होता है। (३) भूतकालिक क्रिया का रूप कर्त्ता के पुरुष के अनुसार परिवर्तित हो जाता है जैसे मराठी में 'मैं गया' के लिए 'गेलो' तथा 'वह गया' के लिए 'गेला' आता है, परंतु अंतरंग भाषाओं में भूतकालिक क्रिया तीनों पुरुषों में एक सी रहती है जैसे प० हि० में मैं गया, वह गया, तू गया आदि में 'गया'। अतएव बहिरंग भूतकालिक क्रियाओं में कर्त्ता के पुरुष तथा वचन का बोध क्रिया के रूप से ही हो जाता है, परन्तु अंतरंग में नहीं। यथा बं० गेलाम, म० गेलो, आदि क्रियाएँ उत्तम पुरुष एक बचन कर्त्ता की द्योतक हैं, परन्तु प० हि० 'गया' नहीं। (४) भूतकालिक क्रिया के साथ आने वाला सर्वनाम प्रायः क्रिया में अंतर्भूत रहता है। (५) शब्द अभी सप्रत्यय है अर्थात् प्रत्यय संज्ञा के साथ जुड़कर उसका एक भाग बन जाता है जैसे बं० घोड़ार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा वि० घोराक में सम्बन्ध कारक प्रत्यय संज्ञा में संश्लिष्ट है, परन्तु अन्तरङ्ग में प्रत्ययों का इतना ह्रास हो गया है कि उनका अस्तित्त्व ही नष्ट हो गया है और उनकी जगह का, को, के को, ने, से, पर आदि विभक्तियाँ प्रयुक्त होती है जैसे घोड़े का, घोड़े ने आदि। (६) शब्दों तथा धातुओं में भी साम्य है। इस प्रकार बहिरङ्ग भाषाएँ संहित और अन्तरङ्ग व्यवहित हैं।

(ग) वंशात्मकः—चंद ने अन्तरङ्ग-बहिरङ्ग भाषा-भेद की वंशात्मक कारणों से भी पुष्टि की है। उनका मत है कि अन्तरङ्ग आर्य (Dolicho cephalic) जाति के और बहिरङ्ग (Bracby cepholic) जाति के थे, अतः उनकी भाषाओं में भेद होना स्वाभाविक ही है।

उक्त मतों की आलोचनाः—एस० के० चटर्जी के अनुसार उक्त दोनों मतों में एक भी ठीक नहीं है।

(क) ध्वन्यात्मकः—(१) अंतिम स्वर का लोप सब बहिरङ्ग भाषाओं में नहीं पाया जाता जैसे बं० आंख में। इसके अतिरिक्त अन्तरङ्ग भाषाओं में भी सदैव अंतिम स्वर का लोप नहीं होता जैसे ब्रज० बाँड़ु, मालु, सबु, पेड़ु, जवाबु, औरु, कंगालु, नौकरु, करि, धरि, दूरि, देखि इत्यादि में।

(२) 'इ का ए और उ का ओ हो जाना' केवल बहिरंग में ही नहीं अपितु अंतरंग में भी पाया जाता है, यथा पं० हि० में दिखाना से देखना तथा बुलाना से बोलना और ब्रज० में मुट्ठी से मोही, तुही से तोही आदि में।

(३) युक्त विकर्ष केवल आसामी, बंगला, उड़िया आदि पूर्वी बहिरंग भाषाओं में ही पाया जाता है, मराठी, सिंधी आदि पश्चिमी बहिरंग में नहीं; इधर गुजराती तथा प० हि० अंतरंग भाषाओं में भी पाया जाता है जैसे सुन्दर से सौन्दर्य।

(४) 'इ तथा उ का परस्पर परिवर्तन बहिरंग में ही नहीं अपितु अंतरंग में भी पाया जाता है जैसे प० हि० खिलना खुलना, छुगुली-छिगली, फुसलाना-फिसलाना, विन्दु-बुन्द, इत्यादि में। इसके अतिरिक्त अंतरंग-बहिरंग में भी ऐसा होता है जैसे वं० वालि पं० हि० वालुका वं० गुनना पं० हि० गिनना आदि में।

(५) 'स' संबंधी परिवर्तन सब बहिरंग भाषाओं में एक सा नहीं होता, सिंधी तथा लंहदा में स का ह और मराठी, बंगला आदि में 'श' हो जाता है। इसके अतिरिक्त 'स' का 'ह' अथवा श होना अंतरंग में भी पाया जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जैसे पं० कोस-कोह, प० हि० केसरी-केहरी, सूर-शूर, ग्यारस-ग्यारह, द्वादश-बारह, इत्यादि में।

(६) 'ए का ऐ और ओ का औ हो जाना' केवल सिंधी तथा लहँदा की विशेषता है, पूर्वी वहिरंग भाषाओं की नहीं; उधर राजस्थानी, गुजराती तथा प० हि० में भी ऐसा होता है जैसे प० हि० में head, manager, hot, daughter इत्यादि क्रमशः हैट, हैड, मैंनेजर, हौट, डौटर, इत्यादि की भाँति उच्चरित होते हैं।

(७) 'ड, ल तथा र के अभेद' का बंगला, उड़िया, मराठी तथा लहँदा में अभाव है, उधर यह अंतरंग में भी पाया जाता है जैसे ब्रज० बल-वर, गल-गर, जलइ-जरइ, बिजली-बिजुरी, काजल-काजर, शृगाल-स्यार, वेला-वेर तथा पकड़े-पकरे, घड़ी-घरी, बिगड़इ-बिगरइ, पीड़ा-पीरा, इत्यादि में।

(८) 'ड तथा द का अभेद' वहिरंग में ही नहीं, अंतरंग में भी पाया जाता है जैसे० ब्रज० दृष्टि-डीथी, दग्ध-डाढ़ा, ड्योढ़ी-देहली, प० हि० डाभ-दर्भ, दण्ड-डंड, दंसना-डसना दण्डिका-डंडी, दाडिम्ब-डारिम आदि में।

(९) 'म्ब का म अथवा व हो जाना' अंतरंग में भी पाया जाता है जैसे प० हि० जम्बु-जामुन, निम्ब-नीम, अम्बी-अमियाँ निम्बु-नीबू, इत्यादि में।

(१०) 'द-ज तथा ध-झ का अभेद' बंगला, उड़िया, मराठी तथा सिंधी के अतिरिक्त अन्य वहिरंग भाषाओं में नहीं पाया जाता, उधर प० हि० में भी पाया जाता है जैसे गिद्ध से गिज्ज।

(११) अंतस्थ 'र' का लोप अंतरंग में भी होता है जैसे प० हि० करि से कै, और से औ, पर से पै इत्यादि।

(१२) 'महा प्राण तथा अल्प प्राण का अभेद' गुजराती, राजस्थानी, प० हि० अंतरंग भाषाओं में भी पाया जाता हैं जैसे भगिनी से बहिन, उष्ट्र से ऊँट, ईंठा से ईंट, तिवाड़ी से तिवारी तथा वेश भेस, विभूति से भभूत, वास्प से भाप इत्यादि।

(१३) 'संयुक्त व्यंजन में अर्द्ध अथवा मध्य व्यजन का लोप और उसके पूर्व के अक्षर का दीर्घ होना' केवल आसामी, बंगला, बिहारी, उड़िया तथा मराठी में पाया जाता है, सिंधी तथा लहँदा में नहीं; उधर गुजराती, पंजाबी तथा प० हि० में भी पाया जाता है जैसे भिक्षा से भीख, सप्त से सात, सत्य से साँच, लक्ष से लाख आदि में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य त्रुटिः—पूर्वी तथा पश्चिमी वहिरंग अथवा अंतरंग भाषाओं के उच्चारण में बहुत अन्तर तथा विषमता है।

(ग) रचनात्मकः—(१) 'ई' प्रत्यक्ष द्वारा स्त्रीलिंग बनना अंतरंग की भी विशेषता है।

(२) 'ली' प्रत्यक्ष द्वारा विशेषण अंतरंग में भी बनते हैं जैसे प० हि० लजीली, कटीली, हठीली, शर्मीली, रंगीली, छबीली, झगड़ाडू इत्यादि।

(३) कर्त्ता के पुरुष तथा वचन का बोध सब भूत कालिक क्रियाओं के रूपों से नहीं होता, केवल अकर्मक क्रियाओं के भूतकाल से होता है। सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूपों में तो पूर्वी तथा पश्चिमी वहिरंग अथवा अंतरंग भाषाओं में बहुत अंतर है, पूर्वी कर्त्तरि प्रधान और पश्चिमी कर्मणि प्रधान हैं। अतः सकमर्क भूतकालिक क्रियाओं में कर्त्ता के पुरुष तथा वचन का बोध केवल पूर्वी वहिरंग भाषाओं में हो सकता है, पश्चिमी में नहीं, उधर पू० हि० में भी ऐसा ही होता है।

(४) 'भूतकालिक क्रियाओं में सर्वनाम का अंतर्भुक्त होना' सब वहिरङ्ग भाषाओं तथा क्रियाओं में नहीं पाया जाता।

(५) सप्रत्यय अथवा विभक्ति प्रधान शब्द वहिरङ्ग में ही नहीं, अंतरङ्ग में भी पाये जाते हैं जैसे ब्रज० मैं (मैंने), तैं (तू ने) घोड़हि (घोड़े को), प० हि० माथे (माथे पर), भूखों (भूख से) इत्यादि।

(६) न तो सब धातु तथा शब्द वहिरङ्ग में ही समान हैं और न अंतरग में ही उदाहरणार्थ बङ्गला तथा विहारी के शब्द मराठी से नितांत भिन्न हैं। इसके अतिरिक्त जो शब्द वहिरङ्ग में पाये जाते हैं वे अंतरङ्ग में भी मिलते हैं जैसे बङ्गला, विहारी, मराठी, सिंधी तथा लहँदा में पाये जाने वाले शब्द गुजराती तथा प० हि० में भी पाये जाते हैं उदाहरणार्थ 'आछ या अछ' पू० हि०, विहारी तथा बङ्गला में तो मिलता है, परंतु सिंधी तथा लहँदा में नहीं मिलता, उधर राजस्थानी, गुजराती तथा पहाड़ी में भी पाया जाता है। मुख्य त्रुटिः—सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूप पूर्वी भाषाओं में कर्त्ता के अनुसार और पश्चिमी भाषाओं में कर्म के अनुसार होते हैं, अतः व्याकरणिक दृष्टि से पूर्वी तथा पश्चिमी अंतरङ्ग अथवा वहिरङ्ग में बहुत-अंतर तथा विषमता है।

(ग) वंशात्मकः—(१) चंद के अनुसार अंतरङ्ग आर्य एक जाति के और वहिरङ्ग दूसरी जाति के थे, अतः गङ्गा-जमुना के मैदान के प० हि०

२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषी कन्नौजिया ब्राह्मण तथा लहँदा (प० पञ्जाबी) भाषी आर्यन भिन्न-भिन्न जातियों के हुए, परन्तु इतिहासानुसार वे एक ही वंश के हैं।

(२) बङ्गाली अपने को मध्य देशीय अंतरङ्ग आर्यन का वंशज मानते हैं, न कि पश्चिमी भारत तथा महाराष्ट्र से आकर बङ्गाल-विहार में बसने वाले वहिरङ्ग आर्यन का।

अतः वंश अथवा जाति की विभिन्नता अंतरङ्ग-वहिरङ्ग की भेदक नहीं है।

निष्कर्षः—सारांश यह है कि न तो सब वहिरङ्ग भाषाओं में ही परस्पर साम्य है और न अंतरङ्ग में ही; जिस प्रकार पूर्वी तथा पश्चिमी वहिरङ्ग भाषाओं में, उच्चारण, रचना, व्याकरण आदि में वैषम्य है उसी प्रकार पूर्वी तथा पश्चिमी अंतरङ्ग में भी। अतः न तो पूर्वी और पश्चिमी वहिरङ्ग ही एक वर्ग में रखी जा सकती हैं और न पूर्वी तथा पश्चिमी अन्तरङ्ग ही। हाँ पश्चिमी अन्तरङ्ग तथा वहिरङ्ग में अथवा पूर्वी अन्तरङ्ग तथा वहिरङ्ग में, उच्चारण, क्रियारूप (conjugation) रचना, व्याकरण सम्बन्धी जिन बातों में परस्पर साम्य है उन्हीं में पूर्वी तथा पश्चिमी में वैषम्य है। उदाहरणार्थ, प० हि०, राजस्थानी, पञ्जाबी, लहँदा, सिंधी आदि प० भाषाओं में स का ह हो जाता है, परन्तु पू० हि०, विहारी, उड़िया, बङ्गला, आसामी आदि पू० भाषाओं में स का श हो जाता है; प० हि०, पहाड़ी, राजस्थानी, पञ्जाबी, गुजराती, लहँदा, सिंधी तथा मराठी पश्चिमी भाषाएं कर्मणि प्रधान और पू० हि०, उड़िया, विहारी, बङ्गला तथा आसामी पूर्वी भाषाएं कर्त्तरि-प्रधान हैं जैसा कि निम्नलिखित उदाहरणों से स्पष्ट है:—

कर्मणि-प्रधान पश्चिमी भाषाएं	कर्त्तरिप्रधान पूर्वी भाषाएं
(अ) वहिरङ्ग	(अ) वहिरङ्ग
(१) सिंधी—मूँ किताब पढ़ी-मे।	(१) विहारी (भोजपुरी)—हम पोथी पढ़ लीं।
(२) लहँदा—किताब पढ़ीम्।	(२) उड़िया—आम्मे पोथि पोढ़लुँ।
(३) मराठी—मीं पोथी नाचिली।	(३) बङ्गला—आमि वोइ पोड़िलाम्।
(आ) अन्तरङ्ग	(आ) अन्तरङ्ग
(४) पहाड़ी—मैंल किताब पढ़ी।	(४) पू० हि०—मैं पोथी पढ़ेउँ।
(५) गुजराती—में पोथी बाँची।	
(६) राजस्थानी—मुँ (अथवा म्हे) पोथी पढ़ी छे।	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदनुसार क्रियारूप भी पश्चिमी वहिरङ्ग तथा अंतरङ्ग में एक प्रकार से और पूर्वी वहिरङ्ग तथा अंतरङ्ग में दूसरी प्रकार से बनते हैं। इसके अतिरिक्त आर्यों का सप्तसिंधु में रहना पहिले से ही पाया जाता है, अतः पश्चिमी अंतरङ्ग तथा वहिरङ्ग आर्यन एक वंश के और पूर्वी अंतरङ्ग तथा वहिरङ्ग दूसरे वंश के हुए। अतएव अंतरङ्ग-वहिरङ्ग भाषा भेद निराधार हैं। इसकी अपेक्षा पूर्वी तथा पश्चिमी भेद करना अधिक उपयुक्त होगा।

उक्त वर्गीकरण में इन त्रुटियों के अतिरिक्त एक और भी दोष है। पश्चिमी हिन्दी के उत्तरी क्षेत्र की भाषा सदैव से राष्ट्रभाषा अथवा सर्व-प्रमुख रही है। संस्कृत, पाली, शौरसेनी, ब्रज आदि राष्ट्रभाषाएँ मध्यदेश के इसी भाग की थीं। खड़ी बोली अथवा उच्च हिन्दी भी दिल्ली-मेरठ के पास की भाषा है। भावी राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी भी खड़ी बोली का ही एक रूप है। अतएव इस क्षेत्र की भाषा सदैव से सम्राज्ञी और अन्य भाषाएं उसके आधिपत्य में रहने वाली रानियाँ रही हैं। सम्राज्ञी तथा रानियों को एक पंक्ति में बैठाना सम्राज्ञी का अपमान करना है अर्थात् सर्व प्रधान भाषा प० हि० को अन्य गौण भाषाओं के साथ रखना अनुचित है। अतः प० हि० को केन्द्र-भाषा मानकर वर्गीकरण करना चाहिये।

उक्त त्रुटियों के निराकरण का प्रयत्नः—संभवतः इन्हीं त्रुटियों तथा दोषों के कारण वेवर, एस० के० चटर्जी, आदि विद्वानों ने अंतरङ्ग-वहिरङ्ग-वर्गीकरण की उपेक्षा करके अन्य प्रकार वर्गीकरण करने का प्रयत्न किया है। वेवर ने उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी, मध्यदेशीय आदि अनेक वर्गों में तथा चटर्जी* ने प० हि० को केन्द्र भाषा मानकर उसके चारों ओर की भाषाओं को उत्तरी, पश्चिमी, दक्षिणी तथा पूर्वी वर्गों में विभाजित

*चटर्जी का वर्गीकरण :—
(अ) उत्तरी वर्ग—सिंधी, लहँदा, पंजाबी
(आ) पश्चिमी वर्ग—गुजराती, राजस्थानी
मध्य वर्ग—प० हि०
(इ) पूर्वी वर्ग—पू० हि०, विहारी, उड़िया, बंगला, आसामी
(ई) दक्षिणी वर्ग—मराठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है। तदुपरान्त स्वयं ग्रियर्सन + ने चटर्जी के वर्गीकरण को सुविधाजनक जानकर मध्यदेशीय प० हि० को केन्द्र भाषा मानकर उसकी निकटवर्ती भाषाओं को अंतर्वर्ती अथवा मध्यम वर्ग में और दूरवर्ती भाषाओं को वहिरङ्ग वर्ग में रखा है। उक्त दोनों वर्गीकरणों में प० हि० का महत्त्व अवश्य बढ़ गया, परन्तु पूर्वी पश्चिमी का प्रश्न चटर्जी के वर्गीकरण में तो आवश्यकता से अधिक हल हो गया और ग्रियर्सन के वर्गीकरण में अक्षुण्ण रहा, अर्थात् चटर्जी के वर्गीकरण में प० हि० के पश्चिम की भाषाओं के उत्तरी तथा पश्चिमी और पूर्व की भाषाओं के पूर्वी तथा दक्षिणी अनावश्यक उपभेद हो गए और मराठी पश्चिमी भाषाओं के समान होने पर भी पूर्वी भाषाओं में सम्मिलित हो गई, और ग्रियर्सन के वर्गीकरण में अंतर्वर्ती तथा वहिरङ्ग दोनों वर्गों में पूर्वी तथा पश्चिमी भाषाएँ यथा पूर्व सम्मिलित रहीं; अतः दोनों वर्गीकरण अपूर्ण हैं।

आदर्श वर्गीकरण:—वह होगा जिसमें प० हि० को केन्द्रस्थ मान कर भाषाओं को पूर्वी तथा पश्चिमी में विभाजित किया जाय और प० हि०

पश्चिमी भाषाएँ	केन्द्र भाषा	पूर्वी भाषाएँ
(१) पहाड़ी (२) पञ्जाबी (३) लँहदा (४) सिंधी (५) राजस्थानी (६) गुजराती (७) मराठी	पश्चिमी हिन्दी	(१) पूर्वी हिन्दी (२) विहारी (३) उड़िया (४) बंगला (५) आसामी

+ग्रियर्सन का द्वितीय वर्गीकरण :—

(क) मध्य देशीय भाषा—प० हि०

(ख) अंतर्वर्ती अथवा मध्यम भाषाएं :—

(अ) मध्यदेशी भाषा से विशेष घनिष्टता वाली—पञ्जाबी, राजस्थानी, गुजराती, पहाड़ी।

(आ) वहिरंग भाषाओं से अधिक संवद्ध—पू० हि०

(ग) वहिरङ्ग भाषाएं :—

(अ) पश्चिमोत्तर वर्ग—लहँदा, सिंधी

(आ) दक्षिणी वर्ग—मराठी

(इ) पूर्वी वर्ग—विहारी, उड़िया, बङ्गाली, आसामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पश्चिमी वर्ग में रखा जाय जिससे उसकी समानता है अर्थात् यदि नैनी-ताल से नागपुर तक एक सीधी रेखा खींची जाय तो उसके पूर्व की भाषाएँ पूर्वी और उसके पश्चिम की भाषाएँ पश्चिमी कहलायेंगी और पश्चिमी वर्ग की सर्व प्रधान अथवा राष्ट्र भाषा प० हि० केन्द्रस्थ होगी। तदनुसार आदर्श वर्गीकरण निम्नलिखित होगा:--

(क) पश्चिमी भाषाएं:—(१) केन्द्र भाषा—पश्चिमी हिन्दी-- इसका क्षेत्र शिमला तथा नैनीताल के दक्षिण हिमालय की तराई से नर्मदा की घाटी के दक्षिण तक और अम्बाला से कानपुर तक है अर्थात् इसका प्रसार पंजाब के द० पू० भाग, संयुक्त प्रदेश, मध्य भारत तथा मध्य प्रदेश में है। इसमें खड़ी बोली, ब्रज भाषा, बांगरू, कन्नौजी तथा बुंदेलखंडी सम्मिलित हैं।

(अ) खड़ी बोली:--इसका मुख्य केन्द्र दिल्ली मेरठ तथा विजनौर का निकटवर्ती प्रदेश और विस्तार बरेली से अम्बाला तक है अर्थात् यह बरेली, रामपुर (रियासत) मुरादाबाद, विजनौर, मेरठ, मुजफ़्फ़रनगर, सहारनपुर, देहरादून आदि ज़िलों में व्यवहृत होती है। इसके—खड़ी बोली उच्च अथवा साहित्यिक हिन्दी, उर्दू तथा हिन्दुस्तानी तीन रूप हैं। खड़ी बोली तत्सम् बहुला है अर्थात् इसमें संस्कृत के तत्सम् तथा अर्द्ध तत्सम् शब्दों का बाहुल्य है। शिक्षित हिन्दू समाज के नित्य व्यवहार तथा साहित्य में इसका प्रयोग होता है। यही राष्ट्र भाषा भी है। उर्दू में अरबी, फ़ारसी तत्सम् और अर्द्ध तत्सम् शब्दों का आधिक्य है और फ़ारसी व्याकरण से प्रभावित होने के कारण वाक्य रचना मसनवी ढंग की है। इसके दो रूप हैं—दिल्ली-लखनऊ की तत्सम् बहुला रेख्ता और हैदराबाद की सरल दक्खिनी। उत्तरी भारत के मुसलमानों तथा कायस्थों की भाषा उर्दू ही है, परन्तु कायस्थों में उत्तरोत्तर हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है। हिन्दुस्तानी में संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, अंग्रेजी, देशी आदि देशी तथा विदेशी भाषाओं के शब्दों का बाहुल्य है। इसका झुकाव उर्दू की ओर है। उत्तरी भारत के सर्व साधारण की बोल चाल की भाषा यही है आजकल इसे राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर बैठाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

(आ) बाँगरू:--इसका क्षेत्र पंजाब का दक्षिणी-पूर्वी भाग है। यह हिसार, झींद, रोहतक करनाल आदि में बोली जाती है। इसका निर्माण पंजाबी, राजस्थानी तथा खड़ी बोली के सम्मिश्रण से हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(इ) **ब्रजभाषा**:—यद्यपि यह बदायूँ, बुलंदशहर, अलीगढ़, आगरा, मथुरा इटावा तथा धौलपुर में बोली जाती है, परन्तु इसका मुख्य केन्द्र ब्रज मंडल (मथुरा) है। इसका साहित्य बहुत सुन्दर और विस्तृत है। इसमें संज्ञा विशेषण, कृदंत आदि के वाचक शब्द प्रायः ओकारांत होते हैं।

(ई) **कन्नौजी** :—यद्यपि इसका व्यवहार इटावा, कन्नौज, फ़रुख़ाबाद, हरदोई, शाहजहाँपुर पीलीभीत तथा कानपुर के पश्चिमी भाग में होता है, परन्तु इसका मुख्य केन्द्र कनौज-फ़रुख़ाबाद है। इसका साहित्य ब्रजभाषा के साहित्य के ही अंतर्गत आ जाता है। उत्तरोत्तर हिन्दुस्तानी में परिवर्तित होती जाने के कारण इसका अस्तित्व नष्ट प्राय होता जा रहा है।

(उ) **बुंदेलखंडी** :—यह जमुना से नर्मदा की घाटी तक व्यवहृत होती है। इसका मुख्य केन्द्र बुन्देलखंड अर्थात् झाँसी, जालौन, हमीरपुर आदि है। आल्हाखंड इसके साहित्यका सुन्दर उदाहरण है। केशवदास सर्व प्रमुख बुन्देली कवि थे।

(२) **पंजाबी** :—इसका क्षेत्र पूर्वी पंजाब और केन्द्र अमृतसर तथा लाहौर हैं। पंजाब में प्रत्येक ज़िले की अपनी एक पृथक बोली है, प्रत्युत किसी किसी ज़िले में तो एक से अधिक बोलियाँ व्यवहृत होती हैं। अतः पंजाबी के अंतर्गत अनेकों बोलियां हैं। इनमें मध्य भाग अर्थात् दो मुख की माझी और जम्मू की पार्श्ववर्त्ती डोग्री मुख्य हैं। पंजाबी में साहित्य नाम मात्र को ही है। 'जन्म साखी' जैसे कुछ ग्राम्य गीत ही इसके साहित्य हैं। यह लहँदा से अधिक संबद्ध है। इसकी लिपि गुरुमुखी लहँदा की लंडा लिपि का ही एक परिवर्तित रूप है और बहीखातों की लिपि तो लंडा है ही। डोग्री की लिपि टक्करी है। पंजाब में उर्दू का भी अधिक प्रचार है।

(३) **लहँदा** :—इसका क्षेत्र पंजाब का पश्चिमी भाग है, तदनुसार इसे पंजाबी भी कहते हैं। इसकी चार बोलियाँ हैं—नमक की पहाड़ी के दक्षिणी भाग की केन्द्रीय लहँदा, मुल्तान डेरागाज़ी खाँ के पार्श्व की मुल्तानी उत्तरी पश्चिमी पंजाब की पोठवारी तथा दक्षिणी पूर्वी सीमाप्रांत की धन्नी। इसका साहित्य केवल कुछ ग्राम्य गीतों तक ही सीमित है। इसकी लिपि लंडा है। (४) सिंधी:—इसका क्षेत्र सिंध है। इसमें थरेली, सिरैकी, विचोली, लारी तथा कच्छी पाँच बोलियां सम्मिलित हैं। थरेली तथा सिरैकी उत्तरी सिंध में, विचोली मध्य सिंध में, लारी दक्षिणी सिंध में तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच्छी कच्छ में बोली जाती है। इसमें विचोली साहित्यिक अथवा टकसाली भाषा है। लिपि इसकी भी लंडा है, परन्तु गुरुमुखी तथा नागरी भी व्यवहृत होती हैं। (५) गुजराती:—इसका क्षेत्र गुजरात तथा बड़ौदा का निकटवर्ती प्रदेश है। राजस्थानी। विशेषतया प्राचीन मारवाड़ी, भीली तथा खानदेशी तथा गुजराती में इतना सादृश्य है कि दोनों परस्पर सम्बद्ध प्रतीत होती हैं। उत्तरी तथा दक्षिणी गुजराती में कुछ भेद है। इसकी तीन बोलियाँ हैं—एक सूरत तथा बड़ौच में, दूसरी अहमदाबाद में और तीसरी काठियावाड़ में व्यवहृत होती है। पहिले इसकी लिपि देवनागरी थी, परन्तु आजकल गुजराती है।

(६) मराठी:—इसका क्षेत्र पूना का पार्श्व, बरार नागपुर का पार्श्ववर्ती मध्य प्रदेश का दक्षिणी भाग तथा बस्तर है। इसकी बोलियाँ कोंकणी, बरारी, हल्बी तथा देशी मराठी हैं। इनमें पूना की देशी मराठी टकसाली तथा साहित्यिक है। इसमें सुन्दर साहित्य है। मराठी की लिपि देवनागरी है, परन्तु नित्य व्योवहार की लिपि 'मोड़ी' है।

(७) राजस्थानी:—इसका क्षेत्र राजस्थान (राजपूताना) है। इसमें मेवाती, जयपुरी, मालवी तथा मारवाड़ी (मेवाड़ी) चार बोलियाँ सम्मिलित हैं। मेवाती गुड़गाँव के पास, जयपुरी जयपुर तथा कोटाबूंदी में, मालवी इन्दौर के पार्श्व में और मेवाड़ी मेवाड़ अर्थात् उदयपुर जोधपुर जैसलमेर तथा बीकानेर में व्यहृत होती हैं। मारवाड़ी तथा जयपुरी गुजरातीसे, मेवाती ब्रजभाषासे और मालवी बुन्देलखण्डीसे संबद्ध हैं। मारवाड़ीमें कुछ प्राचीन साहित्य भी पाया जाता है जो डिंगल कहलाता है। मीराबाई राजस्थानीकी सर्व प्रसिद्ध कवियित्री हैं। इसकी लिपि देवनागरी है, परन्तु मारवाड़ियों के निज व्यवहारकी लिपि महाजनी है। उत्तरी भारत में महाजनी का प्रचार मारवाड़ियों द्वारा ही हुआ है।

(८) पहाड़ी अथवा खस:—इनका क्षेत्र हिमालय के दक्षिण दारजिलिंग से शिमला तक है अर्थात् यह नेपाल, संयुक्तप्रांत के उत्तरी पहाड़ी प्रदेश तथा सरहिंद के उत्तरी भाग में व्यवहृत होती हैं। यद्यपि ये भाषाएँ अपने मूल रूप में दर्द भाषाओं से संबद्ध हैं, परन्तु इनका राजस्थानी से अधिक सादृश्य है। इसका कारण यह है कि इन पहाड़ी प्रदेशों के खस आर्यन दर्दिस्तान से आकर यहां बसे थे, अतः दर्द भाषाओं का यहाँ की भाषाओं पर बहुत प्रभाव पड़ा; परन्तु बाद में पूर्व काल में गूजर और मुसलमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल में अनेक राजपूत भी यहाँ आकर बस गए, अतः खस भाषाएं राजस्थानी से भी प्रभावित हो गईं। जब खस लोगों ने नेपाल को जीता तो ये गूजर तथा राजपूत भी इनके साथ थे, अतः नेपाल की भाषाएं राजस्थानी से प्रभावित हो गईं। इस प्रकार शिमला से नेपाल तक की पहाड़ी भाषाएँ राजस्थानी से संबद्ध हो गईं। पहाड़ी भाषाओं की पूर्वी, माध्यमिक तथा पश्चिमी तीन बोलियाँ हैं। पूर्वी पहाड़ी, जिसे नेपाली पर्वतिया, खसकुरा अथवा गोरखाली भी कहते हैं, नेपाल में बोली जाती है। इसका केन्द्र काठमांडू है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से इसका विशेष महत्त्व है, अनेकों जर्मन तथा रूसी विद्वानों ने इसका अध्ययन किया है इसमें कुछ अर्वाचीन साहित्य भी है। नेपाल के पूर्वी भाग में नेवारी आदि तिब्बत-वर्मी परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं, परन्तु अब वहाँ भी धीरे धीरे खस-कुरा का प्रचार हो रहा है। इसकी लिपि देवनागरी है। राज्य दरबार में हिन्दी का अधिक मान है। माध्यमिक पहाड़ी कमायूँ तथा गढ़वाल में व्यवहृत होती है। यह जयपुरी से बहुत मिलती जुलती है। इसकी कमायुँनी तथा गढ़वाली दो बोलियाँ हैं। कमायुँनी का मुख्य केन्द्र अलमोड़ा में नैनीताल का निकटवर्ती प्रदेश और गढ़वाली का मंसूरी का पार्श्व है। इसकी साहित्यिक भाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है। इसका साहित्य केवल कुछ नवीन पुस्तकों तक ही सीमित है। पश्चिमी पहाड़ी जोनसार-बावर (संयुक्त प्रांत) से शिमला तक व्यवहृत होती है। इसका मारवाड़ी से अधिक सादृश्य है। इसकी लगभग तीस बोलियाँ हैं, जिनमें जौनसार-बावर की जौनसारी, शिमला की क्योंथली, कुड्लूली की, कुड्लूली चम्बा की चम्वाली आदि मुख्य हैं। चम्वाली के अतिरिक्त शेष सब की लिपि टक्करी है। इसमें कोई विशेष साहित्य नहीं है, केवल कुछ ग्राम्य गीत हैं।

(ख) पूर्वी भाषाएँः—(१) पूर्वी हिन्दी—इसका क्षेत्र हिमालय की तराई से रायपुर तक और कानपुर से भागलपुर तक है। यद्यपि कुछ बातों में यह प० हि० से मिलती जुलती है, परन्तु व्याकरण के अधिकांश रूपों में इसका सम्बन्ध बिहारी भाषा से है। अतः यह पूर्वी वर्ग की होते हुए भी मध्यवर्ती भाषा कही जा सकती है। इसकी अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी तीन बोलियां हैं। यद्यपि अवधी तथा बघेली में अधिक अंतर नहीं है, परन्तु उड़िया तथा मराठी से प्रभावित होने के कारण छत्तीसगढ़ी इनसे बहुत भिन्न है। अवधी हिमालय की तराई से जमुना तक बोली जाती है, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका मुख्य केन्द्र अवध है। रामायण तथा पद्मावत इसके साहित्य के सुन्दर उदाहरण हैं। तुलसी इसके सर्व प्रमुख कवि थे। इसके दक्षिण जबलपुर-मांडला तक बघेली व्यवहृत होती है। इसका मुख्य केन्द्र रीवाँ है। इसकी साहित्यिक भाषा अवधी है। बघेली क्षेत्र के दक्षिण छत्तीसगढ़ आदि में छत्तीसगढ़ी बोली जाती हैं इसमें प्राचीन साहित्य का तो अभाव है, परन्तु कुछ नई बाजारू पुस्तकें हैं। यद्यपि पूर्वी हिन्दी की लिपि नागरी है, परन्तु कैथी का भी प्रयोग होता है।

(२) **बिहारी:**—इसका व्यवहार गोरखपुर, बनारस, बिहार, छोटा नागपुर तथा मालदा में होता है। इसकी मैथिली, मगही तथा भोजपुरी तीन बोलियाँ हैं। इनमें मैथिली तथा मगही में तो साहश्य है, परन्तु भोजपुरी इन दोनों से भिन्न है। मैथिली दरभंगा के निकटवर्ती प्रदेश में; मगही गया, पटना, मुंगेर, हज़ारीबाग तथा मालदा में: और भोजपुरी गोरखपुर तथा बनारस कमिश्नरियों और शाहबाद, आरा, चम्पारन, सारन तथा छोटा नागपुर के ज़िलों में बोली जाती है। मैथिली की लिपि मैथिली है जिसके अक्षर बंगला अक्षरों के समान हैं। विद्यापति मैथिलकोकिल इसके सर्व प्रधान कवि थे। मगही तथा भोजपुरी की लिपि कैथी है। बिहारी की छपाई की लिपि नागरी है। इस प्रकार यद्यपि इसमें मैथिली, कैथी तथा नागरी तीन लिपियां प्रयुक्त होती हैं, परन्तु साहित्यिक भाषा केवल एक हिन्दी ही है।

(३) **उड़िया:**—इसका क्षेत्र उड़ीसा, छोटानागपुर का दक्षिणी भाग, मध्य प्रदेश का पूर्वी भाग तथा मद्रास का उत्तरी भाग है। उड़िया तथा बंगला के व्याकरण में अधिक साम्य है, परन्तु उड़िया की लिपि बंगला से कहीं अधिक कठिन है। इसमें तेलुगु तथा मराठी शब्दों की अधिकता हैं इसका साहित्य कृष्ण सम्बन्धी है।

बंगला:—इसका क्षेत्र बंगाल है। बंगला तत्सम बहुला भाषा है। इसकी उत्तरी, पूर्वी तथा पश्चिमी तीन बोलियाँ हैं। हुगली की पश्चिमी बंगला साहित्यिक भाषा है। इसका साहित्य बहुत उच्च कोटिका है। बंगला लिपि देवनागरी का ही एक परिवर्तित रूप है। बंगला में अ का ओ की भाँति और स का श की भाँति उच्चारण होता है।

(५) **आसामी:**——ब्रह्मपुत्र की घाटी में ग्वालपारा से सदिया तक बोली जाती हैं। व्याकरण, उच्चारण तथा लिपि में यह बंगला से बहुत मिलती जुलती है। इसमें प्राचीन साहित्य स्वरूप कुछ सुन्दर ऐतिहासिक ग्रन्थ भी पाए जाते हैं। इसकी लिपि बंगला का एक परिवर्तित रूप है।

२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैन साहित्य के ऐतिहासिक गुजराती ग्रन्थ

[लेखक, श्री अमरचन्द नाहटा, संपादक 'राजस्थानी']

भारतीय वाङ्मय में जैन साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है पर जैनेतर विद्वानों के उससे प्रायः अपरिचित से रहने के कारण अभी तक जैन वाङ्मय को समुचित स्थान नहीं मिला। कुछ वर्षों पहले उस विशाल साहित्य के सम्बन्ध में जानकारी कराने वाली पुस्तकों का भी अभाव था। पर अब वैसा नहीं है। जैन साहित्य की सूची के तौर पर प्रायः ३२ वर्ष पूर्व श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फ्रेन्स ने जैन ग्रन्थावली नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया था जिसमें श्वेताम्बर साहित्य के संस्कृत एवं प्राकृत ग्रन्थों की सूची थी। उसके बाद बहुत से नवीन अन्वेषण हुए, सैकड़ों महत्वपूर्ण ग्रन्थों एवं भाषा के हज़ारों रास चौपाइयों का पता चला। सौभाग्य से श्रीयुक्त मोहनलाल दुलीचन्द देशाई-एडवोकेट, बम्बई हाईकोर्ट का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। फलतः २०-२५ वर्ष के अनवरत एवं अथक परिश्रम से आपने ४ महत्व पूर्ण ग्रन्थों का संकलन किया जिनका संक्षिप्त परिचय कराना ही इस लेख का उद्देश्य है।

सर्वप्रथम भाषा-साहित्य के विवरणात्मक (परिचय स्वरूप) "जैन गुर्जर कवियों' भा० १ सं० १९९२ में प्रकाशित हुआ। जिसमें विक्रम की तेरहवीं शताब्दि से १७ वीं शताब्दि तक के अपभ्रंश गुजराती, हिन्दी एवं राजस्थानी के कवियों एवं उनकी रचनाओंका महत्वपूर्ण परिचय है। कवियों के परिचय में उनके गच्छ एवं गुरु परम्परादि का यथा ज्ञात विवरण है और कृति परिचय में कृति के आदिअन्त के आवश्यक पद्य संग्रहीत किये गये हैं। इस भाग में कुल २८७ जैन भाषा कवियों एवं उनका ५४१ पद्यमय कृतियों का परिचय है। अन्त में गद्य भाषा साहित्य की भी सूची दी गई है। ग्रन्थ के आदि में ३२० पृष्ठों में भाषा साहित्य का इतिहास लिखा गया है। यह साहित्यिक विद्वानों के बड़े ही काम की चीज़ है। अन्त में कवियों एवं कृतियों की अकारादि क्रमसे सूची है। ग्रन्थ की कुल पृष्ठ-संख्या १०१० और सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य ५) रुपया रखा गया है जो सर्वथा उपयुक्त है। ग्रन्थ गुजराती भाषा एवं गुजराती लिपि में श्री जैन श्वेताम्बर कान्फ़रेन्स-बम्बई ने प्रकाशित किया है।

उपरोक्त ग्रन्थ प्रकाशन के ५ वर्ष बाद इसका दूसरा भाग प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ जिसमें केवल अठारहवीं शताब्दि के जैनी कविओं (कवि न २८८ से ४६६ तक=१७९) एवं उनकी कृतियों (कृ० नं० ५४२से ९०३ ४०१)का परिचय उसी प्रकार से है । अन्त में कृतियों की सूची है । परिशिष्ठ नं० १ में जैन कथा नामक कोष २० पृष्ठों में और परिशिष्ट नं० २ में तथा खरतर गच्छ नामक जैन गच्छों की उपलब्ध पट्टावलियों का ऐतिहासिक सार है । परिशिष्ट नं० ३ में अंच सगच्छ की पट्टावली नं०४ में राजावली दी है जो ऐतिहासिक दृष्टि से (परिशिष्ठ नं० २-३-४) बड़े ही महत्व की हैं । समग्र ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या ८४५ एवं मूल्य सजिल्द का ३ रुपया है । प्रकाशक उपरोक्त संस्था है ।

इसके २ वर्ष पश्चात् आपका अत्यन्त महत्व पूर्ण ग्रन्थ "जैन साहित्यकों का संक्षिप्त इतिहास"उपरोक्त संस्था से ही प्रकाशित हुआ है । इसमें भगवान् महावीर से सं० १९६० तक के समस्त श्वेताम्बर जैन साहित्य एवं ग्रन्थ-कारों, श्रावकों एवं विशिष्ट घटनाओं का परिचय दिया गया है । ८३५ पृष्ठोमें मूल ग्रन्थ समाप्त हुआ है । प्रायः २०० पृष्ठों में विस्तृत अनुक्रमणिका जो कि २३ विभागों में विभक्त है समाप्त हुई है । ५० पृष्ठों में शुद्धि वृद्धि एवं 'जैन गुजर कविओं' भा० १-२ पर आई हुई विविध विद्वानों की अमूल्य सम्मतियाँ छपी हैं । ग्रन्थ के आदि में ६१ पृष्ठों में 'निवेदन' २० पृष्ठों में 'कामदार केशवलाल हिम्मत राम की प्रस्तावना' फिर सांकेतिक अक्षरों की समझ, चित्र परिचय, एवं विषयानुक्रम हैं । समग्र ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या २२५५ एवं चित्र संख्या ६० हैं । सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य ३६) रुपया है । इस ग्रन्थ की रचना में श्रीयुक्त देशाई का २० वर्षों का परिश्रम सफल हुआ है । उनके परिश्रम की कुछ झांकी, हम उन्हीं के शब्दों में यहाँ दे रहे हैं ।

"ते लखतां-छपता चार वर्ष बीती गया । एनी पाछला दिन रात श्रम लेवामां में कचास राखी नथी । समय लई पोताने खर्चे जुदे जुदे स्थलो जई, पुस्तक भण्डारों जोइ तपासी, आववा, तेमाथी मलेला तेमज अन्य प्राप्तव्य साधनों ने प्राप्त करी संग्रह, करवो, तेमांथी नोंधों टांचलों करी लेवा ते परथी प्रमाणो आपी प्रकरणो, लखवां, छापबा मोकसवों, तेना, प्रुफोनु शोधन करवुं, तेने पादल मंगावी सुधारवा-प्रेषवां, तेनी विस्तृत अनुक्रमणिका करवी वगेरे बधुय एकले पंडे कोई नीपण सहाय बगर 'एकप्रूफ रीडर,जेवानी पण मदद वगेरे करीने आ पुस्तक में गुजरात ने सादर धर्पु छे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे विचार से ऐसा इतिहास अद्यावधि किसी भी भाषामें किसी भी साहित्य का प्रकाशित नहीं हुआ जिसमें ग्रन्थकारों की छोटी मोटी सभी रचनाओं का उल्लेख एवं उल्लेखनीय सभी प्रवृतियों और घटनाओं का समावेश हो। यह ग्रन्थ केवल साहित्व का इतिहास ही नहीं अपितु जैन विश्व-कोष है।

इस महान् ग्रन्थ के पश्चात् देशाईजी का "जैन गुजर कविओं का" तीसरा भाग अभी छप रहा है। मूल ग्रन्थ छप चुका है। अनुक्रमणिकाओं को लेकर २००० से भी अधिक पृष्ठ छप चुके हैं जिनमें १९ वीं एवं २० वीं शताब्दि (सं० १९६०) तक के जैन कवियों के कृतियों का परिचय है। पूर्व के दोनों भागों की पूर्ति एवं गद्य भाषा-साहित्य की सूची दी गई है। अन्त में जैन रास चौपाई आदि भाषा कृतियों में जिन जिन "देशीयों" का व्यवहार हुआ है उनकी बिस्तृत सूची है जिसके द्वारा हमारा लोक साहित्य कितने अधिक परिमाण में नष्ट हो चुका है, स्पष्ट प्रतीत होता है। इसके बाद जैनेतर कवियों की कृतियों का भी परिचय दिया गया है।

इस ग्रन्थ की महत्वपूर्ण प्रस्तावना छपनी बाकी है। उसके मुद्रित हो जाने पर यह भाग सम्भवतः दो जिल्दों में प्रकाशित होगा।

इस प्रकार श्रीयुक्त देशाईजी ने समस्त श्वेताम्बर साहित्य का इतिहास प्रकाशित कर गुजराती भाषा एवं जैन साहित्य की महान सेवा की है। श्रीयुक्त देशाई बड़े ही कर्मठ हैं। मैंने स्वयं उन्हें प्रायः सारी रात काम करते देखा है। दिन में वकालत करना और सारी रात साहित्य सेवा में व्यतीत करना, ऐसे लगनशील व्यक्ति विरले ही मिलेंगे।

उपरोक्त तीनों ग्रन्थों को श्री जैन श्वेताम्बर कान्फरेन्स ने प्रकाशित किया है और चौथा भी उसी के द्वारा प्रकाशित होने वाला है। "कान्फरेन्स" ने प्रचारार्थ १४) के बदले अभी मात्र ४) रुपये में ही तीनों (प्रकाशित) ग्रन्थों को देने की सूचना निकाली है जो केवल काग़ज़ के ही दाम नहीं हैं। अतः जैनेतर विद्वानों को विशेष रूप से इस सुयोग का लाभ उठाना चाहिये।

जैनेतर साहित्यिक विद्वानों को तो जैन साहित्य का यथा-विधि ज्ञान न होने से वे जैन ग्रन्थों के विषय में जो कुछ लिखते हैं, प्रायः भ्रान्तिपूर्ण होता है। अभी हाल ही में नागरी प्रचारिणी पत्रिका में हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का विवरण छपा था उसमें जैन कवि "लब्धोदय" का नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लक्ष्योदय" इत्यादि के साथ कई भूल भ्रान्तियाँ छपी हैं। यह ताज़ा उदाहरण है, अतएव मैं जैनेतर विद्वानों से विशेष रूप से अनुरोध करूँगा कि वे अपने लेखन में इन ग्रन्थों का उपयोग अवश्य करें ताकि जैन साहित्य के विषय में वे जो कुछ लिखें, प्रामाणिक हो।

मैं जैनेतर विद्वानों से एक और अनुरोध करूँगा। कि उन्होंने जैन साहित्य की जानकारी के अभाव के कारण, जैन साहित्य को उचित स्थान नहीं दिया है। इस विषय में भी ज़रा उदारता एवं निष्पक्षता से काम लें। जैन साहित्य इतना विशाल एवं सर्वाङ्गीय है कि उसकी उपेक्षा से भारतीय साहित्य का यथावत् पूरा परिचय ही नहीं होता। इस बात को शायद वे अभी अतिशयोक्ति-पूर्ण मानें, पर जब वे उक्त चार ग्रन्थों को ध्यान से पढ़ेंगे तो उन्हें यह स्वीकार करना ही होगा। मैंने इस लेख में जिन चार महान् ग्रन्थों का परिचय दिया है वे तो केवल श्वेताम्बर साहित्य की रूपरेखा मात्र हैं। उनके अतिरिक्त और भी सैकड़ों महत्वपूर्ण ग्रन्थ जैन भंडारों में सुरक्षित हैं जिनका देशाई महाशय को भी पता नहीं क्योंकि अन्वेषण का कार्य ही ऐसा है कि नित्य नवीन बातों का पता चलता रहता है। अनेकों ज्ञान भंडार तो अब भी ऐसे हैं कि जिनमें वर्षों से ताले लगे हैं। कोई देख ही नहीं पाता। इसी प्रकार दिगम्बर साहित्य भी कम महत्व का नहीं है, जिसका परिचय इन ग्रन्थों में नहीं है। इस साहित्य के भी हज़ारों महत्वपूर्ण प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, तामिल आदि भाषाओं के ग्रन्थ हैं। दिगम्बर विद्वानों से विशेष अनुरोध है कि वे भी अपने दि० साहित्य का इतिहास देशाई के ग्रन्थों की भाँति शीघ्र ही प्रगट करें ताकि विश्व को समस्त जैन वाङ्मय की सच्ची महत्ता का पता लगे।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

[लेखक—श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, मंत्री]

गुजरात—प्रान्त के विभिन्न स्थानों में राष्ट्रभाषा का प्रचार कार्य खूब बढ़ रहा है। गत दो महीनों में कई केन्द्रों में प्रमाण पत्र वितरणोत्सव बड़े उत्साह से मनाये गये हैं। कई स्थानों पर राष्ट्रभाषा के प्रचार कार्य को सुसंगठित किया गया है। यहाँ संक्षेप में विभिन्न केन्द्रों का जिक्र किया जाता है।

सूरत—राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल, सूरत अपनी विविध प्रवृत्तियों के द्वारा सूरत शहर में प्रचार कार्य कर रहा है। हिन्दी के विद्वानों, कवियों और साहित्यिकों का सहयोग प्राप्त करने का भी मंडल प्रयत्न करता रहता है। गत दो महीनों में मंडल की ओर से श्री काका साहब कालेलकर, श्री दुलारेलाल भार्गव, तथा श्रीमती सावित्री देवी के आम सभा में व्याख्यान हुये, जिनसे जनता ने काफी प्रोत्साहन प्राप्त किया।

ता० १ अप्रेल से सरकार से सहायता कम मिलने के कारण 'मंडल' ने अपना राष्ट्रभाषा अध्यापन मन्दिर बन्द कर दिया है।

सूरत के राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षा उत्तीर्ण युवकों ने 'राष्ट्रभाषा कोविद मंडल' नाम की एक संस्था स्थापित की है। यह संस्था समय समय पर विद्वानों के व्याख्यान तथा साहित्यिक वार्तालाप की आयोजना किया करती है। राष्ट्रभाषा कोविद मंडल की ओर से श्री काका साहेब कालेलकर, श्री गंगा शंकर पंड्या, श्री रामेश्वर दयाल दुबे का साहित्यिक वार्तालाप हुआ।

अहमदाबाद—शहर में राष्ट्रभाषा का पुस्तकालय स्थापित करने के लिये प्रयत्न चालू है। स्थानीय मिशन हाई स्कूल का गत राष्ट्रभाषा परीक्षा का परीक्षाफल उत्तम रहा है।

भावनगर—यहाँ एक वर्ग चलाया गया जिसमें ४० के करीब शिक्षक और नवयुवक आये थे। उस वर्ग के शिक्षकों ने काठियावाड़ में प्रचार कार्य शुरू किया है।

नड़ियाद—यहाँ का काम विशेष रूप से बढ़ रहा है। एक नये प्रचारक की भी नियुक्ति हुई है। पिछली परीक्षा के बाद २० केन्द्र नये खुले।

बड़ोदा राज्य—राज्य ने अपनी पाठशालाओं में वर्धा की पुस्तकों को पाठ्य पुस्तक के तौर पर स्वीकार किया है। बड़ोदा राज्य में राष्ट्रभाषा का प्रचार जोर से चल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोरबन्दर-राजकोट—कार्य को व्यवस्थित और सुसंगठित करने की दृष्टि से सभायें की गईं जिनमें श्री कानजी भाई ने राष्ट्रभाषा के प्रचार के सम्बन्ध में अपने विचार जनता के सामने रखे। श्री कानजी भाई, श्रीप्रह्लाद राय वैद्य तथा श्री वजुभाईशाह आदि सज्जन राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य में विशेष दिलचस्पी ले रहे हैं।

बम्बई

आर्यन तथा गोखले एज्यूकेशन सोसाइटी स्कूलों के राष्ट्र भाषा वर्गों का द्वितीय वार्षिक स्नेह सम्मेलन रविवार ता० १६-२-४१ को बड़े उत्साह से मनाया गया। बम्बई के प्रसिद्ध कांग्रेस-कार्यकर्ता श्री हठीसिंह जी ने राष्ट्र-भाषा सीखने पर काफ़ी ज़ोर दिया। वर्धा के आचार्य दादा धर्माधिकारीजी के व्याख्यान से श्रोतागण खूब प्रभावित हुये। सभा की यंत्रिणी श्री पेरीनबेन केप्टन तथा वर्धा समिति के परीक्षा मंत्री श्री नाणावटी की उपस्थिति से समारम्भ के उत्साह में और भी वृद्धि हुई।

महाराष्ट्र

गत दो महीनों में महाराष्ट्र के भी विभिन्न केन्द्रों में प्रमाणपत्र वितर-णोत्सव तथा स्नेह सम्मेलन मनाये गये हैं। प्रान्तीय मन्त्री श्री गो० प० नेने ने विभिन्न केन्द्रों का निरीक्षण किया और स्थानीय कार्यकर्ताओं तथा प्रचारकों के साथ प्रचार के सम्बन्ध में परामर्श किया। यहाँ संक्षेप में विभिन्न केन्द्रों का जिक्र किया जाता है :—

पूना—प्रान्तीय समिति की ओर से राष्ट्रभाषा शिक्षक विद्यालय शुरू किया गया जिसमें जलगाँव, वेगुंर्ला, सोलापुर आदि स्थानों के १० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

कराड—यहाँ के राष्ट्रभाषा विद्यालय का स्नेह सम्मेलन प्रो० पोतदार की अध्यक्षता में हुआ। स्वागताध्यक्ष तथा अध्यक्ष के बड़े रोचक तथा प्रभावशाली भाषण हुये। श्री पोतदार जीने राष्ट्रभाषा के रूप को समझाया और कहा कि जो भाषा सब की समझ में आ सकेगी और जिसे सब लोग व्यवहार में ला सकेंगे वही चल जायगी, उसे कोई रोक नहीं सकता।

श्री शिवाजी हिन्दी प्रेमी-मंडल—मंडल का दूसरा वार्षिक स्नेह सम्मेलन २८ मार्च ४१ को श्री काका साहेब कालेलकर की अध्यक्षता में हुआ। श्री काका साहब ने अपने भाषण में कहा कि राष्ट्रभाषा बड़ी आसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल और सादी होनी चाहिये। राष्ट्रभाषा के साथ ही नहीं, बल्कि राष्ट्रभाषा के पहले ही राष्ट्रीयता का प्रचार होना बिलकुल जरूरी है। राष्ट्रभाषा तो केवल साधन है साध्य नहीं।

यह मंडल राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य गत तीन साल से कर रहा है और उसका कार्य दिन-ब-दिन बढ़ रहा है।

पाउलसे—जनता शिक्षण मंडल खिरोदा के मातहत यहाँ पर एक राष्ट्रभाषा प्रचार वर्ग खोला गया है।

पेठा—स्थानीय प्रचारक श्री रा० जोगदेव स्थानीय हाईस्कूल में राष्ट्रभाषा वर्ग का संचालन कर रहे हैं काफी संख्या में विद्यार्थी राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम दिखा रहे हैं।

विटा—स्थानीय प्रचारक श्री रा० के० केलकर के उत्साह से इस छोटे से गाँव में राष्ट्रभाषा का प्रचार उन्नति कर रहा है।

वसई—स्थानीय उत्साही प्रचारक श्री तेंडुलकर जी वसई के अलावा स्थानीय उपकेन्द्र अगाशी, आरनाला आदि स्थानों में जा जाकर राष्ट्रभाषा के वर्ग चला रहे हैं। वसई के पापड़ी हाईस्कूल तथा वसई की ग्राम सभा में श्री रामेश्वर दयाल दुबे ने राष्ट्रभाषा प्रेमी जनता को राष्ट्रभाषा सीखने का महत्व आसान हिन्दी में समझाया।

परीक्षा मंत्री का प्रवास—परीक्षा मंत्री श्री अमृतलाल नाणावटी ने हैदराबाद (दक्षिण) बुलारम, सिकन्दराबाद, गुलबर्गा, चिंचोली और औरंगाबाद केन्द्रों का निरीक्षण किया। औरंगाबाद में परीक्षामंत्री ने उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र दिये।

उत्कल

ता० ८, ९ फरवरी को बरहमपुर में उत्कल प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का नवाँ वार्षिक अधिवेशन पुरी के श्री महन्तजी गजाधर रामानुज जी के सभापतित्व में मनाया गया। इस अवसर पर कलकत्ता से श्री वसन्तलालजी मुरारका तथा पूर्व भारत राष्ट्रभाषा प्रचार सभा के मंत्री श्री भंवरमल जी उपस्थित थे। कई विद्वानों के भाषण हुये। एक प्रस्ताव द्वारा इस बात पर खेद प्रकट किया गया कि उत्कल सरकार ने सन् १९४१ के आरंभ से उड़ीसा में हिन्दी की पढ़ाई अनिवार्य कर देने की अपनी घोषणा को अभी तक कार्यरूप में परिणत नहीं किया। अनुवाद समिति के काम को बढ़ाने के लिये श्री महन्तजी ने १५१) की रकम सभा को भेंट की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्ध

सिन्ध में प्रचार कार्य के सञ्चालक श्री इन्द्रदेव शर्मा ने विभिन्न केन्द्रों में दौरा किया और वहाँ की जनता को राष्ट्रभाषा का महत्व समझाया।

प्रान्तीय समिति के अध्यक्ष श्री प्रो० नारायणदास जी मलकानी ने कराची, सक्कर शिकारपुर आदि स्थानों में नये सिरे से सङ्गठन करने के लिये दौरा किया और स्थानीय कार्यकर्ताओं से मिलकर प्रचार कार्य को बहुत वेग दिया।

हैदराबाद में राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन—ता० २२, २३ फरवरी को हैदराबाद में श्री काका साहब कालेलकर की अध्यक्षता में सिंध राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन हुआ। सम्मेलन की तैयारी के लिये राष्ट्रभाषा के प्रचारार्थ श्री काका साहब ने ता० १२ फरवरी से सिंध प्रान्त में दौरा किया। उनके साथ प्रो० मलकानी के अलावा परीक्षा मंत्री श्री नाणावटी तथा आचार्य दादा धर्माधिकारी जी भी थे। दौरे में स्कूलों में व स्थान स्थान पर प्रचार कार्य के बारे में चर्चा हुई और व्याख्यान हुये।

ता० २२, २३, २४ को हैदराबाद में अधिवेशन हुआ जिसमें सम्मिलित होने के लिये सिन्ध के विभिन्न केन्द्रों से राष्ट्रभाषा प्रचारक और केन्द्र व्यवस्थापक आये थे। अधिवेशन पूर्ण सफल रहा।

ता० २८ फरवरी को श्री काका साहब कराची गये और वहाँ प्रचार कार्य को सुसङ्गठित किया। कराची से राष्ट्रभाषा प्रचार के लिये आर्थिक सहायता भी अच्छी मिली जो वहाँ की एक समिति को सुपुर्द की गई है।

विदर्भ-नागपुर

नागपुर-विदर्भ प्रान्त में राष्ट्रभाषा के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिये कुछ समय से विशेष ध्यान दिया जा रहा है। प्रान्तीय मंत्री श्री हरिहर रावजी देशपांडे ने कई स्थानों में जाकर राष्ट्रभाषा वर्ग चलवाने और परीक्षा केन्द्र खुलवाने का प्रयत्न किया है। अमरावती जिले में सोनेगाँव तथा तीवसा में दो केन्द्र नये खोले गये हैं। अकोला में स्थायी प्रचारक नियुक्त करने की व्यवस्था हो रही है। कई केन्द्रों में प्रमाणपत्र वितरणोत्सव मनाया गया, जिनमें अमरावती, चांदूर, शेदुर्जना, वर्धा आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असम

प्रान्तीय सञ्चालक श्री जमुनाप्रसाद श्रीवास्तव ने नौगाँव डिब्रूगढ़, गणेशवाड़ी, शिवसागर जोरहट, आदि केन्द्रों का निरीक्षण किया और राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य को बढ़ाने की दृष्टि से विभिन्न स्थानों में स्थानीय कार्यकर्ताओं से बातचीत की तथा स्कूलों और सार्वजनिक सभाओं में राष्ट्रभाषा प्रचार की आवश्यकता और महत्ता पर भाषण दिये।

असम प्रान्त में राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य को विशेष वेग देने के विचार से एक नयी योजना की बातचीत चल रही है। प्रान्तीय संचालक ने विभिन्न स्थानों पर "असमिया हिन्दी साहित्य परिषद्" की योजना पर प्रकाश डाला। ऐसी आशा की जाती है कि इस योजना को कार्य रूप में परिणत करने के लिये प्रान्त के साहित्यिक विद्वानों और राष्ट्रभाषा प्रेमियों का सहयोग प्राप्त होगा।

नौ गाँव जिले में "पुरानी गोदाम" नामक स्थान पर एक अध्यापन मन्दिर खोलने की व्यवस्था पर विचार किया जा रहा है।

मणिपुर रियासत में जब से हिन्दी प्रचार समिति का सङ्गठन हुआ है विभिन्न स्थानों में राष्ट्रभाषा के वर्ग खोले गये हैं। कितने ही हाई स्कूलों में व्यवस्थित ढङ्ग से राष्ट्रभाषा का अध्ययन प्रारम्भ हुआ है। सम्पूर्ण प्रान्त में राष्ट्रभाषा सीखने के लिये अपूर्व उत्साह दिखाई देता है।

वर्धा कार्यालय

प्रमाणित प्रचारक-योजना—यद्यपि राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा अभी अपनी शिशु अवस्था में ही है फिर भी उसका काम व्यापक हो गया है। राष्ट्रभाषा प्रचारकों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है। ऐसी दशा में इस बात की आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि राष्ट्रभाषा प्रचारकों का संगठन किया जाय तथा उन्हें अधिक योग्य बनाकर अपने कार्यक्षेत्र, प्रान्तीय समिति, केन्द्रीय समिति आदि से परिचित रखने का प्रबन्ध किया जाय। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर समिति ने प्रमाणित प्रचारक योजना बनाई है, जो शीघ्र ही कार्य रूप में परिणित की जायगी।

"राष्ट्रभाषा समाचार"—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने निश्चय किया है कि "राष्ट्रभाषा समाचार" नाम की एक मासिक मुख पत्रिका समिति की ओर से प्रकाशित की जाय। इस पत्रिका में वर्धा कार्यालय तथा परीक्षा विभाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर से सभी सूचनायें प्रकाशित की जावेंगी। 'राष्ट्रभाषा समाचार' का पहला अंक १५ जून १९४१ को प्रकाशित होगा।

राष्ट्रभाषा अध्यापन मन्दिर, वर्धा—गत वर्ष की भाँति वर्धा राष्ट्रभाषा अध्यापन मन्दिर में 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षा का अध्ययन १९४१-४२ के सत्र में चालू रहेगा। मन्दिर का सत्र १ जुलाई १९४१ से आरम्भ होगा।

हिन्दी शीघ्रलिपि और मुद्रा लेखन-वर्ग—पिछले साल की भाँति इस साल भी समिति की ओर से शीघ्रलिपि और मुद्रा लेखन वर्ग ता० १ जुलाई १९४१ से प्रारम्भ होगा।

जिला समितियों का संगठन—राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य को संगठित बनाने के लिये यह आवश्यक समझा गया है कि जिला समितियाँ कायम की जाँय। इन समितियों का सम्बन्ध प्रान्तीय समिति से होगा। सम्बद्धता सम्बन्धी नियम बनाये गये हैं। ऐसी आशा की जाती है कि विभिन्न प्रान्तों में शीघ्र ही जिला समितियाँ कायम होंगी और प्रचार कार्य व्यवस्थित ढंग से चलेगा।

राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षा—राष्ट्रभाषा प्रचार की दृष्टि से इस बात की आवश्यकता विशेष रूप से अनुभव की जा रही है कि हमारे प्रचारकों की राष्ट्रभाषा-सम्बन्धी योग्यता भाषा की विचित्र शैलियों पर अधिकार, भाषा शिक्षण कला का ज्ञान आदि बढ़ाया जाय। इसलिये वर्तमान प्रचारकों तथा भावी प्रचारकों और शिक्षकों को दृष्टि में रखकर उनकी योग्यता को बढ़ाने के साधन रूप में 'कोविद' परीक्षा से ऊँची एक परीक्षा की योजना की गई है। 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षा पहली बार सन् १९४२ के अप्रेल के अन्तिम सप्ताह या मयी के प्रथम सप्ताह में होगी

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षायें—ता० १, २ फरवरी १९४१ को राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षायें हुई थीं जिनका परीक्षा फल प्रकाशित हो गया है। संक्षेप में प्रान्त वार परीक्षा फल की सारिणी यहाँ दी जाती है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१,२ फरवरी ४१ की राष्ट्र-भाषा प्रचार परीक्षाओं के केन्द्र-आवेदक व उत्तीर्ण परीक्षार्थिओं की संख्या बतलाने वाला नक़्शाः—

प्रान्त	केंद्रों की संख्या	प्रारम्भिक			प्रवेश			परिचय			कोविद			कुल जोड़			विशेष
		आवेदक	बैठे	उत्तीर्ण	आवेदक	बैठे	उत्तीर्ण	आवेदक	बैठे	उत्तीर्ण	आवेदक	बैठे	उत्तीर्ण	कुल आवे०	कुल बैठे	कुल उत्तीर्ण	
असम	१४	२७६	२४१	१६६	६२	६५	३१	२४	२३	६	४	४	३	३६६	३२९	२०६	
बंगाल	१	११	९	०	३	२	१							१४	११	१	
उत्कल	२	८	६	४	८	८	७	३	२	२				१९	१६	१३	
सिंध	२२	५५७	५०३	३९६	१४०	१२४	११०	५०	४८	३३	४	४	४	७५१	६७९	५४३	
गुजरात	८२	२९०४	२६२८	२०२८	१०३६	९४४	७३७	३७७	३३२	१९५	९०	८४	४५	४४०७	३९८८	३००५	
महाराष्ट्र	९४	२४१४	२१८६	१८१४	११२४	१०११	८३४	५४१	४९४	३०६	२१६	१९५	१३२	४२९५	३८८६*	३०८६	
बम्बई	१०	९७१	८८३	७१७	३३६	३०८	२३९	४८	१३४	८१	६४	६२	४८	१५१९	१३८७	१०८५	
विदर्भ	७	११७	१०८	९५	३४	२९	२६	१३	८	७	११	९	८	१७५	१५४	१३६	
	२३२	७२५८	६५६४	५२२०	२७४३	२४८७	१९८५	११५६	१०४१	६३०	३८९*	३५८*	२४०*	११५४६	१०४५०	८०७५	
*सिर्फ अतिरिक्त विषय में (अलावा)											१०	१०	१०				

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-संसार

महासभा में राष्ट्रभाषा—अभी प्रयाग में संयुक्त प्रान्तीय हिन्दू-महासभा का अधिवेशन हुआ था। उसके सभापति गोरखपुर के महन्त श्री दिग्विजयनाथजी हुए थे। आपने अपने भाषण में अन्य विषयों की चर्चा करते हुए राष्ट्रभाषा की भी चर्चा की थी। आपने कहा कि हिन्दुओं की राष्ट्रभाषा हिन्दी है और जिन प्रान्तों में उसका बहुल प्रचार नहीं है, उन प्रान्तों के हिन्दुओं को भी, हिन्दुओं की एकता दृढ़ करने के लिये राष्ट्र-भाषा हिन्दी को अपनाना चाहिये। आपके मत में राष्ट्रभाषा अपनाये बिना कोई भी राष्ट्र अपनी पुरानी संस्कृति और शान प्राप्त नहीं कर सकता।

साहित्य-सेवियों की स्मृति—शुभचिन्तक में पं० देवीदयालु चतुर्वेदी "मस्त" ने रायबहादुर डाक्टर हीरालाल-स्मृति ग्रन्थ के सम्बन्ध में एक लेख लिखा है। आपको शिकायत है कि अन्य भाषाभाषियों में जहाँ उसके साहित्य-निर्माताओं के प्रति अगाध आस्था और तज्जन्य स्तुत्य स्मारक कार्यों की विविधता देखी जाती है, तहाँ हिन्दी भाषा-भाषियों में इस दिशा में क्रियाहीनता अथवा शून्यता दृष्टिगत होती है, वह न केवल विस्मयजनक प्रस्तुत लज्जास्पद भी कही जा सकती हैं। जिनकी सेवाओं के फलस्वरूप मा भारती का भण्डार श्री सम्पन्न हो, जिनके पदचिन्हों पर चलकर आनेवाली पीढ़ी गर्व से अपना मस्तक ऊँचा कर सकती हो, उन्हीं साहित्य-सेवियों का पार्थिव शरीर नष्ट होते ही यदि हम उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये सर्वथा निष्क्रिय नजर आने लगें तो यह हमारा दुर्भाग्य ही कहा जायगा। मध्यप्रान्त के साहित्यिकों और विशेषकर पुरातत्वज्ञों में स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी की एतद्विषयक सेवाएं अपना सानी नहीं रखतीं। यदि हम उनकी स्मृति में कुछ भी न कर अपनी अक्षम्य कृतघ्नता का भी परिचय दें तो भी इस उग्रविभूति की स्मृति भुलाये नहीं भूल सकती। डाक्टर हीरालाल की स्मृति में एक स्मृति-ग्रन्थ तैयार करने का आयोजन मध्यप्रदेश के साहित्यिकों ने किया तो था; परन्तु मालूम पड़ता है इस सम्बन्ध में भी क्रियात्मक कार्यवाही शीघ्रता से नहीं हो रही है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति के अध्यक्ष बालपुर के पं० लोचनप्रसाद जी पांडेय हैं; परन्तु उन्हें प्रान्तीय लेखकों से समुचित सहयोग नहीं मिल रहा है। आशा है मध्यप्रदेश के साहित्यिक इस स्वीकृत कार्य को पूर्ण कर अपने कर्तव्य का अवश्य पालन करेंगे।

सारन जिला सम्मेलन——छपरा-सारन ज़िले के बसन्त पुर थाना में प्रथम ज़िला हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हुआ। सभापति प्रोफेसर जनार्दन प्रसाद झा "द्विज" थे। एक शानदार जलूस निकाला गया। सम्मेलन में दूर दूर से स्त्रियां भी काफी संख्या में आयी थीं। सभापति महोदय ने अपने भाषण में कहा "भाषा और साहित्य का जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध है। हिन्दी और हिन्दुस्तानी का झगड़ा व्यर्थ है। साहित्य वह दूध है जिसे मातृभाषा प्रदान करती है और जो जीवन को पुष्ट करने के लिये परमावश्क है। जो भाषा और साहित्य को बिगाड़ने की चेष्टा करता हैं वह न तो हिन्दी की भलाई करता है और न उर्दू की ही। गौरैयाकोठी में विद्यालय खोलने और प्रथमा परीक्षा पास विद्यार्थियों को भारतीय विश्वविद्यालयों से केवल अँग्रेजी में मैट्रिक परीक्षा देने की सुविधा प्राप्त कराने के प्रस्ताव स्वीकृत हुए। पटना विश्वविद्यालय ने मैट्रिक की परीक्षा का माध्यम हिन्दुस्तानी रखा है और प्रश्न अँग्रेजी में पूछने का आयोजन किया है, इसकी निन्दा की गयी और साथ ही चौथे प्रस्ताव द्वारा हिन्दुस्तानी के नाम पर हिन्दी को विकृत करने के प्रयत्न का घोर विरोध किया गया। साथ ही संस्कृत साहित्य सम्मेलन, नाटक, कविता पाठ आदि भी हुआ। इस प्रकार ज़िला सम्मेलन करने के प्रयत्न का हम अभिनन्दन करते हैं। इस प्रकार का प्रयत्न सभी ज़िलों में होना अभीष्ट है।

नागरी प्रचारिणी सभा——काशी नागरी प्रचारिणी सभा का वार्षिक अधिवेशन भी हो गया। सभा का वार्षिक विवरण और अपव्यय का व्योरा सुनाया गया। आगामी वर्ष के लिये रायबहादुर पं० कमला कर द्विवेदी सभापति और पण्डित लल्लीप्रसादजी पांडेय प्रधान मन्त्री चुने गये। पाण्डेय जी सामने आकर काम करने में प्रायः झिझका करते थे, आशा है अपनी वर्षों की सञ्चित शक्ति का उपयोग कर आप सभा का काम सफलता पूर्वक निर्वाह करते हुए सुयश सम्पादन करेंगे।

हिन्दुस्तानी रीडरें—विहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय शिक्षा विभाग को हिन्दुस्तानी रीडरें लिखकर देने का जिम्मा लिया है। इसका बिहार प्रान्त में ज़ोर का विरोध हो रहा है। जिस हिन्दुस्तानी नाम की नकली भाषाने हिन्दी संसार को विचिलित कर रखा है, उसकी रीडरें तैयार कर प्रान्तीय सम्मेलन उसके प्रचार में सहायक हो और प्रकारान्तर से उस भाषा की स्वीकृति दे यह विहार प्रान्तीय हिन्दी-प्रेमियों को सहन नहीं है। वे लोग इसे हिन्दुस्तानी कमेटी को सहयोग देना और सम्मेलन की प्रतिष्ठा को गिराने वाला तथा हिन्दी के भविष्य के लिये घातक मानते हैं। वे इसमें सामञ्जस्य नहीं देखते कि एक ओर तो सम्मेलन हिन्दुस्तानी के विरोध के लिये एक कमेटी कायम करे और दूसरी ओर विकृत हिन्दुस्तानी को जन्म देकर पालन पोषण करनेवाली हिन्दुस्तानी कमेटी से सहयोग करे। हो सकता है कि इससे सम्मेलन को कुछ द्रव्य प्राप्त हो जाय किन्तु यदि उससे सिद्धान्त की रक्षा न होती हो तो उस द्रव्य का मोह छोड़ना ही श्रेयस्कर है। किन्तु सम्मेलन के मन्त्री पण्डित छविनाथ पांडे जी इसे हिन्दुस्तानी का सहयोग नहीं मानते। शायद उनका कहना है कि ऐसी पुस्तकें संग्रहात्मक होंगी, उनमें हिन्दी के लेखकों के लेखों का संग्रह होगा और कुछ पाठ हिन्दुस्तानी भाषा के भी होंगे। शायद सम्मेलन इस पर ध्यान रखेगा कि हिन्दुस्तानी की भाषा सरल हो, उर्दूफ़ारसी प्रधान जैसी हिन्दुस्तानी की आलोचना हो रही है वैसी न हो। अच्छा हो मन्त्री जी हिन्दी संसार के समक्ष इस विषयको और स्पष्ट और विशद रूप से रख दें जिससे गलत फहमी होने का अन्देशा न रहे।

त्रावनकोर में राष्ट्रभाषा——मद्रास प्रान्त में त्रावनकोर एक बड़ी रियासत है, वहां राष्ट्रभाषा हिन्दी का बहुत अधिक प्रचार हो रहा है। अभी त्रावणकोर की राजधानी त्रिवेन्द्रम में वहाँ के हिन्दी के प्रमुख विद्वान साहित्यरत्न श्री वासुदेव पिल्लई को नागरिकों की ओर से एक मानपत्र दिया गया था, उसमें बतलाया गया कि त्रावणकोर में हिन्दी का संदेश घर-घर पहुँचाया जा रहा है। विशेष कर राजधानी त्रिवेन्द्रम में इसमें खासी सफलता मिली है। वहाँ नगर के हर एक भाग में हिन्दी के स्कूल खोले गये हैं। इस तरह त्रिवेन्द्रम में हिन्दी का पूर्ण रूप से प्रचार हो गया है। वहाँ वालों का मत है कि भारत की राष्ट्रभाषा होने के लिये हिन्दी विशेष रूप से उपयुक्त है। उस सभा के सभापति नगर के मेयर श्री सी० माधवन जी थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने अपने भाषण में जनता से अपील की कि हिन्दी का अच्छी तरह प्रचार किया जाय क्योंकि इसे देशकी आम भाषा बनाना उचित है। यदि भारत को एक संयुक्त राष्ट्र बनाना है तो उसके लिये एक आम भाषा भी होनी चाहिये। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हिन्दी सब से अच्छी भाषा है। आपने सूचित किया कि त्रावणकोर में लोग अधिक हिन्दी सीख रहे हैं। राज्य के स्कूलों में हिन्दी का अनिवार्य रूप से प्रचार करना चाहिये। त्रावणकोर का यह प्रयत्न अन्य अहिन्दी भाषाभाषी प्रान्तों और रियासतों के लिये अनुकरणीय है।

मुसलमानों की असहनशीलता——काश्मीर के मुसलमान चाहते हैं कि काश्मीर राज्य में केवल उर्दू का ही प्रचार हो, यही नहीं अल्पमत हिन्दुओं को वे किसी प्रकार की भी सुविधा देना नहीं चाहते। वहाँ की सरकारने उर्दू का माध्यम तो स्वीकार कर लिया है। परन्तु यह सुविधा दे दी है कि उस उर्दू को कोई चाहे फ़ारसी अक्षरों द्वारा सीखे और चाहे तो नागरी अक्षरों द्वारा सीखे। यहां के मुसलमानों को यह भी सह्य नहीं है। काश्मीर असेम्बली में मुसलमानों ने यह दबाव सरकार पर डाला कि देवनागरी वाली सुविधा वह वापस ले ले। इसे सरकारने स्वीकार नहीं किया। उसने कहा कि उर्दू तो है ही केवल उसे दो लिपियों में लिखने की सुविधा दी गयी है। नेशनल कानफरेंस पार्टी के नेता मियाँ अल्लाहयार खां ने सरकार के इस निश्चय का विरोध किया और सभा से उठ कर चले गये। उनके साथ अन्य १५ निर्वाचित मुसलिम सदस्यों ने भी उन्हीं का अनुकरण किया। यह है हमारे भाइयों की राष्ट्रीयता और सहिष्णुता। विहार-मध्यप्रदेश आदि में अल्पसंख्यक मुसलमानों को उर्दू सीखने की सब तरह की सुविधा दी जाय और उसका कोई हिन्दू विरोध न करे; किन्तु जहाँ हिन्दू अल्पसंख्या में हैं वहाँ वे भाषा जाने दीजिये अपने अक्षर भी न सीखने पावें यह विचित्र भावों का नमूना है। उधर दक्षिण में हैदराबाद रियासत में मुसलमानों की संख्या फी सैकड़ा ५ होने पर भी उर्दू का ही प्रचार किया जाय और बहुमत की प्रजा पर भी वह जबरदस्ती लादी जाय!

राष्ट्रभाषा का स्वरूप——वीर अर्जुन में पण्डित रामनाथ शर्मा ने इस विषय पर एक लेख लिखा है। राष्ट्रभाषा के स्वरूप के सम्बन्ध में ग्वालियर राज्य के मुरार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में एक प्रस्ताव पास हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह यों है "राष्ट्रभाषा भारत के लिये वही हो सकती है जो भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों की प्रान्तीय भाषाओं से निकटतम हो। बङ्गाली, गुजराती, मराठी, तामिल, मलयालम इत्यादि भाषाओं में अधिकतर संस्कृत शब्दों का प्रयोग होता है। गुरुमुखी भाषा भी हिन्दी ही का स्वरूप है। अतः राष्ट्रभाषा वही हो सकती है, जिसका सम्बन्ध संस्कृत से है। यह भाषा शुद्ध हिन्दी भाषा ही है।" पण्डित रामनाथ जी का कहना है कि हिन्दी के अन्तर्गत शाखा भेद में हिन्दी-गुजराती भिल्ली आदि हैं, जिनके बोलने वालों की संख्या १२ करोड़ है। बाह्यभेद में पश्चिमी भेद की सिंधी और पञ्जाबी, दक्षिणी भेद में मराठी-कोंकणी, पूर्वी भेद में उड़िया, बिहारी, बङ्गाली और आसामी हैं। इन सबों के बोलने वाले १३ करोड़ हैं। तामिल मलयालम-कनाड़ी और तेलगू भेद में ७ करोड़ हैं। मलयालय भाषा के साहित्यका परिचय प्राप्त करने से मालूम पड़ेगा कि इसमें बँगला से भी अधिक संस्कृत शब्दों का प्रयोग होता है। श्रीयुक्त रानडेने अपनी इंगलिश-मराठी डिक्शनरी में पारिभाषिक शब्दों के सम्बन्ध में लिखा है कि "विभिन्न विज्ञानों, गणित, ज्योतिष, भौतिक विज्ञान, रसायनशास्त्र, पशु विज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, मनोविज्ञान, शारीरिकविज्ञान तथा शिल्प और कला आदि के लिये अंग्रेजी के यथार्थवादी शब्दों को स्थिर करते हुए हिन्दुस्थान की विभिन्न भाषाओं के लिये संस्कृत की सेवा की अत्यन्त आवश्यकता है। संस्कृतमें प्रत्यय और विभक्ति जोड़कर नये-नये छोटे शब्द सुगमता से बनाये जा सकते हैं। संस्कृत के शब्द बड़े लचीले होते हैं और उनमें थोड़े से परिवर्तन से बहुत सा भण्डार बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त संस्कृत में विज्ञान और मनोविज्ञान सम्बन्धी बहुत से शब्द पहले से ही हैं उच्च साहित्य के लिये जिस सौष्ठवकी आवश्यकता होती है वह संस्कृत भाषा में पूर्ण रूप से है। इन सब बातों पर विचार करने से मालूम पड़ेगा कि राष्ट्रभाषा वही हो सकती है, जिसका सम्बन्ध प्रान्तीय भाषाओं की जननी संस्कृत से हो। ऐसी भाषा का स्वागत मद्रास और बम्बई प्रान्त में भी उसी तरह होगा जैसा बंगाल महाराष्ट्र में होना स्वाभाविक है। क्रिश्चियन मिश्नरियों ने बाइबिल के प्रचार के लिये ऐसी ही हिन्दी का उपयोग किया है। अतः न्याय और विवेक से यदि राष्ट्रभाषा के स्वरूप निश्चय करने में काम लिया जावे तो यह विश्वास है कि विशुद्ध हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति स्वीकार

[लेखक—श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल संग्रह मन्त्री, तथा
श्री रामनिधि शर्मा बी० ए०]

१-—विभूतिमती-व्रजभाषा—श्री दानविहारीलाल शर्मा ने कवि सम्राट अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी द्वारा लिखित प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन कर हिन्दी जनता को एक सामयिक चीज़ प्रदान की है। खड़ी बोली और व्रजभाषा की उपयोगिता के सम्बन्ध में जो एक हल्का आन्दोलन हिन्दी संसार में चल रहा है यह पुस्तक उसी का परिणाम है। व्रजभाषा पर किये गये आक्षेपों का लेखक ने प्रामाणिक ढङ्ग से निराकरण करने की चेष्टा की है। लेखन शैली गम्भीर एवं गवेषणापूर्ण है। कटुता कहीं छू तक नहीं गयी है। खड़ी बोली में प्रियप्रवास जैसे महाकाव्य के रचयिता हरिऔध जी द्वारा व्रजभाषा के वैभव का समर्थन करना निस्सन्देह उसके लिये महान् गौरव की बात है। पुस्तक पढ़ने योग्य है। पृष्ठ सं० ६६, मूल्य ६ आने। प्रकाशक—व्रजसाहित्य ग्रंथमाला वृन्दावन, यू० पी०।

२—'भ्रमर-गीत'—नन्ददासजी व्रजभाषा के चोटी के कवियों में हैं। 'भ्रमर गीत' आपकी सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसमें सरस सगुणवाद का समर्थन करके शुष्क निर्गुणवाद का खण्डन किया गया है। विधुरा गोपियों के मुख से प्रेम प्लावित तर्क पूर्ण बातें सुनकर ऊधो का ज्ञान गर्व दूर हो जाता है। उनकी दशा ही कुछ और हो जाती है।

"देखत इनको प्रेम नेम ऊधो को भाज्यो।
तिमिरभाव आवेस बहुत अपने मन लाज्यो॥
मन में कह रज पाँय कै लै माथे निज धारि।
हौं तो कृत २ है रह्यों त्रिभुवन आनन्द वारि॥

इसी प्रकार के बहुत से अन्य मार्मिक पदों को पढ़ने से भाषा भी सादगी के साथ २ भाव की गम्भीरता का अनूठा आनन्द मिलता है। केवल ७५ छन्दों की इस पुस्तिका का व्यापक महत्व ही इसके गुणों का द्योतक है। सम्पादक श्री दानविहारीलाल शर्मा व्रज-साहित्य ग्रंथ माला वृन्दावन हैं। पृष्ट संख्या २० तथा मूल्य =) है।

पूर्णिमा—बम्बई हिन्दी विद्यापीठ ने अहिन्दी शालाओं की माध्यमिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह यों है "राष्ट्रभाषा भारत के लिये वही हो सकती है जो भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों की प्रान्तीय भाषाओं से निकटतम हो। बङ्गाली, गुजराती, मराठी, तामिल, मलयालम इत्यादि भाषाओं में अधिकतर संस्कृत शब्दों का प्रयोग होता है। गुरुमुखी भाषा भी हिन्दी ही का स्वरूप है। अतः राष्ट्रभाषा वही हो सकती है, जिसका सम्बन्ध संस्कृत से है। यह भाषा शुद्ध हिन्दी भाषा ही है।" पण्डित रामनाथ जी का कहना है कि हिन्दी के अन्तर्गत शाखाभेद में हिन्दी-गुजराती भिल्ली आदि हैं, जिनके बोलने वालों की संख्या १२ करोड़ है। बाह्यभेद में पश्चिमी भेद की सिंधी और पञ्जाबी, दक्षिणी भेद में मराठी-कोंकणी, पूर्वी भेद में उड़िया, बिहारी, बङ्गाली और आसामी हैं। इन सबों के बोलने वाले १३ करोड़ हैं। तामिल मलयालम-कनाड़ी और तेलगू भेद में ७ करोड़ हैं। मलयालय भाषा के साहित्यका परिचय प्राप्त करने से मालूम पड़ेगा कि इसमें बँगला से भी अधिक संस्कृत शब्दों का प्रयोग होता है। श्रीयुक्त रानडेने अपनी इंगलिश-मराठी डिक्शनरी में पारिभाषिक शब्दों के सम्बन्ध में लिखा है कि "विभिन्न विज्ञानों, गणित, ज्योतिष, भौतिक विज्ञान, रसायनशास्त्र, पशु विज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, मनोविज्ञान, शारीरिकविज्ञान तथा शिल्प और कला आदि के लिये अंग्रेजी के यथार्थवादी शब्दों को स्थिर करते हुए हिन्दुस्थान की विभिन्न भाषाओं के लिये संस्कृत की सेवा की अत्यन्त आवश्यकता है। संस्कृतमें प्रत्यय और विभक्ति जोड़कर नये-नये छोटे शब्द सुगमता से बनाये जा सकते हैं। संस्कृत के शब्द बड़े लचीले होते हैं और उनमें थोड़े से परिवर्तन से बहुत सा भण्डार बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त संस्कृत में विज्ञान और मनोविज्ञान सम्बन्धी बहुत से शब्द पहले से ही हैं उच्च साहित्य के लिये जिस सौष्ठवकी आवश्यकता होती है वह संस्कृत भाषा में पूर्ण रूप से है। इन सब बातों पर विचार करने से मालूम पड़ेगा कि राष्ट्रभाषा वही हो सकती है, जिसका सम्बन्ध प्रान्तीय भाषाओं की जननी संस्कृत से हो। ऐसी भाषा का स्वागत मद्रास और बम्बई प्रान्त में भी उसी तरह होगा जैसा बंगाल महाराष्ट्र में होना स्वाभाविक है। क्रिश्चियन मिशनरियों ने बाइबिल के प्रचार के लिये ऐसी ही हिन्दी का उपयोग किया है। अतः न्याय और विवेक से यदि राष्ट्रभाषा के स्वरूप निश्चय करने में काम लिया जावे तो यह विश्वास है कि विशुद्ध हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति स्वीकार

[लेखक—श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल संग्रह मन्त्री, तथा श्री रामनिधि शर्मा बी० ए०]

१--**विभूतिमती-व्रजभाषा**--श्री दानविहारीलाल शर्मा ने कवि सम्राट श्रयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी द्वारा लिखित प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन कर हिन्दी जनता को एक सामयिक चीज़ प्रदान की है। खड़ी बोली और व्रजभाषा की उपयोगिता के सम्बन्ध में जो एक हल्का आन्दोलन हिन्दी संसार में चल रहा है यह पुस्तक उसी का परिणाम है। व्रजभाषा पर किये गये आक्षेपों का लेखक ने प्रामाणिक ढङ्ग से निराकरण करने की चेष्टा की है। लेखन शैली गम्भीर एवं गवेषणापूर्ण है। कटुता कहीं छू तक नहीं गयी है। खड़ी बोली में प्रियप्रवास जैसे महाकाव्य के रचयिता हरिऔध जी द्वारा व्रजभाषा के वैभव का समर्थन करना निस्सन्देह उसके लिये महान् गौरव की बात है। पुस्तक पढ़ने योग्य है। पृष्ठ सं० ६६, मूल्य ६ आने। प्रकाशक—व्रजसाहित्य ग्रंथमाला वृन्दावन, यू० पी०।

२—**'भ्रमर-गीत'**—नन्ददासजी व्रजभाषा के चोटी के कवियों में हैं। 'भ्रमर गीत' आपकी सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसमें सरस सगुणवाद का समर्थन करके शुष्क निर्गुणवाद का खण्डन किया गया है। विधुरा गोपियों के मुख से प्रेम प्लावित तर्क पूर्ण बातें सुनकर ऊधो का ज्ञान गर्व दूर हो जाता है। उनकी दशा ही कुछ और हो जाती है।

"देखत इनको प्रेम नेम ऊधो को भाज्यो।
तिमिरभाव आवेस बहुत अपने मन लाज्यो॥
मन में कह रज पाँय कै लै माथे निज धारि।
हौं तो कृत २ है रह्यों त्रिभुवन आनन्द वारि॥

इसी प्रकार के बहुत से अन्य मार्मिक पदों को पढ़ने से भाषा भी सादगी के साथ २ भाव की गम्भीरता का अनूठा आनन्द मिलता है। केवल ७५ छन्दों की इस पुस्तिका का व्यापक महत्व ही इसके गुणों का द्योतक है। सम्पादक श्री दानविहारीलाल शर्मा व्रज-साहित्य ग्रंथ माला वृन्दावन हैं। पृष्ट संख्या २० तथा मूल्य =) है।

पूर्णिमा--बम्बई हिन्दी विद्यापीठ ने अहिन्दी शालाओं की माध्यमिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा हिन्दी शालाओं की उत्तर-प्राथमिक कक्षाओं के लिये कविताओं का यह संग्रह प्रकाशित किया है। कवितायें राष्ट्रीय सामयिक तथा शिक्षाप्रद हैं। पद्यों का क्रम सरल से कठिन की ओर रखा गया है, परिशिष्टभाग में शब्दार्थ एवं भावार्थ भी दे दिया है, जिससे पुस्तक बालकों के लिये और उपयोगी हो जाती है। ऐसे ही संग्रह बच्चों की भावनाओं को जागृत तथा उन्नत करने में सहायक हो सकते हैं। प्रकाशकों को इसका अनुकरण करना चाहिये। पृ० सं० ३६ मू० ४ आने।

गल्पहार——प्रस्तुत पुस्तक भी बम्बई हिन्दी विद्यापीठ ने बालकों ही के लिये प्रकाशित की है। इसमें ७ कहानियों का संग्रह है। साहित्याकाश के सूर्य श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'काबुलीवाला' शीर्षक कहानी भी इसमें सम्मिलित है। प्रेमचन्द, सुदर्शन श्रीराम शर्मा आदि श्रेष्ठ कहानी लेखकों की कृतियां भी इसमें सन्निहित हैं। संग्रह बालकों के लिए सर्वथा उपयोगी है। पृ० सं० ७७ मू० ६ आने।

कलरव——प्रस्तुत पुस्तक श्रीनिरंकारदेव सेवक की आकांक्षा, बचपन के स्वप्न, मन के राजा, भिखारिन, दीपक, मांझी, आंधी, बरसात, ग्राम्य-जीवन आदि १६ कविताओं का संग्रह है! कवितायें सभी सुन्दर, सरस तथा भावपूर्ण हैं। कवि की अपनी अनुभूति को ज्यों की त्यों प्रकट करने की चेष्टा सफलता की ओर अग्रसर हुई है। शब्दों के जाल में भावों को ढूँढ़ना नहीं पड़ता। शैली सरल, सीधी और आकर्षक है। पृष्ठ-संख्या १०४ मू० छ आने प्रका० हिन्दी-प्रचारिणी सभा बरेली कालिज, बरेली।

स्वस्तिका—यह पुस्तक भी श्री निरंकार देवजी की ही कविताओं का संग्रह है। कवितायें, छन्द, भाव और भाषा सभी दृष्टियों से सुन्दर हुई हैं। 'स्वप्न का संसार' 'अशान्ति' आदि कविताओं में कवि के भावुक हृदय की वेदना और निराशा की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अनुभवजन्य भावों के विकास की प्रधानता से कोरी कल्पनाएँ दबी सी प्रतीत होती हैं। लेखक की इस यथार्थवादिता का हम हृदय से स्वागत करते हैं। पृष्ठ संख्या १२०, मू० दस आने। प्र० हिन्दी-प्रचारिणी सभा बरेली कालिज, बरेली।

पवित्र पर्व—प्रस्तुत पुस्तक कवि-सम्राट् श्री अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध' की विभिन्न पर्वों, त्योहारों तथा उत्सवों पर लिखी हुई अनूठी कविताओं का संग्रह है। कवितायें मौलिक, सरस तथा कवि की सर्वतोमुखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमनलिपि के द्वारा शिक्षा देने का उद्योग कर रहे हैं। किन्तु वहाँ के हिन्दी भाषी लोग प्रयत्न कर रहे हैं कि नागरी अक्षरोंके द्वारा उन्हें उनकी भाषा की शिक्षा दी जाय। जिससे राष्ट्रभाषा से भी उनका परिचय होता रहे। उन्हें राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीयतासे अलग रख जातिविच्छेद होने देना उचित नहीं है। इस दृष्टि से यह प्रयत्न बहुत स्तुत्य है। अतएव लहरिया सराय पुस्तक भण्डार का यह प्रकाशन महत्व पूर्ण है। निम्न लिखित पुस्तकें प्राप्त हुई हैं --(१) मुण्डा जदुर दुरङ्ग कविता की पुस्तक है दाम दो पैसा (३) सन्थाली पहिल पुथी--सन्थाली भाषाकी पहली पुस्तक है दाम तीनआना (४) उरांव वेञ्जा डण्डी विवाह सम्बन्धी गान पुस्तक है दाम दो पैसा (५) उरांव बेञ्जा डण्डी यह भी उरांव संगीत की पुस्तक है दाम एक आना (६) उरांवकरम डण्डी यह भी उरांव संगीत की पुस्तक है दाम ―) उरांव करमण्डी दाम दो पैसा।

कृषि प्रवेशिका—प्रस्तुत पुस्तक श्री पं० शीतलाप्रसाद जी तिवारी 'विशारद' ने प्रारम्भिक परीक्षाओं के विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए लिखा है। यह पुस्तक ४३ अध्यायों में विभक्त है। पौदों की जड़ पत्ती, तना, फूल; बीज उसके रखने फैलाने तथा बोने के नियम, भूमि की किस्में तथा उनकी परीक्षा, हलों के प्रकार तथा विभिन्न नाजों की बुवाई और पैदावार के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से लिखा गया है। पुस्तक के पढ़ने से कृषि सम्बन्धी वर्तमान उन्नत प्रणाली का समुचित ज्ञान प्राप्त हो सकता है। लेखक महोदय ने जो कृषि विज्ञान के विशेषज्ञ हैं विषय को बहुत ही सरल और रोचक बना दिया है। विद्यार्थियों को कृषि विषय का आवश्यक ज्ञान प्राप्त कराने के लिये पुस्तक अत्यन्त उपयुक्त है। इसीलिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने स्वयं इस पुस्तक को प्रकाशित किया है। पृष्ठ सं० २१३, मूल्य १)।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा हिन्दी शालाओं की उत्तर-प्राथमिक कक्षाओं के लिये कविताओं का यह संग्रह प्रकाशित किया है। कवितायें राष्ट्रीय सामयिक तथा शिक्षाप्रद हैं। पद्यों का क्रम सरल से कठिन की ओर रखा गया है, परिशिष्टभाग में शब्दार्थ एवं भावार्थ भी दे दिया है, जिससे पुस्तक बालकों के लिये और उपयोगी हो जाती है। ऐसे ही संग्रह बच्चों की भावनाओं को जागृत तथा उन्नत करने में सहायक हो सकते हैं। प्रकाशकों को इसका अनुकरण करना चाहिये। पृ० सं० ३६ मू० ४ आने।

गल्पहार——प्रस्तुत पुस्तक भी बम्बई हिन्दी विद्यापीठ ने बालकों ही के लिये प्रकाशित की है। इसमें ७ कहानियों का संग्रह है। साहित्याकाश के सूर्य श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'काबुलीवाला' शीर्षक कहानी भी इसमें सम्मिलित है। प्रेमचन्द, सुदर्शन श्रीराम शर्मा आदि श्रेष्ठ कहानी लेखकों की कृतियां भी इसमें सन्निहित हैं। संग्रह बालकों के लिए सर्वथा उपयोगी है। पृ० सं० ७७ मू० ६ आने।

कलरव——प्रस्तुत पुस्तक श्रीनिरंकारदेव सेवक की आकांक्षा, बचपन के स्वप्न, मन के राजा, भिखारिन, दीपक, मांझी, आंधी, बरसात, ग्राम्य-जीवन आदि १६ कविताओं का संग्रह है! कवितायें सभी सुन्दर, सरस तथा भावपूर्ण हैं। कवि की अपनी अनुभूति को ज्यों की त्यों प्रकट करने की चेष्टा सफलता की ओर अग्रसर हुई है। शब्दों के जाल में भावों को ढूँढ़ना नहीं पड़ता। शैली सरल, सीधी और आकर्षक है। पृष्ठ-संख्या १०४ मू० छ आने प्रका० हिन्दी-प्रचारिणी सभा बरेली कालिज, बरेली।

स्वस्तिका——यह पुस्तक भी श्री निरंकार देवजी की ही कविताओं का संग्रह है। कवितायें, छन्द, भाव और भाषा सभी दृष्टियों से सुन्दर हुई हैं। 'स्वप्न का संसार' 'अशान्ति' आदि कविताओं में कवि के भावुक हृदय की वेदना और निराशा की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अनुभवजन्य भावों के विकास की प्रधानता से कोरी कल्पनाएँ दबी सी प्रतीत होती हैं। लेखक की इस यथार्थवादिता का हम हृदय से स्वागत करते हैं। पृष्ठ संख्या १२०, मू० दस आने। प्र० हिन्दी-प्रचारिणी सभा बरेली कालिज, बरेली।

पवित्र पर्व——प्रस्तुत पुस्तक कवि-सम्राट् श्री अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध' की विभिन्न पर्वों, त्योहारों तथा उत्सवों पर लिखी हुई अनूठी कविताओं का संग्रह है। कवितायें मौलिक, सरस तथा कवि की सर्वतोमुखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमनलिपि के द्वारा शिक्षा देने का उद्योग कर रहे हैं। किन्तु वहाँ के हिन्दी भाषी लोग प्रयत्न कर रहे हैं कि नागरी अक्षरोंके द्वारा उन्हें उनकी भाषा की शिक्षा दी जाय। जिससे राष्ट्रभाषा से भी उनका परिचय होता रहे। उन्हें राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीयतासे अलग रख जातिविच्छेद होने देना उचित नहीं है। इस दृष्टि से यह प्रयत्न बहुत स्तुत्य है। अतएव लहरिया सराय पुस्तक भण्डार का यह प्रकाशन महत्व पूर्ण है। निम्न लिखित पुस्तकें प्राप्त हुई हैं --(१) मुण्डा जदुर दुरङ्ग कविता की पुस्तक है दाम दो पैसा (३) सन्थाली पहिल पुथी--सन्थाली भाषाकी पहली पुस्तक है दाम तीनआना (४) उरांव वेञ्जा डण्डी विवाह सम्बन्धी गान पुस्तक है दाम दो पैसा (५) उरांव बेञ्जा डण्डी यह भी उरांव संगीत की पुस्तक है दाम एक आना (६) उरांवकरम डण्डी यह भी उरांव संगीत की पुस्तक है दाम -) उरांव करमण्डी दाम दो पैसा।

कृषि प्रवेशिका--प्रस्तुत पुस्तक श्री पं० शीतलाप्रसाद जी तिवारी 'विशारद' ने प्रारम्भिक परीक्षाओं के विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए लिखा है। यह पुस्तक ४३ अध्यायों में विभक्त है। पौदों की जड़ पत्ती, तना, फूल; बीज उसके रखने फैलाने तथा बोने के नियम, भूमि की किस्में तथा उनकी परीक्षा, हलों के प्रकार तथा विभिन्न नाजों की बुवाई और पैदावार के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से लिखा गया है। पुस्तक के पढ़ने से कृषि सम्बन्धी वर्तमान उन्नत प्रणाली का समुचित ज्ञान प्राप्त हो सकता है। लेखक महोदय ने जो कृषि विज्ञान के विशेषज्ञ हैं विषय को बहुत ही सरल और रोचक बना दिया है। विद्यार्थियों को कृषि विषय का आवश्यक ज्ञान प्राप्त कराने के लिये पुस्तक अत्यन्त उपयुक्त है। इसीलिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने स्वयं इस पुस्तक को प्रकाशित किया है। पृष्ठ सं० २१३, मूल्य १)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
के
हिन्दी विश्वविद्यालय की

संवत् १९९७ (सन् १९४०) की परीक्षाओं का परीक्षाफल

उत्तमा परीक्षा (साहित्य रत्न) विषय-हिन्दी साहित्य

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३	श्री ओंप्रकाश सिंह	आगरा	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७०
७	श्रीमती तारा वाजपेयी	"	" १८६
१५	श्रीधर्मनारायण शर्मा 'धर्म'	"	" २०३
१७	" धर्मवीर प्रेमी	"	" २०७
१८	" हरचरण शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४३९
१९	" अम्बाप्रसाद सुमन	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९५
२०	" चन्द्रप्रकाश	"	" २१२
२४	" ब्रजकिशोर शर्मा 'ब्रजेश'	"	[वि.यो. सातवांप्र०पत्र] द्वितीय श्रेणी ४८६
२६	" रामकरण शर्मा	"	[वि.यो. सातवांप्र०पत्र] द्वितीय श्रेणी ४४८
२८	श्रीमती अनमोल कुमारी भाटिया	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७४
३१	श्री सत्यदेव वेदी प्रमोद	"	द्वितीय श्रेणी ४४६
३३	" मुरारीलाल झा	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३७	श्री उमादत्त नैथाणी	आगरा	द्वितीय श्रेणी ३६१
४०	" बालजीतसिंह	"	" ४१७
४१	" धीरजलाल चतुर्वेदी	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १९९
४२	" गोपालशंकर नागर 'माधव'	"	द्वितीय श्रेणी ३९९
४६	" विदुरदत्त चतुर्वेद	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १८७
४८	" रवीन्द्रसिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३६५
५०	" ओ३म्प्रकाश सक्सेना 'प्रकाश'	"	" ४६१
५१	" दामोदरदास तिवारी	"	उत्तीर्ण (प्र०खंड)२३३ [वि०यो०प्रथमप्र०पत्र]
५२	" फूलचन्द्र कुलश्रेष्ठ	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १९८
५४	" श्रीधर शर्मा	"	" १६३
५५	" बद्रीप्रसाद श्रीवास्तव	"	" १६४
५८	" गणेशप्रसाद शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४९०
५९	" महेन्द्रसिंह	"	" ४०१
६०	" श्यामबिहारी कुलश्रेष्ठ	"	" ३९०
६२	" अक्षयचन्द्र शर्मा	"	" ५३१ [वि०यो० प्रश्नपत्र ६]
६३	" उमाशंकर शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४०८
६५	" सुधीन्द्रनाथ	"	" ३८७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६७	श्री छोटेलाल गोलश	आगरा	द्वितीय श्रेणी ३६७
६८	,, रामचन्द्र व्यास	,,	,, ४५४
७०	,, शुकदेव शर्मा	,,	,, ३८४
७१	,, कुं० तेजपाल सिंह 'शिष्य'	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६७
७२	,, गयाप्रसाद गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी ४०१
७४	,, सुरेशचन्द्र शुक्ल	,,	,, ३६७
७६	श्रीमती सुलभा देवी	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७४
७७	श्री मायाशंकर वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४५०
८१	,, चन्द्रसिंह झाला	इन्दौर	,, १६२
८५	,, दुर्गाशंकर पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४०४
८८	,, विपिनबिहारी वाजपेयी	,,	,, ४१३
८९	,, अयोध्यानाथ सान्याल	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८६
९१	,, चन्द्रमोहननाथ दर	,,	,, १७३
९२	,, बैजनाथप्रसाद दुबे	,,	द्वितीय श्रेणी ३९५
९३	,, गुलाबचन्द्र जैन	,,	,, ४०५
९८	,, रतनलाल शाह	,,	,, ४५२
९९	,, बद्रीनारायण कृष्णदास 'मेहता'	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१००	श्री बाबूलाल टेलर 'निर्वान्या'	इन्दौर	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १९६
१०१	" रामनाथ शुक्ल	"	द्वितीय श्रेणी ३९२
१०२	" छज्जूलाल चवरे	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १७८
१०३	' माँगीलाल जैन	"	द्वितीय श्रेणी ५२७
१०४	" रामचरण गर्ग	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १९५
१०५	" जयकिशन महाजन	"	द्वितीय श्रेणी ४३१
११२	" दुर्गाप्रसाद दास	कलकत्ता	" ३७०
११४	" दलशृंगार पाण्डेय	"	" ३६३
११६	" लक्ष्मीशंकर मिश्र	"	" ३६५
११९	" शिवचन्द्र तिवारी	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १६७
१२२	श्रीमती मनोरमादेवी दीक्षित	"	" १६६
१२४	श्री रामविलाससिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३७६
१२६	" अम्बिकालाल श्रीवास्तव	कानपुर (एस० डी० कालेज)	" ३८८
१२७	" चन्द्रकान्त मिश्र	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) २४७
१२८	" ब्रह्मदत्त तिवारी	"	द्वितीय श्रेणी ४७७
१२९	" ब्रजकिशोर द्विवेदी 'किशोर'	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १८५
१३१	" हरिशरण	"	द्वितीय श्रेणी ५११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३२	श्री रामचन्द्र विद्यार्थी	कानपुर (एस० डी० काले०)	द्वितीय श्रेणी ४७३
१३५	" वीरहरि त्रिवेदी	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७९
१४०	" लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ३९४
१४१	" होरीलाल वर्मा	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७७
१४५	" यमुनाप्रसाद उपाध्याय	"	" १७४
१४६	" रामबाबू मिश्र	"	" १६३
१४७	" टीकाराम वेलबाल	"	द्वितीय श्रेणी ३९८
१४८	" मथुरादत्त पंत	"	" ४३०
१४९	" चन्द्रपाल सिंह	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९९
१५१	" विन्ध्येश्वरी प्रसाद पाण्डेय	"	" १८८
१५३	" विश्वप्रकाश दीक्षित	"	द्वितीय श्रेणी ४९५
१५४	" शिवशङ्कर मिश्र	"	उत्तीर्ण(प्र०खंड)२४२ [वि.यो. पांचवांप्र०पत्र]
१५६	" सरदार इन्द्रसिंह भूकम्प	"	द्वितीय श्रेणी ४२९
१५८	" जगदीश नारायण त्रिपाठी	"	" ४०५
१५९	" प्रहलाददास कांकानी	"	प्रथम श्रेणी ५४५ [वि०यो०छठवांप्र०पत्र]
१६१	" श्यामसुन्दर पाण्डेय	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २००
१६२	" शिवस्वरूप वाजपेयी	"	" १७३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६३	श्री प्रभुदयाल शुक्ल	कानपुर (एस० डी० कालेज)	द्वितीय श्रेणी ५०४
१६४	" रामस्वरूप शर्मा 'मयंक'	"	" ४०४
१६६	" प्रेमनारायण शुक्ल	"	प्रथम श्रेणी ५७५ [विशेष यो० निबन्ध]
१६९	" विजयबहादुर अग्निहोत्री	"	द्वितीय श्रेणी ५२४
१७१	" श्यामसुन्दर वाजपेयी	"	प्रथम श्रेणी ५४७
१७२	श्रीमती विद्या श्रीवास्तव	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९९
१७४	श्री बलदेव तिवारी	काशी (ट्रेनिंग कालेज)	द्वितीय श्रेणी ३९०
१७५	" सकलदीप सिंह	"	" ४२१
१७६	" राजाराम तिवारी	"	" ४०१
१७८	" सिद्धनाथ तिवारी	"	" ४७५
१७९	" रामप्रवेश राय	"	" ४३५
१८३	" उग्रसेन सिंह	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २०३
१८४	" छबिनाथ त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ४५५
१८६	" पारसनाथ शर्मा	"	" ३८५
१८७	" शिवशरण पाण्डेय	"	" ४५८
१८८	" द्वारिका त्रिपाठी	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७७
१९०	कुंवर कृष्णकुमार सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ५०९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१९२	श्री हरीशंकर	काशी (ट्रेनिंग कालेज)	द्वितीय श्रेणी ४७४ [वि० यो० निबन्ध]
१९३	,, रामनरेश सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४०५
१९४	,, ठाकुरदयालु पाण्डेय	,,	,, ३८३
१९५	,, जगन्नाथ चौबे	,,	,, ३९५
१९६	,, रामाधार ठाकुर	,,	,, ३८४
१९८	,, नवरत्न तिवारी	,,	,, ३८९
१९९	,, श्रवणकुमार	,,	,, ४१५
२००	,, जगतनारायण सिंह	,,	,, ४५६ [वि०यो० मौखिक]
२०१	,, बचालाल सिंह	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६५
२०३	,, परमहंस पाठक	,,	द्वितीय श्रेणी ४४४
२०४	,, लल्लनप्रसाद द्विवेदी	,,	,, ४२४
२०७	,, रामदेव सिंह	,,	,, ४०१
२०९	,, गौरीशंकर वाजपेयी	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६८
२१०	,, सीताराम सिंह 'ज्योतिर्मय'	,,	द्वितीय श्रेणी ३७९
२१२	,, शिवनाथ	,,	,, ३९५
२१४	,, छेदीराय	,,	,, ४३५
२१६	,, हरिप्रसाद	,,	,, ४५६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२१८	श्री उमादत्त मिश्र	काशी (ट्रे० का०)	द्वितीय श्रेणी ४३८
२२०	" रविनन्दन सिंह	"	" ४५४
२२२	" भगवतीशरण सिंह	"	" ४७५
२२३	" वीरेन्द्रकुमार सिंह	"	" ४४१
२२४	" ब्रजमोहनदास अग्रवाल	"	" ३९२
२२५	" यमुनाशंकर चौबे	"	" ४६१
२२६	" रघुनाथ सिंह	"	" ३६८
२२७	" देवतादीन पांडेय	"	" ३७१
२२८	" मंगलाप्रसाद पाण्डेय	"	" ४२०
२२९	" जयकरन पाण्डेय	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६०
२३०	" रामसूरत मणि त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ३७२
२३१	" सच्चितानन्द मिश्र	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६२
२३२	" राधाकृष्ण	"	" १६०
२३३	" तुलसीप्रसाद	"	" १७४
२३५	" मनसिज शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ३७८
२३६	" केशवचन्द्र मिश्र	"	" ४२५
२३७	" नृपसिंह मिश्र	"	उत्तीर्ण प्रथम (खण्ड) २२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२३८	श्री देवनारायण द्विवेदी	काशी (ट्रे० का०)	द्वितीय श्रेणी ३९५
२३९	" सत्यनारायण माहेश्वरी	"	" ४५१
२४१	" बालचन्द्र शर्मा	"	" ४५८
२४२	" शिवशंकर द्विवेदी	"	" ३८८
२४३	" नारायणप्रसाद शर्मा	"	" ४२९
२४५	" सत्यनारायण हर्ष	"	" ४१५
२५०	" श्रीराम शर्मा	"	" ४७९
२५१	" उमाशंकर शुक्ल	"	" ३८८
२६०	" शिवनन्दनप्रसाद	पटना	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) २६३
२६१	" मैथिलीशरण 'नेहनिधि'	"	" २०१
२६२	" रामकृष्णसिंह 'श्री'	"	द्वितीय श्रेणी ३६२
२६४	" रामवृक्षसिंह 'दिव्य'	"	" ३६८
२६८	श्रीमती सीता अग्रवाल	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १९५
२७१	श्री शिवकुमार शर्मा 'सरोज'	"	" १७३
२७५	" अयोध्याप्रसाद	"	" १७६
२७६	" रामचन्द्रप्रसाद अम्बष्ट 'वीणचन्द्र'	"	" १६६
२८१	" प्रभुदास रामचन्द्र भुपटकर	पूना	द्वितीय श्रेणी ४१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
२८३	श्री मधुसूदन सदाशिव बर्वे	पूना	द्वितीय श्रेणी ३६६
२८५	" भीमाशंकर गुरु	"	" ४२६
२८६	" सभाजीतसिंह	प्रयाग	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १८६
२८७	" रामजी उपाध्याय	"	द्वितीय श्रेणी ४८१
२८८	" वंशीधर पंत	"	" ३८७
२९६	" संकटाप्रसाद उपाध्याय	"	" ४५८
२९८	" सुमन वात्स्यायन	"	" ४६१
२९९	" 'वीर विभु' भैरवदीन मिश्र 'मार्तण्ड'	"	" ३९४
३००	" जनार्दन स्वरूप अग्रवाल	"	" ५१३
३०३	" भगवतीप्रसाद भट्ट	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १६३
३०४	" छत्रधारी मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ३९८
३०५	" ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव	"	" ४१४
३०७	" रामेश्वर राय	"	" ४०९
३०९	" सुबोध अदावाल	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) २३३
३१३	" काशीप्रसाद श्रीवास्तव	"	द्वितीय श्रेणी ४०२
३१४	" के० वासुदेवन पिल्ले	"	" ३७१
३१७	" श्रीनाथ मिश्र	"	उत्तीर्ण (प्रथम खंड) १७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३१८	श्री ओमप्रकाश अग्रवाल	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ४६५
३१९	" रामरक्षा त्रिपाठी	"	" ३८२
३२०	" हरशरण शर्मा	"	" ४५८
३२३	" रामचन्द्र शुक्ल	"	" ३८१
३२४	" सरयूप्रसाद मिश्र	"	" ४१६
३२५	" विश्वनाथ त्रिपाठी	"	" ४२९
३२७	" कृष्णराम दुबे	"	" ४०७
३२८	श्रीमती लक्ष्मीदेवी	"	" ४०४
३३१	श्री केदारनाथ त्रिपाठी	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६२
३३३	" श्रीपति नारायण सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४९१
३३५	" श्यामनारायण मिश्र 'श्याम'	"	" ४०५
३३६	" हरिशंकर गौतम 'शकुंत'	"	" ३८९
३३८	" हुकुमचन्द जैन 'सुमन'	"	" ४६१
३३९	" सी० शंकर	"	" ३७९
३४०	" नरोत्तम मालवीय	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७७
३४३	श्रीमती पुष्पलता कपूर	"	द्वितीय श्रेणी ३८५
३४५	श्री श्रीनन्द पाण्डेय	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३४६	श्री देवीप्रसाद पाण्डेय	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ३९२
३४७	" धर्मकिशोर लाल	"	" ३९०
३४८	" शोभनाथ त्रिपाठी	"	" ३९८
३५२	" लक्ष्मीनारायण पाण्डेय	"	" ४३४
३६०	" बद्रीदत्त शास्त्री	"	" ४९३
३६१	" पूजाप्रसाद मिश्र 'तेज'	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८५
३६३	" महेशचन्द्र	"	" २३१
३६४	" ताराचन्द सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३९१
३६५	" पद्मानन्द चतुर्वेदी	"	" ४२४
३६६	" गुर्ती सुब्रह्मण्य	"	" ४३६
३६७	" परशुराम तिवारी	"	" ४३६
३६८	" बालेश्वरी तिवारी	"	" ४६३
३७०	" ठाकुर घूरनसिंह चौहान	"	" ४४०
३७१	" मौजीसिंह	"	" ३८७
३७२	" श्रीनारायण मिश्र	"	" ४२७
३७३	" एम० नागेश्वर राव	"	" ३९३
३७४	" शिवकुमार सिंह	"	" ४२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३९६	श्री बलदेवप्रसाद नोटियाल	लाहौर	द्वितीय श्रेणी ३८४
४०४	” जगन्नाथप्रसाद पाठक	वर्धा	” ३८४
४०५	” गुंडो दासो कंपली	”	” ४२५
४०६	” भगवतीप्रसाद शुक्ल	”	” ४३२

उत्तमा परीक्षा (विज्ञान रत्न) विषय-कृषि-शास्त्र

८०	श्री जनकसिंह वर्मा	आगरा	उत्तीर्ण प्रथम खण्ड १७२
२५६	” रामचन्द्रसिंह राणा	काशी (ट्रे० का०)	” १६९
३८१	” बलवन्त राय पटेल	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ३६७
३९१	” भैरवप्रसाद सिंह ‘पथिक’	”	” ३७२
३९३	” काशीप्रसाद	”	” ३८६

उत्तमा परीक्षा (साहित्य रत्न) विषय-राजनीति

२५५	श्री शिवप्रसाद द्विवेदी	काशी(ट्रे० का०)	द्वितीय श्रेणी ३८६
२८०	” के० गोपाल	प्रयाग	”

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तमा परीक्षा (आयुर्वेद रत्न) विषय-वैद्यक

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१७३	श्री सेवकराम गुप्त	कानपुर(एस० डी० कालेज)	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)२०७
३८२	,, ज्ञानदत्त मिश्र	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ४९१
३८५	,, भागवतप्रसाद गंगेले	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)२१०
३८६	,, जाह्नवी शंकर शुक्ल	,,	द्वितीय श्रेणी ४२७
३८७	,, विश्वनाथ दुबे	,,	,, ४२४
३८८	,, लेखराज चौरी	,,	प्रथम श्रेणी ५५७ [वि० यो० प्रश्नपत्र८]

उत्तमा परीक्षा (साहित्य रत्न) विषय-इतिहास

४१०	श्री छोटेलाल चौधरी	वर्धा	उत्तीर्ण (प्र०ख०)१९९

मध्यमा (विशारद) परीक्षा

१	श्री गोकुल प्रसाद नेमा	अकोला	तृतीय श्रेणी ३९९
२	श्रीमती राधादेवी गोइनका	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८	श्री ठाकुर फतेहबहादुर सिंह	अजमतगढ़	द्वितीय श्रेणी ४३२
१०	,, गुलाबचन्द्र गोयल	अजमेर	तृतीय श्रेणी ३३७
११	,, सूरजकरण	,,	,, ३६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५	श्री चन्द्रदेव चन्द्र	अतरौली	प्रथम श्रेणी ४८१ [विशेष यो० संस्कृत]
१७	श्रीमती देवकी भवानीदत्त पन्त	ताड़ी खेत (अल्मोड़ा)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१८	श्री गोपालसिंह कालाकोटी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२१	,, केशवदत्त पाँडे	,,	द्वितीय श्रेणी ४०१
२२	,, तेजसिंह चौहान	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२३	,, महेशदत्त पांडे	अनूप शहर	द्वितीय श्रेणी ४३५
२५	,, नेतराम हरजाल	अमरावती	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२६	श्रीमती पुष्पलता	अमृतसर	,,
३६	श्रीमती सन्तोष कुमारी	अलीगढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४०	श्री रणधीर उपाध्याय	अहमदाबाद	द्वितीय श्रेणी ४६०
४१	,, छोटू भाई सुथार	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४२	,, जशभाई पटेल	,,	,,
४३	श्रीमती राजकुमारी मिश्रा 'रमा'	,,	,,
४५	श्री रामचन्द्र पंड्या	,,	,,
४८	,, गिरिजाशंकर चतुर्वेदी	आगरा	तृतीय श्रेणी ३५२
५१	,, इन्द्रसेनगुप्ता 'देवेन्द्र'	,,	,, ३६१
५२	,, दौजीराम हर्सानियां	,,	,, ३५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५३	श्री मिठ्ठनलाल सिंघल	आगरा	द्वितीय श्रेणी ४०७
५६	" गिरीशचन्द्र शर्मा	"	" ४२७
५८	" शीतलप्रसाद गुप्त	"	" ४०१
५९	" छोटेलाल शर्मा वाशिष्ठ	"	" ४३६
६६	" हरिदास गुजराती 'भूषण'	"	तृतीय श्रेणी ३६४
६७	" राधाचरण शर्मा	"	" ३२३
६९	" प्रकाश सक्सेना	"	प्रथम श्रेणी ५६२ [वि०यो०ग०औरवि०]
७२	" राधेश्याम अग्रवाल	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७३	" रामबाबू गुप्ता	"	"
७७	" रामसिंह शर्मा शुक्ल	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७९	" रामसिंह जैन	"	"
८०	" भजनलाल उपाध्याय	"	"
८१	" कुं० सूरजपालसिंह तोमर	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८५	" रणवीरसिंह फौजदार	"	तृतीय श्रेणी ३९७
८८	" राजनाथ शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४०२
८९	" कपूरचन्द्र जैन	"	तृतीय श्रेणी ३४०
९१	" रामभरोसेलाल शर्मा 'राय'	"	" ३९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९२	श्री राजेश्वरीप्रसाद चतुर्वेदी	आगरा	प्रथम श्रेणी ५०२
९८	,, जयदयाल गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी ३८८
९९	,, मगनबिहारीलाल सक्सेना	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१००	,, जगदीशप्रसाद गौड़	,,	,,
१०४	,, रामलगन दुबे	आजमगढ़	द्वितीय श्रेणी ४७५ [वि० यो० संस्कृत]
१०५	,, रमाशंकर पांडे	,,	द्वितीय श्रेणी ४४४ [वि० यो० संस्कृत]
११०	,, नेमीचन्द्र जैन	आरा	द्वितीय श्रेणी ४११
११३	,, व्रजेन्द्रप्रसाद सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११४	,, गोपालदत्त मिश्र	,,	,,
११५	,, व्रजनाथ तिवारी	,,	,,
११६	,, हरिनन्दन त्रिपाठी	,,	,,
११९	,, संतप्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी ३४०
१२०	,, राममूर्ति सिंह	इटारसी	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१२२	,, दरबारसिंह	इटावा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२३	,, भगवतदयाल पांडे	,,	द्वितीय श्रेणी ४५७
१२४	,, विजयबाबू मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३८२
१२६	,, जोधासिंह तिवारी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२८	श्री दुर्गाप्रसाद	इटावा	उत्तीर्ण ३०९
१३०	" रामनारायण	इन्दौर	तृतीय श्रेणी ३८८
१३४	" लक्ष्मण दुबे	"	द्वितीय श्रेणी ४१३
१३५	" कैलाशनारायण चौधरी	"	" ४३१
१४३	" भूरालाल गोपाल	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१४४	" मोहनलाल उपाध्याय 'निर्मोही'	"	तृतीय श्रेणी ३९६
१४६	" गिरधारीलाल वर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४०७
१४७	" रघुनाथ सदाशिव भवरासकर	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१४९	श्रीमती सुशीला भार्गव	"	"
१५०	" प्रेमकुमारी देवी कासलीवाल	"	"
१५१	श्री ओङ्कार राम जोशी	"	तृतीय श्रेणी ३९४
१५२	" शिवनारायण नानालाल गुप्त	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५५	" नारायणदेव आर्य	"	तृतीय श्रेणी ३२१
१५८	" वृजवल्लभ भट्ट	"	द्वितीय श्रेणी ४०८
१५९	श्रीमती कुमारी लीलावती व्यास	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१६०	" रामजीवन त्रिपाठी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६१	श्री चांदमल चौपड़ा	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६२	श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	इन्दौर	तृतीय श्रेणी ३५८
१६३	,, बाबूलाल गुप्ता	,,	,, ३४१
१६४	,, रामनारायण विजय वर्गीय	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१६५	,, शिवनारायण कानूनगो	,,	तृतीय श्रेणी ३६०
१६६	,, गोवर्धनलाल शर्मा	,,	उत्तीर्ण ३१४
१६७	,, राजभाऊ कानूनगो	,,	तृतीय श्रेणी ३६३
१७०	,, ओंकारप्रसाद तिवारी	,,	,, ३९६
१७१	,, जनार्दनसुका खड़के	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१७२	,, विट्ठल माधोराव निकम	,,	,,
१७३	,, नारायण जोशी	,,	,,
१७४	,, हरिहर त्रिवेदी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७५	,, श्रीकृष्ण जोशी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१७९	,, गोरखनाथ पांडेय	इम्फाल	तृतीय श्रेणी ३४०
१८०	,, खजानसिंह पच्छिमी	,,	,, ३३९
१८४	,, साधोलाल	इस्लामपुर	,, ३३७
१८५	,, अवधबिहारी पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४१६
१८७	,, जयनारायण मिश्र	ईशीपुर	तृतीय श्रेणी ३६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८८	श्री रामनारायण लाहिड़ी	ईशीपुर	द्वितीय श्रेणी ४२१
१९१	" राजेन्द्रप्रसाद तिवारी	"	तृतीय श्रेणी ३८२
२००	" वल्लभदास	उदयपुर (सा० वि०)	द्वितीय श्रेणी ४२५
२०२	" बिहारीलाल व्यास	"	" ४२४
२०६	" चैनसुख अजमेरा	उदयपुर (हि० वि० पी०)	तृतीय श्रेणी ३५६
२०८	" पुरुषोत्तम मेनारिया	"	उत्तीर्ण ३०३
२०९	" रूपलाल सोमानी	"	तृतीय श्रेणी ३८७
२१३	" हीरालाल नाहर	"	" ३५८
२१४	" शालिगराम गोरवाल	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२२३	" दुर्गाशंकर दुर्गावत	"	"
२२५	" मेवालाल	उरई	तृतीय श्रेणी ३६२
२३३	" शंकरप्रसादसिंह	एकमा	" ३४८
२३४	" बाबूनन्द मिश्र	"	" ३८०
२३५	" फूलदेव ठाकुर	"	उत्तीर्ण ३०९
२३६	" कामताराय	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२३७	" कपिलदेव ओझा	"	तृतीय श्रेणी ३२७
२३९	" चेतनारायणलाल दास	"	" ३६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२४०	श्री शोभानन्द मिश्र	एकमा	तृतीय श्रेणी ३४४
२४७	,, महेन्द्रप्रसाद चतुर्वेदी	कटनी	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२४८	,, जगतनारायण पाण्डेय	कटया	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२४९	,, कामताप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३९७
२५०	,, जुगलकिशोरप्रसाद सिंह	,,	,, ३८५
२५१	,, कमलाप्रसादराय	,,	,, ३८७
२६३	,, कृष्णदेव झा	कटिहार	,, ३२३
२६४	,, नाथूराम पाण्डेय	कन्नौज	,, ३५७
२६५	,, जगदम्बाप्रसाद श्रीवास्तव	,,	,, ३८९
२६६	,, ओ३म्प्रकाश गुप्त	,,	,, ३४०
२६७	,, श्रीकृष्ण गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी ४५४
२७४	,, पंचानन पाण्डेय	कलकत्ता (तु० सा० वि०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२७८	,, राममूर्ति पाण्डेय	,,	,,
२८१	,, रामप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३३६
२९१	,, जगदीश सिंह	,,	,, ३६२
२९३	,, रामसुभग मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ४७८
२९५	,, जयनाथ पाण्डेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२९८	श्री रामविलास चौबे	कलकत्ता [तु० सा० वि०]	तृतीय श्रेणी ३२१
३०६	" देवनारायण राय शर्मा	"	" ३६७
३०७	" बैकुण्ठनाथराय	"	विभाजित प्रणाली अनुसार
३०९	" दामोदर तिवारी	"	तृतीय श्रेणी ३६८
३११	" राम अचल मिश्र	"	" ३७१
३१२	" गोपाल दास गुप्त	"	द्वितीय श्रेणी ४६१
३१३	" हितनारायण सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३८१
३१५	" रेवती नन्दन शर्मा	"	" ३३१
३१९	" चावलि सूर्य नारायण मूर्ति	काकिनाडा	अध्याय ३ नि० ७ अनुसार
३२०	" वेंपराल चिनराम स्वामी	"	"
३२२	" बाबूलाल	कानपुर [स०धर्म०का०]	तृतीय श्रेणी ३८०
३२६	" रामप्यारे अवस्थी	"	द्वितीय श्रेणी ४२१
३२९	" भगवती प्रसाद गौतम	"	" ४४१
३३०	" लक्ष्मीनरायण	"	" ४३१
३३१	" गोपाल कृष्ण शर्मा	"	" ४२५
३३५	" भगवती सिंह	कानपुर (डी० ए० वी० का०)	तृतीय श्रेणी ३६६
३३६	" कृष्णचन्द्र आर्य	"	द्वितीय श्रेणी ४४२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३३७	श्री आनन्द किरण मिश्र	कानपुर (डी० ए० वी० का०)	द्वितीय श्रेणी ४३५
३३८	" रामनाथ मिश्र	"	तृतीय श्रेणी ३३०
३४०	" बाबूराम मिश्र	"	प्रथम श्रेणी ५२३ [वि० यो० संस्कृत]
३४१	" रामशंकर त्रिपाठी	"	तृतीय श्रेणी ३५०
३४२	" देवीप्रसाद त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ४०७
३४३	" ठाकुरप्रसाद अग्रवाल	"	" ४३९
३४५	" शिवनाथ दीक्षित	"	तृतीय श्रेणी ३७८
३५०	" कामताप्रसाद रावत	"	द्वितीय श्रेणी ४११
३५१	" रामकृष्ण 'मित्र'	"	तृतीय श्रेणी ३९१
३५७	" रमेशचन्द्र दीक्षित	"	" ३९९
३५८	" चन्द्रपालसिंह यादव	"	" ३७१
३५९	" शिवधार सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४२६
३६३	श्रीमती शिवरानी शर्मा	कांधला	" ४०९
३६६	श्री बाबूराम ब्रह्मभट्ट	कालपी	तृतीय श्रेणी ३३५
३६७	" रामशंकर द्विवेदी	"	द्वितीय श्रेणी ४६१
३७०	" गोपालसिंह बर्मा	कालाकांकर	" ४३३
३७२	" कविराज भगवान शर्मा	कालिम्पोंग	" ४५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३७३	श्री नानक चन्द	कालिम्पोंग	तृतीय श्रेणी ३२६
३७५	" राजबली मिश्र	काशी [ओरि० काले०]	द्वितीय श्रेणी ४२१ [वि० यो० संस्कृत]
३७६	" जगदीश पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ४४८
३७७	" रामशीष पाण्डेय	"	" ४०१
३७९	" रामकिशोर पाण्डेय	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३८०	" भगवानप्रकाश शास्त्री	"	तृतीय श्रेणी ३९३
३८१	" मामराज दत्त	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३८२	" हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव	"	प्रथम श्रेणी ४८६ [वि० यो० संस्कृत]
३८३	" शंकर शर्मा	"	तृतीय श्रेणी ३९४
३८४	" राममूर्ति पाण्डेय	"	" " ३४९
३८५	" भगवतीप्रसाद सिंह	"	प्रथम श्रेणी ४९७
३८६	" सत्यनारायण पाण्डेय	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
३८७	" रामसकल त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ४२३
३८९	" रामजी त्रिपाठी	"	तृतीय श्रेणी ३७२
३९१	" बद्रीप्रसाद गुप्त	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
३९३	" जगदीश शंकर नागर	"	तृतीय श्रेणी ३८५
३९४	" गोविन्द बल्लभ जोशी	"	द्वितीय श्रेणी ४१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३९५	श्री सच्चिदानन्द त्रिपाठी	काशी (ओ० का०)	तृतीय श्रेणी ३६८
३९६	" रामेश्वर पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ४०६
३९७	" जयराम त्रिपाठी	"	तृतीय श्रेणी ३७२
३९९	" चन्द्रिकाप्रसाद पाठक	"	द्वितीय श्रेणी ४२०
४००	" माताबदल श्रीवास्तव	"	" ४४०
४०१	" ज्वालाप्रसाद पाठक	"	प्रथम श्रेणी ५०१ [वि० यो० संस्कृत]
४०३	" रामचन्द्र मालवीय	"	प्रथम श्रेणी ४९३
४०५	" दीनानाथ त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ४४०
४०६	" विश्वनाथ द्विवेदी	"	" ४१९
४०७	" रामकुमार उपाध्याय	"	तृतीय श्रेणी ३९८ [वि० यो० संस्कृत]
४०८	" रमेशप्रसाद त्रिपाठी	"	प्रथम श्रेणी ५२३ [वि० यो० संस्कृत]
४०९	" कमलापति दीक्षित	काशी	तृतीय श्रेणी ३६७
४१०	" गोकुलानन्द पाण्डेय	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४१२	" कल्पनाथ पाण्डेय	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४१४	" रामशकल सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३६७
४१५	" मदन मोहन त्रिपाठी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४१६	" केदारनाथ ओझा	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४१८	श्री राजकुमार ओझा	काशी	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४२३	" हरिप्रसाद गुप्त	"	द्वितीय श्रेणी ४६४
४२४	" विद्याधर त्रिवेदी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४२५	" रामनरेश मिश्र	"	"
४२९	" जयचन्द्र सिंह	"	"
४३०	" गिरिजाशंकर मिश्र	"	"
४३१	" महादेवसिंह यादवेन्द्र	"	"
४३३	" गोपालदास	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४३५	" तारकेश्वर चतुर्वेदी	"	द्वितीय श्रेणी ४२७
४३६	" ताराप्रसाद गुप्त	"	तृतीय श्रेणी ३५२
४४२	" राधामोहन चौबे	"	" ३३६
४४३	" विश्वनाथ मिश्र	"	" ३८१
४४५	" शम्भूनाथ शर्मा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४४९	" सूर्यदत्त मिश्र	"	तृतीय श्रेणी ३३२
४५०	" रामनगीना त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ४४९
४५१	" देवनाथ मिश्र	"	प्रथम श्रेणी ४९०
४५२	" रत्नाकर उपाध्याय	"	" ५०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४५३	श्री केशवप्रसाद पाण्डेय	काशी	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४५४	,, रामसूरत सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४५५	,, देवनाथ राय	,,	द्वितीय श्रेणी ४३१
४५६	,, सीताराम मिश्र	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४६१	,, रामनरेश उपाध्याय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४६२	,, रामवृक्ष सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४०९
४६३	,, भूपदेव शुक्ल	,,	तृतीय श्रेणी ३६५
४६५	,, रामप्रताप त्रिवेदी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४६७	,, चन्द्रिकाप्रसाद पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४१३
४६८	,, सुरेशचन्द्र मिश्र	,,	उत्तीर्ण २९६
४६९	,, जगदीश शुक्ल	,,	तृतीय श्रेणी ३९६
४७०	,, नरसिंह पाण्डेय 'पथिक'	,,	द्वितीय श्रेणी ४३४
४७१	,, दूधनाथ सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३६०
४७७	,, नकछेद मिश्र	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४७८	,, कमलाप्रसाद द्विवेदी	,,	,,
४७९	,, मिश्रीलाल गुप्त	,,	,,
४८३	,, रामबहाल सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४८५	श्री हरिद्वार त्रिपाठी	काशी	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४८७	" सीताराम उपाध्याय	"	तृतीय श्रेणी ३७१
४८९	" रामगोपाल सिंह	"	" ३६८
४९१	" सत्यनारायण राय	"	" ३४२
४९२	" दूधनाथ त्रिपाठी शास्त्री	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४९५	" विजयशंकर मल्ल	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४९७	" शोभनाथ तिवारी	"	तृतीय श्रेणी ३५१
४९९	" रूपनाथ पाण्डेय	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५००	" कोमलसिंह	"	तृतीय श्रेणी ३५९
५०२	" शिवनाथ मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४७७
५०३	" शिवशंकर खन्ना	"	तृतीय श्रेणी ३५०
५०४	" बद्रीप्रसाद पाठक	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५०५	" अभयकुमार पाण्डेय	"	तृतीय श्रेणी ३४५
५०७	" देवीविशाल दीक्षित	"	" ३५०
५०९	" राधाकृष्ण जोशी	"	" ३२७
५११	" कुबेरप्रसाद	"	" ३९६
५१३	" सूर्यनाथ पाण्डेय	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५१५	श्री काशीनाथ मिश्र	काशी	तृतीय श्रेणी ३७५
५१७	" दुर्गाप्रसाद गुप्त	"	द्वितीय श्रेणी ४२२
५२०	" जवाहरलाल सैगल	"	" ४६६
५२१	" केशवदत्त बगौली	"	तृतीय श्रेणी ३५०
५२२	" चतुर्भुजनाथ तिवारी	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५२३	" शिवसागर मिश्र	"	तृतीय श्रेणी ३५४
५२४	" शीतलाप्रसाद	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५२८	श्रीमती नानकी मलकानी	"	"
५२९	" भवानीदयाल गुप्त	"	तृतीय श्रेणी ३४०
५३१	श्री जगतनारायण सिंह	काशी (उदय०प्र०का०)	" ३३४
५३२	" अमरपाल सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४३६
५३३	" रामबहादुर सिंह	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५३४	" जगदीशनारायण सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३७६
५३५	" धनेशपत त्रिपाठी	"	" ३९६
५३६	" सन्तप्रसाद दास महन्त	"	" ३८५
५४१	" कन्हैयालाल	कुकड़ेश्वर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५४४	" कमलाप्रसाद झा	कुआंगढ़ी	तृतीय श्रेणी ३६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५४६	श्री दशरथ झा 'काव्यतीर्थ'	कुआंगढ़ी	अध्याय ३ नि० ७ के अनुसार
५४७	" शशिनाथ झा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५४९	" राजेन्द्रप्रसाद सिंह 'इन्द्र'	"	तृतीय श्रेणी ३६१
५५१	" रमाकान्त झा	"	द्वितीय श्रेणी ४०४
५५३	" रामधारीप्रसाद	कुशीनगर	तृतीय श्रेणी ३७२
५५५	" वासुदेव पाण्डेय	"	" ३८६
५५९	" हरीशंकर त्रिपाठी	कोआथ	द्वितीय श्रेणी ४२४
५६०	" ब्रह्मदेव पाण्डेय	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५६३	" रामकृष्ण शर्मा	कोटा (भारतेन्दु समिति)	"
५६४	" रामेश्वरदयाल भार्गव	"	तृतीय श्रेणी ३७४
५६५	" राजेश्वर	"	" ३३८
५६७	" रामचरनलाल सक्सेना	"	द्वितीय श्रेणी ४३३
५६८	" टीकमचन्द जैन	"	प्रथम श्रेणी ५३४
५६९	" सिरिल	"	तृतीय श्रेणी ३७६
५७०	" गोकुलदास शर्मा	"	" ३३९
५७६	" योगेश्वरप्रसाद सिंह	खगड़िया	उत्तीर्ण ३१०
५७८	" जयमंगल शर्मा	खगौल	तृतीय श्रेणी ३८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५७९	श्री रामावतार शर्मा	खगौल	उत्तीर्ण ३००
५८१	" हनुमानसहाय	"	तृतीय श्रेणी ३४६
५८७	" रामलखनलाल	खड़गपुर	द्वितीय श्रेणी ४१५
५९१	" ब्रह्मदेव मिश्र शास्त्री	खपड़ाडीह	तृतीय श्रेणी ३८२
५९२	" बद्रीनारायण सिंह	"	" ३३१
५९६	" पराकुंश त्रिपाठी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६००	" लक्ष्मीनारायण सक्सेना	खुजनेर	"
६०६	" महावीरप्रसाद शर्मा विर्थरे	खुर्जा	तृतीय श्रेणी ३९४
६१०	श्रीमती गंगादेवी	खैर	" ३६२
६११	श्री रामदुलारे द्विवेदी	खोपापार	उत्तीर्ण ३१२
६१२	" रामचन्द्र द्विवेदी	"	तृतीय श्रेणी ३३३
६१५	" विश्वनाथ मिश्र	"	उत्तीर्ण ३१७
६१६	" चेतनारायण	"	तृतीय श्रेणी ३३२
६१७	" हनुमानदत्त शुक्ल	"	" ३८२
६१८	" दयाशंकर राय	"	" ३४९
६२०	" राजबसन्त द्विवेदी	"	" ३६३
६२२	" जयदेव मिश्र	गढ़बनैली	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६२९	श्री रामबालक सिंह शर्मा	गया	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६३०	" सत्यदेव प्रसाद सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३३७
६३४	" ब्रह्मदत्त मिश्र	"	" ३७४
६३६	" बाबूलाल साहू	गाड़र वारा	" ३४१
६३९	" प्रेमलाल चौकसे	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६४०	" भगवान दास	"	तृतीय श्रेणी ३४१
६४५	" राजाराम	गोरखपुर	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
६४६	" विष्णुदेव द्विवेदी	"	तृतीय श्रेणी ३७८
६४८	" जगन्नाथ राम	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६४९	" अमरनाथ पाण्डेय	"	"
६५१	" राधेश्याम रूंगटा	"	द्वितीय श्रेणी ४१६
६५२	" राजकुमार सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३८४
६५३	" बल्देव तिवारी	"	" ३६४
६५४	" किशोरीलाल	"	" ३७८
६५६	" अम्बिका पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ४५४
६५७	" कोदई उपाध्याय	"	प्रथम श्रेणी ४९६
६५८	" रामसूरत तिवारी	"	तृतीय श्रेणी ३६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६६३	श्री रामनाथ अग्रवाल	चिड़ावा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६६७	श्रीमती पौधारी देवी उर्फ हेमलता पाण्डेय	चुरू (ऋषि कुल)	”
६६९	श्री मुरलीधर शर्मा	”	द्वितीय श्रेणी ४२१
६७०	” कुञ्जविहारी शर्मा	”	तृतीय श्रेणी ३८५
६७१	” मदन गोपाल	छतरपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६७४	” रामनिवास व्यास	छिन्दवाड़ा	”
६७५	” सूरज प्रसाद सिगारे	”	”
६७६	” शंकर लाल पंवार	”	”
६७८	” नन्हें सिंह	”	तृतीय श्रेणी ३५८
६७९	” गोपाल असोलकर	”	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
६८०	” महावीर झा	जन्दाहा	द्वितीय श्रेणी ४७९
६८१	” कुशेश्वर झा	”	” ४३८
६८२	” राजपति चौधरी	”	” ४२२
६८३	” बच्चेलाल झा	”	तृतीय श्रेणी ३९७
६८५	” नर्मदा प्रसाद सराफ़	जबलपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६८६	” श्रेष्ठी रतनलाल जैन	”	तृतीय श्रेणी ३३६
६८८	” शालिग्राम व्यास	”	” ३२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६९०	श्री सुरेशचन्द्र श्री वास्तव	जबलपुर	तृतीय श्रेणी ३४६
६९६	श्रीमती तारापोतदार	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
६९७	श्रीमती श्यामासिंह	,,	,,
७०२	श्री दत्तात्रय हरी खिखड़कर	,,	,,
७०६	,, चन्द्रशेखर त्रिवेदी	,,	,,
७०७	,, शंकरलाल दुबे	,,	तृतीय श्रेणी ३३०
७०८	,, देबीप्रसाद चौधरी	,,	उत्तीर्ण २९९
७१०	,, रामसेवक पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४१६
७११	,, भगवतप्रसाद मघरिया	,,	,, ४१५
७१२	,, पुरुषोत्तमलाल बिलौहाँ	,,	उत्तीर्ण ३०८
७१५	,, श्यामसुन्दर केदावत	जयपुर	तृतीय श्रेणी ३४९
७१६	,, रामजीलाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४०९
७१८	,, भट्ट रघुवीर स्वरूप शास्त्री	,,	,, ४६५
७२०	,, विजयदत्त माथुर	,,	तृतीय श्रेणी ३६८
७२१	,, राधामोहन शर्मा	,,	,, ३२६
७२२	श्रीमती शैलकुमारी चतुर्वेदी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७२५	,, पुष्पलता देवी	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७२६	श्री गोविन्दराव नाड़कर्णी	जावद	तृतीय श्रेणी ३४०
७२७	" द्वारिकासिंह	जैतपुर	" ३४९
७२८	" कुबेरनाथ पाण्डेय	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७२९	" जगन्नाथप्रसाद सिंह	"	"
७३०	" श्रीरामसिंह	"	"
७३१	" गोपालसिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४०३
७३२	" हरदत्त	जोधपुर	तृतीय श्रेणी ३८५
७३५	श्रीमती नीमावती देवी सोडल	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७३७	श्री वेंकटशर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४०४
७३८	" रामसेवक लाल	जौनपुर	तृतीय श्रेणी ३६४
७३९	" चन्द्रभूषण पाण्डेय	"	" ३२०
७४१	" रामअधीन सिंह	"	" ३३२
७४४	" वैद्यनाथ मिश्र	झरिया	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७४७	श्रीमती सौ० शान्ता राधा गोपालजी पंड्या	झालरापाटन	"
७४९	" विमला देवी	"	तृतीय श्रेणी ३९०
७५२	श्री हरप्रसाद त्रिपाठी	झाँसी	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७५३	" केदारनाथ पाण्डेय	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७५५	श्री कृष्णचन्द्र पेंगोरिया	झाँसी	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७५८	,, प्रभुदयाल	झुंझनू	तृतीय श्रेणी ३३१
७५९	,, प्रमेश्वरीप्रसाद खेतान	,,	,, ३४४
७६०	,, महावीरप्रसाद शर्मा	,,	,, ३४१
७६१	,, सूरजमल शर्मा	,,	,, ३७३
७६३	,, विद्यानन्द	टाँडा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७६५	,, राधेमोहन शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३४७
७६६	,, हरिश्चन्द्र	टीकमगढ़	,, ३२९
७६८	,, रामप्रसाद	टीकापट्टी	,, ३९५
७६९	,, हरिश्चन्द्र	,,	,, ३९७
७७०	,, कदमलाल पोद्दार	,,	,, ३६३
७७१	,, जगदीशलाल	डालटनगंज	प्रथम श्रेणी ४९० [वि० यो० गणित]
७७५	,, कामाक्षा पाण्डेय	डिब्रूगढ़	तृतीय श्रेणी २५६
७७६	,, रामकृष्ण सहाय	डिहरी	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७७७	,, ओझा भुवनेश्वर शर्मा	,,	,,
७८०	,, रामाश्रय सिंह	डुमरी	तृतीय श्रेणी ३२४
७८२	,, शिवपूजन दुबे	,,	,, ३३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७८३	श्री श्याम नारायणसिंह	डुमरी	द्वितीय श्रेणी ४२४
७८६	,, रामविलाससिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३३३
७८८	,, रामभजन विश्वकर्मा	,,	,, ३५४
७८९	,, रामयश शुक्ल	,,	,, ३६५
७९१	,, बैजनाथ ओझा	ढिंगवस	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७९२	,, शिवदर्शनसिंह	,,	,,
७९३	,, कुबेरनाथ सिंह	तिलौथू	,,
८०१	,, भैयालाल व्यास 'लाल'	दतिया	तृतीय श्रेणी ३४९
८२१	,, सूर्यनारायण पाण्डेय	दार्जिलिंग	,, ३३६
८२६	,, गयाप्रसादसिंह	दिघवारा	,, ३४५
८२८	श्रीमती कुमारी प्रभावती भटनागर	दिल्ली	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८३२	श्री रघुपतिसिंह	देव (गया)	उत्तीर्ण ३०८
८३५	,, बद्रीनाथ शास्त्री	,,	,, ३१५
८३६	,, सुमेरचन्द्र जैन	देवबन्द	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८३७	,, ज्ञानचन्द्र गोयल	,,	तृतीय श्रेणी ३२२
८३९	,, राजनाथ शर्मा	देवरिया	उत्तीर्ण ३१८
८४०	,, जटाशङ्कर मणि त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ४२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८४२	श्रीमती यमुनादेवी अग्निहोत्री	देहरादून (कन्या गुरु०)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८४३	श्री किशोरीलाल	देहरादून (डी० ए० वी० का०)	तृतीय श्रेणी ३५१
८४५	" सत्यप्रकाश शर्मा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८५०	" दूधनाथ सिंह	दोहरीघाट	तृतीय श्रेणी ३३५
८५१	" मंगलदेव	"	" ३२२
८५३	" शुकदेवप्रसाद सिंह	धमदाहा	" ३८७
८५४	" नागेश्वर मिश्र	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८५५	" महेन्द्रप्रसाद वर्मा	"	तृतीय श्रेणी ३६३
८५८	" लालजी झा	धमौरा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८६०	" हरि नारायण मलतारे	धार	उत्तीर्ण ३४५
८६२	" भालचन्द्र आपटे	धारवाड़	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८६३	" रामधारी सिंह	धूसी	तृतीय श्रेणी ३७०
८६५	" सुग्रीवपति त्रिपाठी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८६७	" यज्ञप्रसाद	धौलपुर	"
८७१	" यमुना शर्मा	नरकटियागंज	तृतीय श्रेणी ३८४
८७२	" विश्वनाथ द्विवेदी	"	उत्तीर्ण ३१२
८७३	" राधावल्लभ मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४२९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
८७५	श्री चन्द्रिका मिश्र	नवादा	द्वितीय श्रेणी ४१२
८७८	" दामोदरराव सप्रे	नागपुर(हिन्दी हाई स्कूल)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८७९	" लक्ष्मीनारायण भारद्वाज	"	द्वितीय श्रेणी ४५६
८८१	" चम्पासिंह सोलंकी	नागौद	तृतीय श्रेणी ३४८
८८२	" फ़जलकरीम	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८८३	" वागरोधी कृष्णचन्द्र भट्ट	नाथद्वारा	द्वितीय श्रेणी ४२१
८८६	" मथुरादास	नारायणगढ़	द्वितीय श्रेणी ४३०
८८७	" कचरूमल वर्मा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८९१	" मुरलीधर नारायणप्रसाद	नालन्दा	"
८९३	" रामचन्द्रप्रसाद 'चन्द्र'	"	तृतीय श्रेणी ३३४
८९४	" रामानुग्रह नारायण सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४५३
८९९	" रामचन्द्र कड़े पूरकर	नासिक	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९०४	" यमुनाप्रसाद	नाहरगढ़	तृतीय श्रेणी ३३०
९०७	" रामचन्द्र पाण्डेय	निसरपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९१३	" कमलाप्रसाद दुबे	पचम्बा	द्वितीय श्रेणी ४४०
९१४	" राजेन्द्र दुबे	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९२०	" विश्वनाथप्रसाद वर्मा 'विद्यार्थी'	पटना कालेज	प्रथम श्रेणी ४९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९२३	श्री मक्खन ठाकुर	पटना कालेज	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९२४	" बलभद्र उपाध्याय	"	"
९३०	" जंगबहादुर ठाकुर	"	उत्तीर्ण ३०७
९३३	" शुकदेवप्रसाद वर्मा	"	प्रथम श्रेणी ४९८ [वि० यो० गणित]
९३६	" रामप्रसादसिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४०८
९३९	" रामदुलारेशरण सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३३०
९४१	" ब्रजभूषण मिश्र	पड़रौना	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९४२	" नारायणसिंह	"	तृतीय श्रेणी ३२५
९४३	" रामसिंगार ओझा	"	" ३५१
९५१	" शिवराम त्रिवेदी	पन्ना	उत्तीर्ण ३१२
९५४	" रामप्रताप मिश्र	प्रयाग (सम्मेलन कार्यालय)	प्रथम श्रेणी ५००
९५८	" श्रीकृष्ण गोस्वामी	"	तृतीय श्रेणी ३६२
९६०	" रामकिंकर मिश्र	"	प्रथम श्रेणी ४९५
९६४	" देवव्रत वर्मा	"	तृतीय श्रेणी ३८१
९६५	" बलदेवप्रसाद	"	उत्तीर्ण ३०१
९६६	" गयाप्रसाद द्विवेदी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९६७	" सूर्यनारायण पाण्डेय	"	तृतीय श्रेणी ३७४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९६८	श्री रामनाथ शुक्ल	प्रयाग (सम्मे० कार्या०)	द्वितीय श्रेणी ४२६
९७०	,, उमाशङ्कर त्रिपाठी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९७१	,, वंशरूप पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४१९
९७२	,, रामपाल दुबे	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९७६	,, शिवनाथ पाण्डेय	,,	,,
९७९	,, अल्पनारायण शुक्ल	,,	तृतीय श्रेणी ३९१
९८४	,, राजेन्द्रनाथ	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९८९	,, रामदास पाण्डेय	,,	,,
९९०	,, श्रीकान्त द्विवेदी	,,	तृतीय श्रेणी ३३०
९९१	,, रामप्रसाद	,,	,, ३३५
९९३	,, भरतानुजदास	,,	द्वितीय श्रेणी ४२९
९९४	,, चन्द्रिकाप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३९७
९९५	,, वेणीमाधव पाण्डेय	,,	,, ३९९
९९६	,, देवनाथ त्रिपाठी	,,	,, ३६६
९९८	,, गोपालप्रसाद	,,	प्रथम श्रेणी ५३२ [वि० यो० गणित]
९९९	श्रीमती स्नेहलता श्रीवास्तव	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०००	श्री देवनारायणसिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३७२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१००२	श्री सीताराम गुप्त	प्रयाग (सम्मे० कार्या०)	तृतीय श्रेणी ३२३
१००५	” दुर्गाशंकर श्रीमाली	”	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१००६	” महावीरप्रसाद मिश्र	”	प्रथम श्रेणी ५४७ [वि० यो० गणि०]
१००९	” रामअभिलाष उपाध्याय	”	तृतीय श्रेणी ३६७
१०११	” कृपाशंकर मिश्र	”	प्रथम श्रेणी ५१५ [वि० यो० गणित]
१०१२	” अवधविहारीशरण द्विवेदी	”	द्वितीय श्रेणी ४११
१०१३	” राममूर्त्ति शुक्ल	”	तृतीय श्रेणी ३६७
१०१६	श्रीमती गिरिजादेवी अवस्थी	”	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०१७	श्री द्वारकाप्रसाद	प्रयाग (हि० वि० पी०)	तृतीय श्रेणी ३९८
१०१८	” त्रियुगीनारायण त्रिपाठी	”	द्वितीय श्रेणी ४४७
१०१९	” रामदेव त्रिपाठी	”	तृतीय श्रेणी ३५२
१०२०	” रामकिशोर शुक्ल	”	द्वितीय श्रेणी ३९७
१०२२	” टी० सी० गोपाल	”	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०२३	” रामचन्द्र शर्मा	”	तृतीय श्रेणी ३३७
१०२४	” पि० वि० सीतारामू शांतानंद	”	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०२५	” वी० शिवरामकृष्ण	”	”
१०२६	” ए० राघवय्या चौधरी	”	”

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०३२	श्री प्रभात मिश्र	प्रयाग (दारा० हाई स्कूल)	द्वितीय श्रेणी ४०३
१०३४	" विश्वनाथ शुक्ल	"	" ४५१
१०३५	" गयादत्त शुक्ल	"	तृतीय श्रेणी ३५९
१०३६	" शेषधर द्विवेदी	"	द्वितीय श्रेणी ४२३
१०३७	" रामलोचन पाण्डेय	"	" ४२१
१०४०	" श्यामसुन्दर पाण्डेय	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०४१	" देवनारायण शोकहा	"	"
१०४२	" जंगबहादुरसिंह	"	प्रथम श्रेणी ४८७
१०४३	" सरजूप्रसाद पाण्डेय	"	तृतीय श्रेणी ३९८
१०४५	श्री आत्माराम मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४१६
१०४७	" दिनेश मिश्र	"	" ४३७
१०४८	" रामसूरत त्रिवेदी	"	तृतीय श्रेणी ३८०
१०४९	" रामबली मिश्र	"	" ३६६
१०५३	" अनिरुद्धप्रसाद मिश्र	प्रसण्डो	" ३४१
१०५७	" शुकदेव त्रिपाठी	परसागढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०६०	" रामाधार उपाध्याय	पांचाली	तृतीय श्रेणी ३६३
१०६१	" रामप्रसाद गुप्ता	"	" ३६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०६२	श्री वैद्यनाथप्रसाद यादव	पांचाली	द्वितीय श्रेणी ४१२
१०६३	" कपूरीलाल राठौर	पाढ़म	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०६५	" किशोरीलाल कुलश्रेष्ठ	"	द्वितीय श्रेणी ४७१
१०६६	" राजबहादुर गुप्ता	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०६८	" राम विलास सिंह	पारू	प्रथम श्रेणी ४८० [वि० यो० धर्मशास्त्र]
१०७०	" पंचानन तिवारी	"	द्वितीय श्रेणी ४०७
१०७१	" रामबुझावनसिंह शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४०१ [वि० यो० धर्म०]
१०७२	" श्यामानन्द त्रिपाठी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०७६	" भगवतीप्रसाद आचार्य	पिपलौदा	"
१०७७	" भगवतीलाल रावल	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०७९	" रामस्वरूप मिश्र	पिलानी	तृतीय श्रेणी ३८१
१०८१	" श्यामसुन्दर शर्मा	"	" ३३६
१०८९	" यशवन्तशंकर गोडबोले	पूना	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०९०	" काशीनाथ नारायण सोमण	"	"
१०९१	" भगवान नारायण कानड़े	"	"
१०९२	" गोपाल महादेवभट्ट	"	"
१०९३	" हरीशिवराम सहस्र बुद्धे	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०९४	श्री पाण्डुरंग शास्त्री गोस्वामी	पूना	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०९५	" मोरेश्वर गजानन गपचूप	"	"
१०९७	" मल्हार लक्ष्मण कुलकर्णी	"	"
१०९९	" विनायक बाबूराव ओंकार	"	"
११०३	" कु० हीराबाई सुँठणकर	"	"
११०४	" चिन्तामणी बाबूराव ओंकार	"	"
११०५	" राधकिशन इन्द्राणी	"	तृतीय श्रेणी ३४२
११०८	" दिगम्बर गोपाल दांडेकर	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१११०	" चौधरी राजनारायण शर्मा	पूसा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११११	" कृष्ण देव सिंह	पोठिया	तृतीय श्रेणी ३५५
१११२	" जगदीशप्रसाद शर्मा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१११७	" जागेश्वरप्रसाद सिंह	"	"
१११८	" अनिरुद्ध प्रसाद सिंह	"	"
११२०	" छेदीप्रसाद यादव	,	तृतीय श्रेणी ३९४
११२२	" वासुदेवप्रसाद यादव बिहारी	"	" ३६८
११२३	" सत्यनारायण मण्डल	"	उत्तीर्ण ३१७
११२९	" नोखेलाल सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११३८	श्री हरिवल्लभ दीक्षित	पोहरी (आदर्श वि०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११४०	" कल्याणराय श्रीवास्तव	"	तृतीय श्रेणी ३६६
११४२	" ताराचन्द गर्ग	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११४५	श्रीमती विद्यादेवी दुबे	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११५०	श्री गोविन्दप्रसाद शर्मा	पोहरी [सर्वं० हि० वि०]	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११५३	" बालकराम	फर्रुखाबाद	उत्तीर्ण ३११
११५४	" त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी	"	तृतीय श्रेणी ३२५
११५५	" चंद्रशेखर द्विवेदी	"	उत्तीर्ण ३०१
११६०	" ओ३म्प्रकाश अग्रवाल	फीरोज़ाबाद	" ३१२
११६४	" रामलाल मिश्र	फैजाबाद	द्वितीय श्रेणी ४०४
११६६	" बिहार पाठक	"	उत्तीर्ण ३००
११६७	" पारसनाथ त्रिपाठी	"	तृतीय श्रेणी ३४१
११६९	श्रीमती विद्योत्तमा शर्मा 'विदुषी'	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११७२	श्री देवनारायण सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३५२
११८०	" पन्नेसिंह शेखावत	बगड़	उत्तीर्ण ३१२
११८२	" बिहारीलाल	बड़नगर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११८४	" हेमन्तकुमार श्रीवास्तव	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११८५	श्री कु० सवाईसिंह सिसौदिया	बड़नगर	तृतीय श्रेणी ३७३
११८७	" मनोहरलाल शर्मा	बड़मेर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११९४	" रामचरनसिंह	बदायूँ	तृतीय श्रेणी ३३७
१२००	" हाकिमलाल रास	बन मनखी [सुमि०हा०स्कू०]	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२०१	श्रीमती गोदावरी देवी	"	"
१२०२	श्री अनूपलाल पोद्दार	"	"
१२०३	" दशरथप्रसाद यादव	"	तृतीय श्रेणी ३८५
१२०४	" बलराम सिंह	"	" ३८७
१२०५	" कुशेश्वर यादव	"	" ३५३
१२१७	" तालुकदार सिंह	बम्बई (मा० वि०)	" ३६२
१२१८	" सत्यनारायण मिश्र	"	" ३७६
१२१९	" उदयभानु सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४७९
१२२१	" राजाराम पाण्डेय	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२२४	" लक्ष्मीनारायण शर्मा	"	तृतीय श्रेणी ३२१
१२३१	" शारंगधर श्यामजी पहिलवान	बम्बई हि० प्र०सभा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१२३३	" कृष्णगोपाल शर्मा	बम्बई (मा० क० हाई स्कूल)	तृतीय श्रेणी ३८३
१२३४	" प्रयागनारायण शुक्ल 'निर्झर'	"	" ३६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२३५	श्री सुन्दरलाल जैन	बम्बई (मा० क० हाई स्कूल)	तृतीय श्रेणी ३७४
१२३६	,, भीकालाल धूत	,,	द्वितीय श्रेणी ४२३
१२३७	,, पन्नालाल जैन	,,	,, ४५१ [वि०यो० धर्म शास्त्र]
१२३९	,, रामलषण पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४५७
१२४०	,, गजानन्द बागला	,,	तृतीय श्रेणी ३४१
१२४१	,, परमेश्वरलाल बगड़का	,,	तृतीय श्रेणी ३८७
१२५१	,, महाबीरप्रसाद सिंह	बहदुरा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२५५	,, वेदानन्द ठाकुर 'विप्र'	,,	द्वितीय श्रेणी ४१०
१२५६	,, भगवतीप्रसाद सिंह	ब्यावर	उत्तीर्ण ३०१
१२५७	,, गजराजसिंह शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३६१
१२५८	,, नकछेद त्रिपाठी	बरहज	,, ३७५
१२६०	,, केदारनाथ पाण्डेय	,,	,, ३२४
१२६१	,, रमाकान्त त्रिपाठी 'दिनेश'	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२६२	,, रामअधार	,,	द्वितीय श्रेणी ४७२
१२६५	,, केशवप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३४७
१२६७	,, रामनारायणलाल श्रीवास्तव	,,	द्वितीय श्रेणी ४१७
१२६८	,, नन्दकिशोर सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२७१	श्री हरकेश नारायण सिंह	बरहज	तृतीय श्रेणी ३९९
१२७३	,, माहेश्वरीदत्त चतुर्वेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ४१५
१२७५	,, रामजी तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी ३२२
१२७८	,, लालचन्दसिंह रावत	,,	,, ३३२
१२७९	रामनरेशसिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२८४	,, सीतारामसिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३५७
१२८५	,, गणेशमल्ल	,,	द्वितीय श्रेणी ४१२
१२८६	,, रामदेव दीक्षित	,,	तृतीय श्रेणी ३६६
१२८७	,, शिवपूजनप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ४३१
१२८८	,, बालेश्वरप्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी ३५७
१२९०	,, विश्वनाथ उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ४१३
१२९३	,, रामभरोसा पाण्डेय	,,	,, ४१९
१२९७	,, केदारलाल	बलिया (यमु०सं० पा०)	तृतीय श्रेणी ३५२
१३०३	,, नित्यानन्द रैंडर	बरेली	द्वितीय श्रेणी ४३२
१३०४	,, प्रेमनारायण चौरासिया	,,	,, ४०७
१३०५	,, लखनदेवप्रसाद श्रीवास्तव	,,	तृतीय श्रेणी ३८४
१३०६	,, रामस्वरूप जिज्ञासु	,,	द्वितीय श्रेणी ४१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम-संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३०७	श्रीमती सरला कुमारी रावत	बरेली	तृतीय श्रेणी ३५८
१३१५	कुमारी सरस्वती गुप्त	,,	,, ३९२
१३१९	श्री प्रतिभाभूषण अग्रवाल	,,	,, ३४५
१३२०	,, श्यामसुन्दरदास	,,	,, ३६८
१३२१	,, त्रिलोचन	,,	,, ३७८
१३२२	श्रीमती कुन्ती देवी खन्ना	,,	,, ३४०
१३२३	श्री जयगोपाल शर्मा	,,	,, ३३१
१३२७	,, मनमोहन सिंह	बलबड्डा	द्वितीय श्रेणी ४०५
१३२८	,, विश्वनाथ झा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३२९	,, रमेशचन्द्र वर्मा 'बागी' साहित्य भूषण	,,	तृतीय श्रेणी ३३५
१३३४	,, ब्रजेशकुमार सिंह	बलिया (जु० संस्कृत कालेज)	द्वितीय श्रेणी ४००
१३३५	,, रामनरेशप्रसाद	,,	प्रथम श्रेणी ५०० [वि० यो० गणित]
१३३८	,, मुक्तेश्वरप्रसाद तिवारी	बस्ती	द्वितीय श्रेणी ४८५
१३३९	श्रीमती कलावती देवी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३४१	श्री सत्यनारायणप्रसाद पांडेय	,,	,,
१३४३	,, रामलखन शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३७१
१३४४	,, वीरेन्द्रप्रतापनारायण सिंह	बहराइच	,, ३५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३४७	श्री शिवनन्दन प्रसाद घोष	बाढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३५२	,, कमलाकान्त आर्य	,,	,,
१३६३	,, दुलीचन्द शर्मा	बारां	तृतीय श्रेणी ३५३
१३६५	,, देवीराम वर्मा	,,	,, ३४३
१३६६	,, देवीशंकर वर्मा	,,	,, ३९७
१३६७	,, रूपकिशोर भरद्वाज	,,	उत्तीर्ण ३१७
१३६८	,, श्रीनिवास गुप्ता	,,	प्रथम श्रेणी ४८४
१३७०	,, रामनारायण	,,	द्वितीय श्रेणी ४३४
१३७१	,, प्रभाशंकर	,,	,, ४०३
१३७३	,, श्यामलाल सिंह	बांसगाँव (हि० सा० वि०)	तृतीय श्रेणी ३८५
१३७५	,, बालकृष्ण झा	,,	अध्याय ३ नि० ७ के अनुसार
१३७६	,, विनोद कृष्ण झा	बांसगाँव (ए० वी० स्कू०)	,,
१३७७	,, विक्रमादित्य त्रिपाठी	,,	द्वितीय श्रेणी ४२१
१३८०	,, तीर्थराज सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के के अनुसार
१३८६	,, नारायण एस० त्रिवेदी	बांसबाड़ा	अध्याय ३ नि० ७ के अनुसार
१३९४	,, पूरणमल गोयनका	बीकानेर	प्रथम श्रेणी ५००
१३९५	,, सुरपति सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३८३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३९९	श्री चन्द्रिकासिंह गरिमापुरी	बेलागंज	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४००	" गदाधर सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३७६
१४०२	" रामव्रतप्रसाद	"	" ३२२
१४०३	" रघुवीर मिश्र	बेगूसराय	द्वितीय श्रेणी ४६८
१४०४	" कोल्लिमल्लिकार्जुन राव	बैजवाड़ा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१४०५	" जीरेड्डी चेन्नारेड्डि	"	"
१४०६	" वीरमाचनेनि सत्यनारायण-राव	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४०७	" वर्धमान विश्वनाथ राव	"	"
१४०८	" वर्धमान लक्ष्मीनारायण	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१४१२	" सतीशचन्द्र शर्मा	भगवानपुर	"
१४१३	" जगतनन्दन सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३८४
१४१४	" सूर्यदेवनारायण	"	द्वितीय श्रेणी ४०४
१४१५	" तोताराम 'शुक'	भरतपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४१७	" मथुराप्रसादसिंह	भागलपुर	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१४१८	" तेजनारायण महतो	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४२०	" छोटेलाल मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४२३
१४२५	" वंकिमचन्द्र बनर्जी	"	तृतीय श्रेणी ३९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१४२६	श्री नगेन्द्रनाथ गुप्त	भागलपुर	तृतीय श्रेणी ३६८
१४२९	,, सुरेन्द्रनारायण चौधरी	,,	,, ३९०
१४३०	,, खगेश्वरप्रसाद शुक्ल	,,	,, ३६०
१४३२	,, शम्भूदयाल शर्मा	भेलसा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४३३	,, बद्रीप्रसाद शर्मा	,,	,,
१४३५	,, रामगोपाल शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३७४
१४३६	,, ब्रजभूषण सक्सेना	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१४३७	श्रीमती ज्ञानवती	,,	,,
१४४५	श्री गिरीशनारायण जौहरी	मथुरा (गो० हि० वि०)	द्वितीय श्रेणी ४१४
१४४८	,, नथ्थीमल 'मित्र'	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४५०	,, नारायणदास गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी ३२३
१४५१	,, अम्बाप्रसाद शर्मा	,,	,, ३५२
१४५२	,, लालसिंह वर्मा	,,	,, ३५५
१४५३	,, जगदीशप्रसाद शर्मा	,,	,, ३८०
१४५४	,, गोपालप्रसाद चतुर्वेदी	,,	,, ३६५
१४५६	,, केशवदेव शर्मा	,,	,, ३६८
१४५७	,, शिवदानसिंह	,,	,, ३३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४५८	श्री रामचरण लाल गुप्त	मथुरा (गो० हि० वि०)	तृतीय श्रेणी ३२१
१४६१	” क० रा० शेषकृष्ण	मदुरा	अध्याय ३ नि० ७ के अनुसार
१४६२	” ए० कैलाश	”	”
१४६५	” वि० इ० शिवब्रह्मण्यन	”	प्रथम श्रेणी ५२३ [वि० यो० संस्कृत]
१४६६	” शिवनारायण	”	द्वितीय श्रेणी ४७३ [वि० यो० संस्कृत]
१४७१	” सूर्यनारायण चौधरी	मधुबनी	तृतीय श्रेणी ३७६
१४७२	” आद्याचरण झा	”	” ३६१
१४७४	” कमलाप्रसाद	मलाँव	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४७५	” शिवप्रसाद गुप्त	”	”
१४७६	” उमाशंकर राम त्रिपाठी	”	द्वितीय श्रेणी ४२३
१४८०	” अनिरुद्ध मिश्र	महदेवा	अध्याय ३ नि० ७ के अनुसार
१४८२	” सदाशिव शैलगांव कर	महित्पुर	तृतीय श्रेणी ३५५
१४८४	” रामनिवास शर्मा व्यास	मांगरोल	” ३३६
१४८७	” महादेवप्रसाद पाठक	मांडले	” ३८०
१४८९	” अलबेले लाल	मिर्जापुर	” ३७२
१४९४	” कुंजबिहारी मिश्र	मुगरा बादशाहपुर	” ३७०
१४९५	” पारसनाथ तिवारी	”	” ३८३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१४९६	श्री कामताप्रसाद तिवारी	मुगरा बादशाहपुर	तृतीय श्रेणी ३२०
१५०० (क)	" श्यामकिशोर श्रीवास्तव	"	" ३७३
१५०० (ख)	" राधेश्याम चतुर्वेदी	"	" ३९३
१५०१	" राजमणि त्रिपाठी	"	" ३९०
१५११	" बाबूलाल झा	मुगेर (टाउन हाई स्कूल)	" ३९२
१५१२	श्रीमती चन्द्रावती	मुजफ्फरनगर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५१५	श्री द्वन्दबहादुर सिंह	मुजफ्फरपुर (सुहृद संघ)	तृतीय श्रेणी ३९८
१५१७	" श्यामनन्दन शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४१४
१५१८	" राजेन्द्रप्रसाद शर्मा	"	" ४२२
१५१९	" चन्द्रशेखर शर्मा	"	तृतीय श्रेणी ३९५
१५२०	" श्यामनन्दन शर्मा	"	" ३९७
१५२३	" रघुनाथशरण सिंह	"	" ३६८
१५२५	" सूर्यदेव पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ४६१
१५२७	" कृष्णदेव सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३५१
१५३०	" देवनारायण सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४२२
१५३१	" सत्यदेव त्रिपाठी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५३२	" दिगम्बर झा	"	तृतीय श्रेणी ३९७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५३८	श्री राधेकृष्ण	मुरादाबाद	तृतीय श्रेणी ३९७
१५४१	" मानिकचन्द त्रिवेदी	"	द्वितीय श्रेणी ४५३
१५४५	" आनन्दप्रकाश दीक्षित	मेरठ	तृतीय श्रेणी ३३७
१५४६	" जगदेव 'शान्त'	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५४७	" जयनारायण	"	तृतीय श्रेणी ३६२
१५५१	" ब्र० वेदपाल	"	" ३८०
१५५५	" ब्र० राजेश्वर	"	द्वितीय श्रेणी ४२१
१५५८	" गुरुप्रसाद चौहान	मैनपुरी	तृतीय श्रेणी ३३५
१५६४	" सुरेन्द्रदेव	"	द्वितीय श्रेणी ४४३
१५६६	" लक्ष्मीनारायण पाठक	मोकामाघाट	तृतीय श्रेणी ३७५
१५६७	" इन्द्रदेवप्रसाद सिंह	"	" ३४५
१५६८	" सालिगराम लाल	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१५७०	श्रीमती सरस्वती देवी	मोरसण्ड	द्वितीय श्रेणी ४५५
१५७२	श्री कृष्णगोपालसिंह	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५७३	" राजदेवसिंह	"	"
१५७४	" रतीश पाठक	"	द्वितीय श्रेणी ४५८
१५७५	" आनन्द किशोरप्रसाद नारायणसिंह	"	" ४१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५७६	श्री रामरेखा तिवारी	मोरसण्ड	द्वितीय श्रेणी ४२०
१५७७	" जगन्नाथ सिंह	"	" ४०५
१५७८	" धरीक्षण सिंह	"	" ४००
१५८१	" वशिष्ट त्रिपाठी	मोहनिया	तृतीय श्रेणी ३४४
१५८३	" भालचन्द्र यावलकर	मण्डलेश्वर	" ३५७
१५८४	" शंकर तुलापुरकर	"	" ३७४
१५८६	श्रीमती विन्देश्वरी देवी	रक्सौल	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१५९१	श्री रघुनाथ झा	"	द्वितीय श्रेणी ४३०
१५९८	" हर्षवर्द्धन शर्मा धस्माना	रतनगढ़	तृतीय श्रेणी ३८३
१५९९	" राधाकृष्ण गौड़ 'काव्यतीर्थ'	"	द्वितीय श्रेणी ४२५
१६०४	" रामानन्द प्रसाद वर्मा	रतसंड	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६०८	" मुनीन्द्र नाथ देवघरिया	राँची ट्रे० स्कूल	"
१६०९	" सूर्य नारायण मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४०७
१६१०	" रजनीकान्त तिवारी	"	तृतीय श्रेणी ३५४
१६१२	" चन्द्र शेखर शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४०८
१६१४	" गोकुलप्रसाद त्रिपाठी	राजगढ़	" ४४८
१६१९	" देवी दयाल	राजापुर (बांदा)	तृतीय श्रेणी ३३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६२०	श्री सत्यनारायण शर्मा	राजापुर (बांदा)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६४१	,, नथमल झुँझनू वाला	रानीगंज (बर्दवान)	,,
१६४३	,, सत्यनारायण खेतान	,,	,,
१६४४	,, काशी राम क्याल	,,	,,
१६४९	,, सरदार मल कोठारी	रामपुरा	,,
१६५०	,, रणधीर सिंह	रामासाँढ़	तृतीय श्रेणी ३९७
१६५१	,, इन्द्रदेव उपाध्याय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६५२	,, सदा शिव उपाध्याय	,,	,,
१६५४	,, रामशरण लाल	रायपुर	द्वितीय श्रेणी ४५२
१६५७	,, विक्रमादित्यतिवारी	रीवाँ (बाल समिति)	तृतीय श्रेणी ३७०
१६५८	,, संकर्षण प्रसाद	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६५९	,, यज्ञनारायण मिश्र	,,	,,
१६६२	,, रामाधार राम मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३५४
१६६३	,, रामभरोसा शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६६७	,, रामरतन वर्मा	,,	प्रथम श्रेणी ४९५ [वि॰ यो॰ गणित]
१६६८	,, रामयश त्रिवेदी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६६९	,, रामलालशर्मा	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६७२	श्री लक्ष्मणप्रसाद पाण्डेय	रीवां (बाल समिति)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६७३	,, गंगाप्रसाद शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४०९
१६७४	,, स्वामीदीन त्रिपाठी	,,	,, ४४२
१६७५	,, सिराजुद्दीन सिद्दीकी	,,	,, ४२५
१६७६	,, राम शिरोमणि शुक्ला	,,	तृतीय श्रेणी ३४३
१६७७	,, भगवानप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ४०७
१६७८	,, ईश्वरदीन	,,	तृतीय श्रेणी ३६३
१६८१	,, रामराजसिंह वर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६८३	,, राजीवलोचन अग्निहोत्री	,,	प्रथम श्रेणी ५०९ [वि० यो० संस्कृत]
१६८६	,, जगन्नाथसिंह	रेवतीपुर	द्वितीय श्रेणी ४०५
१६८७	,, चन्द्रदेव त्रिपाठी	,,	,, ४४३
१६८८	,, उमाशङ्कर पाण्डेय	,,	,, ४०४
१६९१	,, शिवनाथराय शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३५७
१६९३	,, चन्द्रदेव चौबे	,,	उत्तीर्ण ३१८
१६९५	,, बलिराज राम	,,	तृतीय श्रेणी ३६७
१६९६	,, बनमाली पाण्डेय	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१६९७	,, देवकृष्णलाल दास	रोसड़ाघाट	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६९८	श्री सूर्यदेव नारायण पोद्दार	रोसड़ाघाट	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६९९	" गौरीकान्त झा	"	"
१७००	" रामविलास पूर्वे	"	"
१७०१	" राजेन्द्र झा	"	"
१७०२	" रामजी मिश्र	"	"
१७०४	" राजबहादुर तिवारी	रंगून	द्वितीय श्रेणी ४४८
१७०५	" ब्रजलाल	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१७०७	" ओ३म्प्रकाश	"	"
१७१४	" विष्णुदत्त द्विवेदी	लखनऊ	प्रथम श्रेणी ५०६
१७१६	" हरीकृष्ण ओझा	"	द्वितीय श्रेणी ४२३
१७१७	" सूर्यकृष्ण शुक्ल	"	उत्तीर्ण " ३१०
१७१८	" सुरेशचन्द्र मिश्र	"	तृतीय श्रेणी ३२१
१७१९	" सुन्दरलाल	"	द्वितीय श्रेणी ४०९
१७२३	" शारदाप्रसाद वर्मा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७२५	" रामावतार शुक्ल	"	द्वितीय श्रेणी ४४२
१७२६	श्रीमती राजरानी भार्गव	"	तृतीय श्रेणी ३६२
१७२९	श्री भुवनचन्द्र तेवाड़ी	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१७३२	श्री बाबूराम गिरि	लखनऊ	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१७३५	,, दुर्गाप्रसाद अवस्थी	,,	तृतीय श्रेणी ३९३
१७४०	श्रीमतीकुमारी ज्ञानवती वर्मा	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१७४१	,, कृष्णा वाजपेयी	,,	,,
१७४२	श्री आनन्दानन्द द्विवेदी	,,	,,
१७४५	,, मदन मोहन उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ४२४ [वि० यो० संस्कृत]
१७४६	,, पतिपाल मिश्र	,,	प्रथम श्रेणी ४८८ [वि० यो० संस्कृत]
१७४९	,, पुत्तीलाल निगम	,,	तृतीय श्रेणी ३७५
१७५०	,, ओमप्रकाश गोविल	,,	द्वितीय श्रेणी ४४९
१७५१	,, महेन्द्र सिंह	लखावटी	तृतीय श्रेणी ३९१
१७५२	,, प्रहलाद सरन	,,	,, ३२६
१७५७	,, बल्लभ	लश्कर	,, ३८४
१७५९	,, सीताराम गुप्ता	,,	,, ३५६
१७६०	,, कृष्ण भगवंत भाले	,,	,, ३२०
१७६२	,, गौरी शंकर शर्मा 'पथिक'	,,	,, ३८७
१७६४	,, मदनमोहन गुप्ता	,,	,, ३४४
१७६५	,, कन्हैयालाल शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१७७२	श्री गोविन्दसखाराम दातार	लश्कर	द्वितीय श्रेणी ४१२
१७७६	„ गणेशप्रसाद शर्मा	„	उत्तीर्ण ३१५
१७७८	„ जर्नादन राव अग्नि होत्री 'राकेश'	„	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७८२	„ शिवदत्तसिंह भदौरिया	„	उत्तीर्ण ३०१
१७८४	„ अम्बिकाकान्त मिश्र	लहेरिया सराय	प्रथम श्रेणी ४९१
१७८५	„ रामबुझावन झा	„	तृतीय श्रेणी ३९४
१७८७	„ वासुदेव मिश्र	लक्ष्मण गढ़	„ ३३८
१७८८	„ गुलाबचन्द्र पुजारी	„	„ ३७१
१७९०	„ कन्हैयालाल उपाध्याय	„	द्वितीय श्रेणी ४३९
१७९५	„ रामविलास ठाकुर	लालगञ्ज	„ ४२२ [वि०यो० संस्कृत]
१७९९	„ गुलाब भेंडे	वर्धा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१८००	„ प्रभुदयाल विद्यार्थी	„	तृतीय श्रेणी ३२६
१८०३	„ रामअत्रवाल कर	„	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१८०९	„ दुर्योधन वर्मा	वृन्दावन	विभाजित प्रणाली से अनुसार
१८१०	„ शालिगराम वर्मा	„	तृतीय श्रेणी ३३५
१८१३	„ चन्द्रभानु सिंह	वैद्यनाथ धाम (सा० वि०)	„ ३५४
१८१९	„ कुलदीप सहाय	शकर पुरा	„ ३५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८२२	श्री रामविलास सनाढ्य	शाहजहांपुर	द्वितीय श्रेणी ४०८
१८२३	" रामअधीन मिश्र 'सैनिक'	"	प्रथम श्रेणी ४८५
१८३०	" जगतनारायण श्रीवास्तव	सतना	तृतीय श्रेणी ३७७
१८३४	" रामसुशील मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४५६
१८३६	" छगनलाल स्वामी	सर्दारशहर	तृतीय श्रेणी ३८६
१८३७	" सुमन्तप्रसाद	सहजनवां	" ३६१
१८३८	" रामकृपाल द्विवेदी	"	" ३७७
१८३९	" अक्षयवरप्रसाद द्विवेदी	"	" ३८०
१८४२	" पद्मनाभ तैलंग	सागर (म्यु० हा०)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१८४३	" अनसूया हर्देकर	"	"
१८४५	" विन्ध्याचल मिश्र	सारनाथ	तृतीय श्रेणी ३४२
१८४६	" सेवाराम	"	[वि० यो० संस्कृत] तृतीय श्रेणी ३३५
१८४८	" रामपति द्विवेदी	सिंगरामऊ	" ३९५
१८५०	" राजदेव त्रिपाठी 'कमलेश'	"	[वि० यो० संस्कृत] तृतीय श्रेणी ३३१
१८५१	" रामप्रसाद गुप्त	"	" ३७१
१८५२	" विद्याप्रसाद उपाध्याय	"	" ३७९
१८५३	" विद्याधर मिश्र	"	" ३४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८५४	श्री माताभीख सिंह	सिंगरामऊ	तृतीय श्रेणी ३८८
१८५५	" पारसनाथसिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४६१ [वि० यो० संस्कृत]
१८५७	" वृजभूषणसिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४३६
१८५८	" दयाशंकरलाल	"	तृतीय श्रेणी ३२४
१८५९	" पारसनाथ लाल	"	" ३४६
१८६०	" रामाचार्य उपाध्याय	"	" ३४७
१८६१	" श्रीरामगुप्त	"	द्वितीय श्रेणी ४२६
१८६२	" गिरिजापति दुबे	"	" ४३० [वि० यो० संस्कृत]
१८६३	" कृपाशंकर सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४३१
१८६६	" राधारमण झा	सिंगिया	तृतीय श्रेणी ३८४
१८६७	" दीनानाथ झा	"	द्वितीय श्रेणी ४०७
१८६८	" दामोदरलाल दास	"	" ४३७
१८६९	" रामनारायण सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३८३
१८७०	" त्रिवेणीप्रसाद सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४२१
१८७१	" विक्रमादित्य प्र० सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३९४
१८७२	" दामोदर मिश्र	"	" ३३१
१८७३	" छेदीलाल कुँवर	"	" ३७७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१८७६	श्री रामकर्ण द्विवेदी	सिरसा	द्वितीय श्रेणी ४०२
१८७७	" देवनारायण मिश्र	"	उत्तीर्ण ३१३
१८८०	" ललनजी पाण्डेय	सीताकुण्ड	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१८८१	" रामनाथ राम	"	द्वितीय श्रेणी ४४९
१८८२	" राजाराम पाण्डेय	"	प्रथम श्रेणी ४९४ [वि० यो० संस्कृत]
१८८३	" बाबूराम गुप्त	सीतापुर	द्वितीय श्रेणी ४०३
१८८५	श्रीमती विपुलादेवी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१८८६	श्री लालजीसिंह ठाकुर	"	"
१८८८	श्रीमती वेदकान्ती	"	तृतीय श्रेणी ३४४
१८८९	श्री शुकदेव यति	सीवान	" " ३६३
१८९०	" रामनयन द्विवेदी	सुलतानपुर	द्वितीय श्रेणी ४१०
१८९१	कुमारी उर्मिला श्रीवास्तव	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१८९३	श्री रामाभिलाष पाण्डेय	"	तृतीय श्रेणी ३५८
१८९४	" बलराम त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ४२८
१८९५	" कृष्णानन्द शर्मा	"	उत्तीर्ण ३०४
१८९६	" सुखदेवप्रसाद मिश्र	"	तृतीय श्रेणी ३५४
१८९१	" देवनारायण पाठक	"	द्वितीय श्रेणी ४५९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१९००	श्री चन्द्रचूड़मणि त्रिपाठी	सुलतानपुर	प्रथम श्रेणी ५६८ [वि० यो० सं०]
१९०२	श्रीमती चन्दन लता	"	तृतीय श्रेणी ३२३
१९०३	श्री रत्नाकर चतुर्वेदी	"	" ३८४
१९०४	" उमाशंकर मिश्र	"	" ३२९
१९०५	" रामप्रताप त्रिपाठी	"	उत्तीर्ण ३१५
१९१२	" केदारनाथ त्रिपाठी	सुहवल	तृतीय श्रेणी ३९८
१९१३	" हरिदेव पाण्डेय	सूरजगढ़	" ३५३
१९१९	" रामखेलावन सिंह	सेवदह	उत्तीर्ण ३१४
१९२२	" बनारस चौधरी 'वीरेश'	"	तृतीय श्रेणी ३७४
१९२४	" सुखदेवप्रसादसिंह	"	उत्तीर्ण ३१६
१९२७	" सदाशिव महतो	"	तृतीय श्रेणी ३४६
१९३२	" रामेश्वरप्रसादसिंह 'प्रसून'	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१९३३	" भुवनेश्वरप्रसाद सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३५४
१९४६	" रामदेवसिंह 'तरल'	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१९५२	" कालीप्रसाद वर्मा 'सुमन'	"	"
१९५४	" अमरबहादुर सिंह	सोराम	तृतीय श्रेणी ३४१
१९५६	" अनन्तराम त्रिपाठी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११५७	श्री सत्यनारायण शुक्ल	सोराम	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११५८	" महरानी दीन शुक्ल	"	तृतीय श्रेणी ३३३
११५९	" उमाशंकर मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४११
११६१	" छोटेलाल सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३५०
११६३	" सूरजप्रसाद गुप्त	हमीरपुर	" ३३३
११७२	" गुरूदेव प्रसाद दुबे	हरदा	" ३३०
११७३	" हितनारायण चौधरी	हरदी	द्वितीय श्रेणी ४४०
११७६	" प्रतिपाल सिंह	हरदोई (च० हा० स्कूल)	तृतीय श्रेणी ३४०
११७९	" रघुनाथ सिंह वर्मा	"	उत्तीर्ण ३०१
११८०	" मुरलीधर दीक्षित	"	तृतीय श्रेणी ३७२
११८१	" साहबलाल वर्मा	"	" ३९८
११८४	" उमामहेश अवस्थी	हल्दौर	द्वितीय श्रेणी ४३३
११८८	" पन्नालाल मिश्र	हाथरस	" ४४३
११८९	" शिवलाल	"	तृतीय श्रेणी ३११
११९१	" शिवनाथ जोशी	"	" ३३३
११९२	" राधाकृष्ण सारस्वत	"	द्वितीय श्रेणी ४०१
११९३	" प्यारेलाल शर्मा	हापुड़	" ४१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१९९४	श्री राधाशरण घोष	हुसेनगंज (सारन)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१९९८	” चतुरलाल	होलीपुरा	द्वितीय श्रेणी ४१७
२००२	” छोटेलाल प्रधान	हंडिया	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२००५	” रघुवीर शर्मा त्यागी	मेरठ	तृतीय श्रेणी ३७०
२०११	” महेश्वरीप्रसाद	मुँगेर (टाउन हाई स्कूल)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२०१२	” बलदाऊ सिंह	प्रयाग [सम्मेलन कार्यालय]	द्वितीय श्रेणी ४२२
२०२३	” बेचूपाठक	बम्बई (मा० वि०)	उत्तीर्ण ३०९
२०२५	श्रीमती विमला कुमारी	प्रयाग (सम्मेलन कार्यालय)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२०२६	श्री हरदयाल शर्मा	”	द्वितीय श्रेणी ४२१
२०२७	” जागेश्वर झा	बहदुरा	तृतीय श्रेणी ३७४
२०२८	” रमासेश्वर सिंह	”	” ३५८
२०२९	” विद्याधर उपाध्याय	रमासांढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२०३०	” फतह बहादुर सिंह	प्रयाग (सम्मेलन कार्यालय)	”
२०३२	” अद्याचरण पाण्डेय	”	तृतीय श्रेणी ३८६
२०३३	श्रीमती सरला देवी	सीतापुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२०३४	श्री ललितकिशोरदास	रामासांढ़	प्रथम श्रेणी ५२२ [वि० यो० संस्कृत]
२०३६	” महन्त द्वारिकादास	”	द्वितीय श्रेणी ४११ [वि० यो० संस्कृत]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२०३८	श्री भागवत पोद्दार	प्रयाग (स० कार्या०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२०३९	श्रीमती नर्मदाबाई सरवटे	कोटा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१५७१	श्री त्रिवेणीप्रसाद शर्मा	मोरसण्ड	विभाजितप्र०केअनुसार

वैद्य-विशारद परीक्षा

७	श्री बालमुकुन्द	आगर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८	,, प्रभुदयाल शर्मा	आगरा	,,
२१	,, ओंकारदत्त शर्मा	कांधला	प्रथम श्रेणी ५४७ [वि०यो०स्वा०वि० द्रव्यवि०औरमौखिक]
२६	,, प्रदीपनारायण	गया	तृतीय श्रेणी ४०९
३३	,, महावीरप्रसाद शर्मा	जयपुर	,, ४२६
४७	,, विश्वेश्वरप्रसाद	प्रयाग	विभाजित प्रणाली के के अनुसार
४९	,, कन्हैयालाल गुप्त	,,	,,
५३	श्रीमती रुक्मिणी द्विवेदी	,,	,,
५५	,, रामानुज त्रिपाठी	,,	,,
५७	,, ओंकारनाथ अवस्थी	प्रयाग (दा०हा० स्कू०)	प्रथम श्रेणी ५६८ [वि०यो०स्वा०वि०, शरीरवि०औररोगवि.]
५८	,, रुद्रमणि त्रिपाठी	,,	प्रथम श्रेणी ५४७ [वि.यो.स्वा.औरद्रव्य]
५९	,, शिवसिंहासन मिश्र	पांचाली	प्रथम श्रेणी ५९२ [स्वा.वि.औरमौखिक]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६०	श्री हरनारायण कुलश्रेष्ठ	पाढ़म	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६१	श्रीमती रामबेटी शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ४८६
७१	" बकाराम	बैतूल	तृतीय श्रेणी ३९२
७८	" दीनदयाल प्रसाद शर्मा	राजनांद गांव	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८२	" बासुदेव सिंह	रंगून	"
८५	" मुनीश्वर सिंह	सिंगरामऊ	"
८८	" रामदेव मुंडेल	संगरिया	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८९	" गोवर्धन लोमरोड़	"	" "
९४	" चम्पालाल पाराशर	हरदा	द्वितीय श्रेणी ४७३
९५	" शिवचरण लाल	"	प्रथम श्रेणी ५६५ वि.यो.स्वा.और मौखिक

कृषि-विशारद परीक्षा

१	श्री मथुरानाथ तिवारी	आरा	तृतीय श्रेणी ३१२
३	" केशवदत्त पन्त	ताड़ीखेत	" ३०६
४	" गोपालदत्त उपाध्याय	"	" ३१५
५	" हनुमानप्रसाद राय	तेऊस	द्वितीय श्रेणी ३७१
८	" रामेश्वर शर्मा	पिलानी	तृतीय श्रेणी २६६
९	" परमेश्वरप्रसाद सिंह	बहदुरा	" २९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०	श्री रामचन्द्र मिश्र	रतसण्ड	द्वितीय श्रेणी ४०२
११	" निजामुद्दीन खाँ	रतसण्ड	द्वितीय श्रेणी ३७९
१२	" श्रीकृष्णराय	"	" ३९६
१३	" मनवीर राय	"	" ३६९
१४	" सिराजुद्दीन खाँ	"	" ३६०
१५	" सरयूप्रसाद सिंह	हंडिया	तृतीय श्रेणी ३२१

प्रथमा परीक्षा

१	श्री भगवन्त राव	अइतानगर प्याले	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२	" बी सत्यनारायण चौधरी	"	"
४	श्रीमती बी० राजेश्वरी कुमारी	"	"
५	श्री मा. पिच्चया	"	"
९	" क० सीता रामय्या	"	"
१०	" रामभुजी	अकबरपुर (फर्रुखाबाद)	"
११	" मङ्गलीप्रसाद	"	"
१२	" फौजदार सिंह	"	"
१३	" रामचन्द्र चतुर्वेदीय	"	"
१४	" जगदीशशरण शुक्ल	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१७	श्री देवेन्द्रसिंह वर्मा	अकोला	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार
१८	" मातुराय	"	"
१९	" ओंकारप्रसाद	"	"
२०	श्रीमती सौ० रमादेवी शर्मा	"	"
२१	श्री बृजमोहन तापड़िया	"	"
२४	" परमानन्द पचोरी	"	"
२५	" योगेन्द्रप्रसाद सिंह	अथरी	"
२६	" राधाकृष्णसिंह	"	"
२७	" मथुराप्रसाद सिंह	"	"
२८	श्रीमती प्रेमसागरदेवी 'पुष्प'	"	"
३१	श्री हरिप्रसाद	अनूपशहर	तृतीय श्रेणी २९८
३३	" घीसासिंह	अमरोहा	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार
३५	" कल्याणसहाय पारीक	अलवर	तृतीय श्रेणी ३१३
३६	" दामोदरलाल सिंहल	"	द्वितीय श्रेणी ३२५
३७	" रामकृष्ण 'मित्र'	"	" ३१८
३९	" बुधपालसिंह	अलीगढ़	" ३५२
४१	" रामरत्नपाल	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४३	श्री अजयपाल वार्ष्णेय	अलीगढ़	तृतीय श्रेणी ३११
४४	" बनवारीलाल पांडे	"	" २७८
५०	" रामजी	आगरा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५१	" हुकमसिंह	"	"
५२	" शिवचरनलाल शर्मा	"	"
५३	" भगवती प्रसाद	"	"
५४	" मुन्नीलाल तिवारी	"	"
५६	" केशवलाल	"	"
५७	" रामबाबू	"	"
५९	" भवासीलाल शर्मा	"	"
६०	" नन्दकुमार	"	"
६१	" ज्ञानचन्द जैन	"	"
६५	" रघुनन्दनप्रसाद	"	"
६६	" दाऊदयाल खंडेल वाल	"	"
६७	" रणजीत सिंह	आजमगढ़	"
७१	" प्रकाशनाथ	आबूरोड	द्वितीय श्रेणी ३९२ [वि० यो० स्वा०]
७२	" उदयनारायण राय	आरा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
७४	श्री रामानन्द सिंह	आरा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
७५	,, राधाकृष्ण	,,	,,
७६	,, कमलकिशोर	इच्छावर	,,
८१	,, भगवती प्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३२८
८२	,, श्यामाकिशोर	इटारसी	तृतीय श्रेणी ३०४
८३	,, हीरालाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३३७
८४	,, एरिक ह्यूबर्ट केलिव	,,	तृतीय श्रेणी २६१
८६	,, दत्तात्रय शिन्दे	,,	,, ३०५
८७	,, कमलकिशोर दुबे	,,	द्वितीय श्रेणी ३४६
९१	,, हरनाथराम शर्मा	इम्फाल	तृतीय श्रेणी २५२
९४	श्रीमती रुक्मिणीदेवी स्वामी	इन्दौर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
९५	श्री कन्हैयालाल यादव	,,	द्वितीय श्रेणी ३६८
९८	,, प्रयागसिंह	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
९९	श्रीमती कुमारी सरलादेवी शर्मा	,,	,,
१०४	श्री प्रभाकर	,,	,,
१०८	,, मालतीलता दुबे	,,	तृतीय श्रेणी २६१
११०	,, कुन्दनमल	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११३	श्री परमात्मादीन तिवारी	इन्दौर	द्वितीय श्रेणी ३२७
११४	,, चन्दनलाल मेहता	,,	तृतीय श्रेणी २८९
११५	श्रीमती कुमारी कमलावती जैन	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१२०	,, कस्तूरी बाई	,,	तृतीय श्रेणी २५२
१२१	,, राधाबाई	,,	,, ३०३
१२२	श्री भगवानदीन	,,	,, २५५
१२३	,, चि० मदनमोहन जोशी	,,	,, ३११
१२४	,, सुरेन्द्रनारायण वागोरा	,,	द्वितीय श्रेणी ३२२
१२५	,, धरणीधर द्विवेदी	ईशीपुर	तृतीय श्रेणी ३१२
१२८	,, कृष्णराव लोकरे	उज्जैन	द्वितीय श्रेणी ३३२
१३०	,, भगवानदास अधिकारी	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१३१	,, रतनसिंह	,,	,,
१३४	,, गोहथनलाल ओझा	,,	,,
१३७	,, बालकृष्ण जोशी	,,	तृतीय श्रेणी ३११
१४०	,, तख़्तमल इन्द्रावत	उदयपुर (सा० वि०)	द्वितीय श्रेणी ३३२
१४१	,, गणेश शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४२	,, गोविन्द माधव	उदयपुर (हि० वि० पी०)	द्वितीय श्रेणी ३२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४४	श्री विश्वेश्वरदयाल औदीच्य	उदयपुर (हि० वि० पी०)	तृतीय श्रेणी २७५
१४६	,, राजेन्द्रलाल सेठी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४८	,, जमनालाल पोरवाल	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५०	,, हरिवल्लभ	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५१	श्रीमती चन्द्रकला देवी विशेन	,,	,,
१५२	श्री अमृतलाल यादव	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५३	,, बाबूराम श्रीवास्तव	उरई	तृतीय श्रेणी २८४
१५४	,, आत्माराम शुक्ला	,,	द्वितीय श्रेणी ३५२
१५६	,, मन्नीलाल	,,	,, ३७६ [वि० यो० गणित]
१५७	,, द्वारिकाप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३५० [वि० यो० ड्रा०]
१५८	,, कुं० हाकिमसिंह कौशल	,,	प्रथम श्रेणी ४३१ [वि.यो.गणि.औरड्रा.]
१५९	,, यदुवंशभूषण खरे	,,	द्वितीय श्रेणी ३४४
१६०	,, कल्लूसिंह	,,	,, ३३६
१६१	,, भूपसिंह	,,	,, ३१६
१६२	,, मुन्नालाल	,,	तृतीय श्रेणी ३१२
१६३	,, विद्याधर तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ३८६
१६४	,, सोहनसिंह सेंगर	,,	तृतीय श्रेणी २६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१६५	श्री मुरलीधर सक्सेना	उरई	द्वितीय श्रेणी ३८५
१६६	" ईश्वर सिंह	एलम	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६७	श्रीमती बलदेवी	"	द्वितीय श्रेणी ४११
१६८	श्री सूरजभान	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७०	" रेवतीराम	ओयल	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१७४	" रामशङ्कर	"	द्वितीय श्रेणी ३२९
१७५	" कु० उदयराजसिंह गौड़	"	" ३२६
१७६	" गोविन्दसिंह तड़ागी	"	तृतीय श्रेणी २९५
१७७	" गयाप्रसाद दीक्षित	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१७९	" ए० वीरेन्द्र राव	कटनी	"
१८०	" द्वारकाप्रसाद अग्रवाल	"	"
१८१	" मातादीन स्वर्णकार	"	"
१८४	" गुलाबचंद चौदहा	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१८५	" सूर्यनाथ मिश्र	कटया	द्वितीय श्रेणी ३५२
१८६	" विश्वनाथ मिश्र	"	" ३५८
१८७	" महेश्वरी राय	"	" ३९०
१८८	" रामसुचित राय	"	" ३३९
१८९	" शिवप्रसाद तिवारी	"	" ३३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१९०	श्री श्यामसुन्दर	कटिहार	द्वितीय श्रेणी ३३६
१९१	" मङ्गलचन्द	"	तृतीय श्रेणी २७३
१९२	" समरेन्द्रनाथसिंह	"	" २९७
१९५	" शक्तिप्रसाद भार्गव	कन्नौद	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१९६	श्रीमती सत्यवती भार्गव	"	"
१९८	" शीतलप्रसाद	"	"
२०२	" राजवल्लभसिंह	करनौती	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२०३	" पुण्यदेव ओझा	करसियांग	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार
२०६	" कुन्दनमल कांकाणी	"	"
२०७	" रामस्वरूप पोद्दार	कलकत्ता (माहेश्वरी वि०)	"
२०८	" हीरालाल दमाणी	"	"
२०९	" रमाशंकर पांडे	"	"
२१०	" महावीरप्रसाद तोदी	"	"
२११	" सिद्धनाथसिंह सिद्धेश	"	"
२१२	" मुन्नालाल अग्रवाल	"	"
२१३	" सोहनलाल लोहिया	"	"
२१६	" पूरणमल मोर	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२१७	श्री जटाशंकर तिवारी	कलकत्ता (माहेश्वरी वि०)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२२०	,, द्वारिकाप्रसाद सोमानी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२२१	,, लक्ष्मीनारायण हर्ष	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२२३	,, सीताराम केडिया	,,	,,
२२४	,, गोपाल सुरेका	कलकत्ता (तु० सा० वि०)	,,
२२६	श्रीमती कुमारी चम्पावती लाठ	,,	द्वितीय श्रेणी ३१६
२२८	श्री हुलास चन्द्र दुगड़	कलकत्ता (जैन श्वे०तेरा० वि०)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२२९	,, मिन्नालाल वरड़िया	,,	,,
२३०	,, गोपालसिंह कोचर	,,	,,
२३२	,, शिवकिशोर वाजपेयी	,,	,,
२३५	,, बनारसराय	कसाप	तृतीय श्रेणी २६९
२३६	,, अजबदयाल सिंह	,,	,, २५२
२३८	,, सिद्धनाथ गिरि	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२३९	,, बल्ल अक्कराजु	काकिनाडा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२४१	श्रीमती सुर्यमुखी देवी	कानपुर (सना० ध० का०)	,,
२४२	,, देवीप्रसाद वाजपेयी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२४५	,, शीतलप्रसाद गुप्त	कानपुर(डी० ए० वी० का०)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२४७	श्री संकठा प्रसाद शुक्ल	कानपुर(डी० ए० वी० का०)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२४८	" मोतीलाल शुक्ल	"	"
२४९	" वृन्दावन गुप्ता	"	"
२५०	" रामचन्द्र निगम	"	"
२५१	" मुन्नीलालमिश्र	"	"
२५२	" कु० कैलाशसिंह कुशवाहा	"	"
२५३	" श्यामलाल मिश्र	"	"
२५४	" महेशदत्त दीक्षित	"	"
२५५	" कालिकाप्रसाद श्रीवास्तव	"	"
२५६	" सूर्यपालसिंह	"	"
२५७	" रामत्रिपाठी	"	"
२५८	" विद्यासागर पाण्डेय	"	"
२५९	" रामकुमार मिश्र	"	"
२६२	" रामकामता दीक्षित	"	"
२६६	" सदरे आलम	कालिम्पोङ्ग	तृतीय श्रेणी २९२
२६९	" नरेन्द्रप्रसाद कुमाई	"	" २९३
२७०	" तुलसी बहादुर छत्री	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२७८	श्री ठाकुरदत्त त्रिपाठी	काशी	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२७९	,, उमेश त्रिपाठी	,,	,,
२८०	,, फुन्दनसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३२४
२८१	,, रामललित द्विवेदी	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२८५	,, पुरुषोत्तमसिंह	,,	तृतीय श्रेणी २९१
२८८	,, शीतल झा	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
२८९	,, राजनारायणसिंह	,,	,,
२९३	श्रीमती इन्दिरा कुमारी	,,	,,
२९४	श्री शोभनाथ पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३४९ [वि० यो० ग०]
२९५	,, राजपति उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ३३८
२९७	,, कुलदेवनारायण सिंह	काशी (उ०प्र०काले०)	,, ३३३
२९८	,, रघुवीर सिंह	,,	,, ३१८
३००	,, भीकमचन्द	किरावली	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार
३०१	,, बाबूलाल कुलश्रेष्ठ	,,	,,
३०४	,, रामयश चौधरी	कुआँगढ़ी	द्वितीय श्रेणी ३२५
३०६	,, परशुराम मंडल	,,	तृतीय श्रेणी ३१२
३०९	,, राधेमोहन पाठक	,,	,, २९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३१०	श्री लक्ष्मीनारायण पाठक	कुआँगढ़ी	तृतीय श्रेणी ३०२
३११	श्रीमती विद्यावती	कुरावली	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
३१२	श्री नरेन्द्रनाथ तिवारी	कुशीनगर	तृतीय श्रेणी २७४
३१४	" गौरीशंकर	कुची	तृतीय श्रेणी २४५
३१५	" रामलाल वर्मा	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
३१६	" राजमल जैन	"	"
३१७	" रामगोपाल स्वामी	कोटरा	"
३१८	" बद्रीप्रसाद व्यास	"	"
३२१	" रघुवीरप्रसाद व्यास	"	"
३२३	" सरयूप्रसाद श्रीवास्तव	"	"
३२४	" प्रेमचन्द्र	"	तृतीय श्रेणी २८०
३२५	" मगनलाल ओराठौड़	कोटा (भार० स०)	" २७९
३२८	" देवेन्द्र तिवारी	खगड़िया	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
३२९	" रामदेव तिवारी	"	"
३३०	" युगुलप्रसादसिंह	"	"
३३३	" परमेश्वर झा	"	तृतीय श्रेणी २९०
३३७	" रामधनी	खजुहा	द्वितीय श्रेणी ३१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३३८	श्री रामराज त्रिपाठी	खड़गपुर	तृतीय श्रेणी २५५
३३९	" श्यामराज पांडेय	"	" २८१
३४०	" खिम्मनलाल	"	" २६८
३४३	" रामदीन यादव	खपड़ाडीह	द्वितीय श्रेणी ३६२
३४४	" रामजियावन पाण्डेय	"	प्रथम श्रेणी ४४५ [वि.यो.भू०औरस्वा०]
३४६	" विक्रमादित्य शुक्ल	"	प्रथम श्रेणी ४२१ [वि० यो० स्वा०]
३४७	" लक्ष्मीनारायण पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ३४८ [वि० यो० स्वा०]
३४८	" श्रीकृष्ण मिश्र	गढ़बनैली	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
३४९	" कालिकानन्द झा	"	"
३५२	" रामशरणसिंह वर्मा	गया	द्वितीय श्रेणी ३३९
३५३	" गिरिजेश बहादुर सिंह	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
३५४	" गोविन्दास कठल	गाड़रवारा	"
३५५	" रामस्वरूप जायसवाल	"	"
३५७	" नित्यगोपाल नागायच	"	"
३५९	" मुरली मनोहर काबरा	"	"
३६०	" गोपीकृष्ण राठी	"	"
३६५	" अवधेशकुमार सिंह	गोरिया कोठी	द्वितीय श्रेणी ३३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३६६	श्री अशर्फ़ीराम	गोरिया कोठी	द्वितीय श्रेणी ३२१
३६८	,, कमलदेव सिंह	,,	,, ३२२
३७०	,, चन्द्रकेतु नारायणसिंह	,,	,, ३२५
३७१	,, चन्द्रमाप्रसाद	,,	,, ३४१ [वि० यो० गणि०]
३७३	,, तृपितनारायण राय	,,	द्वितीय श्रेणी ३१६
३७४	,, पीताम्बर सिंह	,,	,, ३५६
३७५	,, वासुदेवप्रसाद	,,	,, ३६३
३७६	,, भगवती सिंह	,,	,, ३४१ [वि० यो० गणि०]
३७७	,, मधुवन तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ३४९
३७८	,, रमाकान्त सिंह	,,	,, ३८४
३७९	,, राधाकृष्णसिंह	,,	,, ३२१
३८०	,, रामघरित्तण सिंह	,,	,, ३३६
३८१	,, रामपूजन सिंह	,,	,, ३२३
३८२	,, रामप्रसन्न सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३०९
३८३	,, रामरत्न रावत (प्रसादराय)	,,	,, ३०३
३८४	,, रामसुरत महतो	,,	द्वितीय श्रेणी ३८९
३८५	,, हरिहर प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी २८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
३८७	श्री नौरत्न सिंह	गौरिया कोठी	तृतीय श्रेणी ३०७
३८८	,, त्रिगुण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५४
३८९	,, मदनलाल अग्रवाल	चाईवासा	,, ३४७
३९०	,, बासुदेवराम मास्टर	,,	,, ३५८
३९१	,, नन्दलाल खीरवाल	,,	,, ३४१
३९२	,, वाया जेराई	,,	,, ३५३ [वि० यो० गणित]
३९३	,, खृष्ट जोय कराडुलना	,,	तृतीय श्रेणी ३१२
४०१	,, महावीरप्रसाद शर्मा	चिड़ावा	द्वितीय श्रेणी ३४८
४०३	,, विष्णुदेव सिंह	चिरौरा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
४०४	श्रीमती ललिता देवी	चुरू	,,
४०६	श्री राजेन्द्रप्रसाद सिंह	छपरा	,,
४०७	,, रामप्रवेश सिंह	,,	,,
४०८	,, कपिलदेव नारायण सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३०९
४०९	,, अम्बिकाप्रसाद शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३४०
४१०	,, कन्हैयालाल	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
४११	,, विश्वनाथसिंह	,,	,,
४१२	,, सतीशसिंह	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४१३	श्री मेहता जगनारायण	छपरा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
४१४	,, सुशीलकुमारसिंह	,,	,,
४१५	,, शिवटहल रावत	,,	,,
४१७	,, हरिशङ्कर उपाध्याय	,,	,,
४१८	,, कालकाप्रसाद अवस्थी	छिन्दवाड़ा	,,
४१९	,, मोरेश्वर राव	,,	,,
४२०	,, गंगाधर दास	जगदलपुर	द्वितीय श्रेणी ३१७
४२१	,, वसन्तलाल झा	,,	,, ३३२
४२२	,, लक्ष्मीचन्द जैन	,,	तृतीय श्रेणी ३०८
४२४	,, कमालुद्दीन	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
४२५	,, ए० के० मुकर्जी	,,	,,
४२७	,, यमुनादास	जन्दाहा	द्वितीय श्रेणी ३२६
४२८	,, भोलाराम	जबलपुर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
४३४	,, सरलादेवी तिवारी	,,	,,
४३५	,, लाजपत शर्मा	जयपुर	द्वितीय श्रेणी ३४०
४३७	,, गोपालचन्द्र पराशर	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
४३८	,, रत्नाकर भारतीय	,,	द्वितीय श्रेणी ४०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४३९	श्री हरिशंकर	जावद	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
४४०	,, कन्हैयालाल नागोरी	,,	,,
४४१	,, शङ्करलाल	,,	,,
४४८	,, रघुवंशनारायण सिंह	जैतपुर	,,
४४९	,, राणा राजेन्द्र सिंह	,,	,,
४५०	,, जयनाथसिंह	,,	,,
४५१	,, सीतारामसिंह	,,	,,
४५२	,, रामस्वार्थसिंह	,,	,,
४५३	श्रीमती जानकीबाई	जोधपुर	,,
४५४	श्री सदाशङ्कर वोहरा	,,	द्वितीय श्रेणी ३२६
४५५	,, अमृतराज	,,	,, ३२९
४५६	,, गोविन्दलाल गोविल	,,	तृतीय श्रेणी २९३
४५७	,, उगमसी मोदी	,,	,, ३०२
४५८	,, पारसमल मुथा	,,	द्वितीय श्रेणी ३८१ [वि० यो० गणि०]
४६०	,, भीष्मचन्द लुनिया	,,	द्वितीय श्रेणी ३५८
४६१	,, प्रकाशलाल बापना	,,	,, ३६२
४६२	,, सुख सम्पतराज मेहता	,,	,, ३५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४६४	श्री श्रीलाल ओझा	जोधपुर	द्वितीय श्रेणी ४०० [वि० यो० कृषि०]
४६९	,, रामबली	जौनपुर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
४७०	,, भगलराम	,,	,,
४७२	,, रणधीर सिंह	झरिया	प्रथम श्रेणी ४२७ [वि० यो० इति०]
४७३	,, जयन्तीलाल चावड़ा	,,	द्वितीय श्रेणी ३११
४७४	,, शैलेन्द्रकुमार सिंह	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
४७८	,, मनीराम गुप्ता	झांसी	,,
४७९	,, नथमल खेतान	झुंझनू	तृतीय श्रेणी २९८
४८०	,, मालीराम टीबड़ेवाला	,,	द्वितीय श्रेणी ३६१
४८१	,, मोहनलाल पंसारी	,,	,, ३८२
४८४	,, शिवनाथ सिंह आर्य	,,	,, ४०७
४८६	,, कमलचन्द सिन्धानची	,,	,, ३७४
४८७	,, रणजीतसिंह वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी २८९
४८९	,, मातादीन कैड़िया	,,	द्वितीय श्रेणी ३२५
४९०	,, पुष्करलाल तुलस्यान	,,	,, ३८०
४९२	,, सत्यनारायण पाठक	,,	,, ३९१
४९५	,, बनवारीलाल गाड़िया	,,	,, ३४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४९६	श्री विश्वनाथ गाड़िया	झुंझनू	द्वितीय श्रेणी ४०६
४९८	" महाबीरप्रसाद टिबड़ेवाला	"	" ३२६
४९९	" रामकिशन पंसारी	"	तृतीय श्रेणी २९४
५००	" कु० खेतसिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३५८
५०१	" मनोहरलाल टण्डन	टाण्डा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५०२	" कुलदीपसिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३३६
५०४	" विजयनारायण टण्डन	"	तृतीय श्रेणी ३१३
५०५	" नरेन्द्रनाथ मेहरोत्रा	"	" २९२
५०६	" हनुमानप्रसाद	"	" २८४
५०८	" प्यारे मोहन शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ३१८
५०९	" सत्यनारायण शर्मा	"	" ४१२ [वि० यो० धर्म०]
५१०	श्रीमती प्रेमादेवी	टीकमगढ़	द्वितीय श्रेणी ३९०
५११	" शान्ती देवी	"	" ३३७
५१२	" मानकुँवर देवी	"	" ३३८
५१३	" शीलवती देवी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५१७	श्री अखिलेश्वर झा	टीकापट्टी	तृतीय श्रेणी ३१४
५१८	" रामलाल मण्डल	"	द्वितीय श्रेणी ३५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५१९	श्री हरदेवप्रसाद मंडल	टीका पट्टी	द्वितीय श्रेणी ३५५
५२०	" बदरीप्रसाद लाल	"	" ३२३
५२३	" सत्यदेवप्रसाद मंडल	"	तृतीय श्रेणी २४७
५२४	" सत्यदेव नारायणसिंह	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५२५	" अर्जुनलाल	"	"
५२६	" जयन्तीप्रसाद चौधरी	"	"
५२७	" एम० सत्यनारायण राजू	"	"
५२८	" रामप्रसाद साह	"	"
५२९	एन अच्युतन एषुतच्छन	"	"
५३०	" भगीरथप्रसाद साह	"	"
५३१	" विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह	"	"
५३२	" मुंशीलाल माहेश्वरी	डिबाई	"
५३४	" बलवन्तसिंह	"	प्रथम श्रेणी ४६३ [वि० यो० भूगो०]
५३५	" लक्ष्मीपति चतुर्वेदी	"	द्वितीय श्रेणी ३५७
५३७	" गुलाबचन्द जैन	डिब्रूगढ़	तृतीय श्रेणी २६८
५३८	" शिवयत्नप्रसाद "	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५३९	" माणिकचन्द वाकलीवाल	"	तृतीय श्रेणी २६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५४१	श्री नथमल वाकलीवाल	डिब्रूगढ़	तृतीय श्रेणी २७१
५४२	,, लक्ष्मणसिंह	,,	,, २७३
५४३	,, जनकराज ओझा	डुमरांव	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५४५	,, हृदयानन्द सहाय	,,	द्वितीय श्रेणी ३३८
५४९	,, द्वारकालाल	,,	तृतीय श्रेणी ३०४
५५०	,, प्रतापसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३२८
५५१	,, ईश्वर दयाल सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २७९
५५२	,, हरि विलास गोस्वामी	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५५३	,, परमहंस पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३१७
५५४	,, लाल नारायण सिंह	डुमरी	तृतीय श्रेणी २८१
५५५	,, वंशी सिंह	,,	,, ३१०
५५६	,, दीपनारायण सिंह	,,	,, २९४
५५८	,, जगत नारायण यादव	,,	,, २७७
५६०	श्रीमती रामरती देवी	,,	,, २९९
५६१	श्री हज़ारी सिंह	,,	,, २९२
५६६	,, महादेव प्रसाद त्रिपाठी	ढिंगवस	,, ३०१
५६७	,, त्रिभुवननाथ द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ३५२ [वि० यो० गणि०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५६८	श्री भागवतदत्त मिश्र	ढिंगवस	द्वितीय श्रेणी ३३८
५६९	" महादेवप्रसाद मिश्र	"	" ३३२
५७०	" रामखेलावन शुक्ल	"	तृतीय श्रेणी ३०४
५७१	" महादेवप्रसाद शुक्ल	"	द्वितीय श्रेणी ३३४
५७२	" शीतलाप्रसाद त्रिपाठी	"	" ३३१
५७३	" चन्द्रभान त्रिपाठी	"	" ३४४ [वि० यो० गणि०]
५७४	" दुर्गादीन शुक्ल	"	द्वितीय श्रेणी ३३२
५७५	" विद्याभूषण शुक्ल	"	" ३९५ [वि० यो० गणि०]
५७६	" जगदीश बहादुरसिंह	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५७८	" विश्वम्भरनाथ	"	द्वितीय श्रेणी ४१६ [वि० यो० गणि०]
५७९	" अमरसिंह मन्सारी	ताड़ीखेत (अल्मोड़ा)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५८०	" लालसिंह गढ़िया	"	"
५८१	" कृष्णसिंह पड्यार	"	"
५८२	" नन्दसिंह स्योंत्री	"	"
५८३	" प्रेमवल्लभ शर्मा	"	"
५८४	" देवीदत्त नैलवाल	"	"
५८५	" वल्लभ पांडेय	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५८६	श्रीचन्द्रदत्त पंत	ताड़ी खेत (अल्मोड़ा)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५८७	" प्रेमवल्लभ जोशी	"	"
५९२	" गिरिजाशंकर अवस्थी	तिर्वा	तृतीय श्रेणी ३०५
५९३	श्रीमती शकुन्तलादेवी त्यागी	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
५९४	श्री तुलसीराम	"	प्रथम श्रेणी ४३६
५९५	" देवीशंकर द्विवेदी	"	द्वितीय श्रेणी ३४०
५९६	" करनलाल	"	तृतीय श्रेणी ३०६
५९७	" सिद्धनाथ	"	" ३०२
५९८	" नरेन्द्रनारायण शुक्ल	"	द्वितीय श्रेणी ३९४
५९९	" वटेश्वरदयाल वर्म्मा	"	तृतीय श्रेणी ३०९
६००	" जगदीशचन्द्र त्यागी	"	द्वितीय श्रेणी ३६८
६०१	" कनौजीलाल लोध क्षत्रिय	"	" ३३१
६०२	" कृपाशंकर पाठक	"	" ३५८
६०३	" जगदीशप्रसाद सिंह	तिलौथू	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
६१०	" इन्द्रेश्वर द्विवेदी	"	"
६१२	" रामकृपालुराय	तेऊस	तृतीय श्रेणी २६९
६१३	" बीरेन्द्रप्रसाद	"	" २८३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
६१४	श्री कमल नयन सिंह	तेऊस	तृतीय श्रेणी २५५
६१६	" देवेन्द्रप्रसाद सिंह	"	" २७७
६१८	" शिवशंकर प्रसाद सिंह	"	" २८५
६२५	" रामदास सक्सेना	दतिया	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
६२९	" राम सेवक सक्सेना	"	"
६३०	श्रीमती ब्रजरानी श्रीवास्तव	"	"
६३१	श्री शिवराम त्रिपाठी	"	"
६३२	" नाथूराम	दवोह	"
६३८	" तुलसीदास दुबे	"	तृतीय श्रेणी २५९
६४१	" बशारत खां	"	" २८२
६४३	" राजेन्द्र प्रसाद	दलसिंगसराय	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
६४४	" युगल किशोरप्रसाद सिंह	"	"
६४५	" रामकरण चौधरी	"	"
६४६	" जगदीश प्रसाद चौधरी	"	"
६४७	" वाशिष्ट नारायण ठाकुर	"	"
६४८	" शिवदेव चौधरी	"	"
६५०	" सिद्धेश्वर सिंह	दानापुर	"
६५१	" रामावतार लाल	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६५४	श्री शिलानाथप्रसाद	दिघवारा	द्वितीय श्रेणी ३३७
६५५	" किशनलाल गुप्त	दिल्ली	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
६५६	" आनन्द स्वरूप शर्मा	"	"
६५७	" गुरबक्सलाल आनन्द	"	"
६५९	" राजेन्द्र गुप्ता	"	"
६६१	श्रीमती सत्यवती भार्गव	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६६२	श्री फूलचन्द गोईल	दुर्ग	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
६६३	" नागेन्द्रप्रसाद सिंह	देव	"
६६७	" श्रवणकुमार सिंह	देवरिया	तृतीय श्रेणी २८३
६६८	" भीमसिंह	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
६६९	" विन्ध्याचलमणि त्रिपाठी	"	"
६७४	" घासीराम	देवास	द्वितीय श्रेणी ३३५
६७५	" रामखेलावनसिंह	"	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार
६७६	" गङ्गाराम वर्मा	"	तृतीय श्रेणी २९६
६८०	" भगवतीप्रसाद	"	द्वितीय श्रेणी ३१७
६८२	श्रीमती रुक्मिणीबाई	"	तृतीय श्रेणी २६२
६८९	श्री प्रह्लादनारायण सुपेकर	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६९०	श्री लक्ष्मणराव दुवे	देवास	तृतीय श्रेणी २८१
६९२	" भंवरलाल	"	द्वितीय श्रेणी ३३८
६९७	" रणसिंह	देहरादून (डी० ए०वी० काले०)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
६९८	" रामप्रसाद घिल्डियाल	"	"
६९९	" कृपालसिंह रावत	"	"
७००	" नन्दकिशोर गोयल	"	"
७०१	" दयानन्द	"	"
७०२	" भगवतप्रसाद	"	"
७०४	" चिंतामणि	"	"
७०५	" रामबृक्ष	दोहरीघीट	"
७०६	" सत्यराम	"	"
७०७	" बलदेवराय	घमौरा	तृतीय श्रेणी २५५
७११	" अभिमन्युराव	धूसी	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
७१२	" रामभरोसा प्रसाद	"	"
७१३	" श्रीनिवास	"	तृतीय श्रेणी २७२
७१५	" काशीसिंह	"	" २८३
७१७	श्रीमती गुलायची देवी	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७२१	श्री गनेशीलाल	धौलागढ़	तृतीय श्रेणी २७३
७२२	,, नारायण प्रसाद	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७२३	,, श्रीकृष्ण दास	,,	तृतीय श्रेणी २५५
७२५	,, प्रेमनारायण मारवाड़ी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७२८	,, भगवान लाल	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७२९	,, बल्देव प्रसाद	,,	,,
७३०	,, लखमीचन्द शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी २९४
७३१	,, योगेन्द्र कुमार	नजीबाबाद	द्वितीय श्रेणी ३४९
७३२	,, लल्लूमल	,,	तृतीय श्रेणी २९६
७३४	,, ओमप्रकाश अग्रवाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३५६
७३५	,, रघुवीर प्रसाद	,,	,, ३६८
७३६	,, शिवकुमार अग्रवाल	,,	,, ३५३
७३७	,, जोती प्रसाद	,,	,, ३२० [वि० यो० गणित]
७३९	श्रीमती जानकी देवी	,,	तृतीय श्रेणी ३००
७४०	,, शान्ती	,,	द्वितीय श्रेणी ३२१
७४२	,, वागीश मिश्र	नरकटियागंज	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७४५	,, परशुराम नेमा	नागपुर (हि० भा० हा० स्कूल)	द्वितीय श्रेणी ३५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७४६	श्री रामकिशन तम्बोलिया	नागपुर (हि० भा०हा०स्कूल)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
७५१	,, कृष्णपाल सिंह	नारायणगढ़	,,
७५२	,, विहारी शरण सिंह	नालन्दा	,,
७५४	,, वासुदेव सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २७०
७५५	,, मैराज़उद्दीन कुरेशी	नाहरगढ़	द्वितीय श्रेणी ३२१
७५६	,, चन्द्र कुमार	,,	,, ३४८
७५७	,, देवनाथ मेहता	निरञ्जनपुर	,, ३७१
७५८	,, राम पदार्थ शर्मा	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
७५९	,, पदम गोस्वामी	,,	तृतीय श्रेणी ३११
७६०	,, कुमार विजय सिन्हा	,,	द्वितीय श्रेणी ३३६
७६१	,, सैयद मुहम्मद सेल्लाउद्दीन	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
७६३	श्रीमती कृष्णकुमारी श्रीवास्तव	पटना	तृतीय श्रेणी २८०
७६४	श्री ज्वाला श्रीवास्तव	,,	द्वितीय श्रेणी ३७०
७६५	,, सरयूसिंह	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
७६९	,, हरनारायण सिंह	पड़रौना	,,
७७०	,, सुरेन्द्र प्रसाद सिंह	,,	,,
७७१	,, विजय शंकर मल्ल	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७७२	श्री हरिलाल सिंह	पड़रौना	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
७७६	,, शिवनन्दन लाल	,,	,,
७७८	,, विश्वनाथ सिंह	,,	,,
७७९	,, राम परीक्षा सिंह	,,	,,
७८०	,, सुरेश लाल श्रीवास्तव	,,	तृतीय श्रेणी ३०३
७८२	,, रामचन्द्र मल्ल	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
७८३	,, राजवंशी मिश्र	,,	,,
७८४	,, राजशरन शर्मा	पन्ना	तृतीय श्रेणी ३०२
७८६	,, मुरलीदास शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३७०
७८८	,, बद्रीप्रसाद खरे	,,	तृतीय श्रेणी २५४
७८९	,, रामचरण खरे	,,	,, २७२
७९०	,, मङ्गलप्रसाद खरे	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
७९१	,, कुं० प्रतिपाल सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७९४	,, मिट्ठूलाल	,,	तृतीय श्रेणी २७६
७९६	,, सुन्दरलाल गुप्ता	,,	,, २७७
७९७	श्रीमती कुमारी प्रभावती	प्रयाग (सम्मेलन कार्यालय)	,, ३०६
७९९	श्री रामअकबालसिंह	,,	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८००	श्री रमाकान्त मालवीय	प्रयाग (सम्मेलन कार्यालय)	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार
८०१	" बद्रीप्रसाद अग्रवाल	"	"
८०२	" कमला श्रीवास्तव	"	"
८०४	" रमादत्त शुक्ल	"	"
८१३	श्रीमती शकुन्तलादेवी द्विवेदी	"	"
८१४	श्री पी० के० अलक् राजू	प्रयाग (हि० वि० पी०)	"
८१५	" वाई० चन्द्रशेखरसिंह	"	"
८१६	" रामलाल तारे	"	"
८१९	श्रीमती शशिकला	प्रयाग (दारागञ्ज)	"
८२०	श्री कृष्णचन्द्र शर्मा	"	"
८२१	" दुःखहरणसिंह	प्रसन्डो	"
८२३	" यमुनाप्रसाद चौधरी	"	"
८२४	" नन्दकिशोर सिंह	"	"
८२५	" राणा गोरेलालसिंह	"	"
८२६	" चन्देश्वरप्रसादसिंह	परसागढ़	तृतीय श्रेणी ३०८
८२७	" ब्रह्मानन्दप्रसाद	"	द्वितीय श्रेणी ३२१
८२८	" सकलदीपसिंह	"	तृतीय श्रेणी २९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८२९	श्री महादेव शाह	परसागढ़	द्वितीय श्रेणी ३४९
८३१	,, गोपालप्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी २९५
८३२	,, नन्दकिशोर गिरि	,,	द्वितीय श्रेणी ३६९
८३३	,, विश्वेश्वरप्रसाद सिंह	,,	,, ३६५
८३५	,, कु० कुसुमबाई असोलकर	परासिया	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
८४३	,, रामप्रताप वर्मा	पांचाली	,,
८४७	,, रामचन्द्र धानुका	,,	,,
८४९	,, महेश्वरसिंह	पारू	,,
८५२	,, लालबहादुरसिंह	,,	,,
८५५	,, इन्द्रदेव सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३३६
८५७	,, रामप्यारेसिंह	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
८५८	,, रामज्योति देवी	,,	,,
८५९	,, भीष्म ओझा	,,	तृतीय श्रेणी २८१
८६०	,, रामप्रसाद शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३३६
८६७	,, रामचन्द्र झा	पुपरी	,, ३२२
८६८	,, महेशानन्द झा	,,	,, ३४२
८६९	श्री लक्ष्मेश्वरी शरण वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी २९८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
८७०	श्री सोनेलाल मण्डल	पुपरी	द्वितीय श्रेणी ३२१
८७३	,, मुनीश्वरप्रसाद सिंह	पोठिया	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
८७४	,, धनेश्वरप्रसाद मण्डल	,,	,,
८७५	,, दुराय मण्डल	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
८७७	,, कृष्णकान्त वर्मा	पोहरी (आदर्श वि०)	,,
८७९	,, दत्ताजी राव पाटन कर	,,	,,
८८०	,, रेवतीप्रसाद शर्मा	,,	,,
८८३	श्रीमती सावित्री देवी गुप्त 'उषा'	,,	,,
८८४	,, मूर्तिदेवी श्रीनेत	,,	,,
८८७	श्री रामभरोसे	,,	,,
८९१	,, सन्तोषचन्द्र जैन	पोहरी (सर्व हि० वि०)	,,
८९३	,, युदागीप्रसाद सिंह	फतुहा (एंग्लो वै० स्कूल)	,,
८९५	,, सरयूसिंह यादव	,,	,,
८९७	,, संकठाप्रसाद राय	बक्सर	,,
८९८	,, वैकुंठनाथ श्रीवास्तव	,,	तृतीय श्रेणी ३०५
८९९	,, कालिकाप्रसाद	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
९००	,, भुवनेश्वर शर्मा	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१०३	श्री रमाकान्तप्रसाद	वक्सर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०८	" रामेश्वर उपाध्याय	बकुल हर	तृतीय श्रेणी ३१३
११४	" प्रेमसिंह वर्मा	बगड़	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११६	" श्रीनारायण शर्मा	"	"
११७	" रामकरन दान	"	"
११८	" बजरंगीलाल शर्मा	"	"
११९	" अर्जुनलाल पाण्डेय	"	"
१२०	" जगमाल सिंह	"	"
१२१	" वृद्धिचन्द्र शर्मा	"	"
१२४	" तेरसिंह	बड़वानी	तृतीय श्रेणी २८३
१२६	" लीलादेवी निगम	"	" ३०४
१२७	" सुरेन्द्रनारायण सिंह	बनमनखी	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१२८	" गोपालजी लाल दास	"	"
१३०	" लम्बोदर झा	"	तृतीय श्रेणी ३१२
१३२	" भोलानाथ दत्त	"	द्वितीय श्रेणी ३२९
१३३	" विन्देश्वरीप्रसाद यादव	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१३५	" रामचरित्र सिंह	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३६	श्री सुरेशप्रसाद सिंह	बनमनखी	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१३७	,, भगवान भगत	,,	,,
१३८	,, रामकृष्ण यादव	,,	,,
१३९	,, हरिनन्दन सुतिहार	,,	,,
१४१	,, जीवछलाल साह	,,	द्वितीय श्रेणी ३२८
१४२	,, बंगाली मण्डल	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१४३	,, चन्द्रिकाप्रसाद सिंह	,,	,,
१४४	,, सत्यदेवप्रसाद सिंह	,,	,,
१४५	,, धरणीधर मिश्र	,,	,,
१४८	,, बोधनारायण सिंह	,,	,,
१४९	,, कमलेश्वरप्रसाद यादव	,,	,,
१५०	,, विश्वनाथ यादव	,,	,,
१५१	,, परमेश्वर साह	,,	,,
१५२	,, चन्द्रिकानन्ददास	,,	,,
१५३	,, ताराचरण भगत	,,	,,
१५५	,, जनार्दन झा	,,	द्वितीय श्रेणी ३३३
१५६	श्रीमती शिमलादेवी उर्फ उषा रानी नन्दे	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५७	श्री सरयूप्रसाद यादव	बनमनखी	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५८	" वीरनारायण सिंह	"	"
१५९	" लक्ष्मीप्रसाद चौधरी	"	"
१६०	" भुवनेश्वरप्रसाद सिंह	"	"
१६३	" चक्रधर तिवारी	"	"
१६५	" जगदम्बा राय	बम्बई (मार० वि०)	"
१६७	" मार्कण्डेयराय शर्मा	"	"
१६८	" सागरमल गुप्ता	बम्बई (मारवाड़ी कम० हाई स्कूल)	द्वितीय श्रेणी ३२७
१६९	" मदनलाल जैन	"	" ३८६
१७०	" कल्याणमल	"	" ३३३
१७४	" शिवमूर्ति सिंह	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१७५	" देवी चन्द	"	द्वितीय श्रेणी ३७९
१७७	" ओंकारनाथ मिश्रा	"	" ३२६
१७९	" राधागोविन्द शर्मा	"	" ३५०
१८०	" नन्दकिशोर सिंहल	"	" ३७२
१८१	" दामोदर केडिया	"	" ३२१
१८२	" विश्वनाथ	"	" ३८३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९८३	श्री ओमप्रकाश निराला	बम्बई (मारवाड़ी कम० हाई स्कूल)	द्वितीय श्रेणी ३३०
९८८	" दयासागर आर्य	बरेली	तृतीय श्रेणी २८१
९९१	" विश्ववीर वर्मा	"	" ३१४
९९२	" शिव सुमिरनलाल जौहरी	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
९९४	" ऋषिदेव दुबे	बलवड्डा	"
९९५	" जिच्छू शाह	"	"
९९६	" वीरेन्द्र स्वरूप	बलिया (यमुना संस्कृतपाठशाला)	"
९९७	" विजय बहादुर राय	"	द्वितीय श्रेणी ३४३
९९८	" मुक्तेश्वर हजारी	बहदुरा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
९९९	" अनूपलाल मण्डल	"	"
१०००	" बोधनारायण मण्डल	"	"
१००१	" शिवनन्दन मण्डल	"	"
१००२	" रामानन्द सिंह	"	"
१००३	" जगदम्बा प्रसाद सिंह	"	"
१००४	" रामावतार यादव	"	"
१००५	" लीला[illegible]	"	"
१००८	" टेकचन्द जैन	बहराइच	तृतीय श्रेणी २८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०१०	श्री रामकीर्त्ति त्रिवेदी	बहराइच	द्वितीय श्रेणी ३३७
१०१२	,, सिद्धनाथ खत्री (पूरे)	,,	तृतीय श्रेणी २७१
१०१३	,, कौलेश्वरप्रसाद त्रिवेदी	,,	,, २९७
१०१५	,, रामेश्वरप्रसाद	बांदा	द्वितीय श्रेणी ३६३
१०१८	,, प्रफुल्लचन्द वंशपाल	बालाघाट	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०१९	श्रीमती नयन्ती देवी	बांसगाव (सा० वि०)	,,
१०२४	श्री जयशंकर शुक्ल	बांसवाड़ा	तृतीय श्रेणी ३१०
१०२८	,, भट्ट वनेश्वर शर्मा	बिसाऊ	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०३०	,, बनवारीलाल जोशी	,,	तृतीय श्रेणी ३००
१०३१	,, रामेश्वर मिश्र	बिशौनी	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०३२	,, शिवनन्दन झा	,,	,,
१०३३	,, रामकिङ्कर झा	,,	,,
१०३४	,, सियाराम झा	,,	,,
१०३५	,, मथुरा ठाकुर	,,	,,
१०३६	,, महावीर ठाकुर	,,	,,
१०३७	,, गेन्दा गोप	,,	,,
१०३८	,, भिखारी ठाकुर	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०४०	श्री बाबूलाल झा	बिशौनी	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०४३	,, देवशरणसिंह	बिहार शरीफ़	,,
१०४४	,, महन्त मनोहरदास	बीकानेर	,,
१०५०	,, जगदीशशरण	बुलन्दशहर	तृतीय श्रेणी ३१२
१०५४	,, चन्दनप्रसाद चौधुरी	बेतिया	,, ,, २९६
१०५५	,, बजरंगवली पाण्डेय	बैतूल	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०६०	श्रीमती कुमारी कुसुमलता	भरतपुर	,,
१०६१	,, मिथिलेश कुमारी	,,	,,
१०६२	श्री महावीरप्रसाद राय	भवानीपूर	,,
१०६३	,, राधामोहन साह	,,	,,
१०६४	,, ननुकलाल मण्डल	,,	,,
१०६५	,, लखनलाल भगत	,,	,,
१०६६	,, गदाधरप्रसाद यादव	,,	,,
१०६७	,, तारिणीप्रसाद यादव	,,	,,
१०६८	,, बनारसीप्रसाद चौधरी	,,	द्वितीय श्रेणी ३१५
१०६९	,, सत्यनारायण झा	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०७१	,, माणिक्यचन्द वोहरा	भिण्ड	द्वितीय श्रेणी ३३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१०७३	श्री गोवर्धनलाल आमेटा	भिण्डर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०७४	,, बच्चूलाल	भेलसा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०७७	,, रघुनन्दन	,,	द्वितीय श्रेणी ३८४
१०७८	,, घीसूलाल गोयल	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०८१	,, शान्तिचन्द्र मेहता	भोपालगढ़	द्वितीय श्रेणी ३७८
१०९०	,, रामचन्द्र स्वर्णकार	भौरासा	तृतीय श्रेणी २६७
१०९४	,, गोवर्धनलाल त्रिवेदी	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१०९६	,, चन्द्रशेखर शर्मा	,,	,,
१०९७	,, दत्तात्रय दुबे	,,	,,
१०९८	,, गौरीशंकर दुबे	,,	,,
१०९९	,, नीलकण्ठ शुक्ल	,,	,,
११०२	,, महादेव दुबे	,,	,,
११०३	,, रामप्रसाद मिश्र	मगरौनी (सर्व हि० जैन पाठशाला)	,,
११०४	,, छितरिया प्रसाद	,,	,,
११०५	,, हर गोविन्द	,,	,,
११०६	,, हरप्रसाद पाण्डेय	,,	,,
११०९	,, मिश्रीलाल मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी २७४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११११	श्री राधेलाल	मंगरौनी(सर्व हि० जैन पाठशाला)	तृतीय श्रेणी २८५
१११२	,, रामगोपाल	मथुरा(गो० हि० वि० पीठ)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१११३	,, सूरजभान शर्मा रावत	,,	,,
१११४	,, शिवचरन सिंह	,,	,,
१११५	,, रामनारायण	,,	,,
१११६	,, हरिप्रसाद	,,	,,
१११७	,, परमात्माप्रसाद	,,	,,
१११८	,, देवकीनन्दन	,,	,,
१११९	,, किशन स्वरूप	,,	,,
११२०	,, मिहीलाल	,,	,,
११२१	,, श्रीराम	,,	,,
११२२	,, श्यामसुन्दर	,,	,,
११२३	,, रूपकिशोर	,,	,,
११२४	,, राममूर्ति	,,	,,
११२५	,, पन्नालाल वर्मा	,,	,,
११२६	,, देवीदास दुबे	,,	,,
११२८	,, दुलीराम	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११३३	श्रीमती प्रेमलता श्रीवास्तव	मथुरा (गो० हि० वि० पीठ)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११३४	श्री हरी बाबू	,,	,,
११३५	,, रतनलाल वर्मा	,,	,,
११३६	,, राधेश्याम	,,	,,
११३७	,, विष्णुदेव प्रसाद	मधीपुरा	,,
११३८	,, नन्दकिशोर प्रसाद मण्डल	,,	,,
११३९	,, दुर्गाकान्त झा	,,	द्वितीय श्रेणी ३८६ [वि०यो० गणि०]
११४२	,, भुवनेश्वर झा	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११४३	,, त्रिवेणीप्रसाद सिंह	,,	,,
११४५	,, वृजविहारी चौधरी	,,	,,
११५०	,, कृष्णमोहन सिंह	मलांव	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११५१	,, द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी	,,	,,
११५४	,, तुलासिंह गुप्त	मवाना (मेरठ)	द्वितीय श्रेणी ३४५ [वि० यो० गणि०]
११५७	,, अनिरुद्धप्रसाद सिंह	महदेवा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११५८	,, फूचोलाल पोद्दार	,,	,,
११५९	,, जलधर झा	,,	,,
११६०	,, रामरूपप्रसाद सिंह	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११६८	श्री लाला चन्दालाल गुप्त	मांगरोल	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११६९	" शान्तिसागर औल	माण्डले	"
११७३	" सागरमल	मुकुन्दगढ़	"
११७४	" सूरजमल गुप्ता	"	"
११७५	" हुकुमसिंह वर्मा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११७६	" मो० उसमानअली खां	मुकामाघाट (पटना)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११७७	" जाह्नवीप्रसाद सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३१३
११७८	" ब्रह्मदेवसिंह	"	" ३०८
११७९	" वीरेन्द्रप्रसादसिंह	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११८०	" सीताराम	"	द्वितीय श्रेणी ३७९
११८१	" रामचन्द्र शर्मा	"	" ३६७
११८२	" रामचन्द्रप्रसादसिंह	"	" ३७७
११८४	" इन्द्रदेव नारायणसिंह	"	" ३५३
११८५	" देवीप्रसाद शुक्ल	मुगरा बादशाहपुर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११८८	" आद्याप्रसाद तिवारी	"	"
११८९	" उदयभानसिंह	"	"
११९०	" शम्भूनाथ तिवारी	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११९२	श्री श्रीनाथ पाण्डेय	मुगरा बादशाहपुर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
११९३	" राजाराम पाण्डेय	"	"
११९४	" जगदीश प्रसाद तिवारी	"	"
११९५	" ऋतुराज सिंह	"	"
११९६	" गङ्गानारायण तिवारी	"	"
११९८	" शोभनाथ शुक्ल	"	"
११९९	" शोभनाथ मिश्र	"	"
१२०१	" हवलदार सिंह	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२०३	" बिश्वेश्वर मंडल	मुङ्गेर (टा० हा० स्कूल)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१२०८	" शुकदेव महतो	मुङ्गेर (लोकल बोर्ड)	"
१२०९	" वासुदेव दास	"	"
१२१०	" मक्खन साहु	"	"
१२११	" माखनलाल महतो यादव	"	"
१२१३	" ब्रह्मदेव झा	"	"
१२१४	" यदुनन्दन प्रसाद सिंह	"	"
१२१५	" महेन्द्रनारायण सिंह	"	"
१२१६	" लोभानन्द झा	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२१७	श्री शालग्राम सिंह	मुंगेर (लोकल बोर्ड)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१२२१	" कुशेश्वर सिंह	"	"
१२२५	" महेश्वर प्रसाद सिंह	"	"
१२२८	" धुरन्धर झा	"	"
१२३२	" सत्यदेव झा	"	"
१२३३	" सहदेव राय	"	"
१२३५	" सत्यदेव नारायण सिंह	"	"
१२३६	" जगदम्बी मण्डल	"	"
१२३९	" चक्रधर पाठक	"	"
१२४४	" अधिकलाल सिंह	"	"
१२४५	" विरंची झा	"	"
१२४७	" नरसिंह ठाकुर	"	"
१२५२	" अयोध्याप्रसाद यादव	"	"
१२५३	" परमेश्वर झा	"	"
१२५४	" धनेश्वर महतो	"	"
१२५७	" रामावतार	"	"
१२६३	" चन्द्रप्रकाश कौशिक	मुजफ्फरनगर	द्वितीय श्रेणी ४१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२६५	श्री योगेन्द्रराव यादव	मुजफ्फरपुर (सुहृद संघ)	तृतीय श्रेणी २७९
१२६९	श्रीमती कुमारी सुभद्रा सिनहा	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१२७६	श्री विद्यारत्न शर्मा	मेरठ	द्वितीय श्रेणी ३४१
१२७८	" रामसुन्दर चौबे	मेहदी बागान	तृतीय श्रेणी २८९
१२८०	" दशरथ शुक्ल	मैनपुरा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१२८२	" दूधनाथ सिंह	"	"
१२८४	" काशीनाथ पांडेय	"	"
१२८५	" राजदयालु मिश्र	"	"
१२८७	" जग्गूप्रसाद सिंह	मोहानियां	"
१२८८	" सत्यनारायण तिवारी	"	"
१२८९	" जयनन्दन सिंह	"	"
१२९०	" सूबेदार सिंह	"	"
१२९१	" कमलेश्वरीप्रसाद सिंह	"	"
१२९२	" लालजीलाल	"	"
१२९३	" धनञ्जयप्रसाद सिंह	"	"
१२९४	" छबिनाथ महतो	"	"
१२९५	" छेदी सिंह	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२९६	श्री जोखनप्रसादसिंह	मोहानियां	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१२९७	” शिवमूरतराम	”	”
१२९९	” लक्ष्मीचन्द्र दीक्षित	मौरावां	तृतीय श्रेणी २९८
१३००	” शिवकुमार त्रिपाठी	”	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१३०१	” गुलाबचंद सेठ	”	तृतीय श्रेणी २७८
१३०४	” निवासप्रधान	मौलासर	” ३१२
१३०५	” रामेश्वर गुप्ता	मंडलेश्वर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१३०६	” भगवानप्रसाद वर्मा	”	”
१३०९	” वीरनारायण मिश्र	रक्सौल	तृतीय श्रेणी २९७
१३१२	” रमेश झा	”	द्वितीय श्रेणी ३४६
१३१९	” अनूपसिंह जोधा	रतनगढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३२६	” लालशङ्कर दुबे	राजगढ़	”
१३२९	” वल्लभदास व्यास	”	द्वितीय श्रेणी ३३१
१३३०	” चैनसिंह	”	” ३१८
१३३१	” कुँवर विश्ववीरसिंह	”	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३३२	” विष्णुदास पचोली	”	”
१३३३	” श्याम सुन्दरदास नेमा	”	”

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३३९	श्री नन्दूलाल	राजनांद गांव	तृतीय श्रेणी २६१
१३४४	" तीरथसिंह चौधरी	रानीगंज (वर्द्वान)	" २६७
१३४५	" अयोध्याप्रसाद	"	द्वितीय श्रेणी ३२३ [वि० यो० गणि०]
१३४६	" नन्दलाल सराफ	"	तृतीय श्रेणी २९८
१३४७	" हरिश्चन्द्र मोदी	"	" २९८
१३४८	" श्यामसुन्दर मोदी	"	" २९९
१३५१	" दशरथ तिवारी	"	द्वितीय श्रेणी ३२५
१३५३	" सीताराम राजगढ़िया	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३५४	" कृष्ण तिवारी	रामपुरा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१३५५	" संतोषमल चेलावत	"	"
१३५६	" परमानन्द दीक्षित	"	"
१३५७	" झलकसिंह	रामासांढ़	द्वितीय श्रेणी ४०९ [वि० यो० गणि०]
१३५८	" प्रभुनारायणसिंह	"	" ३९३
१३५९	श्रीमती सुमित्रादेवी	"	द्वितीय श्रेणी ३१५
१३६०	श्री राजेश्वरप्रसाद	"	" ३९४ [वि० यो० गणि०]
१३६२	" विद्या साहेब गुरु गोसाईं	रायपुर सी० पी०	तृतीय श्रेणी ३०७
१३६३	" शंकरलाल श्रीवास	रायपुर	" २९८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३६४	श्री रामगोपाल अग्रवाल	रायपुर	द्वितीय श्रेणी ३३६
१३६५	श्रीमती सावित्री देवी	रायबरेली	द्वितीय श्रेणी ३५०
१३६६	श्री अमरसिंह	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१३६७	,, राजकिशोर श्रीवास्तव	रीवाँ (बालसमिति)	,,
१३६८	,, रामदास मिश्र	,,	,,
१३६९	,, पंचमलाल	,,	,,
१३७३	,, पद्मनाभ वैदी रामनारायण	लखनऊ	,,
१३७४	श्रीमती कमलादेवी मिश्र	,,	,,
१३७५	श्री वृन्दाप्रसाद अवस्थी	,,	द्वितीय श्रेणी ३९७
१३७७	,, यमुनादीन	लखीमपुर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१३७८	,, भगवतीप्रसाद शुक्ल	,,	,,
१३८०	,, केशवदत्त शर्मा	लखावटी	तृतीय श्रेणी २६६
१३८१	,, श्रीरामसिंह	,,	प्रथम श्रेणी ४२६ [वि.यो.इति.गणि.]
१३८४	,, गणेशदत्त गौड़	,,	द्वितीय श्रेणी ३८१
१३८५	,, ज्ञानसिंह	,,	,, ३८२
१३८७	,, रामेश्वर दयाल	लश्कर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१३९२	,, मिश्री मंडल	लहेरियासराय	तृतीय श्रेणी ३०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३९४	श्री भंवरसिंह वर्मा	लक्ष्मणगढ़	द्वितीय श्रेणी ३३०
१३९५	" सत्यनारायण पोद्दार	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार [वि० यो० इति०]
१३९६	" ज्ञानसिंह वर्मा शेखावत	"	तृतीय श्रेणी २८५
१३९८	" महावीर चूड़ीवाला	"	तृतीय श्रेणी २९८
१३९९	" मोतीलाल व्यास	"	" ३०९
१४००	" विष्णुदत्त त्रिवेदी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४०१	" गौरीशंकर शर्मा	"	"
१४०५	" रामप्रताप नाथ	लालगंज	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार
१४०८	श्रीमती मालती थत्ते	वर्धा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४०९	" कुमारी शान्तिदेवी	वसन्तपुर	द्वितीय श्रेणी ३४७
१४१०	श्री रामसुभग यादव	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१४११	" जयकिशोर सिंह	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१४१२	" हरिहरप्रसाद तिवारी	वारा सिवनी	द्वितीय श्रेणी ३५६
१४१५	" हरवंशसिंह गिल	"	" ४०३ [वि० यो० गणित]
१४१६	" परसराम	"	" ३७१
१४१७	" भीकमचन्द	"	द्वितीय श्रेणी ३७०
१४१९	" शोभाराम	"	" ३२९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४२०	श्री क्षेत्रपाल जैरथ	वारा सिवनी	द्वितीय श्रेणी ३२१
१४२१	" प्रभुदयालसिंह ठाकुर	"	तृतीय श्रेणी ३११
१४२४	श्रीमती सूमाबाई	"	" २९१
१४२८	" चन्द्रमणीप्रसाद वर्मा 'अबोध'	वृदावन	" ३०१
१४२९	" यदुनन्दनशरण	शकरपुरा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१४३०	" रामअवध सिंह	शाहगंज	द्वितीय श्रेणी ३४१
१४३१	" रामनारायण सिंह	"	" ३५५
१४३२	" रामकलप सिंह	"	" ३३७
१४३३	" रामछबीले सिंह	"	" ४०१
१४३४	" गोवर्धनदत्त शुक्ल	"	तृतीय श्रेणी ३०९
१४३५	" रामअधार सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३४६
१४३६	" प्रसिद्धनारायण सिंह	"	" ३५५
१४३८	" हलीनालाल	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१४३९	" गुलाम हसन	"	"
१४४०	" वजरंगीलाल	"	द्वितीय श्रेणी ३८८
१४४१	" हीरासिंह	शिकारपुर	तृतीय श्रेणी २८९
१४४५	" महावीर सिंह	शिकोहाबाद	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४४६	श्री रामगोपाल	शिकोहाबाद	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१४४७	" राजेन्द्रसिंह	"	"
१४४८	" कुं० लल्लूसिंह	"	"
१४४९	" ज्ञानेन्द्रप्रकाश कुलश्रेष्ठ	"	"
१४५४	" सुबोधनारायण सिंह	सड्डीहा	"
१४५५	" प्रबोधनारायण सिंह	"	"
१४५६	" नित्यानन्द सिंह	"	"
१४६२	" शिवदयाल श्रीवास्तव	सतना	"
१४६३	" हनुमान प्रसाद	"	"
१४६४	" सुमेश्वरसिंह	समोगर	"
१४६५	" केशवप्रसाद	"	तृतीय श्रेणी २९०
१४६८	" गौरीशंकर राव	"	" २७१
१४७०	" रामजीतन सिंह	"	" २६१
१४७५	" बुद्धमल	सरदार शहर	" २८८
१४७७	" राधाकृष्ण	"	" २८७
१४७८	" रामयश	"	द्वितीय श्रेणी ३२२
१४८०	" रामलाल	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१४८२	श्री गंगादत्त मिश्र	सरदार शहर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१४८४	,, उदैराम शर्मा	,,	,,
१४८७	,, गणेशप्रसाद मिश्र	सलकिया	,,
१४८८	,, परमहंस पाठक	,,	,,
१४९०	,, रामाधार सिंह	,,	,,
१४९१	,, दिग्गजराम यादव	,,	,,
१४९२	,, गुनीलाल चौधरी	,,	,,
१४९३	,, मनोहरलाल अग्रवाल	,,	,,
१४९४	,, बेनीमाधव सिंह	,,	,,
१४९६	,, श्रद्धानन्दसिंह	,,	,,
१४९७	,, रामकृष्ण गुप्त	,,	,,
१४९८	,, देवधारीप्रसाद वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३४४
१४९९	,, कपिलदेव सिंह	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५००	,, विष्णुलाल कनोडिया	,,	,,
१५०२	,, हरिनाथप्रसाद वाजपेयी	,,	,,
१५०३	,, श्यामलाल अग्रवाल	,,	,,
१५०५	,, राजनलाल शर्मा	सहपऊ	तृतीय श्रेणी २९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५०६	श्री कैलाश चन्द्र	सहपऊ	तृतीय श्रेणी २७५
१५०७	,, सन्तकुमार जैन	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५०८	,, रणवीर सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २८१
१५०९	,, अशर्फी मंडल	सहसी	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५११	,, बलदेवप्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २९७
१५१३	,, अवधेश्वरप्रसाद सिंह	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५१४	,, रघुनी साहू	,,	,,
१५१६	,, नर्मदाबाई देसाई	सागर (म्यू० हा० स्कूल)	,,
१५१९	,, कालीशंकर लाल	सारनाथ	,,
१५२०	,, जंगबहादुर पाठक	,,	,,
१५२१	,, मिट्ठनलाल गोविल	सिकन्द्राबाद	द्वितीय श्रेणी ३६०
१५२४	,, सूरजप्रसाद जाजू	सिकन्द्राराऊ	,, ३१५
१५२६	,, रघुराज सिंह	,,	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार
१५३२	,, रामप्रकाश सक्सेना	,,	,,
१५३३	,, चन्द्रपाल गुप्ता	,,	,,
१५३५	,, धनीराम श्रीवास्तव	,,	,,
१५३६	,, श्यामपुरारी सक्सेना	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५३७	श्री सूरजपाल	सिकन्दराराऊ	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५३८	" शेषनारायण तिवारी	सिंगरामऊ	द्वितीय श्रेणी ३७६
१५३९	" शिवनाथ सिंह	"	" ३७४
१५४०	" जानकीप्रसाद गुप्ता	"	" ३७८
१५४१	" राजेन्द्रनारायण सिंह	"	तृतीय श्रेणी २९१
१५४२	" हीरामणि मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ३५१
१५४३	" संतप्रकाश सिंह	"	" ३२७
१५४४	" रमाशंकर सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३०६
१५४५	" भगवानशंकर सिंह	"	" २७५
१५४६	" चन्द्रदेव सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३६६
१५४७	" रामबरन मिश्र	"	प्रथम श्रेणी ४३६
१५४९	" अनरुद्ध सिंह	"	तृतीय श्रेणी २९८
१५५०	" राजदेव तिवारी	"	द्वितीय श्रेणी ३४० [वि० यो० गणि०]
१५५१	" तीर्थराज उपाध्याय	"	द्वितीय श्रेणी ४१७ [वि० यो० इति०]
१५५२	" राजाराम यादव	"	द्वितीय श्रेणी ३९१
१५५४	" रामसुमेर पाण्डेय	"	तृतीय श्रेणी २९१
१५५५	" रामचन्द्र सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५५८	श्री जंगीराम दुबे	सिरसा (प्रयाग)	द्वितीय श्रेणी ३३४
१५६०	" अनवरसिंह	सिरसागंज	अध्याय ३ नि० ३ के अनुसार
१५६१	" निहालसिंह	"	"
१५६२	" केदारनाथ	"	"
१५६३	श्रीमती ओ३म् प्रभावती	"	तृतीय श्रेणी २४७
१५६६	श्री छेदालाल	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५६८	" सनतकुमार	सिलचर	"
१५६९	" मुसाफिर तिवारी	"	तृतीय श्रेणी २८६
१५७०	" दत्तात्रय मिश्र	"	" २८२
१५७१	श्रीमती अतुलादेवी	सीतापुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१५७७	श्री पुण्यदेव मिश्र	सीवान	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५७८	" बाबूराम पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ३५२
१५७९	" रनविजयकुमार अस्थाना	"	तृतीय श्रेणी ३११
१५८०	" हरेन्द्रनारायण वर्मा	"	" ३०६
१५८१	" जाकिर हुसेन	"	द्वितीय श्रेणी ३३०
१५८२	श्रीमती लक्ष्मीदेवी	"	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५८३	श्री उदयलाल शर्मा	सुखेड़ा	तृतीय श्रेणी ३०३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१५८६	श्री मुरलीसिंह	सुखेड़ा	तृतीय श्रेणी २६५
१५८८	श्रीमती शान्ताकुमारी	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५८९	,, राधिका देवी	सुरही	द्वितीय श्रेणी ३८७
१५९०	श्री कान्तराय	,,	तृतीय श्रेणी २९९
१५९१	,, धर्मवीर राय	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१५९२	,, सर्वजीतराय	,,	,,
१५९३	,, शिवकुमार राय	,,	,,
१५९६	,, रामसूरतसिंह	सुल्तानपुर	तृतीय श्रेणी ३०१
१५९८	,, ब्रजनाथ यादव	,,	द्वितीय श्रेणी ३७०
१६०५	श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी	सुहवल	तृतीय श्रेणी २७०
१६१४	श्री द्वारिकाप्रसाद सिंह	सेवदह	द्वितीय श्रेणी ४०१
१६१८	,, त्रिवेणीसिंह	,,	तृतीय श्रेणी २४४
१६२०	,, रामवरणसिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६२३	,, रामलखनसिंह	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१६२७	,, दिनेशचंद्र बागची	सोनाली	,,
१६२८	,, श्यामनारायण सिंह	,,	,,
१६२९	,, नित्यानन्द ठाकुर	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६३०	श्री अनन्तलाल गोप	सोनाली	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१६३१	,, यमुनाप्रसाद मंडल	,,	,,
१६३२	,, भोलानाथ सिंह	,,	,,
१६३३	,, परमेश्वरी मंडल	,,	,,
१६३४	,, बनारसीलाल विश्वास	,,	,,
१६३५	,, कृष्णमोहन झा	,,	,,
१६३६	,, मुक्तिनाथ झा	,,	,,
१६४१	,, लक्ष्मीनारायण शर्मा	संगरिया	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६४२	,, रामनारायण	,,	द्वितीय श्रेणी ३४२
१६४३	,, वंशीधर	,,	,, ३४८
१६४५	,, किशनलाल गार्गव	हरदा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१६४६	,, कालूराम	,,	,,
१६४७	,, रामव्यास	,,	,,
१६४९	,, शिवनारायण शुक्ल	,,	,,
१६५०	,, रविशंकर पाण्डेय	,,	,,
१६५१	,, श्याम बिहारीलाल	हरदी	तृतीय श्रेणी २४६
१६५२	,, बजरंग बहादुरसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६५६	श्री रामचन्द्रप्रसाद	इवेली खड़गपुर	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१६५८	,, गुलाबसिंह राजपूत	हाथरस	तृतीय श्रेणी ३०२
१६५९	,, रघुवरदयाल जैन	,,	द्वितीय श्रेणी ४१४
१६६१	,, नौनिहाल सिंह	,,	,, ३२५
१६६२	श्रीमती भगवान देबी	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१६६३	श्री रामेश्वरदयाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४०३
१६६४	,, रामजीलाल	,,	प्रथम श्रेणी ४५७ [वि० यो० भूगो०]
१६६५	श्री शकुन्तला देवी	हापुड़	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१६६७	श्री ओ३म्प्रकाश शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३३३
१६६९	,, हरिशंकर शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी २९१
१६७१	,, गणेश तिवारी	हुगली	,, २८२
१६७२	,, गणेशदत्त शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३८८
१६७३	,, रामदीप गिरी	,,	,, ३३१
१६७५	,, धर्मदेव यति	,,	तृतीय श्रेणी २८७
१६७८	,, रामेश्वरप्रसाद सिनहा	हुसेनगंज	,, २८१
१६७९	,, अयोध्याप्रसाद वर्मा	,,	,, २९६
१६८०	,, शुकदेवसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३७२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१६८१	श्री भागवतप्रसाद श्रीवास्तव	हुसेनगञ्ज	तृतीय श्रेणी २९५
१६८३	,, केवलराम	हैदराबाद (धन्व० वि०)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१६८६	,, राजनारायण	होलीपुरा	,,
१६८८	,, नेमीचन्द गुप्त	,,	,,
१६९०	,, प्यारेलाल शर्मा	,,	,,
१६९२	,, सोहनलाल गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी २७७
१६९४	,, हुब्बलाल चतुर्वेदी	,,	,, २९८
१६९६	,, भोलानाथ	,,	,, २३४
१६९७	,, परमेश्वरीदास	,,	,, २६१
१६९९	,, बचाराम	हंडिया	,, २७९
१७००	,, लाल बहादुर सिंह	,,	,, २७२
१७०२	,, अशर्फीलाल	,,	,, ३१२
१७०३	,, काशीप्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३२३
१७०४	,, शिवधारी सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१७०५	श्रीमती श्यामकुमारी देवी प्रधान	,,	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१७०६	,, सरस्वती देवी श्रीवास्तव	,,	,,
१७०७	श्री इन्द्रनारायण	,,	तृतीय श्रेणी २५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१७०९	श्री हरिनाथ पाण्डेय	हँडिया	तृतीय श्रेणी २६६
१७१०	,, सेहत बहादुरसिंह	,,	तृतीय श्रेणी २९५
१७११	,, रमाकान्त	,,	,, २८६
१७१३	,, राधाकान्त पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३१६
१७१५	,, केदारनाथ पाण्डेय	,,	तृतीय श्रेणी ३१२
१७१६	,, दातादीन	,,	द्वितीय श्रेणी ३८०
१७१७	,, रघुनाथप्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी २६०
१७१८	,, हीरालाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३५८
१७२१	,, नागेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव	,,	तृतीय श्रेणी २६१
१७२२	,, रामदेव मिश्र	,,	,, २९८
१७२३	,, ओंकारनाथ पांडेय	,,	,, २६५
१७२५	,, कामतासिंह	,,	,, ३०१
१७२६	,, राजाराम त्रिपाठी	,,	प्रथम श्रेणी ४३७
१७२९	,, जगदीश स्वरूप	नानपारा	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१७३०	,, श्यामलाल	,,	,,
१७३२	,, यदुनन्दनप्रसादसिंह	बहदुरा	,,
१७३३	,, कृष्णवल्लभ सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१७३५	श्री अर्जुनलाल दास	रानीगंज (पूर्णियां)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१७३६	" सहदेवप्रसाद	"	"
१७३७	" रामव्रत सिंह	"	"
१७३८	" रामकृष्ण नायक	"	"
१७४१	" जनकलाल सिंह यादव	"	"
१७४२	" शहादत अली	दबोह	"
१७४४	" हरिहर ठाकुर	भवानीपुर	द्वितीय श्रेणी ३४४
१७४५	" विश्वनाथ बहादुर	मुजफ्फरपुर (सुहृदसंघ)	तृतीय श्रेणी २८९
१७४७	" भीलचन्द्र गुप्त	धार	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१७४८	" बलराम	संगरिया	तृतीय श्रेणी २९३
१७४९	" शिव प्रताप सिंह	बम्बई (मारवाड़ी वि०)	अध्याय ३ नियम ३ के अनुसार
१७५०	" रामस्वरूप सिंह	"	"

मुनीमी परीक्षा

५	श्री पदमचन्द खजानची	ओसियाँ	द्वितीय श्रेणी १६७
११	" चार्ल्सचांदा	नसीराबाद	अध्याय ७ नियम ६ के अनुसार
१२	" सूरजप्रसाद शर्मा	"	"
१४	" माताप्रसाद	प्रयाग	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१५	श्री महावीर गौड़	ब्यावर	द्वितीय श्रेणी १७९
१६	" रतनलाल	"	प्रथम श्रेणी २३१
१८	" गोकुलचन्द्र	"	तृतीय श्रेणी १५२
२०	" उम्मेदसिंह	"	द्वितीय श्रेणी २१०
२१	" रतनलाल	"	" १७०
२२	" यशवन्त सिंह	"	" १६८
२३	" मदनलाल	"	" १६८
२४	" धनराज	"	" १६७
२५	" मदनसिंह गोखरू	"	प्रथम श्रेणी २२० [वि० यो० गणि०]
३२	" लादूराम सोमानी	मौलासर	द्वितीय श्रेणी १७०
३५	" बद्रीप्रसाद	रतनगढ़	अध्याय ७ नियम ६ के अनुसार
४१	" बसन्तीलाल	सुखेड़ा	द्वितीय श्रेणी १९३

दयाशङ्कर दुबे एम० ए०
परीक्षा मंत्री
हिन्दी विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत् १९९७ (सन् १९४०) की पदक सूची

संवत् १९९७ (सन् १९४०) की परीक्षाओं के परिणाम के अनुसार निम्नलिखित परीक्षार्थियों को पदक दिये जायंगे—

उत्तमा परीक्षा

श्रीधर पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ५७५ श्री प्रेमनारायण शुक्ल, केन्द्र—कानपुर (सनातन धर्म कालेज)।

मोहनलाल चौबे पदक (रौप्य)—क्रम सं० १०३ श्री मागीलाल जैन, केन्द्र—इन्दौर।

मध्यमा परीक्षा

भट्ट पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० १९०० श्री चन्द्रचूड़मणि त्रिपाठी, केन्द्र—सुलतानपुर।

मध्य भारत हिन्दी सा० स० पदक (रौप्य)—क्रम सं० १३५ श्री कैलाशनारायण चौधरी, केन्द्र—इन्दौर।

श्री भगवानदेवी बाजोरिया पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० १५७० श्रीमती सरस्वती देवी, केन्द्र—मोरसंड।

आगरा नागरी प्र० सभा पदक (रौप्य)—क्रम सं० ६९ श्री प्रकाश सक्सेना, केन्द्र—आगरा।

विजयेन्द्र पदक (रौप्य)—क्रम सं० १६१४ श्री गोकुलप्रसाद त्रिपाठी, केन्द्र—राजगढ़।

त्रिलोकीनाथ वर्मा पदक (रौप्य)—क्रम सं० ६९ श्री प्रकाश सक्सेना, केन्द्र—आगरा।

भारतेन्दु पदक (रौप्य)—क्रम सं० ५६८ श्री टीकमचन्द्र जैन, केन्द्र—कोटा।

प्रथमा परीक्षा

पूर्ण पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ५३४ श्री बलवन्तसिंह, केन्द्र—डिबाई।

शिवदेवी पदक (रौप्य)—" ९५ श्री कन्हैयालाल यादव, " इन्दौर।

विजयेन्द्र " " " १३३० श्री चैनसिंह, " राजगढ़।

हनुमन्त पदक , " ५७ श्री रामबाबू, , आगरा।

भारतेन्दु " " " ३२५ श्री मगनलाल ओराठौड़, केन्द्र—कोटा।

वैद्य विशारद परीक्षा

आयुर्वेद प्रचारिणी सभा पदक (रौप्य)—क्रम सं० ५९ श्री शिवसिंहासन मिश्र, केन्द्र—पांचाली।

दयाशङ्कर दुबे, परीक्षामंत्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी विश्वविद्यालय

की

संवत् १९९७ की परीक्षाएँ

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य भिन्न भिन्न उपायों से सर्वमान्य राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करना और उसके साहित्य को सब प्रकार से समुन्नत करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सम्मेलन द्वारा संस्थापित हिन्दी विश्वविद्यालय की ओर से उत्तमा, मध्यमा, प्रथमा, वैद्य विशारद, कृषि विशारद, शीघ्रलिपि विशारद, मुनीमी, आरायजनवीसी और राष्ट्रभाषा प्रचार इत्यादि परीक्षाएँ ली जाती हैं। उत्तमा और मध्यमा परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को क्रमशः 'रत्न' और 'विशारद' की उपाधियाँ दी जाती हैं। इन परीक्षाओं की एक विशेषता यह है कि ये हिन्दी माध्यम द्वारा ही ली जाती हैं। अतः अँग्रेजी न जानने वाले व्यक्तियों को भी इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर अपनी योग्यता बढ़ाने का सुअवसर प्राप्त होता है।

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं की व्यवस्था परीक्षासमिति की उपसमिति द्वारा वर्धा से होती है। इन परीक्षाओं तथा शीघ्रलिपि की परीक्षा को छोड़कर इस वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन की समस्त परीक्षाएँ ता० ९ नवम्बर सन् १९४० को आरम्भ होकर ता० २० नवम्बर सन् १९४० को समाप्त हुईं। परीक्षाफल पर विचार करने के लिए हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद की बैठक ता० २३ फरवरी को हुई। मध्यमा और उत्तमा परीक्षाओं के कुछ परीक्षकों से उनकी अस्वस्थता के कारण परीक्षाफल हमें अधिक विलम्ब से प्राप्त हुआ। अतः उसे हम क्रमशः ता० २५ फरवरी और ता० ४ मार्च को पत्रों में प्रकाशित कर सके। राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं को छोड़कर संवत् १९९६ में सम्मेलन परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या ३१७५ थी। इस वर्ष (संवत् १९९७) के परीक्षार्थियों की संख्या ३९६१ रही। गत वर्ष परीक्षा शुल्क की आय १७८१४) थी। इस वर्ष शुल्क की आय १८२१५) रही। संवत् १९८२ तक तो कुछ न कुछ वृद्धि होती रही किन्तु संवत् १९८३ से परीक्षार्थियों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। संवत् १९८३ से लगातार सं० १९९७ तक के परीक्षार्थियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की संख्या हम नीचे दे रहे हैं। इससे पाठकों को परीक्षाओं की प्रगति का ज्ञान भली भाँति हो जायगा:—

परीक्षार्थियों की संख्या

संवत्	जिनके आवेदनपत्र आये	जो सम्मिलित हुए
१९८३	१५५६	१०३५
१९८४	२०५६	१३२६
१९८५	२३६६	१४३५
१९८६	२४५८	१६९२
१९८७	१७८३	१२६९
१९८८	१४७१	११६६
१९८९	१३७०	१११६
१९९०	१४१९	१२३१
१९९१	१५३५	१३१८
१९९२	१६५९	१४४९
१९९३	२०४७	१७७३
१९९४	२५२४	२०२८
१९९५	३००९	२४१७
१९९६	३९६१	३१७५
१९९७	४३५८	३५१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कोष्टक के देखने से स्पष्ट है कि परीक्षार्थियों की संख्या और परीक्षा शुल्क में जैसी वृद्धि संवत् १९९७ में हुई है वैसी सम्मेलन के इतिहास में कभी नहीं हुई। इसका मुख्य कारण यह है कि सम्मेलन परीक्षाओं के प्रचार के लिए इस वर्ष सब प्रकार के उपायों से उद्योग किया गया है। इस कार्य में हिन्दी समाचारपत्रों के सम्पादकों ने भी गतवर्ष से अधिक हमारी सहायता की। परीक्षा विभाग से जो सूचनाएँ प्रकाशनार्थ उनके पास भेजी गईं उन्होंने अपने पत्र में उन्हें सहर्ष स्थान देने की कृपा की। इस कृपा के लिए सम्मेलन की ओर से हम उन्हें अनेक धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि वे इसी प्रकार की कृपा भविष्य में करते रहेंगे।

संवत् १९९७ में ४३५८ परीक्षार्थियों में से ३५१४ परीक्षाओं में सम्मिलित हुए और २३२७ उत्तीर्ण हुए। विभिन्न परीक्षाओं के परीक्षार्थियों की संख्या नीचे लिखे अनुसार थी :—

परीक्षा	आवेदन पत्र आये	सम्मिलित हुए	उत्तीर्ण	प्रतिशत
उत्तमा	४१०	२९७	२१७	७३
मध्यमा	२०४०	१५८०	१०३५	६५
प्रथमा	१७५१	१५००	१०२५	६८
वैद्य विशारद	९७	९०	२२	२४
कृषि विशारद	१५	१३	१२	९२
मुनीमी	४२	३१	१६	५०
आरायज़ नवीसी	३	२	×	×
	४३५८	३५१४	२३२७	६६

सब परीक्षाओं में मिला कर इस वर्ष ६६ प्रतिशत परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। परीक्षाओं के स्टैण्डर्ड को ऊँचा रखते हुए जितना उत्तम परीक्षाफल गत पाँच वर्षों से हो रहा है उतना पिछले वर्षों में कभी नहीं रहा। इसका मुख्य कारण केवल यही है कि गत वर्षों से परीक्षाओं के प्रचार के लिए प्रत्येक उपाय से प्रयत्न किया जा रहा है। उत्तमा परीक्षा में भी जितने अधिक परीक्षार्थी गत चार वर्षों से सम्मिलित हो रहे हैं और जितना अच्छा परीक्षाफल गत चार वर्षों से हो रहा है उतना कभी नहीं हुआ। सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा यू० पी० के इन्टर-मीजिएट बोर्ड द्वारा सम्मानित हो चुकी है। अर्थात् मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी यू० पी० बोर्ड की हाई स्कूल परीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल अँग्रेज़ी विषय लेकर दे सकेंगे। बिहार सरकार ने सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा को हाई स्कूल के बराबर, मध्यमा को इंटर के बराबर और उत्तमा परीक्षा को बी० ए० के बराबर स्वीकार कर लिया है। अर्थात् बिहार सरकार सरकारी नौकरियों में जो सुविधाएँ हाई स्कूल, इण्टर और बी० ए० परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को देती है वे ही सुविधाएँ वह क्रमशः सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को देगी। मध्य प्रान्त की सरकार, जोधपुर दरबार तथा झालावाड़ और छतरपुर राज्यों ने भी सम्मेलन परीक्षाओं में उत्तीर्ण अध्यापकों के वेतन में वृद्धि करने का निश्चय किया है। हमें आशा है कि राजपूताना बोर्ड और अन्य देशी राज्यों से भी इसी प्रकार की सुविधाएँ शीघ्र मिलेंगी। अतः परीक्षार्थियों को अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होकर सम्मेलन परीक्षाओं के प्रचार कार्य में हमारा हाथ बँटाना चाहिये।

उत्तमा परीक्षा के भारतवर्ष भर में १३ केन्द्र हैं। आगरा, इन्दौर, कलकत्ता, जबलपुर (राबर्टसन कालेज), काशी, कानपुर (एस० डी० कालेज), पटना, प्रयाग, लखनऊ, लाहौर, वर्धा और विजगापाटम। आगरा तथा इन्दौर में तो परीक्षार्थियों की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध पहिले ही से था। पिछले पांच वर्षों से प्रयाग में भी परीक्षा के दिनों में परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए भिन्न-भिन्न विषयों के व्याख्यान कराये जाते हैं।

उत्तमा परीक्षा में पहिले निबन्ध लिखने का प्रतिबन्ध था। संवत् १९८४ से यह प्रतिबन्ध हटा दिया गया है। संवत् १९८४ तक केवल वे ही परीक्षार्थी इस परीक्षा में सम्मिलित हो सकते थे जो सम्मेलन की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण होते थे। अब उन परीक्षार्थियों को भी इस परीक्षा में सम्मिलित होने का अधिकार दिया जाता है जो भारतीय विश्वविद्यालयों से हिन्दी लेकर बी० ए० अथवा किसी भी विषय में एम० ए०, एम० एस-सी०, संस्कृत कालेज काशी की आचार्य और पञ्जाब की हिन्दी प्रभाकर, हिन्दी विद्यापीठ देवघर की साहित्य भूषण, आन्ध्र विश्व विद्यालय की भाषा प्रवीण तथा मद्रास विश्वविद्यालय की विद्वान परीक्षाएं उत्तीर्ण होते हैं। अतः इस सुविधा के कारण परीक्षार्थियों की संख्या में और भी वृद्धि हो गई है। हम उत्तमा परीक्षा का स्टैण्डर्ड ऊँचा बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। युक्तप्रांत की सरकार द्वारा उसे एम० ए० के बराबर स्वीकार किये जाने के लिये प्रयत्न जारी है। नीचे दिये हुए अङ्कों से पाठकों को विदित होगा कि गत १३ वर्षों से उत्तमा परीक्षा के परी-

२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रार्थियों की संख्या में किस प्रकार वृद्धि हुई है।

सम्वत्	परीक्षार्थियों की संख्या
१९८४	३२
१९८५	२९
१९८६	५४
१९८७	२५
१९८८	३७
१९८९	४१
१९८९	३८
१९९०	४८
१९९१	७३
१९९२	७३
१९९३	९४
१९९४	११०
१९९५	२११
१९९६	३३७
१९९७	४१०

परीक्षा केन्द्रोंकी संख्या में भी बराबर वृद्धि हो रही है। संवत् १९८४ से लगाकर संवत् १९९७ तक में परीक्षा केन्द्रों की संख्या में क्रमशः जो वृद्धि हुई है उसकी तालिका नीचे दी गई है :—

संवत्	केन्द्रों की संख्या
१९८४	१९०
१९८५	२२०
१९८६	२८०
१९८७	२७२
१९८८	२६७
१९८९	२५५
१९९०	२५१
१९९१	२५७
१९९२	२५६
१९९३	४१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९९४	५३४
१९९५	५३२
१९९६	५१४
१९९७	५२०

इस वर्ष केन्द्रों की संख्या और भी अधिक होती, यदि वे ४८ केन्द्र न तोड़ दिये गये होते जिनमें गत दो वर्षों से पाँच से कम विद्यार्थी सम्मिलित हुए हैं।

प्रत्येक प्रान्त के अनुसार इस समय परीक्षा केन्द्रों की संख्या नीचे लिखे अनुसार है :—

संयुक्त प्रान्त	२०३	केन्द्र
बिहार	१३६	"
मध्य प्रान्त	४१	"
बंगाल	७	"
मद्रास	६	"
आसाम	१	"
ब्रह्मा	२	"
पञ्जाब	६	"
बम्बई	४	"

मध्य भारत

इन्दौर राज्य	४०	"
ग्वालियर राज्य	१९	"
बड़नगर, रीवां और भोपाल	१०	"

राजपूताना

बीकानेर राज्य	९	"
जयपुर राज्य	९	"
झालावाड़	३	"
अन्य राज्य	२४	"

केन्द्रों की तालिका से स्पष्ट है कि अभी भारत के कई प्रान्त और देशी राज्यों में सम्मेलन परीक्षाओं के केन्द्र स्थापित कर उनके प्रचार की बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है। यह तभी हो सकता है जब भिन्न-भिन्न प्रान्तों के हिन्दी प्रेमी सज्जन इस कार्य में हमारी यथेष्ट सहायता करें। इस वर्ष के लिये नवीन केन्द्र स्थापित कराने की अन्तिम तिथि ३१ जुलाई सन् १९४१ है। जो सज्जन सम्मेलन परीक्षाओं के इस प्रचार कार्य में हमारी सहायता करना चाहते हैं वे यथासम्भव शीघ्र ही हमें लिखकर केन्द्र स्थापना के लिए आवेदन-पत्र का फार्म मँगा लें। यहाँ हम यह भी लिख देना आवश्यक समझते हैं कि सम्मेलन परीक्षाओं के केन्द्र अब किसी प्रतिष्ठित स्कूल या कालेज में उसके प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में ही स्थापित किये जाते हैं। अतः आवेदन-पत्र का फ़ार्म भरते समय प्रार्थियों को इसका ध्यान रखना चाहिये।

परीक्षा केन्द्रों का सञ्चालन और उनकी सुव्यवस्था केन्द्र व्यवस्थापकों की कार्य तत्परता पर ही निर्भर रहती है। पाठकों से यह छिपा नहीं है कि व्यवस्थापकों का कार्य कितना महत्वपूर्ण होता है। प्रश्नपत्रों को परीक्षा-भवन में ठीक समय में खोलना, उत्तर पुस्तकों को समयानुसार यथास्थान भेजना और परीक्षा-भवन में परीक्षार्थियों को अनुचित सहायता न लेने देना व्यवस्थापक के मुख्य कर्तव्य हैं। मुझे यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि हमारे व्यवस्थापकों ने अपने उत्तरदायित्व को भली भाँति निबाहा है। इसके लिए मैं उन्हें परीक्षा समिति की ओर से अनेक धन्यवाद देता हूँ।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी ८० केन्द्रों में निरीक्षक भेजकर परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण कराया गया था। जिन केन्द्रों में त्रुटियाँ पाई गई थीं वे परीक्षा समिति के आदेशानुसार तोड़ दिये गये हैं।

हमारे परीक्षकों ने भी बड़ी तत्परता और लगन के साथ इस वर्ष हमारी सहायता की है। परीक्षक का कार्य कितना उत्तरदायित्व पूर्ण, कठिन और नीरस होता है उसे वे ही सज्जन जानते हैं जिन्होंने कभी इस कार्य को किया है। हमारे परीक्षकों ने अवैतनिक रूप से जिस तत्परता और लगन के साथ हमारी सहायता की है उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं और परीक्षा समिति की ओर से उन्हें अनेक धन्यवाद देते हैं। इस वर्ष भारतवर्ष का इतिहास भाग १ और २ नामक दो पुस्तकें प्रत्येक परीक्षक को भेंट रूप में दी गई हैं। कुछ परीक्षकों ने अपनी रिपोर्ट में परीक्षार्थियों का ध्यान कुछ ख़ास ख़ास बातों की ओर आकर्षित किया है। परीक्षार्थियों की सुविधा और जानकारी के लिए हम उनका सारांश इसी पत्रिका में प्रकाशित कर रहे हैं। उसे हम यथा सम्भव शीघ्र ही पत्रों में भी प्रकाशित करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन की ओर से हिन्दी विद्यापीठ में पढ़ाई की व्यवस्था

सर्व साधारण को सूचित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष होता है कि महेवा-विद्यापीठ, प्रयाग, महेवा के प्रसिद्ध आश्रम में गत वर्ष से पुनः खुल गया है। यह आश्रम ६० एकड़ भूमि में यमुना नदी के दाहिने किनारे पर अवस्थित है। इसकी प्राकृतिक छटा अत्यन्त मनोहर एवं दर्शनीय है। उपाध्यायों तथा विद्यार्थियों के रहने के लिए सुन्दर आवास बने हुये हैं। यहाँ प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तमा तीनों परीक्षाओं की पढ़ाई का प्रबन्ध है। विद्यार्थियों के लिए केवल निःशुल्क शिक्षा तथा छात्रावास का प्रबन्ध हैं। अभी विद्यापीठ के पास इतना द्रव्य नहीं है कि वह विद्यार्थियों को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता और छात्रवृत्ति आदि दे सके। अतः भोजनादि तथा अन्य सब आवश्यक व्यय उन्हें अपने पास से ही करना होता है। विद्यार्थियों को चाहिये कि वे सम्मेलन द्वारा दी गई इस सुविधा से लाभ उठावें।

दयाशङ्कर दुबे एम० ए०, एल० एल० बी०
परीक्षा मन्त्री
हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी विश्वविद्यालय
के
परीक्षकों के वक्तव्यों का सारांश

उत्तमा (हिन्दी साहित्य)

पाठ्य पुस्तकों का गम्भीर अध्ययन होना चाहिये। समालोचनात्मक प्रश्नों के लिए आनुषंगिक ग्रन्थों को पढ़ना और स्वयं समीक्षात्मक दृष्टि से विचार करना आवश्यक है। भाषा दोष और प्रयोग शैथिल्य तो 'रत्न' के परीक्षार्थियों के लिए कलंक हैं। प्रान्तीय दोष, व्याकरण दोष, वर्णानुक्रम की अशुद्धि आदि अनेक विचित्र दोष भरे पड़े हैं। इनको सुधारने का प्रयत्न होना चाहिये।

उत्तर के कलेवर वृद्धि की ओर अधिक ध्यान न होकर संयत भाषा तथा सुसम्बद्ध विचारों की ओर परीक्षार्थियों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट किया जाना चाहिये।

वाक्य विन्यास और शब्दों के उचित प्रयोग की ओर भी विद्यार्थियों को ध्यान देना चाहिये।

व्याकरण तथा हिज्जे की अशुद्धियां अधिक हैं जो उत्तमा परीक्षा के परीक्षार्थियों के लिए क्षम्य नहीं हैं। कुछ अशुद्धियों के नमूने—पूर्वात्य (प्राच्य के बदले), परवतेश्वर, संसकृति, वातावर्ण, संक्षेपता (संक्षेपतः), वर्णात्मक (वर्णनात्मक), अतयन्त (अत्यन्त), परिश्रकृत (परिष्कृत), भारती (भारतीय), प्रशन्न (प्रसन्न), कारन (कारण)। उत्तर लिखने का अभ्यास बहुत कम किया गया है। इससे उत्तर का ढंग, भाषा, विचारों का सम्बन्ध इत्यादि बातें बहुत दोष युक्त हैं। सबसे कम ध्यान लिपि की स्पष्टता पर दिया गया है।

निबन्ध में विचारों का क्रम विन्यास होना चाहिये। लेख लिख कर उसका पुनः पारायण करने से अशुद्धियां कम रह जाती हैं। भाषा को प्रान्तीय प्रयोगों से बचाकर उसकी विशुद्धता का ध्यान रखा जाय तो अङ्क अधिक मिल सकते हैं।

मध्यमा परीक्षा

साहित्य १—(१) लिखने की अशुद्धियां विशेषकर 'ने' विभक्ति का दुष्प्रयोग, व और ब का अविचार तथा विराम चिन्हों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अभाव मध्यमा के परीक्षार्थियों के लिए अल्पज्ञता सूचित करती है।

(२) समालोचनात्मक प्रश्नों का सम्यक ज्ञान विद्यार्थी नहीं रखते। उन्हें पूर्ण अध्ययन के पश्चात् परीक्षा में सम्मिलित होना चाहिये।

(३) अर्थ लिखने में यदि संदर्भ, अर्थ और साहित्यिक विशेषता का अवतरण अलग-अलग रक्खा जाय तो अधिक आकर्षक होगा। सम्मिश्रण से अल्पज्ञता प्रदर्शित होती है।

(४) परीक्षार्थी पदों का विभाजन नहीं करते। मुहावरों और शब्दों का प्रयोग एवं वाक्य विन्यास संबंधी त्रुटियां अधिकांश परीक्षार्थियों ने की थीं। व ब और श तथा ष में बहुत से परीक्षार्थी अन्तर नहीं जानते।

साहित्य २—बहुत कम परीक्षार्थियों के उत्तर उच्च श्रेणी के थे। आलोचनात्मक ढङ्ग के प्रश्न विशेष संतोषजनक नहीं किये गये। लिखने का अभ्यास अधिक होना चाहिये। व्याकरण व भाषा सम्बन्धी त्रुटियों पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है। 'कहानी कला' और 'कहानी की विशेषताओं' का अर्थ एक ही समझा गया। उत्तर लिखने में निरर्थक विस्तार न बढ़ाना चाहिये। कविताओं के उद्धरण ठीक और शुद्ध होना वांछित है। वे अपूर्ण और अशुद्ध न होने चाहिये। दृढ़ के स्थान पर ढड़, कवी (कवि), गद्ध (गद्य) इत्यादि अशुद्धियां अत्यंत निन्दनीय हैं। विराम चिह्नों का उचित उपयोग भी आवश्यक है। अनुस्वार और ब, व का भी ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

साहित्य ३—भाषा हिन्दी होनी चाहिये। इसमें ग्रामीण भाषा का सम्मिश्रण नहीं होना चाहिये। उद्देश्य के साथ क्रिया का ध्यान रहना चाहिये। उर्दू शब्दों का प्रयोग अधिक विद्यार्थियों ने किया है। परीक्षार्थी अधिक लिखने के लिए लालायित न हों वरन जितना पूछा जावे उतना ही लिखें। यह अभ्यास से हो सकता है।

ये लोग अनुवाद·········शुरू किये। आप·······

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा किये। वे भी·········उल्लेख किया है। बहुत से पत्रिका निकली। इन त्रुटियों के कारण व्याकरण के ज्ञान का अभाव ही कहा जा सकता है इससे भाषा में विकार आ जाता है। विशेष ध्यान की आवश्यकता है।

साहित्य ४—(१) जबतक हिन्दी संस्कृत का शब्द प्राप्य हो तब तक फ़ारसी आदि शब्दों को त्याज्य ही समझना चाहिये।

(२) वाक्य छोटे-छोटे गठे हुए नहीं हैं। इसका प्रयोग सीखना चाहिये।

(३) लम्बी और निरर्थक भूमिका न बांध कर तुरन्त ही विषय पर आना चाहिए।

(४) जिस विषय पर लेख लिखना अभीष्ट है उसे भली प्रकार समझ लेना चाहिये। मातृ भाषा पर लिखते लिखते हिन्दी की राष्ट्रीयता पर कूद जाना अवांछनीय है।

इतिहास—पाठ्यक्रम में दी हुई इतिहास की पुस्तकों का ठीक-ठीक ज्ञान होना चाहिये। परीक्षार्थियों को इतिहास का अध्ययन इस दृष्टि से करना चाहिये कि वे पढ़ी हुई घटनाओं के विषय में अपना एक स्वयं मत अथवा विचार स्थिर कर सकें।

योरोप के इतिहास की परीक्षार्थियों को उचित जानकारी नहीं थी। भारतीय इतिहास के उत्तर भी संतोषप्रद नहीं थे।

परीक्षार्थियों को परीक्षक से किसी प्रकार का निवेदन नहीं करना चाहिये एक परीक्षार्थी ने लिखा है कि "जीवन सफल होने के कर्णधार केवल एक आप हैं। आपकी कृपा होगी तो मैं पार हो जाऊंगा......मैं गरीब शिक्षक ब्राह्मण हूँ और बीमारी से केवल यही एक पेपर बिगड़ रहा है।" इन सब लेखों से कोई लाभ नहीं होता।

भूगोल—परीक्षार्थियों को मानचित्र बनाने का पर्याप्त अभ्यास होना चाहिये। कहीं कहीं पर प्रश्नों को बेकार बढ़ाया गया है। जैसे गंगानदी का भौगोलिक महत्व न देकर उसकी पौराणिक उत्पत्ति बताने का ७५ प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रयत्न किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मशास्त्र—कुछ परीक्षार्थी विषय का ज्ञान तो रखते हैं, परन्तु प्रश्नों के उत्तर विशद रूप से लिखने की योग्यता प्रदर्शित नहीं कर सकते। कुछ परीक्षार्थी ऐसे भी हैं जिनको विषय ज्ञान बिलकुल नहीं या बहुत ही कम है; पर अपनी वावदूकी से व्यर्थ का विस्तार प्रकट करते हैं।

कृषिशास्त्र—परीक्षार्थी पुस्तकों का अध्ययन गम्भीरता से करें। कल्पना के घोड़े दौड़ाने का प्रयत्न न करें। कृषिशास्त्र के गणित विभाग पर अधिक ज़ोर देने की आवश्यकता है। प्रयोगात्मक अध्ययन ही लाभदायक हो सकता है। प्रश्नों के उत्तर सार पूर्ण तथा संक्षिप्त होने चाहिये।

संस्कृत—अधिकांश विद्यार्थियों को पाठ्य ग्रन्थों का बिलकुल ज्ञान नहीं है। उन्होंने केवल मनोविनोदार्थ परीक्षा फ़ार्म भर दिया है। संस्कृत ऐसे विषय के लिए अनुमान अथवा काल्पनिक चित्र सर्वथा हास्यास्पद है। बहु संख्यक छात्रों को व्याख्या तथा अनुवाद का भेद ज्ञान नहीं है। अनुवाद में संदर्भ आदिक अनावश्यक बातें देना केवल निष्फल प्रयास मात्र है।

अंगरेज़ी—परीक्षार्थी प्रायः अध्ययन की ओर ध्यान नहीं देते। उत्तर पत्रों के अवलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि पाठ्य पुस्तकों का यथावत अवलोकन भी नहीं किया गया है। वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध भी कहीं कहीं नहीं है। विराम चिन्ह और व्याकरण सम्बन्धी भूलें बहुत अधिक हैं। कई परीक्षार्थियों ने व और ब की बहुत भूलें की हैं।

राजनीति—पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन उचित रूप से करना चाहिये। केवल अखबारी बातों से शास्त्रीय सिद्धान्तों का ज्ञान होना असम्भव है।

अर्थशास्त्र—गत वर्ष से उत्तर अधिक संतोषप्रद थे। पत्र पत्रिकाओं को पढ़ने और वर्त्तमान हलचल के सम्पर्क में रहने तथा हाल की मुद्रित अर्थशास्त्र पर पुस्तकों को पढ़ने से और भी अधिक लाभ की सम्भावना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान—कई परीक्षार्थी अंग्रेजी के शब्द बिना प्रयोजन भरने का प्रयत्न करते हैं। इससे कदाचित वे अपना बड़प्पन समझते हैं। परन्तु यह उनकी भूल है। उनको चाहिये कि जिन अंग्रेजी शब्दों के लिए हिन्दी में शब्द मौजूद हैं उनको अंग्रेजी में न लिखें। इसी में मातृभाषा का गौरव है। हाँ, जिनके लिए उपयुक्त शब्द नहीं हैं उनको अंग्रेजी में लिख सकते हैं। एक परीक्षार्थी ने रिफ्लेक्शन के नियम के साथ Laws of Reflection भी लिख दिया है। इन अंग्रेजी शब्दों की बिलकुल आवश्यकता नहीं थी। कुछ ने इन्द्र धनुष के रंगों के नाम अंग्रेजी में लिखे हैं जिनके लिए हिन्दी शब्द अच्छी तरह प्रचलित हैं। समानान्तर, प्रति रूप, आदि शब्दों की जगह Parallel, image लिखना उचित नहीं है। कुछ परीक्षार्थियों ने आवश्यक बातें बहुत कम परन्तु इधर उधर की बातें खूब बढ़ाकर लिखी हैं।

ज्योतिष—अधिकांश परीक्षार्थी लिखने में ह्रस्व दीर्घ का ध्यान नहीं देते और निष्प्रयोजन लेख का विस्तार किया करते हैं।

वैद्य विशारद परीक्षा

मालूम पड़ता है कि अधिकांश परीक्षार्थियों ने गुरु मुख से उचित शिक्षा प्राप्त नहीं की है और पाठ्य ग्रन्थों का मनन भी नियमपूर्वक नहीं किया है।

यह आवश्यक है कि परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न आरम्भ करने से पूर्व प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

प्रश्नों के उत्तर शुद्ध और समुचित ही लिखने चाहिये। व्यर्थ की बातें लिखना अपनी मन्द बुद्धि का परिचय देना है। कुछ विद्यार्थियों ने इन्फ्ल्यूएञ्जा को प्लेग और मोती झरा लिखा है जो कि सर्वथा असम्बद्ध और प्रलाप मात्र है।

कृषि विशारद परीक्षा

परीक्षार्थियों को कृषि के यंत्रों तथा कार्यों का व्यावहारिक ज्ञान ग्रहण करना आवश्यक है। सामयिक पत्रों और कृषि सम्बन्धी अन्य साहित्य के अध्ययन की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमा परीक्षा

साहित्य १—कुछ परीक्षार्थियों ने कुछ को 'कुच्छ' लिखा है। एक परीक्षार्थी ने अलंकार को भी पिङ्गल मानकर उसका लक्षण लिखा है। इससे पता लगता है कि परीक्षार्थी बिना अध्ययन किये ही परीक्षा में सम्मिलित हो जाते हैं। 'विराम' का प्रयोग कहीं कहीं बिलकुल नहीं है। नवीन कवियों के सम्बन्ध में अधिक जानकारी की आवश्यकता है। ह्रस्व और दीर्घ की भूलें अधिक हैं। जैसे सूरदास को 'सुरदास'। परीक्षार्थियों ने पुल्लिंग और स्त्रीलिङ्ग में भी भूलें की हैं। एक परीक्षार्थी ने पं० सुमित्रानन्दन पन्त को सुलेखिका लिखा है।

साहित्य २—लिपि सौष्ठव, वर्ण विन्यास तथा वाक्य-योजना पर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया गया। साधारणतया प्रश्नोत्तर-प्रणाली असंतोष दायिनी प्रतीत हुई। सुपाठ्य एवं सुबोध लिपि का तो सर्वथा अभाव सा ही रहा, जो प्रथमा परीक्षा के परीक्षार्थियों के लिये सर्वथा अनुपेक्षणीय है। कई छात्रों ने तो प्रश्न संख्या ही नहीं लिखी, अथवा उसके लिए समुचित स्थान का व्यवहार भी नहीं किया।

साहित्य ३—अधिकांश परीक्षार्थी निबन्ध का ढांचा बनाना नहीं जानते। निबन्ध में व्यर्थ की बातें न लिखी जावें। शब्दों और वाक्यों में बहुत भूलें थीं। विषय और उसकी मुख्य बातों पर लक्ष्य नहीं रखा गया। बहुत बढ़ाकर लिखने की अपेक्षा थोड़ी और सार बात लिखनी चाहिये।

इतिहास—परीक्षार्थी रटने का प्रयत्न बहुत करते हैं। अतः थोड़ी सी बात भूलने पर उनका पूरा प्रश्न बिगड़ जाता है। अधिकांश परीक्षार्थियों ने अटकल पच्चू उत्तर देने का प्रयत्न किया है। 'अलाउद्दीन', 'कनिष्क', 'अशोक' आदि नामों के लिखने में अनेक परीक्षार्थियों ने गलती की है। हिन्दी भाषा में ऐसी अशुद्धियां अक्षम्य हैं।

भूगोल—भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों के मानचित्र पर विशेष ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना चाहिये। अधिकांश परीक्षार्थियों ने तो दूसरे प्रश्न में भारतवर्ष का नक्शा भी ठीक नहीं खींचा है। प्राकृतिक भूगोल का ज्ञान बहुत कम है।

गणित—क्रिया में केवल अङ्कों के रख देने से गणित का मुख्य उद्देश्य सिद्ध नहीं होता है। इसमें लिखकर समझाने की आवश्यकता होती है। परन्तु इसका अभाव दिखलाई पड़ा। उत्तर लिखने में परीक्षार्थी असावधानी दिखलाते हैं।

स्वास्थ्य रक्षा—परीक्षार्थियों ने पुस्तकों का अवलोकन सुचारु रूप से नहीं किया। प्रश्नों का उत्तर ठीक-ठीक नहीं लिख सके हैं। एक परीक्षार्थी ने धूम्र पान को धूप पान लिखा है।

संस्कृत—परीक्षार्थी शुद्ध हिन्दी लिखने का प्रयत्न नहीं करते। भाषा में प्रान्तीयता कहीं कहीं बहुत अनुचित मालूम होती है।

दयाशंकर दुबे
परीक्षा मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यसमिति की द्वितीय बैठक

कार्यसमिति की बैठक गुरुवार, १८ वैशाख संवत् १९९८, तारीख १ मई १९४१ को ६ बजे सायंकाल से सम्मेलन के कार्यालय में श्रीयुत पंडित अमरनाथ झा के सभापतित्व में हुई। कुल १० सदस्य उपस्थित थे। कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

१—पिछली बैठक की कार्यवाही स्वीकृत हुई।

२—सम्मेलन के कर्मचारियों के लिए निम्नलिखित छुट्टी के नियम स्वीकृत हुये—

(१) किसी भी कर्मचारी को छुट्टी का अधिकार न होगा। कार्यालय की सुविधा के अनुसार ही छुट्टी दी जा सकेगी।

(२) कर्मचारियों को एक वर्ष काम कर लेने पर एक महीने तक की रिआयती छुट्टी पूरे वेतन पर मिल सकेगी। यह छुट्टी प्रतिवर्ष कर्मचारी के हिसाब में तीन वर्ष तक सञ्चित होती जायगी। तीन वर्ष से अधिक यह छुट्टी सञ्चित नहीं रहेगी।

(३) कर्मचारियों को बीमारी के लिए वर्ष भर में १५ दिन तक की छुट्टी पूरे वेतन पर और उसके बाद दो महीने तक की आधे वेतन पर दी जा सकेगी।

विशेष—बीमारी की छुट्टी के लिए प्रार्थी को किसी सम्मानित डाक्टर अथवा वैद्य का प्रमाणपत्र देना आवश्यक होगा। यदि सम्मेलन के अधिकारियों की राय में किसी विशेष चिकित्सक का प्रमाणपत्र आवश्यक समझा जाय तो बिना ऐसे प्रमाणपत्र के प्रार्थी को बीमारी की छुट्टी न मिल सकेगी। यदि प्रधान मन्त्री के विचार में चिकित्सक का प्रमाणपत्र देना किसी कर्मचारी के लिए सम्भव न हो तो उन्हें अधिकार होगा कि ऐसे कर्मचारी को उपर्युक्त १५ दिन तक की छुट्टी बिना किसी प्रमाणपत्र के ही दे दें।

(४) कर्मचारियों को वर्ष भर में १५ दिन तक की आकस्मिक छुट्टी पूरे वेतन पर दी जा सकेगी।

विशेष—आकस्मिक छुट्टी रिआयती, बीमारी की, या अन्य किसी साधारण छुट्टी के साथ किसी ओर भी न जोड़ी जा सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) किसी कर्मचारी को, जिसे सम्मेलन में काम करते हुए कम से कम तीन महीने न हो चुके हों, उपर्युक्त किसी प्रकार की सवेतन छुट्टी पाने का अधिकार न होगा।

(६) लेखकों की छुट्टी सहायक मन्त्री तथा विभागीय मन्त्री की सिफारिश पर और माली तथा चपरासियों की छुट्टी सहायक मंत्री तथा प्रबन्ध मन्त्री की सिफारिश पर, प्रधान मन्त्री स्वीकृत या अस्वीकृत करेंगे।

(७) ये नियम १ वैशाख सं० १९९८ से लागू होंगे और इस समय सम्मेलन में छुट्टी के जो नियम प्रचलित हैं वे सब इन नियमों द्वारा निरस्त समझे जायँगे। किन्तु इन नियमों के स्वीकृत होने से पहिले कर्मचारियों की जो रिआयती छुट्टी सञ्चित हो चुकी हो उस पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

३—बम्बई की उपनगर-हिन्दी-प्रचार-केन्द्र-सभा की सम्मेलन से सम्बद्धता स्वीकृत हुई।

४—श्री दिनेशनारायण उपाध्याय की साधारण सदस्यता स्वीकृत हुई।

५—सेवदह के राजेन्द्र साहित्य विद्यालय के व्यवस्थापक की आर्थिक सहायता विषयक प्रार्थना पर विचार किया गया और १००) की सहायता दी जानी स्वीकृत हुई।

६—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की सुविधानुसार आय व्यय के हिसाब के लिए उसका वर्ष १ जुलाई से ३० जून तक का स्वीकृत हुआ।

७—प्रचारक के पद पर श्री श्रीकृष्णदास एम० ए० की नियुक्ति स्वीकृत हुई।

रामप्रसाद त्रिपाठी
एम० ए०, डी० एस्सी०
प्रधान मंत्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के नवीन प्रकाशन

बुद्ध चरित्र—चरयिता पं० रामचंद्र शुक्ल मूल्य २॥) महात्मा बुद्ध का उज्जवल चरित्र, सुन्दर ब्रजभाषा काव्य। इस पुस्तक की महत्वपूर्ण भूमिका में ब्रज, खड़ी और अवधी भाषाओं का व्याकरण विवेचन किया गया है।

सोवियत-भूमि—ले० महापंडित राहुल सांकृत्यायन, मूल्य ५) रूस के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिये हिन्दी में अद्वितीय ग्रंथ।

मूर्तिकला—ले० राय कृष्णदास, मूल्य १।) भारतवर्ष की मूर्तिकला की आदि से अंत तक तात्विक व्याख्या।

चित्रकला—ले० राय कृष्णदास, मूल्य १।) चित्रकला पर सर्वोत्तम पुस्तक

बाल-मनोविज्ञान—ले० पं० लालजीराम शुक्ल मूल्य १।) हिन्दी में बाल-मनोविज्ञान संबंधी सर्वश्रेष्ठ रचना।

मआसिरुल् उमरा, भाग १ और २—अनु० बाबू व्रजरत्नदास, मूल्य ४) प्रति भाग। मुगल शासनकाल के सरदारों की सब से प्रामाणिक जीवनियां।

बिहार में हिन्दुस्तानी—ले० पं०चंद्रबली पाण्डेय, मूल्य ।) बिहार प्रांत में हिन्दी हिन्दुस्तानी समस्या की तात्विक व्याख्यान।

भाषा का प्रश्न—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ॥) भाषा सम्बन्धी प्रश्नों का विस्तृत और विवेचनापूर्ण उत्तर।

कचहरी की भाषा और लिपि—ले० पं० चंद्रबली पांडेय मूल्य ॥।) अदालतों की भाषा और लिपि का विस्तृत विवेचन।

मध्य प्रदेश का इतिहास—ले० रायबहादुर डा० हीरालाल बी० ए०, १॥)

हिन्दी साहित्य का इतिहास— ले० पं० रामचंद्र शुक्ल, मूल्य ५) प्रवर्द्धित संस्करण हिन्दी साहित्य का सब से अच्छा और विस्तृत इतिहास।

रघुनाथ रूपक—सम्पादक महताबचंद खारैड, मूल्य २) डिंगल भाषा का अत्युत्तम काव्य।

नैपोलियन बोनापार्ट—ले० लाला राधामोहन गोकुलजी, मूल्य १)

सिक्खों का उत्थान और पतन—ले० पं० नन्दकुमार देव, मूल्य १)

भीष्म पितामह—(जीवनी)ले० गणपति जानकी राम दुबे, मूल्य १)

आदर्श और यथार्थ—ले० बाबू पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, मूल्य ॥।) काव्य में आदर्शवाद और यथार्थवाद का बहुत स्पष्ट और ऐतिहासिक विवेचन।

मालती माला—(कहानी) ले० श्रीमती मालती शर्मा, मूल्य ॥)

त्रिवेणी—ले० पं० रामचंद्र शुक्ल, मूल्य १) सूर, तुलसी और जायसी पर लेखक के आलोनात्मक निबंधों के विशिष्ट अंशों का संग्रह।

मिलने के पते—प्रत्येक नगर के प्रतिष्ठित पुस्तक-विक्रेता

अथवा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा

सभा का नव निर्वाचन

आगरा नागरी प्रचारिणी सभा की प्रबन्ध समिति और उसके पदाधिकारियों का आगामी वर्ष १९४१ व ४२ के लिए नव निर्वाचन ता० २० अप्रैल १९४० ई० रविवार को सायंकाल ४ बजे से हुआ। सभा के प्राण तथा सभा के भूतपूर्व मन्त्री श्री महेन्द्र जी ऐन चुनाव के अवसर पर भारत रक्षा कानून में गिरफ़ार कर लिये गये थे, फिर भी चुनाव कार्य बड़ी शान्ति और निर्विघ्नता पूर्वक हो गया। सभा के उपसभापति प्रो० जगन्नाथ तिवारी एम० ए० शास्त्री के सभापतित्व में चुनाव सभा का कार्य हुआ। अधिकतर पदाधिकारी निर्विरोध ही चुने गए। सभा के साढ़े चार सौ सदस्यों में से लगभग १०० सदस्यों के उपस्थिति थी।

निर्वाचित पदाधिकारी

सभापति—१ प्रो० पं० हरप्रसाद बागची एडवोकेट।

उपसभापति १—श्रीयुत महेन्द्र जी २—प्रो० जगन्नाथ तिवारी एम० ए० शास्त्री, ३—पं० हरिशङ्कर शर्मा कविरत्न ४—डा० राजाराम व्यास।

प्रधान मंत्री—पं० ब्रजमोहन रावत एम० एस० सी० एल-एल० बी० आनरेरी मजिस्ट्रेट।

उपमन्त्री १—बा० शर्मनलाल अग्रवाल साहित्यरत्न, एम० ए० २—प्रो० टीकमसिंह तोमर एम० ए० ३—पं० जगन्नाथप्रसाद स्काउट मास्टर।

आडीटर—प्रो० चम्पाराम चतुर्वेदी।

प्रबन्ध समिति के सदस्य

सर्वश्री १—बा० गुलाबराय जी एम० ए०, २—प्रो० पी० एम० भम्मानी, ३—प्रो० न० म० अन्टानी, ४—बा० लक्ष्मीनारायण गर्ग, एडवोकेट, ५—कुँ० तारासिंह धाकरे साहित्यरत्न, ६—प्रो० प्रकाशचन्द्र, गुप्ता, ७—पं० प्यारेमोहन चतुर्वेदी, ८—प्रो० विश्वम्भरदयाल मानव, ९—पं० गोविन्दप्रसाद चतुर्वेदी, १०—पं० श्रीराम शर्मा सम्पादक विशालभारत ११—प्रो० अम्बिकाचरण शर्मा, १२—कुं० बलवानसिंह, १३—बा० कृष्णप्रसाद भार्गव बैंकर, १४—रायसाहब पं० ब्रजनाथ गोस्वामी, १५—पं० विष्णुराम जानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा

प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

१ भूषण ग्रन्थावली २)
२ हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ॥)
३ भारत गीत ≡)
४ राष्ट्रभाषा ॥)
५ शिवाबावनी ≡)
६ सरल पिंगल ।)
७ भारतवर्ष का इतिहास भाग १ २॥)
८ " " " " २ २।)
९ व्रजमाधुरीसार २॥)
१० पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १।)
११ सत्य हरिश्चन्द्र ।–)
१२ हिन्दी भाषा सार ॥।)
१३ सूरदास की विनय पत्रिका ≡)
१४ नवीन पद्यसंग्रह ॥।)
१५ कहानी कुञ्ज ॥=)
१६ विहारी संग्रह ≡)
१७ कवितावली ॥।)
१८ सुदामा चरित्र ।)
१९ अलंकार प्रकाश ।=)
२० कबीर पदावली ॥।=)
२१ हिन्दी गद्य निर्माण १॥)
२२ हिन्दी साहित्य की रूप रेखा ।)
२३ सती करुणाकी ॥)
२४ हिन्दी पर फारसी का प्रभाव ॥=)
२५ पार्वती मङ्गल ।)
२६ सूर पदावली ॥=)
२७ नागरी अंक और अक्षर ≡)
२८ हिन्दी कहानियाँ १॥)
२९ ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार १।)
३० तुलसी दर्शन २॥)
३१ भूषण संग्रह भाग १ ।–)
३२ भूषण संग्रह भाग २ ॥=)

(२) साधारण पुस्तकमाला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था १)
२ प्रथमालंकार निरूपण ≡)

(३) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

१ सरल शरीर विज्ञान ॥), ॥।)
२ प्रारम्भिक रसायन १)
३ सृष्टि की कथा १)

(४) बाल साहित्यमाला

१ बाल पञ्चरत्न ॥)
२ वीर सन्तान ।=)
३ बिजली =)

(५) ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ १६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए० ६२१

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अभूतपूर्व साहित्य प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द' लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, आचार्य पंडित रामचंद्र जी शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के निर्माता, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल संग्रह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द। मूल्य ४॥)

बाल साहित्यमाला

बालभारती
श्रीयुत श्रीनाथसिंह
मूल्य ।≈)

वीर शतमन्यु
श्रीयुत 'स्वर्णसहोदर'
मूल्य ।)

बालकथा
सौ० श्रीमती कमलाबाई किबे
मूल्य ॥)

छत्रपति शिवाजी
श्रीयुत गुर्ती सुब्रह्मण्यम् एम० ए०
मूल्य ।)

बाल कवितावली
श्री सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ
मूल्य ।)

साधारण पुस्तकमाला

चित्ररेखा
श्रीरामकुमार वर्मा एम० ए०
मूल्य १॥)

गोरख बानी
डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल एम० ए०, डी० लिट्०

डिंगल में वीररस
श्री मोतीलाल मेनारिया एम० ए०
मूल्य १।।।)

आधुनिक कवि—१
श्रीमती महादेवी वर्मा एम० ए०
मूल्य १॥)

वीर काव्य संग्रह
श्री उदयनारायण तिवारी एम० ए०
श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित 'साहित्यरत्न'
मूल्य २)

साहित्यमंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

मुद्रक—गिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—साहित्यमंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की मुख-पत्रिका

भाद्रपद, आश्विन १९९९

✓
गुरुकुल पुस्तकालय
२६-१२-४२

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन

प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका, भाद्रपद-आश्विन १९९९

संपादक—श्री रामचंद्र टंडन, साहित्य मंत्री

विषय-सूची

१. लिपि और भाषा के प्रश्न—लेखक, श्री भदंत आनंद कौसल्यायन ... १
२. हिंदी की कुछ नई पुस्तकें—लेखक, श्री रामचंद्र टंडन ... ६
३. नाटककार 'प्रसाद'—लेखक, श्री भागीरथी चंद्र, बी० ए० ... १०
४. रसखान और घनानंद—लेखक श्री शंभुप्रसाद बहुगुना, एम० ए० ... ... १४
५. स्थायी समिति का छठवाँ अधिवेशन २२
६. कार्य समिति की पाँचवीं बैठक २५
७. कार्य समिति की छठी बैठक २७
८. कार्य समिति की सातवीं बैठक २९
९. परीक्षा समिति का पाँचवाँ अधिवेशन... ... ... ३१
१०. समालोचना ३३

हिन्दी-साहित्य सम्मेलन का अभूतपूर्व प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द' लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, स्वर्गीय आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के एक निर्माता, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति, स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल संग्रह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द।

मूल्य ४॥)

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग ३० : : संख्या १, २ : : भाद्रपद, आश्विन १९९९

सम्मेलन-पत्रिका

लिपि और भाषा के प्रश्न[1]

[भदंत आनंद कौसल्यायन]

देवनागरी वर्णमाला एक वैज्ञानिक वर्णमाला है। वैज्ञानिक वर्णमाला से यह मतलब नहीं कि उसमें दुनिया भर के सभी उच्चारण लिखे जा सकते हैं। किसी भी भाषा की किसी भी वर्णमाला द्वारा दुनिया भर की भाषाओं के उच्चारण नहीं लिखे जा सकते; भिन्न जलवायु में रहने वाले लोगों की उच्चारण-सामर्थ्य ही बहुत काफ़ी भिन्न होती है। वर्णमाला के वैज्ञानिक होने से हमारा मतलब इतना ही है कि उस में एक उच्चारण के लिए एक अक्षर हो, और एक अक्षर का एक ही उच्चारण हो—जैसा कि देवनागरी में है। और क्योंकि यह एक वैज्ञानिक वर्णमाला है, इस लिए इसका प्रचार भी बहुत है। जितनी भी उत्तर भारत की भाषाएँ हैं उन की वर्णमाला देवनागरी है; उर्दू फ़ारसी लिपि में अवश्य लिखी जाती है। दक्षिण भारत की जितनी भाषाएँ हैं उन की वर्णमाला यह ही है। अखिल भारत की यही एक वर्णमाला है।

अब भारत से बाहर चलिए। सर्वप्रथम सिंहल द्वीप को लीजिए। वहां की भाषा सिंहल हैं। उसकी भी वर्णमाला यही है। बर्मा को अभी कल हम से पृथक किया गया है। वहां की भाषा बर्मी है। उस भाषा की भी वर्णमाला यही है। बर्मा के उस पार स्याम देश है जिसे आज कल थाई-लैण्ड वा स्वतन्त्र देश कहते हैं। आपको यह जानकर शायद आश्चर्य हो, लेकिन स्याम देश की भी वर्णमाला यही है। हिमालय के उस पार जो विशाल तिब्बत देश है, जिसे वहाँ वाले भोट देश (बुद्ध का देश) कहते हैं, वहां की वर्णमाला यही देवनागरी वर्णमाला है। ज़रा सोचिए, कितना अधिक है इस वर्णमाला का प्रचार! वैज्ञानिकता और विस्तार के ख़याल से देवनागरी ही एक ऐसी वर्णमाला है जो भारत की राष्ट्रीय वर्णमाला कहला सकती है।

वर्णमाला के साथ लिपि सम्बद्ध है। जितनी भी भारतीय लिपियां हैं, वे सब अशोक-कालीन ब्राह्मी लिपि से निकली हैं। काल के विपर्यास तथा अन्य दूसरे कारणों

---

[1] यह लेख देवरिया ज़िला साहित्य-सम्मेलन में सभापति के पद से पढ़ने के लिए लिखा गया था। किन्हीं कारणों से वहां न पढ़ा जा सका। संपादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उन सब की वर्णमाला एक रहते हुए भी अक्षरों के आकार-प्रकार में थोड़े अंतर पड़ गए हैं। दक्षिण भारत में ग्रंथ प्रायः ताड़पत्रों पर लिखे नहीं उत्कीर्ण किए जाते थे। उन में सीधी लकीर खींचने से ताड़पत्र फट जाते। इस लिए दक्षिण भारत की लिपियाँ गोलाकार—जलेबियों की-सी शक्ल की बन गईं। उत्तर भारत में प्रायः भोजपत्रों पर लिखा जाता था, इस लिए उत्तर भारत की लिपियों को गोल मटोल बनाने की ज़रूरत न थी। आज न दक्षिण वाले ताड़पत्रों पर लिखते हैं न उत्तर वाले भोजपत्रों पर। आज तो सभी हाथ के या मशीन के बने काग़ज़ पर लिखते हैं। जब लेखन-सामग्री एक है तो लिपियों का आकार भी एक क्यों न हो जाए? गुजराती लिपि शिरोरेखा रहित देवनागरी ही तो है। मराठी तो देवनागरी ही है। हां, बंगला ज़रा भिन्न प्रतीत होती है। यदि उत्तर भारत के साथ दक्षिण भारत की सारी भाषाओं को भी हम एक ही लिपि में लिखने लग जाएँ तो हमारे राष्ट्र में कितनी बड़ी एकता हो जाए। लिपि-भेद के कारण जो भाषाएँ हमको अत्यंत अपरिचित सी लगती हैं, एक दिन में परिचित सी बन जाँय। देवनागरी लिपि का हर जानकार सारे देश की भाषाओं को पढ़ने और किसी हद तक समझने में समर्थ हो जाए।

लेकिन हम देखते हैं कि हम जब भी देवनागरी लिपि की बात करते हैं, कुछ लोग ऐसे हैं जो पीछे से हमारी टाँगें खींच लेते हैं। वह कहते हैं, अपने उत्साह में यह न भूलिए कि एक दूसरी लिपि—उर्दू लिपि—भी है जो राष्ट्रभाषा के मामले में बराबरी का दावा करती है। यदि हम बिना सोचे-समझे उनकी हां में हां मिला देते हैं, वह कहते हैं, 'आप राष्ट्रीय विचार के हैं, आप की राष्ट्रीयता सच्ची राष्ट्रीयता है'; और यदि हम उनसे कुछ भी अन्यथा निवेदन करते हैं तो वह कहते हैं 'तुम्हारी राष्ट्रीयता सच्ची राष्ट्रीयता नहीं अपूर्ण राष्ट्रीयता है।' अभी कुछ दिन हुए मैंने मद्रास से निकलने वाले 'हिन्दी प्रचार समाचार' में श्री सत्यनारायण जी का एक लेख पढ़ा। श्री सत्यनारायण जी ने हिंदी की जो सेवा की है, उतनी दक्षिण में बहुत अधिक लोगों से नहीं बन पड़ी। आपने लिखा है :—

"जो संस्था यह (उर्दू तथा हिंदी दोनों लिपियों के प्रचार का) कार्य दिल खोलकर बिना किसी बंधन के करेगी और जो व्यक्ति इन विचारों के साथ ही इन स्वरूप (उर्दू तथा हिंदी) का प्रचार करेंगे, वे ही पूरे राष्ट्रीय कहलाएँगे। अन्यथा उनकी राष्ट्रीयता सीमित रह जाएगी।"

हम जानते हैं कि यह कुछ कुछ नई धारा महात्मा गांधी जी से ही आरंभ हुई है। आपने अपने एक लेख में जो 'हिंदी प्रचार समाचार' में भी उद्धृत हुआ है कहा है—मैं चाहता हूँ कि ऐसी संस्था या समिति का संगठन हो जो अपने सदस्यों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए हिंदी और उर्दू का, उसके दोनों रूपों और दोनों लिपियों के साथ अध्ययन करने की सिफ़ारिश करे। शायद इसीलिए श्री सत्यनारायण जी ने भी अपने लेख में हिंदी साहित्य सम्मेलन को — एक ऐसी संस्था को जिसने अपने जन्म-दिन से आज तक देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा का ही प्रचार किया है—एक चेतावनी ही नहीं, बल्कि हलकी धमकी दे दी है :—

"अगर सम्मेलन अपनी तरफ़ से यह काम नहीं कर सकेगा तो उसे (सच्चे राष्ट्र-प्रेमी को) दूसरी संस्थाओं का दरवाज़ा खटखटाना पड़ेगा या अपनी अलग संस्था बना लेनी पड़ेगी।"

श्री सत्यनारायण जी के लेख को यदि कोई आदि से अंत तक पढ़ जाए तो उसे ऐसा लगेगा कि इस लेख की पंक्तियों के भीतर बहुत कुछ छिपा है। लेकिन शायद वह यह सोचने लगे कि दक्षिण भारत प्रचार-सभा भी हिंदी-प्रचार सभा है, सम्मेलन भी हिंदी साहित्य सम्मेलन है और राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति का भी नाम शिमले अधिवेशन तक हिंदी प्रचार समिति ही रहा है; साथ ही दक्षिण भारत प्रचार-सभा का मुख पत्र भी हिंदी में है, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की पत्रिका भी हिंदी में है और सम्मेलन-पत्रिका तो हिंदी में है ही। न दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा ने कभी कोई पत्र वा पत्रिका उर्दू भाषा तथा फ़ारसी लिपि में छापी, न राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति ने, और सम्मेलन ने तो छापी ही नहीं। तो उसकी यह समझ में न आएगा कि आख़िर यह झगड़ा किस बात का है ?

ऐसी हालत में हमें तो यह लगता है कि जब किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय जीवन की गति मंद पड़ जाती है तो उसमें इसी प्रकार की सड़ाँद पैदा होने लगती है। शायद अपनी-अपनी डफ़ली पृथक बजाने की प्रवृत्ति इसी सड़ाँद की द्योतक है।

ज़रा गहराई से सोचें तो ऐसा लगता है कि हमारे देश के राष्ट्रप्रेम को शर्तों पर आश्रित होने की ख़राब आदत पड़ गई है। यदि शर्तें पूरी हों तो देशभक्ति, नहीं तो देशद्रोह। एक सम्प्रदाय को एक चीज़ का आग्रह है तो दूसरे को दूसरी का। और दोनों संप्रदायों की माँगों को 'आधा तीतर आधा बटेर' कहने का नाम है राष्ट्रीयता। पता नहीं हम सांप्रदायिकता से ऊपर उठकर समूचे राष्ट्र की आवश्यकताओं पर ठीक-ठीक विचार क्यों नहीं कर सकते ?

हमारा देश निरक्षर मनुष्यों की एक जाति है। सिंहल, बर्मा, स्याम, तिब्बत तक में भारत की अपेक्षा अधिक साक्षरता है। हमें अपने देश को साक्षर बनाना है। हम उसे कौन सी लिपि सिखाएं। क्या उर्दू ? क्या देवनागरी ? क्या दोनों ? सामर्थ्यवान् लोग एक नहीं दस लिपियां सीखें, उसमें किसी को क्या विरोध हो सकता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंतु अपने बलाबल को देखते हुए क्या हम अपने सभी देशवासियों से दो-दो लिपियों से परिचित होने की आशा रख सकते हैं ? हम एक लिपि ही सिखा सकेंगे और वह आसानी से सीखी जा सकने वाली देवनागरी ही हो सकती है ।

सम-दृष्टि के साथ विवेक का होना ज़रूरी है । हमारे देश में भिन्न-भिन्न लिपिओं की जो स्थिति है उसे देख समझ कर महात्मा जी यह स्वीकार कर चुके हैं कि सब लिपियां एक देवनागरी लिपि में लिखी जाए । अब यदि कल कोई प्रस्ताव करे कि सब लिपियां देवनागरी में ही नहीं फ़ारसी में भी लिखी जानी चाहिए तो क्या यह महात्मा जी को मान्य हो सकता है ? कभी नहीं ।

हम राष्ट्रीय दृष्टि से ही देवनागरी वर्णमाला तथा लिपि के समर्थक हैं। लिपि के प्रश्न ने अपेक्षाकृत अधिक समय ले लिया । बात यह है कि लिपि का प्रश्न ही मुख्य प्रश्न है, भाषा का गौण । मैं मानता हूँ कि कुछ उर्दू वालों ने इतना अधिक अंतर पैदा कर लिया है कि श्री अमरनाथ झा ने अपने सुहृद-संघ, मुजफ़्फ़रपुर के सभापति-भाषण में उर्दू को हिन्दी से इतना भिन्न माना है जितना मराठी या गुजराती को नहीं। मेरी सम्मति में उर्दू नाम की कोई पृथक भाषा नहीं । क़ुरान शरीफ़ का पहला अनुवाद बरज़माने हिंदवी ही हुआ था । आप यह भी कह सकते हैं कि हिंदी कोई पृथक् भाषा नहीं । मेरी राय में हिन्दी और बङ्गला में भेद है । हिंदी और उर्दू में नहीं । हिंदी और मराठी में भेद है । हिंदी और उर्दू में नहीं । हिंदी और गुजराती में भेद है । हिंदी और उर्दू में नहीं । देखिए :—

हिंदी	उर्दू	बङ्गला	मराठी	गुजराती
मैंने खाया	मैंने खाया	आमि खेयेछि	मीखाल्ला	मे खादुं
मैं लाया	मैं लाया	आमि आनिये छि	मी आणले	हुंलाव्यो
हम गये	हम गये	आमरा गियेछि	आम्हि गेलो	हमे गया

किसी भी भाषा की हड्डी-पसलियां उसके सर्वनाम तथा प्रत्यय होते हैं । और क्रियायें भी । वह हिंदी और उर्दू की एक हैं । भेद जो है वह हिंदी में और 'उर्दूए मुअल्ला' में । हमें जनता की भाषा चाहिए । दुःख के साथ— बड़ी ही आंतरिक वेदना के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि आज दिन भाषा की खींचतान में जनता के ज्ञान की हत्या हो रही है । हमारा काम किसी विषय का सीखना-सिखाना नहीं, भाषा के स्वरूप के लिए ही लड़ना-झगड़ना रह गया है । हम किसी भी सम्मेलन वा अंजुमन में जाएँ वहां भाषा की चर्चा अधिक होती है, ज्ञान की नहीं । हम भाषा को ही सँवारने-सिंगारने में अधिक न लगें । कुछ अपने ज्ञान की भी सुध लें ।

आज संसार में जिस शीघ्रता से परिवर्तन हो रहे हैं वह हमें इस बात की आज्ञा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देते कि हम प्रतिक्षण परिवर्तित होने वाली परिस्थिति की ओर से आँख मूँद कर किसी एक बात को लेकर पकड़े बैठे रहें। आज हम उर्दू और हिंदी को लेकर उलझ रहे हैं। कौन कह सकता है कि कल ऐसा समय आए कि भोजपुरी प्रदेश के लिए उर्दू तथा हिंदी दोनों विदेशी हो जाएं। आप भोजपुरी भाषा-भाषियों की ही अपनी एक छोटी सी republic हो। कल की बात कल के साथ। आज तो हम सब का कर्तव्य है कि सोएं नहीं, जागते रहें। बदलते हुए ज़माने के साथ बदलते हुए भी अपने लक्ष्य को आँखों से ओझल न होने दें।

हमारा कार्य्य स्पष्ट है—देवनागरी वर्णमाला तथा हिंदी भाषा का प्रचार।

कुछ छोटे-छोटे कार्य्य हैं जो प्रत्येक साहित्यिक संस्था ही नहीं साधारण पढ़ा लिखा प्रत्येक श्रद्धावान् व्यक्ति कर सकता है। पंडित उदयनारायण जी त्रिपाठी क नाम आपने सुना होगा। उन्होंने भोजपुरी की कई हज़ार कहावतों का संग्रह करके उनका वैज्ञानिक अध्ययन किया है। क्या आप में से कोई महानुभाव इसी प्रकार भोजपुरी ग्राम-गीतों के वैज्ञानिक अध्ययन में वा भोजपुरी कथाओं के अध्ययन में नहीं लग सकते? मैंने प्राचीन जातक कथाओं का पालि से हिंदी अनुवाद किया है; और मेरा अनुमान है कि दो ढाई हज़ार वर्ष की वह पुरानी कथाएँ आज भी हमारे देश की जनता में प्रचलित हैं। उन्हें खोज निकालने की ज़रूरत है।

अध्ययन से पहले संग्रह आवश्यक है। चाहे कहावतों का हो, चाहे लोकगीतों का, चाहे कहानियों का। उसमें एक ही चीज़ का ध्यान रखना है। हमें जो गीत वा कहानी कहीं सुनने को मिले, हम उसमें सुधार न करें, जैसे सुनें वैसे ही अक्षरशः लिखें।

अपनी-अपनी बोली के ख़ास-ख़ास शब्दों को संग्रह करने का भी कार्य्य महत्वपूर्ण है। आज का साहित्यिक नए शब्द सीखता है। नए शब्दों की रचना भी करता है; लेकिन पुराने शब्दों के प्रति अज्ञानी बनता चला जा रहा है। हमें हर स्थानीय शब्द को एक रत्न समझना चाहिए और उसका संग्रह करना चाहिए। ताकि हम अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी को अधिकाधिक समृद्ध बना सकें।

योजनाएं बहुत की जा सकती हैं, उन्हें कार्य्यरूप में परिणत करने वाले होने चाहिएँ। और वह हों तो उन्हें प्रमाद-रहित होकर अपने काम में लगे रहने की ज़रूरत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी की कुछ नई पुस्तकें[1]

[श्री रामचंद्र टंडन]

आज मैं चार नई पुस्तकों के सम्बन्ध में दो-दो शब्द कहने जा रहा हूँ। इनमें से तीन पुस्तकें हिंदी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग द्वारा प्रकाशित हुई हैं। तीनों आकार-प्रकार में एक ही सी हैं और पृष्ठ-संख्या भी तीनों की प्रायः बराबर बराबर ही है। प्रत्येक का मूल्य १॥) है। छपाई-सफ़ाई और गेट-अप की दृष्टि से पुस्तकें सुंदर हैं। यह तो हुई बहिरंग की बात, अंतरंग की दृष्टि से वे और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। परंतु उसका उल्लेख करने के पहले एक बात और कह दूँ। ओरछा-नरेश, महाराज वीरसिंह हिंदी काव्य के बड़े प्रेमी हैं और उसे उत्साह प्रदान करने के लिए प्रति वर्ष दो हज़ार रुपये का "देव पुरस्कार" प्रदान करते आ रहे हैं। संवत् १९९४ की प्रतियोगिता में कोई काव्य-ग्रंथ इस पुरस्कार के योग्य नहीं समझा गया। उस वर्ष की पुरस्कारनिधि में से एक हज़ार रुपया सम्मेलन को "देव पुरस्कार ग्रंथावली" के नाम से कोई पुस्तकमाला प्रकाशित करने के लिए दे दिया गया। सम्मेलन ने निश्चय किया कि इस पुस्तकमाला में आधुनिक काल के प्रतिनिधि कवियों के काव्य-संग्रह प्रकाशित किये जायँ। इस माला की यह विशेषता है कि कवि महोदय स्वयं ही अपनी चुनी हुई कविताओं का संग्रह करेंगे और भूमिका में अपना कविता-संबंधी दृष्टिकोण पाठकों के सामने रक्खेंगे; इसके सिवाय प्रत्येक संग्रह में कवि की हस्तलिपि का नमूना तथा एक स्केच भी रहेगा। इस प्रकार प्रत्येक काव्य-संग्रह अपने ढंग का अद्वितीय होगा और उससे निश्चय ही कवि के हृदय तथा उसकी कविता के मर्म को समझने में पाठकों को विशेष सहायता मिलेगी। अब तक इस माला में तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—पहली में श्री महादेवी वर्मा, दूसरी में श्री सुमित्रानंदन पंत, और तीसरी में श्री रामकुमार वर्मा की कविताओं का संग्रह है। ये ही वे तीन पुस्तकें हैं जिनकी ओर मैंने अभी इंगित किया था।

सबसे पहले मैं श्री सुमित्रानंदन पंत के संग्रह को लूँगा। इसमें बत्तीस पृष्ठों का 'पर्यालोचन' है, जिसमें पंतजी ने अपने साहित्यिक प्रयासों को स्वयं ही आलोचक की दृष्टि से देखते हुए अपने काव्य की आत्मा को पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयत्न किया है। फिर लगभग सौ पृष्ठों में उन्हीं के द्वारा संकलित उनकी कोई पचास कविताओं का संग्रह है। पंतजी का हमारे काव्य-साहित्य में एक विशिष्ट स्थान है। जिस

[1] यह आलोचनाएं आल इंडिया रेडियो, लखनऊ से ३ अक्तूबर १९४२ को पढ़ी गई थीं और वहां के डाइरेक्टर महोदय के अनुग्रह से प्रकाशित हो रही हैं।

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय हम अंग्रेज़ी भाषा के द्वारा आधुनिक जगत के संपर्क में आये, उस समय हमारी काव्य-धारा, वीर-गाथाओं के शिलाखंडों से निकल कर, भक्ति-भावना की उर्वर भूमि में प्रशांत और निर्मल होती हुई, रीति कालीन रूढ़िवाद के मरुस्थल में विलीन हो रही थी। आधुनिक जगत के सम्पर्क के फल-स्वरूप जीवन के अन्य क्षेत्रों की भाँति ही हमारे काव्य में भी नवजीवन का संचार होकर एक नये युग का प्रारम्भ हुआ। निर्जीव रूढ़ियों के बंधन तोड़ कर, वह मुक्त गति से विकास के पथ पर अग्रसर हुआ। तब से आज तक वह यथेष्ट उन्नति कर चुका है। इस उन्नति में जिन सुकवियों ने सहयोग प्रदान किया है उनमें तीन के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, क्योंकि उनका हमारी काव्य-धारा की गति-विधि पर विशेष प्रभाव पड़ा है। इन्हें यदि हम युगांतरकारी कवि भी कहें तो विशेष अत्युक्ति न होगी। इनमें पहले थे स्वर्गीय भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र। दूसरे, श्री मैथिलीशरण गुप्त सौभाग्य से सभी हमारे बीच उपस्थित हैं और अब भी काव्य-भांडार को अपनी अमूल्य निधियाँ भेंट कर रहे हैं। और तीसरे हैं श्री सुमित्रा-नंदन पंत जिनके काव्य-संग्रह के प्रसंग में मैं यह सब कह रहा हूँ। वर्तमान हिंदी साहित्य में जो काव्यधारा छायावाद के नाम से प्रसिद्ध हुई, उसे विकसित करने तथा लोकप्रिय बनाने में पंतजी का बड़ा हाथ रहा है।

पंतजी की एक मुख्य विशेषता है उनका सौंदर्य-प्रेम। पार्वतीय होने के नाते उनका बालकपन हिमांचल के उस मनोरम अंचल में बीता है जहाँ क्षितिज में सुदूर तक फैली, एक के ऊपर एक उठी, रजत-मुकुट-धारिणी, हरित-नील-धूमिल पर्वत-श्रेणियाँ अपनी शोभा से सभी का चित्त आकर्षित कर लेती हैं। इस प्राकृतिक सौंदर्य के बीच पंतजी के सौंदर्य-प्रेम का और भी सुदृढ़ हो जाना आश्चर्य की बात नहीं। पंतजी की अधिकांश कविताओं में उनका यह सौंदर्य-प्रेम दृष्टिगोचर होता है। प्राकृतिक दृश्यों के उन्होंने स्थान-स्थान पर एक-से एक सुंदर शब्द-चित्र प्रदान किये हैं। उनका मानवीय सौंदर्य के प्रति आकर्षण भी उनकी कविताओं में स्पष्ट झलकता है। परंतु जहां वह नारी के सौंदर्य के प्रति आकर्षित होते है, वहाँ उन्हें यह भी स्मरण हो आता है कि अरे यह सब दो दिन का खेल है। केवल इसी अर्थ में नहीं कि संसार की सभी वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं, बल्कि इसलिए भी कि देश में चारों ओर घोर दैन्य का साम्राज्य है जिसके कारण सुंदरी रमणी का मनोमोहक तन दुःखों से पिस कर, असमय ही जर्जर हो जाता है। आधुनिक युग का विशेषकर इस दीन भारत का, साधारण स्थिति का मनुष्य जो यंत्रणा भोग रहा है उसे देख कर पंतजी के कोमल-सुकुमार कवि-हृदय को बड़ी ठेस लगी है। उसे वे कभी नहीं भूल पाते। इसी लिए जब वे इस सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम् शस्य-श्यामलाम् भूमि का सुंदर चित्र अंकित करने चलते हैं तो उस समय भी उन्हें उस का धूल-भरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैला-सा आँचल दिखाई पड़ने लगता है, और दिखाई पड़ने लगता है गंगा-यमुना में उस का आँसू-जल। दैन्य-कातर जनसमूह को देख कर वे इतने विचलित हो उठते हैं कि अपनी भव्यता के कारण देश-विदेश के दर्शकों को आकर्षित करने वाले ताजमहल को देख कर उन का सौंदर्य-प्रेमी हृदय आनंद-विभोर हो उठने के बजाय कह उठता है—हाय ! शव के लिए संगमरमर का ऐसा मनोरम भवन, और जीवित मनुष्य नग्न, क्षुधातुर और आवास-विहीन रहें ! परंतु इस सब से पंत जी निराशावादी नहीं बने। वे जिस भविष्य का स्वप्न देखते है वह बड़ा सुंदर है। उस में राजनीतिक पराधीनता तथा आर्थिक शोषण का अंत होकर, समाज तथा संस्कृति का ऐसा सुंदर पुनर्निर्माण होगा कि दैन्य, अभाव, उत्पीड़न, अज्ञान आदि कहीं न रह जायँगे और यह पृथ्वी स्वर्ग बन जायगी। उन की कविता इसी आकांक्षा तथा विश्वास से अनुप्राणित है। अपने 'पर्यालोचन' में उन्होंने अपने इन विचारों तथा उन के आधारों का, अपनी विभिन्न समयों की विभिन्न मनोवृत्तियों का, उन के काव्य को प्रभावित करने वाली विचारधाराओं का सम्यक रूप से विवेचन किया है। पंतजी को तथा उन के काव्य को समझने में यह 'पर्यालोचन' निस्संदेह सहायक सिद्ध होगा।

श्री महादेवी वर्मा के संग्रह में पहले २६ पृष्ठों का अपने दृष्टिकोण के सम्बन्ध में लेख है और फिर १०२ पृष्ठों में उन के ७४ गीत हैं। पंतजी की भाँति महादेवी जी का भी हमारे काव्य में एक विशेष स्थान है। गीतों के क्षेत्र में तो वे एक प्रकार से अद्वितीय ही हैं। उन के सभी गीतों का विषय है प्रेम—और यह प्रेम कभी संयोग के रूप में न आकर सदा वियोग ही बना रहता है। महादेवी जी अपने प्रियतम का संयोग शायद चाहती भी नहीं, उन्हें वियोग-व्यथा ही में आनंद है। उन्हें प्रियतम के विरह में मोम की तरह घुलना और दीपक की तरह जलना पसंद है; प्रिय-पथ के शूल उन्हें प्यारे ही नहीं हैं, पथ ही उन के लिए निर्वाण है; विरह की घड़ियां ही उन के लिए मधुर मधु की यामिनी हैं; वे प्रियतम से दूर रह कर ही अखंड सुहागिनी हैं। कहना न होगा कि उनका यह प्रेम अलौकिक है, अध्यात्म जगत का है, और उन का प्रियतम वही है जो कबीर का 'साईं' था और मीरा का 'नँदलाल'। देवीजी के गीतों में वेदना है, पीड़ा है, कसक है, परंतु बड़ी शांति, निश्चलता और सात्विकता को लिए हुए। देवीजी का काव्य रहस्यवाद का काव्य है। अपनी प्रारंभिक रचनाओं के बाद, अपेक्षाकृत शीघ्र ही उन की प्रवृत्ति जिस दिशा की ओर उन्मुख हुई उस में व्यष्टिगत दुःख समष्टिगत गंभीर वेदना का रूप ग्रहण करने लगा और प्रत्यक्ष का स्थूल रूप एक सूक्ष्म चेतना का आभास देने लगा। तब से अब तक उनकी कविता के विकास की दिशा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। हाँ उन की वेदना क्रमशः निखरती गई है। महादेवी जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के गीतों में पाठकों को स्पष्टता की कमी दिखाई दी है। यह शिकायत निराधार नहीं है परंतु यह भी याद रखने की बात है कि वे जिस सूक्ष्म भाव-जगत के चित्र प्रस्तुत करती हैं उस के चित्रण में कुछ न कुछ अस्पष्टता का रह जाना अनिवार्य है। इस बुद्धिवाद के युग में भी महादेवी जी को अध्यात्म की आवश्यकता हुई है, परंतु वह किसी रूढ़ि, धर्म या सम्प्रदायगत न होकर उस सूक्ष्मसत्ता की परिभाषा है जो व्यष्टि की सप्राणता में समष्टिगत एकप्राणता का आभास देती है। कुछ पाठकों को उन के जीवन के प्रति दृष्टिकोण में निराशा का कुहरा भी दिखाई दिया है, परंतु स्वयं उन का कहना है कि मैं तो अपने हृदय में निराशा का कोई स्पर्श नहीं पाती, केवल एक गंभीर करुणा की छाया ही देखती हूँ। यह वेदनामयी करुणा ही उनकी कविता की मुख्य विशेषता है। महादेवी जी ने अपने काव्य-संग्रह की जो भूमिका लिखी है उस में उन्होंने कविता के प्रति अपना दृष्टिकोण तो स्पष्ट किया ही है, साथ ही द्विवेदी-युग की कविता, छायावादी कविता तथा प्रगतिवादी कविता पर भी अच्छा प्रकाश डाला है। काव्य-क्षेत्र में तो उनका आसन ऊँचा है ही, इस भूमिका से उनकी उच्च कोटि की काव्य-मर्मज्ञता भी प्रकट होती है।

इस माला के तीसरे पुष्प के कवि हैं श्री रामकुमार वर्मा। वर्माजी सफल एकांकी-नाटककार हैं और सफल कवि। सन् १९२९ में उन का पहला काव्य-ग्रंथ "अंजलि" प्रकाशित हुआ था, तब से उन के पाँच काव्य-ग्रंथ और प्रकाशित हो चुके हैं—"अभिशाप", "रूपराशि", "चित्ररेखा", "चंद्रकिरण" और "संकेत"। इन छःहों पुस्तकों में से चयन कर के यह संग्रह प्रस्तुत किया गया है। वर्माजी की कविताओं में सौंदर्य तथा प्रेम दोनों के सुंदर चित्र हैं। उन के प्रेम का झुकाव रहस्यवाद की ओर रहा है और रहस्यवादी भावों की अभिव्यक्ति में उन्हें क्रमशः अधिकाधिक सफलता मिली है। हिंदी के प्राचीन रहस्यवादी कवियों का, विशेष कर कबीर का, वर्मा जी ने अच्छा अध्ययन किया है और फ़ारसी के सूफ़ी कवियों से भी उन का परिचय है। अतः उन के रंग का उन की कविता पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। परंतु जहां उन पर पुराने समय के कवियों का प्रभाव है, वहां उन की शैली में, उन के अभिव्यक्ति के ढंग में नयापन भी है और अपनापन भी। अपनी भूमिका में उन्होंने रहस्यवाद पर अच्छा प्रकाश डाला है, उन की व्याख्या ने इस विषय को साधारण पाठकों के लिए भी सरल और स्पष्ट कर दिया है।

अब मुझे एक पुस्तक का उल्लेख करना शेष है। वह है "उन्मुक्त"। यह भी एक काव्य-ग्रंथ है, परंतु मैंने पहले जिन तीन काव्य-ग्रंथों का उल्लेख किया था उनमें मुक्तक कविताओं का संग्रह है और यह प्रबंध काव्य है। इस के कवि हैं श्री सियाराम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरण गुप्त और प्रकाशक है साहित्य-सदन, चिरगाँव। गुप्तजी हमारे साहित्य के एक सच्चे साधक हैं। पच्चीस-तीस वर्ष से वे साहित्य-सेवा में लगे हुए हैं। शरीर की रुग्णता से भी इस सेवा में कोई कमी नहीं आने पाई है। प्रत्युत ज्यों-ज्यों उन की रुग्णता बढ़ती गई है, त्यों-त्यों उन की साधना और भी प्रखर होती गई है। उन की यह साधना बहुमुखी रही है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध सभी क्षेत्रों में प्रयास किया है और यह प्रयास सर्वत्र ही सुंदर और सफल हुआ है। गुप्तजी बुंदेलखंड के निवासी हैं—उस भूमि के जो सदा वीरों की भूमि रही है, जहां आल्हा-ऊदल और छत्रसाल जैसे वीरों ने जन्म ग्रहण करके अपने शौर्य और पराक्रम से हिंदू जाति का मस्तक ऊँचा किया है। गुप्तजी के काव्य पर भी बुंदेलों की वीरभूमि की परम्परा का प्रभाव पड़ा है और उन की प्रारम्भिक रचनाओं में यह प्रभाव काफ़ी स्पष्ट है। परंतु गुप्तजी गांधी युग के प्राणी हैं और उन का कवि-हृदय अपने चारों ओर के वातावरण से भी कैसे अछूता रह सकता था? वे अहिंसावाद की विचारधारा से भी प्रभावित हुए और धीरे-धीरे उन का काव्य वीर-रस-प्रधान से परिवर्तित होकर करुण-रस-प्रधान बन गया। उन की प्रस्तुत रचना "उन्मुक्त" में दोनों ही प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। काव्य एक युद्ध की कथा को लेकर रचा गया है जो हमारे अपने समय के महायुद्ध की ही एक छाया प्रतीत होता है। युद्ध के कारण, उस की तैयारियों और फिर उस के द्वारा होने वाले नाश के वर्णनों में यथार्थवादिता यथेष्ट मात्रा में प्रस्फुटित हुई है। देशभक्ति के कारण उदय होने वाली वीरों की उमंग का अच्छा चित्रण हुआ है, और युद्ध के द्वारा होनेवाले नाश की भयंकरता को चित्रित करने में भी कवि ने सफलता प्राप्त की है। हिंसा को प्रतिहिंसा द्वारा नहीं अहिंसा द्वारा ही पराजित किया जा सकता है, इस विचारधारा की झलक भी काव्य में सर्वत्र मौजूद है और पिछले भाग में काफ़ी स्पष्ट हो उठी है। इस प्रकार इस काव्य-ग्रंथ में यथार्थवाद और आदर्शवाद का सम्मिश्रण है—परंतु वह यथार्थवाद आज का है और आदर्शवाद भविष्य का।

नाटककार 'प्रसाद'

[श्री भागीरथीचंद, बी० ए०]

नाटककार के रूप में भी 'प्रसाद' जी हिंदी जगत में एक नवीन मौलिकता को लेकर आये। जीवन का अत्यंत सूक्ष्म तथा सुंदर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण उन्होंने अपने नाटकों में समयानुकूल प्रश्नों को लेकर किया है। वे नाटकों में भी उतने ही सफल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए हैं जितने कहानियों, लेखों, तथा कविताओं में। भले ही कुछ लोग उन्हें नाटककार के रूप में असफल समझें पर मैं यह मानने के लिये तैयार नहीं हूँ। यह सत्य है कि सरलता-पूर्वक खेले जाने में उनके नाटकों में भाषा तथा टेकनीक की कठिनाइयाँ कभी-कभी बाधक हो जाती हैं, और नाट्य-शास्त्र की दृष्टि से उनके नाटकों में त्रुटियाँ हैं, परंतु जीवन के जिस तथ्य को लेकर उन्होंने नाटकों की रचना की उसे व्यक्त करने में वे पूर्ण रूप से सफल हुए हैं। उनके भावुक हृदय ने मानव-जीवन के घात-प्रतिघातों, जीवन की विभीषिकाओं तथा इनसे पीड़ित मानव-हृदय को भली भाँति परखा है, उसके मंगल तथा अमंगलकारी वेष का पूर्ण अध्ययन किया है, और की है उसकी रहस्यमय अनुभूति। अतएव वे सफलता-पूर्वक अपने पात्रों का चरित्र-चित्रण कर सके हैं। उनका प्रत्येक पात्र अपनी स्वतंत्र सत्ता, अपना निजी व्यक्तित्व रखता है। वह अपने अधिकारों के लिये लड़ता है। अपने देश के लिये सर्वस्व त्याग कर सकता है। परोपकार के लिये प्राणदान कर सकता है, और साथ ही साथ स्वार्थ के लिये सब कुछ भी भूल सकता है। उनके नाटकों में कहीं भी जीवन का एकांगी परिचय नहीं मिलता। वे सदैव जीवन के द्वंद्वपूर्ण दोहरे स्थल को लेकर ही चलते हैं। इसी लिये यदि उनके कुछ पात्र देश तथा जाति के लिये सर्वस्व त्याग कर अमरत्व प्राप्त कर सकते हैं तो अन्य कुछ स्वार्थ तथा अधिकार के लिये देश तथा जाति का तिरस्कार कर दानव भी हो सकते हैं। किन्तु होते प्रसाद जी के पात्र अत्यंत सजीव हैं। केवल घड़ी भर के लिये भी आकर वे सर्वदा के लिये एक अमिट छाप हमारे स्मृति-पटल पर छोड़ जाते हैं।

'स्कंदगुप्त' की देवसेना को कौन भूल सकता है? देश तथा जाति के लिये सर्वस्व त्याग करने वाली उस परम त्यागिनी नारी को देख कर हमारा मस्तक श्रद्धा से नत हो उठता है। जीवन भर जिसकी कामना करती हुई, हृदय में जिसकी मधुर-स्मृति को छिपाये वह जीवन धारण कर रही थी, जब वह सम्मुख आकर उससे प्रेम की भिक्षा माँगता है, प्रतिश्रुत होने का अनुरोध करता है—तब क्या महान कर्तव्य तथा देशप्रेम की भावना उसे ऐसा करने दे पाई? देशप्रेम की प्रबल भावना उसके स्वार्थ पर विजय पाती हुई उसके सुखों का द्वार सर्वदा के लिये बंद कर देती है। देवसेना एक आदर्श नारी के रूप में हमारे सम्मुख आती है परंतु देवसेना में केवल कोरा आदर्शवाद ही नहीं है, वह भी नारी है। उसमें भी नारी-सुलभ कामनाओं की प्रचुरता है, उसने भी भावनाओं का एक सुनहला महल बनाया है। और अपने इस त्याग के मूल्य का अनुभव भी वह कर रही है, अपने महल को टूटते देख कर उसका व्याकुल हृदय व्यथित होकर कह उठता है—

"आह वेदना मिली विदाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने भ्रमवश जीवन-संचित मधुकरियों की भीख लुटाई।"

और अपने हृदय की कोमल भावनाओं को सुलाती हुई वह विश्व के किसी एक कोने में छिप कर, प्रियतम से दूर, उनकी आराधना करना चाहती है। उसे अपने ऊपर विश्वास नहीं, अपने दुर्बल हृदय पर भरोसा नहीं क्योंकि उसका सारा साहस, सारी शक्ति तो अपने 'चिरसंचित वैभव' को लुटाने में लुट गई है, अब भला किस साहस पर वहाँ रहे!

देवसेना जैसी रमणी का चित्रण प्रसाद जैसा भावुक तथा देशप्रेम से ओतप्रोत कवि ही कर सकता है। भले ही कुछ लोग देवसेना के इस त्याग में अस्वाभाविकता की झलक देखें, परंतु वह आदर्श होते हुए भी अस्वाभाविक कभी नहीं है। देवसेना, स्कंदगुप्त, मालविका इत्यादि अपने कार्यों द्वारा जीवन के साधारण क्षेत्र से ऊपर उठ गये हैं, परंतु साधारण जीवन की द्वंद्वपूर्ण परिस्थितियों का सामना करते हुए, उनमें भी आशा तथा अरमानों की एक दुनिया, जीवन के सुनहले सुखों की लालसा है। परंतु प्रेम तथा स्वार्थत्याग से ओत-प्रोत उनका लोक कल्याणकारी वेष इन सब पर विजय पा जाता है—यही कवि की विशेषता भी है कि वह यथार्थता का अवलोकन करते हुए भी लोककल्याण की भावनाओं को नहीं भूलता। प्रसाद ने जीवन के साधारण अंगों पर विचार किया है, उसके साधारण द्वंद्वो का सामना करते हुए उन्हें आगे तो बढ़ाया ही है परंतु साथ ही उनमें अपने आदर्शवादी दृष्टिकोण का पुट देकर कुछ चरित्रों में त्याग तथा महानता की सृष्टि भी की है।

प्रसाद की विचार-धारा में पूर्व तथा पश्चिम, प्राचीन तथा वर्तमान का अत्यंत सुंदर सम्मिश्रण है। वे वर्तमान युग के आंदोलनों तथा अतीत के वैभव से पूर्ण-परिचित हैं, साथ ही पश्चिमी सभ्यता के पुष्ट अंगों का भी उन्होंने विवेचन किया है। दोनों के सौंदर्यपूर्ण कल्याणकारी अंश लेकर वह एक नवीन जीवन की सृष्टि करना चाहते थे। वे देश को पुरानी लकीर का फकीर बनता नहीं देख सकते तो उसका पश्चिमी सभ्यता का अंधाधुंध अंध अनुकरण करना भी कदापि सहन नहीं कर सकते। इसी लिए जहाँ एक ओर वे 'मागधी' तथा 'शैलेन्द्र' के रूप से समाज को उसके संकीर्ण दृष्टिकोण, उसकी कट्टरता के लिये फटकारते हैं, उनके (अवांछनीय) कार्यों के लिये उसे उत्तरदायी बताते हैं, वहाँ दूसरी ओर 'छलना' तथा 'अजात' की उच्छृंखलता का, उनके 'अकांड-तांडव' का घोर विरोध भी करते हैं।

भारतीय नारी के चित्रण में प्रसाद अत्यंत सफल हुए हैं। उन्होंने नारी-जीवन के अनेक पहलुओं पर विचार किया है। उसकी कठिनाइयों, उसके कठोर तथा करुण जीवन को समझा है। परंतु यह सब होते हुए भी वे नारीजीवन का पक्षपात-रहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्णय नहीं कर सके। पुरुष जाति की ओर उनका कुछ पक्षपात रह ही गया है, यह पक्षपात 'अजातशत्रु' में अत्यधिक स्पष्ट हो चला है, विशेष कर प्रसेनजित तथा शक्तिमती के चरित्र-चित्रण में। वे इस नाटक के अंत में शक्तिमती द्वारा प्रसेनजित से क्षमा मँगवाते हैं, परंतु शक्तिमती के उस नीरव अपमान, उसके दासीपुत्री होने के दुर्भाग्य को, अपने दुर्विनीत पुत्र के लिये उसे जो भयानक अपमान प्रसेनजित के द्वारा मिला उसे भूल जाते हैं, फलस्वरूप प्रसेनजित गौरवपूर्ण वेष में केवल क्षमा करता दृष्टिगोचर होता है, शक्तिमती से अपने कृत्यों के लिये क्षमा माँगता हुआ नहीं। परंतु इसके लिये प्रसादजी को हो दोषी नहीं ठहरा सकते; आखिर वे भी पुरुष ही थे, और प्रभुत्व का जो रक्त भारतीय पुरुष की रग-रग में फैला हुआ है उसका बल एकबारगी तो नहीं मिट सकता।

प्रसाद नारी का स्थान गृहस्थी के शांत तथा पवित्र वातावरण में ही देखते हैं, किंतु यह भी तो प्रश्न है कि आज वह वातावरण कितना शांत तथा पवित्र रह गया है? गृहस्थी के बाहर, जीवन की क्रूर विभीषिका में नारी को सिमेटना वे पसंद नहीं करते वरन् उसे शांत वातावरण में पुरुष की छत्रछाया में रहती हुई, उसके जीवन में सुख-शांति तथा माधुर्य की सृष्टि करते हुए वे देखना चाहते हैं। परंतु प्रसाद सदैव सजग रहे हैं कि वह छत्रछाया, जिसके संरक्षण में उनकी नारी निवास करती है प्रबल तथा शीतल हो। उसमें नारी की रक्षा करने का साहस हो। प्राणों पर खेलकर वह नारी के गौरव तथा पवित्रता की रक्षा करे; यदि वह ऐसा नहीं कर सकता तो चाहे पति ही क्यों न हो नारी को उसका त्याग कर देने का अधिकार है। इस सिद्धांत का सुंदर विवेचन प्रसाद ने अपने 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में किया है। जहाँ पुरुगुप्त की विवाहिता पत्नी, यद्यपि वह विवाह केवल लौकिक रीति से ही हुआ है, आत्मा तथा शरीर का इससे कुछ भी संबंध नहीं, अपने कायर पति द्वारा सहर्ष शत्रु के भोगविलास की सामग्री बनने भेज दी जाती है। उस समय अपना सब आत्मगौरव तथा मान-अपमान भूल कर ध्रुवस्वामिनी किस कातरता-पूर्वक स्वामी के चरणों में लोट-लोट कर अपनी रक्षा की भीख माँगती है, अपने नारीत्व का प्रतिदान चाहती है, अपनी पवित्रता की रक्षा की प्रार्थना करती है, परंतु कायर पुरुगुप्त का हृदय नहीं पसीजता। उस कायर प्राणी के हृदय ही कहाँ था जो पसीजता, जो पत्नी के पत्नीत्व की रक्षा करता! परंतु चंद्रगुप्त यह सब नहीं देख सकता, और प्राणों पर खेल कर वह, नारी-सुलभ पवित्रता तथा गौरव की रक्षा करता है; और ध्रुवस्वामिनी कायर पुरुगुप्त के जीते जीं, धर्माचार्यों तथा परिषद की सम्मति से अपने रक्षक, आराध्यदेव चंद्रगुप्त को वरण करती है। प्रसाद ने इस ऐतिहासिक कथा के आवरण में नारी-जीवन के जिस करुण तथा विषम अंग पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश डाला है वह आज की एक समस्या है। और प्रसाद का यह आंदोलनकारी निर्णय कदाचित् बहुतों को खटके परंतु इससे हमें कवि के उस विशाल दृष्टिकोण का, उस विस्तृत विचारधारा का पता लग जाता है जो आज उन्हें वर्तमानकाल का सर्वश्रेष्ठ कवि होने का गौरव प्राप्त करा सकी है।

अपने काव्य तथा अन्य रचनाओं की सौंदर्यधारा में जीवन की जिन विषम समस्याओं, को प्रसाद ने हल किया है वे वर्तमान जीवन की विभीषिका में प्रकाश की किरणें छोड़ पथप्रदर्शक का काम कर रही है। जीवन की कठिनाइयों तथा दुखों का सामना करने को प्रोत्साहित करते हुए प्रसाद जीवन में वीरता तथा साहस की सृष्टि करते हैं और संदेश देते हैं बढ़ते चलने का—"संकीर्ण कगारों के नीचे, शत शत झरनों" की नाईं बलपूर्वक आगे बढ़ने का और "पृथ्वी की आँखों में छाया बन कर" "सूने तम में ज्योति बना" अपनी रक्षा करता हुआ, अपने चरित्र को दृढ़ करता हुआ वे मानव को उन्नतिमय पथ पर आरूढ़ करते हैं और कहते हैं—

"पीड़ा की धूल उड़ाता सा, बाधाओं को ठुकराता सा,
कष्टों पर कुछ मुसक्याता सा, ऊपर ऊँचे सब झेल चले।"

भारतीय आदर्श की वर्तमान विभूति प्रसाद हमारे गौरव और चिंतन की वस्तु हैं।

रसखान और घनानंद

[श्री शंभुप्रसाद बहुगुना, एम० ए०]

हिंदी-साहित्य में जिस समय अधिकांश कवि राधा और कृष्ण को देवत्व की भावना से च्युत कर अपनी कलुषित वासनाओं के रंग से चित्रित कर रहे थे, उस समय भी भावना की पवित्रता, हृदय की तल्लीनता और भाषा की स्वाभाविकता के साथ रस-खान और घनानंद ऐसे कुछ उच्च कोटि के कवि अपने पवित्र प्रेम-काव्य से साहित्य को संपन्न करने में लगे हुए थे।

रसिक रसखान, काव्य में जिस हृदय के रस को लेकर आये थे वह कृष्णभक्ति की सौंदर्य-माधुरी से परिपूर्ण होकर परिष्कृत हो चुका था। बनिये के छोकरे अथवा खत्रानी पर मुग्ध होने वाले रसखान को जब लावण्यसार कृष्ण-राधा की मोहनी मूर्ति के दर्शन एक बार हो गये तब उनके लिये राधा और कृष्ण प्रेम-बाटिका के माली-मालिन थे—

"प्रेम अयनि श्रीराधिका, प्रेम-बरन नँदनंद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्रेम-बाटिका' के दोऊ, माली-मालिन द्वंद ॥''

और रसखान के हृदय ने अपनी भावनाओं के पुष्प इन माली-मालिन के चरणों में अर्पित किये। रसखान के—

''मानुष हौं तो वहीं रसखान बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तौ वही गिरि को जो कियो कर छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन॥''

''या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवो निधि को सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं।
रसखानि कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिन हू कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर बारौं॥''

इन भाव-सुमनों की निकाई पर किस का मन नहीं बिक जाता! अपनी सहृदयता से रसखान ने अपने काव्य में जीवन के सरल तत्वों का सौंदर्य भरा है।

''रसखान जानता है कि यथार्थ कविता का ध्येय (दार्शनिक दृष्टि की सहायता के बिना ही) जीवन के सरल तत्वों में सौंदर्य का उद्बोधन करना है। वह दार्शनिक तत्वों को जानता हुआ भी उनसे पृथक् रहता है, और केवल अपनी कविता के बल से विशुद्ध सौंदर्य का चित्र खींचता है। वह एक स्थान पर कहता है—

''ग्वालन संग जैबो, बन ऐबो सुगाइन संग, हेरि तात गैयों हा हा नैन फरकत हैं।
ह्याँ के गजमोती माल बारौं गुंज मालन पै, कुंज सुधि आए हाथ प्रान धरकत हैं।
गोबर को गारो सुनौ मोहि लगै प्यारो, कहा भये महल सोने को जटत मरकत हैं।
मंदर ते ऊँचे यह मंदिर हैं द्वारिका के, ब्रज के खिरक मेरो हिये खरकत हैं॥

सरलता के ऊपर सौंदर्य की कैसी सुंदर छाप है! प्रत्येक पद में सौंदर्य-सार छना पड़ता है। रसखान गोबर से लेकर गणेश तक में एक ही सौंदर्यतत्व का स्पंदन देखता है, उसके यहाँ अच्छा और बुरा, स्थूल और सूक्ष्म एक ही पदार्थ के दो पहलू हैं। वह ऐश्वर्य को भोग चुका है, उसने कृत्रिम जगत के हर एक पहलू को भली-भाँति देखा है, अंत में वहाँ कुछ न पाकर वह प्रेम के अविनाशी मंदिर का पुजारी बना है। फलतः उसके गीतों में अनुभव का प्रकाश है, यथार्थ ज्ञान का बल है और यथार्थ भक्ति की सुनहरी बोल है। वह तत्वों की पृथक्-पृथक् विवेचना कर चुका है और अब उनके मार्मिक निष्कर्ष को समझने का प्रयत्न कर रहा है।

''इसमें संदेह नहीं कि रसखान की कविता में जीवन की घोर समस्याओं पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश नहीं डाला गया। घोरता से उत्पन्न हुए उत्साह तथा साहस का उसकी कृति में अभाव है। गुलाब के पुष्प के सौंदर्य-निरूपण में मस्त हो उसने काँटों को भुला दिया है। उसकी दृष्टि ऊष्णतम (ग्रीष्म) वात्या के पश्चात् आने वाले जलसार पर तो पड़ती है, परंतु उस उदात्त शांति को उत्पन्न करने वाले वातावरण के संताप पर नहीं जाती। परंतु इन सब अपूर्णताओं के रहते हुए भी रसखान की कविता में एक प्रकार का बल है, एक प्रकार की संसूचना है जो इस बात को बताती है कि वह जीवन-वैभव को और वैभवजन्य क्लेशों को भुगत चुका है। वह वैभव की राशि में बैठ कर भी आत्मा के आंतरिक संघर्ष से संतप्त हो चुका है। 'कोटिन हूँ कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं' से वैभव के प्रति उसकी यथार्थ घृणा (वितृष्णा) टपक रही है। 'आठहुँ सिद्धि नवों निधि को सुख, नंद की गाइ चराइ बिसारौं' से उसके मन का विकट निर्धारण प्रकट होता है। उसकी कविता प्रेममय होते हुए भी विषय-वासना से ऊपर है। उसमें शारीरिकता को नियंत्रित करके सच्चे विश्वजनीन प्रेम का व्याख्यान किया गया है। रसखान ने बहुत कुछ देखा सुना, उस सबका उसने 'विशुद्ध प्रेम' में निष्कर्ष निकाला, और उस प्रेम की धार्मिक भावयोग में व्याख्या की। उसकी कविता में लावण्य है, लालित्य है, कला है, परंतु इन सब को उसने कविता के अंतरंग (अर्थात् भाव) के प्रति गौण रखा है, यही उसकी विशेषता है।"[1]

रसखान से भाव घनानंद के काफ़ी मिलते-जुलते हैं। रसखान और घनानंद दोनों ने सवैये और कवित्त लिखे। और रसखान ने तो सवैयों में इतनी प्रसिद्धि पाई कि रसीले सवैये का नाम ही 'रसखान' हो गया। फिर भी रसखान और घनानंद में एक बड़ा भारी अंतर है। रसखान प्रेम में मस्त लापरवाह कवि थे। उनकी भाषा भी उनके भावों के अनुरूप सीधी-सादी है। किंतु घनानंद के लिये प्रेम खेल न था। उन्होंने उसके दूसरे पहलू को भी देखा। दुख ने उनके प्रेम को शुद्ध और गहरा कर दिया, उनकी भाषा को गंभीर और व्यंजक बना दिया। उनकी भावनाएँ भी ऐसी हैं कि उनका मूल्य आँसू नहीं चुका सकते। रसखान ने वियोग को, दुःख को, हलकी नज़र से देखा है और केवल बाहर से देखा। घनानंद अपने भीतर ही लीन हो गये हैं, उन्हें बाहर देखने की फ़ुर्सत ही नहीं रही। एक बार वंशी बजाते-बजाते राधा की गली से कृष्ण निकल गये, इसका वर्णन रसखान और घनानंद दोनों ने किया है। रसखान की एक सखी तो दूसरी सखियों से कह रही है—

"बंसी बजावत आनि कढ़ो सो गली में अली कछु टोना सों डारैं।

[1] सूर्यकांत शास्त्री : 'हिंदी-साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेरि चितै तिरछी करि दृष्टि चलो गयो मोहन मूठी सी मारैं।
ताही घरी सों परी धरी सेज पै प्यारी न बोलति प्रानहूँ वारैं।
राधिका जी है तौ जीहैं सबै न तौ पीहैं हलाहल नंद के द्वारें॥"

किंतु घनानंद की एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है—

"डगमगी डगनि धरनि छबि ही के भार, ढरनि छबीले उर आछी बनमाल की।
सुंदर बदन कोटि मदन वारौं, चित चुभी चितवनि लोचन विसाल की।
कालिह इहि गली अली निकस्यो अचानक ह्वै, कहा कहौं अटक भटक तिहिं काल की।
भिजईहौं रोम रोम आनंद के घन छाई, बसी मेरी आँखिन में आवनि गुपाल की॥"

रसखान की राधा में और घनानंद की इस गोपी में कितना अंतर है! कृष्ण की तिरछी चितवन से घायल होकर राधा तो बिस्तर पर पड़ गई, उसने बोलना-चालना छोड़ दिया, किंतु इस गोपी को देखिये। वह कृष्ण के दर्शन को भूलती नहीं। उसके लिये वह एक उत्सव है। कृष्ण को देखकर वह आनंद से भीग जाती है। कृष्ण की चितवन उसके हृदय में चुभ जाती है, पर वह बोलना-चालना बंद नहीं करती। अत्यंत प्रेम और अनुराग के साथ उस मिलन का वर्णन अपनी सखी से करती है—"बसी मेरी आँखिन मैं आवनि गुपाल की।"

घनानंद की गोपियाँ, रसखान की गोपियों की भाँति[1] अचानक बावली नहीं हो उठतीं। वे धैर्य खोने की बात कहती हुई भी अपना धैर्य नहीं खोतीं, और अपनी व्यथा शांत भाव से अपनी सखियों को सुनाती हैं, केवल इतना भर कहती हैं— 'सखि, मेरा जो कुछ था उसे वह लूट ले गया, अब मेरे पास मेरा कुछ नहीं है'—

"तब तें न मेरे चित चैन कहूँ रंचक हू धीरज न धरै सो न जानै धौं कितै गयौ।
नैकु ही मैं मेरो कछु मोपै न रहन पायो, औचक ही आइ भटू लूट सी बितै गयौ।"

ये गोपियाँ, रसखान और घनानंद के प्रेम की भावनाओं की मूर्तियाँ हैं। रसखान की गोपियों में 'आह-ऊह' की अधिकता है, लेकिन घनानंद की गोपियाँ धीर, शांत, संयत और गंभीर प्रेम की तीव्र वेदना से भरी हैं।

रसखान के प्रेम में तल्लीनता है, पवित्रता है, किंतु विरह की वह तीव्रता नहीं है जो प्रेम को गंभीरता देती है। किंतु घनानंद इस (विरह की) गंभीरता के कारण ही

[1] आजु भटू इक गोपवधू भई बावरी नेकु न अंग सम्हारै।
माल अघात न देवनि पूजत सासु सयानी सयानी पुकारै॥
यों रसखानि घिर्‌यो सिगरो ब्रज कौन को कौन उपाय विचारै।
कोउ न कान्हर के कर तें वह बैरिनि बाँसुरिया गहि जारै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय के अन्य कृत्रिम विरह-वर्णन करने वाले कवियों से अलग पहचाने जा सकते हैं। अन्य कवियों की भाँति शास्त्रीय पद्धति पर प्रेम का वर्णन नहीं किया है, वरन् उनका प्रेम-विरह-वर्णन स्वात्मभूति का करुण आत्म-निवेदन है। विरह की आंतरिक दशाओं में होता हुआ उनका प्रेम अपने चरम उत्कर्ष को पहुँचा है। भाव की तल्लीनता में उन्होंने प्रिय का जो रूप देखा उसमें शारीरिक सौंदर्य से कहीं अधिक मानसिक सौंदर्य है। प्रिय के शरीर से परे वे हृदय के आनंद को पहचानने में समर्थ हुए हैं। उनके प्रेम की कलुषता विरह के आँसुओं और उद्वेग की अग्नि से भस्म हो चुकी थी। कृष्णभक्ति ने उसे रस की सौंदर्य-मग्नता से रंजित कर दिया था।

भगवान् का प्रेमी वही हो सकता है जिसने संसार से पहले प्रेम सीख लिया हो। सांसारिक प्रेम ही भगवान् की ओर मुड़ने में भक्ति में परिणत हो जाता है। संसार में जो जितना ही अधिक रसिक रहा है, वह भगवान् की ओर बढ़ने पर उतना ही बड़ा भक्त हुआ है। तुलसी राम के अनन्य भक्त तभी हो सके, जब रत्नावली को अपनी सुध-बुध खोकर, पहले प्यार कर चुके थे। नंददास, रसखान, तुकाराम आदि अनेक भक्त कवियों के जीवन में लौकिक प्रेम की धारा को ही पीछे हम भगवान् की ओर मुड़ती पाते हैं। यही बात घनानंद के जीवन में भी हुई। एक बार सुजान को उन्होंने जी-जान से प्यार किया, उसके प्रेम में अविरल आँसू बहाए। उसके संगीत-नृत्य में अपनी सुध-बुध खो दी। किंतु जीवन की विषमता ने ठोकर देकर जब उनके हृदय की गंगा को पलट दिया तो उनकी सुजान-सागरोन्मुखी सरस्वती आनंदघन कृष्ण और राधा की ओर बहने लगी।

घनानंद एक रसिक व्यक्ति थे। बादशाह (मुहम्मद शाह) के दरबार में नाच-गान-मुजरा और बाहर रासलीला देखने में उन्हें विशेष आनंद आता था। रूप का आकर्षण, प्राणों की मोहन वाणी और संगीत-नृत्य आदि कलाओं का प्रदर्शन उन्हें कृष्ण की लीलाओं और सुजान के नाच-मुजरों दोनों में मिला, किंतु जहाँ कृष्ण की लीलाओं में अनुकरण-मात्र की भावना उनके हृदय पर प्रभाव डाल रही थी, वहाँ दूसरी ओर 'निकाई की निधि' 'रूप गुन आगरि नवेली नेह नागरि' सुजान के 'आसव घूमरे' नयनों की शोभा और उनके कोकिल-कंठ से उठती हुई मधुर स्वर-लहरी उनके भावुक हृदय को विकल कर देती थी। वे सुजान की एक-एक ख़ूबी पर बिक गये—

"रूप मतवारी घनआनंद सुजान प्यारी घूमर कटाच्छि घूम करै कौन पै थिरैं।
नाच की चटक लसै अंगनि मटक रंग लाड़िली लटक संग लोइनि लगे फिरैं॥
अभिन निकाई निरखत ही बिकाई मति गति भूली डोलै सुधि सौंधौ न लहौं हिरैं।
रावरे तरवानि तरें चूर चोप चाड़ पूरे पाँवड़े लौं प्रान रीझि कनावड़े ह्वै गिरैं॥"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुजान के मुख के सामने चंद मंद और सरोरुह मलीन जँचने लगे। 'अन्यारे' नयनों की तिरछी चितवन में रति प्रीतम के वाण गिरते दिखाई देने लगे, और उसकी हँसी में चमेली की चौसर बिछने लगी—

"आनन की सुघराई कहा कहौं जैसि बिराजति है जिहिं औसर।
चंद तो मंद, मलीन सरोरुह, एक हू रंग न दीजिये जो सर॥
नैन अन्यारे तिरीछी चितौनि मैं हेरि गिरै रति-प्रीतम को सर।
जान हिये घनआनँद सों हँसि फैलि फबै सु चँबेली की चौसर॥"

सुजान के संगीत की तानें उनके प्राणों में पैठ जाती थी। उसकी 'बिना ही बनाय की बानिक' सची और रति के रूप को जीतने में समर्थ होती थी—

"तेरी बिनाहीं बनाय की बानिक जीतै सची रति रूप भलापन।
कों कवि सो छवि को बरनै रुचि राखनि अंग सिंगार कलापन॥
कान ह्वै तान को रूप दिखावति जान जबै कछु लागो अलापन।
नाचहिं भाव को भेद बतावतु है घनआनँद भौंह चलापन॥"

ऐसी छवि के 'बिसाल बंक' 'आसव घूमरे' नयन घनानंद के प्राणों को बेधने लगे—

"बंक बिसाल रँगीले रसाल छबीले कटाच्छ कलानि मैं पंडित।
साँवले सेत निकाई निकेत हियै हरि लेत है आरस मंडित॥
बेधि के प्रान करै फिरि दान सुजान खरे भरे नेह अखंडित।
आनंद आसव घूमरे नैन मनोज के चोजनि चोज प्रचंडित॥"

आसव घूर्णित नेत्रों से यही आशा की जा सकती है। उनकी शोभा किन्नरों को भी मोहित कर देती है—

"गीतांतरेषु श्रमवारि लेशैः किंचित् समुच्छ्वासितपत्रलेखम्।
पुष्पासवाघूर्णितनेत्रशोभिः प्रियामुखं किम्पुरुषश्चुचुम्बे॥"

—कुमार-संभव

सुजान का रोम-रोम नेह की निकाई में रसा हुआ था। वह एड़ी से चोटी तक अनूठे अंगों वाली थी। उसके अंगों की रूप-माधुरी वस्त्रों से छन-छन कर छिटकती थी। उसकी हँसी में जुन्हाई खिल जाती थी—

"एड़ी तें सिखा लों है अनूठिये अँगेठ आछी रोम रोम नेह की निकाई में रसनि है।"

"गति लै चलत लखै मति पंगु होति दरसति अंग रंग माधुरी बसन छनि।"

"हँसनि लसनि घन आनँद जुन्हाई छाई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस 'निकाई की निधि' के जिस-जिस अंग पर दृष्टि पड़ती थी उसी में सौंदर्य की तरंगें उठती दिखाई देती थीं—

"अँग अंग तरंग उठै दुति की परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ।"

उसकी शोभा जब देखिये नई ही नई दिखाई देती है—

"जब जब देखिये नई सो पुनि पेखिए यों जानि परी जान प्यारी निकाई की निधि हैं॥"

इस विचित्रता से चकित हो कर सोचने लगते हैं—

"रूप को चरित्र है अनंदघन जान प्यारी, ए किधौं विचित्रताई मो चित चितेरे की ?"

वास्तव में वह मन चितेरे की ही 'विचित्रताई' थी जिसने घनानंद को प्रेम के इतने विचित्र रूप दिखाये ।

मन पर पड़ने वाले सौंदर्य के प्रभाव को घनानंद ने भली-भाँति पहचाना है, किंतु साथ ही सौंदर्य-वर्धक बनाव-श्रृंगार को भी वे भूले नहीं हैं । साँवरी साड़ी पहने, अपनी चाल से मरालों को तरसाने वाली, श्याम-घटा में स्थिर बिजली सी सुजान के नाव-श्रृंगार पर उनकी दृष्टि गई है । सुजान साँवरी साड़ी पहिने है—

"कैसी फबी घनआनँद चोंपनि सों पहिरी चुनि साँवरी सारी ।"

उसके नूपुरों की ध्वनि वीणा के स्वरों को भी अपने में लीन कर देती है—

"नूपुर बीन सों लीन कै प्यारी प्रवीन अधीन किए सुर साँचनि ।"

ख़ूबी से बँधे हुए उसके जूड़े पर मोतियों की माला गुँथी हुई है—

"कहा कहौं कौन कौन बिधि की बँधनि बँध्यो सुकस्यो न उकस्यो बनाव लखि जूरे कौ ।"

"पानिप मोती मिलाय गुही गुन पाट पुही सु जुही अभिलाषी ।"

बिखरी हुई अलकें लोल कपोलों पर कलोल कर रही हैं और कंठ में जलजावलि है—

"लट लोल कपोल कलोल करैं कलकंठ बनी जलजावलि द्वै ।"

आँखों का अंजन त्योरियों को और ओठों का पान मुख के रंग को ताका करता है :—

"अंजन त्यौरहिं ताक्यो करै नित, पान लखै मुख त्यों रंग चाइनि ।"

मेंहदी पाँवों से रंग और सुरभि अंगों से सुगंधि पाकर अपना भाग्य सराहती है—

"मिंहदी रंग पाइनि रंग लहै सुठि सोंधो सु अंगनि संग बसै ।"

कलाई के रंग से हाथों की पहुँचियाँ पन्नों की सी और चूड़ियाँ नीलम की सी लगती हैं—

"गोरे रूबा पहुँचानि विलोकत रीझि रँग्यो लपटाय गयो है ।
पन्ननि की पहुँचीनि लखें इन आभा तरंगनि संग रयो है ॥
नील मनीन हिएँ लवनी रुचि रूप सनो सुघनी न छयो है ।
चारु चुरीनि चितै घनआनँद चित्त सुजान के पानि भयो है ॥"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'लुनाई की लछमी', 'मोहिनी की खानि' इस सुजान पर तो रीझ भी रीझ जाती—
"रीझौ रीझि भींजे घनआनँद सुजान महा वारियै कहा सकोच सोचन ही हारिये ।"
घनानंद तो मनुष्य थे । उनका चित्त सुजान के हाथ बिक गया । सुजान पर सौ जान से क़ुर्बान होने पर लोगों ने ख़ूब फब्तियाँ कसीं । पर सच्चे प्रेमी घनानंद को इसकी कब चिंता थी । वे तो कहते हैं—

"बावरे लोगन सों घनआनँद रीझनि भीजि कै खीजि बकै को ।"

ऐसी सुजान से बादशाह के कोप के कारण रसिक घनानंद को दूर हो जाना पड़ा ! सुजान की एक-एक सुध घनानंद को बेसुध करने लगी—

"वहै मुसकानि वहै मृदु बतरानि वहै लड़कीली बानि आनि उर मैं अरति है ।
वहै गति लैनि औ बजावनि ललित बैन वहै हँसि दैन हियरा ते न टरति है ।
वहै चतुराई सों चिताई चाहिबे की छबि वहै छैलताई न छिनक बिसरति है ।
आनंद निधान प्रान प्रीतम सुजान जू की सुधि सब भाँतिन सौं बेसुधि करति है ॥"

घनानंद विरही यक्ष की भाँति कभी मेघ के हाथ अपने आँसुओं का सँदेसा सुजान को भेजते हैं, कभी पवन से उन चरणों की धूलि ले आने की प्रार्थना करते हैं। एक सच्चे प्रेमी की भाँति विरह की व्यथा को मौन होकर सहते हैं कभी भी प्रेम को अमर्यादित नहीं होने देते। अपनी चिंता उन्हें उतनी नहीं है जितनी प्रिय की। इसीलिये वे कहते हैं—

"जाहि जु लागे सु ताहि सहैगो, दहैगो, परयौ, लहि तू तो सदा सुख ।"

वियोग में जलाना ही यदि प्रिय को अच्छा लगता है तो प्रेमी प्रसन्नता से जलेगा और मरेगा पर प्रिय के इस व्यवहार को देखकर किसी ने यदि उन्हें हित (प्रेम) हीन कह दिया तो यह प्रेमी (घनानंद) के लिये बेमौत की मौत हो जायगी—

"मन भायो वियोग में जारिबो ज्यो तो तिहारी सौं नीके जरैंऽरु मरैं ।
पै तुम्है मत कोऊ कहौ हित ही न सु या दुख बीच अमीच मरैं ॥"

क्या घनानंद की यह प्रेम-भावना, तुलसी की—

"नाहिन नरक परत यों कहँ डर जद्यपि हौं अति हारौ ।
यह बड़ि त्रास दास तुलसी कहँ नामहुँ पाप न जारौ ॥"

इस भावना से किसी भी भाँति उतर कर है ?

सच्चा प्रेमी अपने प्रिय के चरित्र पर कलंक नहीं आने देना चाहता । स्वयं वह भले ही अपने आराध्य को, अपने प्रिय को खरी-खोटी सुनाये किंतु वह कभी भी उनके चरित्र को आदर्श से नहीं गिरने देता । घनानंद के राधा-कृष्ण पवित्र हृदय के राधा-कृष्ण हैं, रीतिकालीन कवियों के राधा और कृष्ण के आवरण में छिपे उच्छृँखल नायक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नायिका नहीं। घनानंद अपने कृष्ण की महत्ता को जानते हैं। वह उनके दर्शन के लिये बेचैन रहते हैं—

"कौन को सुजस जोन्ह अमल अपूरब को, जग में उदोत देखियत दिन रैन है।
जाकी जोति जागै रस पागै हो चकोर नैन, बुध कवि मित्र को पोषै चैन है।
नेह निधि बाढ्यो घनआनँद गुननि सुनि, अचिरज है न सो निहारौ कहूँ मैंन है।
विरह बिडारि औं विदारि दुख तम कब, सींचौगे श्रवन कहि सुधा सने बैन है।"

घनानंद के कृष्ण स्नेह की मूर्ति, प्रेम के अपार सागर और बिना बूझे रीझने वाले उदार नंदनंदन हैं—

"चाह के आलबाल और अचाह के कलपतरु, कीरति मयंक प्रेम-सागर अपार हैं।
नित हित संगी मन मोहन त्रिभंगी मेरे, प्राननि अधार, नंदनंदन उदार हैं॥"

वे सौंदर्य ही सौंदर्य के बने हैं। राग की ध्वनि की तरह, वारिधि की तरंगों की भाँति उनके अंगों की शोभा आनंद सरसाने वाली है—

"छबि की निकाई एहो मोहन कन्हाई, कछू बरन न जाई जो लुनाई दरसति है।
बारिधि तरंग जैसे, धुनि राग रंग जैसे, प्रति छिन अधिक उमंग सरसति है।"

ऐसे नित्य नवीन सौंदर्य वाले उदार नंदनंदन की रसमयी छवि घनानंद की जिन आँखों में समा गई थी वे धूम धूँधर क्यों समेटतीं?—

"जाके उर बसी है रसमयी छवि साँवरे की, ताहि और बात नीकी कैसे करि लागि है।
चषनि चषक पूरि पियो जिन रूप-रस, कैसे सो गरल सनी सीखनि सों पागि है॥
आनंद को घन श्याम सुंदर सजल अंग, छाड़ि धूम धूंधरि सों कैसे कोऊ रागि है।"

स्थायी समिति का छठवाँ अधिवेशन

स्थायी समिति का छठवाँ अधिवेशन रविवार २८ भाद्रपद १९९९, तदनुसार ता० १३ सितम्बर १९४२ को दिन के दो बजे से सम्मेलन के संग्रहालय भवन में हुआ। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :—

१. सर्वश्री अमरनाथ झा; २. चन्द्रशेखर वाजपेयी; ३. उमेश मिश्र; ४. गंगाधर इन्दूरकर; ५. ओंकारनाथ मिश्र; ६. ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल; ७. प्रकाशनारायण सप्रू; ८. रामचरण अग्रवाल; ९. भगवती प्रसाद वाजपेयी; १०. उदयनारायण तिवारी; ११. आनन्द कौसल्यायन; १२. रामचन्द्र टंडन; १३. लक्ष्मीनारायण दीक्षित; १४. रामलखन शुक्ल; १५. रामनाथ 'सुमन'; १६. वाचस्पति पाठक; १७. शुकदेव चौबे; १८. भगीरथप्रसाद दीक्षित; १९. गणेश पांडेय; २०. रामप्रसाद त्रिपाठी (प्रधानमंत्री)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—नियमानुसार श्री अमरनाथ जी झा ने सभापति का आसन ग्रहण किया। पिछली बैठक का कार्यविवरण पढ़ा गया और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

२—श्री प्रधानमंत्री जी ने स्वागत समिति द्वारा प्राप्त निम्नलिखित प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित किया :—

"देश में राजनैतिक संघर्ष के कारण जो स्थिति उत्पन्न हो गयी है उसे देखते हुए यह संभव नहीं जान पड़ता कि सम्मेलन का अधिवेशन दशहरे के अवसर पर हो सकेगा। इसलिए स्वागत समिति यह निश्चय करती है कि सम्मेलन की उक्तपूर्व निश्चित तिथि स्थगित की जाय और देश की स्थिति ठीक होने पर फिर उपर्युक्त तिथियाँ अधिवेशन के लिए निश्चित की जाँय।"

निश्चय हुआ कि मंत्री, स्वागत समिति को लिखा जाय कि वे बड़े दिन की छुट्टी में अधिवेशन का प्रयास करें। यदि बड़े दिनों में अधिवेशन करना संभव न हो तो तुरंत कार्यालय को सूचना दें।

३—श्री प्रधान मंत्री जी ने बताया कि २६ जुलाई को स्थायी समिति की बैठक में निश्चय हुआ था कि जिन सदस्यों का स्थायी समिति की सदस्यता का शुल्क कार्यालय में नहीं आया है, उनके स्थान रिक्त समझे जायँ। इसके पश्चात् [श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़, नीतीश्वरप्रसादसिंह और श्री मुरलीधर जी लोपा] कुछ सदस्यों का शुल्क कार्यालय में प्राप्त हुआ है।

निश्चय हुआ कि इन सज्जनों का शुल्क लौटा दिया जाय और रिक्त स्थानों की की पूर्ति का विषय आगामी स्थायी समिति में उपस्थित किया जाय।

४—श्री प्रधानमंत्री जी ने निम्नलिखित राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं का नाम उपनियम १८ घ के अनुसार स्वीकृति के लिए उपस्थित किया और बतलाया कि ता० ३० अगस्त १९४२ की कार्यसमिति ने स्थायी समिति से इन संस्थाओं को स्वीकार करने की सिफ़ारिश की है :—

१. हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग; २. विहार विद्यापीठ, पटना; ३ गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद; ४. काशी विद्यापीठ, काशी; ५. गुरुकुल, हरिद्वार; ६. गुरुकुल, वृंदावन; ७. महाविद्यालय, ज्वालापुर; ८. ऋषिकुल हरिद्वार; ९. प्रेम-विद्यालय, वृंदावन; १०. कन्या महाविद्यालय, जालन्धर; ११. कन्या विद्यालय, देहरादून; १२. महिला विद्यापीठ, प्रयाग; १३. गोवर्द्धन साहित्य विद्यालय, मथुरा; १४. महाराष्ट्र विद्यापीठ, पूना; १५. हिन्दी प्रचारक विद्यालय, मद्रास।

निश्चय हुआ कि कार्य-समिति की उपर्युक्त सिफ़ारिश स्वीकार की जाय।

५—श्री प्रधान मंत्री जी ने बताया कि ता० ३ मई १९४२ की स्थायी समिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने नियम-परिवर्तन संबंधी प्रस्तावों पर विचार करने के लिए एक उपसमिति बनाई थी। उक्त समिति ने अपनी रिपोर्ट विचारार्थ स्थायी समिति के समक्ष भेजी है। निश्चय हुआ कि उपर्युक्त रिपोर्ट प्रकाशित करके स्थायी समिति के सब सदस्यों के पास भेजी जाय। तत्पश्चात् आगामी स्थायी समिति में यह विषय विचारार्थ उपस्थित कियाजाय।

६—श्री प्रधान मंत्री जी ने मध्य-भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की कार्य-कारिणी द्वारा स्वीकृत निम्नलिखित प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित किया और बतलाया कि इस प्रस्ताव को मैंने मंत्री राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति वर्धा के पास ता० १४।२।४२ को समिति के विचारार्थ तथा उचित कार्यवाही के लिए भेज दिया था। किंतु वहाँ से अभी कोई उत्तर नहीं प्राप्त हुआ है।

प्रस्ताव

"यह समिति अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन का ध्यान राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति के विशेष-रूप से संगठित करने और व्यवस्थित करने की ओर आकर्षित करती है। क्योंकि इधर गुजरात आदि प्रान्तों में जिनकी भाषा संस्कृत प्रचुर है और हिन्दी के निकट है उन प्रान्तों के स्कूलों में शिक्षा-विभाग की ओर से हिन्दी शिक्षकों को विवश किया जा रहा है कि वे उर्दू लिपि अनिवार्य रूप से सीखें और सिखावें, इसी प्रकार हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की ओर से भी राष्ट्रभाषा प्रचारकों के निकट ऐसी ही आज्ञाएँ जा रही हैं कि वे हिन्दी के साथ उर्दू लिपि आवश्यक रूप से सीखें और प्रचारित करें यह दुर्भाग्यवश उन प्रान्तों की संस्कृति के लिए घातक प्रयत्न हो रहा है, जब कि उन प्रान्तों की मुस्लिम बालाएं भी उर्दू लिपि को दुरूह और अप्रिय अनुभव करती हैं। सम्मेलन अति शीघ्र इन प्रान्तों में समस्त शक्ति के साथ शुद्ध हिन्दी के आन्दोलन को बल प्रदान करे और इस अवांछनीय अथच असांस्कृतिक प्रचार को रोके।"

निश्चय हुआ कि पूना प्रस्ताव की प्रतिलिपि, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा के पास उचित कार्यावाही के लिए भेजी जाय, और इस सम्बन्ध में गुजरात साहित्य सम्मेलन से पूछा जाय कि उन्होंने इसके लिए क्या कार्यवाही की है?

७—श्री प्रधान मंत्री जी ने हिन्दी प्रचार संघ, पुणें की कार्य कारिणी के द्वारा प्रेषित निम्नलिखित प्रस्ताव स्थायी समिति के विचारार्थ उपस्थित किया।

प्रस्ताव

"महाराष्ट्र प्रान्त में हिन्दी का प्रचार बढ़ जाय, इस लिए हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति की सभा, संघ अपनी ओर से पुणें शहर में निमंत्रित करे। यह प्रस्ताव प्रधान-मंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पास विचारार्थ भेजा जाय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि पूना में स्थायी समिति का एक अधिवेशन किया जायगा, किंतु समय अनुकूल होने पर यह बैठक हो सकेगी ।

इसके पश्चात् सभापति को धन्यवाद देकर बैठक विसर्जित हुई ।

रामप्रसाद त्रिपाठी
प्रधान मंत्री

कार्यसमिति की पाँचवीं बैठक

कार्य समिति की बैठक रविवार ३ श्रावण संवत् १९९९, तारीख १९ जुलाई १९४२ को १ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में हुई । निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे—

१. सर्वश्री अमरनाथ झा; २. पुरुषोत्तमदास टंडन; ३. रामलखन शुक्ल; ४. उदयनारायण तिवारी; ५. वाचस्पति पाठक; ६. केदारनाथ गुप्त; ७. रामनाथ 'सुमन'; ८. चन्द्रशेखर वाजपेयी, ९. श्रीनारायण चतुर्वेदी; १०. दयाशंकर दुबे; ११. लक्ष्मीनारायण दीक्षित; १२. रामचन्द्र टंडन, १३. बाबूराम सक्सेना; १४. जगन्नाथप्रसाद शुक्ल; १५. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'; १६. रामप्रसाद त्रिपाठी (प्रधान मंत्री) ।

१—नियमानुसार श्री अमरनाथ जी झा ने सभापति का आसन ग्रहण किया । पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़ी गई और स्वीकृत हुई ।

५—साहित्य समिति के सदस्यों को सम्मेलन के प्रकाशन बिना मूल्य भेंट करने के संबंध में ८ चैत्र संवत् १९९८, तारीख २२ मार्च १९४२ की साहित्य समिति का स्वीकृत मंतव्य पुनः विचारार्थ उपस्थित किया गया ।

प्रधान मंत्री जी ने बताया कि १३ वैशाख १९९९, ता० २६ अप्रैल १९४२ की कार्यसमिति में विचारोपरांत यह प्रश्न स्थगित कर दिया गया था ।

सर्वसम्मति से बिना मूल्य प्रकाशन भेंट करने का विषय अस्वीकृत हुआ ।

६—हिन्दुस्तानी ऐकेडेमी समिति के लिए दो प्रतिनिधियों के चुनाव का विषय उपस्थित किया गया ।

श्री चन्द्रशेखर वाजपेयी ने विचार उपस्थित किया कि क्या कार्यसमिति को प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है ?

प्रधान मंत्री जी ने बताया कि नियम नहीं है किंतु प्रथा चली आ रही है ।

४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वसम्मति से श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी तथा श्री उदयनारायण तिवारी प्रतिनिधि नियुक्त हुए।

८—प्रधान मंत्री जी ने पुराण तथा संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद करने के लिए एक अस्थायी लेखक की नियुक्ति की स्वीकृति का विषय उपस्थित किया। साहित्य मंत्री जी ने बताया कि अनुवाद का नमूना देखने के लिए श्री रामप्रताप त्रिवेदी ४०) मासिक पर एक मास के लिए नियुक्त किये गए हैं। यदि इनका अनुवाद संतोषजनक हुआ तो इनको अन्य ग्रंथों के अनुवाद का भी भार सौंपने का विचार है।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि एक मास की नियुक्ति स्वीकार की जाय और साहित्य मंत्री जी को अधिकार दिया जाय कि आवश्यकता पड़ने पर अगले अनुमान पत्र तक के लिए ४०) मासिक पर इनकी नियुक्ति बढ़ा दें।

१०—छुट्टी के संबंध में बने हुए वर्तमान नियमों के स्पष्टीकरण का विषय उपस्थित किया गया:

नियम ४ (विशेष) है: "आकस्मिक छुट्टी रियायती, बीमारी की या अन्य किसी साधारण छुट्टी के साथ किसी ओर भी जोड़ी न जा सकेगी" प्रधान मंत्री जी ने बताया कि पिछले दिनों तक कार्यालय में आकस्मिक छुट्टी के साथ साप्ताहिक (प्रतिपदा और अष्टमी) तथा अन्य छुट्टियाँ जोड़ी जाती रही हैं। अर्थात् एक दिन की आकस्मिक छुट्टी के बाद यदि साप्ताहिक छुट्टी पड़ जाती है तो उसे दो दिन की आकस्मिक गिन लिया जाता है। कार्यालय द्वारा श्री प्रबंध मंत्री तथा श्री प्रधान मंत्री जी का ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया है।

श्री दयाशंकर दुबे ने प्रस्ताव किया कि आकस्मिक छुट्टी के साथ यदि नियमित छुट्टी पड़े तो उसे दो दिन न जोड़ कर एक दिन माना जाय। किंतु यदि आकस्मिक छुट्टी के बीच में नियमित छुट्टी पड़ जाय तो वह आकस्मिक छुट्टी के साथ जोड़ ली जाय।

सर्वसम्मति से श्री दुबे जी का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

नियम ५—"किसी कर्मचारी को जिसे सम्मेलन में काम करते हुए कम से कम तीन महीने न हो चुके हों, उपर्युक्त किसी प्रकार सवेतन छुट्टी का अधिकार न होगा।

प्रधान मंत्री जी ने कहा कि कार्यालय में अस्थायी, स्थायी तथा अतिरिक्त कर्मचारी काम करते हैं। कुछ ऐसे अस्थायी कर्मचारी हैं जो तीन महीने से अधिक काम कर चुके हैं। ऐसी अवस्था में तीन महीने से अधिक जिस अस्थायी कर्मचारी ने काम किया हो उसको सब प्रकार की छुट्टियाँ दी जा सकती हैं कि नहीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि उपर्युक्त नियम के अनुसार अस्थायी कर्मचारियों को भी सब प्रकार की छुट्टियों की सुविधा दी जाय।

परीक्षा मंत्री जी ने प्रस्ताव उपस्थित किया कि छुट्टी के दिनों में काम करने के बदले में लेखकों को अतिरिक्त पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए।

बहुमत इस प्रस्ताव के विरुद्ध था।

११—सम्मेलन की सदस्यता के लिए निम्नलिखित सज्जनों के आवेदन पत्र उपस्थित किये गए और स्वीकृत हुए—

विशेष सदस्य १—श्री मूलचन्द जोशी, प्रयाग।
साधारण सदस्य १— ,, जगदीश नारायण अग्रवाल, बरेली।
२— ,, विश्वनाथ टंडन, शाहजहाँपुर।

१४—प्रधान मंत्री जी ने हिन्दी विद्यापीठ के निम्नलिखित विद्यार्थियों के आर्थिक सहायता संबंधी प्रार्थना पत्र उपस्थित किए:

१—श्री रघुवंशमणि चौधरी	२) मासिक
२— " चन्द्रशेखर सिंह	३) "
३— " वी० कृष्ण नेबियार	२) "
४— " गणेश चौधरी	

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि विद्यार्थियों की माँग के अनुसार परीक्षा-विभाग से परीक्षा समाप्ति के दिनों तक १ श्रावण १९९९ से सहायता दी जाय।

श्री गणेश चौधरी नामक विद्यार्थी ने अपने प्रार्थना पत्र में सहायता के धन का कोई उल्लेख नहीं किया था। निश्चय हुआ कि इनको भी १ श्रावण १९९९ से २) मासिक परीक्षा समाप्ति के दिनों तक सहायता दी जाय।

रामप्रसाद त्रिपाठी
प्रधान मंत्री

कार्यसमिति की छठी बैठक

कार्यसमिति की आवश्यक बैठक सोमवार, १८ श्रावण १९९९, तारीख ३ अगस्त १९४२ को ५ बजे सायंकाल से सम्मेलन कार्यालय में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:

१. सर्वश्री पुरुषोत्तमदास टंडन; २. रामनाथ 'सुमन'; ३. चन्द्रशेखर वाजपेयी;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. उदयनारायण तिवारी; ५. लक्ष्मीनारायण दीक्षित; ६. रामलखन शुक्ल, (प्रबन्ध मंत्री)

१. नियमानुसार श्री पुरुषोत्तम दास जी टंडन ने सभापति का आसन ग्रहण किया। पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़ी गई और कुछ संशोधन के साथ स्वीकृत हुई।

२. प्रबन्ध मंत्री जी ने प्रस्ताव किया कि साधारण सदस्यता के लिए प्राप्त निम्नांकित सज्जनों के अवेदन पत्र स्वीकार किए जाय :

साधारण सदस्य—१. सर्वश्री विश्वनाथ टंडन, कुंजभवन, शाहजहाँपुर; २. श्रीनाथसिंह, दीदी, कार्यालय, इलाहाबाद; ३. सुन्दरलाल गुप्त एडवोकेट हरदोई; ४. साहबराम भादू, जाट वि० संगरिया, बीकानेर; ५. अर्जुनदेव वैद्य, जाट वि० संगरिया, बीकानेर; ६. सुखराम, साहित्य सदन, अबोहर-पंजाब; ७. उदयचंद, साहित्य सदन, अबोहर; ८. श्याम बिहारी सहगल, लखीमपुर-खीरी; ९. प्रभातचन्द्र भटनागर, लाटूश-रोड, लखनऊ; १०. महाबीर प्रसाद, साहित्य सदन, अबोहर, पंजाब; ११. दुर्गाप्रसाद शास्त्री, अध्यापक हिन्दी संस्कृत विभाग, रानी सिरताज मेमोरियल इन्टर कालेज, सिमरी, रायबरेली।

श्री उदयनारायण तिवारी ने समर्थन किया।

सर्वसम्मति से उपरोक्त सज्जनों की सदस्यता स्वीकृत की गई।

४. प्रबन्ध मंत्री जी सूचना दी कि लिपि सुधार के विषय में अबोहर अधिवेशन में स्वीकृत निश्चय के अनुसार कार्यालय से सौर २९-११-९९, ता० १३-३-४२ को निम्नलिखित पत्र, मंतव्य में गिनाए गए सज्जनों और संस्थाओं के पास भेजा गया था और उनसे अनुरोध किया गया था कि ३० अप्रैल १९४२ तक अपनी सम्मति कार्यालय में भेज दें।

लिपि-सुधार के सम्बन्ध में सम्मेलन के पूना अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था।

"इस सम्मेलन की सम्मति में अभी लिपि-सुधार सम्बन्धी योजना पर कोई अन्तिम निर्णय न किया जाय, वरन् इस कार्य को ऐसी समिति के हाथ दिया जाय जिसमें भारतीय प्रान्तीय साहित्य परिषदों तथा हिन्दी की शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालयों के दो दो प्रतिनिधि हों।

यह समिति छः महीने में अपनी सम्मति सम्मेलन को भेज दे और उस समिति का निर्णय अगले अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।"

उपर्युक्त निश्चय के अनुसार निर्मित समिति का विवरण अबोहर अधिवेशन में उपस्थित किया गया था। सम्मेलन ने अपने २७वें मंतव्य द्वारा निम्नलिखित आदेश दिया—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सम्मेलन अपनी स्थायी समिति को आदेश देता है कि इस कार्य-विवरण को प्रान्तीय सम्मेलनों, समाचार पत्रों तथा साहित्यिक संस्थाओं के पास विचारार्थ भेजे और उनकी सम्मतियाँ आने पर लिपि-सुधार समिति की बनाई योजना तथा आई हुई सम्मतियों पर विचार करे और अपने सुझावों सहित उस योजना को अगले अधिवेशन में उपस्थित करे।"

लिपि-सुधार समिति का विवरण आपकी सेवा में भेजा जा रहा है। कृपया अपनी सम्मति ३० अप्रैल १९४२ तक कार्यालय में अवश्य भेज दें।

बहुत कम सम्मतियाँ उक्त तिथि तक कार्यालय में आई हैं। इस विषय का विवरण अगले अधिवेशन में उपस्थित करना है।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सज्जनों की उपसमिति आई हुई सम्मतियों पर विचार करके अपने सुझाव कार्यसमिति के सामने उपस्थित करे तथा कार्यसमिति स्थायी समिति के सामने अपने विचार रखे।

श्री पुरुषोत्तदास टंडन, श्री रामनाथ 'सुमन' और श्री चन्द्रशेखर बाजपेयी।

५. मथुरा के श्री सोमदेव शर्मा का ता० २४-७-४२ का पत्र उपस्थित किया गया जिसका आशय था कि सम्मेलन की नियमावली के नियम ६ के अनुसार बिना शुल्क दिए हुए श्री शर्मा जी को सम्मेलन का साधारण अथवा विशेष सदस्य बना लिया जाय।

निश्चय हुआ कि कार्यसमिति के विचार में बिना शुल्क दिए सदस्य न बनाए जायँ।

रामप्रसाद त्रिपाठी
प्रधान मंत्री।

कार्यसमिति की सातवीं बैठक

कार्यसमिति की बैठक रविवार, १४ श्रावण १९९९, तारीख ३० अगस्त १९४२ को १ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:—

१. सर्वश्री अमरनाथ झा; २. दयाशंकर दुबे; ३. चन्द्रशेखर वाजपेयी; ४. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' ५. उदयनारायण तिवारी; ६. लक्ष्मीनारायण दीक्षित; ७. आनन्द कौसल्यायन; ८. बाबूराम सक्सेना ९. रामचन्द्र टंडन १०. रामनाथ 'सुमन' ११. जगन्नाथप्रसाद शुक्ल; १२. रामलखन शुक्ल; १३. रामप्रसाद त्रिपाठी, (प्रधान मंत्री)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. नियमानुसार श्री अमरनाथ जी झा ने सभापति का आसन ग्रहण किया। प्रबन्ध मंत्री जी ने पिछली बैठक की कार्यवाही का ब्यौरा पढ़कर सुनाया और कार्यवाही स्वीकृत हुई।

२. प्रधान मंत्री ने सभापति के निर्वाचन के सम्बन्ध में आए हुए मतों की गणना का विषय उपस्थित किया और बताया कि निश्चित तिथि तक १५६ मत कार्यालय में पहुँचे तथा उसके बाद भी ४८ मतदाताओं के मत आए हैं।

सभापति जी ने सम्मति दी कि डाक की गड़बड़ी के कारण जिनके मत विलम्ब से आए हों उनको भी गिन लिया जाय।

सर्वसम्मति से श्री बाबूराम सक्सेना, श्री रामचन्द्र टंडन तथा श्री रामशंकर शुक्ल 'रसाल' गणक नियुक्त किए गए।

३. प्रधान मंत्री ने लश्कर के श्री रामनाथ शर्मा का निम्न लिखित प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित किया :

प्रस्ताव

हिंदी भाषा के स्वरूप के संबंध में जो प्रस्ताव गत अबोहर सम्मेलन में स्वीकृत हुआ है अर्थात् हिंदी और हिंदुस्तानी का जो निर्णय हुआ है उसके प्रचार के संबंध में विशेष आयोजन की आवश्यकता है। यह आवश्यकता इसलिये और बढ़ गई है कि वर्धा में देश के दो महान व्यक्तियों की संरक्षता में हिन्दुतानी प्रचार समिति स्थापित हो गई है और उसके कार्य की रूप रेखा भी समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुकी है। बल्देवसिंह व सर सिकंदर के पेक्ट के अनुसार पंजाब में हिंदी व गुरुमुखी पर जो प्रतिबंध अब तक था वह संभवतः हट जावेगा। काश्मीर में भी भाषा संबंधी नीति में परिवर्तन होने की आशा की जाती है। जो आगामी अधिवेशन हिंदी साहित्य सम्मेलन भेनी साहब में हो रहा है उससे गुरुमुखी व हिंदी भाषा में अधिक सान्निध्य उत्पन्न होना अवश्यम्भावी है।

इन सब बातों पर ध्यान देते हुए एक ऐसे कोष की आवश्यकता है जिससे यह प्रमाणित हो सके कि गुरुमुखी व अन्य प्रान्तीय हिंदी भाषा के स्वरूप शुद्ध हिंदी से कुछ विभिन्न नहीं है। यह कोष सम्मेलन की ओर से छापना चाहिये और भेनी अधिवेशन से पहिले इसे प्रकाशित करा देना चाहिये जिससे कि भेनी अधिवेशन में यह कोष सिख व पंजाबी जनता के हाथ में दिया जा सके। इस कोष के संकलन का काम पं० रामनाथ शर्मा के सुपुर्द किया जावे और कोष छपने से पहिले उसकी प्रतिलिपि प्रचार समिति में तीन सदस्यों की समिति देख ले। यह रचनात्मक कार्य गुरुमुखी व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदुस्तानी को निकट लाने में बहुत सहायक होगा और इस सुअवसर का सम्मेलन को अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

रामनाथ शर्मा

निश्चय हुआ कि कार्यसमिति प्रस्ताव के सिद्धान्त से सहमत है। प्रस्ताव प्रचार समिति तथा साहित्य समिति में कार्यवाही के लिए भेजा जाय।

सर्वसम्मति से निम्नलिखित संस्थाएँ स्वीकृत की गईं ? *

इसके बाद समिति की बैठक स्थगित की गई और परीक्षा समिति की बैठक हो जाने के उपरान्त फिर समिति की बैठक हुई।

सर्वसम्मति से श्री रामनाथ 'सुमन' जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१०. प्रधान मंत्री जी ने हिंदी विद्यापीठ समिति का ३०-८-४२ का इस आशय का निश्चय कि आर्थिक संकट के कारण सम्मेलन से १५००) कर्ज के रूप में मांगे जायँ, उपस्थित किया तथा विद्यापीठ समिति के मंत्री का ३०-८-४२ का पत्र भी पढ़ सुनाया।

प्रधान मंत्री जी ने यह भी बताया कि लगभग दो वर्ष पहले विद्यापीठ को १०००) ऋण के रूप में दिए जा चुके हैं। अभी वह धन हमें नहीं मिला।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि विद्यापीठ को १५००) और कर्ज रूप में दिए जायँ और २५००) (१०००) पिछला तथा १५००) वर्तमान) का ३) सैकड़ा सालाना ब्याज विद्यापीठ से लिया जाय।

रामप्रसाद त्रिपाठी
प्रधान मंत्री,

परीक्षा समिति का पाँचवां अधिवेशन

परीक्षा समिति का पाँचवां अधिवेशन रविवार सौर मार्गशीर्ष ८ तदनुसार ता० २५ अक्टूबर सन् १९४२ को एक बजे दिन से डाक्टर उमेश मिश्र के सभापतित्व में सम्मेलन के संग्रहालय में हुआ।

१. परीक्षा समिति के चौथे अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी गई और वह स्वीकृत हुई।

२. परीक्षा विभाग का सौर मार्गशीर्ष १९९९ से सौर कार्तिक संवत् २०००

* देखिए पृष्ठ २३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक का आय-व्यय का अनुमान पत्र उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

३. राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षा समिति द्वारा स्वीकृत राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं और राष्ट्र भाषा प्रचार उपसमिति की नियमावलियाँ उपस्थित की गईं और स्वीकृत हुईं।

४. सम्मेलन के साहित्य मंत्री जी के भेजे हुए ता० २८-७-४२ और ३१-८-४२ के दो पत्र उपस्थित किए गए और उन पर उचित कार्यवाही की गई ।

५. तारीख ३० अगस्त सन् १९४२ की परीक्षा समिति के चौथे अधिवेशन के ग्यारहवें मंतव्यानुसार परीक्षा मंत्री ने आधे शुल्क से मुक्त होने वाले ५६ परीक्षार्थियों के प्रार्थनापत्र विचारार्थ उपस्थित किए । ५५ परीक्षार्थी आधे शुल्क से मुक्त किये गए।

६. आगामी हिन्दी परिचय तथा कोविद परीक्षाओं की परीक्षारंभ की तिथि तारीख १३ दिसम्बर सन् १९४२ निश्चित हुई ।

७. भरतपुर में उत्तमा परीक्षा का केन्द्र स्थापित करने के लिए श्री प्रो० रामकृष्ण शुक्ल एम. ए. महाराजा कालेज जयपुर का पत्र उपस्थित किया गया । सर्वसम्मति से वह अस्वीकृत हुआ ।

८. उत्तमा में सम्मिलित होने का अधिकार प्राप्त करने के लिए श्री पी० एन० तिवारी का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया, सर्वसम्मति से वह अस्वीकृत हुआ।

९. सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि वर्तमान परिस्थिति के कारण इस वर्ष जिन केन्द्रों में उत्तर पुस्तकों के पहुँचने की कठिनाई हो उनके व्यवस्थापकों को अधिकार दिया जाय कि वे स्वयं उत्तर पुस्तकें बनवा लें । परंतु प्रत्येक उत्तर-पुस्तक पर वे अपने हस्ताक्षर अवश्य करें ।

१०. आगामी शीघ्रलिपि विशारद परीक्षा की परीक्षारंभ की तारीख १३ दिसम्बर सन् १९४२ निश्चित की गई ।

दयाशंकर दुबे
परीक्षा मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति-स्वीकार

साकोरी का सन्त—लेखक, पं० ईशनारायण जोशी, शास्त्री 'साहित्य रत्न'। प्रकाशक, ख़ान साहिब डा० एस. आर. मसालेवाला, रिटायर्ड चीफ मेडिकल आफ़िसर, भोपाल। पृष्ठ संख्या १०४। मूल्य ।≈)

प्रस्तुत पुस्तक सद्‌गुरु श्री उपासनी बाबा महाराज के जीवन की कुछ झाँकियों का वर्णन मात्र है। श्री उपासनी बाबा गार्हस्थ्य जीवन से किस प्रकार इस पद पर पहुँचे और प्रारम्भ में उन्हें कैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा तथा साईं बाबा से उन्हें इस मार्ग पर अग्रसर होने में क्या सहायता मिली, इन प्रसंगों को पढ़कर हृदय में भक्ति का उद्रेक हुए बिना नहीं रहता। संसारिकता के बंधन से मुक्त होकर जब मनुष्य परमात्मा में ध्यान लगाता है उस समय उपस्थित विघ्नों का विनाश भगवान् किस प्रकार करते हैं, इसके अनेक उदाहरण उपासनी बाबा से सम्बन्ध रखनेवाली इस पुस्तिका में दिए गए हैं। उपासनी बाबा के समान संतों की जीवनियाँ जनता में धर्म एवं आध्यात्मिकता की भावना उत्पन्न करने में सफल होंगी यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

मंदिर—लेखक, श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'। प्रकाशक, हिन्दी मन्दिर प्रयाग। पृष्ठ संख्या १३३। मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' के सात एकांकी नाटकों का संग्रह है। साहित्यकार का समाज के प्रति कुछ कर्तव्य है—प्रत्येक नाटक इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर लिखा गया है, तथा राष्ट्रीयता, समाजसुधार एवं नैतिक जागृति के प्रभात की सूचना देता है। इसमें सन्देह नहीं कि 'प्रेमी' जी इन नाटकों की रचना में सफल हुये हैं।

महादाजी सिंधिया—लेखक, श्री बा० ग० चव्हान। अनुवादक, वा० आ० देशमुख तथा रामकिशोर शर्मा। मुद्रक, आलीजाह दरबार प्रेस, ग्वालियर। पृष्ठ संख्या ८२

मुसलमानों से लड़कर छत्रपति शिवाजी ने जिस भारतीय स्वराज्य की स्थापना की थी। उसी को बढ़ाने के लिए श्रीमन्त बाजीराव पेशवा प्रथम ने मालवे पर अधिकार किया और भारतीय साम्राज्य-स्थापना की नींव डाली। श्री महादाजी सिन्धिया उक्त पेशवा के शूर सरदार थे, और उन्होंने दिल्ली के बादशाह शाहआलम को अंग्रेज़ों के पंजे से छुड़ाकर दिल्ली के तख़्त पर बैठाया। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं वीर सिंधिया सरदार के जीवन का नाटकीय वर्णन है। साहित्य तथा इतिहास दोनों के पाठकों के लिए यह अनेक उपयोगी है।

आँख का अचूक इलाज—लेखक, कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय, आयुर्वेद-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशारद। प्रकाशक, महेन्द्र रसायनशाला कटरा, इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या १२७ मूल्य १॥)

आजकल के ६० फ़ीसदी शिक्षित नवयुवक चश्मे की सहायता बिना अपने स्वाभाविक नेत्रों से कुछ भी काम नहीं कर सकते। अंग्रेज़ी रीति से आँखों को सुरक्षित रखने के लिए चश्मा नितान्त आवश्यक है यही इसका कारण है। पुस्तक में लेखक महोदय ने यह सिद्ध किया है कि प्राकृतिक तथा आयुर्वेदिक उपायों से चश्मे की कभी भी आवश्यकता नहीं पड़ सकती और यदि चश्मा लगाने की आदत पड़ भी गई हो तो छूट सकती है। पुस्तक में आँख के प्रत्येक रोग तथा अचूक औषधियों का सरल एवं स्पष्ट वर्णन है। पुस्तक सब के लिए मुख्यतया आँख के रोगियों के लिए बड़ी उपयोगी है और संग्रहणीय है।

आरोग्य विधान—लेखक, आयुर्वेद पंचानन पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, राजवैद्य, भिषङ्मणि। प्रकाशक, सुधानिधि कार्यालय, दारागंज, प्रयाग। पृष्ठ संख्या ६२४। मूल्य ३)

श्री शुक्ल जी आयुर्वेद शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान तथा युक्तप्रान्त के सिद्धहस्त वैद्यों में से हैं। आप बड़े विचार तथा पारंगत मनन के पश्चात् किसी विषय को हाथ में लेते हैं इसीलिए आप अपनी कृतियों में सफल होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक को लिखने ही के लिए आपने प्रयाग की भीड़भाड़ को छोड़कर देहरादून की पहाड़ियों पर एकान्तवास किया। वैद्यक के विद्वानों, विद्यार्थियों, शिक्षण संस्थाओं तथा समितियों के सम्पर्क में रहने तथा अनेकों रोगियों को मृत्यु के मुख से निकालने के कारण आपका स्वास्थ्य-सम्बन्धी अनुभव बहुत ही गंभीर और बारीक है। आरोग्य-विधान शुक्ल जी के उन्हीं अनुभवों का परिणाम है। विषयों की विवेचना स्पष्ट, पूर्ण और प्रामाणिक है। लेखक महोदय इसके लिये बधाई के पात्र हैं।

बिखरे फूल--लेखक, श्री रघुवीरशरण 'दिवाकर', वर्धा। प्रकाशक, विरंजीलाल बरजाले, वर्धा। पृष्ठ संख्या ४२, मूल्य ।≶)

प्रस्तुत पुस्तक श्री रघुवीरशरण 'दिवाकर' की फुटकर सामाजिक तथा राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है कवितायें सरल भावप्रद और स्वाभाविक हैं, तथा कवि के उज्ज्वल भविष्य की द्योतक हैं।

रामनिधि शर्मा

हिंदी विश्वविद्यालय पंचांग—(१९९९-२०००) संपादक—गंगाधर इन्दूरकर, साहित्यरत्न, साहित्य शास्त्री। प्रकाशक—हिंदी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग। मूल्य तीन रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोच्य पुस्तक के नामकरण से संभवतः उन पाठकों को, जो पंचांग से सर्वसाधारण सुलभ 'तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करणमेव च, पंचांगम्' का ज्ञान रखते हैं, भ्रम न हो जाय, अथवा हिंदी विश्व विद्यालय के पंचांग अर्थात् 'पांच विभाग' न समझने लगें अतः मुझे आवश्यक प्रतीत होता है कि पाठकों से यह कह दूँ कि ये दोनों पंचांग इसमें नहीं हैं; प्रत्युत हिंदी साहित्य-सम्मेलन के परीक्षा विभाग का विस्तृत विवरण अथवा स्वयम् संपादक महोदय के शब्दों में 'हिंदी विश्वविद्यालय तथा उसकी परीक्षाओं के संबंध में जो कुछ ज्ञातव्य हो सकता है', इसमें देने का प्रयत्न किया गया है। मध्य में सौर वैशाख १९९९ से सौर चैत्र सं० २००० तक का तिथि एवं अंग्रेजी तारीख तथा हिंदू त्योहारों का सूचक चक्र २४ पेजों में दिया गया है, उसमें सम्मेलन कार्यालय में होने वाली छुट्टियों की सूचना लाल स्याही द्वारा दी गई है। हिंदी विश्व विद्यालय के सर्वतोमुखी परिचय को पंचांग द्वारा जिज्ञासु जन जान लें, यही इसका उद्देश्य जान पड़ता है। अधिकाधिक उपादेयता की ओर ध्यान न देने के कारण संपादक महोदय का प्रयत्न सफल है, इसे तो मैं नहीं कह सकता। किन्तु, यदि हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभी विभागों का परिचय प्रस्तुत पंचांग द्वारा सर्वसाधारण को मिल जाता तो निःसंदेह उपयोगिता की सीमा और बढ़ जाती। पुस्तक भी एक ढंग की होती। अस्तु ? फिर भी पुस्तक तो काम की है ही, इससे आप जान सकते हैं कि सम्मेलन की परीक्षाएँ कब से प्रारंभ हुई ! सबसे प्रथम बार पं० भगीरथ प्रसाद जी दीक्षित उत्तीर्णता के श्रेय भागी हैं। वर्तमान परीक्षा मंत्री जी कितने मनोयोग एवं धैर्य से परीक्षा का संचालन कर रहे हैं, आज का उन्नतिशील परीक्षा विभाग उनके अध्यवसाय से किस प्रकार उत्तरोत्तर विकसित हुआ है, हो रहा है, भूतपूर्व परीक्षा मंत्रियों ने कितना कार्य किया था, सम्मेलन के परीक्षक कितने हैं और आज तक कितने रत्न और 'विशारद' विश्वविद्यालय ने उत्पन्न किये आदि आदि।

पुस्तक में प्रूफ अथवा भाषा की भद्दी अशुद्धियाँ दूर न होने के कारण कुछ झिझक पैदा हो जाती है।

रामप्रताप त्रिवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बंगाल-हिन्दी-मंडल"

हिन्दी में कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर अच्छा मौलिक साहित्य निर्माण कराने के विचार से "बंगाल-हिंदी-मंडल" ने एक योजना बनाई है, जिसके अनुसार नीचे लिखे विषयों पर, अपने-अपने विषय के उच्च लेखकों को श्रद्धा पूर्वक पारितोषिक भेंट करके, अच्छी पुस्तकें लिखाने का निश्चय किया है :—

विषय	पुस्तक	प्रति पुस्तक पारितोषिक
१—विज्ञान (विज्ञान के अंतर्गत किसी भी विषय पर शोधपूर्ण पुस्तक)	२	१०००)
२—तुलनात्मक दर्शनशास्त्र (भारतीय दर्शनों, अथवा भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शनों की तुलना)	१	१२५०)
३—इतिहास (भारत के किसी भी काल का सांस्कृतिक अथवा राजनीतिक इतिहास)	२	१०००)
४—जीवनी	३	५००)
५—नाटक	२	५००)
६—संत-साहित्य (मध्यकालीन संतों के साहित्य पर शोधपूर्ण प्रकाश एवं उनकी वाणियों में से प्रामाणिक संकलन)	२	५००)

१. पुस्तकें नई और मौलिक हों; अनुवाद न हो।

२. पृष्ठ-संख्या का कोई बंधन नहीं होगा।

३. मंडल की ओर से एक निर्णायक-समिति नियुक्त की जावेगी, जिसका निर्णय मंडल और लेखकों दोनों को ही मान्य होगा। निर्णायकों के नाम प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

४. लेखक किसी भी प्रामाणिक संस्था से अपनी पुस्तकें प्रकाशित करा सकेंगे। कॉपी राइट या रॉयल्टी का लेखकों को पूर्ण अधिकार होगा।

५. यदि निर्णायक-समिति के अनुसार कोई पुस्तक पारितोषिक पाने के योग्य साबित न हुई, तो मंडल दोबारा लेखकों से पुस्तक लिखने की प्रार्थना करेगा।

पुस्तकें ३१ मई, १९४३ तक मंडल के मंत्री के पास निम्नलिखित पते पर पहुँच जानी चाहिए :

मंत्री,
बंगाल-हिन्दी-मंडल
हरिजन-निवास, किंग्सवे, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के नवीन प्रकाशन

सोवियत भूमि—ले० महापंडित राहुल सांकृत्यायन, मूल्य ५); रूस के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिये हिन्दी में अद्वितीय पुस्तक।

मूर्तिकला—ले० राय कृष्णदास, मूल्य १।); भारतवर्ष की मूर्तिकला की आदि से अब तक की तात्विक व्याख्या।

चित्रकला—ले० रायकृष्णदास, मूल्य १।); चित्रकला पर अपने ढंग की सर्वोत्तम पुस्तक।

बाल-मनोविज्ञान—ले० पं० लालजी राम शुक्ल, मूल्य १।); हिन्दी में बाल-मनोविज्ञान संबंधी सर्वश्रेष्ठ रचना।

मआसिरुल उमरा भाग १ और २—अनु० बाबू ब्रजरत्नदास, मूल्य ४) प्रति भाग। मुग़ल शासनकाल के सरदारों की सबसे प्रामाणिक जीवनियाँ।

बिहार में हिंदुस्तानी—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ।); बिहार प्रांत में हिन्दी हिन्दुस्तानी समस्या की तात्विक व्याख्या।

कचहरी की भाषा और लिपि—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ।।।); अदालतों की भाषा और लिपि का विस्तृत विवेचन।

मध्य प्रदेश का इतिहास—ले० रायबहादुर डा० हीरालाल, बी० ए०, मूल्य १।।); मध्य प्रदेश का सबसे प्रामाणिक और शोधपूर्ण इतिहास।

हिन्दी साहित्य का इतिहास—ले० पं० रामचंद्र शुक्ल, मूल्य ५); प्रवर्द्धित संस्करण। हिन्दी साहित्य का सबसे अच्छा और विस्तृत इतिहास।

सिक्खों का उत्थान और पतन—ले० पं० नंदकुमार देव, मूल्य १।); सिक्ख जाति के अभ्युदय और पतन का सर्वाङ्गपूर्ण इतिहास।

नई कहानियाँ—सं० श्री राय कृष्णदास, पं० पद्मनारायण आचार्य, मूल्य १।); बारह सर्वोत्तम नई कहानियों का अत्यंत रुचिपूर्ण संग्रह।

मोहें जो दड़ो—ले० श्री सतीशचंद्र काला, मूल्य २); मोहें जो दड़ो की खोदाई के आधार पर लिखी प्राचीन भारतीय सभ्यता के संबंध में विद्वत्तापूर्ण सचित्र पुस्तक।

रघुनाथ रूपक गीतांरो—सं० श्री महताब चंद खारैड, मूल्य २); । डिंगल भाषा में भगवान रामचंद्र का मंक कवि कृत सुंदर कवित्वपूर्ण वर्णन।

मुग़ल बादशाहों की हिन्दी—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ।।); मुग़ल बादशाह हिंदी से प्रेम करते और हिन्दी में रचना करते थे, इसका स्पष्ट प्रमाण यह पुस्तक है।

मिलने के पते—प्रत्येक नगर के प्रतिष्ठित पुस्तक विक्रेता।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन वर्ष से नवीन परिवर्तन में

'जीवन-साहित्य'

[गांधीजी की रचनात्मक प्रवृत्तियों का मुखपत्र]

सम्पादक

काका कालेलकर

हरिभाऊ उपाध्याय

महाबीरप्रसाद पोद्दार

पृष्ठ संख्या ३२ से ४८ : : वार्षिक मूल्य १।।)

एक प्रति का ≡)

* श्री काका सा० कालेलकर तथा श्री महाबीरप्रसाद पोद्दार के सहयोग से 'जीवन-साहित्य' नवीन रूप में आपकी सेवा में उपस्थित हो रहा है।

** महात्माजी की देशव्यापी रचनात्मक प्रवृत्तियाँ जैसे खादी, ग्रामोद्योग, गो-सेवा, हरिजन सेवा, बुनियादी तालीम, हिन्दुस्तानी-प्रचार आदि कैसी चल रही हैं, उनके कार्य-कर्त्ताओं को कैसे अनुभव हो रहे हैं और इन सब क्षेत्रों में देश-हित की कितनी गुंजाइश है यह सब देश के सामने रखना अब से जीवन साहित्य का प्रधान काम होगा।

*** जीवन-शुद्धि, जीवन-विकास और जीवन-समृद्धि के प्रत्यक्ष प्रयत्नों में से पैदा हुआ साहित्य जीवन-साहित्य माना जायगा।

**** ऐसे 'जीवन-साहित्य' के नये वर्ष से अगस्त में ही ग्राहक बन जाते हैं तो आप से—

केवल १) ही लिया जायगा।

नहीं तो बाद में १।।) देना होगा। अतः

आप शीघ्रातिशीघ्र ग्राहक बनकर देश की रचनात्मक प्रवृत्ति में अपना हिस्सा अदा कीजए

व्यवस्थापक

'जीवन-साहित्य', कनाट सर्कस, नयी दिल्ली।

संपादकीय पत्र व्यवहार निम्न पते से करें :

संपादक, 'जीवन-साहित्य', गोरखपुर (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी दो नई पुस्तकें

मेरी असफलताएँ

[हास्य मिश्रित आत्मकथा]

'साहित्य-सन्देश' के सम्पादक श्री गुलाबरायजी एम० ए०, ने आत्मकथा के रूप में इस पुस्तक में उच्चकोटि के साहित्यिक हास्य का ऐसा सुन्दर प्रदर्शन किया है जैसा अन्यत्र कम मिलता है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान्, प्रयाग विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० धीरेन्द्र वर्मा लिखते हैं :

"बहुत दिनों बाद ऐसी रोचक साहित्यिक पुस्तक हाथ लगी। जहाँ तक मुझे स्मरण पड़ता है आधुनिक हिन्दी साहित्य की यह पहली पुस्तक है जिससे मेरे घर पर तीन पीढ़ियों ने आनन्द उठाया—मेरी माताजी, मैं तथा मेरी लड़की।"

दिल्ली रेडियो से श्री स० ही० वात्स्यायन ने समालोचना करते हुए इसकी जो प्रशंसा की थी वह शायद ही किसी पुस्तक को मिली हो। अगर आपने अभी तक इस पुस्तक को नहीं देखा हो तो अब मँगा कर देख लें। मूल्य १) मात्र।

आधुनिक हिन्दी नाटक

लेखक—प्रो० नगेन्द्र, एम० ए०

'सुमित्रानन्दन पन्त' और 'साकेत एक अध्ययन' लिख कर नगेन्द्र जी ने हिन्दी संसार में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। उसी का यह परिणाम है कि आपकी यह तीसरी नवीन कृति 'आधुनिक हिन्दी नाटक' छपते ही आगरा विश्व विद्यालय की एम० ए० परीक्षा के लिए स्वीकृत हो गई। इस पुस्तक में नगेन्द्र जी ने नाटकों का वर्गीकरण एक नए ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया है और विश्लेषण इतना मार्मिक है कि पढ़ते ही बनता है। नाटकों पर आलोचना की कई पुस्तकें हिन्दी में निकल चुकी हैं पर यह अपने ढंग की अनूठी है। मूल्य १) मात्र।

हिन्दी पुस्तकों के लिये सदैव हमें लिखिये :—**साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति का अग्रदूत **धर्म-दूत** सचित्र मासिक पत्र

सम्पादकः—सुमन वात्स्यायन

आप जानना चाहेंगे कि संसार में भारतीय संस्कृति का कैसे प्रचार हुआ ? 'धर्म-दूत' में आप पढ़ेंगे कि चीन, कोरिया, मलाया, तिब्बत, तुर्किस्तान, ईरान, अफगानिस्तान, जावा, शुमात्रा आदि देशों में कब और कितनी भयंकर आपत्तियों का सामना करके हमारे पूर्वजों ने भारतीय संस्कृति, सभ्यता, साहित्यकला, विज्ञान और धर्म का प्रचार किया। आप भगवान बुद्ध के उन अनुचरों को भूल गये हैं। 'धर्म-दूत' द्वारा उनसे परिचित होकर आपका हृदय उत्साह और साहस से भर जायगा। अपने गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण कर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकेंगे।

पताः—'धर्म-दूत' कार्यालय, सारनाथ (बनारस)

राष्ट्रभाषा-समाचार

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा का मुखपत्र]

हर महीने की १५ तीरीख़ को निकलता है।

इसमें

प्रचारकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकों के लिये आवश्यक एवं उपयोगी ताज़ी सामग्री रहती है।

वर्धा-कार्यालय तथा परीक्षा-विभाग की सभी सूचनायें और राष्ट्र-भाषा-प्रचार की तमाम प्रान्तीय हलचलें निकलती हैं।

'प्रारम्भिक' से 'कोविद' तक के परीक्षार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये समय-समय पर परीक्षा-संबंधी लेख भी प्रकाशित होते हैं।

इसका वार्षिक चंदा एक रुपया मात्र है। मनी-ऑर्डर से भेजकर 'राष्ट्रभाषा-समाचार' के ग्राहक ज़रूर बनिये।

व्यवस्थापक,

'राष्ट्रभाषा-समाचार', वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

१ भूषण-ग्रन्थावली २)
२ भारत-गीत ≡)
३ राष्ट्रभाषा ॥)
४ शिवाबावनी ≡)
५ पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १॥)
६ सूरदास की विनयपत्रिका ≡)
७ नवीन पद्यसंग्रह ।॥)
८ विहारी-संग्रह ≡)
९ सती करुणाकी ॥)
१० हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव ॥≈)
११ ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार १॥)

(२) साधारण पुस्तकमाला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था १)

(३) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

१ सरल शरीर-विज्ञान ॥), ।॥)
२ प्रारम्भिक रसायन १)
३ सृष्टि की कथा १)

(४) बाल-साहित्य माला

१ बाल नाटक-माला ।)
२ बाल-कथा भाग २ ।≈)
३ बाल विभूति ≡)

(५) नवीन पुस्तकें

१ सरल नागरिक शास्त्र ३)
२ कृषि प्रवेशिका १)
३ विकास (नाटक) ॥≈)
४ हिंदू-राज्य शास्त्र ३॥)
५ कौटिल्य की शासन-पद्धति १≈)
६ गावों की समस्यायें १)
७ मीराँबाई की पदावली १॥)
८ भट्ट निबंधावली ।)
९ बंगला साहित्य की कथा १॥)
१० शिशुपाल वध २)
११ ऐतिहासिक कथायें ॥)
१२ दमयन्ती स्वयंवर ... ॥)

प्रकाशित हो गईं

१—मैथिली लोकगीत—राम इक़बालसिंह 'राकेश' भूमिका लेखक— पण्डित अमरनाथ झा ३)
२—गोरखबानी—डाक्टर पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ३)
३—दीवाली और होली—(कहानी संग्रह) श्री इलाचन्द्र जोशी १॥)

शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं

१—महावंश—भदन्त आनन्द कौसल्यायन
२—हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी—श्री नन्ददुलारे वाजपेयी
३—स्त्री का हृदय—(एकांकी नाटक) श्री उदयशंकर भट्ट

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए० ६३१

जातक

[प्रथम तथा द्वितीय खण्ड]

अनुवादक : भदंत आनन्द कौसल्यायन

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान पं० जयचन्द्र विद्यालंकार का कथन है कि "विश्व के वाङ्मय में 'जातक' जन-साधारण की सब से पुरानी कहानियाँ हैं; मनोरंजकता, सुरुचि, सरलता, आडम्बरहीन सौन्दर्य और शिक्षाप्रद होने में उनका मुक़ाबला नहीं हो सकता। वे बच्चों के लिये सरल और आकर्षक, जवानों और बूढ़ों के लिये भी रुचिकर और विद्वानों के लिये प्राचीन भारत के जीवन का जीता-जागता चित्रण करने के कारण अत्यन्त मूल्यवान हैं।"

प्रथम खंड, पृष्ठ संख्या ५४०—२५; डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)

द्वितीय खंड, पृष्ठ संख्या ४६४—२४ डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)

'आधुनिक हिन्दी कवि' माला

आधुनिक काल के श्रेष्ठ कवियों द्वारा अपनी सर्वोत्तम रचनाओं के संग्रह इस माला के अन्तर्गत छपे हैं। पुस्तकों के प्रारंभ में कवियों ने अपनी कविताओं की विचारधारा पर विस्तृत प्रकाश डाला है। कवियों के पेन्सिल स्केच, तथा हस्तलिपियाँ भी साथ हैं।

१. श्री महादेवी वर्मा २. श्री सुमित्रानन्दन पंत

३. श्री रामकुमार वर्मा

प्रत्येक का मूल्य १॥)

मिलने का पता :

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

मुद्रक—श्रीगिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—श्रीरमाप्रसाद घिल्डियाल, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की मुख-पत्रिका

कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष १९९९

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन

प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका : कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष १९९९

संपादक—श्री रामचंद्र टंडन, साहित्य मंत्री

विषय-सूची

१. हरिजन संत रैदास—लेखक, श्री रामचंद्र टंडन ... १

२. स्वर्गीय 'प्रसाद' और कङ्काल—लेखक, श्री रामचंद विद्यार्थी ५

३. मानसिक विकास—लेखक, श्री राममूर्ति मेहरोत्रा, एम्० ए० ... ... १२

४. नागरी लिपि का विकास—लेखक, श्री किशोरीदास वाजपेयी १६

५. समालोचना २३

६. कार्य-समिति का आठवाँ अधिवेशन ... २५

७. हिंदी कोविद परीक्षा का परीक्षा फल ... ३३

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अभूतपूर्व प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द' लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, स्वर्गीय आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के एक निर्माता, हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति, स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल संग्रह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द।

मूल्य ४॥)

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग ३० : : संख्या ३, ४, ५ : : कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष—१९९९

सम्मेलन-पत्रिका

हरिजन संत रैदास[1]

[श्री रामचंद्र टंडन]

आज हम एक ऐसे महात्मा की याद कर रहे हैं, जिन्होंने अब से चार सदी पहले ईश्वर की दृष्टि में मनुष्य मात्र की समानता का संदेश सुनाया था। यह थे संत रैदास। नामदेव, सदना, सेन, कबीर, रैदास, कमाल, दादू, नाभादास, कृष्णदास आदि कितने ही संत हमारे यहां हो गए हैं, जिन्होंने समाज की नीच कहलाने वाली जातियों में जन्म लेकर भी अपने पवित्र चरित्र के कारण ऊँचा पद पाया, और जिनकी रचनाएं—जो कुछ भी प्राप्त हुई हैं—हिंदी भाषा और हिंदू धर्म के लिए आदर की चीज़ हैं। सम्मान की दृष्टि से कबीर के बाद शायद रैदास जी का ही नाम आता है।

जिन महात्माओं के नाम मैंने अभी लिए हैं, उनके जीवन का हाल जानने के लिए, दुर्भाग्य से, हमारे पास ऐसी सामग्री नहीं जिस पर पूरा-पूरा भरोसा किया जा सके। रैदास जी के जन्म और मृत्यु की तिथियां तक हमें मालूम नहीं। परंपरा हमें बताती है कि उन्होंने लंबी आयु पाई, और वह स्वामी रामानंद के चेले और कबीर के गुरु-भाई थे। मीराबाई के कई गीतों में रैदास जी का गुरु के रूप में नाम लिया गया है। इस लिए रामानंद, कबीर और मीराबाई की तिथियों के निकट इनका समय भी अनुमान करना चाहिए, लेकिन इन प्रसिद्ध व्यक्तियों के समय के बारे में भी बड़ा विवाद है। रामानंद जी ने स्वयं लंबी आयु पाई थी, इसका वर्णन हमें नाभादास जी के 'भक्त-माल' में मिलता है। रामानंद जी की जन्मतिथि के अनुमान में विद्वानों में इतना अंतर है कि कोई यदि इसे १२९९ ई० बताता है तो दूसरा १४६० ई०। अभी हाल में मिले हुए एक ग्रंथ में, जिसका नाम 'प्रसंग-पारिजात' है और जो लगभग १४६० ई० में समाप्त हुआ बताया जाता है, रामानंद जी की मृत्यु की तिथि सं० १५०५ अर्थात् १४४८ ई० लिखी है। सब बातों पर विचार करते हुए, और यह जानते हुए कि सभी

[1] आल-इंडिया रेडियो, लखनऊ के अनुग्रह से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने रामानंद जी की लंबी आयु मानी है, यह अनुमान करना अनुचित नहीं जान पड़ता कि रामानंद जी चौदहवीं सदी ईस्वी के उत्तरार्द्ध में तथा पंद्रहवी सदी के पूर्वार्द्ध में रहे हैं। परंपरा इस विषय में भी दृढ़ है कि कबीर और रैदास दोनों ही रामानंद जी के चेले थे। इसकी पुष्टि अभी बताए गए 'प्रसंग-पारिजात' से भी होती है। कबीर और रैदास दोनों ही बनारस के थे, और यहीं पर इनके गुरु की भी गद्दी थी। रैदास के पदों में जिस तरह कबीर का चर्चा आया है, उससे पता चलता है कि कबीर जी रैदास से बड़े थे। ऐसा जान पड़ता है कि यद्यपि कबीर और रैदास दोनों ही रामानंद जी के प्रभाव में आए फिर भी कबीर सयाने हो चुके थे और रैदास लड़के ही थे। रैदास जी की साधु-सेवा में बचपन से ही लगन थी, और रामानंद जी ने, जिनको दलित जातियों से बड़ा प्रेम था, अगर बालक रैदास को अपनी शिष्य-मंडली में जगह दे दी हो तो आश्चर्य नहीं। की महोदय ने अपनी पुस्तक 'कबीर ऐंड हिज़ फ़ालोअर्स' में, मिर्ज़ापुर ज़िले में सन् १५४३ ई० में एक साधु-मंडली की स्थापना बताई है। इसका संस्थापक वीरभान नाम का एक साधु था। वीरभान उदयदास का चेला था और उदयदास स्वयं रैदास जी का चेला था। अब हम यदि १५४३ को उदयदास के निधन की तिथि मान लें, तो रैदास जी की मृत्युतिथि इससे कुछ पहले माननी पड़ेगी। और यह देखते हुए कि रैदास जी की बड़ी आयु बताई जाती है—कुछ लोग तो १२० वर्ष बताते हैं—संभवतः उदयदास उनसे बहुत वर्ष बाद तक जीवित न रहा होगा। इस लिए रैदास जी का समय १४३० और १५३० ई० के बीच मानना कदाचित् असंगत न होगा। यह समय मान लेने पर रैदास जी के रामानंद के चेले, कबीर के गुरुभाई और मीराबाई के गुरु होने की सभी बातें समझ में आ जायँगी। जब तक और विशेष प्रमाण न मिलें इस विषय में इससे अधिक नहीं कहा जा सकता।

कुछ लोगों ने यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि रैदास जी महाराष्ट्र अथवा राजपूताने में रहते थे। रैदास जी की रचनाओं में भाषा का जैसा पँचमेल मिलता है उससे इन मतों की संभवतः कुछ अंशों में पुष्टि मिलती है, लेकिन 'आदि ग्रंथ' से, जो कि सिक्खों की प्रतिष्ठित पुस्तक है, और जिसका संकलन सोलहवीं सदी के अंत के लगभग हुआ, हमें ठीक-ठीक पता चलता है कि रैदास जी बनारस के आसपास अपना धंधा किया करते थे। इसमें संदेह नहीं जान पड़ता कि रैदास जी बनारस के ही रहने वाले थे। उन्होंने लंबी यात्राएं की थीं, और न केवल राजपूताना, और महाराष्ट्र वरन् गुजरात में भी घूमे थे। गुजरात में तो आज भी उनकी शिष्यपरंपरा है जो रविदासी कहलाती है।

इसमें भी संदेह नहीं कि रैदास जी जाति के चमार थे। अपनी नीच जाति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथन उन्होंने अपने पदों में बार-बार किया है। उनके पूर्वज ढोरों की खाल निकालने का व्यापार करते थे। रैदास जी के पिता का नाम रग्घू था, और माता का घुरबिनिया बताया जाता है। जान पड़ता है कि रग्घू ने कुछ धन कमा लिया था और पैसेवाला था। उसे रैदास जी का साधु-सेवा में लगा रहना अच्छा न लगता। वह चाहता था कि रैदास जी घर के धंधे में लगें। यह भी कहा जाता है कि एक दिन क्रोध में आकर रग्घू ने रैदास जी को अपने घर से निकाल दिया, और उन्होंने भी अपने घर के पिछ-वाड़े एक छप्पर डाल लिया और अपनी स्त्री सहित उसमें रहने लगे और पिता के क्रोध की चिंता न की। रैदास जी जूतियां गाँठ कर अपनी जीविका चलाते थे और जान पड़ता है कि इनके गाहक इनके काम और ईमानदारी से संतुष्ट थे। इनकी आमदनी का ज़्यादा हिस्सा अब भी साधुओं के सत्कार में जाता और धीरे-धीरे इनके अच्छे चरित्र की ख्याति फैली और जनता इनका आदर करने लगी।

रैदास जी के बारे में ऐसी बहुत सी कौतूहलजनक कथाएं प्रचलित हैं जिन पर सहसा विश्वास नहीं होता। एक कथा यह भी है कि इन के यहां एक बार एक साधु आया, जिसने इन्हें पारस पत्थर दिखाया। और उससे लोहे को छुलाकर इनके सामने सोना भी बना दिया। उसने रैदास जी को यह पारस पत्थर भेंट करना चाहा। पहले तो इन्होंने पत्थर लेने से इनकार किया, लेकिन साधु के बहुत आग्रह करने पर इन्होंने कहा कि उसे हमारे छप्पर में रख दो। तेरह महीने बाद वह साधु इनके यहां फिर आया और इनसे पत्थर के बारे में जानना चाहा तो इन्होंने कहा कि पत्थर जहां का तहां छप्पर में रक्खा है। देख लीजिए। इससे यह बात तो प्रकट ही है कि रैदास जी बड़े सात्विक और संतोष का जीवन बिताने वाले थे। धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों इनका नाम फैला यह अपना समय अधिकाधिक धार्मिक बातचीत तथा सत्संग में देने लगे और संभवतः इन्होंने अपना पेशा छोड़ दिया और चेलों की दी हुई भेंट पर ही अपना निर्वाह करने लगे। चेलों से मिले धन से इन्होंने एक धर्मशाला और एक मंदिर भी बनवाया। ऐसा भी कहीं-कहीं कहा जाता है कि इसी मंदिर में वह अपने अंतिम दिनों में आकर रहने लगे थे। इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि रैदास जी के शिष्य, जिनमें अब कदाचित् कुछ उच्च वर्ग के लोग भी मिल गए थे, इन्हें अपने पुराने पड़ोस से दूर रखना चाहते रहे हो। क्योंकि यद्यपि रैदास जी का मान बढ़ता ही जाता था, फिर भी बनारस जैसे कट्टरता के केंद्र में, बहुत-सी जनता के मन में यह धारणा तो बनी ही रहती थी कि अमुक आदमी नीच जाति का है। स्वयं रैदास जी को अपनी नीच जाति के संबंध में कोई ग्लानि नहीं थी। इसका प्रमाण उनके पदों में बार-बार मिलेगा। इन्होंने अनेक बार उन दलित जाति के संतों का प्रसंग उठाया है जिन्होंने नीच जाति का होते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी परम पद को प्राप्त किया है। फिर भी अपनी नीच जाति तथा व्यवसाय का रैदास जी ने इतनी बार वर्णन किया है कि पढ़ने वाले को कभी-कभी यह संदेह होने लगता है कि वह अपनी जाति के बारे में अपना संकोच सचमुच त्याग भी सके थे या नहीं। एक बात साफ़ है। वह यह कि यद्यपि उनका आदर लोगों के मन में बढ़ रहा था फिर भी उनके चेले ज्यादातर दलित जाति के ही लोग थे।

हम नहीं जानते कि रैदास जी पढ़े-लिखे थे या नहीं, अपने पद इन्होंने आप लिखे या चेलों से बोलकर लिखाए। इनके पदों के संग्रह मिलते कई हैं। इन में मूल की कहां तक रक्षा हो सकी है यह कहना कठिन है। पाठभेद बहुत है। ज़रूरत इस बात की है कि भिन्न संग्रहों का मिलान करके एक प्रामाणिक संग्रह रैदास जी की बानी का छपाया जाय। नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्टों में 'रैदास की बानी' 'रैदास के पद', और 'रैदास की साखी तथा पद' की हाथ की लिखी प्रतियों के हवाले मिलते हैं। थोड़े ही दिन हुए 'प्रहलाद चरित' नाम की उनकी एक पुस्तक खोज में मिली है। संतबानियों के कई संग्रहों में भी रैदास जी के पद रख लिए गए हैं। इस तरह सामग्री काफ़ी है जिसके आधार पर काम हो सकता है और रैदास जी की रचनाओं का एक संस्करण छप सकता है। इस समय हमें 'रैदास जी की बानी' नाम का बेल्वेडियर प्रेस, इलाहाबाद का ही एक छपा संग्रह मिलता है, जिसमें आधी दर्जन साखियों के अतिरिक्त ८७ पद इकट्ठा किए गए हैं। इनके अतिरिक्त सिक्खों के 'आदिग्रंथ' में ४० पद मिलते हैं, जिनमें १७ इस संग्रह में आए पदों से भिन्न और नए हैं।

रैदास जी भक्तिमार्ग के पथिक थे। संसार उन्हें दुखमय जान पड़ता है। जन्म लेने का विचार ही उनके लिए दारुण है। वह जन्म-मरण के निरंतर चक्र और पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं। इनसे मुक्ति पाने की प्रबल कामना का पता उनके पदों से बारबार मिलता है।। मुक्ति का एकमात्र साधन उनकी दृष्टि में ईश्वर की कृपा है, और यह कृपा भक्ति और प्रार्थना से प्राप्त होती है। कहते हैं—

भगती ऐसी सुनहु रे भाई। आई भगति तब गई बड़ाई॥
कहा भयो नाचे अरु गाये, कहा भयो तप कीन्हें।
कहा भयो जे चरन पखारे, जौ लौं तत्व न चीन्हें॥
कहा भयो जे मूड़ मुड़ायो, कहा तीर्थब्रत कीन्हें।
स्वामीदास भगत अरु सेवक, परम तत्व नहिं चीन्हे।
कह रैदास तेरी भगति दूर है, भाग बड़े सो पावै।
तज अभिमान, मेटि आपा पर विपलक ह्वै चुनि खावै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊं। फल अरु दूध अनूप न पाऊं॥
थनहर दूध जो बछरू जुठारी। पुहुप भँवर जल मीन बिगारी॥
मलयागिर बेधिओ भुअंगा। विष अमृत दोउ एकै संगा।
मन ही पूजा, मन ही धूप। मन ही सेऊं सहज सरूप॥
पूजा अरचा न जानूं तेरी। कह रैदास कवन गति मेरी॥

इन पदों से रैदास जी की भक्ति-भावना, दीनता, ईश्वर नाम में विश्वास आदि का पता चलेगा। एक और सुंदर पद देकर आज की बातचीत समाप्त करूँगा।

अब कैसे छुटै नाम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अँग-अँग बास समानी॥
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा॥
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहिं मिलत सोहागा॥
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करे रैदासा।

रैदास जी वास्तव में एक बड़े संत थे। वह इस विश्वास को लिए हुए जिए और उसी को लिए हुए मरे कि—

जाति पाँति पूँछे नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।

स्वर्गीय प्रसाद और कङ्काल

[श्री रामचंद्र शर्मा]

प्रसाद जी हिन्दी साहित्य के महारथी तथा अपने युग के एक महान कलाकार थे। भारतेन्दु युगीन नाट्यस्रोत, जो शुष्क हो चला था, आपने फिर प्रवाहित किया। नाटकों के कथानक आपने बौद्धकालीन भारतीय इतिहास से लिये—जिसके लिये स्वर्गीय प्रेमचन्द्र तक ने भी उनके लिये 'गड़े मुर्दे उखाड़ना' कहा था। ऐसे कथानक चुनने पर भी वह अपने नाटकों में प्राचीनता की छाप अङ्कित करने में सफल हो सके। यत्र-तत्र कल्पना का आधार लेने पर भी उनमें जोड़ तथा शैथिल्य परिलक्षित नहीं होता। उन्होंने काव्य भी लिखे—'कामायनी' महाकाव्य तो हिन्दी साहित्य की गौरवमयी अमरकृति है, जिसकी समाप्ति पर ही प्रसाद एक सन्तोष की श्वास ले सके थे। 'आँसू' भी सुन्दर काव्य है। उनके काव्यों में रहस्यवाद भी मिलता है; परन्तु वह भारतीय है, योरुपीय नहीं। प्रसाद आद्यन्त मौलिक तथा भारतीय संस्कृति के प्रवल समर्थंक रहे। जिससे प्रसाद अपने बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के चिर परिचित से रूप में हमारे समक्ष आते हैं। उनकी कृतियां युग-युग तक हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के लिये मनन तथा गर्व की वस्तु रहेंगी।

'कङ्काल' और 'तितली' उनके दो उपन्यास हैं। 'इरावती' तीसरा ऐतिहासिक उपन्यास है—जो अपूर्ण है। 'कंकाल' पहले का तथा 'तितली' बाद का। इन दोनों में प्रसाद भी अपने नवीन रूप से हिन्दी साहित्य में आते हैं—भारतीयता उन्होंने छोड़ी नहीं। रूढ़ियों का अन्धानुसरण करने के कारण वह समाज के आगे प्रश्न-सूचक चिह्न लगा देते हैं और पूछते है कि तुम्हारे पास वस्तुतः इसका कोई उत्तर भी है ? आदर्शवादियों की तरह वह उसका उत्तर हमारे समक्ष नहीं रखते। उसे हमारे सोचने के लिये छोड़ आते हैं। वह सुधारक नहीं, परन्तु समाज की दुर्बलताओं के मध्य वक्ता अवश्य हैं।

'कंकाल' उनका पहला उपन्यास है; परन्तु तितली से उसका कथानक अधिक करुणोत्पादक है। 'चन्द्रगुप्त' में कल्याणी जिस प्रकार पितृ-भक्ति की सुन्दर मूर्ति है जिसने अपने पिता के मारने वाले अपने प्रेमी की प्रेम-भिक्षा को ठुकरा दिया था। 'तितली' में तितली भी पति-धर्म की दृढ़व्रती के रूप में हमारे सामने आती है। मधुवन घर से भाग गया है; परन्तु तितली अपने श्वसुर-कुल के गौरव को अक्षुण्ण ही बनाये रखती है। उसकी अन्तरङ्ग सखी शैला मधुवन को दोष देती है; परन्तु तितली का विश्वासी हृदय किञ्चिन्मात्र भी विचलित नहीं होता—अन्त में वह अपने स्वामी को पा भी लेती है। इस प्रकार के चरित्र हम कंकाल में नहीं पाते हैं। इसके पात्र समाज की दृष्टि से पतित होने के कारण वहिष्कृत हैं—जो क्षण-क्षण पग-पग पर ठुकराये जाते हैं। अपनी महत्ता को छिपाये हुये भी समाज के मान्यों के सामने वह बे-पेंदी के लोटे के समान अस्थिर हैं।

'कंकाल' के पुरुष पात्रों में मंगल और विजय तथा स्त्री पात्रों में तारा, घण्टी और गाला प्रमुख हैं। इनमें भी विजय तथा तारा दोनों मर्मस्पर्शी हैं और दोनों को जीवन में कम नहीं भटकना पड़ा। 'मिथ्या-धर्म का संचय और प्रायश्चित्त, पाश्चात्ताप और आत्म-प्रकरण—क्यों ? शान्ति तो नहीं मिली। मैंने साहस किया होता, तारा को न छोड़ा होता, तो क्या समाज और धर्म मुझे इससे भी भीषण दण्ड देता ? कायर मंगल। तुझे लज्जा नहीं आती ?' मंगल के इन शब्दों में उसके जीवन की झाँकी मिलती हैं। इनमें पाश्चात्ताप की ज्वाला कम नहीं। उसने मिथ्या धर्म का संचय और प्रायश्चित्त आदि सामाज में सम्मान पाने ही के लिये तो किया, परन्तु उसे अशान्ति ही तो मिली।

लखनऊ के वेश्यागृह से तारा का उद्धार कर वह हरद्वार में रहने लगा है। मंगल और तारा पति-पत्नी के सम्बन्ध से एक बंधन में, बँध जाने ही वाले थे—उसी दिन वह तारा की चाची—(नन्दो, घण्टी की मां) से उसका गर्भवती होना तथा 'तारा की मां ही कौन कहां की भंडारीजी की व्याही धर्म-पत्नी थी' जान उनको छोड़ देता है। काशी में आकर भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज का ऐतिहासिक अध्ययन करने के लिये वह पाली और प्राकृत का पाठ्यक्रम स्थिर करता है। मंगल और विजय इस स्थल पर एक दूसरे से परिचित होते हैं। मंगल निर्धन असहाय है और विजय धनी। दोनों में प्रगाढ़ मित्रता के कारण विचारों का आदान-प्रदान होता है। तारा मोहन को जन्म देकर उसी मार्ग से निकलती है 'जहां विजय की दासियां साधु-ब्राह्मणों के भोजनोपरान्त जूठी पत्तलें फेंक रही थीं और उन पत्तलों की जूठन 'वे पुश्त दर पुश्त के भूखे बटोर रहे थे'। तारा ने बीच से मार्ग लेना चाहा; परन्तु डोमिन के धक्का देने से वह मूर्छित हो गिर पड़ी। विजय का हृदय मंगल से धर्म और पुण्य के ऊपर इतना ढोंग देखकर क्रन्दन कर उठा—'जिन्हें आवश्यकता नहीं उनको आदर से बिठा कर भोजन कराया जाय।...और इन्हें जिन्हें पेट ने सता रखा है, जिनको भूख ने अधमरा बना दिया है, जिनकी आवश्यकता नंगी होकर वीभत्स नृत्य कर रही है—'वे मनुष्य कुत्तों के साथ जूठी पत्तलों के लिये लड़ें, यही तो तुम्हारे धर्म का उदाहरण है।

सामाजिक धार्मिक अन्धभक्ति के लिये कितने तथ्यपूर्ण वास्तविक शब्द हैं। क्या हिंदू समाज के पास इसका कोई सबल उत्तर है?

विजय की मां किशोरी यमुना को दासी स्वरूप में नौकर रख लेती है और मंगल भी उसके यहां रहने लगता है। थोड़े ही समय में यमुना घर की मुख्य प्रबन्ध-कारिणी तथा आत्मीय दासी हो गई, परन्तु यमुना ने अपने को मंगल के समक्ष नहीं किया। रामनगर के मार्ग में अचानक मंगल और तारा का साक्षात्कार हो जाता है।

'तारा तुम्ही हो !!'

'क्या अपने विपत्ति के दिन भी किसी तरह न काटने दोगे। तारा मर गई मैं उसकी प्रेतात्मा यमुना हूं।'

'तारा मुझे क्षमा करो।'

'हम दोनों का इसी में कल्याण है कि एक दूसरे को न पहिचानें और न एक दूसरे की राह में अड़ें। तुम विद्यालय के छात्र हो और मैं दासी यमुना—दोनों को किसी दूसरे का अवलम्ब है। पापी प्राण के लिये मैं प्रार्थना करती हूं, क्योंकि इसे देकर मैं न दे सकी।'

'तुम्हारी यही इच्छा है तो यही सही।'

दोनों को वार्तालाप करते विजय ने देख लिया—आंखें क्रोध से लाल हो गईं। यमुना को लेकर दोनों में द्वन्द्व उपस्थित हो जाता है। इस धक्के के कारण विजय रोगग्रस्त होता है। उसके अच्छे हो जाने पर मंगल 'मैं तुम्हारा विश्वासपात्र न हो सका, इस लिये मुझे छुट्टी दो' विजय से कह चल देता है। यमुना को लेकर मंगल ने अपने भी वन में टिकने की अभिलाषा की; परन्तु असफल रहा। मंगल विजय की प्रगति में बाधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप हो गया था—उसके चले जाने पर उसकी रुकी गाड़ी फिर चल पड़ी।

विजय अपनी मां तथा यमुना आदि के साथ वृन्दावन में तीर्थयात्रा के लिये आया। इस स्थल तक विजय था, जीवन-स्रोत अवाध रूप से बहता रहा। मां का स्नेह था—स्वतंत्र विचारों के होते हुए भी समाज में उसकी गणना थी; परन्तु मां ने उसे निर्वासित कर दिया—घण्टी से उसका साक्षात्कार हुआ। घण्टी एक सरल हँसोड़ विधवा बालिका थी। परिहास करने में बड़ी निर्दय थी। 'मैं तो वृजवासिनी हूं—हृदय की बंशी सुनने से कभी रोको नहीं जा सकती। 'मुझे जो कुछ करना है करती हूं, करूँगी भी। घुमाओगे घूमूँगी, पिलाओगे पिऊँगी, दुलार करोगे हँस दूँगी, ठुकराओगे रो दूँगी। स्त्री को इन सभी वस्तुओं की आवश्यकता है। मैं इन सभी वस्तुओं को समभाव से ग्रहण करती हूं और करूँगी।'

घण्टी हृदय के आदेशों का अनुसरण करने वाली है—उसे समाज का भय नहीं। उसके समक्ष समाज के नियमोपनियमों का कोई भी टिकाव नहीं! घण्टी पर आक्रमण करने वाले नवाब को विजय मार कर सिर कुचल देता है। गो० कृष्णशरण की टेकरी में रहने वाले उसी यमुना तथा निरंजन के आदेश से विजय भाग जाता है। यमुना उसी मृत शरीर के पास बैठ जाती है—पुलिस हत्या के अपराध में उसे बंदी बनाती है। विजय फतहपुर-सिकरी से अछनेरा जाने वाली सड़क के सूने अञ्चल में एक छोटे से जंगल में वदन गूजर के यहां जाकर शरण लेता है—उसकी पुत्री थी गाला।

गाला का जन्म मुग़लानी मां तथा डाकू पिता से हुआ था। भारतीयता से अधिक प्रभावित वह एक सरल भोली बालिका थी। प्रकृति की गोद में पली होने के कारण उसमें प्रगल्भता नहीं, उसका हृदय आडम्बर रहित निष्पाप था। नये (विजय) से उसने अपने को उलझाना चाहा तथा 'गाला का जीवन चिरपरिचित देश की सीमा पार कर रहा है' जान वदन ने नये को उपयुक्त पात्र समझ उस से गाला के लिये प्रस्ताव किया। 'मुझे इसकी आशङ्का पहले से थी। आपने मुझे शरण दी है। इसलिये गाला को मैं प्रतारित नहीं कर सकता। क्योंकि मेरे हृदय में दाम्पत्य जीवन के सुख-साधनों की सामग्री बची न रही तिस पर भी आप जानते हैं कि मैं एक सन्दिग्ध हत्यारा मनुष्य हूं।'

विजय के इन शब्दों से वदन निरुपाय और हताश हो गया तथा लज्जा, क्षोभ और अपनी दयनीय दशा से स्त्री होने का ज्ञान गाला को धक्का देने लगा। विजय की इस उपेक्षा से दुःखी हो उसने अपना ध्येय पढ़ना-पढ़ाना अपने पिता को बताया। फलतः गाला को पितृ-स्नेह से बंचित हो जाना पड़ा। वृन्दावन के समान मंगल ने यहां भी गूजर बालक-बालिकाओं के लिये पाठशाला खोली थी। पिता से ठुकरा दिये जाने पर गाला मंगल की पाठशाला में अध्यापन कार्य करने लगी और वदन की मृत्यु के उपरांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने को निरीह समझ हृदय के बिखरे हुये प्रेम को वह मंगल में केन्द्रित कर देती है। स्त्री का हृदय प्रेम का रंगमच है।'

मंगल 'सेवाधर्म' का भाव लिए हुए देवनिरंजन की सहायता से गो० कृष्ण-शरण के आदेशानुसार 'भारत संघ' की स्थापना कर देता है, जिसका ध्येय है ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य से भिन्न कष्ट-पीड़ितों की एक नवीन हिन्दू जाति बनाना, श्रेणीवाद, धार्मिक पवित्रतावाद, अभिजात्यवाद की उपेक्षा करना और ऋषि-वाणी को दुहराना 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' आदि। भारत-संघ के उत्सव के उद्योग में मंगल अस्वस्थ पड़ जाता है—गाला प्राणपण से उसकी शुश्रूषा करके उसको बचा लेती है। कृष्णशरण उसी उत्सव में मंगल और गाला को विवाहसूत्र में बाँध देते हैं।

यमुना पर हत्या के अपराध में न्यायालय में अभियोग चलता है। न्यायाधीश के समक्ष उसने महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिया—'पुरुष स्त्रियों पर सदैव अत्याचार करते हैं। कहीं नहीं सुना गया कि अमुक स्त्री ने अमुक पुरुष के प्रति ऐसा ही अन्याय किया। परंतु पुरुषों का यह साधारण व्यवसाय है—स्त्रियों पर आक्रमण करना।......' परंतु उस एक क्षण की कल्पना कीजिये कि उनका सर्वस्व लुटा चाहता है और न्याय के रक्षक अपने आराम में हैं। वहां एक पत्थर का टुकड़ा ही आपत्तिग्रस्त की रक्षा कर सकता है। तब वह क्या करे? उसका भी उपयोग न करे? यमुना अपराध से मुक्त कर दी जाती है। चाची (नन्दो) से अपने पुत्र का जीवित तथा श्रीचंद का दत्तकपुत्र होना सुनकर वह निरुद्देश्य जीवन-यापन करने वाले विजय को ले काशी आती है। दोनों के पास भोजन नहीं और न आश्रय का कोई साधन ही। यमुना अपने पुत्र से हँस-बोल लेने के लिये उसकी दाया बनती है। विजय और यमुना इस अवसर पर भाई-बहिन के बंधन में बँध जाते हैं। एक दिन सुख की रंगरेलियों में विजय का स्वतंत्र जीवन यों था:

'तो भी बहुत-सी बातें ऐसी हैं जो हिन्दू धर्म में रह कर नहीं की जा सकतीं; किन्तु मेरे लिये नितान्त आवश्यक हैं।'

'जैसे?'

'तुमसे ब्याह कर लेना।'

'क्यों विजय बाबू! क्या दासी होकर रहना किसी भी भद्र महिला के लिये अपमान का पर्याप्त कारण हो जाता है?'

'यमुना तुम दासी हो। कोई मेरा हृदय खोलकर पूछ देखे तुम मेरी आराध्य देवी हो—सर्वस्व हो।'

\+ \+ \+

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'किसी के हृदय को शीतलता और किसी के यौवन की उष्णता—मैं सब झेल चुकी हूं। उसमें सफल नहीं हुई, उसकी साध भी नहीं रही। विजय बाबू! मैं दया की पात्री एक बहन होना चाहती हूं—है किसी के पास इतनी स्नेह-संपत्ति जो मुझे दे सके?'

यमुना का बहन बनने का यह प्रस्ताव काशी में पूरा होता है—जब विजय का संसार सूना है। 'सुख के दिन कुछ और हैं, दुःख के हैं कुछ और।' सुख में हम भले ही उछल-कूद लें, परंतु दुःख में हम अपना जैसा ही दुखी ढूढ़ते हैं—जिसके साथ हम अपनी दुखकथा कह सकें और उसकी सुन सकें। यमुना ने अपने को मंगल को सौंप ही दिया था; परंतु मंगल ने उसको ठुकरा दिया। मंगल ने समाज की दृष्टि से अपने चरित्र को उठाया, पाठशालाएं प्रारंभ कीं, भारतसंघ खोला और अन्त में गाला के साथ अपनी गृहस्थी भी बसा ली; परंतु यमुना एक बार हृदय देकर के अपनी अभिलाषाओं को आजीवन दबाये ही रही और विजय अपनी माता के अंतिम दर्शन कर भारतसंघ के स्वयंसेवकों को 'कंकाल' के रूप में मिला।

भारत साधना का सफल प्राङ्गण रहा है। भारत को जब से अपने का ज्ञान हुआ है तब से अब तक कितने ही साधकों ने अपनी साधना के बल पर सांसारिक अज्ञानांधकार को मिटाकर जिज्ञासुओं को ज्ञान-ज्योति प्रदान की। अधर्म तथा बर्बरता के स्थान पर सद्धर्म और अहिंसा की स्थापना की। विदेशियों ने उनकी साधनानुभूतियों से लाभ उठाने के लिये भारत के उन सपूतों के समक्ष अपना मस्तक नत किया। भारत गौरवशाली हुआ—सम्मान बढ़ा। उसने अपने सुपुत्रों को भी हृदय से लगाया। उनके आदर तथा सम्मान के लिये देश उनके पीछे दौड़ने लगा—अद्यावधि उनकी प्रतिष्ठा में कोई अभाव नहीं। भारतीय उनकी वाणी पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने में संकोच नहीं करते। धर्म उनकी दृष्टि में सर्वोच्च रहा और रहेगा; परंतु आधुनिक वैज्ञानिक युग होने के कारण आजकल के शिक्षित अपने धर्म को वैज्ञानिक कसौटी पर कसते हैं और वास्तव में झूठे साधुओं ने धर्म के नाम पर आडम्बर भी कम नहीं फैलाये हैं। जिसके कारण अधिकांश जनता को उन साधुओं तथा उनकी आडम्बरी प्रथाओं के प्रति अरुचि तथा अविश्वास बढ़ रहा है। भगवान् पर भी ऐसे झूठे साधु स्वतंत्र भाग का साहस रखते हैं। साधु निरंजन के देव विग्रह में यमुना फ़र्श धोने के लिये घुसी ही थी कि साधु द्वारा झिड़क दी जाती है। 'तो क्या भगवान् उसे पवित्र नहीं कर देंगे? आप तो कहते हैं कि भगवान पतित-पावन हैं, फिर बड़े-बड़े पापियों को जब उद्धार की आशा है तब इसको क्यों वंचित किया जाय?' 'अच्छा शास्त्रार्थ रहने दो'! उत्तर कितना छिछला है। जिनके भगवान सोने चाँदी से घिरे रहते हैं उनके भक्तों को उनकी रखवाली की अधिक आवश्यकता भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है ; परंतु ऐसे भगवान में हम न लोक-कल्याण का रूप प्राप्त कर सकते हैं और न हम उनको पतित-पावन के आसन पर ही बिठा सकते हैं। 'धर्म के सेनापति विभीषिका उत्पन्न करके साधारण जनता से अपनी वृत्ति कमाते हैं और उन्हीं को गालियां भी सुनाते हैं। यह गुरुडम कितने दिनों चलेगा, मंगल ?' विजय को मूर्तिपूजा तथा उसके आडम्बर से अत्यन्त ही घृणा है। मंगल प्राचीन आदर्शों का अनुकरणकर्त्ता है; परंतु जीवन में काफ़ी भटक लेने पर मंगल भी विजय के विचारों से सहमत हो अपने गुरु गो० कृष्ण-शरण से कहता है—'मैं आर्यसमाज का विरोध करता था।.........एक दिन मैंने अपने मित्र विजय का इन्हीं विचारों के लिये विरोध किया था, अब मेरी यह धारणा हो गई है कि इस जर्जर धार्मिक समाज में जो पवित्र हैं—वे अलग बने रहें। मैं उन पतितों की सेवा करूं जिन्हें ठोकरें लग रही हैं।......मैं अपने समाज को एकत्र करूँगा और गोपाल से तब प्रार्थना करूँगा कि भगवान तुम में यदि पावन करने की शक्ति हो तो आओ।' गो० कृष्णशरण प्राचीन आदर्शों के कट्टर समर्थक हैं, आर्य-मानव-संस्कृति के उपासक। स्वार्थ तथा आडम्बर को, जिसने भगवान के सत्य-शिव-मंगल रूप को ही ढक लिया वह हेय समझते हैं।

'कंकाल' में धार्मिक समस्याओं का समावेश है और कथानक भी हिन्दू तीर्थस्थानों—प्रयाग, काशी, अयोध्या, वृन्दावन, मथुरा तथा हरद्वार में घूमता है। प्रसाद जी अपने जीवन में पहले कवि तथा फिर नाटककार हुये। 'कंकाल' में प्रसाद के कवि तथा नाटककार दोनों रूप मिलते हैं—उन्होंने अधिकांश में अपनी कवित्वमयी शैली में ही लिखा। 'कंकाल' में ऐसे कितने ही स्थल हैं जिनको अध्ययन कर कविता का ही रसानन्द मिलता है। नाटकों के अनन्तर प्रसाद जी ने उपन्यास लिखे। जिससे नाटकों के समान ही उनके उपन्यासों में कथोपकथन भी आकर्षक हैं। लेखक ने पात्रों को स्वयं ही अपने वार्तालाप से चरित्र-चित्रण करने दिया है। ऊपर तारा-मंगल और तारा-विजय के वार्तालापों से उनके चरित्रों पर कितना ही प्रकाश पड़ता है। उनके कथोपकथन सजीव-भावपूर्ण हैं और उनमें धारावाहिकता अबाध रूप से उपस्थित है। नाटकों के समान ही कितने ही स्थलों पर 'स्वगत' अङ्कित हैं।

'कंकाल' यथार्थवाद से ओतप्रोत है। गो० कृष्णशरण के अतिरिक्त सभी में अभाव, पतन और वेदना के अंश अधिक हैं। इसी से कृष्णशरण आदर्शवादी हैं और शेष सभी पात्र यथार्थवादी।

प्रसाद भी आदर्श कवि तथा नाटककार हुए ; परन्तु समाज की परम्परागत रूढ़ियों के समक्ष दुःखी तथा पतितों का कोई भी मूल्य नहीं है, अध्ययन कर उनका आदर्श हृदय भी समाज के प्रति विद्रोही बन बैठा। जिसके फलस्वरूप 'कंकाल' की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचना हुई। आदर्शवादी पाठक और लेखक भले ही उसमें 'सत्य' और 'सुन्दर' के दर्शन न करें; परन्तु यथार्थवादियों के लिये तो यथार्थवादी साहित्य में इसके लिये सर्वोच्च स्थान है और आगे जन्म लेने वाली सन्तानों को इस युग का सामाजिक इतिहास तो 'कंकाल' अवश्य ही उपस्थित करता रहेगा—यह निश्चय है।

मानसिक विकास

[श्री राममूर्ति मेहरोत्रा, एम० ए०]

मानसिक वृद्धि की विशेषताएँ—(१) जन्म के समय मानव-शिशु तथा पशु-शावक की मानसिक शक्तियों में कोई विशेष अंतर नहीं दिखाई देता, अपितु पशु-शावक मानव-शिशु से बुद्धिमान प्रतीत होता है; परंतु कुछ ही वर्षों बाद मानव-शिशु पशु-शावक से बहुत कुछ आगे बढ़ जाता है और पशु-शावक खाना-पीना सीखने के अतिरिक्त निकटतः जहाँ का तहाँ रहता है। वास्तव में बात यह है कि मानसिक वृद्धि अथवा बुद्धि का निश्चित सीमा तक बराबर विकसित होते रहना केवल मनुष्य मात्र को ही विशेषतः है, पशुओं को नहीं। पशु-शावक मानव-शिशु की अपेक्षा शीघ्र खाना-पीना, चलना फिरना आदि सीख लेता है, परंतु उसकी मानसिक वृद्धि भी शीघ्र ही समाप्त हो जाती है, और अति अल्प मात्रा में होती है, जब कि मानव-शिशु पशु-शावक की अपेक्षा देर में खाना-पीना, चलना-फिरना आदि सीखता है; परंतु उसकी मानसिक वृद्धि देर तक होती रहती है और बहुत अधिक मात्रा में होती है। सारांश यह है कि पशुओं में अंग संचालिनी शक्ति और बुद्धि दोनों समानरूप से विकसित होती हैं, परंतु मनुष्यों में अंग-संचालिनी अथवा सक्रिय शारीरिक शक्ति का विकास तो मन्द गति से होता है लेकिन बुद्धि का विकाश तीव्र गति से होता है। अतएव बुद्धि की दौड़ में तो मनुष्य पशुओं आदि मनुष्येतर प्राणियों से कहीं आगे निकल जाता है, परंतु अंग-संचालन अथवा शारीरिक क्रियाओं में पिछड़ जाता है। इसके अतिरिक्त प्रायः यह भी देखा गया है कि जो बच्चे बचपन में सुस्त होते हैं और प्रत्येक बात देर में सीखते हैं, वे प्रायः बड़े होने पर बड़े बुद्धिमान् निकलते हैं, अर्थात् बच्चों का अपरिपक्व शिक्षाकाल (Training period) जितना लम्बा होता है, उनकी बुद्धि का विकास उतना ही अधिक होता है। चूँकि मानव-शिशुओं की अपेक्षा पशु-शावकों का अपरिपक्व शिक्षा-काल शीघ्र समाप्त हो जाता है, अतः पशु मनुष्यों की अपेक्षा अल्प बुद्धि होते हैं। इसकी पुष्टि रास के शब्दों द्वारा भी होती है यथाः—'The higher the position in the scale of in-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

telligence to which the animal ultimately rises, the longer is the period of immaturity. Intelligence depends on the degree to which the instincts are plastic;.........But the plastic instincts, which are a raw material of intelligent behaviour, need a period of adaptation in the life of each individual and such a period is provided during the months or years of immaturity. It is those animals which, by reason of the high level of intelligence they are destined to reach, are helpless at birth and therefore require education'"[1] अर्थात्, जितनी ही बुद्धि तीव्र होती है उतना ही उसकी अपरिपक्वता का समय लम्बा होता है। बुद्धि-विकास मूल प्रवृत्तियों की स्थिति-स्थापकता की मात्रा पर निर्भर है, परंतु स्थिति-स्थापक मूल प्रवृतियों को स्थिति-अनुकूल होने की शक्ति प्राप्त करने में कई-कई महीने अथवा वर्ष लग जाते हैं। अतः सब से अधिक बुद्धिमान होने वाला प्राणी जन्म के समय सब से अधिक असहाय होता है और शिक्षा की आवश्यकता उसी को है। दो-एक उदाहरणों से यह विषय स्पष्ट हो जायगा। यथा, मानव-शिशु जन्म के समय पूर्णतः असहायावस्था में होता है और केवल अपनी माता का दूध पीना भर जानता है, परंतु गाय का बच्चा दूध पीने के अतिरिक्त चलना-फिरना भी जानता है। अतः जन्म के समय मानव-शिशु की अपेक्षा गाय के बच्चे में प्रत्यक्षतः अधिक बुद्धि होती है। २-३ मास में गाय के बच्चे से घास चरना, सानी आदि खाना-पीना, वाह्य पदार्थ अथवा जीवों को पहचानना जैसा कि उसकी क्रियाओं, कुत्ते आदि के पास आने अथवा भोंकने पर डरकर भागना, बाहर से अपने घर में आ जाना, खाद्य-अखाद्य घास पहचानना, खाना-पीना लाने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों के पास जाने पर उन्हें शिर से मारने लगना, इत्यादि से प्रकट है। थोड़ा बहुत और आ जाता है और अपरिपक्व शिक्षा-काल (Training period) समाप्त हो जाता है। उधर मानव-शिशु लगभग तीन मास में प्रायः चारपाई पर करवट लेने, उलट जाने, माँ को पहचानने, मुसकरा देने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं सीख पाता और उसके ट्रेनिंग काल का केवल प्रारंभ होता है। लगभग तीन वर्ष में गाय का बच्चा पूरा गाय, बैल हो जाता है, उसमें चंचलता-चपलता अधिक बढ़ जाती है और वह घर तथा मालिक के अतिरिक्त अन्य पदार्थों तथा जीवों को भी भली भाँति पहचान लेता है और उसकी

[1] जेम्स रास कृत 'एजुकेशनल साइकोलाजी', पृष्ठ १०२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक तथा मानसिक वृद्धि समाप्त हो जाती है; उधर मानव-शिशु इधर-उधर चलने-फिरने, बाहर-भीतर आने-जाने, खाने-पीने की वस्तु माँगने, माता-पिता, कुत्ता-बिल्ली आदि सब को पहचानने, खिलौने आदि से खेलने, दूसरों की नकल करने और थोड़ा-बहुत बोलने लगता है और मानसिक वृद्धि की समाप्ति की कौन कहे, अभी तो उसके ट्रेनिंग काल का केवल मध्याह्न ही होता है। मानव-शिशु लगभग १६ वर्ष में पूरा आदमी हो जाता है और इसी समय अथवा १-२ वर्ष पश्चात् उसकी बुद्धि का विकास भी पूर्ण हो जाता है। इस समय वह इतना बुद्धिमान हो जाता है कि संसार के समस्त जीव-जन्तुओं को अपनी बुद्धि द्वारा परास्त कर सकता है और उनका राजा बन सकता है। बंदर, कछुआ, शूकर, कुत्ता, बिल्ली आदि पशुओं, मुर्गा, कबूतर, बत्तख, कौवा आदि पक्षियों की दशा भी गाय के बच्चे की भाँति ही है। शरीर-विज्ञान वेत्ताओं के मतानुसार इसका मुख्य कारण मानव मस्तिष्क में सैल्स (Cells) से निकलने वाले पुच्छलों तथा सिकुड़नों में बढ़ने की शक्ति होना और पशु आदि मनुष्येतर प्राणियों में न होना है। अब प्रश्न केवल यह है कि कोई पशु अथवा पक्षी चतुर और कोई मूर्ख क्यों होता है, उदाहरणार्थ—कुत्ता पशु गाय-भैंस, बंदर आदि से चतुर और तोता-मैना पक्षी मुर्ग़ा, चील, कौवा आदि से अपेक्षाकृत बुद्धिमान् होते हैं। इसका कारण बचपन के अपरिपक्व शिक्षा-काल का लम्बा अथवा छोटा होना है। कुत्ते का पिल्ला गाय-भैंस के बच्चों की अपेक्षा और तोता-मैना का बच्चा मुर्ग़ी, बत्तख़ आदि के बच्चों की अपेक्षा देर में चलने-फिरने, खाने-पीने योग्य होता है। जहां पाँच-सात दिन में पिल्ले की केवल आँखें ही खुलती हैं वहाँ चूज़ा (मुर्ग़ी का बच्चा) अपने माता-पिता की भाँति चलने-फिरने, खाने-पीने भी लगता है और तोते का बच्चा महीने दो महीने में भी इस योग्य नहीं हो पाता है। अतः कुत्ता गाय-भैंस से और तोता मुर्ग़े आदि से कहीं चतुर होता है।

(२) शारीरिक वृद्धि का मानसिक विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता है। मेरा यह निजी अनुभव है कि कभी-कभी अधिक दिन तक बुख़ार आदि आने के कारण शरीर इतना दुर्बल हो जाता है कि आराम हो जाने पर भी मस्तिष्क तथा कर्ण, चक्षु आदि ज्ञानेंद्रियाँ भली भाँति कार्य नहीं कर पातीं, मस्तिष्क के सम्मुख कई दिन तक शून्य-सा रहता है और थोड़ा-सा मानसिक कार्य करने पर ही मस्तिष्क थकित हो जाता है, फिर न तो कुछ समझ में आता है और न कुछ स्मरण ही रहता है। कभी-कभी जब हम उपवास करते हैं, तो दुर्बलता के कारण सदैव की भाँति अधिक देर तक बिना थके हुए मानसिक कार्य नहीं कर सकते। इसके विपरीत जब हमारा शरीर नीरोग तथा स्वस्थ होता है, तो हमारा लिखने-पढ़ने आदि प्रत्येक मानसिक कार्य में भी मन लगता है। इसके अतिरिक्त मानसिक वृद्धि के कारण शारीरिक वृद्धि और शारीरिक वृद्धि के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण मानसिक वृद्धि भी होती है, जैसा कि ऊपर उल्लेख हो चुका है कि बुद्धि-विकास के साथ-साथ ज्ञान-तंतु तथा सिकुड़नें भी बढ़ने लगती हैं अथवा ज्ञान-तंतुओं के बढ़ने तथा मिलने पर ज्ञान-वृद्धि भी होती है।

इसकी पुष्टि रास ने भी की है, यथाः—The mental structure actively determines experience and behaviour, urging the individual to notice this rather than that in his enviroument, to feel in a characteristic way, and to do this rather than that'[1] अर्थात्, मानसिक रचना द्वारा यह निर्णय होता है कि किसी व्यक्ति को कौन-सी वस्तु देखनी, सोचनी और करनी चाहिए और कौन-सी नहीं, द्वारा मतिष्क-रचना का अनुभव अथवा व्यवहार पर और 'The experience leaves behind it a modification of the mental structure'[1] अर्थात अनुभव द्वारा मस्तिष्क की रचना भी परिवर्तित हो जाती है, तथा 'The engrams resulting from experience do not lie side by side, unrelated to one another, but cohere to form new wholes'[2] अर्थात अनुभव द्वारा उत्पादित ज्ञान-तंतु पृथक्-पृथक् नहीं रहते हैं, अपितु एक दूसरे से मिलकर एक पूर्ण तंतु-समूह बन जाते हैं' द्वारा अनुभव अथवा व्यवहार का मस्तिष्क-रचना पर प्रभाव प्रदर्शित किया गया है।

(३) शारीरिक तथा मानसिक वृद्धि का एक-दूसरे पर प्रभाव पड़ता है, परंतु इसके मानी यह कदापि नहीं हैं कि शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार के विकास साथ ही साथ एक ही समय होते हैं। प्रायः लोग कहा करते हैं कि अमुक व्यक्ति अपनी आयु से कहीं अधिक बुद्धिमान है, उसके पेट में दाढ़ी है, इत्यादि अथवा जैसी उसकी उमर है वैसी अक़्ल नहीं है, उसके सब वर्ष पानी में बह गए, इत्यादि। प्रथम प्रकार के वाक्यों से आशय है कि अमुक व्यक्ति की बुद्धि आयु से अधिक है और दूसरे प्रकार के वाक्यों से आशय है कि अमुक व्यक्ति की आयु बुद्धि से अधिक है। शरीर-विकास खाना-पीना, जलवायु आदि पर निर्भर है, परंतु मानसिक विकास बहुत कुछ वातावरण, शिक्षा, संस्कृति, समाज आदि पर निर्भर है। अतः यह आवश्यक नहीं है कि शरीर-विकास के साथ मानसिक विकास भी उसी अनुपात से हो। यदि किसी को समाज से पृथक् रखकर केवल उसके भोजन-वस्त्र का समुचित प्रबंध कर दिया जाय,

[1] जेम्स रास कृत 'एजुकेशनल साइकोलाजी', पृष्ठ ४६

[2] वही, पृष्ठ ४८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसका शरीर तो अवश्य विकसित होता रहेगा, परंतु मानसिक विकास उचित प्रकार से न हो सकेगा और वह नितांत जंगली ही रहेगा, संभव है उसे मनुष्यों की भाँति बोलने-चालने की तो कौन कहे चलना-फिरना तक भी न आवे। कहते हैं एक बार दो लड़कियाँ भेड़िए की माँद में पाई गईं जो चारों हाथों-पैरों से चलतीं, मुँह से भेड़िए की भाँति गुर्रातीं और कच्चा मांस खाती थीं। अतः यद्यपि एक ओर शारीरिक वृद्धि का मानसिक वृद्धि पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ता है, तथापि दूसरी ओर दोनों का विकास किसी सीमा तक एक दूसरे से स्वतन्त्र है, और यह लेशमात्र भी आवश्यक नहीं है कि दोनों का विकास समान रूप से एक ही अनुपात से हो। हाँ, इतना अवश्य है कि शारीरिक वृद्धि की भाँति मानसिक वृद्धि भी प्रारंभ में तीव्र गति से और बाद में शनैः-शनैः होकर अंतिम सीमा तक पहुँच जाती है। तत्पश्चात् जिस प्रकार शरीर-वृद्धि पूर्ण होने पर यद्यपि हाथों-पैरों की लम्बाई, शरीर की ऊँचाई आदि नहीं बढ़ते, तथापि भोजनादि कारणों से शरीर स्वस्थ-अस्वस्थ अवश्य रहता है, इसी प्रकार मानसिक-वृद्धि पूर्ण होने पर यद्यपि बुद्धि नहीं बढ़ती, तथापि वाह्य पदार्थों अथवा जीवों के सम्पर्क में आने के अनुसार अनुभव अवश्य बढ़ता रहता है।

(४) शरीर मूर्त पदार्थ है और मन अथवा बुद्धि अमूर्त। जिस प्रकार शरीर-वृद्धि को हम फ़ीते तथा तुलायंत्र द्वारा इंचों तथा पौंडों में नाप-तौल सकते हैं, उस प्रकार बुद्धि की किसी यंत्र द्वारा नाप-तौल नहीं कर सकते; जिस प्रकार हम यह कह सकते हैं, कि अमुक बालक ४ फ़िट २ इंच ऊँचा, ६० पौंड भारी है, अमुक बालक इन २ वर्षों में ४ इंच ऊँचाई में और १० पौंड तौल में बढ़ गया है, अमुक बालक अमुक बालक से १ इंच ऊँचाई में और २ पौंड तौल में अधिक है, इत्यादि, उस प्रकार यह नहीं कह सकते कि अमुक बालक की बुद्धि कितने इंच लम्बी और कितने पौंड भारी है, किसी निश्चित समय में उसकी बुद्धि कितने इंच-पौंड बढ़ी है; एक बालक की बुद्धि दूसरे बालक से कितनी मात्रा में अधिक है, इत्यादि। जिस प्रकार हम किसी निश्चित समय के पश्चात् शारीरिक बृद्धि प्रत्यक्षतः देख सकते हैं, उस प्रकार मानसिक वृद्धि मनोवैज्ञानिक के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति सहज नहीं देख सकता। उदाहरणार्थ जिस प्रकार हम किसी बालक को दो-चार वर्ष बाद देखने पर तुरंत कह बैठते हैं कि 'अरे अब तो तुम काफ़ी लम्बे हो गए, पहचान भी नहीं पड़ते', परंतु यह नहीं कह सकते कि तुम्हारी बुद्धि कितनी बढ़ गई है। किसी तीन मास के शिशु को ६ मास बाद देख कर हम यह कह सकते हैं कि अब तो मुन्ना काफ़ी लम्बा-चौड़ा हो गया है, परंतु यह नहीं कह सकते कि मुन्ना की बुद्धि कितनी लम्बी-चौड़ी हो गई है। यद्यपि मानसिक वृद्धि को हम इंचों-पौंडों में नहीं नाप सकते, तथापि सन् १९११ में बिनेट (Binet) की बुद्धि-परीक्षाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(Intelligence-tests) के प्रचलित होने के समय से हम किसी बच्चे की बुद्धि समय अथवा आयु में नाप सकते हैं और यह कह सकते हैं कि अमुक बालक की बुद्धि उसकी आयु के अनुसार आयु से कम अथवा आयु से अधिक है, उदाहरणार्थं किसी १० वर्ष के बालक की बुद्धि की परीक्षा करके हम कह सकते हैं कि उसकी बुद्धि १० वर्ष की है, ९ वर्ष की है अथवा ११ वर्ष की है। बुद्धि-वृद्धि का सदैव आयु के अनुसार होना आवश्यक नहीं है, वह वंशानुक्रम, वातावरण, संस्कृति आदि कारणों से बहुत कुछ आगे-पीछे हो सकती है।

(५) प्रायः देखा जाता है कि जन्मांध अथवा अन्य प्रकार के अंधे प्रसिद्ध रामायणी, महाभारती, संगीतज्ञ, कवि, आदि होते हैं। उदाहरणार्थं बच्चू सूर प्रसिद्ध तत्कालीन रामायणी तथा आशु कवि हैं, हिंदी आकाश के सूर्य महाकवि सूरदास जी अंधे थे, अंधों को पढ़ाए जानेवाले उभरे हुए अक्षरों का आविष्कारक ब्रेइल (Braille) स्वयं अंधा था; क्षीण दृष्टि वाले प्रायः अच्छे छायावादी, कवि, गायक, दार्शनिक आदि होते हैं; बहरे प्रायः अच्छे संगीतज्ञ, चित्रकार, शिल्पकार आदि होते हैं। उदाहरणार्थं बहरा बेठोफेन विश्व-विख्यात संगीतज्ञ था। गूंगे प्रायः प्रसिद्ध राजनीतज्ञ, महात्मा, पहलवान आदि होते हैं। यथा, प्रसिद्ध यूनानी राजनीतज्ञ डेमोस्थेनीज़ तथा विश्व-विख्यात महात्मा मूसा बचपन में गूँगे थे, कानपुर में गूँगा एक प्रसिद्ध पहलवान था; काने आवश्यकता से अधिक सयाने होते हैं उदाहरणार्थं कौवा सब पक्षियों से अधिक सयाना होता है, 'काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जान' द्वारा महात्मा तुलसीदास जी ने भी एकाक्षियों को कुटिल कुचाली बताया है। उक्त सब बातों का कारण ज्ञानेंद्रिय संबंधी क्षतिपूर्ति है। क्षतिपूर्ति शारीरिक धर्म और प्राकृतिक नियम है। यदि किसी कारणवश किसी बालक का कोई अंग दुर्बल अथवा व्यर्थ हो जाता है, तो वह उसकी पूर्ति अन्य अंगों द्वारा कर लेता है। उदाहरणार्थं जिन मनुष्यों का दाहिना हाथ टूट जाता है अथवा व्यर्थ हो जाता है, वे बाएँ हाथ से लिखना-पढ़ना आदि सब कार्य बहुत सुंदरता से कर लेते हैं, हमारे यहाँ एक बात-रोगी दोनों हाथ व्यर्थ हो जाने पर पैर के अंगूठे से भलीभाँति लिख लेता है। इतना ही नहीं, अपितु कभी-कभी अस्थि टूट कर फिर जुड़ने पर पेड़ की क़लम की भाँति पहले से कहीं अधिक सशक्त हो जाती है। शारीरिक क्षतिपूर्ति की भाँति ही मानसिक अथवा ज्ञानेंद्रिय-संबंधी क्षतिपूर्ति भी होती है। यदि कोई इंद्रिय नष्ट अथवा दुर्बल हो जाती है, तो दूसरी इंद्रिय असाधारण रूप से विकसित हो जाती है। इसका कारण यह है कि बच्चा किसी इंद्रिय के अशक्त होने पर अपनी हीनता का अनुभव करते ही उसकी पूर्ति किसी अन्य इंद्रिय द्वारा करनी प्रारंभ कर देता है और सदैव उसके लिए चिंतित और संलग्न रहता है। फल यह होता है कि वह केवल उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमी को ही पूरा नहीं कर लेता अपितु उससे भी कहीं आगे निकल जाता है। उदाहरणार्थ अंधा वाक्, श्रवण, स्मरण, अथवा घ्राण शक्ति की, क्षीण दृष्टि वाला विवेचना शक्ति की, एकाक्षी सचेत रहने की शक्ति की, बहरा आभ्यांतरिक श्रवणशक्ति तथा वाक्शक्ति की, तथा हकला मस्तिष्क अथवा बुद्धि की अधिक उन्नति करता है। यही कारण है कि अंधे मनुष्य श्रवणशक्ति द्वारा वाद्य शब्दों के भीतर छिपे हुए संगीत स्वर को सहज ग्रहण कर सकते हैं, तनिक-सी आहट पाते ही सचेत हो जाते हैं, केचुआ आदि अंधे कीड़ों की भी यही दशा है। वाक्शक्ति द्वारा अंधे सुरीले गीत गा सकते हैं, कविता कर सकते हैं और स्मरणशक्ति द्वारा पूरी रामायण और महाभारत आदि कंठस्थ कर सकते हैं; क्षीणदृष्टि वाले मनुष्य अंतर्जगत के सूक्ष्म रहस्यों को सहज ज्ञात कर सकते हैं; एकाक्षी सचेत रहने के कारण सहज धोका नहीं खाता; बहरा धीरे से कही जाने वाली अपने मतलब की बात शीघ्र समझ लेता है; गूँगे को संकेत मात्र पर्याप्त होता है; हकला सुंदर चित्रकारी, शिल्पकारी, आदि कर सकता है; इत्यादि। बचपन में क्षीणकाय पेट के रोगी बच्चे का आगे चलकर बलवान अथवा पेटू हो जाना शारीरिक क्षतिपूर्ति का, कबीरदास का निर्धनता तथा नीच जाति द्वारा उत्पादित हीनता की पूर्ति बड़े महात्मा होकर करना मानसिक क्षतिपूर्ति का, बचपन में पढ़ने में पिछड़ जाने की पूर्ति शरीर में बलवान होकर करना मानसिक क्षति की शारीरिक विकास द्वारा पूर्ति का और क्षीणकाय दुबले-पतले बच्चों का आगे चल कर पढ़ने-लिखने में तेज़ निकलना शारीरिक क्षति की मानसिक विकास द्वारा पूर्ति का सुंदर उदाहरण है। यद्यपि यह क्षतिपूर्ति बच्चा अपने प्रयत्न से करता है, तथापि बहुत कुछ क्षतिपूर्ति स्वाभाविक रूप से स्वयं भी हो जाती है। जिस प्रकार केला, बेरी आदि पौधों तथा वृक्षों के पुराने पत्ते डालियाँ आदि काटने से शेष वृक्ष की वृद्धि अधिक तीव्र गति से और अच्छी मात्रा में होती है, ठीक उसी प्रकार शरीर के किसी अंग मस्तिष्क की किसी शक्ति अथवा किसी इंद्रिय के नष्ट, निर्बल अथवा अशक्त हो जाने पर अन्य अंग, शक्तियाँ अथवा इंद्रियाँ अधिक सशक्त हो जाती हैं और शरीर बलवान और मस्तिष्क उन्नत हो जाता है। इसका कारण यह है कि पहिले जितना खाद, जल, वायु आदि समस्त पौधे को मिलता था उतना ही कट-छट जाने पर अब शेष पौधे को मिलने लगता है, अतः उसकी वृद्धि-गति तथा मात्रा बढ़ जाती है। ठीक इसी प्रकार जो परिश्रम शरीर को समस्त अंगों इंद्रियों अथवा शक्तियों के विकसित तथा उन्नत करने में करना पड़ता था, वही अब किसी अंग, इंद्रिय अथवा शक्ति के नष्ट हो जाने पर शेष अंगों, इंद्रियों अथवा शक्तियों के लिए करना पड़ता है, अतः अभीष्ट अंग, इंद्रिय अथवा शक्ति असाधारण रूप से विकसित हो जाती है; परंतु इसके यह मानी नहीं हैं कि किसी अंग, इंद्रिय अथवा शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष का असाधारण रूप से अधिक विकास करने के लिए किसी की अस्थि अथवा हाथ-पैर तोड़ डाले जाँय, उसे बलपूर्वक अंधा, काना आदि बना डाला जाय, अथवा अकारण गूँगा, बहरा आदि बनने की चेष्टा की जाय। मनुष्य तथा पौधों में बहुत अंतर है। पौधों के पुराने पत्ते अथवा डालियाँ काटना-छाँटना ठीक उसी प्रकार है जैसे नाई से बाल तथा नख कटवाना, परंतु अस्थि टूटना अथवा आँख-कान फूटना दूसरी बात है। अतएव ऐसा दुस्साहस भूल कर भी न करना चाहिए। यह सब प्रकृत्यनुकूल न होने के कारण लाभदायक होने के स्थान में अत्यंत हानिकारक हैं।

नागरी लिपि का विकास

[श्री किशोरीदास वाजपेयी]

संसार की घुड़दौड़ में पीछे न रह जायँ, इस लिए हमें अपनी साधन-सामग्री का परिष्कार करते रहना चाहिए। हमें अपनी चीज़ प्यारी है और इस लिए अधिक प्यारी है कि वह निर्दोष है, वैज्ञानिक है। परंतु वैज्ञानिक चीज़ में भी यदि कभी कोई परिवर्तन आवश्यक हो, तो इसमें आश्चर्य क्या? इसके लिए झिझक क्यों? हम अपनी चीज़ को यदि समयोपयोगी बना लें, तो हर्ज क्या है? परंतु हाँ, ऐसा न हो कि हमारे पूर्वजों की लिखी सब 'पाटी' मिटा कर नयी परिपाटी से बिलकुल नयी ही चीज़ हमें दे दी जाय! यह तो 'संशोधन' न कहा जायगा! यदि वस्तुतः हमारी चीज़ बिलकुल बदल देने योग्य ही हो, तब तो और बात है। अन्यथा, व्यर्थ के गोरखधन्धे में पड़ने से क्या लाभ?

हमारी नागरी लिपि इतनी वैज्ञानिक, इतनी सुन्दर और इतनी गठीली है कि विदेशी विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। परंतु यह सब होते हुए भी, मुद्रण आदि की सुविधा की दृष्टि से यदि कोई सुधार आवश्यक हो, तो ग्रहण कर लेना चाहिए। केवल 'वैज्ञानिकता' अधिक बढ़ाने के लिए हम कुछ न करेंगे, यदि कोई विशेष लाभ की बात न हो। यदि कहीं बहुत आवश्यक हो, तो लेखन तथा मुद्रण में कुछ अन्तर भी हो सकता है; इतना ही, जो पढ़ने वाले की समझ में अपने आप आ जाय, जिसे समझाने के लिए कोई प्रयत्न न करना पड़े।

ग्राह्य सुधार

अभी तक जो सुधार सामने आये हैं, उनमें एक तो ऐसा है, जिसे लेखन तथा मुद्रण दोनों में समान रूप से ग्रहण कर लेना चाहिए। वह है, स्वर-संकेतों में कमी करने के लिए इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ के रूपों को हटा देना और इनकी जगह अि, अी, अु, अू, अे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ रूप ग्रहण करना।

मेरी समझ में यह सुधार सर्वसम्मति से और सब जगह के लिए स्वीकार कर लेने योग्य है। इससे कई संकेतों से छुट्टी मिलेगी। मुद्रण आदि में भी सुविधा होगी। इससे हानि भी कोई नहीं है। प्रत्युत बहुत स्वाभाविक यही है। मंसूरी में घूम रहा था। एक स्थान पर म्यूनिसिपैलिटी का एक साइन बोर्ड लगा देखा—'अुधर मत जाओ'। मैंने सोचा, कम पढ़े-लिखे व्यक्ति ने इसे बनाया होगा। परन्तु यह भी ध्यान में आया कि स्वाभाविक यही है। उसी बोर्ड में 'जाओ' का 'ओ' उसने जब लिखा, 'अ' में 'ो' लगा कर जब 'ओ' बनाया गया, तब उसी 'अ' में 'ु' लगा कर 'अु' क्यों न बनाया जाय? जब सिद्धान्ततः हमने 'ओ' तथा 'औ' के रूप में यह स्वीकार कर लिया कि 'अ' में 'ो' तथा 'ौ' की मात्राएँ लगा कर विभिन्न स्वर प्रकट किये जा सकते हैं, तब इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, इतने पृथक् संकेत किस काम के? वही सिद्धान्त इधर भी लागू करें, तो कौन-सा नादिरशाह ऐसा है, जो जबर्दस्ती हुक्म देकर मना कर दे? क्या कारण है उस सिद्धान्त को 'ओ-औ' तक ही सीमित या संकुचित कर देने का? मैं समझता हूँ, इसका कोई उत्तर किसी के पास नहीं है।

बहुत सम्भव है, 'ओ' तथा 'औ' के लिए भी पहले कोई भिन्न संकेत रहे हों और बाद में किसी परिष्कारक ने अपनी कल्पना से, सुधार की दृष्टि से, उनकी जगह ये रूप चला दिये हों, नमूने के लिए। उसके चलाये ये रूप इतने प्रचलित हुए कि वे पहलेवाले संकेत बिलकुल मिट ही गये। हमें पता भी नहीं कि इन दोनों स्वरों के लिए क्या और कैसे संकेत थे! वह विद्वान् सुधारक यदि कुछ दिन रह कर अपने कार्य की सफलता देखता, तो अवश्य ही अब से बहुत पहले अि, अी आदि रूप प्रचलित हो जाते और इस प्रकाशयुग में इसके लिए विभिन्न परिषदें संगठित करने की और आन्दोलन या वाद-विवाद करने की झंझट हमें न करनी पड़ती।

कुछ लोग, अद्भुत प्रश्न करते हैं। एक पंडित जी ने प्रश्न किया, यदि 'इ' 'ई' आदि चिह्न हटा कर 'अि' 'अी' आदि कर दिये गये, तो संस्कृत का और संस्कृत व्याकरण का क्या होगा? 'इको यणचि' आदि कहाँ जायँगे? मैंने कहा—वे 'अिको यणचि' बन जायँगे। 'सुधी—उपास्यः' तब 'सुधी—अुपास्यः' बन जायगा। क्या बिगड़ गया? क्या आप समझते हैं कि भाषा से वे सब स्वर ही उड़ाये जा रहे हैं? क्या कोई उन स्वरों को बोलेगा ही नहीं? सवाल तो उन स्वरों के चिह्नों या संकेतों का है। बहुत समझाने पर पंडित जी समझ गये; पर बोले, ठीक है। परन्तु आँखों को 'अिको यणचि' कुछ अटपटा-सा जँचता है और लिखने में तो क़लम हद से ज़्यादा झिझकती है।' मैंने उत्तर में निवेदन किया कि मेरी भी यही बात है। सब को ऐसा ही लगता है। जन्म भर जब हमें 'इ'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते ही गया, तब अब 'श्रि' कैसे भावे ? आँखों को खटकेगा ही। परंतु 'श्रो' तो खटकता नहीं। वैसा देखने के हम अभ्यस्त जो हो गये हैं। इसी तरह किसी बच्चे को प्रारम्भ से ही आप श्रि, श्री, श्रु, श्रू आदि सिखावें, इ, ई, उ, ऊ आदि उसके सामने न लावें, तो वह 'श्रि' आदि को ही पसन्द करेगा और 'इ' 'उ' को कुब्जा-कुबड़ा बतला कर नापसन्द कर देगा। यह तो बात ही दूसरी है। आप अपने अच्छे लगने के लिए नहीं, देश के अच्छे लगने के लिए सुधार कर रहे हैं।

इस लिए, उक्त सुधार अविलम्ब ग्राह्य है। यदि लोग न मानें, तो लिखने में 'इ' आदि लिखा करें, छापे आदि में 'श्रि' जैसे रूप चला देने चाहिए।

इसके अतिरिक्त एक और सुधार मुद्रण आदि के लिए ग्राह्य है। वर्गीय प्रथम अक्षरों में कोई चिह्न लगाकर द्वितीय अक्षर बना लिए जायँ और तृतीय अक्षरों में वही चिह्न लगा कर चतुर्थ अक्षर। यह चिह्न 'ह' का प्रतिनिधि हो और उसके रूप में इसका आभास भी मिले। 'क' के साथ 'ह' लिख कर यदि वह काम निकाला जाय, तो सौन्दर्य न रहेगा, स्थान भी अधिक घिरेगा। अक्षर का या अक्षरों का प्रतिनिधि लिपि में स्थिर करना कोई नयी बात नहीं है। अ, उ, म् इन तीन अक्षरों का प्रतिनिधित्व 'ॐ' यह चिह्न करता है। संक्षेप के लिए प्रतिनिधि क़ायम किया जाता है। क च तथा ग ज आदि के नीचे या इधर-उधर कोई चिह्न लगाकर ख छ और घ झ आदि का काम लिया जा सकता है, मुद्रण आदि में। एक नया चिह्न सीखने में कोई झंझट भी नहीं। बच्चों को 'ह' के साथ ही उसके इस कल्पित प्रतिनिधि का रूप तथा उपयोग बतला दिया जाया करेगा।

बस, इन सुधारों के अतिरिक्त और कुछ मेरी समझ में नहीं आया। लिपिपरिषद् ने कई ऐसे सुधार सुझाये हैं, जिनकी आयश्यकता नहीं। उसने अनुनासिक को हटा कर उसकी जगह केवल अनुस्वार बर्तने की सिफ़ारिश की है! यह किस लिए? ऐसा होने पर 'अँगूठी' 'अँगड़ाई' 'अँबिया' आदि शब्द कैसे लिखे जायँगे? 'अंगूठी' 'अंगड़ाई' 'अंबिया' आदि से वह ध्वनि निकल सकेगी क्या? तब क्या हमें अपनी भाषा और उसके शब्दों की रूपरेखा बदल डालने की ही सलाह दी जा रही है? क्या इस सलाह को जनता मानेगी? वह 'अँगूठी' आदि बोलना छोड़ देगी? यदि नहीं, तो फिर क्या 'अंगूठी' में उसकी ठीक अभिव्यक्ति होगी। मुझे आश्चर्य है कि लिपि-समिति के विद्वान् सदस्यों ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

हाँ, एक अन्य सुधार अलबत्ता विचारणीय तथा ग्राह्य है। दक्षिण की भाषाओं में 'ए' तथा 'ओ' का ह्रस्व रूप भी प्रचलित है। इसके लिए इन स्वरों में कोई चिह्न लगा कर उस ध्वनि को प्रकट करना आवश्यक है। नागरी 'राष्ट्रलिपि' होगी, उसमें देश भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भाषाएँ लिखी जायँगी।

दक्षिण की ही भाषाओं में नहीं, हमारी हिन्दी की पूर्वी शाखाओं में भी ए और ओ के ह्रस्व रूप देखने में आते हैं। 'एहि माँ ओतना पानी न रहै' इस वाक्य में आये हुए 'ए' तथा 'ओ' का ह्रस्व उच्चारण है। तुलसी की रचनाओं में आप प्रतिपद यह बात देखेंगे। जो लोग अवधी के उच्चारण से परिचित नहीं हैं, वे ऐसे स्थलों में भी दीर्घ उच्चारण पढ़ जाते हैं। करें क्या ? चिह्न ही नहीं है। फलतः छन्दोभंग होने का दोष तुलसी के मत्थे मढ़ा जाता है ! इस लिए, उक्त सुधार ज़रूरी है।

बस, इससे आगे नहीं। सुधार की धुन में अधिक बहक जाना उचित नहीं है। जिसकी आवश्यकता है, जितने की आवश्यकता है, उससे अधिक ग्रहण करने से भद्दापन आयेगा। यह अच्छा नहीं है।

आशा है, मेरे इस निवेदन पर नागरी लिपि के विशेषज्ञ तथा हिन्दी प्रेमी बन्धु विचार करेंगे।

लिपि-समिति ने 'पम्प' तथा 'पन्थ' आदि को पंचमाक्षर युक्त न लिखकर 'पंप' एवं 'पंथ' जैसा सानुस्वार ही लिखने की सलाह दी है, जो अग्राह्य है। ये शब्द जिस रूप में बोले जाते हैं, उसकी अभिव्यक्ति अनुस्वार से नहीं होती। अनुस्वार का उच्चारण 'अङ्' 'अं' की तरह है। 'पंथ' और 'पंप' का उच्चारण 'पङ्थ' तथा 'पङ्प' का-सा होगा। क्या यह ठीक है ? क्या जनता इन शब्दों का उच्चारण ऐसा बना लेगी ? यदि नहीं, तो फिर यथाश्रुत लिखने की जो विशेषता आपकी लिपि में है, वह क्या बनी रहेगी ? इस लिए यह सुझाव अग्राह्य है।

खड़ी पाई जिन अक्षरों में नहीं है, उन्हें अगले अक्षरों से संयुक्त करने के लिए (·) ऐसे चिह्न को चालू करने की सलाह 'समिति' ने दी है; जैसे उद-धरण'। हमें यह अच्छा नहीं लगा। यदि 'उद्धरण' को छापे में गुंजाइश न हो, तो वहाँ 'उद्धरण' किया जाय। अर्थात् 'हलन्त' करने के लिए जो चिह्न (्) पहले से स्थिर है, वही रखा जाय, भले ही अक्षर के बिलकुल नीचे न लगाकर दाहिनी ओर हटा कर, एक सिरे पर लगाया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

बच्चों की कुछ समस्याएँ—रचियता, श्री कालूलाल श्रीमाली, एम्० ए०, बी० टी० प्रिंसिपल टीचर्स ट्रेनिंग कालेज उदयपुर। प्रकाशक, विद्याभवन, उदयपुर (राजपूताना); पृष्ठ ३०१। मूल्य १॥)

हिंदी संसार में मनोवैज्ञानिक पुस्तकों की गणना अँगुलियों पर की जा सकती है, अतः श्रीमाली जी का प्रयत्न सराहनीय है। इस पुस्तक में माता-पिता तथा शिक्षकों के नित्य-प्रति सम्मुख आने वाली बाल-समस्याओं का बड़ी सरलता से विश्लेषण किया गया है। इसके सभी लेख पुस्तक रूप में आने के पूर्व 'बालहित' नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित हो चुके हैं। इसमें सत्रह अध्याय हैं, जिनमें से कुछ जैसे 'बच्चों की दुनिया', 'बच्चों के खेल-खिलौने', 'चिढ़नेवाला बच्चा', 'चिढ़ाने वाला बच्चा', 'अपराधी बच्चा' आदि उपयोगी होने के अतिरिक्त मनोरंजक भी हैं। उदाहरण इतने सजीव तथा वास्तविक हैं कि मानों लेखक के पास मनोवैज्ञानिक प्रयोगों के लिये अपनी निजी बाल-शाला है। लेखक ने बालकों की प्रकृति का भलीभाँति अध्ययन करके उनके दिन-रात के व्यवहार का उचित उपयोग किया है। सड़क पर जाते हुये जाग्रत-स्वप्न-दर्शी का उदाहरण तथा लकड़ी से घोड़ा-घोड़ा खेलना, गुड़ियों द्वारा माता-पिता बनना, टिकट बाबू तथा सिपाही का पार्ट करना, डाक्टर के आपरेशन की नक़ल करना, इत्यादि बालकों के काल्पनिक खेल लेखक की प्रबल अवलोकन-शक्ति के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। उदाहरणों की सजीवता का दिग्दर्शन कराने के लिये दो एक उदाहरण दे देना अनुचित न होगा:—

(१) एक चार-पाँच वर्ष का बच्चा अपने हाथ में छोटी-सी नक़ली पिस्तौल लेकर अपने मकान के सामने इधर-उधर टहला करता था। उससे अगर कोई पूछता कि तुम क्या कर रहे हो तो वह फ़ौरन जवाब देता कि संतरी पहरा लगा रहा है। (पृष्ठ १५)

(२) मैंने उससे पूछा कि "तुम्हें लड़के क्या कहकर चिढ़ाते हैं?" उसने कहा, मुझे क़साई कहते हैं। मैं क़साई नहीं हूँ। मैं गाय नहीं खाता हूँ। आप चाहे मेरे भाई से पूछ लीजिये। मैंने गाय कभी नहीं खाई है। फिर मैं क़साई कैसे हुआ? (पृष्ठ ३७)

(३) एक लड़का कुछ अधिक मोटा है और उसका पेट निकला हुआ है। लड़कों ने उसे 'तोंदू' नाम दे रखा है। इसी तरह एक दूसरे लम्बे लड़के को 'ऊँट' तथा 'रेगिस्तानी जहाज़' कहते हैं। एक दूसरे दुबले-पतले और लम्बे लड़के का नाम 'घंटा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णं' है जो घंटाघर का दूसरा रूप है। (पृष्ठ ४६)

(४) एक लड़का एक बार पेशाब कर रहा था। दूसरा लड़का उसके पीछे चुपके से गया और उसने उस पेशाब करते हुए लड़के को उलट दिया और भाग गया। क्या 'लालमिर्च' ऐसे लड़के के लिए उपयुक्त नाम नहीं है ? (पृष्ठ ५१)

जन्म से दो वर्ष तक की विभिन्न अवस्थाओं के बच्चों के खेलने के भारतीय खिलौनों की सूची सुन्दर है। इसमें खेलने की प्रवृत्ति का विकास अनुपम ढंग से प्रदर्शित किया गया है। कहीं-कहीं साधारणतः होने वाले बाल-रोगों की भी चर्चा की गई है, परंतु इसमें लेखक अधिक सफल नहीं हुआ है। प्रायः विश्लेषण अत्यंत संक्षिप्त हो गया है और आवश्यक बातें तक छूट गई हैं। उदाहरणार्थ 'पिछड़ने वाला बच्चा' शीर्षक अध्याय में, कर्णं, चक्षु, नासिका, कंठ तथा स्नायु-संबंधी दोषों की चर्चा करते हुए बहरापन, दीर्वदृष्टि, एपिलेप्सी तथा कोरिया आदि रोगों के कारणों की, जिनका ज्ञान प्रत्येक अध्यापक तथा अभिभावक के लिये परमावश्यक है; नितांत उपेक्षा कर दी गई है। जन्म से युवावस्था तक के बच्चों का संवेदनात्मक विकास संक्षिप्त होने पर भी सुन्दर है। 'अपराधी बच्चा' शीर्षक लेख में दंड अथवा जुर्माने की समस्या पर और 'आदत' शीर्षक लेख में ३-४ वर्ष के बच्चों के बिस्तरे पर मूत्र त्याग करने की कठिनाई पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। यद्यपि सभी पुस्तक अत्यंत उपयोगी है, तथापि 'दूध छुड़ाना' माताओं के लिए, 'सह-शिक्षा' अध्यापकों के लिए और 'काम शिक्षा' अध्यापकों तथा अभिभावकों दोनों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हैं।

'बच्चे अगर जुआ खेलते हैं या सट्टाबाजी करते हैं' (पृष्ठ ९३) जैसी एकआध छोटी-मोटी व्याकरण की अशुद्धियाँ उतनी नहीं खटकतीं, जितना 'ज़्यादा, तलाशी, आसमान, तन्दुरुस्त, जिम्मेदार, गुस्सा, शुरू, असर, अगर, होशियार, ख्याल, खुशी, इत्यादि' शब्दों का आधिक्य खटकता है। परंतु इतना अच्छा है कि लेखक ने प्रयोग करने के पूर्व उनकी शुद्धि कर ली है और उन्हें हिंदी बना लिया है।

पुस्तक की छपाई सुंदर है। विषय की उपयोगिता और समय की महँगाई को देखते हुए पुस्तक का मूल्य अधिक नहीं है।

रामसूर्ति मेहरोत्रा, एम० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य समिति की आठवीं बैठक

कार्य समिति की एक बैठक रविवार ८ कार्तिक १९९९, ता० २५ अक्टूबर १९४२ को सायंकाल ४ बजे से सम्मेलन के संग्रहालय भवन में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में हुई।

१. सर्वश्री अमरनाथ झा; २. दयाशंकर दुबे; ३. चन्द्रशेखर वाजपेयी; ४. रामचंद्र टण्डन; ५. वाचस्पति पाठक; ६. रामलखन शुक्ल; ७. उदयनारायण तिवारी; ८. श्रीनारायण चतुर्वेदी; ९. रामनाथ 'सुमन'; १०. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'; ११. रामप्रसाद त्रिपाठी (प्रधान मंत्री)

१. नियमानुसार श्री अमरनाथ जी झा ने सभापति का आसन ग्रहण किया। पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़ी गई और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुई।

२. श्री प्रधान मंत्री ने सभापति निर्वाचन के लिए आए हुए मतों की गणना का विषय उपस्थित किया। सर्वसम्मति से श्री रामचन्द्र टंडन, श्री रामशंकर शुक्ल 'रसाल' और श्री उदयनारायण त्रिपाठी गणक नियुक्त हुए।

३. श्री प्रधान मंत्री ने बताया कि सन् १९३२ में अफ़गानिस्तान में प्रचार कार्य करने के लिए श्री विश्वमित्र जी ने ६०) दिये थे। अब वे चाहते हैं कि उक्त ६०) जो अभी तक व्यय नहीं हुआ है काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी को 'उपनिवेश में हिन्दी प्रचार' के लिए भेज दिया जाय। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि ६०) काशी नागरी प्रचारिणी सभा को भेज दिया जाय।

४. श्री प्रधान मंत्री ने नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा तथा प्रधानाध्यापक राष्ट्रभाषा विद्यालय, बरहज के सहायता की माँग के लिए आये हुए पत्र उपस्थित किये और बताया कि गत वर्ष नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा को १२०) तथा बरहज के राष्ट्रभाषा विद्यालय को १००) की सहायता दी गई थी। परीक्षा विभाग के अनुमान पत्र में ५००) सहायतार्थ रखा गया है और इसमें से अभी तक ७५) व्यय हो चुका है। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि नागरी प्रचारिणी सभा आगरा को १२०) भेजा जाय और बरहज वालों को लिखा जाय कि यदि काम प्रारम्भ हो जाय तो १००) सहायता दी जायगी।

५. श्री प्रधान मंत्री ने श्री० के० पी० दीक्षित, प्रचार मंत्री, मध्य भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का पत्र उपस्थित किया और बताया कि वे चाहते हैं कि यहाँ से किसी साहित्यक सज्जन को भेजा जाय, जो उज्जैन, धार, देवास आदि स्थानों में जाकर प्रचार कार्य कर सकें। उक्त सज्जन को यहाँ से उज्जैन तक का आने-जाने का मार्ग-व्यय सम्मेलन को देना पड़ेगा। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि श्री सत्यनारायण पांडेय या श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहनलाल द्विवेदी से काम चल सके तो तुरंत हमें सूचित करें। उक्त सज्जन का उज्जैन तक का आने-जाने का मार्ग-व्यय सम्मेलन देगा।

६. श्री प्रधान मंत्री ने टाइप राइटर माँग विषयक श्री मंत्री, उत्कल प्रान्तीय राष्ट्र भाषा प्रचार सभा, कटक तथा हिंदी प्रचार संघ, पूना के पत्र उपस्थित किये और बताया कि उक्त दोनों संस्थाएँ चाहती हैं कि उनके कार्यालय के लिए एक-एक टाइप राइटर दे दिया जाय। निश्चय हुआ कि दोनों पत्रों की प्रतिलिपि मंत्री राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के पास कार्यवाही के लिए भेज दी जायं।

७. श्री प्रधान मंत्री ने नागरी प्रचारिणी सभा, मुरादाबाद का पत्र उपस्थित किया और बताया कि उन लोगों ने अदालत में हिंदी प्रचार करने के लिए एक बड़ी टाइप राइटर मशीन क्रय की है। वे चाहते हैं कि सम्मेलन उनके टाइपिस्ट को कुछ मासिक सहायता तब तक के लिए दे, जब तक कि उनकी आय ठीक न हो जाय। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि ५) मासिक सहायता दी जाय।

८. श्री प्रधान मंत्री ने हिंदी साहित्य मंडल, जम्मू का संवद्धता के लिए आया हुआ आवेदन पत्र उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि उक्त संस्था की संवद्धता स्वीकार की जाय।

९. श्री प्रधान मंत्री ने विशेषतया साधारण सदस्य के लिए आए हुए निम्न-लिखित आवेदन पत्र उपस्थित किये।

विशेष सदस्य—श्री० बालकृष्ण राव; लखनऊ

साधारण सदस्य—श्री० द्वारिका प्रसाद सेवक बम्बई; श्री० आनन्दस्वरूप मिश्र लखनऊ; कालीप्रसाद एम० ए०, लखनऊ; ब्रजमोहन शर्मा, लखनऊ; आनंद कुमार, दियरा राज्य; रामाज्ञा द्विवेदी, सुल्तानपूर; शिवराम चिंतामणि लेले, लखनऊ; अजित अवस्थी, कानपुर; रामाधार शुक्ल; छिंदवाड़ा, विजय कुमार, लखनऊ; पदमचंद श्रीमाल, हरदोई

निश्चय हुआ कि उपर्युक्त सज्जनों की सदस्यता स्वीकार की जाय।

१०. श्री प्रधान मंत्री ने बताया कि श्री संग्रह मंत्री जी का सुझाव है कि संग्रहालय के लिए एक चौकीदार की नितांत आवश्यकता है निश्चय हुआ कि १०) मासिक पर एक चौकीदार रख लिया जाय और नियुक्ति करने का भार श्री प्रबंध मंत्री जी को सौंपा जाय।

११. श्री प्रधान मंत्री ने बताया कि हमारे आय-व्यय निरीक्षक श्री राधाकृष्ण तिवारी इस वर्ष अपना कार्य करने में असमर्थ हैं। अतः उनके स्थान पर किसी अन्य सज्जन को निर्वाचित करना चाहिये। सर्वसम्मति से श्री लक्ष्मीनारायण जी नागर आय-व्यय निरीक्षक चुने गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके पश्चात् श्री सभापति जी आवश्यक कार्य से चले गये और श्री रामनाथ जी 'सुमन' ने सभापति का आसन ग्रहण किया और बतलाया कि गणक महोदयों की गणना का विश्लेषण इस प्रकार है।

सम्मेलन के सभापति के लिए

श्री माखनलाल चतुर्वेदी

साहित्य-परिषद् के लिए

श्री रामकुमार वर्मा

समाज-शास्त्र-परिषद् के लिए

श्री दयाशङ्कर दुबे

दर्शन-परिषद् के लिए

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

विज्ञान-परिषद् के लिए

श्री गोरखप्रसाद

राष्ट्रभाषा-परिषद् के लिए

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन

सूचना

देवकवि कृत 'देवचरित्र' की एक हस्तलिखित प्रति हिंदी संग्रहालय में आ गई है। यदि उक्त ग्रंथ की अन्य प्रतियाँ किसी सज्जन के पास हों तो सूचित करने की कृपा करें। एक ही पुस्तक की कई प्रतियों का मिलान करने से उसके पाठ संशोधन तथा, संपादन में सहायता मिलती है।

संग्रह मंत्री
हिंदी साहित्य सम्मेलन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के नवीन प्रकाशन

सोवियत भूमि—ले० महापंडित राहुल सांकृत्यायन, मूल्य ५); रूस के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिये हिन्दी में अद्वितीय पुस्तक।

मूर्तिकला—ले० राय कृष्णदास, मूल्य १।); भारतवर्ष की मूर्तिकला की आदि से अब तक की तात्विक व्याख्या।

चित्रकला—ले० रायकृष्णदास, मूल्य १।); चित्रकला पर अपने ढंग की सर्वोत्तम पुस्तक।

बाल-मनोविज्ञान—ले० पं० लालजी राम शुक्ल, मूल्य १।); हिन्दी में बाल-मनोविज्ञान संबंधी सर्वश्रेष्ठ रचना।

मआसिरुल उमरा भाग १ और २—अनु० बाबू ब्रजरत्नदास, मूल्य ४) प्रति भाग। मुग़ल शासनकाल के सरदारों की सबसे प्रामाणिक जीवनियाँ।

बिहार में हिंदुस्तानी—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ।); बिहार प्रांत में हिन्दी हिन्दुस्तानी समस्या की तात्विक व्याख्या।

कचहरी की भाषा और लिपि—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ।।।); अदालतों की भाषा और लिपि का विस्तृत विवेचन।

मध्य प्रदेश का इतिहास—ले० रायबहादुर डा० हीरालाल, बी० ए०, मूल्य १।।); मध्य प्रदेश का सबसे प्रामाणिक और शोधपूर्ण इतिहास।

हिन्दी साहित्य का इतिहास—ले० पं० रामचंद्र शुक्ल, मूल्य ५); प्रवर्द्धित संस्करण। हिन्दी साहित्य का सबसे अच्छा और विस्तृत इतिहास।

सिक्खों का उत्थान और पतन—ले० पं० नंदकुमार देव, मूल्य १।); सिक्ख जाति के अभ्युदय और पतन का सर्वाङ्गपूर्ण इतिहास।

नई कहानियाँ—सं० श्री राय कृष्णदास, पं० पद्मनारायण आचार्य, मूल्य १।); बारह सर्वोत्तम नई कहानियों का अत्यंत रुचिपूर्ण संग्रह।

मोहें जो दड़ो—ले० श्री सतीशचंद्र काला, मूल्य २); मोहें जो दड़ो की खोदाई के आधार पर लिखी प्राचीन भारतीय सभ्यता के संबंध में विद्वत्तापूर्ण सचित्र पुस्तक।

रघुनाथ रूपक गीतांरो—सं० श्री महताब चंद खारैड, मूल्य २); । डिंगल भाषा में भगवान रामचंद्र का मंक कवि कृत सुंदर कवित्वपूर्ण वर्णन।

मुग़ल बादशाहों की हिन्दी—ले० पं० चंद्रबली पांडेय, मूल्य ।।); मुग़ल बादशाह हिंदी से प्रेम करते और हिन्दी में रचना करते थे, इसका स्पष्ट प्रमाण यह पुस्तक है।

मिलने के पते—प्रत्येक नगर के प्रतिष्ठित पुस्तक विक्रेता।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी दो नई पुस्तकें

मेरी असफलताएँ

[हास्य मिश्रित आत्मकथा]

'साहित्य-सन्देश' के सम्पादक श्री गुलाबरायजी एम० ए०, ने आत्मकथा के रूप में इस पुस्तक में उच्चकोटि के साहित्यिक हास्य का ऐसा सुन्दर प्रदर्शन किया है जैसा अन्यत्र कम मिलता है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान्, प्रयाग विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डाँ० धीरेन्द्र वर्मा लिखते हैं :

"बहुत दिनों बाद ऐसी रोचक साहित्यिक पुस्तक हाथ लगी। जहाँ तक मुझे स्मरण पड़ता है आधुनिक हिन्दी साहित्य की यह पहली पुस्तक है जिससे मेरे घर पर तीन पीढ़ियों ने आनन्द उठाया—मेरी माताजी, मैं तथा मेरी लड़की।"

दिल्ली रेडियो से श्री स० ही० वात्स्यायन ने समालोचना करते हुए इसकी जो प्रशंसा की थी वह शायद ही किसी पुस्तक को मिली हो। अगर आपने अभी तक इस पुस्तक को नहीं देखा हो तो अब मँगा कर देख लें। मूल्य १) मात्र।

आधुनिक हिन्दी नाटक

लेखक—प्रो० नगेन्द्र, एम० ए०

'सुमित्रानन्दन पन्त' और 'साकेत एक अध्ययन' लिख कर नगेन्द्र जी ने हिन्दी संसार में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। उसी का यह परिणाम है कि आपकी यह तीसरी नवीन कृति 'आधुनिक हिन्दी नाटक' छपते ही आगरा विश्व विद्यालय की एम० ए० परीक्षा के लिए स्वीकृत हो गई। इस पुस्तक में नगेन्द्र जी ने नाटकों का वर्गीकरण एक नए ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया है और विश्लेषण इतना मार्मिक है कि पढ़ते ही बनता है। नाटकों पर आलोचना की कई पुस्तकें हिन्दी में निकल चुकी हैं पर यह अपने ढंग की अनूठी है। मूल्य १) मात्र।

हिन्दी पुस्तकों के लिये सदैव हमें लिखिये :—**साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन वर्ष से नवीन परिवर्तन में

'जीवन-साहित्य'

[गांधीजी की रचनात्मक प्रवृत्तियों का मुखपत्र]

सम्पादक

काका कालेलकर

हरिभाऊ उपाध्याय

महाबीरप्रसाद पोद्दार

पृष्ठ संख्या ३२ से ४८ : : वार्षिक मूल्य १।।)

एक प्रति का =)

* श्री काका सा० कालेलकर तथा श्री महाबीरप्रसाद पोद्दार के सहयोग से 'जीवन-साहित्य' नवीन रूप में आपकी सेवा में उपस्थित हो रहा है।

** महात्माजी की देशव्यापी रचनात्मक प्रवृत्तियाँ जैसे खादी, ग्रामोद्योग, गो-सेवा, हरिजन सेवा, बुनियादी तालीम, हिन्दुस्तानी-प्रचार आदि कैसी चल रही हैं, उनके कार्य-कर्त्ताओं को कैसे अनुभव हो रहे हैं और इन सब क्षेत्रों में देश-हित की कितनी गुंजाइश है यह सब देश के सामने रखना अब से जीवन साहित्य का प्रधान काम होगा।

*** जीवन-शुद्धि, जीवन-विकास और जीवन-समृद्धि के प्रत्यक्ष प्रयत्नों में से पैदा हुआ साहित्य जीवन-साहित्य माना जायगा।

**** ऐसे 'जीवन-साहित्य' के नये वर्ष से अगस्त में ही ग्राहक बन जाते हैं तो आप से—

केवल १) ही लिया जायगा।

नहीं तो बाद में १।।) देना होगा। अतः

आप शीघ्रातिशीघ्र ग्राहक बनकर देश की रचनात्मक प्रवृत्ति में अपना हिस्सा अदा कीजए

व्यवस्थापक

'जीवन-साहित्य', कनाट सर्कस, नयी दिल्ली

संपादकीय पत्र व्यवहार निम्न पते से करें :

संपादक, 'जीवन-साहित्य', गोरखपुर (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति का अग्रदूत

धर्म-दूत

सचित्र मासिक पत्र

सम्पादकः—सुमन वात्स्यायन

आप जानना चाहेंगे कि संसार में भारतीय संस्कृति का कैसे प्रचार हुआ? 'धर्म-दूत' में आप पढ़ेंगे कि चीन, कोरिया, मलाया, तिब्बत, तुर्किस्तान, ईरान, अफगानिस्तान, जावा, सुमात्रा आदि देशों में कब और कितनी भयंकर आपत्तियों का सामना करके हमारे पूर्वजों ने भारतीय संस्कृति, सभ्यता, साहित्यकला, विज्ञान और धर्म का प्रचार किया। आप भगवान बुद्ध के उन अनुचरों को भूल गये हैं। 'धर्म-दूत' द्वारा उनसे परिचित होकर आपका हृदय उत्साह और साहस से भर जायगा। अपने गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण कर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकेंगे।

पताः—'धर्म-दूत' कार्यालय, सारनाथ (बनारस)

राष्ट्रभाषा-समाचार

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा का मुखपत्र]

हर महीने की १५ तारीख़ को निकलता है।

इसमें

प्रचारकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकों के लिये आवश्यक एवं उपयोगी ताज़ी सामग्री रहती है।

वर्धा-कार्यालय तथा परीक्षा-विभाग की सभी सूचनायें और राष्ट्र भाषा-प्रचार की तमाम प्रान्तीय हलचलें निकलती हैं।

'प्रारम्भिक' से 'कोविद' तक के परीक्षार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये समय-समय पर परीक्षा-संबंधी लेख भी प्रकाशित होते हैं।

इसका वार्षिक चंदा एक रुपया मात्र है। मनी-ऑर्डर से भेजकर 'राष्ट्रभाषा-समाचार' के ग्राहक ज़रूर बनिये।

व्यवस्थापक,

'राष्ट्रभाषा-समाचार', वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी परिचय और हिंदी कोविद परीक्षाएं

हिंदी साहित्य-सम्मेलन के हिंदी विश्वविद्यालय की हिंदी परिचय और हिंदी कोविद परीक्षाएं केवल कश्मीर और पंजाब में मातृ-भाषा हिंदी के प्रचार करने के उद्देश्य से ही स्थापित की गई हैं। हमें यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि दोनों प्रान्तों में इन परीक्षाओं के परीक्षार्थियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। इन परीक्षाओं के प्रचार में कश्मीर की लेजिस्लेटिव असेम्बली के प्रेसीडेंट श्री अमरनाथ जी काक एडवोकेट श्रीनगर और श्री तेगराम जी मंत्री साहित्य-सदन अबोहर (पंजाब) का सहयोग हमें प्राप्त हुआ है। इसके लिए हम उन्हें परीक्षा समिति की ओर से अनेक धन्यवाद देते हैं। आगामी परीक्षाएं अब जून सन् १९४३ में होंगी। हमें आशा है कि जून मास की परीक्षाओं में कश्मीर और पंजाब के अधिक से अधिक परीक्षार्थी इन परीक्षाओं में सम्मिलित होकर मातृ-भाषा हिंदी के प्रचार कार्य में हमारा हाथ बटावेंगे। गत दिसम्बर मास की दोनों परीक्षाओं के परीक्षार्थियों की संख्या नीचे लिखे अनुसार थी—

परीक्षा	आवेदनपत्र आये	सम्मिलित हुए	उत्तीर्ण	प्रतिशत
हिंदी परिचय—	२०६	१८४	१३४	७३
हिंदी कोविद—	१३८	१२८	९८	७७

दयाशङ्कर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी० परीक्षा मंत्री,
हिंदी-विश्वविद्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन (हिन्दी विश्वविद्यालय) की संवत् १९९९ (दिसम्बर सन् १९४२) की हिन्दी परिचय और हिन्दी कोविद परीक्षाओं का परीक्षाफल

हिन्दी परिचय परीक्षा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क	
२	मोतीराम	अबोहर	प्रथम श्रेणी	१६२
३	किशोरीलाल	,,	तृतीय श्रेणी	६१
७	मायादेवी	,,	द्वितीय श्रेणी	१२८
८	रामचन्द्र	,,	तृतीय श्रेणी	६६
९	वीरबल राम	,,	द्वितीय श्रेणी	१३६
१०	बिहारीलाल	,,	तृतीय श्रेणी	९८
११	बीरबल राम	,,	,, ,,	११७
१२	किशोरीलाल	,,	,, ,,	६७
१३	ओंकारदत्त	,,	द्वितीय श्रेणी	१२४
१४	शिवचन्द	,,	तृतीय ,,	१०२
१६	यशोदा देवी	,,	द्वितीय ,,	१२५
१८	शिवदत्त शर्मा	जम्मू (काश्मीर)	तृतीय श्रेणी	११६
१९	कु० कृष्णकान्ता कोहली	,,	द्वितीय ,,	१३८
२३	इकबाल देवी	,,	तृतीय ,,	१०१
२५	कु० कृष्णा गन्दोत्रा	,,	प्रथम ,,	१८०
२६	शान्ती देवी	,,	तृतीय ,,	६८
२७	कैलाश मलोहतरा	,,	द्वितीय ,,	१२०
२८	सुरक्षाकुमारी कोहली	,,	तृतीय ,,	११६
२९	नन्दरानी	,,	प्रथम ,,	१५४
३०	वीरावली साहनी	,,	द्वितीय ,,	१३०
३१	सावित्री देवी	,,	,, ,,	१३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
३२	सुशीला रेणा	जम्मू (काश्मीर)	प्रथम श्रेणी	१६६
३३	कुमारी शान्ता देवी	,,	,,	१८१
३६	श्रीनिवास शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	१४६
३७	सन्तराम उपाध्याय	,,	प्रथम श्रेणी	१५७
३८	नन्दीश्वर शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	११७
३९	रामचन्द्र शर्मा	,,	प्रथम श्रेणी	१७२
४०	कु० देवइच्छा	फाजिलका	द्वितीय श्रेणी	१२३
४१	शकुन्तला देवी आर्य	,,	तृतीय श्रेणी	११८
४२	कु० विद्यावती आर्य	,,	तृतीय श्रेणी	११३
४३	कु० सरस्वती आर्य	,,	प्रथम श्रेणी	१५७
४४	मिलखराज	,,	,,	१५१
४५	रामेश्वरदास	,,	द्वितीय श्रेणी	१४०
४६	पृथ्वीराज शर्मा 'कौशिक'	,,	तृतीय श्रेणी	११२
४७	बनवारीलाल वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी	९८
४९	महाबीरप्रसाद शर्मा त्रिपाठी	,,	,,	८९
५५	सदानन्द शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी	१३५
५७	तारादत्त	लायलपुर	प्रथम श्रेणी	२१६
५८	सुशील शर्मा	,,	प्रथम श्रेणी	१८८
५९	कु० चाँद कँवलपरवा	,,	,,	१५४
६०	लक्ष्मी देवी	,,	द्वितीय श्रेणी	१३९
६१	पुष्पावती नैयर	,,	,,	१२९
६२	राजकुमारी	,,	,,	१२५
६३	शान्ति देवी सिंधी	,,	प्रथम श्रेणी	१६१
६४	वेदकुमारी दत्ता	,,	,, ,,	१७१
६५	प्रकाशवती	,,	द्वितीय ,,	१२८
६६	शकुन्तला देवी भसीन	,,	प्रथम ,,	१५०
६७	यशरानी भसीन	,,	तृतीय ,,	११६
६८	चन्द्रकान्ता	,,	प्रथम ,,	१५३
६९	मोहिनी कपूर	,,	द्वितीय ,,	१२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा	प्राप्तांक
७०	सुदर्शनकुमारी शर्मा	लायलपुर	प्रथम श्रेणी	१५९
७१	विमला देवी	,,	तृतीय ,,	१०६
७२	शान्ति देवी थायर	,,	प्रथम ,,	१५६
७३	भ्रावां देवी नागपाल	,,	,, ,,	१५६
७४	सत्यावती	,,	द्वितीय ,,	१३२
७५	सीतादेवी	,,	तृतीय ,,	१०७
७६	बालमुकुंद	,,	,, ,,	१०५
७९	गोपीनाथ हुण्डू	श्रीनगर	द्वितीय ,,	१४२
८१	चूनीलाल जाड़ू	,,	तृतीय ,,	११३
८२	पृथ्वीनाथ	,,	,, ,,	१००
८४	काशीनाथ मत्तू	,,	,, ,,	११५
८५	मोहनलाल खर	,,	,, ,,	९७
८६	मधुसूदन किचलू	,,	प्रथम ,,	१५६
८७	जानकीनाथ जत्तू "कमल"	,,	तृतीय ,,	१०२
८८	शान्ताकुमारी दर	,,	,, ,,	९७
९०	कुमारी राना कौल	,,	द्वितीय ,,	१२२
९३	कमला देवी कौल	,,	,, ,,	१३९
९४	कृष्णकान्ता ठाकुर	शिमला	,, ,,	१४९
९६	सुशीला रानी माथुर	,,	प्रथम श्रेणी	१८४
९७	शान्ति रानी माथुर	,,	,, ,,	१६१
९८	चाँद रानी	,,	तृतीय ,,	९४
१०१	स्वामी स्वतन्त्रतानन्द	अबोहर	द्वितीय ,,	१२९
१०३	अंजना देवी	जम्मू (काश्मीर)	,, ,,	१२१
१०४	सावित्री देवी	,,	तृतीय ,,	९७
१०५	शान्ता कुमारी	,,	द्वितीय ,,	१२९
१०६	निरंजनलाल शर्मा	फाज़िलका	प्रथम ,,	१६९
१०७	परमेश्वर दास	लायलपुर	तृतीय ,,	१०३
१०८	सोमनाथ स्वरूप	श्रीनगर	द्वितीय ,,	१३२
११०	बृजबिहारीलाल काचरू	,,	,, ,,	१४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
१११	कु० भगवती नकैब	श्रीनगर	तृतीय श्रेणी	१११
११३	जियालाल हुण्डू	,,	,, ,,	९७
११६	लक्ष्मीनाथ वाण्टू	मट्टन	,, ,,	९७
११७	रूपनाथ भट्ट	,,	द्वितीय ,,	१२२
११८	शकुन्तला कुमारी	जम्मू	तृतीय ,,	१०३
१२०	पुष्पावती	लायलपुर	,, ,,	१०३
१२१	कमला सेठ	रावलपिण्डी	,, ,,	११०
१२२	सरिन्दर	,,	,, ,,	१११
१२५	श्रीराम	,,	,, ,,	११९
१२६	रविनन्दन संग	,,	,, ,,	९३
१३०	रामेश्वर दयाल	,,	,, ,,	१०२
१३१	मंगल सेन	,,	द्वितीय ,,	१३१
१३२	राधाकृष्ण दत्ता	,,	तृतीय ,,	९५
१३३	सरोज नांगिया	,,	तृतीय श्रेणी	११३
१३४	सावित्री खन्ना	,,	,, ,,	१०३
१३५	सेवाराम	,,	,, ,,	१०९
१३६	कुन्दनसिंह	क्वेटा	,, ,,	९३
१३७	जपानन्द	,,	द्वितीय ,,	१३७

हिन्दी परिचय परीक्षा (दिसम्बर १९४२)

२	भगवानदास	अबोहर	द्वितीय श्रेणी	१३२
३	पितम्बर राम	,,	,, ,,	१३३
१०	इमीलाल	,,	तृतीय ,,	१०६
११	गिरधारीलाल	,,	द्वितीय ,,	१२६
१३	गुलजारीलाल	,,	,, ,,	१२७
१४	हीराराम	,,	प्रथम ,,	१५७
१५	बद्रीराम	,,	तृतीय ,,	९९
१६	अमरनाथ शर्मा	जम्मू	,, ,,	११६
१७	देवराज शर्मा	,,	,, ,,	९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा	प्राप्तांक
१८	दुर्गादत्त शर्मा	जम्मू	तृतीय ,,	११५
२०	नारायणदत्त शर्मा	,,	,, ,,	११३
२१	मदनमोहन शर्मा	,,	,, ,,	६५
२२	सोमदत्त शर्मा	,,	,, ,,	११८
२३	तिलक शर्मा	,,	,, ,,	११७
२४	रत्नचन्द्र	,,	प्रथम ,,	२०५
२५	छज्जूराम	,,	द्वितीय ,,	१३६
२६	परमेश्वर दत्त	,,	प्रथम श्रेणी	१५३
२७	कृष्ण दत्त	,,	तृतीय ,,	११४
२८	परमानन्द शर्मा	,,	प्रथम ,,	१६३
२६	मदन मोहन	फाजिलका	,, ,,	१६७
३१	ओं प्रकाश शर्मा	,,	द्वितीय ,,	१३०
३२	मोहनलाल शर्मा	,,	तृतीय ,,	६८
३३	रामलाल वर्मा	,,	,, ,,	६५
३५	विद्यावती	,,	,, ,,	१०४
३६	प्रेम प्यारी	,,	,, ,,	१०४
३७	शान्ति देवी	,,	,, ,,	१०६
३८	कृष्णाकुमारी	,,	द्वितीय ,,	१३०
४०	निरञ्जनदास गुप्त	,,	तृतीय ,,	११६
४२	सोहनलाल शर्मा	,,	,, ,,	१०१
४३	गुलाबराय अग्रवाल	,,	द्वितीय ,,	१२५
४५	मदनलाल	,,	तृतीय ,,	११८
४६	बुद्धराम	,,	द्वितीय ,,	१३३
४८	मुकुन्दलाल आर्य	,,	,, ,,	१३३
४६	बृजलाल शर्मा	,,	,, ,,	१४३
५१	उषा कुमारी	लायलपुर	,, ,,	१३६
५४	हरवंश कौर	,,	तृतीय ,,	६१
५५	सुशीला देवी	,,	द्वितीय ,,	१२६
५६	राजकुमारी	,,	तृतीय ,,	१००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
५८	प्रेम कुमारी	लायलपुर	द्वितीय श्रेणी	१३८
५९	शकुन्तला कुमारी	,,	,, ,,	१३०
६०	विद्यावती	,,	तृतीय ,,	१०९
६२।	विद्यादेवी	,,	द्वितीय ,,	१४४
६३	सावित्री देवी	,,	,, ,,	१४०
६४	तारादेवी	,,	,, ,,	१२३
६५	तेज कौर	,,	प्रथम ,,	१५५
६६	कमला कुमारी	,,	द्वितीय ,,	१२९
६७	सन्तोष कुमारी	,,	तृतीय ,,	११३
६८	कुलदीप कौर	,,	प्रथम ,,	१५८
७०	सुदर्शन आहूजा	,,	,, ,,	१७२
७१	राजरानी	,,	द्वितीय ,,	१४७
७२	कृष्णा दीवान	,,	,, ,,	१४७
७३	स्नेहलता	,,	तृतीय ,,	१०७
७४	कमला धवन	,,	द्वितीय ,,	१२२
७५	अञ्जना देवी	,,	प्रथम ,,	१५५
७६	सीता अग्रवाल	,,	,, ,,	१६८
७८	राजकुमारी	,,	द्वितीय ,,	१२२
७९	कमला विरमानी	,,	तृतीय ,,	११७
८०	श्यामा विरमानी	,,	द्वितीय ,,	१२७
८१	सन्तोष	,,	प्रथम ,,	१५४
८२	राजकुमार	,,	,, ,,	१६६
८३	इन्द्र कौर	,,	,, ,,	१६७
८४	कु० वेद कंवरपाल	,,	द्वितीय ,,	१२२
८५	गुरू बचनी	,,	प्रथम श्रेणी	१५६
८६	चम्पावती	,,	,, ,,	१५८
८८	सुशीला देवी	,,	तृतीय ,,	१०४
९१	विद्यादेवी	,,	द्वितीय ,,	१२३
९२	कैलाशवती	,,	प्रथम ,,	२०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा	प्राप्तांक
६३	कृष्णा देवी	लायलपुर	तृतीय श्रेणी	११२
६५	लाल देवी	,,	द्वितीय ,,	१४०
६६	राजरानी	,,	,, ,,	१२४
६७	शकुन्तला देवी	,,	तृतीय ,,	१०५
६८	शकुन्तला देवी	,,	द्वितीय ,,	१२३
६६	जमना देवी	,,	,, ,,	१२१
१०६	मोहिनी कुमारी काचरू	श्रीनगर	तृतीय ,,	११०
११०	शान्ताकुमारी	,,	,, ,,	६४
१११	ओंकारनाथ कौल	,,	,, ,,	१००
११५	गिरधारीलाल जलाली	,,	,, ,,	१०५
११८	ज्वाला	,,	,, ,,	११८
११६	राधाकृष्ण वल्ली	,,	द्वितीय ,,	१४५
१२०	सोमनाथ दर	,,	तृतीय ,,	१०१
१२१	हनुमान	अबोहर	,, ,,	९२
१२४	गायत्री देवी	फाजिलका	,, ,,	११७
१२५	लाजपतराय	,,	द्वितीय ,,	१३७
१२६	मुकुन्दलाल तनेजा	,,	तृतीय ,,	११८
१२९	कु० विद्याश्वरी रेणा	श्रीनगर	द्वितीय श्रेणी	१२५
१३३	मोतीलाल पीर	,,	,,	१२३
१३६	गंगाधर भट्ट	,,	प्रथम श्रेणी	१७६
१४१	बृजलाल खार	मट्टन	तृतीय श्रेणी	११४
१४३	विद्यावती धर	,,	प्रथम श्रेणी	१८३
१४४	विद्यावती किचलू	,,	तृतीय श्रेणी	११४
१४५	रामलाल खार	,,	,,	१०८
१४७	रामलाल लम्बा	,,	,,	१००
१५०	त्रिलोकीनाथ	श्रीनगर	,,	१०६
१५१	जियालाल वागनू	,,	प्रथम श्रेणी	१५४
१५२	प्रेमनाथ कल्ला	,,	तृतीय श्रेणी	१०२
१५५	पृथ्वीनाथ राजदान	,,	द्वितीय श्रेणी	१२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा	प्राप्तांक
१५८	पुशकरनाथ	श्रीनगर	तृतीय श्रेणी	१०१
१६१	गुरोदेवी	रावलपिंडी	,,	१११
१६३	राजकुमारी	,,	,,	११०
१६५	कृष्णाप्यारी	,,	,,	९३
१६६	मुरगाई देवी	,,	प्रथम श्रेणी	१५३
१६७	सुन्दर	,,	द्वितीय श्रेणी	१३५
१६८	देवेन्द्रनाथ	,,	,,	१४२
१६९	यदुकुल भूषण	,,	तृतीय श्रेणी	११८
१७०	पुष्करराज अन्नद	,,	प्रथम श्रेणी	१६५
१७१	किशनचन्द	,,	तृतीय श्रेणी	९२
१७२	जनक खन्ना	,,	द्वितीय ,,	१२२
१७३	हरिवंश लाल	,,	,, ,,	१३२
१७४	ओंकार प्रसाद भार्गव	,,	,, ,,	१४९
१७५	चक्रवर्ती	,,	प्रथम ,,	१८१
१७६	डोंगरचन्द्र	,,	,, ,,	१५०
१७७	पृथ्वीराज	,,	तृतीय ,,	९१
१७८	भोजराज	,,	द्वितीय ,,	१४९
१७९	अमरनाथ	,,	,, ,,	१३१
१८१	रोशनलाल	,,	तृतीय ,,	१०१
१८२	ब्रजभूषण आनन्द	,,	द्वितीय ,,	१२५
१८३	गुलशनकुमार	,,	तृतीय ,,	९६
१८४	पूर्णनाथ	,,	प्रथम ,,	१५६
१८५	बृजभूषण	,,	तृतीय ,,	११५
१८६	रामनाथ	,,	,, ,,	१०१
१८७	रघुनाथ	,,	,, ,,	९६
१८९	श्रीराम	,,	,, ,,	११०
१९०	सुशील कुमार	,,	,, ,,	२०३
१९१	बृजमोहनलाल	,,	,, ,,	९७
१९२	भगवती प्रसाद	,,	द्वितीय ,,	१२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक	
१९३	ओंमप्रकाश	रावलपिंडी	द्वितीय श्रेणी	१४९
१९४	खुशहाल सिंह	,,	तृतीय ,,	११८
१९६	रामदुलारे	,,	,, ,,	११३
१९९	त्रिलोकीनाथ	,,	प्रथम ,,	१६९
२०१	ओम्मप्रकाश अग्रवाल,	,,	द्वितीय श्रेणी	१४०
२०३	दयालदास दयाराम	क्वेटा	प्रथम श्रेणी	१६७
२०४	गोविन्दसिंह	,,	,, ,,	१८४
२०५	मदनसुन्दरी	रावलपिंडी	द्वितीय श्रेणी	१३६

दयाशंकर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०,
परीक्षा मंत्री,
हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्दी-स

(१) सु

१ भारत-

२ राष्ट्रभा

३ शिवाब

४ पद्मावत

५ सूरदास

६ नवीन

७ विहारी

८ सती क

९ हिन्दी

१० ग्रामों

(२) स

१ अकबर

(३) वै

१ सरल

२ प्रारम्भि

३ सृष्टि व

१—

२—

३—

४—

५—

६—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(हि)न्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

१ भारत-गीत ≡)
२ राष्ट्रभाषा ॥)
३ शिवाबावनी ≡)
४ पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १।)
५ सूरदास की विनयपत्रिका ≡)
६ नवीन पद्यसंग्रह ।॥)
७ बिहारी-संग्रह ≡)
८ सती कणकी ॥)
९ हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव ॥=)
१० ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार १।)

(२) साधारण पुस्तकमाला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था १)

(३) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

१ सरल शरीर-विज्ञान ॥), ।॥)
२ प्रारम्भिक रसायन १)
३ सृष्टि की कथा १)

(४) बाल-साहित्य माला

१ बाल नाटक-माला ।)
२ बाल-कथा भाग २ ।=)
३ बाल विभूति ≡)
४ वीर पुत्रियाँ ।=)

(५) नवीन पुस्तकें

१ सरल नागरिक शास्त्र ३)
२ कृषि प्रवेशिका १)
३ विकास (नाटक) ॥=)
४ हिंदू-राज्य शास्त्र ३॥)
५ कौटिल्य की शासन-पद्धति १।=)
६ गावों की समस्यायें १)
७ मीराँबाई की पदावली २॥)
८ भट्ट निबंधावली १।)
९ बंगला-साहित्य की कथा १।)
१० शिशुपाल वध २)
११ ऐतिहासिक कथायें ।॥)
१२ दमयन्ती स्वयंवर ॥)

प्रकाशित हो गईं

१—मैथिली लोकगीत—रामइक़बालसिंह 'राकेश' भूमिका लेखक—पण्डित अमरनाथ झा ३)
२—गोरखबानी—डाक्टर पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ३)
३—दीवाली और होली—(कहानी संग्रह) श्री इलाचन्द्र जोशी १॥)
४—महावंश—भदन्त आनन्द कौसल्यायन ३)
५—हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी—श्री नन्ददुलारे वाजपेयी ३॥)
६—स्त्री का हृदय—(एकांकी नाटक) श्री उदयशंकर भट्ट १॥)

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए० ६२१

जातक

[प्रथम तथा द्वितीय खण्ड]

अनुवादक : भदंत आनन्द कौसल्यायन

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान पं० जयचन्द्र विद्यालंकार का कथन है कि "विश्व के वाङ्मय में 'जातक' जन-साधारण की सब से पुरानी कहानियाँ हैं; मनोरंजकता, सुरुचि, सरलता, आडम्बरहीन सौन्दर्य और शिक्षाप्रद होने में उनका मुक़ाबला नहीं हो सकता। वे बच्चों के लिये सरल और आकर्षक, जवानों और बूढ़ों के लिये भी रुचिकर और विद्वानों के लिये प्राचीन भारत के जीवन का जीता-जागता चित्रण करने के कारण अत्यन्त मूल्यवान हैं।"

प्रथम खंड, पृष्ठ संख्या ५४०—५५; डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)

द्वितीय खंड, पृष्ठ संख्या ४६४—२४ डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)

'आधुनिक हिन्दी कवि' माला

आधुनिक काल के श्रेष्ठ कवियों द्वारा अपनी सर्वोत्तम रचनाओं के संग्रह इस माला के अन्तर्गत छपे हैं। पुस्तकों के प्रारंभ में कवियों ने अपनी कविताओं की विचारधारा पर विस्तृत प्रकाश डाला है। कवियों के पेन्सिल स्केच, तथा हस्तलिपियाँ भी साथ हैं।

१. श्री महादेवी वर्मा   २. श्री सुमित्रानन्दन पंत

३. श्री रामकुमार वर्मा

प्रत्येक का मूल्य १॥)

शीघ्र ही कुछ अन्य कवियों के संग्रह भी प्रकाशित हो रहे हैं।

मिलने का पता :

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

मुद्रक—श्रीगिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।

प्रकाशक—श्रीरमाप्रसाद घिल्डियाल, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की मुख-पत्रिका

ज्येष्ठ, २०००

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन

प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका : ज्येष्ठ, २०००

संपादक—श्री रामचंद्र टंडन, साहित्य मंत्री

विषय-सूची

१. सभापति का अभिभाषण—पं० माखनलाल चतुर्वेदी - - १

२. हमारे साहित्य का दृष्टिकोण—श्री रामकुमार वर्मा - - ११

३. ३१वें अधिवेशन हरिद्वार में स्वीकृत प्रस्ताव - - १६

४. समालोचना - - - - २१

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अभूतपूर्व प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द' लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, स्वर्गीय आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के एक निर्माता, हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति, स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल संग्रह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द।

मूल्य ४॥)

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग ३० : : संख्या १० : : ज्येष्ठ, २०००

सम्मेलन-पत्रिका

सभापति का अभिभाषण[1]

साहित्य और साहित्य-निर्माता

जगत, साहित्य के पीछे, अनिवार्य चला आ रहा है। जगत के ऋषियों ने लोक-जीवन में फेर-फार करने के लिये जो कुछ कहा, वाणी के द्वारा; वही वाणी संगृहीत होकर साहित्य कहलाई। साहित्य में दो धाराएँ रही हैं। एक वे हैं जिन्होंने बहुत कहा है, और तुलसीदासजी ने जिनकी ओर—

"तदपि कहे बिनु रहा न कोई"

कहकर संकेत किया है। वे ज्ञान के धनी। दूसरे वे हैं जिन्होंने बहुत सहा है। वे अनुभव के धनी। ज्ञान अपने प्रति सजग होता है और अपनी प्रचण्ड पहुँच के अवतरणों में भी अपनी सीमाबद्धता की लाचारी व्यक्त किया करता है। अनुभव, अपने अभिमत में अपनी सीमा खो चुकता है, अतः वह बोल चाहे बहुत कम पाए, संगीत की तरह उसके आनन्द में विराम नहीं होता। ज्ञानियों को हम विद्वान कहते हैं। अपने आपको खोये हुए मनीषियों को हम सन्त कहते आए हैं। शब्दों में अर्थ होते हैं, और चाहे वे काव्य के ही शब्द क्यों न हों, अर्थ को आगे ढकेले बिना वे अपनी बाजार दर विश्व में सिद्ध नहीं कर पाते। संगीत है आवाज ही, है स्वर ही; किंतु अर्थ का मुहताज नहीं। वह अर्थ को काफी पीछे फेंक कर अपने को खोया हुआ सा आगे बढ़ता है और अर्थों के अस्तित्व की तरह उसका आनन्द सीमा-रहित होता जाता है। इन्हीं दो ने मिलकर जगत को जो कुछ दिया है उसे हम साहित्य कहते हैं।

विश्व-निर्माता की तरह, साहित्य-निर्माता की कुछ जिम्मेवारियाँ हैं। और माता की तरह निर्माता के पथ में कुछ लाचारियाँ भी हैं। किन्तु इस मातृत्व और निर्मातृत्व से आज का कलाकार जैसे ऊब उठा है। अब साहित्यिक कह रहा है कि उसे नाचने-कूदने

---

[1] अखिल भारतवर्षीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के ३१वें अधिवेशन (हरिद्वार) के अध्यक्ष पं० माखनलाल चतुर्वेदी के अभिभाषण से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जीवन की रंगीनियाँ दिखाने के लिये छोड़ दिया जाय; मानो वह विचार-दान के तपोमय जीवन से ऊब गया है और उसे विश्राम चाहिये! "विश्राम चाहिये"—इसलिये कि उसकी स्पर्धा में विश्व की तीन शक्तियाँ खड़ी हुई हैं।

एक इंजीनियर है, जिसने सिद्ध किया है कि उसके आविष्कारों की प्रभुता के द्वार पर कलाकार असहाय है। मशीन से बने खाद्य-पदार्थ, मशीन से निकलने वाले ग्रंथ, मशीन से सुनायी पड़ने वाला संगीत, मशीन से आने वाला संवाद, मशीन से पर्दों पर फेंके जाने वाले अभिनय, इन्हें साहित्य-निर्माता के सामने रखकर इंजीनियर मानों गर्वित बोल उठा है कि कहाँ है साहित्य? क्या अपनी कलम मेरे पास रहन रखने और मेरी मर्जी पर कभी दामों से और कभी बेदाम रोने-हँसने के सिवा उसका कोई कर्तव्य बाकी है? इंजीनियर यहीं नहीं ठहरा। उसने अपने विशाल स्वरूप को युद्ध-क्षेत्रों के रूप में व्यक्त कर मानव और उसके साहित्य को चुनौती दी है कि वह केवल उसकी मर्जी पर कतार बनाकर मर जाने और मरने को त्यौहार कहते जाने की चीज मात्र है।

दूसरा है राजनीतिज्ञ। उसने सन्धि और विग्रह के क्षेत्रों की तरह, साहित्य और साहित्यिकों के बेंचने और खरीदने के हाट बना रखे हैं, और वाद यानी 'इज़्म' के ताने-बाने से बनी अपनी चादर के नीचे, विश्व की कलमों को बाँध लेने का आयोजन किया है। उसकी आज्ञा है कि लिखो वह, जो मैं चाहूँ; और वह न लिखो जिसे मैं न चाहूँ। वह फासिस्ट है, वह नाज़ी है, वह साम्राज्यवादी है, वह बोलशेविक है। वह क्या नहीं है; वह क्या नहीं हो सकता?

"कहते हैं फ़ीस लीजिए और आह कीजिए"

का स्वर, राजनीतिक और आर्थिक हाट में बिके ग़रीब साहित्यिक के लिये परम सत्य साबित हो रहा है।

तीसरा है मनोविज्ञान। मानव पढ़ा हो या बेपढ़ा, प्राणी होने के कारण, मनोविज्ञान के परम उपहारों, यानी हर्ष, शोक, घृणा, मद, मोह, प्रेम और द्वेष से उसकी मुक्ति नहीं है। मनोविज्ञान का दावा है कि यदि कलाकार अन्तर्द्वन्द्वों को नहीं लिखेगा और जीवन के विकारों से उत्पन्न गुत्थियों को नहीं सुलझा सकेगा, तो उसका विश्व की समस्याओं को सुलझाकर जीवित रहना कठिन हो जायगा। कलाकार के पात्र हैं ही क्या, यदि वे मनोविकारों के सुकोमल कौशल नहीं हैं? अतः मनोविज्ञान, कलाकार को अपने पास क्रीत समझता है।

क्या इंजीनियर, राजनीतिज्ञ और मनोवैज्ञानिक का सामना हम इसी बात से कर ले जायंगे कि हमारे कलाकार ऐसे समय लचीली भावनाओं, रसीली कविताओं और वकार की मक्खियों से भिनकती रचनाओं को लेकर साहित्य-सृजन करते रहें? सूक्ष के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनी साहित्यिक ने, पशु और पत्तियाँ खाते हुए और पत्ते पहनते हुए मानव प्राणी को अपनी सूझों से अपना भाग्य निर्माण करने के लिये आत्मावलम्बी बनाया। क्या आज का साहित्यिक यह कहना चाहता है कि मेरी गढ़ी हुई दुनिया कुछ ऐसी बेतरतीब बन गई है कि इसका बोझ अब मुझसे नहीं सँभलता; और कोई आकर अब इस कार्य को सँभाले ?

आलोचना-ग्रन्थों का मूल्य-मापन

मुझे एक चीज जो खटकती रहती है, वह हमारे आलोचना-ग्रंथों का मूल्य-मापन। दस-पंद्रह वर्ष के बीच के कलाकारों की जमीन लेकर हम चर्चा करने बैठ जाते हैं। कुछ को गण्य सिद्ध करते हैं; कुछ को नगण्य। अध्ययन और पहुँच का अभाव और सस्ते विशेषणों का उपहार हमारे ग्रन्थों की विशेषता होती है। आप जानते हैं ऐसे ग्रन्थों ने कौन-सा युग बनाया है ? इनकी कृपा से पंद्रह वर्ष पहले के तरुण कलाकार इतने पुराने दीख पड़ते हैं कि आज के नये बाल-कलाकार न उनकी वस्तु पढ़ते, न उनकी चर्चा सुनते, न हिंदी साहित्य में उनका स्थान मानते। परिणामतः मौलिक द्रव्यों का जो भोंडा प्रदर्शन नयी कलमें करती हैं और उनमें बेपची-सी जो अंग्रेजी कलम दुर्गन्धित होती है, उससे कहीं अच्छी कलमें, उनसे कई गुना, सन्निकट और सुदूर भूतकाल में लिख चुकी हैं।

मुहाफ़िजखानों की कब्रें उखाड़ कर हर कलाकार की कीर्ति पर शोध और आलोचना के नाम पर शस्त्र-क्रिया होती है। किन्तु युग की पीढ़ी को देने के लिये अधिकांशतः कुछ नहीं होता। कर्तव्य की वह जिम्मेवारी और जागरण भी नहीं होता। जरीब लगाकर जमीन मापने जैसा एक कार्य है, जो चला आ रहा है और चला जायगा। किन्तु निस्संदेह, अभाव से सीमित सही, कुछ तो है। इसमें सन्देह नहीं कि विश्व-विद्यालयों ने ज्ञान-वर्धन के क्षेत्र में बड़ा काम किया है और हमें कितने ही महान नेता, साहित्यकार, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, और शोधक दिए हैं। हमें सजग रहकर विस्तृत दृष्टिकोण के साथ अपने साहित्य का ऐसा लेखा-जोखा रखना चाहिये जिससे युग के कलाकार का उचित मूल्य-मापन हो सके।

अन्य साहित्यों में यह बात नहीं। उनका मूल्य-मापन सौ वर्षों से छोटा नहीं होता और साहित्य की विभिन्न धाराओं की चर्चा में शताब्दियों के लेखे-जोखे के साथ वर्तमान युग के कलाकारों को प्रस्तुत किया जाता है। परिणामतः योग्य कलाकारों की न हत्या होती है न अकाल मृत्यु।

स्व० राय देवीप्रसाद पूर्ण, सूझ के धनी स्व० नाथूराम शंकर शर्मा, नयी दृष्टि से देखने वाले पं० श्रीधर पाठक, पं० विनायकराव कविनायक, पं० बालकृष्ण भट्ट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० कामताप्रसाद गुरु, और पं० माधव शुक्ल, और फेहरिस्त कितनी दूँ कि अनेक मनस्वियों को गद्य और पद्य की आज की अनेक आलोचना की पुस्तकों में आप नहीं देख सकते।

साहित्य के मूल्य-मापकों की एक दूसरी वृत्ति भी है। छोटी-छोटी पहचानों तथा अपनी तीव्र रुचि तथा अरुचि के फेर में पड़कर और हिन्दी संसार के समस्त प्रान्तों की आकलनशील धारा से अपरिचित रहने के कारण, वे ऐसे नये, सच्चे, प्रखर कलाकारों का भी उचित मूल्य-मापन नहीं करते जिनकी प्रतिभा, प्रखरता और सुकोमलता के क्षेत्रों में सूझ के नये से नये अविष्कार करती है।

ऐसे 'कुछ' को वे जानते नहीं; 'कुछ' को वे ढूंढते नहीं और 'कुछ' को वे शायद जान-बूझकर भूलते भी हैं।

आचार्यत्व

आचार्यत्व भी हिंदी संसार की बहुत बड़ी कमजोरी है। हिंदी जगत के कुछ स्थान ऐसे हैं, जहाँ आचार्य ही उत्पन्न होते हैं, अनुयायी उत्पन्न ही नहीं होते। फल यह होता है कि जब साहित्य-चर्चा का स्थल आता है तब ग्रन्थों के पृष्ठ उन आचार्यों के वर्णन से इतने भर जाते हैं कि बिहार, राजस्थान, मध्यभारत, मध्यप्रांत तथा हिंदी जगत के अन्य स्थानों के कलाकारों का जनगणना की रिपोर्ट में लिखे नामों की तरह भी उल्लेख नहीं हो पाता। यद्यपि कितने ही प्रशंसित आचार्यों की अपेक्षा हिंदी जगत के सुदूर स्थानों में नवीन प्रतिभाशील कलाश्रेणी विद्यमान है।

साहित्य में हमने कुछ ऐसी परम्परा बना रखी है कि एक गद्दी से उतरे तो दूसरा गद्दी पर चढ़े। यही कारण है कि बड़प्पन के खिलाफ़ तरुणाई का विद्रोह होता है। उच्च कलाकार तो ज्यों-ज्यों अपनी कलम में भीगता जाता है, वह स्थानों को रोककर खड़ा ही नहीं होता। अपने मनस्वी कलाकार का अशीर्वाद समझ कर पीछे आने वाली पीढ़ी उन स्थानों को अधिकार समझ कर नहीं, कर्तव्य मानकर सँभालती चली आती है। साहित्य उस समय गद्दियाँ जीतने-हारने का मैदान नहीं होता।

जिनकी गति चुक गई है, कृति के पथ में वे कैसे खड़े रहेंगे। इतिहास के मुहाफिजखाने में उनका स्थान सुरक्षित है। हाँ, यदि उनकी कृति गतिशीला है तो वह उनकी पीढ़ी के सिर पर होगी। उन्हें शिकायत नहीं होना चाहिये कि उनकी पीढ़ी, उनकी कृति के प्रति उदासीन है।

"कुछ नवीन चाहिये"—यह अत्यन्त प्राचीन माँग है। यदि इसका अर्थ गति है तो ठीक है। गति नहीं है, तो आदत है। और आदत सदा ही भली नहीं होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन

हिन्दी संसार में प्रकाशन लेखक का यमदण्ड है। अन्य देशों में ग्रंथकारों के नाम से ग्रन्थ परिचित होते हैं, हमारे यहाँ ग्रन्थ के शीर्षकों के नाम से ग्रन्थ परिचित होते हैं। प्रकाशक ने प्रथम दिन लेखक की प्रकटीकरण की लाचारी कह कर जिस पुस्तक को मुफ्त में छाप लिया, वही जब बिक निकली तब उसका मूल्य किससे कौन वसूल करे? उधर प्रकाशक की भी कठिनाई है। वह स्वयं नहीं जानता कि कौनसी पुस्तक बिक निकलेगी। लेखक जगत में अपनी कलम के बल पर साधन-संपन्न है; हमारे यहाँ कलम लेखक का अभिशाप हो रही है। हमारे लेखक को यह विश्वास नहीं कि उसके श्रम का कोई मूल्य चुकावेगा। सम्मेलन में हम अनुभव करें कि हिन्दी की प्रतिभा के भयंकर शत्रु वे हैं, जो गरीब कलाकार का साहित्य मुफ्त में चाहते हैं। वे ही लेखक को निराशा देते हैं कि कला के चिंतन को, वह, भूख की ज्वाला की आँच में, अपने शुभ दिनों के लिये कुपथ्य से बढ़कर कुपथ्य समझे। हम शीघ्र से शीघ्र हिन्दी के कलाकार की कलम का मूल्य चुकाने योग्य हों,—यह प्रयत्न होना चाहिये। और ऐसी धन-राशि एकत्रित होनी चाहिये जिससे हिन्दी के कलाकार के साथ ईमानदारी का व्यवहार करने वाली प्रकाशन संस्थाओं का निर्माण हो सके।

देशी रियासतें और हिंदी

अंगरेजी सीमा के भारतीय शासन को यदि ब्रिटिश भारत कहते हैं तो देशी रियासतों को भारतीय भारत। हैदराबाद और भोपाल का भारतीय भारत उर्दू भाषा को उसी जोश और उत्साह से सहायता दे रहा है, जिस तरह वह इस्लाम की धार्मिक संस्थाओं की सहायता करता है। वहाँ इतनी अनुदारता से काम लिया जाता है कि भोपाल में आज्ञा माँगे जाने पर भी सन् १९४१ के दिसम्बर के तीसरे सप्ताह में वहाँ के मजिस्ट्रेट ने एक हिंदी की सहित्यिक सभा करने की इजाजत न दी। हैदराबाद के शासन ने हैदराबाद की ओर से आमंत्रित हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हैदराबाद में नहीं होने दिया। यह अलग से कहने की जरूरत नहीं कि इन दोनों राज्यों की अधिकांश जनता राज्य की इस भाषा-सम्बन्धी क्षति को जनता पर की जाने वाली जबर्दस्ती समझती है। ये शासन अपनी सीमा में तो बिलकुल उर्दू न जानने वाली जनता पर जबर्दस्ती उर्दू लादेंगे; किंतु काश्मीर में, जहां शासक, भाषा को साम्प्रदायिकता के साथ नहीं मिलाना चाहता, कोशिश की जाती है कि वहाँ के हिंदू भी जबर्दस्ती उर्दू पढ़ने के लिये बाध्य किये जायँ।

अब जरा हिंदू राज्यों की तरफ दृष्टि डालिए। इन्दौर, जनता की भाषा और राज्य की भाषा दोनों के प्रति ईमानदार और सजग है। शासनों के अनेक परिवर्तनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद भी उस राज की भाषा-नीति कभी बिगड़ने नहीं पाती। इन्दौर राज्य के वजनदार विद्वान यत्नशील हैं कि मध्यभारत की सम्मिलित शक्ति से श्रीयुत सिंहल जी की वह योजना सफल हो सके जो हिंदी विश्वविद्यालय की योजना के नाम से प्रसिद्ध है और जिसकी चर्चा इस सम्मेलन के इन्दौर के अधिवेशन में हो चुकी है।

बड़ोदा के शासक मराठी भाषी हैं; वहाँ की जनता गुजराती भाषी। किंतु राज्य ने अपनी कचहरियों की भाषा घोषित की हिन्दी। चूँकि हमारा अखिल भारतीय संगठन केन्द्र में अभी पूर्ण बलवान नहीं हो पाया, इसलिये दुःख है, बड़ोदा की सहायता के लिये हमारा कोई बलवान और कार्यशील प्रतिनिधि-मण्डल बड़ोदा नहीं पहुँच पाया।

हिन्दी जगत की बड़ी रियासतों में इन्दौर और काश्मीर के उल्लेख के बाद गवालियर का उल्लेख होना चाहिये। गवालियर पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', श्रीयुत रामजीदास वैद्य, श्रीयुत लालचन्दजी सेठी, श्रीयुत सिद्धनाथ माधव आगरकर, श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद मिलिंद, स्वर्गीय गणेशशंकरजी विद्यार्थी, स्व० गणपति जानकीराम दुबे, श्रीयुत गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र', श्रीयुत हरिकृष्ण प्रेमी, ज्योतिषाचार्य सूर्यनारायणजी व्यास, स्व० रमाशंकरजी शुक्ल और प्रो० प्रभाकर माचवे जैसे व्यक्ति अपने में रखने का गौरव पाले हुए है। किन्तु इन विद्वानों की भाषा राज की भाषा नहीं। वहाँ एक अद्भुत भयभीत शासन काम कर रहा है, जिससे लाभ उठाकर कुछ व्यक्तियों द्वारा गवालियर में एक नवीन आन्दोलन खड़ा किया गया है। इस आन्दोलन की शिकायत है कि "गवालियर की कानूनी भाषा दिन पर दिन अधिक संस्कृतमय होती जा रही है; और साधारण जनता तथा विशेषकर मुसलमान उसे समझ नहीं सकते।" यह खयाल रखने की बात है कि गवालियर राज के कानून की किताबें फारसी और अरबी शब्दों से लादी हुई हैं। क्रियापद के सिवा हिंदी प्रायः उनमें अधिक नहीं होती। इसके अलावे गत कई वर्षों से इस भाषा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। फिर भी इस नवीन आन्दोलन का परिणाम यह हुआ है कि "हिज हाईनेस ने एक कमेटी ऑफिशियल तथा जनता के सदस्यों की, सैयद हकीम अहमद (राज्य के एक मंत्री) की अध्यक्षता में बना दी है, ताकि वह यदि आवश्यक समझे तो इसे सबकी राय से सरल बनाने का प्रयत्न करे।"

जयपुर में श्रीरामचन्द्र शर्मा 'वीर' को इसलिये उपवास करना पड़ा कि वहाँ हिंदी का प्रचार हो। सरकार ने आश्वासन भी दिया। ता० २८ जनवरी को राज की आज्ञा निकली कि "श्री महाराजा साहब बहादुर की अधिकांश प्रजा देवनागरी लिपि इस्तेमाल करती है। इसलिये गवर्नमेंट की यह मंशा है कि तमाम दफ्तर और अदालतें देवनागरी लिपि का प्रयोग करें, ताकि सम्बन्धित जनता को किसी किस्म की असुविधा न हो।" किंतु साथ ही उसी आज्ञा में ये शब्द भी लिखे गए हैं—"मगर इस आर्डर की मंशा यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है कि देवनागरी लिपि ठीक तरह न जानने वालों के लिये उर्दू लिपि इस्तेमाल करने पर किसी किस्म की रुकावट है।" जब जनता ने इस आज्ञा को एक हाथ से देकर दूसरे हाथ से सुविधा छीन लेना समझा, तब ता० ८ फरवरी सन १९४३ के नोट में जयपुर दरबार के पब्लिसिटी अफसर ने शासन की ओर से अधिकारपूर्वक यह स्पष्टीकरण किया कि उनकी पहली आज्ञा के मंशा शब्द के मानी "सरकार की यही मरजी या निर्णय है।" राज ने यह भी स्पष्ट किया कि "देवनागरी लिपि ठीक तरह से नहीं जानने वालों के लिये" से सरकार का अभिप्राय यह है कि "जल्दी से जल्दी सरकारी दफ्तरों और अदालतों में देवनागरी लिपि का आम व्यवहार होना चाहिये।" किन्तु ता० १९ फरवरी को फिर मक्खी छींक गई। एक सरकारी आज्ञा निकली, जिसमें २८ जनवरी के सरकारी मेमोरेंडम और ८ फरवरी के पब्लिसिटी ऑफीसर के नोट का उल्लेख करते हुए राज के पब्लिसिटी ऑफीसर ने फिर स्पष्ट किया कि "जब कि सरकार का इरादा देवनागरी लिपि को कचहरियों में 'आम लिपि बना देना' है, तथापि उर्दू में लिखे कागजात इस बिना पर कि वे उर्दू में लिखे हुए हैं, अस्वीकृत नहीं किये जायंगे।"

कम से कम कहें तो हमारे विचार से राज्य को अपनी एक नीति बनाकर दृढ़ रहना चाहिये।

उर्दू और हिंदी का झगड़ा

उर्दू और हिन्दी का झगड़ा हम कृत्रिम रूप से राष्ट्रभाषा का सवाल बनाये हुए हैं। हमने जो भाषाएँ गढ़ रक्खी हैं वे शहराती हैं और फारसी और अरबी के विदेशी शब्द तथा संस्कृत के कठिन शब्द दोनों की हिमायत हमें एक ही जगह पहुँचाती है—यानी वह राष्ट्रभाषा को शहरों में रोक लेती है; उसकी गाँवों तक जाने की क्षमता नष्ट कर देती है। जो लोग पाकिस्तान की माँग करते हैं, उन्हें भाषा में भी पाकिस्तान चाहिये। किन्तु गरीबों द्वारा की जाने वाली देश की सर्वांगीण क्रांति में ये पाकिस्तान टिकेंगे नहीं। जब कठिन उर्दू और फारसी के शब्दों की माँग की जाती है तब देश के टुकड़े कर, तब भाषा के टुकड़े कर, उसका एक अलग स्वरूप, बोझ की तरह देश पर लादा जाता है। किन्तु जब हम कठिन संस्कृत शब्द हिन्दी में ठूँस कर उसकी गतिशीलता नष्ट करते हैं, तब हम भाषा के सन्तवाणी की तरह सरल होने के पथ में रोड़े अटकाते हैं और पाकिस्तान की माँग का सिद्धान्ततः समर्थन करते हैं। मैं तो राष्ट्र-भाषा को लेकर जब दक्षिण भारत में जाऊँ तब बँगला, उड़िया, तेलगू, तामिल, मलयलम, कन्नड, मराठी, और गुजराती भाषियों से, जब राष्ट्रभाषा में बोलूँगा तब उन भाषाओं में जितने सर्वसाधारण संस्कृत शब्द काम में आ रहे होंगे और हिन्दी भाषा को जिन संस्कृत शब्दों द्वारा समझे जाने में सरलता प्राप्त होगी, संस्कृत के उस समस्त खजाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मैं स्वीकार कर लूँगा । क्योंकि न मुझे शासन के इशारे पर भाषा गढ़ना स्वीकार है, न परिस्थितियों से घबरा कर भाषा मढ़ना स्वीकार है । किन्तु जब मैं सिंध में जाऊँगा, हैदराबाद में जाऊँगा, पंजाब में जाऊँगा, काश्मीर में जाऊँगा, सीमान्त में जाऊँगा और काबुल में जाऊँगा, तब मैं उन शब्दों को स्वीकार कर लेना चाहूँगा जिनके लेने से मेरी भाषा मेरे देश की उन सीमाओं में समझी जाने की चीज हो सके । हाँ, मैं जापानी, चीनी, तुर्की, अरबी और अंगरेज़ी शब्दों को विदेशी मानूँगा और जब स्वीकार करूँगा, लाचारी की तरह; और सदैव यत्नशील रहूँगा कि मैं उन लाचारी से ग्रहण किये हुए शब्दों के प्रतिशब्द इस देश की संस्कृति और इस देश के साहित्य को व्यक्त करने वाली प्रान्तीय तथा भारतीय भाषाओं में से चुन लूँ । मैं यह कभी सह नहीं सकता कि भाषा का कृत्रिम झगड़ा खड़ा कर हम जीवन को व्यक्त करने वाले अपने संकटपूर्ण उत्तरदायित्व से मुँह मोड़ें ।

राष्ट्र-भाषा की विरोधिनी भाषा

आप जानते हैं, राष्ट्र-भाषा की विरोधिनी भाषा कौन बना रहा है ? और वह कहाँ बन रही है ? न वह प्रयाग काशी वा पटना में ढल रही है; न लखनऊ, देहली, और लाहौर में । मिडिल स्कूलों से लगा कर विश्वविद्यालयों तक देश भर में वह कौन सी भाषा है जिसका पढ़ना हमारे बच्चों के लिये अनिवार्य है ? आसेतु हिमांचल देश के न्यायाधीश सूरज के अस्त न होने का गर्व करने वाले अंगरेजी राज की कृपा से किस भाषा में अपने फैसले लिखते हैं ? देश भर की स्थानीय स्वराज संस्थाओं से लगाकर धारासभाओं तक पर किस भाषा की प्रभुता लादी गई है ? शासन के नायब तहसीलदार से लगाकर गवर्नर और गवर्नर जनरल तक किस भाषा में राजाज्ञाएँ दे रहे हैं ? हमारी संस्कृति की, चाहे वह मुगल-युग की हो या राजपूत-युग की या अति प्राचीन युग की, शोध करने वाले विद्वान अपनी शोधों को किस भाषा में रखकर विश्वविद्यालयों के आचार्य बन रहे हैं ? वह कौन सी भाषा है जिसमें अपनी योग्यता सिद्ध किये बिना इस देश का चिन्तक, चतुर और ः।कर—कोई योग्य नहीं माना जाता ? जब सारे देश में अपनी वाणी पहुँचानी पड़ी तब किस भाषा में लोकमान्य तिलक को 'मराठा' लाला लाजपतराय को 'पीपुल', श्रीमती एनी बीसेन्ट को 'न्यु इण्डिया' और 'कॉमनवील', सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को 'बंगाली', श्री कस्तूरीरंगा आइयंगर को 'हिन्दू', और महात्मा गाँधी को 'यंग इण्डिया' और 'हरिजन' प्रकाशित करने पड़े ? वह कौनसी भाषा है जिसे हम पढ़े-लिखे के नाते प्रान्तों में अपनी बात पहुँचाने के लिये चिट्ठियों में, और चिट्ठियों के पतों में लिखा करते हैं ? राष्ट्र के शरीर पर आर्थिक शस्त्र-क्रिया की तरह दौड़ने वाली रेलों का विशाल कारबार किस भाषा में चल रहा है ? भारत में किस भाषा के प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्युच्च हैं जिनके अवतरण और अनुवादों को लेकर देशी भाषा के पत्र अपने कलेवरों को नित्य कलंकित कर धन्य होते हैं ? हमारे दरवाजों पर किन भाषाओं में तख्ते लगे हैं ? विद्वत्ता के शहराती आसमान में विचरण करते हुए आज कम पढ़ा-लिखा भी, अपने हर वाक्य में किस भाषा के दो-तीन शब्द मिलाये बिना नहीं रहता ? हम क्यों आँखें मूँदते हैं कि अंगरेजी इस देश की साधारण भाषा नहीं बनायी जा रही ? हमें तो तभी आश्चर्य करना चाहिये था, जब राष्ट्रभाषा के पथ में हमारा आपस में झगड़ा न होता। स्वराज्य की चर्चा है तो पाकिस्तान हाजिर है, राष्ट्र-भाषा की चर्चा है तो झगड़ा हाजिर है। यह झगड़ा हमारा अपना नहीं है। इस झगड़े की अधिक चर्चा करके हम इसकी नींवें अधिक गहरी नहीं होने देना चाहते। इस बात को हम क्यों भूलते हैं कि जहाँ अंगरेजी देश के समस्त विश्वविद्यालयों में अनिवार्य है, वहाँ इस देश की कोई भाषा अंगरेजी की तरह अनिवार्य रूप से पढ़ाई नहीं जाती ? हम ज्ञान को विदेशी नहीं मानते; क्योंकि सूर्य और वायु को विदेशी नहीं मानते। किन्तु सूरज की की तीव्रता में भी हम दरवाजे बन्द कर ठंडक में रह लेते हैं; और वायु की तीव्रता में हम अपने वस्त्रों और आवरण से अपनी रक्षा कर लेते हैं; किन्तु अंग्रेजी के प्रहार से हम सर्वथा अरक्षणीय हैं। संस्कृत को, जो देश भर में फैली हुई है और इस देश की भाषा है, कभी रुचि और कभी अरुचि से पढ़ते हैं, और यह उस समय जब देश के महान बहुमत की धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा उस भाषा में गढ़ी हुई है। हम सम्पूर्ण एशिया का स्वप्न सामने रखकर भी कभी पश्तो, तुर्की, फारसी, बर्मी, नेपाली, तिब्बती और चीनी भाषा पढ़ नहीं पाते, उन दिशाओं में समान रूप से बढ़ नहीं पाते। थोड़े से चिंतक और ज्ञानशील अंगरेजी पढ़ें सो बात नहीं। थोड़ी सी तालीम शुरू होते न होते हमारे देश के हर बच्चे को अंगरेजी पढ़ाई जा रही है। अंगरेजी के भाण्ड में ज्ञान रखकर उसे देशी भाषाओं में इसलिये नहीं आने दिया जाता कि उससे कहीं अंगरेज़ कमजोर न पड़ जायँ। यह सब देख-सुन कर भी हम आपस में लड़कर कहते हैं कि राष्ट्रभाषा का दुश्मन कौन है ? मैं नहीं चाहता कि इस समस्या पर रंगीन परदे डालकर समस्या को अपने अपने रंगों में चित्रित करने का घातक खेल हम और अधिक खेलें। हम दूर रहना चाहते हैं, थोड़े दिन बाद जानेंगे कि हमने भूल की; हम निकट आना चाहते हैं तो निकट आने से हमें कोई नहीं रोक सकता। और यदि हम अपनी भाषा ऐसी नहीं रख सकते कि हिन्दुस्तान की समस्त भाषाओं में वह शीघ्र परिचित हो सके और हिन्दोस्तान के गाँवों के गरीबों तक समझी जाय, तो हम अपने मस्तिष्क के व्यभिचार के खिलवाड़ शहरों में किये रहें। इस देश में अपभ्रंश के रूप में एक परिचित और सरल भाषा बनती रही है और वह बोलने वालों की आवश्यकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर परिवर्तित होती रही है। कठिन शब्द डालने की जिद करने वालों और उनकी अकड़ की हत्या से युग के हाथ सदा लाल होते आए हैं। चाहे वह जिद कठिन फारसी की हो चाहे कठिन संस्कृत की। आज की हिन्दी वैसी ही अपभ्रंश का स्वरूप है और वह अधिकाधिक सरल होती जाय।

रेडियो और सिनेमा की भाषा

रेडियो का नियंत्रण भी भारत सरकार करती है और अपने प्रकाशन विभाग का भी। किंतु अपने हिंदी के प्रकाशन विभाग की भाषा को, यानी रेडियो के सारंग पाक्षिक की भाषा को वह हिंदी के रेडियो मंच पर नहीं चढ़ने देती। भाषा गढ़ने का यह "अव्यापारेषु व्यापार", समाचार और मनोरंजन, कला-प्रियता और ज्ञान-वृद्धि की जनता की लाचारी से लाभ उठा कर सहस्रों घरों में एक दूषित भाषा लाद रहा है। युद्ध के लिये चंदा लेते समय विज्ञापनों में सरकार और हिंदी बोलती है और रेडियो में समाचार सुनाते समय ठीक दूसरी हिंदी। पंडित, मौलवी और पादरी, खरीद रखे गए हैं कि वे गीता सुनायँ, कुरान शरीफ सुनायँ और बाइबल सुनायँ। और भारतीय बहुजन समाज की भाषा को नीचे गिराने का बड़े पैमाने पर प्रयत्न जारी है। 'आकाश-वाणी' के द्वारा हितैषी जी ने इस ओर जनता का ध्यान खींचा था और राजनाथ पाण्डेय आदि सज्जनों ने कुछ प्रयत्न भी किए थे। किंतु संगठित उद्योग न हो, तब तक कुछ कैसे हो?

पैसा देकर पतन, प्रतिभाहीनता, और बुरी भाषा पाने का दूसरा स्थल सिनेमा है। किंतु इधर उसमें सुधार हुए हैं। हिंदी भाषी मूलधन और हिंदी भाषी नियंत्रण से इस दिशा में हमें संगठित होना चाहिये, तभी हम अपने सुदर्शन, सहगल, मोतीलाल, चन्द्रमोहन, नटवर, भगवतीचरण, नरेंद्र, प्रदीप, संतोषी, किशोर, प्रभा, जैसे कलाकारों को भाषा का नियमन करने का अधिकारी बना सकेंगे। भोजन, गायन, नृत्य, अभिनय, युद्ध, भाषण,—इन सबमें मशीनों ने गुणन और बिजली ने गति दे दी है। हम इनसे दूर रहने का सपना छोड़ें और प्रस्तुत परिस्थिति का सामना करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे साहित्य का दृष्टिकोण[1]

भारतीयों का नैतिक जीवन संसार के समस्त अंगों में पैठ कर उससे भी आगे बढ़ने का है। हमारे साहित्य का दृष्टिकोण इसी भावना में पोषित होता आया है। साहित्य का आदर्श केवल ज्ञान के रंगीन रत्न ही एकत्रित करना नहीं, उसका आदर्श है सार्वभौमिक मानव-जीवन का ऐक्य और संगठन। देश और जलवायु की विभिन्नताएँ रहते हुए भी साहित्य एक अव्यक्त सूत्र से मानव-हित और सहयोग के बिखरे हुए पल्लवों का बंदनवार शिव और कल्याण की भावना से सरस्वती-मंदिर के चारों ओर बाँध देता है। वह देश देश में प्रेम और शांति का दूत बन कर मानव-संप्रदायों में शांति की व्यवस्था करता है। वह युगों के 'चिर-प्रवास श्यामल पथ में' 'पिक प्राणों की पुकार' की तरह गूँजता रहता है और आकाश उसकी नीली प्रतिध्वनि से अपने को जागृत रखता है। वेद और उपनिषद्-साहित्य अरण्यों में लिखा जाकर भी सार्वभौमिक जीवन में स्पंदित हुआ। वेद की प्रकृति-उपासना जितना आध्यात्मिक जीवन प्रशान्त करती है उतना ही सांसारिक जीवन सुदृढ़ बनाती है। जनक विदेह की सभा में याज्ञवल्क्य के प्रवचनों ने आध्यात्मिक जीवन की जितनी गुत्थियाँ सुलझाईं, उतनी ही पार्थिव जीवन की भी। रामायण और महाभारत की घटनाओं में जीवन की सहस्रमुखी धाराएँ सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन की कितनी संतप्त भूमि शीतल कर रही हैं! यही पवित्र धाराएँ जन-समुदाय की भाषा में तुलसी, सूर और मीरां की सरस वाणियाँ पाकर समस्त देश को हरा-भरा कर सकीं। शाश्वत जीवन के ये आकाश-दीप जीवन के बहुत बड़े भू-भाग पर प्रकाश डालते हैं।

लेकिन आज भारतीय युवक इन सब बातों में विश्वास नहीं रखते। वे तो पश्चिम के जीवन के अनुरागी बन कर उसी के राग गा रहे हैं। श्रीमती सरोजिनी नायडू के शब्दों में वे पश्चिम की पीली अनुकृति मात्र (पेल कापीज़ ऑफ़ दी वेस्ट) हैं। क्या वे नहीं जानते कि उनके पास जीवन का वह दिव्य-संगीत है जो वे पश्चिम की बाँसुरी में फूँक सकते हैं! उनके पास भी वह रंगीन फूल का बीज है जो पश्चिम के उपवन में लग कर दर्शकों के नेत्रों में कई रंगों के प्रतिबिम्ब डाल सकता है! उनके पास भी वह माणिक है जिससे पश्चिम के प्रासाद प्रकाशित किये जा सकते हैं! प्राचीन साहित्यकारों को छोड़ दीजिए। हमारे यही नवयुवक साहित्यिक हैं जो देश के भाग्य का

---

[1] अखिल भारतवर्षीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के इकतीसवें वार्षिक अधिवेशन (हरिद्वार) की साहित्य परिषद् के सभापति श्री रामकुमार वर्मा के भाषण से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण करेंगे। इन्हीं की लेखनी हमारे उत्थान का इतिहास लिखेगी। आज इन्हें अपना उत्तरदायित्व समझना चाहिये। इस समय किसी भी भारतीय साहित्यिक को अधिकार नहीं है कि वह साहित्य को अपनी व्यक्तिगत उन्नति या प्रशंसा का साधन बनाए। वह साहित्य के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। उसे सर्वप्रथम अपने देश की संपत्ति के रूप में साहित्य की रचना करनी है। कविता उसके लिये प्रेयसी की प्रेम-पत्रिका नहीं हो सकती, कहानी उसकी वासनामयी आत्मकथा नहीं बन सकती, नाटक उसके लिये प्रेम का अभिनय नहीं हो सकता। नहुष ने इंद्राणी के साथ प्रेम का जो नाटक खेला था, वह उसके स्वर्ग से निर्वासित हो जाने का संकेत था। साहित्य के क्षेत्र से निर्वासित हो जाने का ऐसा कोई संकेत दुहराया न जावे, यही हमारी कामना है।

जीवन की वास्तविकता

हमारे बहुत से आधुनिक साहित्यकार जीवन की वास्तविकता का रस नहीं ले सके हैं। वे वस्तुस्थिति का बोलता हुआ चित्र प्रस्तुत नहीं कर सके हैं, क्योंकि उन्होंने जीवन में डूबने की चेष्टा नहीं की। बिहारी के 'अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग' उन पर अक्षरशः घटित किया जा सकता है। यही कारण है कि हमारा आज का साहित्यिक मज़दूर और किसान पर साहित्य की रचना करता हुआ हमारे हृदय में एक टीस और कंठ में एक उच्छ्‌वास नहीं उठा सका है। वह किसान के जीवन की कल्पना करता हुआ एक ही प्रकार की असुविधाएँ गिनाता चलता है, जैसे लंदन की एक फ़र्म में एक कंजूस ख़रीदार चाकुओं के २२५ डिज़ाइनों या सिगरेट के १३६ ब्रैंडों की आलोचना करता है, लेकिन लेता एक भी नहीं है। जब भारत के ८९ प्रतिशत निवासी किसान या कृषि से अपनी आजीविका चलाते हैं और उनके जीवन में प्रवेश करने के अनेक अवसर हमारे सामने आते हैं तब यदि हमारे लेखक उनके जीवन की वास्तविक अनुभूति प्राप्त न कर सकें तो आप उनकी साहित्य-साधना का क्या मूल्य समझेंगे? हमारे नवीन साहित्यिकों की लेखनी में अभी इतना बल भी तो नहीं है कि वे असंतुष्ट जीवन के चित्रों को ज्वालामुखी का रूप दे सकें। हमारे आधुनिक साहित्यिक रूस के जिस साहित्य का अनुकरण कर रहे हैं वह सत्य और वास्तविकता में आमूल डूबा हुआ है। वह अपने दुःख में बहुत प्राचीन और आँसुओं में बहुत बुद्धि-संपन्न है, किंतु हमारे नवीन लेखक रूसी साहित्य से प्रभावित होते हुए भी अपने साहित्य में जीवन की वास्तविकता नहीं ला सके हैं। एक कौतूहल और देखिए। यह रूसी साहित्य उन्नीसवीं शताब्दी से शक्ति-संपन्न हुआ है। इसमें न पूर्वकाल है न माध्यमिक। फिर भी भाव-संपन्नता में इस साहित्य ने प्राचीन साहित्यों से आगे क़दम बढ़ाया है। इसका कारण यही है कि यह साहित्य वास्तविक जीवन के अभावों से उत्पन्न हुआ है और इसमें क्रन्दन और विद्रोह की स्वर मस्तिष्क से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, हृदय से निकल कर संसार के वायुमंडल में फैल गया है। हमारे साहित्यकारों ने इसकी तीव्रता के आगे अपना सिर झुका दिया है। वे इसकी उष्णता तो प्राप्त कर सके हैं, किंतु प्रकाश नहीं। जीवन पर आघात करने वाली जो प्रेरणा और आक्रमण-शक्ति रूसी लेखकों के पास है वह हमारे हिंदी लेखकों के पास नहीं आ सकी है।

पश्चिम के साहित्य का प्रभाव

पश्चिम के युगांतरकारी साहित्य से हमारे साहित्य का जितना हित हुआ है, उतना अहित भी। पश्चिम के साहित्य से हित तो यह हुआ है कि हमारे साहित्य का दृष्टिकोण बहुत व्यापक और विस्तृत हो गया है। जीवन के लौकिक पक्ष के प्रति हम अधिक जागरूक हो गए हैं और संसार के विविध क्षेत्रों की प्रगति को भी हम साहित्य की सीमा में बाँध सके हैं।

किंतु इन सब हितों के साथ जो अहित हुए हैं उन पर भी हमारी दृष्टि चली जाती है। इस पश्चिम के साहित्यगत अंधानुकरण का सबसे बड़ा प्रभाव तो यही है कि हम आज तक अपने साहित्य की आलोचना के सिद्धांतों का निर्माण नहीं कर सके हैं।

हमारे महाकाव्य या खंडकाव्यों का निर्माण किस सिद्धांत के आधार पर होगा, हम कह नहीं सकते। पश्चिमी आलोचना-पद्धति के भीतर उसकी समस्त प्राचीन साहित्य-साधना है। उसके पीछे उसका एक इतिहास है। हम करते यह हैं कि विदेशी साहित्यिक परंपराओं से बने हुए साहित्यिक सिद्धांतों को हम भारतीय परिस्थितियों में पने हुए साहित्य पर लाद देना चाहते हैं और उसके गुण-दोषों का विवेचन करना चाहते हैं।

पश्चिम के यथार्थवाद से हम अपने साहित्यगत व्यक्तित्व को तो भूल ही गए हैं, साथ ही हम अपनी उच्छृङ्खलता में साहित्य की समस्त मर्यादाओं को मिटाने का साहस भी करने लगे हैं। हमने अपनी कविता की स्वतंत्रता में छंद को सबसे बड़ा बंधन मान कर उसके हाथ-पैर तोड़ डाले हैं। जब मात्राओं की क़ैद हमें असह्य है तो वर्णवृत्तों के गणों की तो बात ही जाने दीजिए। उन्हें तो हम शिव जी के गणों से भी अधिक भयानक समझ बैठे हैं। मर्यादाओं को तोड़ने का जोश तो इतना भीषण हो गया है कि कुछ कवियों ने व्यक्तिगत सदाचार को भी तिलांजलि दे दी है। अश्लील से अश्लील पंक्ति लिखने में उन्हें हिचक नहीं होती। नारी को वे गाली दे रहे हैं और दुःशासन की भाँति उसका वस्त्र खींचने में अपनी शक्ति की पूर्ति समझ रहे हैं। ऐसे कवि अपने को प्रगतिशील कहते हैं।

मैं अपने ऐसे बंधुओं से प्रार्थना करूँगा कि वे प्रगतिशीलता का यथार्थ दृष्टिकोण समझने की चेष्टा करें। वे नारियों के शील की रक्षा करें, अपने दृष्टिकोण में मानव बनें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ सकती। इसके साथ ही साथ यदि नवीन खोजों के परिणाम-स्वरूप हिंदी साहित्य का एक प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत किया जावे तो साहित्य के विद्यार्थियों का विशेष उपकार होगा।

प्रयाग की भारतीय हिंदी परिषद् डा० धीरेन्द्र वर्मा के निरीक्षण में विशेष महत्व के कार्य कर रही है। पारिभाषिक शब्दावली, हिंदी भाषा-शैली और व्याकरण के आदर्शीकरण, विश्वविद्यालयों के हिंदी पाठ्यक्रम में समानता आदि के संबंध में भारतीय हिंदी परिषद् ने कार्य करना प्रारंभ कर दिया है। पुनर्निमित हिंदुस्तानी एकेडेमी ने भी श्री राय राजेश्वर बली का अदम्य उत्साह पाकर नवीन आयोजनाओं को हाथ में लिया है। एकेडेमी ने लेखकों के लिये अनेक पुरस्कारों की व्यवस्था की है। इससे निर्माण-कार्य में नवीन जागृति और स्फूर्ति अवश्य ही आ सकेगी। इन संस्थाओं के अतिरिक्त मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति (इंदौर), प्रसाद-परिषद् (काशी), साहित्य-सदन (अबोहर), दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (मद्रास), हिंदी प्रचारिणी सभा (दिल्ली), सुहृद् संघ (मुज़फ़्फ़रपुर), विदर्भ प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन (अकोला), हिंदी विद्यापीठ (बंबई), हिंदी साहित्य परिषद् (मथुरा), हिंदी साहित्य मंडल (रायपुर) और श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद् (टीकमगढ़) विशेष कार्यशील हैं। हमें आशा है कि इन संस्थाओं से हिंदी भाषा और साहित्य की उन्नति में विशेष सहायता मिलेगी।

३१वें अधिवेशन हरिद्वार में स्वीकृत प्रस्ताव

प्रस्ताव १. यह सम्मेलन सर्वश्री रमाकांत मालवीय, माधव शुक्ल, नत्थी बहादुर वकील, कृष्णकांत मालवीय, सेठ जमनालाल बजाज, महादेव देसाई, सत्यमूर्ति, शिवनारायण मिश्र, हेमचंद्र मोदी, रामदयाल, सूरजमल जैन, घासीराम व्यास, द्वारकाप्रसाद रसिकेन्द्र, चंद्रभाल जौहरी, महाराज गंगासिंहजी, सुदर्शनाचार्य, आचार्य आनंदशंकर, बापूभाई ध्रुव, बलभद्रप्रसाद दीक्षित, बुद्धिभद्र, जगदीश झा विमल, संतोषचंद वेगमानी और भगवतप्रसाद शुक्ल के देहावसान पर हार्दिक दुःख तथा उनके कुटुंबियों के साथ सहानुभूति और समवेदना प्रकट करता है।—सभापति द्वारा

प्रस्ताव २. इस सम्मेलन को यह जान कर हर्ष हुआ है कि राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री भदंत आनंद कौशल्यायन ने प्रचार समिति को सुदृढ़ बनाने के लिये राष्ट्रभाषा निधि में एक लाख रुपया एकत्र करने का संकल्प किया है। यह सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श के धनी मानी सज्जनों से अनुरोधपूर्ण निवेदन करता है कि वे शीघ्रताशीघ्र इस निधि को भर दें। प्रस्तावक—श्री सीताराम चतुर्वेदी; अनुमोदक—श्री उदयनारायण त्रिवारी; समर्थक—श्रीमती कमलाबाई किबे।

प्रस्ताव ३. सम्मेलन को यह जानकर अत्यंत खेद और क्षोभ होता है कि विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संस्कृत एवं हिंदी अध्यापकों का वेतन और पद अन्य विषयों के अध्यापकों की अपेक्षा हीन है। अतः यह सम्मेलन भारत के समस्त विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के संचालकों से अनुरोध करता है कि वे इस हीनता और पक्षपात के भाव को दूर करें और हिंदी अध्यापकों का वेतन और पद अंग्रेज़ी आदि विषयों के अध्यापकों के समान ही रक्खें। प्रस्तावक—श्री रामबालक शास्त्री; अनुमोदक—श्री राम-लाल शर्मा; समर्थक—डा० रामकुमार वर्मा; श्री कालिदास कपूर।

प्रस्ताव ४. सम्मेलन नीचे लिखे सज्जनों की एक समिति नियुक्त करता है। जो वार्षिक अधिवेशनों की स्वागत-समिति के निर्माण-संबंधी नियम तथा निर्देश निश्चित करके तीन मास के भीतर स्थायी समिति के समक्ष विचारार्थ उपस्थित करेगी।

इस समिति के सदस्य निम्नलिखित व्यक्ति होंगे—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल; पं० रामप्रसाद त्रिपाठी; पं० उदयनारायण त्रिपाठी; डा० बाबूराम सक्सेना; पं० सीताराम चतुर्वेदी; प्रस्तावक—श्री आनंद कौशल्यायन; अनुमोदक—पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल; समर्थक—डा० हेमचंद्र जोशी।

प्रस्ताव ५. सम्मेलन ने अपने अबोहर अधिवेशन में २७ वें मंतव्य द्वारा अपनी स्थायी समिति को आदेश दिया था कि लिपिसुधार समिति का विवरण प्रांतीय सम्मेलनों समाचारपत्रों, तथा साहित्यिक संस्थाओं के पास विचारार्थ भेजे, और उनकी सम्मतियाँ आने पर लिपिसुधार समिति की बनाई योजना तथा आई हुई सम्मतियों पर विचार करे और अपने सुझावों सहित उस योजना को अगले अधिवेशन में उपस्थित करे। इस वर्ष विशेष परिस्थिति के कारण यह विषय स्थगित रक्खा जाय।—सभापति द्वारा।

प्रस्ताव ६. यह सम्मेलन भारत के विभिन्न प्रांतों तथा देशी राज्यों में फैले हुए साधु संतों का हिन्दी प्रचार में सहयोग प्राप्त करने के लिये पाँच सज्जनों की एक समिति नियुक्त करता है, जिसके संयोजक श्री महंत शान्तानंदनाथ जी हों। प्रस्तावक—श्री गंगाधर इंदूरकर, अनुमोदक—श्री चंद्रशेखर वाजपेयी, समर्थक—श्री इन्द्रेशचरण दास,

प्रस्ताव ७. सम्मेलन को यह जानकर अत्यंत दुःख हुआ है कि हिन्दी के अनेक लेखकों को आर्थिक कष्ट के कारण जीवन यापन करना भी कठिन हो रहा है। यह सम्मेलन कार्य समिति को आदेश करता है कि वह सब स्थानों की स्थानीय संस्थाओं से ऐसे साहित्यिकों और साहित्य-सेवियों की सूची मँगावे और एक ऐसा सहायक कोष

३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकत्र करे जिससे साहित्य को प्रोत्साहन तथा सहायता दी जाय। प्रस्तावक—श्री छबीलेलाल गोस्वामी; अनुमोदक—श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'; समर्थक—सर्वश्री यशपाल; गुलाबरायजी; हेमचंद्र जोशी; सीताराम चतुर्वेदी।

प्रस्ताव ८. यह सम्मेलन देश की म्यूनिसिपलिटियों से विशेषकर तीर्थस्थानों की म्यूनिसिपैलिटियों से यह अनुरोध करता है कि वे मुहल्लों, लारियों आदि के नामों में तथा अपने अन्यान्य कार्यों में अधिकाधिक नागरी लिपि और हिन्दी भाषा का प्रयोग करें। प्रस्ताव की प्रतिलिपि देश के प्रसिद्ध तीर्थस्थानों की म्यूनिसिपलिटियों के पास जोरदार शब्दों में भेज दी जाय। प्रस्तावक—श्री गांगेय नरोत्तम शास्त्री; अनुमोदक—श्री मनोहर लाल जी गौड़; समर्थक—श्री किशोरीदास वाजपेयी।

प्रस्ताव ९. यह सम्मेलन काशी विश्वविद्यालय के अधिकारियों को इसलिये बधाई देता है कि वहाँ इन्टर कक्षाओं में सब विषय हिन्दी माध्यम से पढ़ाने तथा परीक्षा देने की व्यवस्था कर दी गई है, और साथ ही यह सम्मेलन भारत के अन्य सभी विश्वविद्यालयों के अधिकारियों से साग्रह अनुरोध करता है कि वे एम० ए० तक की शिक्षा हिन्दी माध्यम द्वारा देने की व्यवस्था करें। इसी के साथ सम्मेलन भी अपना उत्तरदायित्व स्वीकार करते हुए विश्वविद्यालयों को इस सम्बन्ध में कार्यक्रम दे। प्रस्तावक—श्री वशिष्ठ जी; अनुमोदक—श्री रमेशचन्द्र जैतिली; समर्थक—श्री यशपाल; श्रीमती सावित्री दुलारेलाल; डाक्टर रामकुमार वर्मा; श्री गुलाबराय।

प्रस्ताव १०. इस सम्मेलन का यह विश्वास है कि भारतीय संस्कृति का निवास हमारे जनपदों में है, अतः यह सम्मेलन एक समिति की स्थापना करता है जो भारत के विभिन्न जनपदों की भाषा, पशुपक्षी, वनस्पति, ग्रामगीत, जलविज्ञान, संस्कृति, साहित्य तथा वहाँ की उपज का अध्ययन कराने की योजना उपस्थित करे। उस समिति में निम्नलिखित विद्वान हों—सर्वश्री वासुदेवशरण अग्रवाल, लखनऊ; बनारसीदास चतुर्वेदी, टीकमगढ़; राहुल सांकृत्यायन, बिहार; चन्द्रबली पांडेय काशी; अमरनाथ झा, प्रयाग; जैनेन्द्रकुमार, दिल्ली; देवेन्द्र सत्यार्थी, लाहौर। इस समिति को अधिकार होगा कि वह आवश्यकतानुसार अन्य सदस्यों को भी सम्मिलित कर ले तथा जिस जनपद में वह काम करे वहाँ के भी चार सज्जनों तक इस समिति में सम्मिलित कर ले।—प्रस्तावक—श्री आनन्द कौशल्यायन; अनुमोदक—पंडित अमरनाथ झा।

प्रस्ताव ११. यह सम्मेलन निश्चय करता है कि बाबू पन्नालाल जी भल्ला रईस हरिद्वार, महंत शांतानंदनाथ जी और महंत घनश्यामगिरि द्वारा प्रदत्त चाँदी के रुपयों से सभापति श्री माखनलाल जी का तुलादान हो, और इन रुपयों की निधि से बीसवीं शताब्दी के स्वर्गीय साहित्यिकों के साहित्य का प्रकाशन हो; इस निधि का नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हरिद्वार सम्मेलन निधि' होगा; इसकी देखभाल, लेखकों का क्रम और ग्रंथों के निर्माण का कार्य ११ सज्जनों की उपसमिति करे, जिनमें से ५ प्रतिनिधि प्रतिवर्ष सम्मेलन नियुक्त करेगा और दानियों की ओर से महंत शांतानंदनाथ, महंत घनश्यामगिरि, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, पं० सीताराम चतुर्वेदी पं० कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, आजीवन प्रतिनिधि होंगे तथा पं० माखनलाल चतुर्वेदी आजीवन प्रधान होंगे।

प्रस्तावक—महंत शांतानंदनाथ; समर्थक—पं० सीताराम चतुर्वेदी ।

प्रस्ताव १२. यह सम्मेलन निश्चय करता है कि श्रीमती चंद्रावती ऋषभसैन जैन ने 'हरिद्वार सम्मेलन निधि' के लिये जो १००१ रुपया दान किया है वह उस निधि में सम्मिलित कर लिया जाय। प्रस्तावक—महंत शांतानंदनाथ, अनुमोदक—पं० सीताराम चतुर्वेदी ।

प्रस्ताव १३. यह सम्मेलन महंत शांतानंदनाथ, महंत घनश्यामगिरि, बाबू पन्नालाल भल्ला तथा श्रीमती चंद्रावती ऋषभसैन जैन को 'हरिद्वार सम्मेलन निधि' के दान के लिये धन्यवाद देता है, तथा इस दान को सहर्ष स्वीकार करता है ।

प्रस्तावक—पं० अमरनाथ झा, समर्थक—पं० जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल ।

प्रस्ताव १४. यह सम्मेलन निश्चय करता है कि महंत शांतानन्दनाथ, महंत घनश्यामगिरि, श्री पन्नालाल भल्ला तथा श्रीमती चंद्रावती ऋषभसैन जैन सम्मेलन के सम्मानित सदस्य स्वीकार किये जायें ।

प्रस्तावक—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, समर्थक—श्री सीताराम जी चतुर्वेदी ।

प्रस्ताव १५. अपने पिछले अधिवेशनों में सम्मेलन ने रेडियो विभाग का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था कि उसकी भाषा, नीति हिंदी की दृष्टि से पक्षपातपूर्ण और हानिकर है और इस संबंध में आवश्यक सुधार करने के लिये कुछ सुझाव भी बतलाए थे। खेद का विषय है कि रेडियो विभाग के अधिकारी वर्ग ने इधर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और अपनी उर्दू पक्षपातिनी नीति पर ही अग्रसर होता रहा ।

अतः सम्मेलन का यह अधिवेशन एक बार फिर भारत सरकार के ध्वनिविक्षेप विभाग के अध्यक्ष से अनुरोध करता है कि वह हिंदी के साथ होनेवाले इस दैनिक अन्याय को शीघ्रातिशीघ्र दूर कर दे। सम्मेलन यह भी निश्चय करता है कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उक्त अध्यक्ष महोदय के पास निम्नलिखित सदस्यों का एक प्रतिनिधि-मंडल भेजा जाय—

पं० अमरनाथ झा, माननीय प्रकाशनारायण सप्रू, श्री रामचन्द्र शर्मा, दिल्ली ।

सम्मेलन हिंदी भाषियों से भी अनुरोध करता है कि वे अपना असंतोष जताने के लिये व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से तब तक बराबर उद्योग करते रहें जब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो विभाग हिंदी के साथ अन्याय करना बंद न कर दे, और हिंदी को अपने विभाग में उचित स्थान न दे दे।

यह सम्मेलन यह भी निश्चय करता है कि समस्त भारत में एक दिन रेडियो भाषा विषय दिवस मनाया जाय और उसकी सूचना उक्त विभाग के अध्यक्ष तथा सम्मेलन को दी जाय।—सभापति द्वारा।

प्रस्ताव १६. यह सम्मेलन अपनी साहित्य समिति तथा नागरी प्रचारिणी सभा आदि संपन्न तथा कर्मठ संस्थाओं से अनुरोध करता है कि वे विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों के उपयुक्त ग्रंथ प्रकाशित करें। और इसके लिए विद्वानों तथा संस्थाओं से प्रतिनिधित्व माँग कर एक समिति बनाई जाय, जो यह निर्णय करे कि किस विषय पर कौन कौन से ग्रंथ किन किन विद्वानों के द्वारा लिखाए जाँय।—सभापति द्वारा

प्रस्ताव १७. यह सम्मेलन, बोर्ड आफ सेकेंडरी एजूकेशन दिल्ली के इस निश्चय पर अत्यंत खेद प्रकट करता है कि नव प्रस्तावित वार्षिक योजना में ९वीं से ११वीं कक्षा तक शिक्षा का माध्यम हिंदी के स्थान पर अंग्रेज़ी रक्खा जाय। सम्मेलन उक्त बोर्ड से यह अनुरोध करता है कि वह अपने इस निश्चय को शीघ्र हटा कर हिंदी को ही शिक्षा का माध्यम बनाए रक्खें। प्रस्तावक—श्री वेदव्रत जी; अनुमोदक—श्री रामधन शर्मा।

प्रस्ताव १८. श्रीमंत ग्वालियर नरेश ने अपने राज्य के कानून ग्रंथों के लिए जिस हिंदी भाषा को स्वीकार कर लिया है उसका यह सम्मेलन स्वागत करता है, परंतु इधर राज्य के भीतर तथा बाहर की कुछ शक्तियाँ उस भाषा के विरुद्ध आंदोलन कर विपरीत वातावरण उत्पन्न कर रही हैं। और दुर्भाग्य से इस अनुचित आंदोलन के प्रभाव में आकर राज्य ने भी कानून ग्रंथों की भाषा का संशोधन करने को एक उपसमिति बना दी है।

यह सम्मेलन ग्वालियर नरेश को विश्वास दिलाता है कि श्रीमंत की सरकार के कानून ग्रंथों की भाषा जो स्वीकार कर ली गई है, वह सर्वथा न्यायोचित तथा सामयिक है। उसमें किसी प्रकार के परिवर्तन तथा संशोधन को यह सम्मेलन सर्वथा अनावश्यक और अनुचित समझता है। ग्वालियर राज्य की लोकभाषा वही हिंदी है जिसका उपयोग वर्तमान कानून ग्रंथों में है। और उस भाषा में किसी भी अनुचित परिवर्तन से ग्वालियर राज्य तथा समस्त हिंदी संसार में क्षोभ फैलेगा। प्रस्तावक—श्रीअनोखेलाल अरस्करे; समर्थक—श्रीसीताराम चतुर्वेदी;

प्रस्ताव १९. यह सम्मेलन हिन्दी भाषी राज्यों की जनता से अनुरोध करता है कि हिन्दी को राज्यभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने के लिये राजाज्ञा प्राप्त करने का यत्न करे, अतएव ऐसे प्रतिनिधि-मंडल बनाए जायँ जो उस दिशा में उद्योग करें तथा प्रान्तीय और अर्वाचीन हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि के लिये भी उनकी सहायता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त करें। प्रस्तावक—श्री अनोखेलाल अरझरे; अनुमोदक—श्री दयाशंकर दुबे।

प्रस्ताव २० अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन इस कठिनाई को अनुभव करता है कि ग्रामीण लेखकों को उचित मार्ग प्रदर्शन और प्रोत्साहन पूर्ण रूप से नहीं मिल पाता, अतः सम्मेलन निम्नलिखित महानुभावों की एक समिति नियुक्त करता है, जो उस संबंध में आवश्यक योजना तैयार कर तीन तीन माह के भीतर उपस्थित करे—

पं० अमरनाथ झा, श्री देवेन्द्र सत्यार्थी, पं० बनारसी दास चतुर्वेदी। प्रस्तावक—श्री माहेश्वरी सिंह 'महेश'; समर्थक—श्री पं० बालकराम जी।

प्रस्ताव २१. पंजाब प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सदुद्योग से इस वर्ष सनातन धर्म हाई स्कूल, सरगोधा, पंजाब ने प्रथम श्रेणी से हिन्दी को प्रारंभ किया है, उसके लिये उसकी कार्यकारिणी समिति को यह सम्मेलन बधाई देता है। सभापति द्वारा।

प्रस्ताव २२. सम्मेलन की नियमावली में संशोधन

१. नियम ९ इस प्रकार कर दिया जाय—

यदि किसी विशेष या साधारण सदस्य का शुल्क सूचना देने पर वर्ष के आरंभ से छ मास के भीतर न आ जाय तो कार्य समिति को अधिकार होगा कि उसका नाम सूची में न रक्खे।

२. नियम १० (छ) हटा दिया जाय और उसके स्थान पर लिखा जाय कि "उन संस्थाओं द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो नियम २५ (क) के अनुसार सम्मेलन से संबद्ध हों। इन प्रतिनिधियों की संख्या उपनियम में निर्दिष्ट होगी। किंतु प्रत्येक संबद्ध प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन को कम से कम तीन प्रतिनिधि भेजने का अधिकार होगा।"

३. नियम १० (ण) सेकसरिया महिला पारितोषिक प्राप्त विदुषियों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो उनकी संख्या की पंचमांश होंगी किंतु पाँच से अधिक न होंगी।

(त) मुरारका पारितोषिक, राधामोहन गोकुलजी तथा रत्नकुमारी पुरस्कार प्राप्त विद्वानों तथा विदुषियों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो उनकी संख्या के पंचमांश होंगे। किंतु पाँच से अधिक न होंगे।

४. नियम २९. चौथी पंक्ति में लिखा जाय कि—

"किंतु स्थायी समिति सम्मेलन के एक वार्षिक अधिवेशन की समाप्ति से लेकर दूसरे वार्षिक अधिवेशन तक कार्य करती रहेगी, और नवीन स्थायी समिति सम्मेलन के अधिवेशन की समाप्ति के बाद काम करेगी।"

५. उपनियम १ में चौथी पंक्ति में, चारों प्रकार के सदस्यों को सम्मेलन-पत्रिका बिना शुल्क दी जायगी। स्थायी समिति के प्रत्येक सदस्य को सम्मेलन अधिवेशन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य विवरण एवं सम्मेलन की मुखपत्रिका निःशुल्क पाने का अधिकार होगा।

(क) प्रत्येक विशेष सदस्य को सम्मेलन द्वारा प्रकाशित ग्रंथों में से अधिक से अधिक पंद्रह रुपये के कोई भी ग्रंथ बिना मूल्य सम्मेलन से लेने का अधिकार होगा।

(ख) विशेष सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सब प्रकार के सदस्यों को सम्मेलन द्वारा प्रकाशित सब ग्रंथ पौने मूल्य में मिल सकेंगे।

६. उपनियम ६ की तीसरी पंक्ति में 'प्रत्येक सदस्य को' से पहले 'स्थायी समिति के' शब्द जोड़ दिए जावें।

७. उपनियम चार का शीर्षक 'अधिकृत उपाधिधारी' कर दिया जावे।

८. उपनियम चार की दूसरी पंक्ति में जोड़ दिया जाय "जो उपाधिधारी आठ आने वार्षिक अथवा पाँच रुपये एक बार देगा उसका नाम इस रजिस्टर में चढ़ाया जायगा, और इस रजिस्टर पर चढ़े हुए उपाधिधारी अधिकृत उपाधिधारी कहलायेंगे। जो अधिकृत उपाधिधारी अगले वार्षिक अधिवेशन में प्रतिनिधि होकर भाग लेना चाहते हों उन्हें उस अगले वार्षिक अधिवेशन से कम से कम एक मास पूर्व अधिकृत हो जाना चाहिये।"

९. उपनियम पाँच का शीर्षक 'स्थायी समिति के लिये प्रतिनिधि' कर दिया जाय।

१०. उपनियम १३ इस प्रकार लिखा जाय कि 'संबद्ध संस्थाओं को सम्मेलन-पत्रिका बिना मूल्य दी जायगी।'

११. उपनियम २० (१) की पहली पंक्ति में, 'प्रधान मंत्री भी' के आगे, 'साहित्य मंत्री' जोड़ा जाय।

१२. उपनियम २० (२) में 'निर्वाचित १० प्रतिनिधि' कर दिया जाय।

१३. उपनियम ४० इस प्रकार लिखा जाय—"सभापति के निर्वाचन में उन्हीं व्यक्तियों और संस्थाओं को भाग लेने का अधिकार होगा जिनका वार्षिक शुल्क वर्ष के आरंभ से ६ मास के भीतर कार्यालय में पहुँच जायगा।"

१४. उपनियम ५० को ५१ कर दिया जाय, और उसकी दूसरी पंक्ति से लेकर पाँचवीं पंक्ति तक इस प्रकार परिवर्तन कर दिया जाय—"वे अधिकार-प्राप्त सज्जनों और संस्थाओं से अनुरोध करें कि वे आगामी सम्मेलन के सभापति तथा सब परिषदों के एक एक ऐसे सज्जन"—सहायक मंत्री द्वारा।

प्रस्ताव २३. यह सम्मेलन निश्चय करता है कि सम्मेलन का अग्रिम अधिवेशन जयपुर में बड़े दिन की छुट्टियों में हो, और एक विशेष अधिवेशन होली की छुट्टियों में श्रीभैणी साहब, लुधियाना में हो।—सभापति द्वारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

मेखला—लेखक—श्री 'अद्भुत'; प्रकाशक—सतयुग-आश्रम, इलाहाबाद; मूल्य १)

इस पुस्तक में लेखक की १२ कहानियाँ संगृहीत हैं। यद्यपि लेखक का यह पहला कहानी-संग्रह है, तथापि कहानियाँ पढ़ने से जान पड़ता है कि उनका हाथ कहानी-कला में काफ़ी मँज चुका है। सब कहानियाँ पढ़ जाने के बाद जो बात विशेष रूपसे पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ जाती है वह है लेखक की सहृदयता और सचाई। किसी भी कहानी में लेखक ने बनने की चेष्टा नहीं की है, और कलकारिता का ढोंग नहीं रचा है। सरलता और सचाई के साथ अपने पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और अपने हृदय पर पड़ी हुई वेदनात्मक भावों की छाया को प्रस्फुटित करने में उन्होंने काफ़ी अच्छी सफलता पाई है।

'मेखला' की पहली कहानी 'विनोद की होली' में पारिवारिक स्नेह से वंचित एक भावुक-हृदय नवयुवक के निराश-प्रेम का मार्मिक चित्रण किया गया है। 'देवेन्द्र' शीर्षक कहानी में एक अनाथ बालक की मनोदशाओं का बहुत ही चुभता हुआ वर्णन किया गया है। वह अपने एक मित्र की कृपा से एक परिवार में स्नेह और आश्रय पाता है। पर यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रह पाती। उसका एक प्रतिद्वंदी—घर की मालकिन का भाई—उसी परिवार में सम्मिलित होकर स्कूल में पढ़ने लगता है। उसका यह प्रतिद्वंद्वी उस पर तरह-तरह के लांछन लगाता है, जिसके फलस्वरूप घर की मालकिन अपना सारा स्नेह वापस लेकर उसे घर से निकाल देती है। इस अंतिम धक्के को सँभाल न सकने के कारण वह आत्महत्या कर लेता है। 'दुखियारी' में एक बहुत ही गरीब कुटुंब की आर्थिक दुरवस्था का अच्छा ख़ाका खींचा गया है। 'सिगरेट' में दिखाया गया है कि एक हताश प्रेमिक मृत्यु-पर्यन्त अपने भीतर की आग को सिगरेट के धुँए के रूप में किस प्रकार निकालता चला जाता है। यह कहानी बहुत करुण है। 'वेदना' हमारी राय में इस संग्रह की सब से अच्छी कहानी है। इसमें कहानी कला के 'टेक्नीक' का निर्वाह पूर्ण रूप से हुआ है। इसकी मार्मिकता बड़े ही संयत रूप से, सौष्ठव के साथ परिस्फुट हुई है। साथ ही इसका प्लाट भी रोचक है। 'वारांगना' में दिखाया गया है कि प्रेमी द्वारा प्रवंचिता और समाज द्वारा वहिष्कृता नवयुवती का पतन कैसे होता है, और पतन होने के बाद वह किस प्रकार समाज से अपना बदला लेती है। 'कुभावना' में संदेह के कीट की करामात के कारण दो मित्रों की मैत्री का अंत और उसका करुण परिणाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113023

दिखाया गया है। 'पितृ-प्रभाव' में एक राष्ट्र-प्रेमी, त्यागी पिता के आदर्श जीवन का प्रभाव उनके लड़के पर किस तेजी से पड़ा, इस बात का प्रदर्शन कलात्मक ढंग से किया गया है। 'क्रोधाश्रु' में जीवन की पहेली को समझने के इच्छुक एक नवयुवक के शिष्य पर गुरु के क्रोध का अच्छा वर्णन किया गया है। 'उपासक' में अपनी प्रेमिका की चित्र-मूर्ति की उपासना करनेवाले एक बैरिस्टर के लड़के के संसार-त्याग का वर्णन बड़ा हृदयग्राही है। 'दो भाई' में भ्रातृ स्नेह का बड़ा ही करुण चित्र अंकित हुआ है। 'निर्धनता' में एक दीन-हीन मजूर-परिवार के अर्थ-संकट और धर्म-संकट की उथल-पुथल का चित्रण करने में लेखक ने अच्छी सफलता प्राप्त की है।

कुल मिलाकर संग्रह यथेष्ट सुंदर है। केवल एक बात की सलाह हम लेखक को देंगे। वह यह कि अपनी भावुकता को वह कुछ संयत करें, और वेदना के चित्रों के साथ कुछ दूसरी तरह के भी चित्र, जीवन की विचित्रता के ख़याल से देने का अभ्यास डालें। फिर भी वर्तमान कहानियों को देखते हुए हमें लेखक का भविष्य काफ़ी उज्ज्वल दिखाई देता है।

साहित्य-प्ररोह—लेखक तथा प्रकाशक—श्री चंद्रलालजी, सुनार मुहल्ला, अल्मोड़ा; मूल्य १)

इस पुस्तक में साहित्य-कला तथा साहित्यिक से संबंध रखनेवाले प्रवचन संकलित किये गए हैं। लेखक महाशय का कहना है कि इन प्रवचनों में कुछ तो उनके अपने हैं, पर अधिकांश में दूसरे लेखकों की छाया आ गई है। फिर भी उस छाया को भी उन्होंने अपनी ही शैली का रंग दे दिया है। सभी प्रवचन सुंदर और मननीय हैं। भाषा भी विषय के अनुरूप गंभीर और प्रभावशालिनी है। हिंदी के लेखकों को इन प्रवचनों से लाभ उठाना चाहिये। नीचे पुस्तक में से कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

सत् साहित्य वह है जो जीवन में जीवन ला दे।

काग़ज़ को आँसुओं से धो; फिर अपने रक्त से लिख; वह साहित्य बन जायगा।

अपच सत्य सिवाय सच्चे साहित्यिक के कौन पचा सका। धधकता हुआ साहित्य अंगारवत् साहित्य के ही हृदय से निकलता है।

जो जाति साहित्य को मन बहलाने की चीज़ समझती है वह जितनी ही शीघ्र मिट जाय उतना ही अच्छा होगा।

सच्चा साहित्य-सेवी अपने साहित्य-जाल में ऐसा ही उलझा हुआ रहता है जैसे मकड़ा अपने जाले में।

—६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

भारत-गीत ≡)
राष्ट्रभाषा ॥)
शिवाबावनी ≡)
पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १॥)
सूरदास की विनयपत्रिका ≡)
नवीन पद्यसंग्रह ।॥)
बिहारी-संग्रह ≡)
सती कथणाकी ॥)
हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव ॥≈)
ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार १।)

[२]) साधारण पुस्तकमाला

अकबर की राज्यव्यवस्था १)

[३]) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

सरल शरीर-विज्ञान ॥), ।॥)
प्रारम्भिक रसायन १)
सृष्टि की कथा १)

(४) बाल-साहित्य माला

१ बाल नाटक-माला ।)
२ बाल-कथा भाग २ ।≈)
३ बाल विभूति ≡)
४ वीर पुत्रियाँ ।≈)

(५) नवीन पुस्तकें

१ सरल नागरिक शास्त्र ३)
२ कृषि प्रवेशिका १)
३ विकास (नाटक) ॥≈)
४ हिंदू-राज्य शास्त्र २।≈)
५ कौटिल्य की शासन-पद्धति १।≈)
६ गावों की समस्यायें १)
७ मीराँबाई की पदावली २॥)
८ भट्ट निबंधावली १।)
९ बंगला-साहित्य की कथा १।)
१० शिशुपाल वध २)
११ ऐतिहासिक कथायें ।॥)
१२ दमयन्ती स्वयंवर ॥)

१—मैथिली लोकगीत—रामइक़बालसिंह 'राकेश', भूमिका लेखक—पण्डित अमरनाथ झा ३)
२—गोरखबानी—डाक्टर पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ३)
३—दीवाली और होली—(कहानी संग्रह) श्री इलाचन्द्र जोशी १॥)
४—महावंश—भदन्त आनन्द कौसल्यायन ३)
५—हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी—श्री नन्ददुलारे वाजपेयी ३॥)
६—स्त्री का हृदय—(एकांकी नाटक) श्री उदयशंकर भट्ट १॥)
७—राजस्थानी लोकगीत—स्व० सूर्यकरण पारीक १)
८—सामान्य भाषाविज्ञान—डा० बाबूराम सक्सेना ४)
९—काव्यप्रकाश—मम्मटाचार्य, अनुवादक स्व० हरिमंगल मिश्र ३)
१०—समाचार-पत्र शब्दकोष—डा० सत्यप्रकाश डी० एस-सी० २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए० ६२१

जातक

[प्रथम तथा द्वितीय खण्ड]

अनुवादक : भदंत आनन्द कौसल्यायन

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् पं० जयचन्द्र विद्यालंकार का कथन है कि "विश्व के वाङ्मय में 'जातक' जन-साधारण की सब से पुरानी कहानियाँ हैं; मनोरंजकता, सुरुचि, सरलता, आडम्बरहीन सौन्दर्य और शिक्षाप्रद होने में उनका मुकाबला नहीं हो सकता। वे बच्चों के लिये सरल और आकर्षक, जवानों और बूढ़ों के लिये भी रुचिकर और विद्वानों के लिये प्राचीन भारत के जीवन का जीता-जागता चित्रण करने के कारण अत्यन्त मूल्यवान हैं।"

प्रथम खंड, पृष्ठ संख्या ५४०—२१; डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)
द्वितीय खंड, पृष्ठ संख्या ४६४—२४ डिमा साइज़; सजिल्द मूल्य ५)

'आधुनिक हिन्दी कवि' माला

आधुनिक काल के श्रेष्ठ कवियों द्वारा अपनी सर्वोत्तम रचनाओं के संग्रह इस माला के अन्तर्गत छपे हैं। पुस्तकों के प्रारंभ में कवियों ने अपनी कविताओं की विचारधारा पर विस्तृत प्रकाश डाला है। कवियों के पेन्सिल स्केच, तथा हस्तलिपियाँ भी साथ हैं।

१. श्री महादेवी वर्मा

२. श्री सुमित्रानन्दन पंत   ३. श्री रामकुमार वर्मा

४. श्री गोपालशरण सिंह

प्रत्येक का मूल्य २)

मिलने का पता :

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

प्रकाशक—ठ. मातप्रसाद घिल्डियाल, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।
मुद्रक—श्रीगिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri